First issue

December 2010

श्री लक्ष्मी एवं वशीकरण विशेषांक

श्री लक्ष्मी एवं वशीकरण विशेषांक

Name of the Article **Page #**

Sampoorna Swarnakarshan Yantra

(पारद विज्ञानं का ही नहीं वरन सम्पूर्ण जीवन की सफलता और वैभव का आधार हैं)

पारिजात द्रमान्तारे स्थिते मणिक्यमंडपे |

सिंहासनेगत धायेद भैरवम स्वर्ण दायेनम||

गांगेयपात्र डमरू त्रिशूल वर करे संदधतम त्रिनेत्रं |

देव्यायुतम तप्त स्वर्ण वर्ण स्वर्ण कृशम भैरावामाश्रयामः ||

Not only for any parad vijyani, but also every home should have this maha yantra ,we have already post primary most important information in the blog, here most secreat aspect of this mahayantra representing father aspect of lord bhairav is with alchemy science way. in this square type yantra ,has four panch dashi yantra, the utility and importance of these are as follows.

The pancha dashi yantra made in upper middle portion of the yantra used for agni esthaye(inducing fire resistant quality in mercury), left middle portion 's pancha dashi yantra for injecting divine herbs quality in mercury, the panchadashi yantra made in lower middle portion ..for rashayan Siddhi,so the remaining right side middle panch dashi yantra used for swarna Siddhi. This way, all the four yantra not only inducing wealth to a person but also a centre of divine knowledge.

Not only this, but the trishul made in north east direction facing used for achieving Siddhi in section of Dev ranjani gutika, for Bhairavi gutika section the trishul made in north west,so for section of Vajrang sundary gutika the trishul of

एक पारद विज्ञानी ही नहीं , बल्कि हर घर में यह महायंत्र होना ही चाहिए ही, ब्लॉग मैं लिखे लेख के आगे ,यह लेख आपके लिए प्रस्तुत हैं, भैरव जी का पिता स्वरूप महा यन्त्र अनेको रहस्मयता आपने आप में समेटे हुए हैं, इस वर्गाकार यन्त्र में ४ धनदा पञ्च दशी यन्त्र होते हैं, इनकी उपयोगिता क्रमानुसार हैं

धनदा पंचदशी यन्त्र जो उपरी मध्य भाग में हैं वह अग्नि स्थायी पारद प्रकिया के लिए उपयोगित हैं.इसके बाएं मध्य भाग स्थित धनदा पंचदशी यन्त्र पारद के वनस्पति से युकत्ता के कार्य के काम आता हैं ,निचले मध्य भाग स्थित धनदा यन्त्र रसायन सिद्धि के कार्य में काम आता हैं. और सीधे हाथ के मध्य स्थित धनदा यन्त्र स्वर्ण सिद्धि के कार्य में काम आता हैं. इस तरह चारों और से न केबल धन बल्कि पारद विज्ञानी के लिए तो अटूट ज्ञान का केंद्र हैं,

यही ही नहीं बल्कि ,पूर्वोत्तर दिशा में बने त्रिशूल को क्या भूल गए ये देव रंजनी वर्ग की गुटिका को सिद्ध करने के काम में,पश्चिम उत्तर में बना त्रिशूल भैरवी गुटिका के लिए

south west direction works and also trishul made in south east used for Siddhi in section of Amar sundari gutika.

In a single section of divya gutika infinite number gutika comes. this should not be consider as a single gutikas, when you want to make mercury fire resistant, place it on this direction mentioned for that and do the specified process for that, the same is applicable for Rasayan Siddhi, but swarnakarshan bhairav's main basic sadhna has to be completed successfully first only than other process with Sadgurudev permission , cab be started..

Mool sadhana or basic sadhana required to complete 64000 times mantra jap with following all the sadhana rules, ritual in complete, keep in mind that for to complete a single round rosary(108 times jap), 25 approx. needed. Satvik or rajsic or tamsic, as the Sadgurudev ji's agya and direction should be completed, only than for starting any specific power of any panch dashi yantra pray to him, at a time only single aspect of any pancha dashi yantra sadhana can be completed.

The process describe in pancha dashi tantra of bhagvaan shiva is miraculous and amazing too, this yantra consider as a yantra raaj, nothing in this whole universe any be consider equal to this great pancha dashi yantra. Not only maran ,mohan but all the shat karam also can be completed successfully. And such a four yantra is situated in this swarnakarshan yantra, than if effect can anyone described? Getting such a maha yantra is a sign of great luck..

Do not consider it s a sadhana of a single time, but this is the basic foundation stone of all the wealth and off course parad science tantra. Trishul representing final salvation. Sadhak can achieve swarna Siddhi and off course final salvation by doing sadhana of its step by step .

Creation of whole universe also be possible by

,दक्षिण पश्चिम में वज्रांग सुंदरी वर्ग की गुटिका के लिए, तो दक्षिण पुर्व के त्रिशूल अमर सुंदरी वर्ग की गुटिका को सिद्ध करने के लिए आता हैं.

इस एक एक वर्ग में अनगिनत दिव्य गुटिका आती हैं, इन्हें मात्र एक दिव्य गुटिका मान नहीं लेना चाहिए. जब आप पारद को अग्नि स्थायी करना चाहे तो निर्देशित स्थान पर रख कर मंत्र जप/आवस्यक प्रक्रिया करें, इसी प्रकार रसायन सिद्धिके लिए व अन्य के लिए मानना चाहिए.पर इनकी प्रारंभिक साधना या मूल साधना को पहले पूरा होना चाहिए इसके बाद ही ,अन्य प्रक्रिया को पूरा करने की अनुमति हैं.

मूल साधना हेतु कमसे कम ६४००० मंत्र जप होना ही चाहिए ,ध्यान रहे मूल मंत्र की एक माला जप(108) में ही लगभग २४ मिनिट लगते हैं. पूर्ण साधना विधान से जिसमे सात्विक ,तामसिक,राजसिक ध्यान करें जैसा की सदगुरुदेव द्वारा निर्देशित हो. मंत्र जप पूरा करें . फिर सम्बंधित विधान के लिए उनसे प्राथना करें, एक एक करके आप एक धनदा पंचदशी यन्त्र की एक शक्ति से सम्बंधित साधना पूरी कर सकते हैं.

भगवन शिव द्वारा पंचदशी यन्त्र पूर्ण विधान तो अदभुत ही हैं ,इसे यन्त्र राज भी कहा गया हैं, इसकी उपमा के लिए त्रिभुवन में कोई यन्त्र नहीं हैं, म्रारण मोहन उच्चाटन से लेकर समस्त षट कर्म भी सफलता पुर्वक इस पर किये जा सकते हैं.

और जब ऐसे यन्त्र राज एक नहीं चारों ओर बने हो तो इसका प्रभाव का क्या कहना .,. साधारण प्रक्रिया गत मात्र १०,००० मंत्र जप भी पूर्ण माना गया हैं, आप प्रति दिन १ माला के हिसाब से करके इससे लाभान्बित हो सकते हैं ,ऐसा यन्त्र प्राप्त होना ही भाग्यकारक हैं,

इसे मात्र एक बार की साधना ही न माने बल्कि सारा वैभव , और पारद विज्ञानं की आधार की परिभूमि हैं, त्रिशूल मोक्ष मार्गी का प्रतिक हैं, साधक न केबल अग्नि स्थायी बल्कि क्रमानुसार साधना करके स्वर्ण सिद्धि से युक्त होता हुए , मोक्ष मार्गी भी हो जाता हैं.

पूर्ण ब्रम्हांड निर्माण भी संभव हैं इस यन्त्र राज के द्वारा., पीले पुष्प और पीले लड्डू का भोग का अर्पण ,इन देव को सर्वाधिक प्रिय हैं. भैग्वान भैरव के अनेको स्वरूपों में एक

this maha yantra, yellow flower offering and yellow laddu is mist favorite to this great lord. This is one of the most valuable form of him having total subhta yukta and also blissfulness.

With the agya and permission of Sadgurudev ji, the completes in all respect can easily be got through the specific mantra having various beej mantra.no fear some condition can be created/appeared while doing this sadhana, which a is part of any bhairav sadhana. With full sativikata (following vedic rules) ,success in this sadhana can be easily possible.

Even if, this is not possible than 4/5 times of chanting the satvik dhyan of him, also work for making your whole day with pleasantness, and joyful too .facing financial difficulty is also a part when we do complete sadhana very seriously, for a very small period. keep this in mind ,this fact ,do not get discourage. For the removal of earlier sins this is not a must but a condition sometimes can occur. The complete effect of whole Dhanda swarnakarshan yantra beyond capacity of any mortal person's capacity,once 8/9 days complete shivir was organized by poojya Sadgurudev ji, everyone who took part get benefitted by that. So what you are waiting for, still you not open your eyes than... whose fault is this.....

मात्र रूप हैं जो शुभता युक्ता होने के साथ कल्याण दायक भी हैं.

पूज्य पाद सदगुरुदेव जी से प्रार्थना करने पर इनके बीज मंत्रो से युक्त विशिस्ट मंत्र के जप से भी सफलता पाए जा सकती हैं , अन्य भैरव साधना में जहाँ भय की स्थिति बन सकती हैं वहीं इस साधना में इस प्रकार की कोई समस्या नहीं हैं, पूर्ण सात्विकता के साथ घर पर भी ये साधना की जा सकती हैं.

यदि यह भी संभव न हो तो मात्र ४/५ बार इनके सात्विक ध्यान का उच्चारण भी अपने आप में दिन को शुभता बनाये रखने के लिए पर्याप्त हैं.

जब साधना पूर्ण विधान के साथ प्राम्भ होती हैं तो पहले साधक के दोषों को परिमार्जित करने के हेतु से साधक को कुछ आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता हैं.,इस समय पूर्ण मनोयोग से साधना करे बिचलित न हो, ऐसा साधकों का मत हैं, पूर्ण धनदा यन्त्र की महिमा तो लेख से भी परे की बात हैं, एक ८ /९ दिवसीय पूर्ण धनदा शिविर का आयोजन सदगुरुदेव जी द्वारा किया गया था. अनेकों साधक इसके द्वारा लाभान्वित हुए थे अब आप किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, यदि अभी भी आप नहीं समझे तो ये किसका भाग्य होगा.

Do not tell all your secreat to your ordinary friend and have a trust in him, for if he get angry even on small matter, he will open all the secreats of you to all .

आप अपनी गोपनीय गहरे राज़ की बाते कभी भी ,अपने साधारण मित्र से न कहो ,कभी न जाने किसी भी छोटी सी बात से नाराज़ होकर वह आपके सारे राज़ को सबके सामने उजागर कर देगा . चाणक्य

Surya Viggyan and Parad Tantra

सूर्य विज्ञान,पारद तंत्र और वशीकरण

["सूत रहश्यम" के दुर्लभ ज्ञान को एक श्रंखला के रूप में]

भाग -1

NO MATTER HOW GOOD IT FEELS TO HEAR CHANGES, CONVERSION OF A SUBSTANCE IN ANOTHER SUBSTANCE. SINCE CENTURIES HAD BEEN WENT ON THIS SUBJECT OF LEARNING TO UNDERSTAND, IT JUST FEELS COMFORTABLE IN READING AND HEARING THIS MATTER BUT IS NOT SO SIMPLE NOR THE SUBJECT OF THE MYSTERY IS ATTAINABLE SO COMFORTABLE THAT BY HAVING KNOWLEDGE ABOUT THIS AND WE WILL BECAME SCOLAR IN IT..IS IS THAT EASY? WHAT DOES U THINK? LET ME TELL YOU ONE THING, **SADGURUDEV** NOT ONLY PUBLICLY PRESENTED AS SIMPLE BUT ALSO FORMULATED THE PRIVACY OF THE SUBJECT AS BEFORE TO PUT ALL PUPILS UNDERSTAND THE RARE SUBJECT AND BE COMFORTABLE IN LEARNING. **'SOOT RAHASYAM'** IS ONE SUCH TEXT IN WHICH I HIGHLY CLASSIFIED THE SECRETS OF THE SUN SCIENCE AND ALCHEMY TANTRA WHICH I RECEIVED BY **SADGURUDEV**. SOME OF THE METHODS AND SECRETS TO THE SAME TEXTS RESPECTIVELY 'TANTRA-KAUMUDI' WE WILL KEEP THESE PAGES PER ISSUE. THIS ARTICLE IS ONE OF THE LINK OF THE SAME THIS TIME.

In 1971, the 92 molecules were discovered in science and reported a similar molecule in the universe are no more than that, in 1987, the 115 molecules were re-announced. Did u get the meaning or you understand, Ohhh didn't understand, varies over time because the number of science discovery center of his secrets is salient and hence still cannot find that the entire 147 molecules is the spiritual center search. And millennia before it were made clear that the 147 Siddhashram molecules and all molecules that are present in

पदार्थ परिवर्तन कितना अच्छा लगता है ना सुनकर, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में रूपांतरण सदियों से इस विषय को समझने की सीखने की पर,ये सिर्फ पढ़ने और सुनने में ही सहज लगता है ये विषय इतना सरल है नहीं और ना ही इस विषय के रहस्य ही इतने सहज प्राप्य है की जिनका ज्ञान पाकर हम इस दिव्य विषय में पारंगतता हासिल कर सके. एक बात मैं आपको बता दूँ सदगुरूदेव ने इस विषय को न सिर्फ जन सामान्य के लिए सरल रूप में प्रस्तुत किया अपितु विषय की गोपनीयता को भी सूत्रबद्ध रूप में सभी शिष्यों के समक्ष रख कर इस दुष्प्राप्य विषय को समझने और सीखने में सहज कर दिया. 'सूत रहस्यम' एक ऐसा ही ग्रन्थ है जिसमे मैंने सूर्य विज्ञानं और पारद तंत्र के अत्यधिक गोपनीय रहस्यों को सदगुरूदेव के द्वारा प्राप्त कर लिखा है. उसी ग्रन्थ में से कुछ विधियों और रहस्यों को क्रमशः 'तंत्र-कौमुदी' के इन पन्नों पर प्रति अंक हम देते रहेंगे इस बार का ये लेख उसी की कड़ी है.

१९७१ में विज्ञानं ने ९२ अणुओ की खोज की और बताया की ब्रह्माण्ड में इतने ही अणु हैं इससे ज्यादा नहीं, १९८७ में पुनः घोषणा की गयी की १०३ अणु होते हैं. मतलब समझे आप, अरे नहीं समझे , अरे विज्ञानं की गिनती बदलती रहती है समयानुसार क्यूंकि उसकी रहस्यों का खोज केंद्र बहिर्गत होता है और इसी कारण आज भी वो सम्पूर्ण १४७ अणुओं को नहीं खोज पाया पर अध्यात्म का खोज केंद्र होता है अन्तःगत. और सहस्त्राब्दियों पहले ही सिद्धाश्रम ने ये स्पष्ट कर दिया था की १४७ अणु होते है, और ये समस्त अणु उपस्थित होते हैं सूर्य की रश्मियों में.

सूर्य की वे रश्मियाँ जिनका परोक्ष रूप से रंग श्वेत

the sun rays.

Sun rays that their indirectly color white is visible fact they are equipped with 7 different colors and that joint will appear white. Purple, blue, green, yellow, violet, orange and red colors that are seven of these rays.7 Ashva chariot of the sun in the Vedas, the ascent is described then it is very esoteric meaning. If you understand the science that is before the sun rays to understand its 7 letter. Each beam 21 properties containing molecules, thus 7X21 = 147....Isn't it hnna? So each molecule has its own merits.

THE WHOLE UNIVERSE IS MADE UP OF 147 MOLECULES, WHETHER MORE OR LESS BASED ON THIS ONLY, AS IF A PAPER IS MADE FROM 21 MOLECULES AND GOLD BY 97 MOLECULES, THUS THE NUMBER OF MOLECULES WILL BE DIFFERENT IN EACH OBJECT OR CREATURE. IF WE UNDERSTANDS THE SUN SCIENCE CORE, THE MOLECULES THEIR PROPERTIES WILL BE EASY AND SEAMLESS CONVERSION OF THE SUBSTANCE.

EACH MOLECULE HAS ITS OWN MERITS, IE 147 MOLECULES TO UNDERSTAND THEIR PROPERTIES AFTER THE CONSTRUCTION AND CONVERSION THAT IS COMFORTABLE BECAUSE EVERY ONE HAVE IT'S ACTION ANIMATION DIVINE ACTION, FOR IT PROVIDED SADHGURU SEEKER DIVINE SPELLS FROM YOUR HOME HAVE TO PRACTICE TO PRONOUNCE THE MANTRA AND HAS TO BE PROVEN, AND LET ME TELL YOU THE MEANING OF THE MUKH IS JIWHA, THROAT, TEETH, MOUTH BREATHING OR DOES NOT FEED TUBE,ACTUALLY IT MEANS 'NAVEL',THE MEANING OF THE MANTRA.

SWADHISHTANA IS OF THE SELF-INSTALLATION, BUILDING OR HOME IS WHERE THE MANTRA AND REACHED TO NAVEL AND THROUGH ALL THE AIR AND PRESENT GLORY OF THE ENERGY OF FIRE GIVES LIFE'S SUBSTANCE OR ORGANISM AND THE MANTRA THAT THE SEEKER HAS PROVEN HE CAN CREATE NEW CREATION CAN DONATE LIFE, LORD KRISHNA, THE SON OF HIS MASTER STIMULUS SAGE, ABHIMANYU SON WAS TESTED AND SO LIFE LIKE THAT OF 1984 AMARNATH YATRA SADGURUDEO IN THE EVENT TO LIFE TO SUMITRA. WHO CAN FORGET THIS HNNNNA? THAT EACH BEAM COLOR IS YOUR CHARACTER OR HIS OWNER IS AND IS A BRAHMRISHI THEIR OWN SPELLS, THIS SPELL 21-21 REMEMBER THE SPECIAL PROPERTIES OF MOLECULES ARE EQUIPPED WITH THESE MANTRAS

दृष्टिगोचर होता है वस्तुतः वे ७ अलग अलग रंगों से युक्त होती है तथा जिनका संयुक्त रूप सफ़ेद ही दिखाई देगा. बैंगनी, जामुनी,नीला,हरा, पीला,नारंगी और लाल ये सात रंग होते हैं इन किरणों के. वेदों में सूर्य को ७ अश्वो के रथ पर आरोहण करते हुए बताया है तो उसका बहुत ही गूढ अर्थ है. अर्थात सूर्य विज्ञानं को यदि समझना हो तो पहले उसकी ७ वर्णीय किरणों को समझना होगा. प्रत्येक किरण २१ अणुओं के गुणों से युक्त होती है, इस प्रकार ७X२१=१४७ हो गए ना. प्रत्येक अणु का अपना गुण होता है.

समग्र सृष्टि इन्ही १४७ अणुओं से निर्मित है , चाहे कम हो या ज्यादा पर है इसी से निर्मित, जैसे एक कागज २१ अणुओ से निर्मित है तो स्वर्ण ९७ अणुओ से निर्मित है, इस प्रकार अणुओं की संख्या प्रत्येक वस्तु या प्राणी में भिन्न भिन्न होगी. और सूर्य विज्ञानं का मूल ही ये है की यदि उन अणुओं को उनके गुणों को समझ लिया जाये तो पदार्थ का रूपांतरण सहज हो जायेगा.

प्रत्येक अणु का अपना गुण है, अर्थात १४७ अणुओं के अपने अपने गुण हैं जिन्हें समझने के बाद निर्माण और रूपांतरण की क्रिया सहज हो जाती है क्यूंकि ये क्रिया ब्रह्म क्रिया है संजीवन क्रिया है,इसके लिए साधक को सद्गुरु प्रदत्त ब्रह्म मंत्र का अपने मुख से उच्चारण करने का अभ्यास करना पड़ता है उस क्रिया में सिद्ध होना पड़ता है, और मैं आपको बता दूँ की मुख का अर्थ जिव्हा, कंठ, दांत,श्वास या आहार नली नहीं होता मुख का अर्थ होता है नाभि,

जब मंत्र स्वाधिष्ठान का अर्थ ही होता है स्वयं का अधिष्ठान , भवन या घर जहा से मंत्र नाभि तक पहुचता है और नाभि तक पहुच कर समस्त वायु और उपस्थित अग्नि की ऊर्जा से तेजोमय होकर जीवन देता है पदार्थ या जीव को. और जिस भी साधक को ये मंत्र सिद्ध होता है वो नवीन सृष्टि का सृजन कर सकता है जीवन दान दे सकता है, भगवान कृष्ण ने अपने गुरु संदीपन ऋषि के पुत्र को, अभिमन्यू पुत्र परीक्षित को ऐसे ही तो जीवन दिया था और १९८४ की अमरनाथ यात्रा में सदगुरूदेव द्वारा सुमित्रा को पुनः जीवन देने की घटना कौन भूल सकता है, प्रत्येक किरण जिनका अपना वर्ण या रंग होता

BEEJAKSHAROAN FEATURE OR COMBINATION OF SUBSTANCES ACCORDING TO THE CROSS SAMPAUT AND WHICH IS PROVIDED TO SADHAK BY HIS SADGURU AND TURN THAT KNOWLEDGE SEEKER, THEN YOU OWN SCRIPTURES RUPNO SEEKER MAKES UP THE SPLIT TAKES THE SAME SUIT YOUR SOUL THE UPCOMING POINTS OF THE SUBJECT WILL BE CLEAR, BECAUSE THIS SUBJECT CAN BE WRITTEN OVER 1000 PAGES), THE NATURE OF MATTER ALWAYS PRESENT IN THE LIVE SHOW HE'S NOT GIVING IT IS DIFFERENT WHEN ANY POWER OR MUTUAL AID THROUGH THE SUM OF THEIR COMPONENT MOLECULES MUST BE DELIVERED TO START APPEARING IN THE CONDITION THEY APPEAR.

A SUN SCIENTIST OR A SCHOLAR OF RAS SHASTRA WHEN HE KNOWS VERY WELL HOW THESE MOLECULES AND HOW TO CATCH HER YOGA OR SOME OTHER MOLECULE TO FRAGMENTATION, WHEN THE KEY IS THAT WHICH WAY THE MOLECULES TO BE DONE AND HOW TO SPLIT LET THEM DO YOGA A NEW MATERIAL RECEIPT. AND IT IS ALSO EXTREMELY DIFFICULT TASK, THINK HOW EASY IT IS TO READ REMEMBER NOT TO SPLIT THE MOLECULES TO THEIR TOTALS, BUT IT IS NOT THE RIGHT WAY BECAUSE YOU CAN NOT FISSION OR FUSION OF THE ACTION SO EXTREME THAT THE ENERGY IS FREE IS DISASTROUS FOR MANY CENTURIES AND THEIR DESTRUCTION DOES INFLUENCE HUMAN CULTURE AND LIFE.

I KNOW YOU WOULD NOT BE FORGOTTEN THE HIROSHIMA AND NAGASAKI CASE. ARE YOU? WELL I SHALL TELL YOU THE SUM OF THESE RAYS OR FISSION WHILE 2 ARE AN IMPORTANT FACTOR THAT BRINGS SUCCESS TO US.1.AFLAO CONTAINING 147 DIFFERENT MOLECULES CONTAINING THE BEAM FROM WHICH THE LENS CAN PASS AND SPEED BY WHICH THE SUM OF HER WISHFUL ELEMENTS MOLECULES CAN BE MADE AND ANOTHER "ANU SIDDHI MAARTNDE GOLOK" WHICH YOGI WEAR AROUND YOUR NECK AND BY WHICH WITHOUT LENSES OR SANALYITH THE MOLECULES CAN BE SEPARATED.

THE BUILDING ITSELF IS EXTREMELY DIFFICULT, AND FIND THAT THE SEVEN MANTRAS CAN BE PROVEN THAT THE COMFORTABLE MANTRA IS CALLED SAPTA RISHI TO PROVE THAT THE 147 MOLECULES ARE USED. THE PILL AND MANUFACTURE OF MERCURY BY ITSELF IS LENS OR SHOULD SAY THIS IS BY COTTON YARN BY SUCH RITES

है उनका स्वामी एक ब्रह्मऋषि होता है और होता है उनका अपना एक मंत्र,याद रखिये ये मंत्र २१-२१ विशेष अणुओं के गुणों से युक्त होते हैं |

और इन मन्त्रों के बीजाक्षरों का परस्पर सम्पुट पदार्थों के गुणधर्म या संयोजन के अनुसार किया जाता है जिसका ज्ञान साधक को सद्गुरु प्रदान कर देते है, तब साधक यदि स्वयं के शास्त्र रूप्नो का निर्माण करता है तो विभक्त कर लेता है उसी अनुरूप अपनी आत्मा को भी(इस विषय की गूढता तो आगे आने वाले अंको में स्पष्ट की जायेगी, क्यूंकि इसी विषय पर १००० पन्ने लिखे जा सकते हैं) ,पदार्थ तो प्रकृति में सदैव ही उपस्थित रहते हैं ये अलग बात है की वो दिखाई ना दे पर जब किसी भी शक्ति या उपादान के माध्यम से उनके घटक अणुओं का परस्पर योग कर दिया जाये तो वे प्रकट अवस्था में दिखने लगते हैं.

एक सूर्य विज्ञानी या रस शास्त्र का ज्ञाता ये भली भांति जानता है की उसे कब किस अणु को पकड़ना है और कब उसका किसी और अणु से योग या विखंडन करना है,महत्वपूर्ण यही है की कब उन अणुओं को किस तरीके से विभक्त किया जाये और कैसे उनका योग कर किसी नवीन पदार्थ की प्राप्ति की जाये. और ये भी अत्यंत दुष्कर कार्य है , याद रखिये पढ़ने में कितना आसान लगता है न अणुओं को विभक्त कर उनका योग करना, पर ऐसा है नहीं क्यूंकि यदि सही तरीके से विखंडन या संलयन की क्रिया न हो पाए तो जो ऊर्जा मुक्त होती है वो अत्यधिक विनाशकारी होती है और कई सदियों तक अपने विनाश से मानव संस्कृति और जीवन को प्रभावित कर देती है,

मुझे पता है हिरोशिमा और नागासाकी को आप भूले नहीं होंगे. खैर मैं आपको इतना बता दूँ की इन किरणों का योग या विखंडन करते समय २ महत्वपूर्ण उपादान होते हैं जिनका प्रयोग करने से सफलता मिलती है १. १४७ फलको से युक्त लेंस जिसमे से भिन्न भिन्न अणुओं से युक्त किरण ही गुजर सकती है और जिसको गति देकर उससे मनोवांछित तत्वों के अणुओं का योग कराया जा सके और दूसरा "अणु सिद्धि मार्तंड गोलक" जिसको योगी अपने गले में धारण करते है और

HAVE BEEN OVER 22 ARE THE VALUES AFTER 18 BECAUSE MERCURY THAT IS CONSUMED BY CONTRARY MOTION SEEMS TO LIVE AGAIN HAVE BEEN SOLID AND LIQUID CURVE SEEMS TO COME AND 22 THEY COMPLETELY TRANSPARENT AND GENERATING CAPACITY THAT CONSISTS OF IS, LIKE MERCURY THE MOLECULE ACCOMPLISHMENT MAARTNDE SPELLS HAIR INVERTED USING THIS TYPE OF EYEBALL AND LENS MADE IS. THE ACTION IS EXTREMELY DIFFICULT AND CONFIDENTIAL.

UNDER THE SURYA TANTRA UNWORKABLE TANTRIC ACTIONS ALSO CAN BE EASILY PERFORMED AS TO ACHIEVE LAKSHMI THE LEGISLATION OF THE PROCESS OF ARC BHUBANESWARI,FOR HYPNOTISING THE PUNJIBHUT SUN TO VASHIKARAN MANTRA SADHANA, HERE I AM SPECIFYING SIMILAR USE.THROUGH WHICH THE NINE PLANETS POWER MAKING THEIR FRIENDLY FOR US AND THE LAKSHMI VASHIKARAN CAN ALSO HAPPEN.LEAVE THE COMMON MAN SPELL AND WHAT EVER SADGURUDEO TAUGHT ME FROM THESE TEXTS AND TO WHICH I USE AND GOT ADVANTAGES.

SO FROM SUNDAY MORNING THE MANTRA CHANTING CAN BE STARTED.DIRECTION SHOULD BE TOWARDS EAST AND SHALL BE WHITE CLOTHING OR ASAN POSTURE. TAKE BATH AND GET READ BEFORE SUNRISE AND OFFER THE WATER MIXED WITH KUMKUM BEFORE SUNRISE TO SUN AND SHOULD WORSHIP THEM AND ASK THEM TO MAKE OFFERINGS AND PRAY FOR SUCCESS FROM SADGURUDEV. AFTER SITTING ON THE ASANA DAILY MEDITATION AND WORSHIP THE SADGURUDEV IN ACCORDANCE WITH LAW TO WORSHIP THE SUN, OFFER THE SWEETS I.E. NAVEDYA AND GURU MANTRA SHOULD BE DONE BY RUDRAKSHA ROSARY BEADS FOR 16(BEADS MALAS) CHANTING,

THEN FOLLOWING MANTRA 11 MALAS TO MAKE IT TO TILL NEXT SUNDAY'S ACTION. THEN IF YOU WANT TO USE THIS MANTRA WHENEVER FEASIBLE INSTEAD OF A CERTAIN MAN OR WOMAN BY NAME 108 TIMES CHANTING TO 3 DAYS. HMMMM ISN'T IT GOOD! NOW YOU WILL SEE URSELF IMMERSED IN AN OCEAN OF SURPRISE EFFECT.

Om namo bhagwate shri suryaay hreem sahastra kirnaay aim atulbal parakramaay navgrah dashdikpaal

जिसके द्वारा बगैर लेंस के भी अणुओं को विभक्त या संलयित किया जा सकता है.

इसका निर्माण ही अत्यंत दुष्कर है, और जिसे प्राप्त कर उन सप्त मन्त्रों को सहज ही सिद्ध किये जा सकते हैं जिन्हें सप्त ऋषि मंत्र कहा जाता है और जो की १४७ अणुओं को सिद्ध करने में प्रयोग किये जाते हैं. इस गुटिका और लेंस का निर्माण पारद के द्वारा ही होता है या ये कहना चाहिए की सूत के द्वारा होता है ऐसे सूत के द्वारा जिस पर २२ संस्कार हो चुके हो क्यूंकि १८ संस्कार के बाद पारद विपरीत गति करने लगता है अर्थात भस्म रूप से पुनः जीवित होता हुआ ठोस और द्रव्य की अवस्था में आने लगता है तथा २२वे में पूरी तरह पारदर्शी और सृजन क्षमता से युक्त हो जाता है , ऐसे पारद से ही अणु सिद्धि मार्तंड मंत्र का लोम विलोम प्रयोग कर इस प्रकार का गोलक और लेंस निर्मित किया जाता है. ये क्रिया अत्यंत दुष्कर और गोपनीय है.

सूर्य तंत्र के अंतर्गत असाध्य तांत्रिक क्रियाओं को भी सरलता से संपन्न किया जा सकता है जैसे लक्ष्मी प्राप्ति के लिए आर्क भुवनेश्वरी की साधना का विधान है तो वशीकरण के लिए पुंजीभूत सूर्य वशीकरण मंत्र की साधना का, यहाँ मैं उसी वशीकरण प्रयोग को उल्लेखित कर रहा हूँ. जिसके द्वारा सभी नवग्रहों की शक्ति को अपने अनुकूल बनाते हुए लक्ष्मी तक का वशीकरण किया जा सकता है सामान्य मनुष्य की तो बात ही छोडिये और जो मुझे सदगुरूदेव ने इस ग्रन्थ के लिए बताया था और जिसका प्रयोग कर मैंने लाभ भी लिया.

रविवार की प्रातः से इस मंत्र का प्रयोग किया जाता है. दिशा पूर्व रहेगी, वस्त्र वा आसन सफ़ेद होंगे. सूर्योदय के पूर्व स्नान कर सूर्य को कुमकुम मिले जल का अर्पण कर उनकी पूजा करे और उनसे तथा सदगुरूदेव से पूर्ण सफलता की प्रार्थना करे. बाद में आसन पर बैठकर दैनिक साधना विधि के अनुसार गुरु पूजन कर धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित कर गुरु मंत्र की १६ माला करे रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की ११ माला जप करें ये क्रिया अगले रविवार तक करनी है. इसके बाद जब भी इस मंत्र का प्रयोग करना हो तो अमुक की जगह साध्य पुरुष या स्त्री का नाम लेकर १०८ बार जप ३ दिनों तक करें. प्रभाव देखकर आप

lakshmidevtaay dharmakarmasahitaay amuknaam naathay naathay mohay aakarshay aakarshay daasanudaas kuru kuru vasham kuru kuru swaha.

"Soot Rahasyam"quoted in the pages of many secrets who constantly are impatient to open up in each issue in front u,so my dear reader just wait and watch the next issue for the opening of a new mystery.

In continue..........

खुद आश्चर्य के सागर में डूब जायेंगे.

ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रीं सहस्र किरणाय ऐं अतुलबल पराक्रमाय नवग्रहदशदिक्पाल लक्ष्मीदेवताय धर्मकर्मसहिताय अमुकनाम नाथय नाथय मोहय मोहय आकर्षय आकर्षय दासानुदासं कुरु कुरु वशं कुरु कुरु स्वाहा .

'सूत रहस्यम" के पन्नों में उद्धृत ऐसे कई रहस्य जो की लगातार प्रत्येक अंक में खुलने को बेक़रार हैं , तो प्रतीक्षा कीजिये अगले अंक का किसी नवीन रहस्य के उद्घाटन के लिए.

क्रमशः अगले अंको में

A person should not be too honest. Straight trees are cut first and honest people are screwed first.

As soon as the fear approaches near, attack and destroy it.

Chanakya

व्यक्ति को आत्याधिक ईमानदार नहीं होना चाहिए, क्योकि सीधे खड़े वृक्ष ही सबसे पहले काटे जाते हैं,आत्याधिक ईमानदार भी सबसे पहले शिकार बनते हैं. |

जैसे ही भय से सामना हो ,उस पर प्रहार कर उसे नष्ट कर दो |

चाणक्य

Lakshmi Sadhana ke Divya Mahurat

ज्योतिष और काल ज्ञान कि दृष्टी में

त्राहि त्राहि दुःख हारिणी, हरहु वेगी सब त्रास ।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करहु शत्रु का नास ॥

Who is not among us want to have wish that he can achieve all the things he wants , but very few are the fortunate in whose fate , divine mother wrote that. The writer of the goddess Lakshmi very clearly written and truly to "sab kuch sambhav hi jata ,man nahi ghabrata"i.e. all things is possible and no hesitation or tension comes . .who is the fortunate one, to whom fate, goddess lashami 's 1008 forms written. we all do or did sadhana, but some will get part result ,some more, why it is so.,

Recently we all did the mahalakshmi poojan in our home. in vrashabh lagna(in Taurus ascendant), do you know that whole day of deepawali is of having the blessing of mother divine .once Sadgurudev ji said that in mesh lagna(in Aries ascendant). Tantric do the pooja, and in Taurus... we common house holder, and in Gemini ascendant if childless couple do the pooja and sadhana their wish foe a child can be fulfilled. Like that he described in details the importance of various lagna, for various cause and sadhana related to that. this is very secretive and important facts that if any house holder did the sadhana in Gemini i.e. mithun lagna. Then he will surely have more blessing and gain in financial term in coming year. But why that is so, we all are doing the sadhana and pooja in tarus lagna.

In view of poojya Sadgurudev ji, the pooja and sadhana ,if anyone do in the period mentioned above is also true, but reason is this tarus is a achar lagna(means stationary lagna). That means one who undertake any sadhana or pooja in that period , his financial condition

हम सभी मे से कोन नहीं चाहता की वह वह सभी प्राप्त कर पाए जो उसकी इच्छा हैं पर कितने के भाग्य मैं माँ ने ये लिखा हैं, जिसने भी लक्ष्मी आरती लिखा हैं उन्होंने ठीक ही लिखा हैं"सब कुछ संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ".१००८ रूपों युक्त माँ कितने के भाग्य मैं हैं. हम सभी साधना करते हैं पर कभी कभी किसी को परिणाम कम किसी को ज्यादा मिलता हैं ऐसा क्यों.

अभी दीपावली के रात को हम सभी ने पूजन किया होगा वृषभ लग्न में(स्थिर लग्न में). क्या आप जानते हैं की पूरा दिन ही लक्ष्मी मय रहता हैं उस दिन,सदगुरुदेव जी कहते हैं की मेष लग्न में तांत्रिक पूजा करते हैं , वृषभ लग्न में साधारण गृहस्थ लोग, मिथुन में जिनके बच्चे न हो वो पूजा करते हैं इस तरह सभी लग्न में पूजा करने और साधना करने के विधान को उन्होंने विस्तार से बताया. हैं.यह एक विशिस्ट गोपनीय तथ्य हैं की यदि गृहस्थ यदि मिथुन लग्न में पूजा और साधना करे तो और भी अधिक अनुकूलता उसे प्राप्त होती हैं, पर ये कैसे संभव हैं, आप कहेगे की हम तो बृषभ में ही पूजा करते आरहे हैं,

सदगुरुदेव जी के दृष्टी में ऊपर वर्णित विधान भी सही हैं पर क्योंकि लग्न स्थिर हैं इसलिए पूजन के समय की आर्थिक अबस्था ही पूरे वर्षभर के लिए स्थिर हो जाती हैं जो समान्यतः अनुकूल नहीं कही जाता, जबकि मिथुन प्रतिक हैं नव निर्माण का, और सारे विश्व में निर्माण की प्रक्रिया लगातार चलती रहती हैं ही, तो यदि इस लग्न में साधना प्रारभ किया जाये तो निश्चय ही उसके जीवन में

at the time of his pooja gets stationary for rest of the year. which is not very suitable. since maithun stands a for creation , and the creation process always run in whole universe. so if any sadhana or pooja performed in this period produce more financial gain for rest of the year.

Since this mithun lagna period is not suitable for childless couple but all the worshipper of ma kamakhya, and also the sadhak who took interest in or of vaam marg or I would say who undertake the sadhana of shiv and shakti side by side. This mithun lagna period is like boon or amrit.many of the trantrik whom we can say maha tantraik, by their view in this night such a condition created in universe in that our visible world and invisible world of yaksh lok dev lok a bridge is created, so that with little effort in sadhana ,desired result can be achieved. What is the importance of other lagna can be described in any coming issue.

As you all are ware that Wednesday , Thursday, Friday is consider good for goddess Lakshmi , and whole month of kartik is known as Lakshmi month, same is the effect of month of bhadrapad,asshvin .in any shukla paksh(moon ascending period) ,'s Thursday can be consider very good.but in the same day if tithi of panchami, dashmi,or full moon day comes that will be a boon. Guru pushpa day is also a best day for goddess Lakshmi sadhana or poojan. mahendra kaal and amrit kaal is always suitable, but how many of us knew the very minute periodi.e. sookshma kaal of that..

For example

Mahendra kaal – goddess Laski

- In chaitra month—from 11 to 15 minits rules by goddess Lakshmi.
- In jyashtha month---- 16 to 20 minit
- In ashad month-------21 to 25 minit

Please do read the last portion of the very famous book of Sadgurudev ji" jyotish and kaal nirnay".in general people does not go in deep, all are happy with mahendra and a mriyt kaal , that s enough for them, but he describe in details even the lord of the part of mahendra and amrit kaal in details .without utility why Sadgurudev ji describe in details that section.if you take in consider the lord of the kaal portion definitely you

और अधिक आर्थिक उन्नति की सम्भाब्नाये बनती हैं.

क्योंकि मिथुन न केबल संतान प्राप्ति के लोगों के लिए बल्कि जो भी माँ कामख्या के उपासक ही व साथ ही साथ वाम मार्ग में रूचि रखते हैं या यू कहूँ , की शिव शक्ति की साथ साथ पूजा करते हैं उनके लिए तो मानों अमृत काल है हैं, अनेक उच्च कोटि के साधक जिन्हें महा तांत्रिक की उपमा दी जाये, उनके मतानुसार इस दिन, कुछ ऐसी स्थिति बनती हैं जिसमे की न केबल हमारा दृष्टी युक्त ब्रम्हांड ही नहीं बल्कि यक्ष लोक और देव लोकों के मध्य एक ऐसे सेतु का निर्माण होता हैं , जब की मात्र थोड़ी से साधना से ही मनोरथ सिद्ध किये जा सकते हैं , अन्य लग्न की प्रभावकता के बारे में अग्रिम लेखो में बताया जायेगा.

ये तो आप जानते हैं की बुधवार, गुरु बार और शुक्रबार तो हैं ही. साथ ही साथ पूरा कार्तिक मास भी इसके लिए पहले से निर्धारित हैं ही .साथ ही साथ भाद्र पद , आश्विन भी इसके लिए उपयोग में लिए जा सकती हैं. यदि शुक्ल पक्ष का गुरुबार मिले तो बहुत ही अच्छा हैं .पर ही साथ ही साथ इस दिन पंचमी दशमी, या पूर्णिमा तिथि हो तो अतिउत्तम होगा

गुरु पुष्प का योग तो विख्यात हैं ही.

महेंद्र काल .अमृत काल तो सर्वथा उपयोगी हैं ही, पर कितने इसके सूक्ष्म काल को भी जानते हैं.

उदहारण के रूप में.

महेंद्र काल के--देवता लक्ष्मी-

- चैत्र मास के पहले ---११ से १५ मिनिट तक हैं
- ज्येष्ठ मास में -- १६ से २० मिनिट तक..
- आसाढ़ मास में-- २१ से२५ मिनिट

आप पूज्य सदगुरुदेव जी द्वारा लिखित "ज्योतिष एवं काल निर्णय " के अंत में दिए बिस्तृत विवरणों को ध्यान में रखे .साधारणतः अधिकाश रूप से उसे लोग ध्यान से नहीं देखते हैं और महेंद्र या अमृत काल को देख कर ही संतुष्ट हो जाते हैं ऐसा नहीं हैं , बिना उपयोगिता के पूज्य सदगुरुदेव ने वह

will be more closer to success, for Lakshmi sadhana , lord Vishnu and Shiva period can also be taken without any doubt. please follow the Indian month mainly since whole book is based on that, you can easily get the details of current running month through local newspaper and local panchang or calendar even from mobile too.

Side by side one of the most important facts is that, many times various sadhak recite many strota in their pooja or sadhana, like Lakshmi or god or goddess. they generally consider that very lightly, they know not very serious that the Sanskrit is the dev vani(language of the gods).in any speking error , could cause harm. Like on some of the places it is written as "a Lakshmi" means draidrata, but on the group of other letter it appears as written like "lakshmi".may be the meaning of that removal of a Lakshmi ,but what we are pronouncing the removal of Lakshmi. Surely result will not be favorable to us. its better first we try to understand the meaning behind any strota,and only after that start reciting as mentioned. though we know that shraddha and feeling play a lot role in success but can be not speak a little bit clearer.

Many times Sadgurudev jib given permission that if a sadhak is not able to pronounce it clearly, than Hindi translation will induce at least some benefit to him.

The period ,either as per your horoscope or moon sign, having the situation in which lord of lab bhav, or labh bhav is in strength/powerful side by side, lord of ascendant also get stronger and if jupitor has some positive effect on either lagna or labh bhav,the sadhana started in that period definitely get success. If you consider the facts, and with the blessing of Sadgurudev jib, surely you can have success….

न समझया होता. आप एक बार देखे तो पाएंगे उन्होंने , काल के देवता तक का पूर्ण विवरण दिया हैं यदि आप काल के देवता को ध्यान मैं रख कर काम करेंगे तो सफलता के और करीब होंगे ही.देवता यदि लक्ष्मी हो या भगवान् विष्णु हो या शिव हो तो भी उचित रहता हैं.

हाँ ये एक जरुरी तथ्य हैं की आप भारतीय महिना को ही ध्यान मैं रखे , साधारण पंचांग या कैलेंडर में भी या लोकल न्यूज़ पेपर में भी इनका उल्लेख मिल जाता हैं, उसे ध्यान में रख कर ही ,पूज्य सदगुरुदेव जी कि काल निर्णय को देखें.

साथ ही साथ यह एक अति महत्त्व पूर्ण तथ्य यह हैं कि साधक कई बार लक्ष्मी या अन्य स्त्रोतों का पाठ तो करते हैं पर वे इस स्त्रोतों को सामान्य मान कर उच्चारण करते जाते हैं उन्हें ये भी ध्यान नहीं रहता कि वे क्या उच्चारित करते जा रहे हैं , संस्कृत देव वाणी हैं , उसमे थोडा सा भी उच्चारण दोष आपके लिए समस्या करक बन जाता हैं जैसे , कई जगह लिखा रहता हैं "अ लक्ष्मी ", जो कि अन्य सब्दों से मिल कर मनो ऐसा लगता हैं हैं कि "लक्ष्मी " लिखा हैं , वहां पर मतलब अलक्ष्मी को दूर करना हैं , पर जो हम पढ़ते हैं उसका अर्थ मानो हम लक्ष्मी को दूर करना पढ़ जाते हैं ,निश्चय ही परिणाम हमारे अनुकूल नहीं होगा , तो ये अच्छा होगा पहले हम उस स्त्रोत का अर्थ समझे , फिर उसका सही उच्चारण भी करना सीखे ,हम ये मानते हैं कि स्त्रोत भावानुकूल होते हैं फिर भी इनका ध्यान रखे ही

सदगुरुदेव जी ने कई बार ये साधक को . संस्कृत का उच्चारण न जानने के कारण हिंदी में उसका अनुवाद का पाठ करने का आज्ञा दी हैं, शायद उनका मंतव्य ये रहा होगा कि कुछ तो लाभ तो साधक को प्राप्त होगा ही.

जिस काल में आपकी अपनी कुडली के हिसाब से या राशी कि दृष्टी से लाभ भाव या उसका अधिपति ,साथ ही साथ लग्नेश बलि हो तथा गुरु कि दृष्टी यदि लाभ भाव(एकादश) पर या लग्न पर हो तो उस समय प्रारंभ कि गयी साधना और भी मनोकुल परिणाम देती हैं. तो आप यदि सदगुरुदेव जी के आशीर्वाद के साथ इन तथ्यों पर ध्यान देते हुए साधना

Vashikaran Vidya

(वर्तमान काल के सन्दर्भ में दुर्लभ प्रयोग)

From the very ancient time, Vashikaran Vidhya had remained very favorite into the mass of the people. Very well known as one of the tantrik process among Shatkarma, Vashikaran simply means to subjugate someone, to get control over mind of someone. In fact this science was one of the day to day useful for everyone in ancient time. But the misuse of the vashikaran vidhya made it a scary thing in general public.

When we see into history of tantra, this science was often used by various kings to marry their appropriate royal family girls and to spread the kingdoms, not even this but through this knowledge they used to convert their enemies into their friends. Where as farmers used this science to their animals, to have total control over them. Vendors and merchants used to make this science part of their business for the customer fluency. In general, this was part of day to day life of everyone.

Now, why one should use vashikaran on someone? Well, the answer is if you make some one to obey you, your works will be done easily. it is not at all that whatever you do some tantra prayog on the particular person for vashikaran and his/her life will become problematic or something. These are really misconception for the vashikaran. For example there are several sadhana of Devta vashikaran, does it mean that one should remain out of those sadhana just because those sadhanas belongs to vashikaran ? No no. Vashikaran means to get control over. And in any term it is not bad thing at all.

प्राचीन समय में इस विद्या ,जो जन सामान्य के मध्य वशीकरण विद्या के नाम से बेहद प्रसिद्द थी, तांत्रिक षट कर्म के एक भाग के रूप में यह जानी जाती थी| साधारण शाब्दिक अर्थ तो यही हैं की किसी को अपने वशी भूत करना , किसी के दिल दिमाग पर पूर्ण अधिकार करना | सत्य तो ये हैं की उस प्राचीन काल में में यह व्यक्ति की दिन प्रति दिन की आवस्यकता में शामिल था | परन्तु इस विद्या के दुरूपयोग ने इसे सामान्य जन के मध्य भय और घृणा का पात्र बना दिया .

जब हम तंत्र के इतिहास को देखते हैं तो , इस विद्या का प्रयोग और उपयोग राजा और महाराजों द्वारा , राजपरिवारों में योग्य कन्याओं से विवाह करने के लिए व . अपने राज्य का बिस्तार करने के लिए, न केबल यही बल्कि इस विद्या का उपयोग उन्होंने अपने शत्रुओं को मित्र बनाने के लिए , करा जाना पाते हैं. वही कृषि कार्य में लगे किसानो ने ,अपने जानवरों को पूर्ण वशीभूत में रखने के लिए किया . वहीं व्यापार जगत से जुड़े व्यक्तियों ने अपने ग्राहकों की संख्या और उनके बिश्वास को जीतने के लिया किया |साधारणतः ये प्रत्येक व्यक्ति कि दिन प्रतिदिन की आवश्यकता का एक भाग थी .

अब ये प्रश्न उठता हैं कि क्यों इस वशीकरण विद्या का प्रयोग किसी पर भी किया जाना चाहिए ,इसका का साधारण सा उत्तर तो यही होगा कि यदि आप चाहते हैं कि कोई आप कि बात माने तो आप द्वारा कराया जाने वाला कार्य आसानी से हो सकता हैं. यहाँ इसका मतलब ये नहीं हैं कि जिस पर भी आप ये प्रयोग करेंगे उसके जीवन में किसी प्रकार का व्यवधान या परेशानी आ जाएगी.कुछ इस विज्ञानं के बारे में गलत धारणाये हैं जैसे कि उदाहरण के लिए देवता वशीकरण, तो क्या सिर्फ इसी एक मात्र कारण के ये दिव्य साधना , वशीकरण वर्ग की हैं आप करना नहीं चाहेंगे . | नहीं नहीं

In today's time, we find so many difficulties and so many problems occurring into the daily life. It is just because we have not given much importance to the treasure of vashikaran sadhanas. Where we can use vashikaran sadhana in day to day life? Here are some examples

- To make superiors under control
- To control the enemies
- To get the maximum output from the business
- To have one whom we like to have into life as life partner
- To let our spouse obey us for whole life
- To control our kids when they are on wrong way

So, as you seen, there are several things which could be accomplished through vashikaran vidhya and the benefit of the same could be generated through whole life.

Here are some of the very simple vashikaran prayogs which if done with full faith can surely gives desired results.

****

For vashikaran of Husband:

Prepare a chapatti of wheat and write your husband's name on it with help of kum kum

Then write this mantra under it

" Om gauri mam pati me vashyam "

After that the chapatti should be offered to black dog by chanting this mantra. Make sure that Dog should be fully black. Do this whole process for 3 times. (No rosary needed, could be done on any day, at any time)
****

For customers Vashikaran:

Take a bunch of incense stick in the night time; chant the following mantra for 4 hours by holding incense sticks into hand and remembering your isht.

, वशीकरण का मतलब अधिकार करना होता हैं. और ये शब्दों में इतना ख़राब तो नहीं हैं |.

आज के अत्याधुनिक समय में, हमारे दैनिक जीवन में अनेको समस्यांए और कठिनाई पाते हैं| और ये सब इस बात का परिणाम हैं कि हमने इन वशीकरण साधनाए को कभी महत्वपूर्ण माना ही नहीं | आप ये पूछेगे कि कहाँ पर इस वशीकरण साधनाए प्रयोग कि जा सकती हैं , यहाँ पर कुछ उदाहरण आपके लिए प्रस्तुत हैं.

- उच्चाधिकारी को अपने नियंत्रण में /अनुकूल रखने हेतु.
- शत्रुओं को नियंत्रण में रखने हेतु
- व्यापर में अधिक लाभ प्राप्त करने हेतु.
- हम जिसे अपना जीवन साथी बनाना चाहे ,उसे प्राप्त करने हेतु
- हमारे जीवन साथी को जीवन भर अपने अनुकूल बनाने के लिए
- गलत रास्ते पर जा रहे ,अपने बच्चों को सही रास्ते पर लाने के लिए .

तो अपने स्वयं देखा हैं कि अनेको आयाम हैं इस विद्या के जिसके माध्यम से ना केबल लाभ पाए जा सकते हैं बल्कि पूर्ण जीवन उनसे लाभंबित उनसे हुआ जा सकता हैं.|

यहाँ पर आपके सामने कुछ वशीकरण के सरल प्रयोग रख रहा हूँ, जिन्हें आप पूर्ण बिस्वास के साथ करेंगे तो निश्चय ही मनोकुल परिणाम पाएंगे .

****

पति वशीकरण प्रयोग

गेहूं की एक रोटी बनाये उस पर अंपने पति का नाम कुमकुम से लिखे और इसके नीचे निम्न मंत्र को लिखे

"ॐ गौरी मम पति में वश्यं"

इसके बाद इसी मंत्र का उच्चारण करते हुए , इस रोटी को एक काले कुत्ते को खिला दे , ध्यान रखे की वह कुत्ता पूर्ण काले रंग का ही हो. यह सम्पूर्ण प्रक्रिया तीन दिन करे, (कोई माला की आवश्यता नहीं हैं, किसी भी दिन और किसी भी समय पर की जा सकती हैं.)

****

ग्राहक वशीकरण प्रयोग

" vyapar vriddhim kuru kuru ishtah "

From next day light daily one incense stick at your business place. The customers which will visit the place, will keep on visiting again and again. (No rosary needed, could be done on any day)

****

For enemy vashikaran :

Take such a soil on which right leg of the enemy is fallen. Mix soil with smashan bhasm and prepare small idol of human out of it. Write name of your enemy on that and chant following mantra with black hakeek rosary, 11 rosary should be done

"Maheshwari amuk shatru vayshayam kuru kuru swaha"

In mantra name of the enemy should be chant instead of AMUK ,After mantra jap leave the rosary and idol into smashana as soon as possible.

****

So these are the some easy and comfortable processes but faith and devotion works more here than mantra jap. I provided here three main sadhana for different issues and hope you all will get benefited from it.

रात्रि के समय अपने इस्ट का ध्यान करते हुए , कुछ अगर बत्ती हाँथ में लेकर ,निम्नांकित मंत्र को ४ घंटे तक जप करना हैं

"व्यापार वृद्धिम कुरु कुरु स्वाहा"

अगले दिन से, प्रति दिन आप एक अगरबत्ती अपने व्यापार स्थल पर जलाएंगे , ग्राहक स्वयं ही बार बार आपके पास आयेंगे ,(इस प्रयोग में भी किसी भी प्रकार की माला की आवश्यकता नहीं हैं ,किसी भी दिन किया जा सकता हैं .)

****

शत्रु वशीकरण प्रयोग

जिस स्थान पर शत्रु का सीधा पैर (राईट साइड ऑफ़ लेग) रखा हो / पड़ा हो |पर उस स्थान की मिटटी ले,इसे श्मशान की भष्म /राख के साथ मिला कर एक मानवाकृति रूपी पुतला बनाये, और उसके ऊपर अपने शत्रु का नाम लिखे , फिर काली हकीक माला से ११ माला मंत्र निम्नांकित मंत्र की जप करे.

"महेश्वरी अमुक शत्रु वश्यं कुरु कुरु स्वाहा "

इस मंत्र में जहाँ पर अमुक लिखा हैं उस जगह अपने शत्रु का नाम ले जैस ही मन्त्र जप पूर्ण हो इस माला और उस पुतले को श्मशान में ही छोड़ आयें,

****

तो ये कुछ ऐसी सरल और प्रभावशाली प्रयोग हैं जिनमे मन्त्र जप से ज्यादा आप के पूर्ण श्रद्धा और विश्वास की महत्ता हैं. यहाँ पर मैंने तीन मतवपूर्ण कार्य के लिए साधना प्रयोग दिए हैं ,आशा करता हूँ की आप उससे निश्चय की लाभ प्राप्त कर पाएंगे .

Better to light a candle than to curse the darkness .सारी रात अधेरा को कोसते रहने से कहीं अच्छा हैं कि एक दिया /मोमबत्ती जलाये .

He who asks is a fool for five minutes, but he who does not ask remains a fool forever. वह जो प्रश्न पूछता हैं ,केबल पांच मिनिट के लिए ही मुर्ख कहलायेगा ,पर जो पूंछता कि नहीं हैं हमेशा ही रहेगा

It's not the load that breaks you down, it's the way you carry it. भार आपको नहीं तोड़ता हैं बल्कि उसे उठाया कैसे जा रहा हैं.ये आपको तोड़ता हैं.

If you can believe, all things are possible to him who believeth. यदि आप विश्वास कर सकते हैं तो हर चीज संभव हैं उसके लिए , जो विस्वास करता हैं.

.

Aghora Vashikaran Sadhana

(एक परम दुर्लभ अदिव्तीय दिव्य साधना आपके मनोरथ को पूर्ण करने के लिए)

" Raavan" is the name in whole tantra field, everyone bow down, he had created such a standard, even today people consider ravan as ,"completeness in tantra".imagagine how was the personality of him, to whom, even bhagvaan shiv address as his son. who established himself as a standard in completeness in either parad field or aghor sadhana and all related field's have heard from a lot, that he was an incarnation of a great siddha,but who was the siddha who, incarnated as a Ravan, what would be the personalty of the siddha ,no one was able to know,what would ot type of sadhanye he did completely.

Deeply merged in these of thought, I was meeting with maharishi davdatt,the world of siddha, can only be understand by such a one. may be ,one can get or not anything as a Prasad, from such a great mahayogi but his darshan is not possible. Anyway..topic of discussion moved to rarest granths of tantra, I was trying to set aside the thought moving in my mind, but maharishi pulls them in midst of our discussion.

Ravan was one of the scholar of tantra ,what he did in the field of tantra is itself a standard, created a pillar, no one van touch.. Sadgurudev used to say that no one is greater

रावण...तंत्र के क्षेत्र में एक ऐसा नाम जिसके आगे हर कोई नतमस्तक रहता हे.उस व्यक्ति ने तंत्र जगत में एक ऐसा आदर्श स्थापित किया था, की लोग आज भी तंत्र की पूर्णता रावण को ही मानते हैं. कैसा रहा होगा वह महान व्यक्तित्व की जिसे खुद महादेव भी पुत्र कहके संबोधित किया करते थे, जिसने पारद विज्ञानं हो या फिर अघोर साधनाऐ सभी क्षेत्रो में खुद को सम्पूर्णता का पर्याय बनाया. सुना तो काफी लोगो से था कि रावण एक महान सिद्ध का अवतार ही तो था, पर कौन थे वह सिद्ध जिसने उस विभूति के रूप में जन्म लिया था... कैसा होगा उस महासिद्ध का व्यक्तित्व जो की कभी कोई जान नहीं पाया...और कैसी रही होगी वो उच्चकोटि की साधनाए जो उसने संपन्न की होंगी...

इन्ही खयालो में खोया हुआ मैं महर्षि देवदत्त से भेंट कर रहा था. सिद्धो का संसार सिद्ध ही जाने... शायद इतने उच्चकोटि के महायोगी के पास से प्रसाद स्वरुप कुछ मिले न मिले मगर इनके दर्शन भी तो कहाँ संभव हे... खैर...बातों का दौर चला गया तंत्र के कुछ दुर्लभ ग्रंथो पर...और अचानक से मेरे ख्याल जो मानस में उमड़ रहे थे और जिनको हटाने की में कोशिश कर रहा था, महर्षि उसे खींच के वापस ले आये....

उन्होंने कहा " रावण एक उच्चकोटि के तंत्र विद्वान रहे

tantric compare to Vishwamitra, Ravan, Trijata in this world. He told me. Ravan wrote so many tantra granth but .a few people knew about some of the tantra granth writer by him .hundreds of tantra granth written by him, is rarest now a days. and the sadhana mentioned in that piece of diamond.

I could not control myself, and ask him. who was it the great person who incarnated as a ravan ..?who was the unknown siddh.. whom had no description anywhere?

Maharishi replied with secretive smile"bandhu...whom you are asking about is a ansha of shiv, himself a form of shiv , having no description in anywhere, neither need to be."

Stop for while ask me" bandhu ..close your eyes".i did so. after some time maharishi asked me to open the eyes, I was in e now present in a nice big cave, where I can clearly feel a great source of energy. A nice cave was lighting brightly naturally from inside and there was a small pond which was filled with a crystal clear water. On the nearer main wall there was a big stone on which one sage was seated in lotus posture. He was in deep meditation. Great attractive face, tripund of ash on forehead, rudraksha rosary in the neck, perfect muscular body, and long matted hairs were reaching out of the stone. Light of Divine aura scattered all around. Really, a man divine , he was a great sage no doubt about his.i mentally bow down (pranaam) to him.

Maharishi Devdatt also do the same then spoke that "he is siddh Mundkesh." I was surprised by hearing his name because Mundakesha literally means the one who have shave his hairs, but here I found his matted hairs were not less than 5 feet long. I looked surprisingly to Maharishi.

Maharishi continued" how many type of aghor I ware of." "Mundh sthapan, mundkesh,

हैं...उन्होंने तंत्र के क्षेत्र में जो कार्य किया हे वो अपने आप में एक कीर्तिमान हे , एक स्तम्भ हैं.. सदगुरुदेव भी कहते थे...विश्वामित्र, रावण और त्रिजटा से बढ़के दुनिया में कोई तांत्रिक नहीं..." आगे बात बढ़ाते हुवे कहा " रावण ने जितने तंत्र ग्रन्थ लिखे हैं उनमेसे कुछ ही के बारे में लोग जानते हे...सेकड़ो ग्रन्थ उनके द्वारा रचित हैं जो की अति दुर्लभ हैं और उसमे दी गयी एक एक साधना हीरक खंड के सामान हैं "

अब में अपने आपको नहीं रोक सका और पूछ ही लिया " आखिर वह कौन महान व्यक्ति था जिसने रावण के रूप में अवतार लिया था ....? कौन हैं वो अज्ञात सिद्ध जिनके बारे में कही पर कोई विवरण भी नहीं ? महर्षि एक मुस्कान के साथ बोले " बंधू , ये समझलो जिनके बारे में तुम पूछ रहे हो, वह शिव के ही अंश हैं, शिव स्वरुप ही हैं...उनका किसीभी जगह कोई विवरण नहीं हैं और नहीं इसकी कोई आवश्यकता भी हैं "

फिर कुछ रुक कर बोले " बंधू, आँखे बंद कर लो " मैंने आँखे बंद कर ली कुछ देर बाद जब महर्षि ने मुझे अपनी आँखे खोलने को कहा तो हम लोग एक गुफा के अन्दर खड़े हुवे थे ... शुभ्र स्वच्छ गुफा में चारो तरफ प्रकाश बिखरा हुआ था ..अन्दर एक विशेष उर्जा का मैं अनुभव कर रहा था जो की दिव्यता का आभाष करा रही थी ...अन्दर एक प्राकृतिक ताल भी देखा जिसमे निर्मल जल भरा हुआ था, प्रकृति की मेहर स्वरुप उस गुफा में सामने ही एक चट्टान पर एक देवात्मा ध्यानस्थ थी, उनमे से एक शुभ्र प्रकाश झर रहा था. उन्नत ललाट पर त्रिपुंड अंकित था. सुगठित दिव्य देह ...उल्जी हुयी जटाए चारो तरफ बिखर कर रह गयी थी जेसे पहाड़ पर से झरने बह रहे हो...गले में विशिष्ट रुद्राक्ष की माला..और पूरा व्यक्तित्व दिव्यता से ओत प्रोत मैंने मन ही मन उन सिद्ध को प्रणाम किया

महर्षि ने भी उनको प्रणाम किया और गंभीर स्वर में बोले " ये सिद्ध मूंडकेश हैं..." मेने आश्चर्य से उनकी तरफ देखा क्यूंकि मूंडकेश का सीधा मतलब हुआ जो बिना केश का हो...लेकिन इस सिद्ध की तो जटाए करीब 5 फीट

dand diksha, ling pidan, ...that all" I replied.

Maharishi continued""Mundkesh diksha" I am talking about, he was the first person in universe ,who got it directly from bgavaan sadashaiv, that why he is known as mundkesh, there are 108 different aghor dikshas, only some of the name just few people knon that, He got total 108 different Aghor Diksha from lord shiva him self,so he has 108 different names".

I was speechless, I personally was not aware that. 108 type of diksha is possible in aghor tantra.

Devdatt told me "he is author of more than 1000 different scriptures.and that contains every sadhana what he directly from bhagvaan sadashiv .

Devdatt continued...you know about Ravan. You asked me once that Ravan must be a great rishi in his past life, and he must have took avatar. So here is your answer, this is the sage, who took birth as Ravan...

Deeply merged in thought, this unbelievable incident ,which became part of my life, I never thought about that, once again I see the man divine, and again mentally pranam to him.

"The tantra granth "Tantresh" you were talking about ,is written by him, and now only available in siddhashram , and each and every sadhana of the granth is like a great weapon for sadhaks" Maharishi told me.

I felt sad, that neither the granth or any of sadhana available from that today,suddenaly maharishi read my mind ,understood and said I had write down ,three sadhana of that great granth, if i wish, than I can take that .

I saw him with smile. Whatever sadhana he gave to me, is from Tantraesh, one of them was Aghor

तक फेल चुकी थीमहर्षि ने कहा " अच्छा बताओ ...कितने प्रकार की अघोर दीक्षा तुम्हे ज्ञात हैं ... मैंने कहा दंड, लिंग पीडन, मुंड स्थापन, केशमुंडन...बस"

महर्षि ने उत्तर दिया " जिस केश मुंडन दीक्षा की तुम बात कर रहे हो, वो दीक्षा ब्रम्हांड में सर्व प्रथम इनको सीधे ही सदा शिव से प्राप्त हुयी थी. इसी लिए इनका नाम मुंडकेश रखा गया हैं. इन्होने १०८ प्रकार की सभी अघोर दीक्षाए भगवन शिव से सीधे ही प्राप्त की हैं और इसी अनुसार इनके १०८ नाम भी हे...."

में आवक रह गया, मुझे तो यह भी नहीं पता था की १०८ प्रकार की अघोर दीक्षाए होती हैं ...

महर्षि ने आगे कहा " इन्होने हजारो ग्रंथो की रचना की हैं, और उनमे से हरेक साधना इन्होने सदाशिव से सीधे ही प्राप्त की हैं, और बंधू तुम यही जानना चाहते थे की रावण के रूप में कौन व्यक्तित्व थे जिन्होंने अवतार लिया था, तो वे यही सिद्ध थे, जो रावण के रूप में अवतरित हुए थे " में आश्चर्य में डूबा हुआ वो सब सुन रहा था, अकल्पनीय घटना मेरे जीवन का भाग बन चुकी थी ...कभी सोचा भी नहीं था की...और एक नज़र मेने फिर से उस दिव्यम की और देखा. मन ही मन में उनको मैंने प्रणाम किया.

महर्षि ने आगे बताया की तुम जिस ग्रन्थ " तंत्रेश " की बात कर रहे थे , वह भी इनके ही द्वारा रचित हैं... वह ग्रन्थ सिर्फ सिद्धाश्रम में उपलब्ध हैं, उनकी एक एक साधना एक एक महाअस्त्र हैं साधको के लिए.

मुझे थोडा खेद हुआ की वह ग्रन्थ या उसमेसे कोई साधना प्राप्य नहीं हैं. तुरंत महर्षि ने मेरे मन को ताड़ लिया और कहा की उस ग्रन्थ मेसे ३ साधनाए मेरे पास लिखी हुई हैं. अगर तुम चाहो तो उसे ले सकते हो. महर्षि की तरफ मैंने मुस्कुराते हुए देखा...उन्होंने मुझे जो साधनाए दी थी वो तंत्रेश में से ही थी...उनमे से एक अघोर वशीकरण साधना थी...इस साधना को पहली बार में महर्षि देवदत्त का आभार मानते हुए आप

vashikaran sadhana, now I am here writing you for the first time , with gratitude to maharishi davdatt.

This sadhana should be done on Monday night only after 11 pm. One should take bath and wear red cloths before starting it.

Take any steel or iron plate. Apply collyrium (kajal) all over inside and write the following mantra (the collarium should be cuted that way)

“aum aghorebhyo ghorebhyo namah”

On that place a piece of cloth of the person on which the vashikaran prayog is being done. If that is not possible anyhow, place any fresh cloth piece. On that cloth write a name of the person for whom prayog is being carried out. This name should be written with vermillion.

Place a picture of lord shiva infront of you and if available photograph of the person for which prayog is being done.

After that take black hakeek or rudraksha rosary and with concentration 51 rosaries should be completed of the following mantra on the same night only.

Shive Vashye Hum Vashye Amuk Vashye Hum vashye Shive Vashye Vashyme Vashyme Vashyme Phat.

Here, in mantra, one should chant name of the person to be vash, on the place of AMUK.

After completion of sadhana one should pray to rishi Mundakesh and lord Aghoreshwar for success in the sadhana.

During sadhana, one may have exiting experiences but really not to worry for that. Those are signs of success in the sadhana.

सब लोगो के सामने रख रहा हु

इस साधना को किसी भी सोमबार की रात्रि में ११ बजे के बाद प्रारंभ किया जा सकता हैं ,साधना प्रारंभ करने से पूर्व स्नान करके लाल वस्त्र धारण करले .

कोई एक प्लेट ले ,जो लोहे या स्टील की बनी हो .| इसके अंदर पूरी तरह काजल लगा दे, और निम्नाकित मंत्र लिखे (काजल को इस प्रकार से हटा के)

" ॐ अघोरेभ्यों घोरेभ्यों नमः "

उस प्लेट के उपर जिस व्यक्ति का वशीकरण करना हैं उसका एक वस्त्र का टुकड़ा विछा दें | यदि ये किसी भी प्रकार से संभव न हो तो ,तो कोई भी नया कपडे का टुकड़ा उस पूरी प्लेट पर बिछा दें. |उस के ऊपर उस व्यक्ति का नाम लिख दे, जिस पर ये प्रयोग करना हैं ये नाम लेखन की प्रक्रिया ,सिन्दूर से ही की जाना चाहिए |

. अपने सामने भगवान् शिव का कोई भी चित्र जो भी आपके पास हो और उस व्यक्ति का भी (जिस पर ये प्रयोग किया जाना हैं) रखे.

इसके बाद पूर्ण मनोयोग से उसी रात्रि में , काली हकीक या रुद्राक्ष माला से 51 माला निम्नाकित मंत्र जप करें.

शिवे वश्ये हुं वश्ये अमुक वश्ये हुं वश्ये शिवे वश्ये वश्य्मे वश्य्मे वश्य्मे फट

इस मंत्र में अमुक की जगह उस व्यक्ति का नाम उच्चारित करें जिसे आपको वश में करना हैं .

जब ये मंत्र जप पूर्ण हो आप ऋषि मुंड केश और भगवान् अघोरेश्वर से इस साधना में सफलता के लिए प्राथना करें.

साधना काल के दौरान आपको कुछ आश्चर्य जनक अनुभव हो सकते हैं, पर इनसे न परेशान या बिचलित न हो , ये तो साधना सफलता के लक्षण हैं .

Totka Vigyan

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

Totka vigyan is special branch of tantra in which one can find solution for each and every problem. Our ancient people were quite component in this science and with very small and tiny processes they used to resolve their every problems. Totkas are basically a set of small processes if done in particular way, they attract a specific power. As we all know that each and every processes have their universal effect and this is the actual concept been used in totka vigyan. Totkas are mainly based on articles or small processes.

We find many totkas for every problem. So as here we have some totka prayogs, if done with a faith and devotion can lead to a definite success to gain wealth.

****

Find any dead Bat. Collect its nail. Properly clean the nail. Then after one should make a gold pendal out of it, and tie it around a neck. Thus the wealth starts being generated automatically.

टोटका विज्ञानं , तंत्र विज्ञानं की एक अद्भुत शाखा हैं ,जिसमे व्यक्ति अपनी हर समस्या का हल प्राप्त कर सकता हैं | हमारे पूर्वज इस विज्ञानं में पुर्णतः निपूर्ण थे, जिसके माध्यम से बे अपने जीवन में आणि वाली हर छोटी समस्याओं का निदान इस विज्ञानं के सरल और छोटी छोटी क्रिया के माध्यम से कर लेते थे.| बस्तुतः टोटका ,कुछ ऐसी सरल और छोटी छोटी क्रिया का समूह हैं जिनको एक विशेष क्रम से करने पर एक विशेष शक्ति आकर्षित होती हैं | जैसा की हम जानते हैं कि हर छोटी छोटी से क्रिया का सर्वभूतात्मक प्रभाव होता ही हैं . यही इस विज्ञानं का आधार हैं | टोटका मुख्यतः कुछ विशेष बस्तु और छोटी ,छोटी क्रिया पर आधारित होता हैं.

हम बिभिन्न प्रकार के टोटके , हर प्रकार कि समस्या के लिए पाते हैं | हम यहाँ पर कुछ टोटका प्रयोग सामने रख रहे हैं ,जिन्हें यदि पूर्ण बिस्वास और श्रद्धा के साथ किया जाये तो निश्चय ही आप पूर्ण सफलता से धन प्राप्ति या वैभव प्राप्त कर सकते हैं.

****

कहीं से मृत चमगादड़ के नाखून प्राप्त करें |उन्हें साफ़ करे|,फिर उन्हें स्वर्ण के ताबीज में रख कर , गले में धारण करें |स्वयं ही धन का आगमन होने लगेगा ही .

****

Light a ghee lamp on the name of your Pitru at any corner of the house. The time should be sun set. Pray to them to help in the wealth. Thus by doing it for 11 days, the divine help could be gain.

****

सायं काल के समय, अपने पितृ का नाम लेकर, घर के किसी भी कोने में एक घी का दीपक जलाएं , उनसे धन प्राप्ति के लिए सहायक होने के लिए प्रार्थना करे. ऐसी ११ दिन करें ,आपको दिव्य सहायता मिलने लगेगी |

****

Take 7 basil leafs. Write shrim on every leaf with the help of Sandal wood or saffron. Place it in a plate and set the plate near the photo of mahalaxmi. Then chant shree shukt and pray for sucess. After completion of shree sukt, take a glass full of water and immerse the leafs into the water and take out. Drink the whole water. Repeat this process for a week.

****

तुलसी के ७ पत्ते ले , चन्दन कि लकड़ी से या . केशर.... से "श्रीं" बीज का अंकन करें | इनको प्लेट में रखे और सामने महालक्ष्मी का चित्र भी रखे , इसके बाद श्री सूक्त का पाठ करें और सफलता के लिए प्रार्थना करें. श्री सूक्त के पाठ पूर्ण होने पर , एक गिलास पानी ले और उसमे इस तुलसी कि पत्तियों को डूबा करके बाहर निकल ले | इस पूरे गिलास के पानी को आप पी ले | पूरे एक सप्ताह इस प्रक्रिया को करें |

****

Take the nail of the craw. Clean it. Then place the nail in any small vessel of silver and cover it. Place this in your place where the money is being kept.

*** ************

कौवा के नाखून ले कर उसे साफ कर ले इसको किसी भी चांदी के छोटे से पात्र में रख कर बंद कर ले , और इसे ,उस जगह रखे जहाँ पर आप अपना धन संपत्ति रखते हैं .

****

Take a small amount of the wheat. Place it in a small red cloth. Tie it and place it in some upper part of your house. This will help in providing opportunity to develop wealth.

****

थोड़े से गेंहूँ को लाल कपडे में बांध कर , घर के उपरी हिस्से मे रख दे, इससे आप के घर पर धन आगमन कि संभावनाओ में बृद्धि होती हैं.

****

Take the basil plant in the house. Tie a kamalgatta rosary around the plant. Worship it for some days. This will solve the monetary problems

****

तुलसी के पौधे में एक कमलगट्टे कि माला चरों तरफ घुमा करके बांध दे , और कुछ दिन इस की पूजा करें , तो यह आपकी धन सम्बंधित समस्या का समाधान कर देगा.

****

Take 108 fresh lotus flowers. Apply a little cow's ghee in every flower. Now start a Havan by lighting a fire. Offer every lotus flower one

****

१०८ ताजे कमल के फूल लेकर आयें ,हर पर थोडा, थोडा सा , गाय का घी, हर फूल पर लगायें , और हवन की अग्नि आप

by one in flower. While offering one should chant

" Om Mahalaxmibhyo Namah swaha"

****

Laxmi remains always happy on the people who make kumarika bhoj, in which 7 or 11 small girls are invited to have a food at home and offered small amount of dakshina even.

****

If original hatthajodi is obtained, offer it a poojan. After that chant the mantra 108 time

" om koshadhipatye kuberay namah.".

Then place it in the place of money. This will help in optimizing a wealth. But daily or weekly once poojan of the hatthajodi is required to maintain the power.

****

Take 5 fin of owl. Fire it and make ash out of it while whole process one should chant

"om ullukaye namah".

Then when ash is being prepared one should pray kakchandishwar for success. Apply tilak of the ash on the forehead while chanting

" om namo kalrati"

11 times. Tilak should be done for 7 days.

****

There are several such small and effective totkas been collected from the various sages and saints. These are the really easy and top result giving methods. If one does any of the

प्रज्जवलित करें , और इस अग्नि में एक एक कर के इन पुष्पों को आहुतित(अर्पित) करते जाएँ |अग्नि में समर्पित करते समय ,निम्न मंत्र का उच्चरण भी करते जाएं

"ॐ महालाक्ष्मिभ्यो नमः स्वाहा"

****

लक्ष्मी उनसे हमेशा प्रसन्न रहती हैं जो ,७ या ११ कुमारियों को घर पर आमंत्रित करके भोजन कराते हैं और उन्हें यथा योग्य दक्षिणा भी देते हैं |

****

यदि कहीं से प्रमाणिक हथ्था जोड़ी प्राप्त हो जाये , तो पहले इसका पूजन करें ,इसके बाद १०८ बार निम्न मन्त्र का उच्चारण करें

" ॐ कोषाधिपत्ये कुबेराय नमः ".

फिर इस हथ्था जोड़ी को धन रखने के स्थान पर रख दे ,इससे धनागमन में बढ़ोतरी होती रहती हैं |पर इस हथ्था जोड़ी की शक्ति को बनाये रखने के लिए ,इसका दैनिक या साप्ताहिक पूजन अनिवार्य होता हैं

****

उल्लू के ५ पंख ले कर ,उसे जलाकर राख बना ले,इस पूरी प्रक्रिया के दौरान आप इस मन्त्र का जप करते जाएँ

"ॐ उल्लुकाए नमः "

जब राख का निर्माण हो जाये तब आप अपनी सफलता के लिए , काकचंडीश्वेर से प्रार्थना करे | और इस राख /भष्म को अपने ललाट पर तिलक करते हुए

"ॐ नमो कालरात्रि '

मंत्र का ११ बार उच्चारण करें, इस तिलक की प्रक्रिया को ७ दिन करें.

****

विभिन्न संतो से , प्राप्त किये गए टोटकों को जिन्हें बस्तुतः छोटे छोटे प्रयोग कहा जाये तो ज्यादा उचित होगा ,आपके समक्ष रखा गया हैं , ये अपने आप में अत्याधिक सरल और

process with full faith, one hundred percent success could be gained.	पूर्ण प्रभावशाली हैं , ,इनमे से कोई एक भी प्रक्रिया आप पूर्ण बिस्वास के साथ यदि करते हैं तो आपको इनमे पूर्ण सफलता प्राप्त ही होगी.

"Through mantra , shakti (power) moves, guru' shakti moves to shishya and shishya 's shakti to guru. that's why by giving mantra and receiving their pap, induces so many illness in this body. Very difficult to be a guru, he had to accept the sins of shishya. If ,Any sin done by the shishya, that transfer to guru. Gurus luck to have a yogay (able) shishya." ..
Sri Ma Sharda

मंत्र के माध्यम से शक्ति गमन करती हैं , मंत्र देने से गुरु की शक्ति शिष्य के अन्दर और शिष्य की शक्ति गुरु के अन्दर जाती हैं,इसलिए मंत्र दाता गुरु को अनेक व्याधियों का सामना अपने शरीर पर करना पड़ता हैं, यदि शिष्य कोई पाप कर्म करता हैं तो उसका फल गुरु पर स्वतः स्थान्तरित हो जाता हैं .| योग्य शिष्य प्राप्त होने से गुरु का भी उपकार होता हैं " ..

श्री माँ शारदा

Once someone ask yogiraj Arvindo ghosh.. do you believe in god, he replied ..no.. the person puzzled, again repeated the same question and the same reply he got. But how it is possible I read our book. he said . sri Arvindo replied. Since I know him.

एक बार किसी ने योगी राज अरबिंद घोष से पूछा .. की क्या वे ईश्वर पर बिश्वास करते हैं | "नहीं" उन्होंने उत्तर दिया. | दूसरी बार भी यही उत्तर प्राप्त हुआ ,जब उसने फिर से यही प्रश्न किया | परन्तु उसने तो पढ़ा था की वे ... .
योगिराज ने उत्तर दिया " मैं उन्हें (ईश्वर) जानता हैं "
(जो जानता हैं उसे मानने की क्या आवश्यकता हैं.)

मुस्लिम तंत्र

मुस्लिम तंत्र

आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए एक अद्भुत दुर्लभ प्रयोग

आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए एक अद्भुत दुर्लभ प्रयोग

The wealth and money are considered very essential part of in this era. Everybody is moving in the direction, how he can become more and more blessed with shree, Lakshmi, wealth?. To have wealth is an essential part of house hold life. Material part of every person ,needs money, may be of different forms. Various sadhana related to have finance or wealth , described in our scripture, and by applying that the way to have wealth opens , and our effort get successful.

The giants of the sadhana field , not stop on this point they moved much further, and discovered some very specific procedure of which sudden incoming of wealth /finance can be possible. here the aim is not on the way but to have coincidence , since if without trouble and sweating ,one can earn / have money/wealth, than who wants to do hard work. But such a prayog or sadhana is very rear. And having knowledge to such a sadhana or prayog to general masses is almost nil. This type of rear sadhana knowledge available with any specific yogi, they gave only to those, who are very close to them, and all round success sure for such house holder.

There are many such a procedure/process available in Muslim tantra, by which sudden gain

धन को और वैभव को आज के युग में जब आवश्यक अंग माना जा रहा हैं, हर कोई इस दिशा में प्रयत्नशील हैं की वह ज्यादा से ज्यादा श्री संपन्न लक्ष्मी संपन्न बन सके. सुखी एवं सम्प्पन गृहस्थी का आवश्यक पक्ष धन एश्वर्य की प्राप्ति हैं और हर कोई इंसान जो की गृहस्थ हैं उन्हें किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता पड़ती ही हैं. हमारे शाश्त्रो में आदि काल से धन प्राप्ति सबंधित कई प्रयोग दिए हुए हैं और उनके प्रयोग करने पर धन प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त होता हैं और आपके प्रयत्न सफल होते हैं.

मगर वे महा पुरुष यहाँ तक ही नहीं रुके, वे आगे बढे और कुछ एसे विशेष उपाय खोज निकाले जिससे आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति संभव हो सकती हैं, यहाँ पर मार्ग प्रशस्त की बात न होके संयोगो की बात हैं. अगर किसी को बिना मेहनत किये ही धन मिले तो कौन पसीना बहाना चाहेगा. मगर ऐसे प्रयोग बहुत ही दुर्लभ होते हैं और जन सामान्य को इनका ज्ञान न के बराबर हैं. कुछ विशेष योगियों के पास ऐसे प्रयोग होते भी हैं तो वो अपने खास एवं अत्यंत निकट के परिचित मात्र को देते हैं जिससे उनको गृहस्थी में पूर्ण सफलता प्राप्त होती हैं.

मुस्लिम तंत्र में ऐसे कई उपाय हैं , कई ऐसे साधनाए हैं जिनसे आकस्मिक धन की प्राप्ति संभव हैं , मगर ये सभी प्रयोग अत्याधिक गुप्त रहे हैं और गुरु मुखी परंपरा से ही आगे बढ़ते हैं. मुस्लिम तंत्र साधनाओ के बारे में कई जगह यह गलत धारणा फेलाई गयी हे की दुसरे धर्म के लोगो को

of money/wealth Is possible , all these process/sadhana are very secretive and generally spread/passes only among Gurumukhi parampara.there are many such a misconception about Muslim tantra that it should not be practiced by the person belongs to other religion. That is just baseless, I did so many sadhana of that and these all are same as ,we do jain tantra or Buddhist tantra sadhana,. There is no dosh or problem in that .

The result of these Muslim tantra sadhana is sure and very effective, reason behind is that, the forces who work behind them is of peer ,or pak jinn, while once I was studying shabar sadhana, that period I have sudden urge in my mind that I should seek ,such a very effective Muslim tantra sadhana by which surely the sudden wealth or finance earning can be possible. I had gone thorough more 200 book but not able to find anywhere such a sadhana. Than I have to take help from "**Atama Aavahan**",and when I had a chance to encountered a peer of very high spiritual level. He told me about a granth having pairani and falnama. On his blessing I was able to find out the sadhana, I was looking for, and my effort of months got results.

When I did / complete the sadhana, I was surprised to see its result. After some years I have a chance to have a discussion with an scholar/ sadhak in Muslim tantra, discussing with him, that this sadhana also come into a part of. He also completed this sadhana, once because of heavy loss in the business, he was in debts, he got this sadhana from a miraculous faker. He got very amazing experience in dream, also got some number related to lottery, due to some reason he was not able to buy that lottery, very next day he checked he found that a very big amount was declared on that number, due to this sadhana alone he was able to come out of heavy loss. Debt.

Everyone will get different experiences in this sadhana, this opens not only the way of getting

मुस्लिम साधनाए नहीं करनी चाहिए. ये महज़ बकवास हैं... मैंने खुद ऐसे कई साधनाए की हैं और ये ठीक उसी तरह से हैं जिस प्रकार से हम बौद्ध या जैन साधना करते हैं.इसमे कोई संशय नहीं हैं नहीं कोई दोष लगता हैं|

.

मुस्लिम तंत्र की साधनाओ का निश्चित परिणाम प्राप्त होता हैं क्यूंकि इन साधनाओ के पीछे जो शक्ति कार्य करती हैं वो पीर एवं पाक जिन्न की शक्ति होती हैं. जब में शाबर मंत्रो का अध्ययन कर रहा था उन्ही दिनों मुझे मुस्लिम तंत्र की कोई ऐसी ही एक साधना ढूँढने की धुन सवार हुयी जिससे आकस्मिक धनकी प्राप्ति निश्चित रूप से हो सके. पर कही भी कोई आधारभूत माहिती नहीं मिली. मैंने करीब २०० ग्रंथो को टटोल डाला लेकिन ऐसी साधना का मुझे कोई पता नहीं चला. आखिर कार मुझे आवाहन का सहारा लेना पड़ा और एक उच्च कोटि के पीर से जब इस बारे में चर्चा हुयी तब उन्होंने एक दुर्लभ ग्रन्थ के बारे में बताया जो की पिराणी मंत्रो एवं फालनामा से सबंधित थी . उनकी ही रहम द्रष्टि से मुझे उस ग्रन्थ में वह साधना भी प्राप्त हो गयी और मेरी कई महीनो की मेहनत रंग लायी.

जब मैंने ये साधना की तब उसके चमत्कार देख के तो में दंग ही रह गया. सालो बाद जब एक मुस्लिम तंत्र के साधक से मुलाकात हुयी बात ही बात में इस साधना का उल्लेख आया. उन्होंने भी ये साधना कर रखी थी. उनके व्यवसाय में भारी खोट आने से वे कर्ज में डूब गए थे तभी उन्हें एक चमत्कारी फ़कीर से यह साधना प्राप्त हुयी थी, साधना सम्प्पन करने तक उन्हें रातको स्वप्न में विचित्र अनुभव होते रहे और उनकोई लोटरी के कई अंक स्वप्न में प्राप्त होने लगे, कुछ कारणों से वे लोटरी खरीद न पाए मगर दुसरे दिन जब उन्होंने देखा तो उस अंक पर लाखो का इनाम निकल चूका था. इस एक साधना के सहारे उन्हें काफी गेबी मदद मिली और वो क़र्ज़ से बाहर आए .

इस साधना में हर कोई व्यक्ति को अलग अलग अनुभव होता हे. यह साधना संयोगवश और आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति के मार्ग सिर्फ खोलती नहीं वरन बनाती भी हैं.

किसी भी गुरुबार की रात्रि से इस साधना को प्रारभ किया जा

the sudden wealth but also crea5ted that too.

One should start this sadhana from Thursday Night time. After 9 PM wear a dhoti but in Muslim style. Have a Muslim hat on head.

In front of you place a sheet of wood on which first place a white cloth and spread a green cloth on it. After that prepare a kabar of rice grain on it. Cover it with another white cloth. On the top place a powder of kapoor and rose petals. Spray some perfume (attar) throughout the process keep on chanting the following mantra

Bismmillahe rahemane rahim

When this process is complete, pray to peer Mohammad for success in the sadhana. Light a lamp and Loban dhoop.

Now sit in a posture as Muslims sit in the Namaz. And in this position chant the following mantra's 11 round of rosary with ,white hakeek rosary.

Ya ilahi kar madad allahu samad

Please note that in Muslim tantra, chanting through rosary is done anti clock wise.(in other word reverse direction rosary should be moved by finger)

After chanting, sleep at same place only. Repeat the whole process for 11 days. Thus the sadhana becomes complete and sadhak gets key to open the gate of his fortune.

सकता हैं ,रात्रि में 9 बजे के बाद इस साधना को मुस्लिम तरीके से धोती पहिन और मुस्लिम टोपी को सर पर धारण कर की जा सकती हैं |

अपने सामने एक लकड़ी का पटिया रखे ,पहले उसके उपर एक सफ़ेद वस्त्र बिछेये फिर एक हरा वस्त्र भी बिछा दे | इसके उपर एक चावल की एक कब्र बनाये ,उसे एक सफ़ेद कपडे से ढक दें | उपरी सतह पर कपूर और गुलाब की पखुडिया बिछा दे ,और इन सबके ऊपर इत्र छिणकते हुए इस मन्त्र का जप करे ..

बिस्म्मिल्लाहे रहेमाने रहीम

जब ये प्रक्रिया पूर्ण हो तो पीर मोहम्मद से साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करे, और एक दिया और लोहबान धूप जरुर जलाये |

जिस तरह से मुस्लिम भाई नमाज़ के लिए बैठते हैं उसी प्रकार से बैठे , और सफ़ेद हकीक माला से , निम्न मन्त्र का 11 माला जप करे |

या इलाही कर मदद अल्लाहु समद

इस में एक बात बहुत कि महतवपूर्ण हैं ,ध्यान दे कि , मुस्लिम मन्त्र में मंत्र जप , घडी के कांटे के बिपरीत दिशा में होता हैं |(दुसरे शब्दों में कहे, तो माला उलटी फेरना पड़ती हैं)

मन्त्र जप के बाद उसी स्थान पर सोये | ये प्रक्रिया ११ दिन लगातार करें , इस तरह से करने पर साधना पूर्ण मानी जाती हैं और साधक को वह चाबी मिल जाती हैं जिसके माध्यम से वह अपने भाग्य के दरबाजे को खोल सकता हैं |

Teevra Vashikaran Siddh Kleem Sadhana

तीव्र वशीकरण सिद्ध क्लीं साधना

When we begin to learn music we start with basic notes which are SA, RE, GA….NI, because without these notes we cannot learn it. These seven notes are the basic of music. Like music when we start SADHNA our first duty is to learn the meanings of MANTRAS. But this does not mean that we start enchanting (japna ya jap karna) the meanings. MANTRA should enchant in the language in which they are written but we should know word to word meaning. It helps us to learn that which Word or BEEJ- Mantra is giving power and energy to that basic mantra.

As you cannot understand music note RE until you don't understand SA just like that each VARN has its power and its own DHYAAN, VINIYOG, AAKRITI and MANTRA also. This essay is not about this topic because such deep knowledge is important for SURYA VIGYAAN, GOPNIYE AAGAM TANTRA and RAS SIDDHI but as matter is about VASHIKARAN and LAKSHMI SAADHNAA so it's my duty to give basic information about it. When we pronounce any word from VARANMALA than it release special effect on our body .

for example if "R" word is spoken out with anuswaar "means "BINDI" for thousand times as **RAM(रं)** it increase body's

जब हम संगीत का अभ्यास प्रारंभ करते हैं तो उसकी शुरुआत ही सप्तको से मतलब स,रे,ग,……नी से होती है, है ना. भला क्यूँ, क्यूंकि बगैर इन स्वरों को समझे आप संगीत या गायन में निपुणता पा ही नहीं सकते. सम्पूर्ण संगीत का आधार यही ७ सप्तक हैं. ठीक इसी प्रकार जब हम साधनाओं का प्रारंभ करते हैं तो उसकी सिद्धि का मूल ही होता है मन्त्रों का अर्थ समझना. इसका अर्थ ये कदापि नहीं है की हम भावार्थ को ही जपने लग जाये. मन्त्र तो जिस भाषा में हो उसी भाषा में उनका जप करना चाहिए परन्तु यथा संभव उसमे प्रयुक्त बीजों के अर्थ हमें ज्ञात होना चाहिए. तभी तो हम समझ पाएंगे की कौन सा शब्द या बीजमन्त्र उस मन्त्र विशेष को उर्जा और गति प्रदान कर रहा है.

जैसे 'सा' को समझे बगैर आप 'रे' को नहीं समझ सकते, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक वर्ण की अपनी शक्ति होती है और होता है उसका अपना ध्यान, विनियोग, आकृति और मंत्र भी, ये लेख इस विषय पर केंद्रित नहीं है क्यूंकि ये सब गूढता सूर्य विज्ञानं या गोपनीय आगम तंत्र और रस सिद्धि के लिए होती है पर फिर भी बात वशीकरण और लक्ष्मी साधना की है तो मेरा दायित्व बनता है की मैं उसकी पृष्ठभूमि से आपको अवगत करा दूँ. वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का उच्चारण करने पर शरीर पर एक विशेष प्रभाव पडता है|

जैसे 'र' वर्ण पर अनुस्वार अर्थात बिंदी लगा कर यदि १००० बार 'रं' बीज का

warmness(ऊषणता) up to one degree. Pronunciation of **Aim (ऐं)** sound sharpens the mind and **KHAM (खं)** sound controls lever problems. So every word has its special effect about which we will discuss some other day. Just as **KLEEM BEEJ** has its global effect. This is **KAAM BEEJ** or we can say **KAAM RAAJ BEEJ** which makes end every type of negative powers and gives most powerful attractiveness (aakershan) and luxuries (vaibhav) as INDRA DEV.

If a person completes this sadhana before any type of LAKSHMI or AAKERSHAN, MOHAN, WASHIKARAN sadhana then he/she can siddh toughest LAKSHMI or WASHIKARAN sadhana easily. Because it is powerful AAKERSHAN SADHNAA so it compels GODDESS LAKSHMI to bless the sadhak with her blessings. In tantra one more thing about this BEEJ MANTRA is that at the starting of this mantra if a person gets siddh or yog of an aksher vishesh and then enchant this mantra for five minutes. After this to which he just look or touch will increase sexual excitement (उत्तेजित) in them. This thing can happen more than one person. But that is other system here we need a soft but fast idea. This is different matter that below given system can be used for this sadhana also.

I remember in 1990 **SADGURUDEV** gave prayogs based on KLEEM BEEJ in magazine which gave positive results. One more important thing is that a sadhak who siddh WASHIKARAN SAADHNA also needs to practice TRAATK. This TRAATK can practice on KAAM BEEJ or on **VISHESH SAMMOHAN VASHIKARAN YANTRA** which sadhak can have from **GURUDHAAM**.

उच्चारण किया जाये तो शरीर की उष्णता १ डिग्री तक बढ़ जाती है. ऐं बीज का उच्चारण मष्तिष्क को कुशाग्र करता है. **'खं'** बीज का जप लीवर की समस्याओं को दूर कर देता है, इस प्रकार प्रत्येक बीज का अपना विशेष प्रभाव होता है, जिसके बारे में आगे कभी विस्तार से चर्चा करेंगे.ठीक इसी प्रकार **'क्लीं'** बीज का अपना एक व्यापक प्रभाव है,ये **काम बीज** है या ये कहूँ की **काम राज बीज** है जो की सभी नकारात्मक शक्तियों या विषों का विनाश कर इन्द्र के सामान वैभव देता हुआ प्रबल आकर्षण प्रदान करता है.

यदि व्यक्ति इस साधना को किसी भी अन्य लक्ष्मी या आकर्षण, मोहन, वशीकरण साधना के पहले संपन्न कर लेता है तो कठिन से कठिन लक्ष्मी और वशीकरण साधनाएं सहज ही उसे सिद्ध हो जाती हैं. क्यूंकि ये प्रबल आकर्षण बीज है इसलिए इसके प्रभाव से लक्ष्मी भी बाध्य हो जाती हैं साधक का वरण करने के लिए.मैं एक और बात इस बीजमंत्र के बारे में बता दूँ की तंत्र मार्ग में इस बीज से सम्बंधित ऐसी भी विधियाँ है की यदि व्यक्ति मात्र इस बीज के प्रारंभ में किसी अक्षर विशेष का योग कर इस मन्त्र को यदि ५ मिनट भी जप कर किसी को देख या स्पर्श कर ले तो जिस पर भी दृष्टि या स्पर्श किया हो वो या वह के सभी उपस्थित व्यक्ति अत्यधिक उत्तेजित हो जाते हैं. पर वो एक अलग तरीका है हमें तो तीव्र परन्तु सौम्य प्रयोग चाहिए हाँ ये अलग बात है की उसके लिए भी नीचे वर्णित विधि का ही प्रयोग पहले सिद्धि के लिए किया जाता है.

मुझे याद है की ***सदगुरुदेव*** ने सन १९९० के आस पास पत्रिका में **'क्लीं'** बीज पर आधारित प्रयोग दिए थे जिनके बहुत सकारात्मक परिणाम आये हैं. एक महत्वपूर्ण बात ये भी बता दूँ की वशीकरण साधनाओ को संपन्न करने वाले साधकों को त्राटक का अभ्यास भी करना चाहिए. ये त्राटक उपरोक्त काम बीज पर किया जा सकता है या गुरुधाम से विशेष सम्मोहन वशीकरण यन्त्र प्राप्त करके भी किया जा सकता है.

To siddh this mantra, take a white paper or bhojpatra which have MAITHUN CHAKRA make from TRIGANDH and in the centre of this CHAKRA draw BEEJ MANTRA with KUMKUM. Then light a deep (earthen lamp) with the things- KUMKUM, RAKT PUSHP, NAIVODYA, and RAKT VARNIYE BATTI. It is must to use AGRBATTI having fragrance (khushbu) of GULAAB, MOGRA, and CHAMELI during sadhana kaal. To siddh this sadhana sadhak should use red clothes or red aasn to sit. Morning and night hours are good for this sadhana and west or south directions can use for this sadhana.

After GURU POOJAN and YANTRA POOJAN pay attention (dhyaan) on that yantra at TRIKUT (center of forehead) and during dhyaan KAAM BEEJ at the center of MAITHUN CHAKRA must be red. If you do this sadhana as I said here then there will be no problem otherwise some dangerous results can happen.

Always use SIDDHASAN or SUKHASAN and finally do TRAATAK (which decidedly sadhak can do). Do this sadhana daily ONE HOUR for 11 days and if you are using MOONGE KI MAALA then do not count jap but complete your one hour. Slowly- slowly this mantra will come into your mind with its great light and power which is the sigh of your success. You can understand it's important only then when you do some LAKSHMI or VASHIKARAN sadhana without it and again do that sadhana with the help of this KAAM BEEJ MANTRA. After seeing its effect you get shocked so what are you waiting for? Go ahead and see the difference.

इस मंत्र की सिद्धि के लिए सफ़ेद कागज या भोजपत्र पर त्रिगंध से बने हुए मैथुन चक्र के मध्य में कम बीज मन्त्र को कुमकुम से बना लेना चाहिए.तत्पश्चात कुमकुम , रक्त पुष्प, नैवेद्य, रक्त वर्णीय बत्ती से युक्त घृत का दीप जला हुआ हो और गुलाब, मोगरा, चमेली आदि की महक से युक्त धूपबत्ती का प्रयोग साधना काल में करना चाहिए.रात्री या सुबह का समय इसके लिए उपयुक्त है, पश्चिम या दक्षिण दिशा का प्रयोग किया जा सकता है, लाल वस्त्र व आसन का प्रयोग करना चाहिए.

गुरु पूजन और यन्त्र पूजन के पश्चात उस यंत्र का ध्यान अपने भृकुटी मध्य अर्थात त्रिकूट पर करना चाहिए और ध्यान में भी इस मैथुन चक्र के मध्य निर्मित कामबीज लाल ही होना चाहिए. ये क्रिया दुष्कर प्रतीत होती है लेकिन जब आप ये क्रिया जो क्रम यहाँ देय गया है उसी अनुसार यदि आप करते हैं तो जरा भी समस्या नहीं आएगी .

सिद्धासन या सुखासन का प्रयोग करना चाहिए और अन्तः त्राटक (जो की निश्चय ही संभव हो जायेगा) का प्रयोग करके १ घंटे तक ११ दिन तक जप करे माला मूंगे की हो जप की गिनती नहीं बल्कि समय को पूरा करे. धीरे धीरे ये मंत्र उद्दीप और तेज युक्त,प्रकाशित होकर आपके ध्यान में आने लग जायेगा जो की आपकी सफलता का प्रमाण है. ये प्रयोग कितना महत्वपूर्ण है ये तो आप तभी समझ पाएंगे जब बगैर इस प्रयोग को करे किसी भी अन्य वशीकरण या लक्ष्मी साधना को संपन्न करे और फिर उसी प्रयोग को इस कामबीज की साधना के बाद करे. प्रभाव देख कर आप खुद दांतों तले अंगुली दबा लेंगे तो फिर देर किस बात की, खुद परख कर देखिये ना.

Durlabh Shree Yantra sadhana

दुर्लभ श्रीयंत्र साधना एवं अभिषेक विधान रहस्य

"SHRI" without it life remains incomplete. There is no normal or spiritual life without it. And surely everyone knows about the YANTRA in which" SHRI" remains. From a long time different Granths and Vedas explain the importance of this wonderful YANTRA but there are many things which keep secret. After completing SHISHYABHISHEK of SADHAK his GURU tells him the secrets and PRAYOG VIDHAAN of this YANTRA. One important thing is that only ATI UCCH STARIYA PARAM SIDDH YOGI can give this type of DEEKSHA.

SADGURUDEV once told this secret and said SHRI YANTRA is a living kind of complete universe. Whole powers of every world (SMAGRA LOK) remain in this HOLY YANTRA. Many special sadhana of SHAATRK MARG fulfills through this yantra. JUST ONE MANTRA AND ONE YANTRA but changes in STHAAN (PLACE), TITHI (DATE) and SAAMGRI changes the powers which saadhak can get from it. You can get MANTRA and CHAITANYAA YANTRA from GURUDEV because only GURU knows how to STHAAPIT and make AAWAAHN OF 16 NITYAAON, 3 DIVYOGH, 3 SIDDHOUGH and 3 MAANVOUGH. Again only GURU can decide that YANTRA should place as MATSYA-PRUSHTHIYE or KOORM-PRUSHTHIYE. He knows that YANTRA should make as SUMERU ROOPI or DHAARA PRUSHTHIYE GURU can decide which KRAM is good for his SHISHYA- LAYA-KRAM or SRISHTI-KRAM. Here I am telling that secret PRAYOGS by which we can get that POWERS by

'श्री' जिनके बगैर सूना सूना लगता है जीवन चाहे फिर वो मनुष्यों का हो या फिर अन्य उच्चस्थ योनियों का . और निश्चय ही जिस यन्त्र में उन श्री का वास है उस श्रीयंत्र से भला कौन अभागा अपरिचित होगा. उस अद्भुत यन्त्र की महत्ता का बखान तो सदियों से विभिन्न ग्रन्थ और वेद करते आये हैं ,पर बहुत से ऐसे भी रहस्य हैं जिन्हें की अत्यधिक गुप्त रखा गया है . साधक का शिष्याभिषेक संपन्न करने के बाद ही गुरु इन रहस्यों को इनको प्रयोग करने का विधान शिष्य के सामने प्रकट करते हैं. यहाँ एक विशेष बात में बताना चाहूँगा की अति उच्च स्तरीय परम सिद्ध योगी ही ऐसी दीक्षा दे सकते हैं.

सदगुरुदेव ने एक बार इस रहस्य को समझाते हुए बताया की श्री यन्त्र अपने आपमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ज्यामितीय रूप है. समग्र लोकों की शक्तियों का वास इस दिव्य यंत्र में है शाक्त मार्ग की अत्यधिक विशेष साधनाएं मात्र इस यंत्र के द्वारा ही संपन्न हो जाती है. मात्र एक ही मंत्र एक ही यन्त्र परन्तु , स्थान , तिथि व सामग्री बदलने से यन्त्र से प्राप्त होने वाली शक्ति भिन्न भिन्न होती है. मंत्र व पूर्ण चैतन्य यन्त्र तो आप गुरुदेव से प्राप्त कर सकते हैं क्यूंकि १६ नित्याओं, तीन दिव्योघ,३ सिद्धौघ और तीन मान्वौघ का स्थापन साथ में समस्त सहचर शक्तियों का आवाहन और स्थापन इतना दुष्कर है जो की वर्णनातीत है , यन्त्र को मत्स्य पृष्ठीय रखना है या कूर्म पृष्ठीय , सुमेरु रूपी बनाना है या धारा पृष्ठीय, यन्त्र का निर्माण शिष्य के लिए लय क्रम से करना है या सृष्टि क्रम से, इन सभी बातों का निर्धारण तो गुरु ही कर सकते हैं. मैं यहाँ मात्र उन गुप्त तथ्यों को आपके सामने रख रहा हूँ जिनका प्रयोग कर हम उन शक्तियों की प्राप्ति इस यंत्र के द्वारा कर सकते हैं .

the help of YANTRA.

Before the ARCHAN of SHRI YANTRA it is must to do GURU-POOJAN. Sadhak should make his GURU SANTUSHT and after that start YANTRA ARCHAN. By using SHWET SANDAL, RAKT SANDAL, kamphor and mango in KAAM ROOP PEETH and start YANTRA ARCHAN helps SAADHK to get Siddhi.

Sunday-Red lotus-KHEER, Monday-KUMUD-Cow milk, Tuesday-red lotus-banana, Wednesday-TAGAR-Butter, Thursday-KLHAAR-MISHRI, Friday-white lotus- GHEE, Saturday-blue lotus-GUD.

SAADHAK who uses above given GANDH, Flowers, Food and DHOOP-lamp on decided days get his GREH-PEEDA SHAANT.

At some SIDDH PARVAT with the help of SANDAL, GOROCHAN, turmeric etc SIDDH DRAVYA, flowers of BELA or KDAMB if a sadhak do GURU ARCHAN with GURU PRADATT MANTRA then 36 YAKSHINI get SIDDH and fulfill his wishes.

At SAMUNDRA(sea Corner) if someone do YANTRA ARCHAN by flowers of KEEWDE get CHETAK SIDDHI by which he gets Devine clothes, rosary and jewelry.

By making CHOWKI of RUDRAAKSH KI LAKDI and get SHRI YANTRA STHAAPIT on it for ONE MONTH then do ARCHANAA which enables sadhak to SIDDH PISHAACHINI SIDDHI.

In SUNSAAN Jangle During night time for ONE MONTH by using of SIDDH DRAVYA and MAALTI, CHAMELI, PUNNAAG and KETKI PUSHP kram-anusaar BETAAL can SIDDH. By meaning of krm-anusaar SAADHK should ARPIT MAALTI PUSHP FIRST DAY, CHAMELI SECOND DAY, PUNNAAG THIRD DAY and KETKI FORTH DAY. Who is unaware about the POWERS OF BETAAL AND HIS SIDDHI?

MAYA can SIDDH if a person uses Red Jewellery, Red Cloth, Red SANDAL and Red Rosary at NIRJNN VAATIKA in SHRI CHAKRAA making and doing Devi avahan with the help of covered KLHAAR with

श्री यन्त्र अर्चन के पूर्व गुरुपूजन और गुरु को संतुष्ट करना अनिवार्य कर्म है इसके बाद ही यन्त्र का अर्चन करना चाहिए. श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन , कपूर और आम इन चारो से काम रूप पीठ में यन्त्र का अर्चन करने से सिद्धि प्राप्ति का मार्ग सुगम होता है.

रविवार-लाल कमल-खीर , सोमवार –कुमुद-गाय का दूध,मंगलवार-लाल कमल-केला,बुधवार –तगर-माखन,गुरुवार-कल्हार-मिश्री,शुक्रवार-श्वेत कमल-घी,शनिवार-नील कमल-गुड़.

गंध,ऊपर वर्णित दिवस अनुसार पुष्प एवं नैवेद्य , धूप-दीप अर्पित कर जो साधक अर्चन करता है उसकी गृह पीड़ा शांत होती है.

किसी सिद्ध पर्वत के ऊपर चन्दन,गोरोचन,हल्दी रुपी सिद्ध द्रव्यों के साथ बेला या कदम्ब के पुष्पों से गुरू प्रदत्त मन्त्र से अर्चन करने पर ३६ यक्षिणी सिद्ध होकर मनोकामना पूर्ण करती है.

समुद्र तट पर यन्त्र का अर्चन केवड़े के फूलों से करने पर चेटक सिद्धि की प्राप्ति होती है जिनके द्वारा, वस्त्र,, माला,आभूषण प्राप्त होते हैं.

रुद्राक्ष की लकड़ी द्वारा निर्मित चौकी पर श्री यन्त्र का स्थापन कर १ महीने तक सेमल पुष्प,चन्दन,गोरोचन,हल्दी के साथ यदि किया जाये तो पिशाचिनियों की सिद्धि प्राप्त होती है.

सुनसान वन में रात्रिकाल में सिद्ध द्रव्य और मालती, चमेली,पुन्नाग और केतकी पुष्प से क्रमानुसार महीने भर पूर्ण सपर्या अर्चन करने से बेताल की सिद्धि होती है.क्रमानुसार मतलब पहले दिन मालती, दूसरे दिन चमेली फिर तीसरे दिन पुन्नाग और चौथे दिन केतकी इसी क्रम से इन चारो पुष्पों को क्रम से अर्पित करना है .बेताल की शक्ति से भला कौन परिचित नहीं होगा.

लाल आभूषण,लाल वस्त्र,रक्त चन्दन और लाल माला के द्वारा निर्जन वाटिका में श्री चक्र में देवी का आवाहन कर सिद्ध द्रव्यों के लेप से लिप्त कल्हार,चंपा,अशोक पत्र ,गुलाब एवं गेंदा के फूल

siddh dravya, CHAMPAA, ASHOK PATRA, and rose for ONE MONTH.

One can get TRIKAAL DARSHAN SIDDHI by drawing 6 dal kamal(lotus) and then get SHRI YANTRA in it to do DEVI-AAWAAHAN. With things as KAPOOR, SANDAL, KASTOORI sadhak should do Ayudhon yukt Devi dhyan to get this SIDDHI.

Take water in Anjuli and in think about SHRI CHAKRAA YUKT DEVI and for THREE TIMES SPEAKING OF MAATRIKAA yukt SAMPUTIT SHRI VIDYAA MANTRA and drinking that water by imagine SARASWATI NAADI is lighting on your tong can get Poorn viddwata for you.

By doing SHRI YANTRA POOJAN with SHATPATRI victory is decided in war and Court case, by doing this pooja with KEEWDA brings vehicles in life. Just like with the help of ANAAR- Hidden treasure, MOULSIR-Wife and KALHAAR-children and son is possible. By writing this YANTRA on the edge of Snake bambi with Cinnebar at that think about Devi with 1440 Shakti doing ARCHAN with SIDDH DRVYA, ITRA, SHAAK, PUSHP can get NAAG-KANYA, GNDHRV AND VIDYADHAR under SAADAHK'S control. He can also have PISHAACH or KINNER SARP as his DAAS but he should do this POOJAN for ONE MONTH but if not get success then do same pooja archanaa 3 MONTHS again.

I asked him if a SAADHAK do not do archan like this then is there other way for him!

Yes... he said,

If with DAKSHINAVRTI SHANK this YANTRA will get ABHISHEK then many wishes can fulfill. But remember at time of ABHISHEK with SHRI SOOKT.

If a sadhak is under tension about his AKAAL MRITYU then he should make ABHISHEK with ghee. To have SOUBHAGYA make this ABHISHEK with HONEY, to have AROGYA PRAPTI do this with MILK, for AISHWARYA PRAPTI with GHEE-HONEY and MILK, for POORNA GRAHSATH and PARIVAARIK SUKH with coconut water and to win

से एक माह तक श्री चक्र पूजन करने से माया सिद्ध होती है.

६ दलो वाला कमल बनाकर उसमे श्रीयंत्र की स्थापना कर देवी का आवाहन कर कपूर,चन्दन कस्तूरी द्वारा देवी का आयुधों सहित ध्यान कर अर्चन करने से इस ध्यान और अर्चन के प्रभाव से त्रिकाल दर्शन की सिद्धि प्राप्त होती है.

अंजुली भर जल लेकर और श्रीचक्र युक्त देवी का ध्यान कर मातृका से सम्पुटित श्री विद्या मन्त्र का ३ बार उच्चारण कर उस जल को जीभ में सरस्वती नाड़ी का दीपक जल रहा है ऐसा ध्यान कर यदि पी लिया जाये तो पूर्ण पांडित्य की प्राप्ति होती है.

शतपत्री द्वारा श्रीयंत्र का पूजन करने से युद्ध, मुक़दमे में विजय सुनिश्चित होती है , केवड़े से पूजन करने पर वाहन की प्राप्ति होती है , अनार से गुप्त धन,मौलसिर से स्त्री, कल्हार से पुत्र की प्राप्ति होती है , सर्प बांबी के मुह पर इस यंत्र को सिंगरफ के द्वारा लिख और १४४० शक्तियों से घिरी हुयी देवी का ध्यान कर सिद्ध द्रव्य,इत्र,शाक,पुष्प से अर्चन करने से नाग-कन्या, गन्धर्व व विद्याधर कन्या भी साधक के वशीभूत होती है. पिशाच तथा किन्नर, सर्प आदि भी उसके दास बन जाते हैं. ये पूजन १ माह तक होना चाहिए . यदि एक मास में सिद्धि न मिले तो ३ मास तक अनिवार्य रूप से इस अर्चन को करना चाहिए.

और जो साधक इस प्रकार अर्चन नहीं कर सकते क्या उनके लिए कोई और पद्दति नहीं सफलता पाने के लिए – मैंने उनसे निवेदन किया.

है क्यूँ नहीं.....

यदि दक्षिणावर्ती शंख के द्वारा मात्र श्रीसूक्त का उच्चारण करते हुए इस परम दुर्लभ यन्त्र का अभिषेक किया जाये तो भी बहुत सी मनोकामनाये पूर्ण होती ही हैं.

जैसे की यदि अकाल मृत्यु का भय हो और साधक अपनी पूर्णायु चाहता हो तो उसे गाय के घी से अभिषेक करना चाहिए , सौभाग्य की प्राप्ति के लिए शहद से,आरोग्य प्राप्ति के लिए दूध से, ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए घी-शहद-और दूध से, पूर्ण गृहस्थ और पारिवारिक सुख के लिए नारियल पानी से , और चुनाव में विजय प्राप्ति के लिए बारिश के ओलों या हिमालय की बर्फ के

elections do this ABHISHEK with HAIL STORMS(BAARISH KE OLE) or with the ice bring from HIMAALYA.

A person who offers 108 beautiful flowers on SHRI YANTRAA while speaking its 108 get end his POORVJANAMGATT PAAP and if with this ASHT GANDH CHOORN will ARPIT then KRITYAA BAADHAA will get end.

One thing sadhak always remember that till Daridarta will stay in his house LAKSHMI cannot enter there but in SHRI SOOKT there are THREE PAAD out of which is sadhak do SADHNA of any one then Daridarta and Durbhaagyaa will get end. After that whenever sadhak will do SHRI OR LAKSHMI SADHNA surely he will become successful.

He gives me the knowledge of THREE PAAD and out of them ONE'S VIDHI is here-

By putting YANTRA before you do archanaa of YANTRA AND SADGURUDEV as your DAINIK SADHNA VIDHI. Then with fold hands speak out this given Dhyan Mantra 11 times.

AGYAAN PAATAK TAMAS TATI TEEVRA RASHMI, DOURBHAAGYA BHOODHAR VIDAARAN VAJRA MEEDE,

ROGAARTI GHOR PHANI MARDAN PAKSHIRAAJAM, LAKSHMI PADDVAYAMANTHAM HARAM SUKHAARTHI.

KHADAGAM SA-VAAT-CHAKRAM CH KAMALAM VERMAIV CH,KARAISHVATURBHIRVIBHRAANAAM DHYAAYE CHANDRANNAAM SHRIYAM.

Then everyday as per 3000 times DAILY do this JAP with RUDRAAKSH MALA 32000 TIMES. JAP should do at NIGHT ON VEERAASAN and after completing JAP SANKHYAA with TIL, GUD AND GHEE do DASHAANSH HAWAN and make a

जल से अभिषेक करना चाहिए.

श्रीविद्या के १०८ नमो का उच्चारण करते हुए १०८ सुगन्धित पुष्प जो श्री यन्त्र पर १ मास तक अर्पित करता है उसके पूर्वजन्मगत पापों का नाश हो जाता है. तथा इसके साथ यदि अष्ट **गंध** का चूर्ण भी अर्पित किया जाये तो कृत्या बाधा समाप्त हो जाती है.

एक महत्वपूर्ण तथ्य ये भी ध्यान में साधक को रखना चाहिए की जब तक दरिद्रता का नाश नहीं होगा तब तक लक्ष्मी आपके जीवन में प्रवेश कर ही नहीं सकती और न ही उसका स्थाइत्व हो सकता है साधक के घर में , परन्तु श्री सूक्त में तीन ऐसे पद हैं,जिनमे से किसी एक की भी साधना यदि कर ली जाये तो दरिद्रता और दुर्भाग्यका नाश होता ही है और इसके बाद साधक जब भी श्री या लक्ष्मी से सम्बंधित साधना करता है तो उसे अनुकूलता और सफलता मिलती ही है.

उन्होंने मुझे तीनो पदों के बारे में समझाया था मैं उसमे से एक पद की विधि आप सभी के समक्ष रख रहा हूँ.

यन्त्र को सामने रख कर दैनिक साधना विधि के अनुसार सदगुरुदेव और यन्त्र का पूजन करें, फिर हाथ जोड़कर निम्न ध्यान मंत्र का ११ बार उच्चारण करे .

अज्ञान पातक तमस् तति तीव्र रश्मिं , दौर्भाग्य भूधर विदारण वज्र मीडे.

रोगार्ति घोर फणि मर्दन पक्षिराजं,लक्ष्मी पदद्वयमनथं हरं सुखार्थी.

खड्गं स-वात-चक्रं च कमलं वरमेव च,करैश्चतुर्भिर्विभ्राणाम् ध्याये चंद्राननाम् श्रियम .

फिर तीन हजार मंत्र प्रतिदिन के हिसाब से नियम पूर्वक ३२,००० जप रुद्राक्ष माला से करे. जप रात्रि में वीरासन में होना चाहिए ,जप संख्या पूर्ण होने के बाद तिल,गुड और घी से दशांश हवं कर दे और किसी ब्राह्मण और कन्या को भोजन करवा कर दक्षिणा आदि से संतुष्ट कर दें. परिणाम आपके समक्ष होगा .

BRAAHMIN & KANYA to have Food AND DAKSHINAA. Result will be in front of you.

MANTRA- **Kshutpipasaamlaam jyeshthaalakshmim nashyaamyaham,**

Abhutimsamriddhim ch sarvaannirnud me grahaat.

Beside this there are many GOPNIYA VIDHIYA which GURU himself give to sadhak but always remember this will help you only when SHRI YANTRA get POORNA ROOPEN PRAAN PRATISHTHIT and will Deept and CHAITANYA. Otherwise it will nothing but A PIECE OF METAL OR BHOOJ PATRA.

IT is my good will that SADGURUDEV gave me this knowledge so you too come and get this GOPNIYE SOOTRAA and feel blessed.

मंत्रः- **क्षुत-पिपासामलाम् ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाश्याम्यहम् ,**

अभूतिम्समृद्धिम् च सर्वान् निर्णुद मे गृहात.

इनके अतिरिक्त भी बहुत सी गोपनीय विधियाँ है जिन्हें गुरू स्वयं ही साधक को प्रदान करता है , पर एक बात अवश्य ही ध्यान रखने योग्य है की इन प्रक्रियाओं और सामान्य पूजन के द्वारा जीवन में उन्नति तभी प्राप्त होगी जब श्रीयंत्र पूर्ण रूपेण प्राण प्रतिष्ठित, दीप्त और चैतन्य होगा. अन्यथा वो यन्त्र मात्र धातु या भोजपत्र का टुकड़ा मात्र होगा.

ये मेरा सौभाग्य है की मुझे सदगुरुदेव ने ये ज्ञान प्रदान किया , आप भी बढिए और गुरुदेव से इन गोपनीय सूत्रों को प्राप्त कर अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल दीजिए.

Swarna Rahshyam - Parad And Prakti Rahsh
Part - 1

स्वर्ण रहस्यम-१ पारद और प्रकृति रहस्य

As yogis think there is no basic element in nature and everything is made by the mixture of PAARAD (MERCURY) and SULPHUR (GANDHAK).

It is strange but true and ADHYAATM (SPIRITUALITY) has proved it. This SIDHAANT (PRINCIPLE) can understand with open mind which means vyaapk drishti. Remember all the basic and constructive (srijan) elements are only PAARAD and SULPHUR and with their mixture metals took birth.

So PAARAD is as PRAKRITI PURUSH SATV and GANDHAK is PRAKRITI SATV. We all know new thing can born with the combination of man and woman. Science also believes that by GUNSUTRA (CROMOSOMES) it is decided that who will born- a boy or a girl. Everyone has the qualities of both male and female and these qualities decided person's behavior. But sometimes if a problem happens during yog then new baby get sexual differences. Same thing is with metals. This is proved by INDIANS and WESTERN RAS SIDHS. When we

सृष्टि में पाए जाने वाले सभी तत्वो का निर्माण पारद और गंधक के योग से हुआ है. अर्थात यौगिकों की प्रधानता है मूल पदार्थ कोई नहीं...... अजीब लगता है न ऐसा सुन या पढ़ कर?????

पर ये सत्य है और आध्यात्म ने इस बात को साबित भी किया है, दृष्टि व्यापक हो , कुतर्क न हो तो इस सिद्धांत को समझा जा सकता है. देखिये इस ब्रह्माण्ड में पाए जाने वाले मूल और सृजन कारी तत्व सिर्फ पारद और गंधक हैं.

जिनके योग के कारण ही धातुएँ बनी है, जहा पारद प्रकृति पुरुष सत्व है वही गंधक प्रकृति सत्व. और हम सभी जानते हैं की कोई भी सृजन तभी हो सकता है जब पुरुष और स्त्री तत्व का आपस में योग हो. और विज्ञानं भी ये बात मानता है की गुणसूत्र के आधार पर ही ये भी निर्धारण होता है की उत्पन्न जीव पुरुष होगा या स्त्री, कोई भी जीव पूर्ण पुरुष या पूर्ण स्त्री नहीं होता है अपितु उसमे ये दोनों ही गुण कम या ज्यादा मात्रा में होते हैं, हाँ जो गुण अधिक होते हैं वो जीव वैसा ही व्यव्हार करता है, पर कभी कभी योग के दौरान इन गुणसूत्रों में विक्रत्ता आ जाने के कारण जो जीव

dissolve anything we get male and female features because it can make a new thing like it.

ALCHEMY is based on the principle that it is possible to change every person, thing and metal. Here change means TO GIVE NEW FORM (ROOPANTRAN) not construction (NIRMAAN). To see results we can use birds and animals by transform medicine in their body and watch its positive and negative effects.

But in RAS SHASTRA when a new medicine is made it checks its effect on NON LIVING THINGS (NIRJEEV VASTU). Because MERCURY and SULPHUR had divine qualities and when they enter in some metal or living body they end every type of impurity and make them pure. Here according to TATV meaning of purity is different as by the purity of metal means to reach at that place where nature wants to take it in proper environment. And when in fire it does not melt it means now the metal is completely pure because fire only burns its impurities. You must think this principle is from DARSHAN (PHILOSOPHY) and this is the reason of less number of RAS SIDHS. For man nature, situation and time do the same thing which fire does for metals. Gold is most precious metal of nature and RAS SHAASTRA named it KUNDAN which means after placing it on fire for many times it does not lose its weight and shines more brightly. Nature also wants to make other metals like this but in different environment PAARAD(MERCURY) and SULPHUR(GANDHK) fails to make good mixture and metals become impure then Pure Gold. For example-

PURE GOLD= PURE MERCURY+PURE

बनता है वो लैंगिक गुणों में सामान्य नहीं रहता. ये अवस्था धातुओं के साथ भी है और प्राणियों के साथ भी.ऐसा सिर्फ मैं नहीं कह रहा हूँ. बल्कि बड़े बड़े रस सिद्धों का वक्तव्य भी यही है, चाहे फिर वो भारतीय हो या पाश्चात्य. किसी भी पदार्थ का विघटन करने पर उसमे स्त्री और पुरुष तत्व की प्राप्ति होगी ही , और एस इसलिए कहा जा सकता है की क्यूंकि यदि अपने समकक्ष जाती या पदार्थ को उत्पन्न कर सकता है तो फिर उसमे ये दोनों लैंगिक गुण होने चाहिए. हाँ ऐसा जरुर हो सकता है की उसके ये दोनों या फिर कोई एक गुण सुषुप्त अवस्था में हो.

कीमिया का सिद्धांत ही इस बात पर अवस्थित है की चाहे पदार्थ कोई प्राणी हो या फिर कोई वस्तु या धातु, उसमे परिवर्तन संभव है. निर्माण की बात नहीं बात है रूपांतरण या परिवर्तन की. जहा विज्ञानं जब भी किसी औषधी का निर्माण करता है तो उसकी क्षमता को , प्रभाव को परखने के लिए किसी पशु, पक्षी या जीव का सहारा लेता है उस औषधि को उस प्राणी के शरीर में पहुचाकर उस सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव को देखा जाता है.

परन्तु रस शास्त्र ऐसा नहीं करता, वो जब भी किसी वेधकारी या क्रमक औषधि का निर्माण करता है तो उसे सबसे पहले विज्ञानं की भाषा में निष्प्राण या निर्जीव धातुओं पर प्रयोग कर उन परिवर्तनों को देखता है जिसके निमित्त वो द्रव्य(भस्म आदि) निर्मित किया गया है. क्यूंकि रस तंत्र विशुद्धता को महत्त्व देता है, अर्थात यदि पारद या गंधक में दिव्यता है तो उन पर संस्कृत गुणों के कारण जब वो किसी भी धातु या शरीर में प्रविष्ट हो तो अपने विलक्षण प्रभाव के कारण माध्यम धातु या शरीर की सभी अशुद्धता को नष्ट कर विशुद्धता का विकास करेंगे. यहाँ पर तत्व के अनुसार विशुद्धता की

SULPHUR

SILVER= PURE MERCURY+ LESS SULPHUR

COPER= PURE SULPHUR+LESS MERCURY

LEAD= LESS MERCURY+IMPURE SULPHUR

JASTAA=IMPURE MERCURY+LESS SULPHUR

IRON=LESS MERCURY+IMPURE SULPHUR

By this system metals are made and remember in pure and impure metals MERCURY and SULPHUR is always present. And if yog can be making under control then surely perfect body take birth. Here I am doing ROOPAANTRAN by making balance. Only nature can give birth to new bodies. All the VEDHAK KIRYA and KRAAMAN SANSKAR in RAS TANTRA are based on this principle. This is also the secret of metal transformation. You don't believe that our SIDHS do this metal change thousands times and remember if this VEDHAK KIRYAEN and KRAAMAN SANSKAR can change metal then they can give new life to human also. And this life will free from pain and problems. Always keep in mind that every pure metal, soul, Aura Of body, and gold will have golden shine. You know as sadhak do more sadhana he becomes more pure from inside same in the case of metals. I hope you understand what I mean.

This Article is a part of un-published **SWARN RAHASYAM** book which will explain in every article of **TANTRA KOUMUDI**. And in a book **ALCHEMY TANTRA** by **SADGURUDEV** this process is also explain under the title "**JAB AGHORI NE MERE DWARA SWARN KA NIRMAAN KARVAYA**". Many people try it

परिभाषा भिन्न भिन्न है, जैसे किसी धातु के लिए उसकी विशुद्धता का अर्थ होता है उस जगह तक पहुचना जो उसे प्रकृति बनाना चाहती थी पर अनुकूल वातावरण न मिलने के कारण वो वैसे बनने से वंचित रह गया अर्थात किसी भी धातु की विशुद्धता का अर्थ ये है की उसका अग्नि में क्षय न हो, वो अक्षय हो जाये और ये तभी संभव हो सकता है जब वो विशुद्ध रूप में हो क्यूंकि अग्नि सर्वश्रेष्ट परीक्षक है हमारी विशुद्धता को परखने के लिए, वो तपाती है जलती है , परन्तु आप को नहीं अपितु आपकी अशुद्धता, न्यूनता और कमियों को, और ये क्रम तब तक चलता है जब तक की आप विशुद्ध अवस्था में न आ जाये. आप को ये सिद्धांत दर्शन से जुडे हुए लग रहे होंगे न , पर ऐसा है ही नहीं, इस सिद्धांत को न समझ पाने के कारण ही तो आज तक रस सिद्धों की संख्या न्यून है. मनुष्य के लिए प्रकृति, परिस्थिति और काल वही काम करते हैं जो की धातुओं के लिए अग्नि. प्रकृति की सबसे मूल्यवान धातु स्वर्ण है, ऐसा स्वर्ण जिसे रस शास्त्र कुंदन की संज्ञा देता है.कुंदन का अर्थ होता है ऐसा स्वर्ण जिसे चाहे कितने बार गला लो, कितनी ही देर अग्नि पर तपाओ पर वो अपने भर में घटेगा नहीं बल्कि उसकी आभा बढती चली जायेगी. और प्रकृति धातुओं को उसी रूप में तो बनाना चाहती थी. पर परिस्थिति अनुकूल न होने के कारण उन धातुओं में मूल तत्व पारद और गंधक का सही योग न होने के कारण विकार उत्पन्न हो गया और वो उस विशुद्ध तत्व में निर्मित होने से वंचित हो गए. जैसे स्वर्ण अपने आप में विश्द्ध है क्यूंकि उसमे योगनुपट सही है.पर बाकि...

विशुद्ध स्वर्ण= विशुद्ध पारद+विशुद्ध गंधक

चांदी= विशुद्ध पारद + अल्प गंधक

ताम्बा= विशुद्ध गंधक+ अल्प पारद

but fail because in books only principle are written but the vidhi will tell by **SADGURUDEV.** But I can only give idea that if by vegetation (vanaspati), things or Tantra sadhana you get that using Swarn Jarit Parad and basic five things Fire stable (Agni Sthayi) on fire then that things will change in BHASM and you will get **SIDDH SOOT** and you will get what you want. This is all for now...

सीसा=अल्प पारद + अशुद्ध गंधक

जस्ता= अशुद्ध पारद + अल्प गंधक

लोहा= अल्प पारद + विकृत गंधक

इसी प्रकार से धातुओं का निर्माण होता है. यहाँ ध्यान दीजियेगा की चाहे शुद्ध या अशुद्ध अवस्था में हों पर पारद और गंधक इन सभी धातुओं में हैं. यदि किसी भी प्रकार से योग को संतुलित कर दिया जाये तो विशुद्ध तत्व की प्राप्ति संभव है क्युकी जब विशुद्ध परिवर्तन होगा तो विशुद्ध तत्व का ही होगा. यहाँ मैंने निर्माण नहीं बल्कि रूपांतरण किया है , क्यूंकि हमने संतुलन किया है. निर्माण कार्य प्रकृति ही कर सकती है. और रस तंत्र की सभी वेधक क्रियाएँ , क्रामण संस्कार आदि बस इसी सिद्धांत का अनुसरण करने पर सम्पादित होते हैं. ये रहस्य ही धातु परिवर्तन का रहस्य है. और शायद आप इस का महत्व न समझो लेकिन, इसी सूत्र के आधार पर हमारे सिद्धों ने हजारों लाखो बार ये धातु परिवर्तन की क्रिया की है, और याद रखिये जो क्रमक या वेधक तत्व धातुओं में विशुद्धता प्रदान कर सकता है तो चैतन्य मानव शरीर में क्यूँ नहीं, क्यूंकि फिर वो मानव शरीर को सभी जरा, पीड़ा और अभावों से परे कर विशुद्ध आत्मा और शरीर दे देता है, और याद रखिये चाहे वो विश्द्ध स्वर्ण हो या फिर विशुद्ध देह या आत्मा , हमेशा विशुद्धता का आभा मंडल या चमक सुनहरी ही होगी. आप जानते ही हैं की जैसे जैसे साधना का स्तर व सफलता बढते जाती है वैसे वैसे उच्चावस्था में साधक का आभा मंडल सुनहरा होने लगता है. आशा है आप मेरा इशारा समझ गए होंगे.

क्रमशः........

ये लेख अप्रकाशित **स्वर्ण रहस्यम** पुस्क का ही भाग है, जो की **तंत्र कौमुदी** में प्रति अंक लेखमाला के रूप में दिए जायेंगे. हाँ एक बात मैं और बता दूँ की सदगुरुदेव की चर्चित कृति " **अल्केमी तंत्र**" में एक क्रिया दी हुयी है की जब अघोरी ने **मेरे द्वारा स्वर्ण का निर्माण करवाया.** उस प्रक्रिया को साधकों ने लाखो बार किया है पर सफलता हाथ नहीं आई, पर सब एक बात भूल जाते हैं की ग्रन्थ सिद्धांत बताते हैं उसकी गोपनीयता का खुलासा तो सदगुरुदेव ही करेंगे न. पर कोई बात नहीं मैं सिर्फ इतना ही इशारा कर सकता हूँ की यदि किसी भी प्रकार से मतलब वनस्पतियों, पदार्थो या साधना के योग से उन पांचो पदार्थ को अग्नि स्थायी कर लिया जाये और पारद स्वर्ण जारित हो वे सभी पदार्थ अग्नि में टिके रहेंगे और भस्म हो जायेंगे और आपको **सिद्ध सूत** की प्राप्ति हो जायेगी तथा निश्चय ही वो क्रिया सिद्ध होकर आपको आपका मनोरथ पूरा करवा देगी. इस बार के लिए इतना ही..............

Ayurveda - Achuk Siddh Saral Prayog

आयुर्वेद के अचूक सिद्ध सरल प्रयोग

Here i am giving such a an important ayurvedic prayog ,what i had got from sadgurudev ji,and whenever i tried ,found 100 percent successful. So try for it and get most benfic result of that so we also found our effort successful.

1. A piece of Cotton should be dipped(two or more times) into juice(milk) of satyanasi or hemdugdhaand dried it ,in the shodow.Repeat this process 16 times, light it, as a batti in a earthen lamp filled with ghee (Ghrut deepak or diya commonly said.)and preapare"Kajal" with the help of that.place this kajal in a place with care. Use this kajal in night,and also do 11 times paath (complete reciting of strota) Chakshushmati strota.following this process daily, continously for one month, eye sight power willbe back / regained and the spectacles need to be set aside.

2. Take three doses of mix made of mixing the termeric ,juice of Aawala/Aamala and honey , daily, removes all type of prameh and swet Pradar.

यहाँ मैं ऐसे प्रयोग दे रहा हूँ जो मुझे सदगुरुदेव से प्राप्त किये हैं और मैंने जब भी आजमाए हर बार शत प्रतिशत सफल रहे हैं. अतः इन आयुर्वेदिक प्रयोगों को आजमाकर इनका लाभ उठाये और हमारे प्रयत्न को सार्थक करें .

□. सत्यानाशी या हेम्दुग्धा के दूध में रुई को बार बार भिगोये और छाया में ही सुखायें , ये सम्पूर्ण क्रिया १६ बार करें फिर इसको घृत दीपक में बत्ती बनाकर जलाये और काजल बना लें. इस काजल को सुरक्षित रखें , रात्रि में सोते समय इस काजल को आँखों में लगाने और इसके साथ चाक्षुष्मती स्तोत्र का ११ पाठ नित्य करने पर एक मास में ही आँखों से चश्मा उतर जाता है ,नेत्र ज्योति तीव्र हो जाती है .

□. हल्दी, आंवले का रस और शहद मिलकर दिन में तीन बार लेने से सभी प्रकार के प्रमेह और श्वेत प्रदर नष्ट हो जाते हैं.

3. Daily brushing the teeth with the powder made of termeric,salt, sarson oil. This keeps your teeth healthy for life.	. हल्दी, नमक और सरसों तेल मिलाकर रोज मंजन करने से पुरे जीवन में कभी भी दांतों के रोग नहीं होते.
4. Take one seed of Palash and mix it with equal quantity of Semi powder form of Sesame seeds and also add equal quantity of sugar.this mix if take once aday , keeps you healthy and your body willbecome more healthy and strong.	. पलाश का एक बीज लेकर दरदरे पिसे तिल और शक्कर समभाग मिला कर खाने से अपूर्व बल प्राप्त होता है और दुबलापन निश्चित ही दूर होकर मजबूत और हृष्ट पुष्ट शरीर की प्राप्ति होती है .

Adbhut KanakDhara Yantra Sadhana

Jai gurudev

It's the great of I ,that even at the age of just 32 years I was in the holy divine feet of Param Poojya sadgurudevji, as Sadgurudev ji with me from previous lives uncountable, but in this life , I meet him in person oct 1996 ,now I am most fortunate whose whole family , fully devoted to his holy feet.

All the achievement gained in the life is because of his blessing's still remembered,1995-96 when my father health was very critical condition, he himself, did the **Dhanvantary mantra** jap for him. what could not positively achieved in two years of medical treatment, is possible within 6 month of that jap.. in 2004 when my father completely lost his eye sight, and no possibility of gaining back his eye sight, my mother and I did the

जय गुरुदेव

यह मेरे जीवन का सौभाग्य हैं की मात्र ३२ वर्ष कि आयु मैं में सदगुरुदेव जी के चरण कमलो में पहुँच गया था |कई जन्म और जन्मान्तरो का यह सम्बन्ध था पर इस जीवन में व्यक्तिगत रूप से अक्टुबर १९९६ में उनके चरण कमलों में पहुँच सका , में आज उन भाग्शालियों में से अपने आप को एक मानता हूँ जिनका पूरा परिवार उनके प्रति श्रद्धा युक्त हैं.. आज मैं जो भी इस जीवन में उपलब्धियां प्राप्त कर पाया हूँ ,इन सबके पीछे उनका आशीर्वाद ही तो हैं|

मुझे आज भी याद हैं सन १९९५-९६ में जब मेरे पिताजी का अत्याधिक ख़राब हो गया था , उस समय सदगुरुदेव जी ने स्वयं **धन्वन्तरी मंत्र** का जप उनके लिए किया था | जो दो साल के मेडिकल इलाज़ से संभव नहीं हो पाया ,वह मात्र ६ महीने के मंत्र जप ने संभव कर दिखाया ,सन २००४ में मेरे पिताजी की आखों की रोशनी पूर्णतया चली गइ थी ,

"**chakkshushi strota** " jap provided by Sadgurudev , and with sadgurudevji blessing my father regained his lost vision, even at the age of 65 years , my mother still not need any spectacles.

In 2001 , I read "**Himalaya ke yogiyon Ki gupt Siddhiyan** " authored by sadgurudev ji.and decided to go for a prayog mentioned in that regarding to have a child by reciting a specific strota mentioned in that in from of bhagvaan Pardeshwer for completely 60 days. this prayog was also 100% successful and my son is of 9 yrs age , what more, except Sadgurudev ji blessing.

with the blessing of Sadgurudev, I was always lucky to have/gained direction from my elder guru brothers. one of them is Arif Bhai.

My first meeting with Shri Arif bhai ji happened in Mumbai ,when he visited there. he is having personality embedded with scholar and wisdom.Arif ji associated with Sadgurudev ji from the very young age, I thrilled to listen various old experience related to sadgurudev ji and of sadhana shivir held that time.

I also remember once I purchased book named "Tantrik Siddhiyan" from Varanasi railway station.i read the

और कोई भी सम्भावना शेष नहीं रही कि, किसीतरह से उनकी आखों की रोशनी वापिस आ सकेगी, तब सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त"**चाक्षुषी स्त्रोत** " का पाठ मैं और मेरी मां ने पिताजी के लिया किया और पिताजी ने वापिस नेत्रज्योति प्राप्त कर ली| और यहाँ तक की मेरी माताजी जो इस समय ६५ वर्षो की हैं उन्हें अभी भी किसी भी प्रकार के चश्में की आवश्यकता नहीं पड़ती हैं.|

सन२००१ में मैंने "**हिमालयों के योगियों की गुप्त सिद्धियाँ** "नाम की सदगुरुदेव जी द्वारा लिखित किताब पढ़ी | और उसमें वर्णित एक प्रयोग, जो पुत्र प्राप्ति के लिए दीया गया हैं उसे करने का मन बनाया , उस प्रयोग के अनुसार ,दिए गए स्त्रोत का पाठ भगवान् पारदेश्वर के सामने ६० दिन तक करना था| और इस प्रयोग में भी मुझे १०० प्रतिशत सफलता मिली |आज मेरा पुत्र ९ वर्ष का हैं| सद गुरु देव जी का आशीर्वाद नहीं तो और क्या हैं|

ये सदगुरुदेव जी की कृपा हैं , कि मुझे बरिष्ट गुरुभाइयों से भी लगातार मार्ग दर्शन प्राप्त होता रहा हैं, उनमें से एक आरिफ भाई भी हैं| मेरी पहली मुलाकात आरिफ भाई से ,उनके मुबई प्रवास के दौरान हुए | उनके व्यक्तित्व में विद्वता के साथ ज्ञान का भी समावेश हैं|वे सदगुरुदेव जी के साथ बहुत कम उम्र से हैं , मै उनसे पहले हुए अनेकों शिविरों और सदगुरुदेव जी के सम्बंधित अनेको पुराने संस्मरण सुन कर रोमांचित हो जाता था |

chapter mentioning kanak dhara in that, in which kanak dhara sadhana described how ashta Lakshmi dhayan and viniyog and other process , was completed in the indirection Sadgurudev ji.but some of the point I was not able to understand completely, Arif bhai described and cleared some of the point that to me ,when I meet him.

Arif bhai described kanakdhara sankalp ,dhyan viniyog and matra jap process of related. also fully described the samputit path of kanakdhara strota.and later described about how to perform havan for this sadhana.

This sadhana process of 11 days has been successfully completed by my wife. Till date ,eight times ,she successfully completely this kanakdhara sadhana. Each times I and my family witnessed so any miracle, our financial status improved many times, before that money comes but we are not able to save that but now it seems all the financial insecurity has totally finished.

The sadhana process , how my wife completed this sadhana is as follows.

1. This sadhana can be completed either in 11 days or in 21 days.

इसके साथ ही मुझे याद आता हैं कि ,बनारस के रेलवे स्टेशन से मैंने सदगुरुदेव जी द्वारा रचित **"तांत्रिक सिद्धियाँ "** किताब खरीदी | उस में मैंने कनकधारा प्रयोग से सम्बंधित अध्याय पढ़ा ,उसमे दिए विवरण के अनुसार सदगुरुदेव जी के निर्देशानुसार किस तरह से अष्ट लक्ष्मी स्थापन , उनके ध्यान, और विनियोग को किस तरह से किया गया था, उसे समझाया गया था | परन्तु कुछ जगह पर दिए गए विवरणों को मै ठीक से समझ नहीं पा रहा था |आरिफ भाई जी ने मुझे इस प्रयोग से सम्बंधित बातों को , जिन्हें मै समझ नहीं पा रहा था , समझाया| आरिफ भाई जी ने मुझे बताया कि किस प्रकार से कनकधारा संकल्प ,ध्यान, और विनियोग , मंत्र जप करना हैं |इसके साथ अत्याधिक महत्वपूर्ण संपुटित कनकधारा स्त्रोत का पाठ कैसे करना हैं, साथ ही साथ इससे सम्बंधित किस प्रकार से हवन करना हैं उसे समझया | इस 11 दिवसीय साधना को मेरी धर्म पत्नी सफलता पूर्वक संपन्न कर चुकी हैं , तब से आज तक उन्होंने 8 बार ये साधना प्रक्रिया पूर्णता के साथ संपन्न की ,हर बार हम सभी परिवार वाले इस बारे के स्वयं गवाह हैं की किस प्रकार से चमत्कारिक परिणाम हमें प्राप्त हुए हैं |

हमारी आर्थिक स्थिति पहले से कई गुना अच्छी हो गयी हैं,पहले पैसा या धन आता तो जरुर था ,पर रुकता नहीं था , पर अब हम इस आर्थिक असुरक्षा को पार कर चुके हैं|

इस साधना को जिस प्रकार से मेरी धर्मपत्नी ने संपन्न की हैं उसे मै, आपके सामने रख रहा

2. In 11days (what she used to prefer)..Every day , kanak dhara mantra jap of 11 complete round of rosary with Kamalgatta rosary and 21 times path of samputit kanakdhara strota.

3. My wife did that every morning and evening time too (in each sitting)..11round of kanakdhara mantra jap and 11 times recitation of **samputit kanakdahara strotra**.

4. This sadhana required yellow colored cloths and asan (sitting mat)should be of yellow color,and sadhak should sit on aasan (sitting mat)facing east direction.

5. On Arif Bhai advice I got Kuber yantra, shree yantra, and very special kanakdhara yantra from jodhpur gurudham.(Most important point of this very specific kanakDhara yantra is that Shree Yantra ,Kuber Yantra, And shodshi kanakdhara yantra all are made in this very special kanakdhara yantra, means all the three yantra is in one.that should be used).

6. First she did kalsh sthapan (pot filled with water with special

हूँ...

1. इस साधना को ११ या २१ दिन में संपन्न किया जा सकता हैं|
2. ११ दिवसीय (जो उन्होंने पसंद की हैं),उसमें ११ माला मंत्र जप कमल गट्टा की माला से तथा संपुटित कनकधारा स्त्रोत के ११ पाठ भी करना होता हैं|
3. मेरी धर्मपत्नी ने ११ माला कनकधारा मंत्र जप और ११ पाठ संपुटित कनकधारा स्त्रोत का किया ,(सुबह और शाम दोनों समय , प्रत्येक दिन किया)
4. इस साधना में पीले वस्त्र ,पीले ही रंग का आसन हो साथ ही साथ ,पुर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें|
5. आरिफ भाई जी की सलाहानुसार मैंने कुबेर यन्त्र ,श्री यन्त्र और **अत्यावश्यक विशेष कनकधारा यन्त्र** को , पुज्य गुरुदेव से जोधपुर से प्राप्त किया|(अत्याधिक महत्वपूर्ण तथ्य ये हैं कि इस "विशिष्ट कनकधारा यन्त्र" में ही कुबेर यन्त्र और श्री यन्त्र तथा षोडशी कनकधारा यन्त्र बने हुए रहते

poojan ritual). Then Bhagvaan ganesh poojan, Sadgurudev poojan and after that 1 round of rosary guru mantra jap.

7. Take sankalp of this sadhana by taking water in right hand palm. Then same way viniyog also did.

8. Than kakandhara dhyan is done after that panchopchar poojan(poojan with five items),and than start kanakdhara mantra jap of11 round of rosary.

9. Than 11 times path of samputit kanakdhara strota ,and than Mahalakshmi aarti done.

10. Same process repeated morning and evening times(means two times a single day) for 11 days continuously.

11. On the 12 thday, with havan with kanakdhara mantra performed for two round of rosary i.e. 216 times aahuti required. ,after that havan with two times path of samputit kanakdhara strota also did. In aahuti of havan--- kheer/sukha meva and keshar /honey is used.

12. Later kanya bhojan (food offering to girl child age not

हैं |एक ही यन्त्र में तीन यन्त्र होते हैं | इस प्रकार के यन्त्र पर ही ये साधना संपन्न हो पाती हैं)

6. सबसे पहले उन्होंने कलश स्थापन ,भगवान् गणेश पूजन ,सद गुरुदेव जी पूर्ण पूजन ,इसके साथ ही १ माला गुरु मंत्र जप भी किया|
7. सीधे हाँथ की हथेली में जल ले कर पहले संकल्प लिया फिर इसी प्रकार से विनियोग किया |
8. इसके वाद कनकधारा ध्यान किया फिर पंचोपचार पूजन किया | इसके वाद ११ माला कनकधारा मंत्र जप किया|
9. इसके वाद ११ पाठ संपुटित कनकधारा स्त्रोत के संपन्न किये |फिर महालक्ष्मी आरती संपन्न की | इस पूरी प्रक्रिया को उन्होंने सुबह और शाम दोनों समय ,इसी प्रकार से संपन्न किया| (प्रत्येक दिन, दो बार संपन्न की) और ये क्रम लगातार ११ दिन तक चलता रहा |
10. १२ बे दिन हमने दो माला हवन (२१६ बार) कनकधारा मन्त्रों से किया , इसके बाद संपुटित कनकधारा स्त्रोत से भी दो पाठ करते हुए दी| हवन सामग्री में हमने ,

more than 16/17 years of age ,with some money offered as a dakshina) for 5/7 girl child also did.

In this way, my wife completed the adbhut kanadhara sadhana, and I already wrote the effect I have got in short.

i am really thankful to Arif bhai, for clearing the confusion and asking me have this great special kanakdhara yantra form Poojya Gurudev at jodhpur gurudham.

This Great yantra is still in my pooja room, my wife still very happy to completed this sadhana still make in it continue.

What more I say it is the blessing our sadgurudev ji, what else.

Your gurubrother

Nitin Pancharia

npancharia-icc@modi.com

खीर/ सूखा मेवा तथा केसर /शहद का प्रयोग किया |

11. इसके बाद हमने ५/७ कन्याओ का कन्या भोजन व उन्हें दक्षिणा भी प्रदान की |

इस प्रकार से मेरी धर्मपत्नी ने इस साधना को संपन्न किया , और मै पहले ही इस प्रयोग के परिणाम को संक्षेप में लिख चुका हूँ |

मै आरिफ भाई जी के लिए आभारी हूँ की उन्होंने न केबल इस साधना के बारे में, मेरी कठिनाइयों को दूर किया, साथ ही साथ मुझे इस यन्त्र को गुरुधाम जोधपुर से प्राप्त करने के लिए कहा |

यह महान यन्त्र अभी भी मेरी पूजा कक्ष में हैं, मेरी धर्मपत्नी इस साधना के परिणाम से बेहद उत्साहित हैं, और वे इसे लगातार करना चाहती हैं |

इससे ज्यादा में क्या कह सकता हूँ की ये सदगुरुदेव जी की कृपा हैं ,और क्या ...

आपका ही गुरु भाई

नितिन पंचारिया

npancharia-icc@modi.com

Vol . 0 1 - No 02

काल ज्ञान सिद्धि महा विशेषांक

Second Issue

Feb - 2011

Name of the Articles | Page #

SADGURUDEV - PRASANG

सदगुरुदेव प्रसंग

काल तंत्र और पंचमहाभूत संस्कार

In Sadgurudev ji presence ,Without any hesitation simply put my question in his divine holy feet , and many times I received answer of mine queries even much before I put them. One such a occasion when I was sitting in his divine presence, very politely I asked him

"Gurudev what is the bench mark of shishyta (being a true disciple). ?

How a shishy can become kaljayi (one who control kaal i.e .samay)?

And when his shishyta (discipleship) became reaches its truthiness in real sense.?

What is the meaning of kaal?

Can we get victory /control over kaal?

After asking the questions I was just saliently watching his face full of divine

सदगुरुदेव के सानिध्य में मैं निःसंकोच अपनी जिज्ञासाओं को उनके समक्ष रख देता था और बहुतेरे बार तो जिज्ञासाओं को रखने के पहले ही उनका समाधान उनके द्वारा मुझे दे दिया जाता था . ऐसे ही एक अवसर पर जब मैं उनके श्री चरणों में बैठा था तब मैंने उनके समक्ष अत्यंत ही विनीत भाव से अपने प्रश्न को रखा- की गुरुदेव शिष्यता का मापदंड क्या है ?

कैसे सही अर्थों में शिष्य कालंजयी हो सकता है?

और कब उसकी शिष्यता सार्थक होती है ?

काल का अर्थ क्या होता है?

क्या हम काल पर विजय पा सकते हैं?

ये कहकर मैं चुप चाप उनके अद्भुत तेजस्विता से भरे चेहरे की और देखने लगा.

तब सदगुरुदेव ने मुझे प्यार से मेरी जिज्ञासा का

radiance .

Than Sadgurudev ji very lovingly and blissfully replied me that " to become a shishy or to absorbs the true shishyta's quality is very difficult ,that's the reason many of the sadhak due to emotion take Diksha but their chetna (mental quality) does not keep stand still on the bhav bhumi of shishyta . that's why lacking of such ability ,their life also not reach purntav (full and true meaning of life).

That we all know that human body is made of panch maha bhut (basic five great element) means that prathvi (earth) ,jal (water) , gagan(sky), vayu(air) ,agni(fire) . Butt his creation happened only on the physical level and till than these panch mahabhut associated with five element , spiritual or mental progress can not be possible .understand that way until that panchbhut get Sanskarised(a special way to purified) till than sadhak /person lives only on the general plain and his life is based on Annmaykosh (one of the special five body lies in human body).and his suppressed vasnaye (unfulfilled wishes)lies in base root of his Annmay kosh .if sadhak truly want to achieve highness and completeness in his life than he has to go for Annmaykosh to Pranmaykosh and from that to anomay kosh(another

समाधान करते हुए कहा की – वास्तव में शिष्य बनना या शिष्यत्व के गुणों को प्राप्त कर पाना अत्यधिक कठिन है , यही वजह है की बहुत से साधक आवेश में दीक्षा तो ले लेते हैं लेकिन शिष्यत्व की भावभूमि पर उनकी चेतना स्थिर ही नहीं होती है और इसी कमी के कारण उनका जीवन पूर्णत्व नहीं प्राप्त कर पाता.

ये तो हम सभी जानते हैं की मनुष्य शरीर का निर्माण पञ्च महाभूतों से होता है अर्थात पृथ्वी,तेज,गगन,वायु और जल से इस शरीर का निर्माण हुआ है . परन्तु ये निर्माण शारीरिक स्तर पर हुआ रहता है और जब तक इन महाभूतों को पञ्च तत्वों से योग नहीं कराया जाता , तब तक आत्मिक विकास या मानसिक विकास नहीं हो पाता . बल्कि ये समझ लो की यदि जीवन में पंचमहाभूतों का संस्कार नहीं हो पाता तो साधक या व्यक्ति सामान्य स्तर पर ही जीवन जीता रहता है और अन्न मय कोष पर ही उसका जीवन टिका रहता है , और अन्नमय कोष के मूल में होती है दमित वासनाएं . यदि साधक सच में जीवन में उच्चता प्राप्त करना चाहता है, पूर्णत्व प्राप्त करना चाहता है तो उसे अन्नमय कोष से प्राणमय कोष और वहाँ से भी मनोमय कोष में अपने आपको पंहुचा कर अवस्थित होना पड़ता है .

higher body). Veda Purana Upnishad Samiriti Shruti Theses are the five element by which the Sanskar of pannch mahabhut can be done . but here the true secretive aspect of theses five element is need to be understand instead of their material meaning . In reality what we understand the meaning of veda, veda's real meaning are very secretive, and veda that they are in existence today their kriyatmak paksha is being kept secretive. Their highly effective mantra mentioned in that very secretive way, only the reason that any misuse of that could not be possible. Like that way punished and purna should be practiced ,not only by the way of only reading. Veda are Apourushey meant that they are not made by any human nor devi , daivta .upnishad are the elaboration of veda through which general masses can associate themself with the highly effective ,secretive gyan of veda.. but in reality what we understand the meaning of vead and purna and upnishad is just a shadow .since to	वेद पुराण उपनिषद स्मृति श्रुति ये पञ्च तत्व हैं जिनके द्वारा शरीर के निर्माण मूल पंचमहाभूतों का संस्कार किया जाता है , यहाँ पर इन पञ्च तत्वों का लौकिक नहीं बल्कि गूढतम पक्ष समझना ज्यादा अनिवार्य है . वास्तव में वेद का जो अर्थ हम समझते हैं , वेद तो अत्यधिक गूढतम हैं और वर्तमान में जो वेद प्रचलित हैं इनका भी तो क्रियात्मक पक्ष गोपनीय ही रखा गया है. इनके उच्च मन्त्रों को गुह्यतम रूप से कूट भाषा में ही रखा गया है जिससे की अपात्र इसका दुरूपयोग न कर सके . ठीक इसी प्रकार पुराण और उपनिषदों के भी सार को समझ कर प्रयोग किया जाये न की पढकर . वेद अपौरुषेय हैं अर्थात इनका निर्माण किसी मनुष्य या देवी देवता ने नहीं किया है , उपनिषद उन वेदों की व्याख्या है जिससे की जन सामान्य उन वेदों में छुपे गुप्त और महाप्रभाव्कारी ज्ञान से अपने आपको जोड़ सके और उन्हें समझ सके . परन्तु वास्तव में हम जो अर्थ वेद, पुराण, उपनिषद का समझते हैं वो आभास मात्र हैं. क्यूंकि इन्हें समझने के लिए हमें श्रुत बनना पड़ेगा.

understand that we have to became shrut .

If I literally define what is shrut , that is .. to attentively listening the experience of any great person and absorbs that facts and experience in our life in full/true sense is shrut. And without applying the this gyan if we express others than that becomes smriti. What we have got directly and what other get from us there is much difference.

Your knowledge/talk till become smiriti until you experienced in the same way as you have been told , and after that real experiencing if we pass this gyan to other than that becomes converted to smiriti to shruti .

Any kriya (action) by which In true and in full sense absorbing any knowledge is possible is known as shrut.

That is misfortune of this country that we are living in memory ...smiriti instead of shruti .means we have not experienced any thing but what we listen from our forefather and still living and absorbing in base less ego .if our country was a golden bird then we first experience that and than we have to told /pass this too others. but we never tries to understand guru 's gyan and chintan (mental foresightedness) in practically. And that happens since

यदि मैं श्रुति को सामान्य शब्दों में परिभाषित करूँ तो वो ये है की- किसी महापुरुष से उने अनुभवों को सुनना और पूर्ण रूपें आत्मसात कर लेना श्रुति है और इस सुनी बात को बगैर क्रियान्वित करे आगे हम जो कहते हैं वो स्मृति होती है . हम जो ग्रहण करते हैं और फिर हमसे आगे जो ग्रहण करता है उसमे बहुत अंतर होता है .

आपकी बातें तभी तक स्मृति रहती है जब तक आप उसे ठीक उसी प्रकार से अनुभूत नहीं करते जैसे की वो आपको मिली थी थी और यदि हम उन्हें पूर्ण अनुभूत करके आगे पहुचाते हैं तो वे भी स्मृति न होकर श्रुति ही तो बन जाती है

सही अर्थों में ज्ञान को पूर्णता के साथ पी जाने की क्रिया ही श्रुति कहलाती है

हमारे देश का दुर्भाग्य ही ये रहा है की हम श्रुतियों के सहारे नहीं स्मृतियों के सहारे जी रहे हैं. मतलब हमारा कुछ भी अनुभूत किया हुआ नहीं है अपितु हमने जो अपने पूर्वजो से सुना है बस उसी मिथ्या अभिमान अहंकार में निरंतर डूबे हुए हैं. यदि हमारा देश सोने की चिड़िया था तो उस बात को पहले खुद परखते फिर बताते लेकिन हमने कभी गुरु के ज्ञान और चिंतन को प्रयोगात्मक रूप से आत्मसात करने की कोशिश ही नहीं की , और इसका मूल कारण था की हम स्मृतियों में जीते हैं श्रुतियों में नहीं . आज धर्म का जो विकृत स्वरुप है वो स्मृतियों

we live in smiriti not in shruti. Today's dharma also in misunderstood forms only because of smiriti. What the founder had said to us ,we had not taken the meaning what he wants to say we take that according to our limited way. through adding to our limited thought to shruti we converted that in smiriti.

The downfall of spirituality also happened because of that . what Bhagvaan Krishna told us in Gita if we truly understand that , what is the necessitates of so many teekas (books containing the meaning of that). That simply show that we have taken the meaning of his divine word through our understanding. if that happens than we is the meaning of that . than the said teeka becomes smiriti for us. Without understanding the true real managing chintan how we can understand what is the real meaning of gita.

We falsely behave that we are the shishya and without understanding/absorbing the real meaning of that if we spread that than its natural that kriyatmak dosha will come. basic root soul of that almost died.

Whenever in our life ours paanch bhut get sankarised than all our atoms energized and we through becoming one to gurus chetna achieve fullness and

की वजह से ही है. जैसा उस धर्म प्रवर्तक ने कहा हमने उसका वो अर्थ नहीं लगाया जो की उनका चिंतन था बल्कि उस श्रुति को अपने विचारों से जोड़ कर स्मृति में परिवर्तित कर दिया .

आध्यात्म का पतन भी तो इसी कारण से है, यदि भगवन कृष्ण ने गीता में जो कहा और हमने उसे पूर्ण रूपें श्रुति किया तो उसकी विभिन्न अर्थ लिए हुए हजारों टीकाओं का अर्थ क्या है , इसका तो एक ही अर्थ है की हमने उसका अपने अपने अनुसार अर्थ निकाला है और यदि ऐसा किया है तो जो अर्थ हमारे सामने है उसका हमारे लिए क्या महत्त्व? क्यूंकि तब वो टीका तो हमारे लिए स्मृति हो गयी है. और हम बगैर भगवान कृष्ण के मूल चिंतन को समझे कैसे उस गीता के भावार्थ को समझ पाएंगे. हम शिष्य बनने का ढोंग करते हैं पर जो गुरु का चिंतन होता है , उनकी मूल अवधारणा को बगैर पूर्ण आत्मसात करे , बगैर उस क्रिया को समझे आगे फैलाते हैं , जिससे क्रियात्मक दोष होना स्वाभाविक है और मूल धारण की आत्मा तो समाप्त प्रायः ही समझो.

जीवन में जब हमारे पंचमहाभूतों का संस्कार हो जाता है तभी हमारे अणु,परमाणु चैतन्य हो पाते हैं और हम गुरु की चेतना से एकाकार होते हुए , उनके समस्त ज्ञान को आत्मसात करते हुए पूर्णत्व प्राप्त कर पाते हैं , क्यूंकि तब हम ज्ञान को प्राप्त नहीं करते अपितु ज्ञान को

completeness in life than we not onl;y receive gyan but it has been absorbs in our pranschetna (soul's).

There are three main necessary things need to have ..be human ,be ready to learn , to have Sadgurudev.

We can only understand and absorbs in heart the true meaning of veda ,purna and upnishad only if we became truly shrut. Life get fortunate if we became shrut. and completeness can be only achieved. Through shriti , chaitnyata and jagrat (complete awakening and mental attentiveness) can be gained. When we be with this panchch mahabhut Sanskar ,than there is no difference between him and us. Through direct contact to him , we always get the authentic gyan kriya its not the matter where our guru is .than there is no isht, we became our self isht. we our self become the fountain , than there is no other meaning of guru vaky and veda opens us since we receive their true chintan (real meaning). And practically get successful.

But shishytav only can be achieved if we set aside completely our ego and fully became mumukshu , and offer ourselves to guru's lotus feet. and than all the holy teerth visible in his lotus feet and also through their divine hand we get sanskarised our panch bhuta. Than we became shriti and through that

समाहित करती है हमारी प्राणश्चेतना.

शिष्य बनने के लिए तीन आवश्यक तथ्य होते हैं. मनुष्य होना,मुमुक्ष होना और सद्गुरु की प्राप्ति होना.

वेदों, पुराणों,उपनिषदों,स्मृतियों को पूर्णरूपेण उनके सही चिंतन के साथ तभी आत्मसात किया जा सकता है जब हम सही श्रुति बने हो. जीवन का सौभाग्य होता है सही श्रुति बनना , पूर्णत्व तभी प्राप्त हो सकता है. श्रुति से ही चैतन्य और जाग्रत हुआ जा सकता है . हम जब इन पञ्च महाभूतों के संस्कार से युक्त हो जाते हैं तो गुरु और हम्मे कोई भेद नहीं रहता . सीधा संपर्क स्थापित होने से क्रियाओं का प्रामाणिक ज्ञान हमें ज्ञात होता है फिर गुरु चाहे कही भी हो . फिर कोई और इष्ट नहीं होता हम स्वयं ही इष्ट होते हैं स्वयं ही झरना होते हैं. फिर गुरु वाक्यों का, वेदों का, कोई और अर्थ नहीं निकलता, बल्कि हम उनके मूल चिंतन को ही आत्मसात करते हैं और प्रयोगात्मक रूप से उसमे सफलता भी प्राप्त करते ही हैं. परन्तु शिष्यत्व को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब अहंकार को पूर्णरूपेण त्याग कर गुरु चरणों में साधक जाये और पूर्ण मुमुक्ष बनकर अपने आपको गुरु चरणों में प्रस्तुत करे , जब गुरु के चरणों में सभी तीर्थ दृश्यमान हो.और हमारे पंचमहाभूतों का संस्कार हम उनके कर कमलों से करवा सके . तभी हम पूर्ण श्रुति बन पाते हैं और श्रुति बनकर सार को हृदयंगम करके उसी सार को आगे प्रवाहित कर पाते हैं,

we absorbs essence and flow onward that essence. this shruti kriya happened not only through ear but all our five karamendriya and gyannedriya work together than true shishytav achieved all the secretive doors of sadhana opens us, than completeness finally achieved us.

तब श्रीती की क्रिया सिर्फ कानो से नहीं होती बल्कि पंचो कर्मेन्द्रिय और पंचो ज्ञानेन्द्रियाँ उस ज्ञान को सुनकर आत्मसात कर क्रियान्वित कर लेती हैं.तभी सही शिष्यत्व प्राप्त होता है और साधना के सभी गुह्य पक्ष खुल जाते हैं जिससे पूर्णता प्राप्त होती ही है.

And the question of kaal or becoming kaaljayi , we need to understand tantra first.

और रही बात काल की या कालंजयी बनने की तो इसके लिए सबसे पहले तंत्र को समझना होगा.

Tantra is not based on dev vaad. But in the beginning this made a person to worshipper of shakti . that's the grass root fact that through either worshipping various different daivta and lastly worship param shakti whom tri dev also worship or directly taking help from gurus lotus feet reach to param shakti, understand this way, why we worship various different daivta just to gain shakti/power. And from where that daivta give you power? He also receive that from param shakti. So worshipping directly that pram shakti is not better.

तंत्र देववाद पर नहीं चलता बल्कि वो मनुष्य को शुरू से ही शक्ति का उपासक बना देता है . क्यूंकि ये मूल तथ्य है की या तो आप विभिन्न देवों की पृथक उपासना करते हुए आखिर में उस परमशक्ति की उपासना करो जिनकी उपासना सम्पूर्ण देव शक्तियां या त्रिदेव भी करते है . या फिर सीधे ही गुरु चरणों का आश्रय लेकर उस परमशक्ति का सानिध्य प्राप्त कर लो . इसे ऐसे समझों की हम किसी भी देवता की साधना क्यूँ करते हैं. उससे शक्ति की प्राप्ति के लिए ही ना. और तुम्हे वो शक्ति कहाँ से देगा???? उसी परम शक्ति से प्राप्त करके. तो जब शक्ति प्राप्ति का मूल स्रोत वही परम शक्ति है तो फिर सीधे सीधे उसी परम शक्ति की साधना करना क्या उचित नहीं होगा.

Tantra believes in only two section man and woman. And all the power of man is also comes from the param shakti, brahma's creative power, Vishnu caring power and destruction power of shiv where it comes from ,

तंत्र सिर्फ दो जाति को मानता है स्त्री और पुरुष. और पुरुष को भी समस्त क्षमताओं की प्राप्ति उसी परम शक्ति से ही होती है देखो विष्णु

from that param shakti . parammaba is the centre of all the shakti in universe. Rising from pashu bhav to reaching veer bhav is through a process known tantra. And that not stop here it raise sadhak upto daivtv bhav. Becoming/ reaching that is the real true meaning of being a taking birth as a human. this the fact when we raise our existence root to spread it that in whole universe. This experience can not be define ,this experience is beyond the limit of time and place.

This can only be understand when our mind reaches its completeness and this became possible only when we do kriya and mantra jap as directed by our guru, theses mantra awaken the dormant power inside us. And gives us a new direction to our mental attentiveness . this is well known fact that when we do jap of any mantra , energy gets generated in any amount .and also various geo metrical shape also created that we can not see through hour naked eyes, theses figure are not imaginary one.

In tantra kriya , it is not advocated to suppress our feeling sand wishes but to accept that since tantra knows that through suppression various mental

को पालन की , ब्रह्मा को सृजन की और महेश को संहार की शक्ति उसी पराम्बा से प्राप्त होती है अर्थात सभी की मूल प्रकृति के सभी क्षेत्रों में वही पराम्बा केंद्रस्थ हैं. तंत्र पशु भाव से ऊपर उठकर वीरभाव तक पहुचने की क्रिया है और ये यही नहीं रूकती बल्कि वीरभाव से भी ऊपर उठाकर साधक को देवत्व पद पर अवस्थित कर देता है. यही मानव जन्म की सार्थकता है . जब हम अपने अस्तित्व के मूल तक पहुचकर अपना विस्तार अखिल ब्रह्माण्ड में कर दे . परन्तु इस अनुभव को परिभाषित नहीं किया जा सकता , ये अनुभव काल अर्थात समय और स्थान की सीमा से परे है.

इसे तभी समझा जा सकता है जब हम अपने मन को पूर्ण विकसित कर ले , और ऐसा तभी संभव हो पाता है जब हम गुरु निर्दिष्ट प्रक्रियाओं को और मन्त्र को जप करे . ये मन्त्र अपने भीतर की सुषुप्त शक्तियों को जाग्रत कर देते हैं . तथा व्यक्तिगत चेतना को नयी दिशा देता है . ये एक महत्वपूर्ण तथ्य है जब भी हम किसी मन्त्र का उच्चारण करते हैं तो वो ध्वनि किसी न किसी मात्रा में उर्जा उत्पन्न करती है तथा निर्दिष्ट ज्यामितीय आकार भी निर्माण करती है जिसको की सामान्य नेत्रों से देख पाना संभव नहीं है . ये आकृतियाँ काल्पनिक नहीं होती है.

तांत्रिक प्रक्रियाओं में अपनी भावनाओं और संस्कारों को दबाया नहीं जाता है अपितु इन्हें

dieses can be possible, to break all the bounding string of the mind and move freely in his way is the basic aim of tantra. To free from all the bonding and pasha and become energized through self energy is the aim of tantra. The universe is created by that energy. The flow of energy is starts from that metal awaking point and theses all we know that the expansion of bindu is the universe. When we expanse bindu the circle is created, and in the circumference of that time , gap(space),aim, bhavatit chetna (transdentional meantal attentiveness lies. And the bindu at the centre represent that pram shakti through that atiindriyta can be achived.

Time and space both are in the mind .in reality they are both apart , if one lies in the end than others on the other end. One represent shiv other is shakti. When we contact our bindy lies in physical body to our trikut though our pranuschetana (menatal attentiveness) or say that raise bindu to upward motion than on trikut .shiv and shakti kaal and space meets . and through this meeting or adding ,a explosion occurs, by that energy ,mind /man is divided in uncountable parts. All theses single part can create a new universe. and this expansion can became a sadhak universal un limit. and that is the ultimate goal /aim of the tantra. and

स्वीकार कर लिया जाता है , क्यूंकि तंत्र जानता है की इन्हें दबाने से साधक विभिन्न मानसिक रोगों से ग्रस्त हो सकता है. मन के बंधनों को तोडकर उसे स्वछंद गति में विस्तृत करना ही तो तंत्र का मूल लक्ष्य है. सभी बंधनों, पाशों से मुक्त कर स्वयं की उर्जा से युक्त करना ही तंत्र का उद्देश्य है और इसी उर्जा से तो ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुयी है . उर्जा का प्रवाह उसी प्रनाश्चेतना के बिंदु से होता है और ये हम जानते हैं की बिंदु का विस्तार ही तो ब्रह्माण्ड है . बिंदु को जैसे जैसे बढ़ाते हैं तो जो वृत्त बनता है उसी वृत्त की परिधि में समय(काल), अंतराल,लक्ष्य और भावातीत चेतना होती है. और केंद्र का बिंदु उस परम शक्ति का प्रतिक है जिससे अतिन्द्रियता की प्राप्ति होती है .

मन के अंतर्गत ही ये काल और अंतराल आते हैं , वस्तुतः ये दोनों ही बहुत दूर दूर हैं एक इस छोर पर है तो दूसरा दुसरे छोर पर . एक शिव का प्रतिक है तो दूसरा शक्ति का . जब हम शरीरस्थ बिंदु का योग त्रिकुट से अप्नी प्राणश्चेतना के बल पर करते हैं या ये कहे की उस बिंदु को उर्ध्व गति देते हैं तो त्रिकूट पर काल और अंतराल अर्थात शिव और शक्ति दोनों का ही योग हो जाता है ,और जैसे ही योग होता है एक तीव्र विस्फोट होता है जिससे निसृत उर्जा से मन के असंख्य टुकड़े होते हैं और ये प्रत्येक कण एक नवीन ब्रह्माण्ड को जन्म दे सकते हैं. यही विस्तार तो साधक को ब्रह्माण्ड स्वरुप ही

this stage also called kaal jayi stage. Where the sadhak after attaining all the ultimate power still behave a fellow to nature and help her. Now this depend upon the sadhak that how far he can expand himself in this kaaljayi stage.

Is that any special kriya for achieving that .i again questioned.

Yes it is why not. If daily two hours reciting/chanting of a special mantra for continuous 21 days through full concentration if any sadhak does and also reach to Sadgurudev holy feet in person and ask to have this PANCHMAHABHUT SANSKAR DIKSHA , than very compassionate Sadgurudev through giving this great Diksha to him , clears a way to go for this great holy path to become purntav. Than no kriyas related to tantra is became secretive to him. success definitely achieved by that sadhak. In real sense he became shrut ,so time and distance dose not matters for that, he can ever get directly gyan from Sadgurudev any place and any time reaches the ultimate heights of shishyta.

Than he gave me the mantra and PANCH MAHABHUT SANSKAR DIKSHA on appropriate time, the mantra still with me and the foundation of what

कर देता है जो की तंत्र का परम लक्ष्य होता है . और यही काल पर विजय प्राप्त कर कालंजयी हो जाने की स्थिति होती है. जहा साधक सर्वसमर्थ होने के बाद भी प्रकृति का सहचर ही होता है और उसका सहयोग ही करता है , अब ये साधक के ऊपर होता है की वो इस कालंजयी अवस्था में अपने आपको कितना विस्तारित कर पाता है .

क्या इसके लिए कोई विशेष क्रिया है????? मैंने पुनः प्रश्न किया .

हाँ है क्यूँ नहीं , एक विशेष मंत्र को नित्य प्रति दो घंटे तक एकाग्र मन से जप किया जाये और ऐसा २१ दिन तक करके सद्गुरु के चरणों में उपस्थित होकर पंचमहाभूत संस्कार दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की जाये तो करुणाशील सद्गुरु शिष्य को इस मंत्र से सम्बंधित पंचमहाभूत दीक्षा दे कर पूर्णत्व के पथ पर आगे बढ़ाते ही हैं, फिर कोई तंत्र कोई पद्धति गुप्त नहीं रह पाती उस साधक से . सफलता को वरन करना ही पड़ता है उस साधक का और वो सही मायने मे श्रुति बन पाता है , तब गुरु से दूरी और काल का कोई अर्थ नहीं रहता साधक के समक्ष , वो कभी भी कही भी सीधे उनसे ज्ञान को प्राप्त कर सकता है और सही मायने में शिष्यत्व की पराकाष्ठा को प्राप्त कर लेता है.

तब उन्होंने मुझे उस मंत्र को प्रदान किया और उचित समय पर उस अद्भुत पंचमहाभूत संस्कार दीक्षा को प्रदान कर कृतार्थ किया . आज

ever achieved by me till date. new page of secretive gyan opens that day to me. I am here mentioning you the same mantra after praying to Sadgurudev ji.

Mantra :

Aing hreeng kleeng praan utthay chaitanya kleeng hreeng aing phat.

When ever any curiosity comes, without any hesitation I put in front of Sadgurudev ji and get the solution of that why all of you do not do that way. Through that completeness in life and reaching to siddhshram is possible. Still are you thinking ?

जो भी मेरे पास है उसका आधार है ये दीक्षा और ये अद्भुत मंत्र. अज्ञात रहस्यों का एक नवीन पृष्ठ ही खुला था उस दिन मेरे सामने. मैं उस पूर्ण प्रामाणिक मंत्र को भी सदगुरुदेव से प्रार्थना करके आप लोगो के समक्ष बता रहा हूँ.

मंत्र- **ऐं ह्रीं क्लीं प्राण उत्थाय चैतन्य क्लीं ह्रीं ऐं फट .**

मुझमे जिज्ञासा आती है तो मैं बिना किसी झिझक के अपने सद्गुरु के समक्ष उसे रख कर उसका समाधान प्राप्त करता हूँ पर आप सभी ऐसा क्यूँ नहीं करते . आज हमारे समक्ष हमारे गुरु त्रिमूर्ति है , फिर हम ऐसी अद्भुत दीक्षा के लिए क्यूँ प्रार्थना नहीं करते जिससे की जीवन में पूर्णत्व एवं सिद्धाश्रम की प्राप्ति हो जाये. क्या अब भी आप विचार करते रहेंगे!!

कठिनाई के समय में ही मित्रों की परीक्षा होती हैं,भाई से भी ज्यादा मूल्यवान ओर स्नेही , सच्चा मित्र होता हैं , मित्र के व्यवहार का प्रभाव तो पड़ता हैं ही इसमें दोनो पक्ष प्रभावित होते ही हैं , इसलिए मित्रों का चुनाब सोच कर ही करे.. आचार्य चाणक्य

friend ship can be tested on the time of need, true friends are more valuable and lovable than brother , friendship also affects you thats why choose friend very wisely.s .... Aachary chanakya

Shree Singh Ganpati Sadhana

श्री सिंह गणपति साधना

तेजस्वी और निडरता युक्त व्यक्तित्व प्राप्त करने का अद्भुत विधान

In bhartiya sadhana kram i.e. way of life who is not knew about bhagvaan ganpati ,who is sarv vardyak (every boon giver), sarv mangal dayak (every blissful condition creator), 12 well known name are a essential part of starting any sadhana by every sadhak. This special form of almighty can be made/created every possible way a human mind can thinks and also Bhagvaan Ganpati form are available every where in different ,different forms and type. Bhagvaan Ganesh is present in every shakti peeth though forms may be different but he is there to fulfill every sadhak wish and clearing the way for his success. One of such a form of Bhagvaan ganesh is Shree SINGH GANPTI form, when like a loin's force power and fearlessness is added to this form of shree Ganesh than why not the sadhak

भारतीय साधना क्रम में ऐसा कौन होगा जो सर्व वरदायक ,सर्व मंगल कारक भगवान् गणपति के बारे में न जानता हो , द्वादश गणपति नाम तो हर साधक अपनी साधना के प्रारंभ में करता ही हैं , भगवान् के इस अद्भुत सरल रूप को तो जैसे चाहे वैसा बनाया जा सकता हैं ,

वैसे भी सबसे ज्यादा चित्रांत्मक कला युक्त श्री गणेश भगवान् की ही चित्र या मूर्ति हर जगह प्राप्य हैं . हर शक्ति पीठ में भगवान अलग अलग रूपों में विराजित ही हैं हर साधक की मनोकामना पूर्ण करने ओर उसके मार्ग में आने वाली विपत्तिय हरने के लिए पर एक ऐसा भी भगवान का अद्भुतरूप हैं जिसका पता बहुत ही कम लोगों को हैं और उस रूप में भगवान् श्री गणेश श्री सिंह गणपति के रूप में हैं ,

जब स्वयं भगवान् में सिंह के समान बल और निडरता कीकल्पना से युक्त से उनका स्वरुप सामने आया हैं तो उनके साधक में फिर क्यों नहीं बल ,तेजस्विता , साहस न रहेगा , जीवन के हर पथ पर सफलता वरमाला लिए हुए ही खड़ी मिलेगी क्योंकि जहाँ मगल दायक श्री भगवान् हैं वहीं उसके साथ सिंह के रूप की तेजस्विता भी.

of that be with same quality. Than fearlessness , forcefulness are the part of sadhak personality. Than success is a way of life for the sadhak since when every boon giver Bhagvaan is with him . this sadhana can be started from night of any Wednesday specially after 11 PM and is of 11 days only. This sadhana you need to place siddh Ganpati yantra in front of you and red colored aasan and red colored clothes is required for this sadhana .This dhyan(mental prayer) have to be done in the beginning.(offer sindur before and after the dhyan)

Veena kalap latamri ch dakshe vidhante karee vamo taam rasam ch ratn kalashm sanmanjari chaa bhayam|

Shundadandal sanmrgendra vadah shankhendu guar shubho divyadratna nibhanshulo ganpatih payat sanah||

Then do panchopchar poojan mentally And do mantra jap of 11 round of rosary with sphatik rosary for next 11 night continuously.

Mantra -om singh ganpatye namah .

You will also move forward to have same forcefull and effective personality

किसी भी बुध वार की रात्रि ११ बजे के बाद से से यह प्रयोग प्रारंभ किया जा सकता हैं , ११ दिवसीय इस साधना में सामने सिद्ध गणपति यन्त्र रख कर , लाल रंग के आसन और लाल रंग के ही वस्त्रों का साधक प्रयोग करे . ध्यान के पहले ओर ध्यान के बाद भी सिन्दूर अर्पित करे

निम्न ध्यान मंत्र करे ..

वींणा कल्प लता मरि च वरदं दक्षे विधन्ते करै वामी तामरसम च रत्न कलशं संमंजरी चा भयं|
शुंडा दंडल संम्रगेन्द्र वदनः शन्खेंदु गौर : शुभो दीव्यद्रत्न निभांशुलो गणपतिः पयात सन :||

फिर मानसिक पंचोपचार पूजन कर
निम्न मन्त्र का जप ११ माला ,स्फटिक माला से अगले १४ रात्रि तक प्रति दिन तक करे .

मंत्र

ॐ सिंह गणपतये नमः

आप भी इस मंगल दायक , बिपत्ति निवारक , सिंह समान व्यक्तिव्य प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होंगे ही ..

Dattatrey Sadhana

नाथ संप्रदाय के आदि गुरु भगवान दत्तात्रेय साधना

भूतकाल वर्तमान काल और भविष्य काल का ज्ञान करने की सरल अद्भुत दुर्लभ साधना

When I became completely hypnotized with attraction towards Tantra field, I went on. With a wish to run away from home, I started roaming here and there. At some point of time, I reached to Girnaar. Have heard that the Siddhas could be found in that region, but there was something else in my mind. After reaching at mountain range, took blessings of lord Bhavnath. The atmosphere of surroundings was strange. Some Naga sadhus were roaming here there.

At many places the Stuti of Bholenath was going on.

"Your strange surroundings have made a strange play, no body had understood you, a sage came to the town"

A real fact. Who had been able to understand the world of siddha peoples...

तंत्र साधना का आकर्षण जब मुझे पूर्ण रूप से सम्मोहित कर चूका था, तो निकल पड़ा में. घर से भागने के ख्याल से और घूमने लगा इधर उधर. एक मर्तबा चल पड़ा गिरनार पर. सुना था बहुत ही सिद्ध जगह हैं यदा कदा सिद्ध मिलते रहते ही हैं , पर मेरे मानस में तो कुछ और ही विचार था. तलहटी पर पहुँच कर भगवान् भवनाथ के दर्शन किये. चारो तरफ अजीब सा वातावरण बना हुआ था. यहाँ वहां नागा साधू विचरण कर रहे थे. कई जगह भोलेनाथ की स्तुति हो रही थी...

अजब हे तेरी माया
अजब सा खेल रचाया
तुझे कोई समझ न पाया
नगर में जोगी आया

सही ही तो हैं, कौन समझ पाया हैं जोगिओ/ योगियों के सिद्ध संसार को..

Girnar, the residence of siddh Dattatrey looks a like a face of some sage from distance. Climbing a strais, I was wondering about God dattatrey, the Maha siddha which was compound of shiva, Vishnu and bramha's power; the one who gave proper establishment of Aghor sadhanas.; The one who were ancient accomplished men. Pillar of Naga and nath sect. and at that same moment voice came from behind " Hari om tat-sat jai gurudatt", A group of sadhu were seated lost in their own joy. This had been heard many times but every time, don't know why I used to think that these are not just a word but something special in it, went ahead while wondering this. The secret of siddh people do not been revealed so simply, lost in this thought, I reached to a mountain peak.

Hardly of 10 feet, had that peak used to be residence of God Datt. It is said that he is still alive in his body and give Darshan at this place sometime, at that time only a voice came from behind " Hari om tat-sat jai gurudatt". I looked back; a naga sadhu was there with a peacock feather in his hand, scary look, long hairs and obis. Looking at me he smiled a bit and then went back into the forest. This time I became a bit nervous, but then too I removed this thought by taking it as co incidence. Took blessing of god Gurudatt's foot stamp, I started went back. But those words were running in my ears. In some hours when I reach down, I was tired

सिद्ध दत्तात्रेय का निवास स्थान वह गिरनार दुर से देखने पर एक साधू का चेहरा सा लगता हैं . सीढ़ीया चढ़ते हुए मैं सोच रहा था भगवान् दत्तात्रेय के बारे में, शिव, विष्णु और ब्रम्हा की शक्ति से सम्मिलित वह महान सिद्ध जिसने अघोर साधनाओ को स्थायित्व दिया था. वह जो आदि सिद्ध थे. नागा और नाथ संप्रदाय के स्तम्भ. और तभी पीछे से आवाज आई " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त ", एक साधुओ का मंडल अपनी ही मस्ती में बैठा हुआ था . ये तो कई बार सुना था मैंने . पर पता नहीं क्यों हर बार लगता था की ये कोई शब्द मात्र नहीं हैं कुछ और विशेष ही हैं यही सोचते हुए आगे बढ़ गया. सिद्धो के रहस्य एसेही कहा सुलभ खुलते हैं यही ख्याल में खोया हुआ पहुँच गया मैं शिखर के ऊपर.

मुश्किल से १० फीट घेराव में वह चोटी, जो निवास स्थान हुआ करती थी दत्त भगवान् की. कहते हैं आज भी वे सशरीर मौजूद हैं और कभी कभी इसी जगह पे दर्शन देते हे, तभी पीछे से एक आवाज आई " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " . पीछे मुड़के देखा तो एक नागा साधू हाथ में मोरपंख लेके खड़ा था, देख के ही डर लगे, उलझी हुयी जटायें डील डोल. मुझे देख के वो किंचित मुस्कुराया और फिर वापस लोट गया जंगलो में. अबकी बार में कुछ विचलित हुआ, पर फिर भी इसे संयोग मानते हुए ख्याल दिमाग से निकल दिया. चोटी, पर बने दत्त भगवान् के पदचिन्ह को नमस्कार कर में लौट पड़ा उलटे पैर.

badly. The time went past evening and was about to dark. Went ahead with a though to go back in city, at both side of the road it was a dark forest. And at the same moment, cant say from where a Aghori came. From the road side, he turned and started towards forest. 5 feet far from me, do not know why but I too went beside him. In some steps only when I looked a while....it ca not happen...he was just here...in a second he was invisible in air...and a word were fold eco " Hari om tat-sat jai gurudatt". It was not far to understand that it was a message from nature to me. And I started researching on this Maha mantra, but the answer which can satisfactory trouble shoot my mind, couldn't be received anywhere.

Well, after some years when the topic went towards this in discussion with sadgurudev, I became very surprised. Sadgurudev said "this is the base mantra od Dattatreya. Yog mantra tantras are incorporated in this mantra. This alone single mantra can give basic siddhis to the very high level siddhis. And that some nath yogis do accomplished Jalgaman and vayugaman even through this mantra." After that he made me understood many process of this mantra which are to be kept secret. From which one used to be for kaal gyanm. Quickly I decided to do this sadhana...as was willing to know a secret which I was searching from

लेकिन वो शब्द अभी भी कान में गूंज रहे थे, आखिर क्या राज़ हैं इसमे. कुछ घंटो में जब नीचे जब पहुंचा तब तक थक के चूर हो गया था. रात घिरने लगी थी. शहर की तरफ वापस लौटने का निश्चय करके आगे बढ़ा, रास्ते के दोनों और प्रगाढ़/ घनघोर जंगल था. तभी पता नहीं कहा से एक अघोरी प्रकट हुआ . रास्ते से मुड के वो एक तरफ जंगल में चल दिया. मुझसे ५ कदम दूर, न जाने क्यों मैं भी चल पड़ा उसीके पीछे , बस कुछ ही कदम और एक पलक झपकी मेरी. नहीं ये नहीं हो सकता. अभी तो वो यही था. एक ही क्षण में वो हवा में ही विलीन हो गया... ......और पीछे शब्द गुंजरित होने लगे..." हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " समझते देर न लगी मुझे की कुछ सन्देश हैं ये प्रकृति का. खोज शुरू कर दी इस महा मंत्र के रहस्य की, पर मुझे सांत्वना मिले ऐसा जवाब कही न मिला...

आखिर कुछ साल बाद जब सदगुरुदेव से इस बारे में बात हुयी तो मैं दंग रह गया . सदगुरुदेव् ने कहा " यह दत्तात्रेय का मूल मंत्र हैं, योग, मंत्र, तंत्र सब इसमे समाविष्ट हैं. यह अकेला मंत्र ही सामान्य सिद्धियों से ले के अत्यंत उच्चकोटि की सिद्धिया प्रदान कर देता हैं . यहाँ तक की कई नाथ योगी इस मंत्र मात्र से जल गमन और वायुगमन तक भी सिद्ध कर लेते हैं ." इसके बाद उन्होंने मुझे इस एक मंत्र मात्र की कई विधिया समझाई . जो की अत्यंत गोपनीय हैं . जिनमें से एक विधि काल ज्ञान सबंधित भी थी. तुरंत ही मैंने निश्चय कर

years. And that last day of sadhana, was just slept after mantra chanting. Certainly a fragrance started floating in air, till the time I come out of this strange feeling, before that second fragrance, third...forth...that way nine different fragrances kept on floating. I was willing to see what is happening by coming out of bad but the body had become faint. Before I come to conciousness, 9 different shadows came to existence, in dark I wasn't able to see completely but they were in dress of sages. Certainly my memory made me remember a sentence of gurudev "in dattatrey sadhana sometimes 9 Nath even gives darshan in shukshma Swaroop". So, are they 9 Nath? At that time all 9 shadows became invisible and a ball of light existed in front. It was indescribable joy of light. In some time only, that light went inside me. And I felt a bit shock. For a while I remained unconsciousness. Woke up in a strange joy and went towards window. " alakh bum bum, khushi rahe hard um shivjoyi..." speaking this, I took a smoke. It was raining out side, the drops of the rain were looking like million stars are coming to earth from sky to be with me in this joy...with no reason a smile came on my lips...and why it do not come...years passed off, but the secret I wanted to know been knew now.	लिया इस साधना को करने के लिए..आखिर सालो पुराना राज़ जानना ही था. और आज साधना का वह अंतिम दिन. मंत्र जाप करके मैं सोया ही था. अचानक एक सुगंध सी हवामे तैरने लगी, विस्मय से बाहर निकलू उससे पहले दूसरी सुगंध, फिर तीसरी, चौथी, इसी तरह नौ अलग अलग सुगंध प्रवाहित होती रही. उठके देखना चाहता था लेकिन मानो शरीर को तो जैसे लकवा मार गया. हिल डूल भी नहीं पाया. अभी इस आश्चर्य से बाहर निकलू उससे पहले ९ छाया मेरे आसपास प्रकट हो गयी, अँधेरे में कुछ ज्यादा तो नहीं दिखा मगर सभी साधूवेश में थे. अचानक कथन याद आ गया गुरुदेव का " दत्तात्रेय साधना में कभी कभी नौ नाथ भी सूक्ष्म रूप में दर्शन देते हे". तो क्या ये वही नौ नाथ हैं ? तभी अचानक सभी छाया अद्रश्य हो गयी और एक प्रकाश पुंज प्रकट हुआ . एक अवर्णनीय प्रकाश का आनंद. और देखते ही देखते वो पुंज मेरे अंदर समा गया. और एक गहरा झटका सा लगा मुझे. कुछ देर तो सुन्न सा पड़ा रहा. एक अजीब नशे था में, आनंद में उठा और खिडकी के पास गया. "अलख बमबम, खुशी रहे हरदम, शिवजोगी..." यही कहके दम लगाया एक...बाहर बारिश हो रही थी, बुँदे बनके जेसे लाखो सितारे व्योम मंडल से मेरी खुशी में शामिल होने के लिए जमीं पर उतर रहे थे ...अकारण ही मुस्कान तैर गयी अधरों पर...और क्यूँ न आए...सालो लग गए पर वो राज़ तो मेने

जान ही लिया था अब...

For kaal gyan maha mantra has a kind of this process. Prepare a lamp from a cow's clarified butter and make Soot. While preparing that soot keep on chanting " Hari om tat-sat jai gurudatt" .Then take a mirror and place it in front of your eyes. Make a dot of that Soot prepared, in the mirror. The distance between you and mirror should be one and half to two feet. Sit in padmasana with gyan mudra. First pray lord dattatrey for success in the sadhana and then looking at the dot chant " Hari om tat-sat jai gurudatt" mantra for 3 hours. Need not of any rosary. In whole room only light should be of a lamp. Mantra chanting should be done after 11 PM only. With all rules of sadhana, this should be continuing for 21 days. Slowly one will start looking various scenes and if sadhana is completed in proper way, sadhak gets capacity to see past present and future like a film.

काल ज्ञान के लिए इस महा मंत्र का प्रयोग कुछ इस प्रकार से करना हैं . गाय के घी से एक दीपक जलाए और उसका काजल इकठा करे. काजल का निर्माण करते वक़्त " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " का जाप करते रहे. फिर एक आइना लाए और ठीक अपने आँखों के ही उसे सामने स्थापित करे. उसमे काजल से एक बिंदी लगाये. आपसे आईने का अंतर(दूरी) डेढ़ से दो फीट रहे. फिर पद्मासन में बैठ जाए और ज्ञान मुद्रा बनाए. पहले भगवान दत्तात्रेय को साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करे, फिर बिंदी पर त्राटक करते हुए " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " का ३ घंटे जाप करे. इसमे कोई माला की जरुरत नहीं हैं. पूरे कमरे में सिर्फ एक दीपक की रोशनी रहे. जप रात्रि में ११ बजे के बाद ही हो. यह क्रम साधना के सभी नियमों के साथ २१ दिन तक चलते रहना चाहिए. धीरे धीरे साधक को विभ्भिन द्रश्य दिखाई देना शुरू हो जाता हैं और साधना सही रूप से करने पर साधक में वह क्षमता आ जाती हैं की वह भूत भविष्य और वर्तमान को चलचित्र की तरह देख सकते हैं .

" Do not seek experience in the meditation The path to god is not a circus so that various vision will be shown for your entertainment " ... Parmahansa Yoganand

ध्यान में अनुभव मत खोजो, क्योंकि यह ईश्वरीर रास्ता कोई सरकस नहीं हैं, जो आपके मनोरंजन के लिए तरह तरह के द्रश्य दिखाए जाएँ. परमहंस योगानंद

Vol . 0 1 - No 02

kaal Gyan aur jyotish Sandarbh
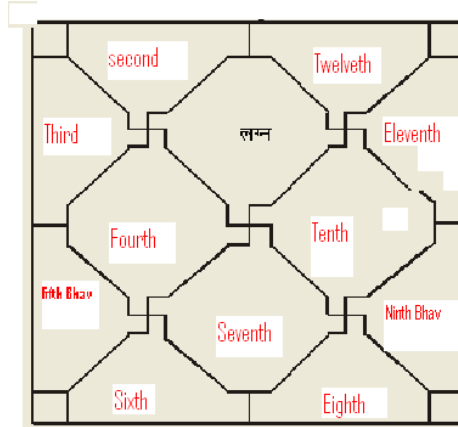
Kaal or time in rough sense is a unbreakable link which never break, it is us who, who divided it in three part ***present, past, future***, some says only present exists and past and future have no sense. Since there existence is nowhere. Some says only past and future exist , present is no where, since it is just a line where future become past, say 1, as you speak, till that, is part of past. present is just s transition.

I remembered once some ones asked swami viveakanad ji, ***are you swamiji not getting late. he replied, my son you live in time, I***

साधरणतः काल या समय एक ऐसी धारा हैं जो अविभाजित हैं इसे हमने अपनी सुविधा के लिए तीन भागों में, उसे भूतकाल वर्तमान ओर भविष्य काल में बाट दिया हैं. |कुछ कहते हैं की केबल वर्तमान काल ही हैं क्योंकि भूतकाल (गया/समाप्त हैं) और भविष्य काल (आया ही नहीं हैं) उनका आस्तित्व ही नहीं हैं |कुछ कहते हैं की केबल भूतकाल ओर भविष्य काल ही हैं क्योंकि वर्तमान काल तो मात्र एक बिभाजन की रेखा हैं|मानलो आप १ कहते हैं जब तक कह पाए वह तो भूत काल का हिस्सा बन गया |वर्त्तमान केबल एक बिभाजन की रेखा हैं एक काल से दूसरे काल में जाने के लिए |

मुझे याद आता हैं की कभी किसी ने स्वामी विवेकानंद जी से कहा की "स्वामीजी आप लेट हो रहे हैं " उन्होंने कहा की " मेरे बेटे तुम समय के अन्दर जीते हो मैं

live in timeless time.

So kaal gyan should not be consider only reading knowing the future date of any event going to happen. But its a science by which you can learn about yourself that what are the tendency hidden in you and what will be the out come, so through various means you can reduce or accelerate it, as par the case.

Destiny/Fate is already fixed :

If everything is fixed than what is the need of guru , sadhana, mantra, etc. just leave on almighty and wait, since all these serve no purpose. Someone asked to his master. His master asked him, just lift one leg, his disciples did as he ordered. His master replied, when I asked you to lift one leg, it depend upon you totally whether you could lift, left or right leg, this is the matter of your choice and when you lift left legs, now you cannot lift at the same time right leg, since it is fixed, so is the case of karma(you have a choice., once you do that, its result bound to happen, so it is the case with the karam result, say either fate, destiny , whatever you can say.

Simple Astrological points:

Here n this article mentioning some

समयातीत काल में हूँ "|

इसलिए काल ज्ञान का तात्पर्य मात्र किसी भी भविष्य की घटनाकर्म जो की होने वाली हो , की तारीख जानने मात्र को नहीं कहते बरन इस विज्ञानं के माध्यमसे आप अपने आप को ,तथा आपके अन्दर की संभावनाओ ,व उनके क्या परिणाम होंगे ,जिसके माध्यम से उनके परिणामानुसार आप उनको घटा या बढा सकते हैं |

भाग्य क्या पहले से ही निश्चित हैं :

यदि हर बात पहले सही निश्चित हैं तब गुरु,साधना , मंत्र ,तंत्र ,की क्या जरुरत हैं, सब कुछ उसपर छोड़ दें.क्योंकि इन सबसे /सबको करने पर कोई फरक नहीं पड़ता , किसी ने यह प्रश्न अपने गुरुदेव से पूछा, ,उसके गुरु जी ने उससे कहा की कोई एक पैर ऊपर उठाओ ,जैसा कहा गया शिष्य ने वैसे ही किया ,उनके गुरु के उत्तर दिया की जब मैंने पैर उठाने को कहा तब ये पूरा तुम पर निर्भर करता था कि दाहिना या बायां कोई एक पैर उठाओ , ये तुम पर निर्भर हैं ,पर जैसे ही एक पैर उठाया ,दूसरा पर स्थिर हो गया, उसे अब नहीं हटा सकते, ठीक इसीतरह कर्म करने के पहले चुनाव की सुविधा हैं पर कर्म करते साथ ही उसका परिणाम तो सहन कारण पड़ेगा ही .|

इसी कर्म फल को चाहे तुम इसे भाग्य कहो या कुछ भी ,निश्चितता परिणाम को सहन करना ही पड़ेगा |

सामान्य ज्योतिषीय बिंदु :

यहाँ पर कुछ सामान्य ज्योतिषीय बिंदु रखे जा रहे हैं,

very simple astrological point (not carrying any difficult combination or description)you can check with your horoscope and find it will help you to understand yourself.

1. If Saturn planet is in 3 rd house , means you are the younger among your brothers, and you can have younger sister. And you will face a lot of trouble from your elder brothers, or not much support from the.
2. If moon is in fourth house ,surely in your work field related to general masses, means a lot of people come into contact, you cannot be isolated.
3. If Jupiter in eight house ,later or sooner you will be interested to occult sciences, interested in yoga etc.
4. If mercury planet is in fifth house, than you will be much interested in business.
5. If Venus is very far away in horoscope from mars and very close to Jupiter than you will not much interest in worldly sukh.
6. If Jupiter is with Venus or its

जो की बेहद सरल हैं ओर कोई भी कठिन योग पर आधारित नहीं हैं आप अपनी कुंडली में इन्हें देख कर परिणाम समझ सकते हैं ,और अपने बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं

1. यदि शनि ३ रे भाव में हैं तो आप अपने भाइयों में सबसे छोटे होंगे ,हाँ आपसे छोटी आपकी बहिन हो सकती हैं , और यदि आपके बड़े भाई हैं आपके तो उनसे समस्या ही ज्यादा रहेगी सहयोग प्राप्त न होगा |
2. यदि चन्द्रमा आपके ४ थे भाव में हैं तो आप का कार्यक्षेत्र लोगों से मिलने वाला/ जन सामान्य से संपर्क वाला होगा अर्थात आप अकेले काम नहीं कर रहे होंगे .|
3. यदि गुरु आपके ८ वे भाव में हैं तो अभी या कुछ दिन बाद आप रहस्य मय विद्याओं में और योग में रूचि रखेंगे |
4. यदि बुध पंचम में हैं तो आप व्यापार में रूचि रखेंगे ही |
5. यदि शुक्र ,मंगल से दूर ओर गुरु के पास में हैं तो आप सांसारिक सुखों में ज्यादा रूचि नहीं लेंगे |
6. यदि गुरु शुक्र के साथ में हैं या शुक्र पर दृष्टी रख

aspect on Venus than he will have no interest in sense pleasure.	रहे हैं तो आप इन्द्रिय सुखो में रूचि नहीं लेंगे	
7. If fourth house have a aspect of exalted Jupiter ,than person will be very wise.	7. यदि ४ थे भाव में उच्च गुरु हो तो व्यक्ति अत्याधिक बुद्धिमान होगा.|
8. If Jupiter is in 5 t bhav or in 7 th bhav or in 9 th bhav , any wrong doing is done by the person, he will have much pain in his soul.	8. यदि गुरु ५ या ७ या ९ वे भाव में हो तो इस व्यक्ति के द्वारा गलत काम करने पर उसे आत्मा /ह्र्दय में बेहद कष्ट होगा	
9. If Saturn is in 1st bhav, ot in 4 th bhav or in 8 th bhav, he has to work very hard.	9. यदि शनि १ भाव ,या ४ थे या ८ वे भाव मैं हो तो उस व्यक्ति को आजीविका काफी परिश्रम वाली होगी हैं	
10. If Saturn is in 4th or in 7 th or in 11 th person will be very introvert.	10. यदि शनि ४ थे, या ७ वे या ११ वे भाव में हो तो व्यक्ति बेहद अंतर्मुखी होगा	
11. If Jupiter is strong than person will have faith in god, religious activity.	11. यदि गुरु बेहद शक्तिशाली हो तो व्यक्ति इश्वर में बिश्वास रखने वाला ओंर धार्मिक कार्य करने वाला होगा	
12. Person born in Aquarius lagan will like to live very simply.	12. कुम्भ लग्न के व्यक्ति अंत्यत सादगी से रहते हैं
13. If Venus is with moon then person will have very energies mental capacity.	13. यदि शुक्र ,चन्द्र के साथ हो तो व्यक्ति की मानसिक क्षमता बेहद उर्जा युक्त होगी	
14. If moon is with ketu is not consider good for metal health.	14. यदि चन्द्र ,केतु के साथ हो तो व्यक्ति की मानसिक क्षमता के लिए यह अच्छा नहीं हैं|
15. If mercury in in sixth than he	

will win his enemy with his love.

16. If moon ,Jupiter, and mercury is in one bhav the person will have excellent memory.

17. If is in Aquarius lagan and rahu is there , person will be having philosophical nature. and will be having very shy nature.

18. If mars is in 6th or 7th or on 10 th bhav , person will be having short temper.and lots of hair on his body.and strong body.

19. If lagnesh (lord of lagna) is in 2,5,8,11, sign than he will undertake no / less travel.

20. If venus is in 12 th bhav person will attain very richness, and if in 6 th than also have sufficient money for his living .

21. Jupiter is in 9 th or 10 th bhav ,person will have philosophical nature.

22. Moon is in Taurus sign, the person will not change his mind very easily.

23. If ketu is in lagna, person will

15. यदि बुध ,६वे भाव में हो तो व्यक्ति अपने शत्रुओं को भी स्नेह से जीतेगा |

16. यदि ,गुरु बुध और चन्द्र एक साथ हो तो याददास्त बेहद तेज होगी |

17. यदि कुम्भ लग्न में राहू लग्न में हो तो व्यक्ति दार्शनिक और शर्मीले प्रकृति का होगा |

18. यदि मंगल ६ वे या ७ वे या १० वे भाव में हो तो व्यक्ति गुस्सेल स्वभाव का ,मजबूत शरीर के साथ ही शरीर पर बड़े रोम युक्त होता हैं |

19. यदि लग्नेश २ रे,५ वे ,८ वे या ११ वे राशी में हो तो व्यक्ति यात्राये बहुत ही कम करेगा |

20. यदि शुक्र १२ वे भाव मैं हो तो व्यक्ति अत्याधिक धनी ,तथा ६ वे भाव में हो तो संतोष जनक धन युक्त होगा जो उसके जीवन के लिए उपयुक्त होगी |

21. यदि गुरु ९ वे या १० बे भाव में हो तो व्यक्ति दार्शनिक स्वभाव का होगा |

22. वृषभ राशी स्थित चन्द्र वाले व्यक्ति अपना मन आसानी से नहीं बदल पाते |

23. यदि केतु लग्न में हो तो व्यक्ति

have some amazing exp.	को कई अलौकिक अनुभव होते हैं |
24. Mercury or in Jupiter is in 4 th bhav shows very good education career.	24. चन्द्र और शनि साथ में हो तो करुणा युक्त प्रकृति का व्यक्ति होगा |
25. If Saturn is with moon person will have a lot of compassionate character.	25. बुद्ध या गुरु ४ थे भाव में हो तो अच्छा शैक्षिक लाभ (पढाई) को बताते हैं |
26. If , Saturn ,mars. rahu, sun like planet is in 3rd bhav or in 9 th bhav , than person will take bold decision.	26. यदि शनि, या मंगल राहू या सूर्य यदि ३रे भाव में हो तो व्यक्ति साहसिक निर्णय ले सकता हैं |
27. If Saturn is in 3rd bhav than person will face all type of struggle, only than get success. and also that he usually lives in ancestral house.	27. यदि ३रे भाव में शनि हो तो व्यक्ति को सफलता अत्याधिक कठि नाइयों बाद ही मिल पाती हैं और वह अधिकतर पूर्वजों के मकान में ही रहता हैं |
28. If rahu is in lagna, than person thinking will not be easily understand by his near and dear one.	28. यदि लग्न में राहू हो तो उसकी विचार धारा उसके निकट के लोगों द्वारा नहीं समझी जाती हैं |
29. If Very strong malefic planet in 12 th bhav, person nature be very kind hearted.	29. यदि १२ वे भाव में शक्तिशाली पाप गृह हो तो व्यक्ति दयालु स्वाभाव का होगा |
30. If Venus is in 2ndbhav than the person will strongly attached to opposite sex.	30. यदि शुक्र २रे भाव में हो तो व्यक्ति बिपरीत सेक्स के व्यक्ति से अत्यधिक सम्पर्कित होगा |
31. Mars and Venus if found in any bhav ,the person/child must be brought up in religious environment.	31. यदि शुक्र और मगल कहीं भी साथ में हो तो उस बालक/बालिका की परवरिश धार्मिक वातावरण में करें|

32. If week moon is in horoscope than eye and stomach problem will be there.	32. कमजोर चन्द्र ,कुंडली में कहीं भी हो तो ये पेट सम्बंधित व आँखों से संबंधित समस्या को बताता हैं ।
33. If some planets is in fixed sign ,an some in movable then person will be having many qualities.	33. यदि कुछ ग्रह स्थिर राशी में कुछ चार राशी में हो तो व्यक्ति में कई प्रतिभाये होंगी ।
34. Saturn and sun is in one bhav or Saturn and sun is in 7th to each other, person has to face many difficulty from father side, means pitra sukh will be very less.	34. सूर्य और शनि एक साथ हो या आमने सामने हो तो उस व्यक्ति को पितृ सुख बहुत ही कम या पिता से सम्बंधित समस्या होगी ।
35. Person born in April may have strong aatam power since sun is strong so person born in oct and nov will face little more hard ship since sun is very weak in that month.	35. अप्रैल मई में जन्मे व्यक्ति की शक्तिशाली आत्म शक्ति संपन होगे और सफल भी, वहीं नवम्बर ,अक्टूबर में जन्मे व्यक्ति को शंघर्ष अधिक करना पड़ता हैं क्योंकि इस समय सूर्य कमजोर रहता हैं ।
36. Strong mars gives you courage and patience and very ,very strong mars turn you too religious nature. weak marsgives very shorttemper and tendency to suicide .	36. शक्तिशाली मगल साहस धैर्य देता हैं, पर अत्याधिक शक्तिशाली होने पर आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्मुख कर देता हैं ।वहीँ कमजोर मंगल ,गुस्सेल स्वभावके साथ ,आत्महत्या की प्रकृति को भी दर्शाता हैं ।
37. If Jupiter is anyway related to 10 th bhav, any of teaching will be apart of his work.	37. यदि गुरु किसी भी तरह से १० वे भाव से जुड़े हो तो ,किसी न किसी प्रकार से व्यक्ति दूसरोंको शिक्षित करेगा ही।
38. If any bhav and more than one bhav is totally vacant between all the all the planet	38. यदि कुंडली में ग्रहों के मध्य भाव यदि कुछ खाली हैं तो सफलता रुक रुक के ही प्राप्त होती

(in between continuous)than success will be attain part by part.	हैं।
39. If rahu is in 2 nd bhav, person some times will use very hard word on his respected one or religious person/things.	39. यदि राहू २वे भाव में हो तो व्यक्ति कभी कभी सम्मानित और धार्मिक व्यक्तियों के प्रति बेहद कठोर शब्दों का इस्तेमाल करता हैं।
40. If second bhav is having Jupiter, mercury , venus , or having aspect on that ,person voice will be soft and embedded with meaning and wisdom.	40. यदि २रे भाव में गुरु शुक्र और बुद्ध हो या उनकी दृष्टी हो तो व्यक्ति की आवाज नम्र और ज्ञान ओर गहरे अर्थ लिए होगी।
41. If mars is in 7 th,or in8th or11 th bhav person will be good in logical talk.	41. यदि मंगल ६वे या ७ वे या ११ बे भाव में हो तो उसमे तार्किक क्षमता अधिक होगी।
So some simple astrological point , those I found while studying in this subject ,not metioninghere for starting any debat purpose but just for help and still you want to know more ,try to consult with any expert in this science.but a word of caution, pleases do not take it as it is, and nothing change cannot be happened, we have given one surya sadhana related to aakarshan to not only planet sun but other the remaining planet too, also have afaith that god has given you mental power and divine sadhana too so why not use	ये कुछ सामान्य ज्योतिषीय बिंदु हैं। इन्हें मैंने अपने ज्योतिष अध्ययन में पाया था इन्हें मैं कोई बहस का विषय के लिए नहीं लिख रहा हूँ, आप इनका उपयोग करे और यदि ज्यादा जानने की इच्छा रखते हो तो किसी भी योग्य ज्योतिषी से संपर्क करे , हाँ एक सावधानी जरुर रखे इन्हें जैसा लिखा हैं केवल वैसा ही नहीं माने ,ओर कोई परिवर्तन नहीं हो सकता हैं न ही ऐसा माने।हमने पिछेले अंक में नव ग्रहों के वशीकरण से सम्बंधित सूर्य साधना दी हैं उसे आप करे , साथ ही साथ आप ये बिस्वास रखे की ईश्वर ने आपको ये मानसिक क्षमता और दिव्य साधनाए दी हैं उसे

that and remove many misery of life.	इस्तेमाल करके आप इन्हें निश्चय ही बदल या कम ज्यादा उनके प्रभाव को कर सकते हैं ,इसलिए इनका प्रयोग कर अपने जीवन की कमिया क्यों नहीं दूर करे	

"work unto death- I am with you, and when I am gone ,my spirit will work with you, this life comes and goes, wealth fame enjoyment are of a few days, it is better , far better to die on the field of duty , preaching the truth ,than to die like a wordly worm .advance." swami Vivekananda

अतिम समय तक कार्य रत रहो , मैं तुम्हारे साथ हूँ,और जब मैं चला जाऊंगा , तब मेरी आत्मा तुम्हारेसाथ होगी ,ये जीवन आता और जाता हैं ,धन यश कीर्ति खुशियाँ केबल कुछ दिन के लिए ही हैं . इससे ज्यादा बेहतर तो ये हैं कि सत्य के मार्ग पर ,हम कर्मक्षेत्र में जीवन दे दे , बनिस्पत कि हम सांसारिक कीड़े बन कर म्रत्यु प्राप्त करे. . स्वामी विवेकानंद

.

"every duty is holy, and devotion to duty is the highest form of the worship of god" swami Vivekananda

हर कार्य पवित्र हैं , अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा , ईश्वर के प्रति उच्चतम पूजा हैं. स्वामी विवेकानंद

Muslim Tantra Sadhana

काल तंत्र की अद्भुत साधना – हमजाद सिद्धि

अपनी छाया को सिद्ध करने का दुर्लभ विधान

On reaching that ruins of the house evening started .here I came to meet Hasad Baqs. when Sadgurudev was in sanyasi life Hasad Baqsnot only understood very rare miraculous prayogs of muslim tantra sadhana but also get fully successfully complete that. He has various unmatched gems of muslim tantra what he got from Sadgurudev ji. mine aim towards learning and understanding the mystry and process was, so since that were the times tasted ,self realized, fully effective gyan of Sadgurudev ji,,I already have hundreds of hazraats and other prayog received directly from Sadgurudev ji. sadgurudev ji told that any sadhana or tantra from any religion/dharma if help you to progressed on the path of completeness than learning that

उस खँडहर तक पँहुचते पँहुचते शाम ही हो गयी थी . यहाँ मैं हसद बक्स से मिलने आया था. सदगुरुदेव जब सन्यस्त जीवन में थे तो ***हसद बक्स*** ने उनसे मुस्लिम तंत्र के अद्भुत प्रयोगों को ना सिर्फ समझा था बल्कि पूरी सफलता के साथ क्रियान्वित भी किया था .

मुस्लिम तंत्र के एक से एक नगीने थे उनके पास जो की उन्हें सदगुरुदेव से प्राप्त थे ...... और मेरा रुझान उन विधियों और रहस्यों को समझने में इसलिए था क्यूंकि वो सदगुरुदेव प्रदत्त ज्ञान था जो उनके अनुभूत और पूर्ण प्रायोगिक सिद्धि प्रदायक अनुभव सूत्रों से युक्त रहे हैं. वैसे सदगुरुदेव से मुझे व्यक्तिगत तौर पर सैकडो हाजरात और अचूक प्रयोग प्राप्त हुए थे और सदगुरुदेव ने बताया था की किसी भी धर्म का कैसा भी तंत्र प्रयोग या साधना हो यदि पूर्णता की और अग्रसर करता हो तो वो कदापि अनुचित नहीं है. उसी दौरान उन्होंने मुझे कहा था की यदि कभी तुम्हे अवसर मिले तो जबलपुर जाकर हसद बक्स से जरुर मिलना.

could not be wrong or mistaken .in that duration he told me if you have time than go to Jabalpur and definitely meet hsad baqs there.	
When you already solve and provide solution of mine queries than why should I go to meet others in this respect, I told him.	परन्तु जब मेरी जिज्ञासाओं का शमन कर देते हैं तो भला मैं अन्यत्र क्यूँ जाऊँ ? मैंने कहा.
My son that place is very suitable for practically learning these prayog and he lives very near to choushat yogini where he is doing kaam chandali sadhana. He also enjoy the sadhana of various sects and mat and enjoy the experiences on that Sadgurudev ji replied and gave me full details of his residence.	बेटे इन प्रयोगों को प्रायोगिक रूप से समझने के लिए वो स्थान उपयुक्त भी है और उसका निवास स्थान चौसठ योगिनी के पास ही है , जहा वो काम चांडाली की साधना को कर रहा है. उसे भी विभिन्न मतों से साधनाओं को सिद्ध करने और उन अनुभूतियों से दो-चार होने में आनंद आता है . सदगुरुदेव ने कहा और उसका पूरा पता मुझे समझा दिया.
On reaching home what I learnt from him ,try to understand/do practically all the aspect of that like that 3 years had been passed, my progress on the muslim tantra was satisfactory, truly my inclination towards doing that sadhana was on difficult and rare sadhana, off course I thoroughly understand and practiced shamshan sadhana very efficiently but most effective and powerful sadhana	घर आकार मैंने जिन क्रियाओं और प्रयोगों को समझा था उनके व्यावहारिक पक्षों को आत्मसात करने का प्रयास करने में जुट गया , इसी उहा-पोह में ३ साल बीत गए और मेरी गति भी कुछ ठीक ही हो गयी थी मुस्लिम साधनाओं में...... इन्ही साधनाओं को करते समय मेरा रुझान कुछ कठिन और दुसाध्य साधनाओं की तरफ हुआ . हलाकि श्मशान साधनाओं को मैं भली भांति समझ कर संपन्न भी कर चूका था,परन्तु मुस्लिम पद्धति की तीव्रतम साधनाओं को करने का भी बहुत मन था. तभी मुझे हसद भाई की याद आई और एक दिन मैं वहाँ के लिए निकल पड़ा. श्रीधाम से पैदल चलते चलते शाम हो गयी तब जाकर मैं उस जगह पर पंहुचा जहा हसद भाई का रहवास था, मैंने उन्हें आवाज़ दी तो थोड़े ही देर में चरररररर की आवाज़ से उस खँडहर का पुराना दरवाजा खुला और, एक ५५-६० साल के दाढ़ी से भरे हुए चेहरे वाले व्यक्ति ने दरवाजा खोला था. नूर (आभा) से भरा हुआ चेहरा , कसरती शरीर और

of muslin tantra also attaracts me. Then thought of meetting hasad bhai come to mine mind and one day I went to meet him, from shree dham to reaching his house through walking alone , evening started. I called him, than with sound the doors of that old ruins of the house opend and 55-60 years old person with fully grown beard on his face in front of me .radiance on his face, well built body and effective voice were his first introduction. On seeing me he told come inside come inside I was waiting for you , had not face any difficulty on reaching here. No not at all, I safely reach here, now what more trouble left for me. Yes too much hungry and trusty I am ,but can you tell me why such a distance from town you live here, do you not face any difficulty to get general house hold things. Ha ha ha ,oh no not at all ,my master gave me such an vidya through that all the needed things here itself arranged, I devote my time to learn new,	रुआबदार आवाज के मालिक ही थे वो. मुझे देखते ही बोले आजाओ आ जाओ तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था , कोई तकलीफ तो नहीं हुयी यहाँ तक पहुचने में???? जी नहीं , सही सलामत तो पहुच गया , फिर अब क्या तकलीफ. हाँ भूख बहुत जोरो से लगी है. प्यास से गला भी सूख रहा है, पर क्या आप बताएँगे की आप शहर से दूर इतने दूर इस उजाड में क्यूँ रहते हैं . क्या आपको दीगर जरुरी सामान को इतनी दूर से लेन के लिए जाने में परेशानी नहीं होती. हाहाहाहाहा ..... अरे नहीं मेरे बच्चे मुझे बिलकुल भी तकलीफ नहीं होती .... मेरे उस्ताद ने मुझे ऐसी तौफीक अता की है की मुझे सभी जरुरत का सामान यही मुहैया हो जाता है. मैं तो अपना सारा समय नए नए तजुर्बों के लिए लगाता हूँ. इसके अलावा इनसे जुड़ी सारी चीजे मुझे मेरी रूहानी ताकते ही जुटा देती हैं. हैं.......... भला वो कैसे ...... और कौन सी ताक़ते आपको ये सहुलियते देती हैं???? बहुत सी हैं मेरे बच्चे ...पर... मुझे किसी बाहरी ताकत की जरुरत ही नहीं होती. मेरा अपना वजूद मेरी जरुरत पूरा कर देती है . आपका अपना वजूद मैं समझा नहीं ????

new prayog and all the necessity things realted to that already made available to me through ruhani forces.(astral forces).	समझाता हूँ...समझाता हूँ ....पर... पहले कुछ खा पी तो लो. जाओ पहले हाथ –मुह धो लो. वहाँ उस सपन्ने (स्नानागार) में गरम पानी रखा हुआ है.
What .. how is that possible what are the forces help you in this context???	पर वो आपने कब किया !!!! आप तो यही बैठे हुए हैं. क्या कोई और भी है यहाँ पर???
There are many , my child but I do not need help from any outer forces mine own existence fulfils mine needs.	अरे नहीं नहीं मेरे अलावा कोई और नहीं है यहाँ पर .... मैंने कहा ना की मेरा अपना वजूद ही ये सब काम करने के लिए पर्याप्त है.
Your own existence I could not understand????	अरे वो तो मैं समझ रहा हूँ पर भला ये कैसे संभव है की आप यही हो और आपके काम भी आप ही कर रहे हो!!!!!!!!!!
I will clear the situation but before that have some food , go and first wash you hand and face ,there are hot water available in sampanne (bathroom).	बेटा ऐसा ही है.... पर मैंने कहा न की जाओ पहले मुँह हाथ धोकर कुछ खा लो.
When did you do that !!!! you are sitting here with me , is here any body else ????	जी , जैसा आप कहे. ये कहकर मैं उठा और हाथ मुँह धोकर दस्तर खान(चटाई) पर बैठ गया. सामने ही थाली ढंकी हुयी थी ,जिसे मैंने खोला तो........... दांतों तले अंगुली दबाने को ही विवश हो गया ... क्यूंकि, उस थाली में गर्मागर्म चावल, दाल,रसेदार आलू गोभी की सब्जी और पापड़ रखा हुआ था(ये सब मेरा पसंदीदा खाना ही था). खैर भोजन करने के बाद मैं जब उनके पास बैठा तो उन्होंने कहा की चलो साधना कक्ष की और चलते हैं.
Oh no no one except me live s here, I told you mine existence is capable enough to do that .	
I am understanding that but how is that possible that you sitting here with me and all the house hold work you are doing same time.	
Thais as it is my son.... But i told you to go and wash you face and	

hand and have some food. Yes as you like , I stand up and after washing mine face and hand sit on the dastarkhan (matt) for taking food. When I opened the thali (set aside its covering plate).i was about to chewue my own finger that mine all favorite dish like hot rice ,daal, sabji of alu and ghobhi and papad was there. After finishing mine food when I sit next to him , he told me let's move to the sadhana room. One room than other room like that after crossing the five room we finally reached the room filled with books and essential sadhana materials and very attractive, soothing fragrance was in that room. One important thing I would like to share that that house was not even a little dust .every room was very clean and in good shape, there was two kambal on the floor on that we sit . Yes, now tell me what you are saying to me. My child, when I talk about existence that has very deep meaning each person has two existence one that we feel every moment ,walk all the time with	एक कमरा, दूसरा कमरा ऐसे पांच कमरों को पार करने के बाद हम उस कमरे में पहुंचे जहा पर ढेर सारी किताबे और साधना की जरूरात के सभी सामान मौजूद थे. एक मनमोहक खुशबु वहाँ फैली हुयी थी. एक बात बताना मैं जरुरी समझता हूँ की उस पूरे घर में जरा सा भी कचरा नहीं था बल्कि सभी कमरे अंदर से दुरुस्त और साफ़ हालत में थे. वह पर दो कम्बल बिछे हुए थे जिन पर हम बैठ गए. जी अब बताइए आप क्या बता रहे थे?? मेरे बच्चे मैं जब वजूद की बात करता हूँ तो उसका एक बहुत ही गहरा मतलब है. हर इंसान के दो वजूद होते हैं.एक जिसे हम हर पल महसूस करते है जो हमारे साथ ही चलता फिरता है , हमारे साथ हमारे समान ही जीवन की सुख सुविधाओं का उपभोग करता है, लेकिन दूसरा वो जो हमारे साथ जन्म लेता है रहता है पर हमारे मरने पर भी उसका अंत नहीं होता है .पर शक्ति सामर्थ्य में वो हमसे कही कही कही बहुत ज्यादा होता है , असंभव को भी संभव कर सकता है जो. मनुष्य के शरीर से जो भी जुडा हुआ है, वो अपने आपमें ताकत से भरा हुआ है पर हम जब अपने उस अंग का उस भाग का प्रयोग सही तरीके से नहीं कर पाते तो ऐसे हालत में वो शक्तिहीन होकर मृतप्रायः ही हो जाता है . उसकी समुचित क्षमता का प्रयोग न कर पाने से हम हमारी ताकत को ही कम करते चले जाते हैं. जैसे हमारी परछाई अपने आपमें शक्ति शाली होती है और ये हमारा ही वजूद होता है . चाहे प्रकाश हो या न हो

us, like us he also enjoy all the things and comfort enjoyed by us, and other one is that who born with us and with us even after our death, but on power he is much much capable , that can makes impossible to possible. What ever attached to with human body that is filled with power, but when we did not use that through proper way than become powerless and almost died. So on not utilizing that our own power we are reducing our own strength. Like that our shadow , yes that is also our part and highly powerful and also our existence , either in dark or light its existence never end, yes that is another thing that in dark its is invisible to us. Through that our hamzaad can be controlled.	इसका अस्तित्व खत्म नहीं होता हाँ ये अलग बात है की ये तब आँखों से ओझल ही रहता है. इसके द्वारा ही अपने हमजाद को वश में किया जा सकता है .
Is that kriya is very easy.????	क्या ये क्रिया सरल है ???
No not that easy, those one who lacks wisdom, cleverly, courage , that can not get siddhta in this and should not even try for that.	नहीं ये सरल नहीं है , जिसमे बहादुरी,चतुराई नहीं है और जिसका दिल मजबूत नहीं है वो इसे सिद्ध नहीं कर सकता और ना ही ऐसे लोगो को ऐसा कोई प्रयास करना चाहिए.
What type of works this can do ???	ये क्या क्या कर सकता है ???
Through flying it can reach from one place to other .	उड़ कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुच सकता है .
Gives us information about anything available between	आकाश से लेकर पाताल तक की किसी भी जानकारी को लाकर दे सकता है . पहाड़ों को उठाकर पल भर में ला सकता है. असाध्य बिमारियों को साध्य कर सकता है. भविष्यगत घटनाओं को बता सकता है . किसी को भी वश में कर सकता है . पर एक बात याद रखो की कोई भी बुरा काम करवाने पर ये खुद तुम्हारे लिए ही मुसीबत खड़ी कर देता है और तब उस मुसीबत से तुम चाह कर भी दूर नहीं हो पाओगे. सच्चे कामो में ही इसकी मदद लेनी चाहिए. आपकी जिंदगी को आप आसान बनाओ ये गलत नहीं है पर उसके लिए दूसरों का बुरा करके तो कभी नहीं.

earth to sky. Within second lift mountains for us. Can Cure ant type of incurable disease Fore tell future for us. Can hypnotized anyone. But keep remember that if used in bad karam that this can makes a terrible problem for you and for that you cannot escape, even if you tried hard. Always take help him in good work, to make your life easy is not bad but not on the cost of others. What are the way for this.. That can be possible through 4 ways. Day time in sunlight, in night time in the light of deepak ,in day or night in front of mirror, or in night only. Till that finally process end ,one should not talk to hamzaad, neither accept any things from him, when he told you that now I am here and stop the process, you should not end the kriya. When the process end than very	इसका तरीका क्या है? इसको ४ तरीको से किया जा सकता है – दिन में धूप में,रात में चिराग के उजाले में ,शीशे के सामने दिन या रात में या फिर सिर्फ रात में. और जब तक क्रिया खत्म ना हो तब तक हमजाद से कोई बात नहीं करना चाहिए. ना ही कोई वस्तु उससे लेनी चाहिए .चाहे वो ये कहे की अब तो मैं आ गया हूँ और क्रिया खत्म कर दो तब भी अपनी क्रिया को बंद नहीं करना चाहिए .जब क्रिया पूरी हो जाये और वो आपसे बात करे तो बहुत ही होशियारी से उसका जवाब देना चाहिए, क्यूंकि वो बदले में अपनी शर्ते आपके सामने रखता है . इस प्रकार कई ऐसी बाते हैं जो की उन्होंने मुझे समझाई और जिनका प्रयोग मैंने करके सफलता भी पाई. और बहुत से विधान भी समझाए पर वो अत्यधिक कठिन भी है और उन्हें पूरा करने के लिए बता की आत्म शक्ति भी चाहिए.और यदि मैं उन तरीको को यहाँ पर रखता तो आप सभी को लगता की हम कठिन क्रियाओं को ही बताने के लिए लिख रहे हैं पर उन्ही तरीको में से एक सरल परन्तु अचूक विधि मैं आपके सामने रख रहा हूँ जिसका प्रयोग मैंने भी करके देखा है और शतप्रतिशत सफलता भी पाई थी. विधि मात्र ये है की आप अपना नाम ९० दिनों तक प्रतिदिन ३१२५ बार कहे पर जब भी नाम ले तब नाम के आगे या लगाया करे , जैसे की मान लीजिए आप

wisely replied him on only asking by him. Since he place many condition in front of you. He also mentioned many important things about this and applying of that I became successful in this sadhana, he also told me various other prayog though they are very difficult and successfully completing that requires a great degree of atam bal .if here I am mentioned all that you can think that for tough things I am mentioning here, but in that way one of very easy and accurate process describing here, I applied and became completely successful.

Process is like.. for 90 days continuously say your own name 3125 times like that use prefix" ya". suppose your name is Aditya so while time of amal say "ya Aditya" ,this process need to be done alone having only such a light that you can only see your shadow. If practicing in night light up the Deepak filled with sarson oil(mustard seed oil). Practices on the same time each and every day. the number of days you are practicing the sadhana be careful no one except you, can enter that place/room.

का नाम आदित्य है तो अमल के समय 'या आदित्य' कहे . ये क्रिया अकेले में करना जरुरी है

जहा इतना प्रकाश हो की आप को आपका साया दिखाई देता हो इसके लिए यदि रात में अभ्यास कर रहे हो तो मिट्टी के दिए में सरसों के तेल का चिराग जला ले . और एक नियत समय पर इस अभ्यास को करना है . साफ़ कपडे पहने हुए हो.

जितने दिन भी आप ये अभ्यास करेंगे कोई और उस कमरे या स्थान पर न जाये इस बात का विशेष ध्यान रखियेगा.और जब भी आप कोई चीज खाए पीये तो खाने या पीने के पहले थोडा सा हिस्सा जमीं पर डाल दिया करे.और ये कहे की लो आदित्य तुम खा लो या पी लो.ये तुम्हारा हिस्सा है.

यदि आपने ये क्रम बगैर चुके ९० दिन कर लिया तो निश्चित ही एक सौम्य परन्तु तीव्र शक्ति शाली हमजाद आपके कामो को सरल करने के लिए आपके वश में होगा, ये धीरे धीरे आपके सामने आते जाता है और अंततः आपके सामने प्रत्यक्ष हो जाता है , फिर आप जो भी आज्ञा देते हैं वो उसे पूरी करता ही है ,

हाँ एक बात याद रखियेगा की जब भी आपके किसी काम को पूरा करने के लिए जायेगा उतनी देर तक जब तक वो वापिस नहीं आ जाट तब तक के लिए आपकी परछाई गायब ही रहेगी.ये आपको अन्य हमजाद प्रयोगों जैसे कोई नुकसान भी नहीं पहुचता. साधना बीच में बंद होने पर कोई अहित भी नहीं होता है.ये आपकी अपनी वो शक्ति होगी,जो की हमेशा श्रेष्ठ कार्यों में आपकी मदद

whenever anything either you eat or drink , a little portion of that be place on the floor/earth and said lo Aditya "lo khalo ya pi lo ye tumahara hissa hain "(here is aditya your share eat it or drink it) if you are successful doing this for 90 days without any gap definitely a soft but highly powerful hamzaad is in your control to make easy your work, and slowly and slowly this appears in front of you , and finally he fully appeared in front of you. whatever you ordered him, he will follow that , yes til that he returned from completing the task given by you , your shadow will be invisible. In this prayog you do not have to face any danger like in other hamnzaad prayog. If sadhana breaks than too not have any danger to you. This is the power who helps you in all the good works, there is not any other restriction.

I am highly oblized to Hasad Baqsji for giving me such a rarest gyan to me, if have blessing of Sadgurudev I will open many more secretive aspect and dimension of that.

किया करेगा. इस क्रिया में और कोई बंधन भी नहीं है.

मैं बहुत शुक्र गुजार हूँ हसद बक्स जी का की ये दुर्लभ ज्ञान उन्होंने मुझे दिया. यदि सदगुरुदेव का आशीर्वाद रहा तो और भी गोपनीय पक्ष व प्रयोग भविष्य में आपके सामने रखूँगा.

Mahakali - Sadhana

(काल के किसी भी क्षण में उपस्थित देव योगों को जानने की परम गोपनीय साधना)

the continuity of the Kaal is very micro micro. Kaal is not just a time only, it is a platform of mobility for living and non livings. there are myriad events are there in a single dot of kaal. we term this as Kaal yog or Kaal Khand. in Kaal khanad, there goes thousands processes altogether running, but the one event which is most heavier on others, those effect us. same way if we analyse those events, we find there are god and goddess mentioned in our scriptures for every task. you can take bramha, vishnu, mahesh, varuna, indra, laxmi, saraswati, mahavidhya or any god or goddess, they are adjoined with nature for particular task.

this way we find a particular effect of any god-goddess in every moment of the life. and this has also been said that in every moment one

काल की गति सूक्ष्म से अति सूक्ष्म हैं . काल केबल कोई समय मात्र नहीं हैं , काल सजीव व् निर्जीव की गतिशीलता की पृष्ठभूमि हैं . काल गति के हरेक बिंदु में असंख्य घटनाए समाहित हैं . इन्ही को हम काल योग या काल खंड कहते हैं . काल खंड में एक साथ हजारो प्रक्रियाए चलती रहती हैं , पर जिस भी प्रक्रिया का प्रभुत्व ज्यादा होता हे उसका असर हम पर प्रभाव ज्यादा रहता हे. इसी तरह अगर हम घटनाओ का अनावरण करे तो हरेक प्रक्रिया के लिए हमारे शास्त्रों में देवी एवं देवता निर्धारित हैं . आप ब्रम्हा, विष्णु, महेश, वरुण, इन्द्र, लक्ष्मी, सरस्वती, महाविद्या या किसी भी देवी देवता को देख लीजिए, प्रकृति में उनके कार्य निश्चित रूप से होते ही हैं .

अगर हम इसी बात को आगे लेकर बढे तो यह एक निष्कर्ष हैं कि पृथ्वी में जो भी गतिशीलता हैं या, काल खंड में समाहित जो भी घटनाए हैं उन हरएक घटना के स्वामी देव या देवी

or another god will be active in the body. with the help of sadhana we can take favour of the god or goddess and can fulfill our wishes. but we do not know that which god or goddess will be active in which moment. and if we know, then we do not have knowledge that what nature is going to do in very next moment and what the effect of the same would be.

very high accomplished yogis, do have this type of knowledge of kaal, they do know that in which moment what will happen and what and on whom would be effect of that. which god or goddess would be active in that moment and which god or goddess will be active in individuals body. on the base of this only, they get to know that in which moment what is going to happen and on whom it will give positive or negative effect, such a micro knowledge they do have.

As it has been told earlier, that in every moment one event out of every event would be having a biggest effect. it differs for every individual. and we term it as a life when we bind them altogether. actually, there would be hundreds of event happening with us in a single moment but the effect of those are so less that we do not

होते ही हैं.

हर एक क्षण में हमारे जीवन पर कोई न कई देवी देवता का प्रभाव पड़ता ही हैं . इसी को कहा गया हैं कि हरेक क्षण में कोई न कोई देवी या देवता शरीर में चैतन्य होते ही हैं . साधनाओ के द्वारा किसीभी देवी एवं देवताओ को सिद्ध कर के उनके द्वारा हमारी मनोकामना पूर्ति ,कार्य पूर्ति व इच्छा पूर्ति करवा सकते हैं . मगर हम ये नहीं जानते की किस क्षण में कौन देव / देवी चैतन्य हैं , और अगर हैं भी तो हम ये नहीं जानते कि प्रकृति आखिर कौन सा कार्य उस क्षण में करेगी और उसका हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा.

अत्यंत उच्चकोटि के योगी, इस प्रकार का कालज्ञान रखते हैं , उन्हें मालूम रहता हैं कि कौन से क्षण में क्या होगा और उसका परिणाम किसके ऊपर क्या असर करेगा. कौनसे देवी या देवता उस क्षण में जागृत होंगे और कौन से देवी देवता उस क्षण अलग अलग मनुष्य में चैतन्य रहते हैं . इसी के आधार पर वे भविष्य में कौन से क्षण में किसके साथ क्या होगा और उसे अलग अलग व्यक्तियों के लिए कैसे अनुकूल या प्रतिकूल बनाना हैं इस प्रकार से अति सूक्ष्म ज्ञान रहता हैं .

जैसे कि पहले कहा गया हैं , कि काल खंड में घटित असंख्य घटनाओ में से किसी एक घटना का प्रभाव सब से ज्यादा रहता हैं हर एक व्यक्ति के लिए वो अलग अलग हो सकता हैं . और हम उसी को एक डोर में बांधते हुए "जीवन" नाम देते हैं . दरअसल हमारे साथ एक ही वक़्त में सेकड़ो घटनाए घटित होती हैं पर उनके न्यून प्रभाव के

understand it. now, the incident which is going to be affect most, if we please the god or goddess of that event, then we will be able to make that incident in our favour for sure. but in such less time how we can understand that what is event, who is controlling god, what is result etc.for very high accomplished yogi, this would be possible. but for a common men, it is not. and to take this thing into mind, our sages made one such sadhana, that every devyoga of every moment becomes positive it self and the knowledge is possible of dev yog, through which we can understand that in which moment what work should be done. we get the ability to understand that the work in particular moment is going to be positive or negative and god gives comfort.

the goddess of Kaal is said to be Kali and Kaal stays in her total control. the people who wish to do this sadhana should also practice tratak on shakti chakra.

This sadhana could be started on Sunday or else any day of the week. one should wear black cloths only during sadhana. This sadhana requires Mahakali yantra and black Hakeek rosary. All the rules of the sadhana are applied.

कारण हम उसे समझ नहीं पाते. अब जिस घटनाका प्रभाव सबसे ज्यादा होगा उसके देवता को अगर हम साधना के माध्यम से अनुकूल करले तो उस समय में होने वाले किसी भी घटना क्रम को हम आसानी से हमारे अनुकूल बना सकते हैं . पर हम इतने कम समय में कैसे समझ ले की क्या घटना हैं देवता कौन हैं प्रभाव कैसा रहेगा आदि आदि ...उच्चकोटि के योगियों के लिए ये भले ही संभव हो लेकिन सामान्य मनुष्यों के लिए ये किसी भी हिसाब से संभव नहीं हैं . और इसी को ध्यान में रखते हुए , एक ऐसी साधना का निर्माण हुआ जिससे अपने आप ही हर एक क्षण में रहा देव योग अपने आप में सिद्ध हो जाता हैं और देव योग का ज्ञान होता रहता हे जिससे कि ये पता चलेगा कि कौन से क्षण में क्या कार्य करना चाहिए. अपने आपही क्षमता आ जाती हैं की उसे कार्य के अनुकूल या प्रतिकूल होने का आभाष पहले से ही मिल जाता हैं और देवता उसके वश में रहते हैं

काल की देवी महाकाली को कहा गया हैं और काल उनके नियंत्रण में रहता हैं . इस साधना के इच्छुक लोगो को साधना के साथ साथ शक्ति चक्र पर त्राटक का भी अभ्यास करना चाहिए

ये साधना रविवार या फिर किसी भी दिन शुरू की जा सकती हैं इस साधना में साधक को काले वस्त्र ही धारण करने चाहिए. इस साधना में महाकाली यन्त्र व काले हकीक माला की जरुरत रहती हैं साधना काल के के सभी नियम इस साधना

after 11pm in the night, sadhak should take bath and wear black cloths. should then sit on black Uni Aaasan. the picture of mahakali should be in-front. worship the yantra. light a lamp and Loban dhoop. then meditate through following lines.	में पालन करने चाहिए . रात्रि में ११ बजे के बाद साधक स्नान कर के, काले वस्त्र धारण कर के काले ऊनी आसन पर बेठे. अपने सामने महाकाली का चित्र स्थापित हो. यन्त्र की सामान्य पूजा करे. दीपक और लोबान धूप जरुर लगाए. फिर निम्न लिखित ध्यान करे
Mundmala dharini Digambara Shatrusamharini Vichitraroopa Mahadevi Kaal mukh Stambhinim Namami tubhyam matru swaroopa	मुंड माला धारिणी दिगम्बरा शत्रुसम्हारिणी विचित्ररूपा महादेवी कालमुख स्तंभिनी नमामितुभ्यम मात्रुस्वरूपा
After this pray for success to Mahakali and pray for success and chant 21 rosary of following mantra	इसके बाद साधना में सफलता के लिए महाकाली से प्राथना करे एवं निम्न लिखित मन्त्र का २१ माला जाप करे.
Klim Klim Krim Mahakali kaal siddhim Klim Klim Krim Phat.	क्लीं क्लीं क्रीं महाकाली काल सिद्धिं क्लीं क्लीं क्रीं फट .
Repeat this for 11 days. after that the rosary should be worn for 1 month and then dropped in river and Yantra could be worshiped by placing it in pooja sthan.	११ दिन तक प्रति दिन साधना निर्देशित जप करे . इसके बाद माला को १ महीने तक धारण करे फिर इसे नदी में विसर्जित करदे. यन्त्र को पूजा स्थान में रखा जा सकता हैं

Dreams indication And Mantra Siddhi

(साधना के सफलता /असफलता को जानने में सहायक संकेत)

The world of dream s is still as mysterious to us, how we can understand what are they trying to say us, or it is just reflections of our daily wish, hidden bhavna or reflection of our sex related thought. Very difficult to understand, but every now and then ,we listen of about so many such a dream of who become true. And many times our own friend and nears one tells us on this . Generally we go by understanding the dreams pattern as their effect and cause stated by them, I am advocating again that try to understand their pattern seeing your life carefully, what the certain things means to you. may be it is saying something different to you, I am here mentioning here some of mine own and our guru sister examples so that it will help you to	स्वप्न जगत अभी भी हमारे लिए एक रहश्य हैं. हम कैसे जाने की वे किस और इशारा कर रहे हैं, या सिर्फ ये हमारी दैनिक इच्छाओं की प्रतीक मात्र हैं ,या हमारी शारीरिक /दैहिक सुख की अनुभूति मात्र हैं , बेहद कठिन हैं| हम सभी ऐसे स्वप्न के बारे में सुनते ही रहते हैं कि जो सत्य हुए.| और कई बार ऐसे स्वप्न के बारे में हमारे निकट के सबंधी और परिचित भी हमें बताते रहते हैं | सामान्यतः हम स्वप्न संकेतों को उनके प्रभाव और कारण से ही समझने का प्रयास करते हैं |यहाँ पर मैं आपके यह कहना चाहूँगा कि इनको समझने के लिए आप इन्हें अपने जीवन के परिपेक्ष में समझे , तो आपको समझ में आएगा, कि ये कुछ ओर ही संकेतित कर रहे हैं | यहाँ पर मैं आपके समक्ष मेरे अपने ओर कुछ गुरु बहिनों के उदाहरण आपके सामने रख रहा हूँ, जिससे आप को कुछ इन्हें समझने में मदद मिलेगी |

understand the pattern.

1. While studying in my college very next day I had to go for a exam paper but I could not prepared well for that, I have seen in my dream that one goat is burning in fire. Immediately I woke up I consider sadgurudev ji s book, I find seeing goat and fire both are good, but what ,i have to do , I calmly sit, my inner voice calls me, indication is good why not I again go for study of selected four question more. And mine surprise, when paper given to me that all the four question is in it.

2. Once I dream I had seen , I was in midst of heavy water mass surrounded from all side and continuously rising its level., I was shocked, still seeing that and helplessly standing their ,one woman just came from my behind and push a little and smiled and moved ahead.(water is for knowledge, as mentioned some book, what I draw conclusion, something wrong is going to happen with me soon, and it happened, next three days was like hell for me, I faced all the trouble, but came

1. जब मैं कॉलेज में पढ़ रहा था , अगले ही दिन मेरा वार्षिक परीक्षा का पेपर था, ओर मेरी तैयारी कुछ अच्छी नहीं हो पाए थी |स्वप्न में , मैंने देखा की एक बकरी आग में जल रही थी | जैसे ही स्वप्न के बाद मेरी नीद खुली मैंने तत्काल ,सदगुरुदेव जी की किताब में देखा कि उसमें पाया की बकरी , आग देखना शुभ हैं |पर मैं क्या करूँ , मैं कुछ देर तक शांत बैठा रहा मैंने अंतर्मन से समझा कि , संकेत शुभ हैं तो क्यों नहीं ,मैं कुछ चुनिदा 4 प्रश्नफिर से पढ़ लूँ |,मेरे लिए बेहद आश्चर्य था की वे ही ४ प्रश्न, प्रश्न पत्र में ,मेरे सामने थे |

2. एक बार मैंने स्वप्न मे देखा कि , मैं एक चारों तरफ से पानी से घिरा हुआ हूँ, ओर पानी लगातार बढ़ता जा रहा हैं |मैं घबराया हुआ उसे असहाय सा खड़ा देख रहा था , |तभी एक महिला मेरे पीछे से आई , मुझे धक्का दे कर हंसती हुए आगे पानी में चली गयी |(यहाँ पानी -ज्ञान का प्रतीक हैं कुछ किताबों में ऐसा ही दिया हैं ,) परन्तु मैंने निष्कर्ष निकला कि अगले कुछ ही दिन में मेरे साथ कुछ अप्रिय होने जा रहा , और ये हुआ भी,|अगले तीन दिन मेरे जीवन के सर्वाधिक कठिन दिनों मेंसे एक थे , हर प्रकार की समस्या सामने आई पर सदगुरुदेव जी की कृपा

out successfully as sadgurudevji blessing always with me. Actually, I was going through very tough period not having any job too, water mass rising indicating the trouble coming, the woman is stand for shakti and pushing me and moved ahead, indicating why I was stand their in shock, why not try to do sadhana and moved ahead.

दृष्टी से में सफलता पूर्वक उससे बाहर निकल पाया | वास्तिविकता ये थी , कि मेरे पास कोई जॉब भी नहीं था मैं अत्यंत कठिन दिनों से निकल रहा था | (यहाँ पर पानी प्रतीक हैं समस्या का , वह महिला ,शक्ति के प्रतीक थी जो मुझे हटा कर आगे निकल गयी | जो बता रही थी की में क्यों असहाय सा खड़ा हूँ क्यों नहीं साधना के द्वारा मार्ग ढूढता |)

3. One of close friend ,always seen in dreams water, and also having some fear that, to remove that she learn swimming but still that fear walk side by side, once she asked me why this always happens, I could not have any answer, I simply said, instead of understand theoretically go for answer hidden in your life. later she confirm as she did suicide in the past lives in jumping in to water.(She still knew about her past lives details)

4. If I am right I have read one Russian great writer lawys had a same dream in that he saw one pair of foot print in sea shore and disappearing after a

3. हमारी परिचिता को हमेशा स्वप्न में पानी जल ही देखता था ,ओर उन्हें उससे डर भी कुछ महसूस होता था ,इस डर को दूर करने के लिए उन्होंने तैरना भी सीखा पर, फिर भी भय तो बना ही रहा , एक बार उन्होंने मुझसे पूछा की क्यों ये हैं, मेरे पास कोई उत्तर नहीं था बस इतना कि आप स्वयं ही अपने जीवन में इसे ढूँढो , बाद में उन्होंने बताया कि पिछले जीवन में उनकी मृत्यु जल में डूब कर आत्महत्या करने से हुई थी |(उन्हें अभी भी अपने पिछले जीवन का कुछ स्मरण हैं)|

4. यदि में सही हूँ तो हाल ही मैंने एक रुसी साहित्यकार के बारे में पढ़ा था कि उन्हें प्रतिदिन एक ही स्वप्न आता था कि एक जोड़ी रेत पर पैरों के निशान दिखते थे, जो कुछ दूर जा कर गायब हो जाते थे |उन्होंने इस स्वप्न को समझने के लिए हर संभव

distance he consulted all the possible things to understand but no help a one his friend gokri sitting he narrated all the things, he smiled, why to search for out side, see you life though you achieved all the things but still your life is not like foot print on a sandy ground. And the writer shocked he never thought that way, its amazing facts that on that night the dreams stopped coming...

कोशिश कि पर वे कामयाब नहीं हो पाए ,एक दिन उन्होंने अपने मित्र गोर्की जो कि एक साहित्यकार भी थे उनसे इसके बारे में चर्चा कि, उसने हँसते हुए कहा कि बाहर क्यों ढूढ रहे हो तुम अपना जीवन देखो ,सब कुछ तो प्राप्त कर लिया हैं फिर भी उन उपलब्धियों का रेत पर पड़े निशान से ज्यादा कोई अर्थ हैं | ये उत्तर सुन कर प्रश्नकर्ता हिल गया ,उसने इस तरीके से तो सोचा भी न था , ओर ये आश्चर्य जनक बात हैं कि उस दिन से उसे वह स्वप्न कभी नहीं आया |

I am not mentioning here what the good dream and what indicate nething bad, there are many article d books available on this topic, yes dgurudev ji write one complete book this subject

यहाँ पर में ये नहीं उल्लेख कर रहा हूँ कि कौन से अच्छे स्वप्न हैं और कौन से ख़राब संकेत देते हैं | इस सन्दर्भ में पहले से अनेक लोगों के लेख उपलब्ध हैं ,हाँ एक स्वप्न विज्ञानं पर सदगुरुदेव जी कि पूर्ण पुस्तक भी हैं |

Hope this help you little bit.

उम्मीद करता हूँ कि आपको शायद स्वप्न समझने में कुछ मदद मिले |

Dream and mantra Siddhi indication:

स्वप्न ओर मंत्र सिद्धि के संकेत :

Can swapan or dreams can be used as a instrument to learn about the mantra Siddhi purpose. Here my meaning is that are we moving in the right path or something wrong, mother nature always guide us in this connection.

क्या स्वप्न के माध्यम से हम मंत्र सिद्धि होगी या नहीं कुछ जान पा सकते हैं|यहाँ पर मेरा तात्पर्य इससे हैं कि हम साधना में सही रास्ते पर हैं या नहीं ,कुछ संकेतो के माध्यम से आप समझ सकते हैं , प्रकृति हमें इस बारे में भी संकेत देती हैं ही |

Our ancient master are aacharya guide us in this path, they provide us

हमारे प्राचीन आचार्यों ने इस बारे में काफी कुछ उल्लेख किया हैं कि हम अपनी साधना में सफलता

some clue by which we can easily understand the progress. In the sadhana field.	स्वप्न के माध्यम से भी जान सकते हैं |
Positive sign:	शुभ स्वप्न :
1. Sadgurudev, great person, saint ,mahatama darshan is very very good, 2. Big bungalow, red color flower, jewelry ,shivling, garden, Brahmin, meeting with person unknown, seeing temple ,terth. 3. Getting mantra in dreams. very good sign. Just use a signnot start reciting the mantra till you confirm with your guru.(shri ma sharda ,when some one asks her in this type of cause, if shashtriy way the construction of the mantra is right, she gave permission or she correct that, so directly not started chanted the mantra till you confirm from your own guru) 4. Getting Prasad from own guru or param guru, guru putra darshan, 5. apply as a lotion on your body ,with own blood, 6. even sadhak or guru brothers	1. सदगुरुदेव जी ,महान व्यक्ति ,संत , महात्मा , के दर्शन होना अत्यंत ही शुभ हैं | 2. बड़ा घर, लाल रंग के फूल, आभूषण ,शिव लिंग ,ब्राह्मण ,अज्ञात व्यक्ति के मुलाकात , मंदिर , तीर्थ के दर्शन , शुभ हैं | 3. स्वप्न में मंत्र प्राप्ति ,बहुत अच्छा प्रतिक हैं , इसे प्रतीक ही केबल माने , न कि इसे मंत्र का जप चालू कर दे जबतक कि आप अपने गुरुदेव से इस बारे में निर्देश न प्राप्त कर ले |(जब भी श्री माँ शारदा से कोई भी साधक इस तरह कि बात करता था तो वे पहले ये देखती थी कि मंत्र शाश्त्रीय रूप के शुद्ध हैं या नहीं, यदि हैं , तो आज्ञा दे देती थी या फिर उसमे सुधार कर देती थी) इसलिए स्वप्न में प्राप्त मंत्र का सीधे ही जप प्रारभ न कर दे |जब तक कि आप अपने गुरुदेव से दीक्षा निर्देश न प्राप्त कर ले | 4. गुरुदेव से या परम गुरुदेव से प्रसाद पाना , और गुरु पुत्र के दर्शन भी शुभ माना गए हैं | 5. अपने रक्त से अपने शरीर पर मालिश करना भी शुभ माना गया हैं | 6. किसी भी साधक के या गुरु भाइयों के

darshan, 7. also cow flesh (gou maans) and eating of go mans also assign of mantra Siddhi. **Negative sign:** physical relation with other woman, suicide, death, hit by some one else. Hit by Black colored man.etc. ***lord swapnesher sadhana appeared in earlier post in the blog, very important in understanding dreams.***	दर्शन भी शुभ माने गए हैं | 7. स्वपन में गो मास दिखना या खाना भी अच्छे संकेत माने गए हैं | 8. अशुभ स्वप्न : किसी भी अन्य महिला से शारीरिक संबंध ,आत्म हत्या , मृत्यु, किसी अन्य के द्वारा आपको चोट पहुंचना ,काले रंग के व्यक्ति द्वारा प्रहार होना | स्प्नेश्वर साधना जो कि ब्लॉग पर में दी गई हैं इन संकेतो को समझने के लिए बहुत ही महत्वपुर्ण हैं.|

" if through tough and difficult situation you face and turns toward the god than all theses situation like a boon for you." swami Vivekanand

यदि अत्याधिक कठिनाई से भरी परिस्थिति आप सहन कर रहे हो, और इस कारन से आप ईश्वर उन्मुखी होते हैं ये सारी परिस्थितियां मानो आपके लिए बरदान थी " .. स्वामी विवेकानंद

"As long as " TOUCH- ME- NOT- ISM" is your creed and kitchen pot your deity , you can not rise spiritually" .. swami Vivekanand

जब तक मुझे न छूओ (छुआ छूत) की भाबना और रसौई के बर्तन आपके देवता हैं तब तक आप आध्यात्मिकता में ऊपर नहीं उठ सकते हैं. स्वामी विवेकानंद

IKSHAMRITYU SADHNA

काल जयी होने मे सहायक दुर्लभ साधना

In present time when our body became the house of diseases and maximum portion of our income is been spent on curing such diseases.In such condition a big question arise i.e. how to keep our body fit nfine.Then we think is their any way to keep our body healthy and complete freedom from disease but also along live life as per our wish hmmm?

You know it is possible through RAS TANTRA.The same sadhna was performed by Devvrata (Bhishma)by permission of his father and blessed with long life. With complete devotion we can achieve above all fruits. Shree Sdgurudev explained in such manner..

This sadhna can be performing from third to eleventh of Shukl Paksha.Whole white cloths and asan should be used while sadhna.Very first use pure Ashta sanskarit Parad along with the Belpatra ras and do the kharal

आज के वर्तमानं समय में हमारा शरीर केबल रोगों का घर बन गया हैं ओर हमारी आय का एक बड़ा हिस्सा इन रोगों से मुक्त होने में ही लग जाता हैं . इन परिस्थिति में एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने आता हैं , कि हम कैसे अपने शरीर को स्वस्थ रखे. इसलिए हम ये सोचते हैं की क्या कोई ऐसा रास्ता हैं जिसके माध्यम से हम अपने शरीर को रोग मुक्त ओर लम्बी आयु प्राप्त कर सके .हैं न ..

आप जानते हैं कि यह रस तंत्र के माध्यम से संभव हो सकता हैं इसी साधना को देवव्रत (भीष्म पितामह) ने भी अपने पिता के आज्ञा संपन्न किया और लम्बी आयु प्राप्त किया था.. यदी हम पूर्ण श्रद्धा से यह साधना करे तो सारे शाश्त्रोक्त फल इस साधना के हमें प्राप्त हो सकते हैं .श्री सदगुरुदेव जी ने इसका विधान बताया था ....

यह साधना किसी भी शुक्ल पक्ष के ३ रे दिन से

process and make a gutika of it.Then in morning first worship the God Mahamrityunjay and Gurupujan and request for complete success and blessings.

After getting permission put that parad gutika on vilva patra and by concentrating your whole consciousness and by tratak do the chanting of below mantra for 108 malas. After completing mantras again repeat the same process means take fresh vilva patra then place the gutika and do the same counts In the same way do it on 108 fresh leaves. When u r done with the whole process then keep that Parad gutika at very safe place.Grind that leaves and take juice out of it and drink it.

Keep doing this series for 11 days.One important facts is that the green leave gets transform into golden color one by one after each 108 malas which indicates us that we are going in right direction.

MANTRA : om kleem mrityunjayaay kleem kleem phat

Via this article I was just trying to introduce this sadhana. Making understanding of Mantra and its pronunciation is guru's work. Therefore contact Gurudev for it. He would definitely make you understand its secrets.

११वे दिन तक की जाती हैं .श्वेत वस्त्र ओर आसन भी श्वेत होना चाहिए , ओर इस से पहले आपको अष्ट संस्कारित पारद को बेल पत्र के रस में घोट कर (खरल करके) एक गोली सी बना ले . पी प्रातः काल भगवान् मृत्युज्य ओर सदगुरुदेव पूजन करके पूर्ण सफलता के लिए प्रार्थना करे..

अनुमति मिलने के बाद पूर्ण ध्यान से पारद गुटिका (गोली) को विल्व पत्र पर रखे , निम्नाकित मंत्र का १०८ बार जप करे. जप पूर्ण होने के बाद इस पूरी प्रक्रिया को फिर से एक नयी ताजे विल्व पत्र पर पुनः पारद गुटिका रख कर , करे , इस तरह से १०८ विल्व पत्र पर करे . जब आप ये कर चुके हो तो पारद गुटिका को किसी सुरक्षित स्थान मैं रख दे . और पूजन में प्रयुक्त पत्तियों का रस निकल कर ग्रहण कर ले .

इस प्रक्रिया लगातार ११ दिन तक करें .,ये महत्पूर्ण तथ्य हैं की हरी विल्व पत्तिया १०८ बार मंत्र उच्चारण के बाद सुनहरी रंग में बदल जाएँगी ये इस बात का प्रमाण होगा की हम ओर प्रक्रिया सही रास्ते में जा रहे हैं .

मंत्र - ॐ क्लीं मृत्युंजयाय क्लीं क्लीं फट .

इस लेख के माध्यम से में आपको इस साधना से परिचित करवा रहा हूँ ,मंत्र को समझना ओर उसका उच्चारण तो गुरु ही समझा सकते हैं .इसलिए गुरुदेव जी से संपर्क करे वे निश्चय ही आपका मार्ग दर्शन कर इसके रहश्य आपको बताएँगे उनकी उदारता से ही आज यह

It is just because of his kindness this sadhana is in front of us. Definitely attempt this sadhana and dedicate our all gratitude to Sadgurudev.	साधना हमारे मध्य हैं .प्रयत्न कर इसमे सफलता प्राप्तकर उनके प्रति प्रणम्य और आभारित हो .

चाहे तोते कितना राम राम बोलता हो , पर जब बिल्ली उसको पकडती हैं तब टे टे ही उसकी आवाज निकलती हैं ,राम राम नहीं ....   . श्री रामकृष्ण परमहंस

(सच्ची विद्या तो जो हैं वह अंतर मन में उतारी हो ओर कंठ में हो ,रट के पढ़ी पढाई विद्या काम की नहीं हैं)

Even if parrot speaks ram ram ,but when cat catch his neck only te te sound comes from his mouth, not ram ram …   Sri Ram krishna Paramhansa.

(true /real gyan is that which obsorb inheart and store in neck ,that will not be valuable if gained only by memorizing power)

योग्य के लिए कोई कार्य कठिन नहीं , व्यापारी के लिए कोई देश दूर नहीं ,विद्वान के लिए कोई देश पराया नहीं ,मधुर बोलने वाले के लिए कोई पराया नहीं . .

Nothing is beyond from a person ability ,for a merchant nothing is distant land ,for a scholar no country is unknown , same way for a person with sweet voice everybody become friend means none is enemy..

kaal Sanklan and Vikhandan

काल संकलन एवं विखंडन

काल संकलन एवं विखंडन

(काल का एक क्षण का अत्यंत दीर्घ या अत्यंत लघु होना कैसे संभव हैं)

(काल का एक क्षण का अत्यंत दीर्घ या अत्यंत लघु होना कैसे संभव हैं)

Lost in the past few days, there lived a strange fun inside me. Vision of seeing the world was changed. pleased with sadgurudev's blessings I was getting knowledge of Shiva Shakti. Daily sadgurudev used to points out in regard Sadgurudev Shiv Shakti and I was trying to write it much as I could. The first time I realized that this whole World is "meithoon may". Shiva and Shakti are always going on for creation. And creation is only possible where shiva and shakti meets and this only gives birth to kaal, life and even death.... Sadgurudev was making me understand that secret which was base of the Vaaam Tantra... In those days only i came in touch with 2 different and opposite incidents in my life which were really strange but at last sadgurudev opened that

पिछले कुछ दिनों से मैं एक अजीब सी मस्ती में खोया रहता था. दुनिया को देखने का मेरा नजरिया ही बदल गया था. सदगुरुदेव की कृपा से इन दिनों शिव शक्ति के विषय में ज्ञान मिल रहा था. रोज सदगुरुदेव शिव शक्ति सबंध में बताते जाते और मैं उसे सुनके लिखता रहता था. पहली बार मुझे ये समझ में आया कि पूरी सृष्टि मैथुन मय ही हैं . शिव और शक्ति हमेशा गतिशील रहते हैं सर्जन में. और सर्जन केबल मात्र वहा सबंधित हैं ,जहा पर शिव ओर शक्ति का समन्वय हो और ऐसे ही तो सर्जन होता हैं काल का गति का जीवन का और मृत्यु का भी...सदगुरुदेव वो रहश्य समझा रहे थे जो कि आधार हैं पूरे वाम तंत्र का..इन्ही दिनों में मेरे साथ दो इसी विपरीत घटनाये घटी कि मैं आश्चर्य में डूब ही गया पर आखिर कर बस सोचा गुरुदेव ही समाधान करेंगे की आखिर वो साडे तीन घंटे गए कहा ? और इस ख्याल के साथ में सो गया...

secret in front of me that what those incidents were actually...

once I just entered into my room after roaming here there at that time only my one of the familiar spoke "I am waiting, please came down and then we will sit". Like daily, I asked him that I'll come in 15 minutes after having a bath. I looked at wrist watch was, it was, quarter past nine. and i just set down on. Just a moment of eye...my eyes closed and opened. That much of time only...And this was moment of change.

Wind became cold...the noise outer, was no more. I felt strange. I stood up to look out at window. In this second, how darkness had grown much...anyways when I went took towel to go for bath, I suddenly looked at wristwatch. It was 12:30. I laughed mentally, the watch gone. let see I may repair it tomorrow...with this thought I came out side and My eyes fell on the wall clock, It was 12:30!! Meance time was 12:30 actually. But How? Was I sleeping? No-No how could it is possible? I was completely awake just a moment was passed and to sit for these much hours...??? Have I

एक दिन रातको में घूम कर वापिस आ कर और अपने कमरे में प्रवेश किया ही था. कमरे के अन्दर गया तो नीचे से एक परिचित ने आवाज़ दी कहा कि "में इंतज़ार कर रहा हूँ नीचे आईयेगा फिर हम बैठेंगे." रोज की तरह मैंने कहा कि १५ मिनिट में आ रहा हूँ स्नान कर के. कलाई पर बंधी घडी में देखा तो सवा नौ बज रहे थे. और, पलकों की वह निमेष....मेरी एक पलक झुकी और उठी, बस इतना ही समय ...बस यही क्षण में सारा परिवर्तन...कुछ बदला बदला सा लगा

मुझे...हवा ठंडी हो गयी थी अचानक...बाहर का शोर गुल भी शांत हो गया था...कुछ अजीब सा अहसास हुआ मुझे..उठा और खिड़की से बाहर झाँका ...इतने समय में अँधेरा कैसे कुछ ज्यादा ही घिर आया ...खैर , नहाने के लिए तौलिया उठाया तो कलाई पर बंधी हुए घडी पर नज़र पड़ी...१२:३० बज रहे थे..मन ही मन हँस दिया कि घडी गयी कामसे. कल मरम्मत करवाऊंगा यही सोचके बाहर निकला की बाहर टंगी हुई घडी पर देखा...१२:३०...दौड़ के गया और दरवाज़े के बाहर देखा ...सब दुकाने बंद हो गयी थी ...कोई इंसान दूर तक नहीं दिख रहा था...मतलब की सच में १२:३० बज गए थे...मगर कैसे ...क्या में सो गया था...नहीं नहीं ऐसा कैसे संभव हो सकता हैं ...मैं तो पूर्ण रूप से जागृत अवस्था में था...बस एक पलक ही तो झपकी थी मेरी. और इतने घंटे

had something wrong food?,,, No No. it was complete truth...what to do.... finally just thought that Gurudev only will answer this that where had my three and Half hour went? And thinking this, I fall asleep.

I was just thinking that let me ask about that incident to gurudev but at 8'o clock in the morning gurudev had started directly making me understand about Shiva and Shakti, he was speaking it fluent. in the begin, I felt good but today it was felt a bit strange..Anyways, removing all these thoughts I started noting down. When I was having any query, I used to ask. But today it was letting a more time...thought, 2 hours had been passes. Then 3,4,5 hours. Now I was bit tired even then too i was nodding my head. I was aware that gurudev must know that I do not understand anything now.

But 2 more hours passed i think. I thought that should I ask gurudev to Stop? in this confusion only, I was wondering that to note down everything what gurudev told, I will need 5-6 register. after sometime when it became too tough for me then I told gurudev, that I am now not able to

स्थिर बैठना ..क्या हो रहा हैं ...मैंने कुछ ऐसा वेसा तो नहीं खाया...अरे नहीं...क्या करू...बस सोचा गुरुदेव ही समाधान करेंगे की आखिर वो साडे तीन घंटे गए कहा ? और इस ख्याल के साथ में सो गया...

सोचा था कि आज पूंछ ही लू सद गुरुदेव से उस दिन की घटना के बारे में मगर आज सुबह ८ बजे से ही गुरुदेव शिव शक्ति के ऊपर सीधे ही समझाने लगे हैं और धारा प्रवाह वे इस पर बोले जा रहे हैं ...पहले तो मुझे बड़ा अच्छा लगा...लेकिन आज रोज से कुछ अलग लग रहा था....कुछ अजीब...खैर खयालो को दिमाग से हटा के नोट करना शुरू किया...जहा समझ नहीं आता , वही पूछ लेता, लेकिन आज कुछ ज्यादा ही समय हो रहा हैं ...लगता हैं २ घंटे हो गए हैं ..मैं सुनता रहा...फिर ३ ४ ५ घंटे..अब मैं थोडा थक भी गया था फिर भी सर हिला के हूँ हूँ कर रहा था...मैं जानता था की गुरुदेव को पता ही होगा कि अब सब कुछ सर के ऊपर से जा रहा हैं ...

लेकिन...और २ घंटे का समय हो गया लगता हैं ....मैंने सोचा कि गुरुदेव को कहू कि अब..इसी उहापोह में ,मैंने मन ही मन हिसाब लगाया की आज तो जाके ५-६ रजिस्टर लाने पड़ेंगे जो गुरुदेव ने आज बताया ,लिखने के लिए. कुछ समय बाद अब मेरे लिए असह्य हो गया तो मैंने कहा गुरुदेव, अब कुछ भी समझ नहीं आ रहा हे...में थक गया हूँ लगता हे...गुरुदेव मुस्कुराये बोले थक गया...२ मिनिट नहीं हुए और थक भी

understand anything...I think I am tired...With smile gurudev told. You tired. Not even 2 minutes passed and you tired, you just feel good to sleep. You will keep sleeping or what..

.I said. What guruji..if some one will listen on Shiva shakti theory for 7-8 continuous, then sleep will automatically come. This time gurudev smiled and said...7-8 hours. Not even 2 minutes had been passed...acting smart?...I said guruji what 2 minutes. you see...with these word I turned back towards wall clock. it was 8 and 1 and half minute...it was sunlight out side, meaning was clear it was 8 of morning only. I felt I was getting made. I bowed down to his feet and made a sincere request that what is this all...bliss me...I wouldn't be able to understand all these

At that time he accepted my request and made me understand that the speed and continuity of the Kaal is very micro. But what speed we can catch, we designed time base on it. yogi, with the power, catches any of the moment and can make it micro or macro based on its will...mince, with that one moment either he stretch the moment or compress it (sankalan evem Vikhandan). This

गया, तुझे सिर्फ सोने में ही आनंद आता हैं ... नींद ही लेता रहेगा...

मैंने कहा क्या गुरूजी, अब ७-८ घंटे कोई शिव शक्ति के ऊपर बैठे बैठे सुनता ही रहेगा तो नींद तो आएगी ही....गुरुदेव फिर किंचित व्यंग से मुस्कुराये और कहा अच्छा ७-८ घंटे. दु ष्ट २ मिनिट भी नहीं हुए और...चालाकी करता हैं ...मैंने कहा गुरूजी कहा दो मिनट!!आप देखिये कहके मैंने अपनी नज़र घडी की ओर घुमाई जो पीछे की और थी.. ८ बज के डेढ़ मिनट...बाहर धूप थी मतलब साफ था कि दिन के ८ ही बजे हैं ...मतलब की सच में सिर्फ डेढ़ या दो मिनट हुए हैं .....मैंने पागल हो जाऊंगा...तुरंत उनके चरणों में लेट गया....नम्र निवेदन किया कि गुरुदेव ये सब क्या हैं ...कृपा कीजिए...मैं ये सब इसे नहीं समझ पाऊँगा...

तब उन्होंने निवेदन स्वीकार करते हुए समझाया कि काल की गति अति सूक्ष्म हैं...मगर जिस गति को हम पकड़ पाते हैं उसी के आधार पर हम समय की संरचना कर देते हैं ...योगी अपनी इच्छा से किसी भी एक क्षण को पकड़ के उसकी गति को लम्बा या छोटा कर देता हैं ...मतलब उस एक क्षण का वो संकलन या विखंडन कर देता हैं... इसी प्रकार से योगी चाहते तो हजारो सालो को एक क्षण में परावर्तित कर सकता हैं ...इसके द्वारा वह अपना समय संकुचित करके सीधा एक हजार साल आगे निकल जायेगा..उसे फिर

way only, if yogi wishes, he can convert thousands years in one moment. with this after compressing thousands years, in a moment he will directly go to thousands years in future, he need not to wait for thousands year for to dork in that particular year which will come after thousand years. or else Yogi can stretch a single moment and make hundred years out of it. for the world it would have been just a second but for a yogi, he could have lived hundreds of years in this. The both incident happened with you had been done by me just to make you understand this, so that you can understand better now, what I just spoke.

एक हजार साल के बाद का कोई काम करने के लिए इंतज़ार करने की जरुरत नहीं रहती. या फिर योगी चाहे तो एक क्षण में सिर्फ काल विखंडन कर के अपनी सेकड़ो साल की साधना ख़तम कर लेगा..दुनिया के लिए उसने सिर्फ आँखे बांध की और खोली पर इस समय तक उस योगी ने न जाने कितने साल जी लिए होंगे...तुम्हारे साथ हुई ये दोनों घटनाये मैंने इसी लिए करवाई थी की तुम्हे जब में ये बताऊ तो तुम्हे समझ आ जाए.

My confusion was over now. I asked that with which sadhana this is possible? Gurudev said that this is possible through any of the way. Like yoga or tantra..When I asked about process, he let it went off with a slight laughter. I understood that this is very high level of sadhana and to know the secret of this sadhana is not possible for me/ but what ever he made me understand of this process is very far then explanations. After that I came to know that only siddhas of

मेरे मन पर से पर्दा हट गया था. मैंने पूछा गुरुदेव ये कौन सी साधना से संभव हैं ...इस पर गुरुदेव ने उत्तर दिया की किसी भी मार्ग से इसे सिद्ध किया जाता हैं ..चाहे तंत्र हो या योग मार्ग...जब मैंने प्रक्रिया के बारे में पूछा तो वे हँस के टाल गए.

मैं समझता था कि शायद ये बहुत ही उच्च साधना हैं ओर इसका रहस्य जानना मेरे लिए इस वक्त संभव नहीं हैं...मगर इस प्रक्रिया के बारे में उन्होंने जो ज्ञान दिया वे शब्दों से परे हैं...आगे जानकारी मिली कि सिद्धाश्रम से संस्पर्षित योगीयो को ही इस प्रकार की साधना या अनुभूति करवाई जाती हैं ...मगर हमारे

siddhashrama are applied to do such sadhanas and made them realized about these things with experience. But heart of our beloved gurudev is so much big that he let us such common men experience such divine things sometimes. For him all these things are love toward us. Being in the love toward us, he bless us the way, word them self could not explain this.	गुरुदेव का हृदय इतना विशाल हे की हम जैसे तुच्छ लोगो को भी वे यदा कदा ऐसे अनुभव करा देते हैं की...उनके लिए ये सब प्रेम ही हैं.. प्रेम के वशीभूत वो शिष्यों पर इतनी कृपा बरसाते हैं की शब्द से उसको जाना नहीं जा नहीं सकता ...

Fear comes from the hreat if you ever feel over come by dred of some illness or accident, you inhale and exhale deeply ,slowly and rhythmically several times, relaxing with each exhalation, this help the circulation to become normal, if your heart is truly quiet, you cannot feel fear at all.

.. Parmahansa Yoganand

भय हृदय के रास्ते से आता हैं ,यदि आप कोई दुर्घटना या स्वाथ्य सम्बंधित परेशानी से परेशान हैं तो , धीरे धीरे ,एक लय में गहरी स्वास ले , बार बार .और हर स्वास के साथ अपने आपको ज्यादा आराम में पाए.इस क्रिया से अप जल्दी ही सामान्य हो जायेंगे | यदि आपका हृदय पूर्ण रूप से शांत रूप से हैं तब कोई भी भय आपको महसूस नहीं हो सकता |

परमहंस योगानंद

Kaal Gyan And Shakun

काल ज्ञान और शकुन

How we can know our future , there are several method available to us but which one is suitable, is accurate too, is a very tough question to decide. Do we have to depend upon meth's or have to get knowledge about big mathematical calculation .mother nature in all forms standing in front of us to help, but we treat her as a enemy instead of friend. whole branch of this kaal gyan is available in midst of us but in part by parts .who ever consider mother nature as a sahyogi (helper) ,all that great yogis formulated so many rules and provided to us, but do society still understand their contribution?.

कैसे जाने भविष्य को पर हजारों विधाओ में कौन सी ठीक रहेगी कौन सी नहीं ये तो बड़ा ही कठिन सा प्रश्न हैं .पर क्या हमेशा गणित पर ही निर्भर रहना पड़ेगा , वडे बड़े गुणा भाग जानना पड़ेगा ही ,प्रकृति तो अपने समस्त रूप मैं हमारे सामने सहयोग करने को कड़ी हैं पर हम ही उससे मित्र की जगह उसे शत्रु मानते हैं . इस पूरी शाखा कालज्ञान की हमारे बीच है जिसे हम आज मात्र खंड खंड के रूप में ही पाते हैं, जिन्होंने भी प्रक्रति को सहयोगी रूप में स्वीकार किया उन परम योगियों ने ही सूत्र रूप में अनेको चीजो को समाज के सामने रखा , पर ये क्या समाज उनकी देन समझता हैं.|

Still today, when crow sounds comes in the morning, we guess that some guest will come our home, many of us stand still in fear when cat crosses our way. And blame her

आज भी कौवा के सुबह घर पर बोलने से हम अंदाज़ लगाते हैं, कोई मेहमान आने वाला हैं . बिल्ली के रास्ते काटने पर हममें से कुछ, भय से खड़े हो जाते हैं, और उसी ही दोषी मानते हैं, पर क्या ये ऐसा ही हैं, नहीं ब्रम्हांड में अनेको घटनाये एक साथ होती

for our misfortune, is it the valid reason/cause to understand that, no. in this universe several incident happen side by side ,and can be understand by law of synchronicity, so by knowing one ,we can easily guess other incident. Now it is well proved theory and knowledge that each animal has some peculiar ability (gift of mother nature)to understand the sign of astral world or sookshma jagat .

रहती हैं , और दो घटनाओ के एक साथ होने के नियम के सिद्धांत के अनुसार एक साथ दो या अधिक घटनाये एक साथ होती रहती हैं उसमें से किसी एक को देख कर दुसरे के बारे में सहज ज्ञान लगाया जा सकता हैं, अब तो ये वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो ही चूका हैं ही इन सभी पशुओं में भी सूक्ष्म जगत के संकेतो को पड़ने की प्रकृति रूप से प्रदत्त क्षमता रहती हैं.

Not only a astrologer but common mans also need to understand these sign, in ancient time astrologer had unique ability to understand these sign, you can read/see in the books that they already mentioned so many quality and pre condition to be an astrologer, not like that if not able to get any job than become a astrologer, this field is not such a small or low class one. The sign provided by mother nature is known as SHAKUN. They are so effective that understanding it,you need not to take advice from astrologer. sadgurudev ji always told that "**baba vakya prmanam**" ,(means what has been told by higher one is always right)should not be followed. Accept the

एक ज्योतिषी को ही नहीं ,सामान्य मानव को भी इन सामान्य प्रकृति प्रदत्त सूत्रों को समझने की आवश्कता रहती हैं ,पहले के ज्योतिष्यों में इन संकेतो को पढने की अपूर्व क्षमता रहती थी, आप देखेगे की उन्होंने ज्योतिषी बनने की भी शर्ते / योग्ताये बताए हैं, न की कोई कार्य नहीं मिला तो ज्योतिष बन गए, इतना छोटा और उपेक्षित नहीं हैं ये क्षेत्र. प्रकृति प्रदत्त इन संकेतों को शकुन भी कहते हैं. ये इतने प्रभाव शाली हैं की अनेको समय आप को किसी भी ज्योतिष की भी सलाह नहीं क\लेनी पड़ेगी. सदगुरुदेव जी हमेशा कहते हैं की " बाबा वाक्यम प्रमाणं " न माना जाये , प्राचीन बाते स्वीकारे पर, अपने विवेक के साथ ही , अपनी कसौटी पर उसे परखे भी .मैंने अनेकों बार देखा की बिल्ली के रास्ते काटने से भी कोई फर्क नहीं पढ़ा , कुछ भी समस्या सामने नहीं आई.

ancient wisdom but try it your own knowledge/wisdom with applying your brain. i have seen many time cat crosses my way, does not bring any bad effect or accident.	
Prof krishmurti (well known astrologer and inventor of krishnamurti paddhti) also pointed out many places in his books about this science.	प्रोफ. कृष्णमूर्ति जी (प्रसिद्द ज्योतिष , एवं कृष्णमूर्ति पद्धति के जनक)ने अपनी किताबो में इस विज्ञानं के ओर इंगित किया हैं.
While going to start any important work or going to solve any astrological query about future or related to ant work, if electricity gone, surely that work or result will not be find as desired.	किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को प्रारंभ करते समय , यदि बिजली चली जाये, या किसी भविष्य सम्बंधित प्रश्न को करने जा रहे हैं यदि कार्य के लिए जा रहे हो तब भी , निश्चय ही मानिये , वह कार्य नहीं होगा. (या वह परिणाम न ही प्राप्त होगा|
Once he had been asked whom I would merry tell me about his complexion? , one boy bring a cup of tea for him just on that time, he replied the query mentioning the boys color and other related things without doing any astro calculation. That prediction proved very correct too.	एक बार उनसे पूछा गया की मेरा विवाह जिससे होगा उसका रूप रंग कैसा होगा |तभी एक चाय उन्हें देने के लिए एक बालक उनके पास आया | उन्होंने उस बालक के रंग रूप के हिसाब से बिना ज्योतिषी गणना के उत्तर दे दिया | जो पूर्णत सही निकला |
Once he had been asked about a woman (pregnant) ,whether she would have boy or girl child .suddenly he saw outside find that one woman carrying a	एक बार उनसे पूछा गया की किसी महिला को पुत्र या पुत्री होगी ? ठीक उसी समय उन्होंने बाहर देखा, पाया की एक महिला ,जो झोले में कुछ सामान ले जा रही थी , झोला फट गया और दो फल उसमे से बाहर निकल आये |उन्होंने ये देख कर ,जुड़वाँ

bag, and the bag torn and two fruits came out, on that bases he predicted that twins would come, and that also proved very correct.

बच्चे होने कि भविष्य बाणी की जो कि पूर्णतया सही निकली|

To understand these shakun you have to use your brain, knowledge too. while understanding their meaning one thing will be always keep in mind that they not tells us the meaning what we understand commonly ,if we have already some related conclusion in this regards in our mind.

पर इन शकुनो को समझने में आप को विवेक का भी बहुत इस्तेमाल करना पड़ेगा, साधारणतः इनका मतलब वह नहीं होता हैं जो आप सुनते आये हैं यदि इनसे सम्बंधित को धारणा आपके मन में पहले से ही हैं. |

I m just giving example of swapan science (from dream) to understand it..

हालाकि मैं एक उदाहरण स्वप्न विज्ञानं का दे रहा हूँ , पर इस तथ्य को समझने में सहायता करेगा कि इन्हें कैसे समझा जाये .

Whether boy child or girl child will be born in family, I tried to get the answer through astrological way, but one of mine relative, without any calculation, easily predict the things, if she saw in dreams a girl that means boy child will come, and vice versa too, and many times her prediction correct. Like that way we can use our intuition to understand the sign given by mother nature to understand their meaning.

किसी के यहाँ लड़का होगा या लड़की होगी , मैं ज्योतिष गणना से उत्तर जानने कि कोशिश करता था. पर मेरी एक परिचित बहुत आसानी से बता देते थे , यदि रात स्वप्न ,में उन्हें लड़की दिखी तो , जो प्रश्न पूछ रहा हैं उसके यहाँ लड़का होगा , और यदि लड़का दिखा तो , प्रश्न कर्ता के यहाँ लड़की , मैंने पाया उनके बाते अत्यधिक सही निकली| ठीक इसी तरह हम अपने स्वभाबिक ज्ञान को विकसित करे ,प्रकति प्रदत्त संकेतो को समझने में |

- While going to do any good work and see someone quarreling to others this

- पर ये शुभ कार्य में जाते समय किसी की लड़ाई होते हुए दिखे दे , तो उस कार्य में समस्या / विघ्न की सम्भावना बताता हैं, |

shows some trouble/obstruction in the work. • Like same way if you see , that some meeting very happily to others, is a sign of positive result. • If anyplace you herd the voice of giddh bird is sign of coming various troubles.	• किसी भी कार्य पर जाते समय यदि कोई प्रसन्नता पूर्वक मिलता दिखाई देता हैं तो ये शुभता का प्रतीक हैं। • किस स्थान पर गिद्ध का बोलना सुनाई दे तो बिपत्ति का सूचक हैं।
Is this so simple to understand that	क्या इतना ही आसान हैं।
Are you aware of the fact that if bad shakun happen on the left hand direction and shubh shakun happened on the right hand direction consider shubh or good.	पर आप क्या ये जानते हैं कि अशुभ शकुन बाये ओर हो और शुभ शकुन दाहिनी ओर हो तो लगभग शुभ माने जाते हैं।
For example take chhink, suppose it occurs while you are going to do any work, think that bad sign and wanted to stop the work • At the time of eating, marriage time, beginning time of study, the chink consider good. • Chink of child, old person, ill/sick person, or attempted knowingly does not carry any weight. • sneeze of cow consider	उदाहरण के लिए ,छींक को ही ले ,किसी भी कार्य के प्रारंभ में आई , आप अशुभ मान कर उस कार्य को रो क ने लगे। • भोजन करते समय ,बिबाह के समय ,विद्या आरंभ के समय , हुए छींक शुभ मानी जाती हैं • बालक ,वृद्ध, रोगी , और जान बूझ कर की गए , छींक महत्व हीन हैं। • गाय की छींक मरण प्रद मानी जाती हैं।

death inflecting.	
How to remove the ills of bad shakun:	अशुभ शकुन दोष का परिहार कैसे करे -
Whenever you come into the contact or observe bad shakun, start the work after taking first 10 minute rest. But if the bad shakun repeats three time stop the work for the day.	जब भी कभी अशुभ शकुन दिखाई दे तो १० मिनिट रुकने के बाद कार्य प्रारंभ करे | यदि तीन बार अशुभ शकुन हो तो उस दिन कार्य को टाल देना चाहिए |
Poojan of lord shiva removes the ills of bad shakun.	अशुभ शकुन होने पर शिवार्चन करने पर दोष परिहार हो जाता हैं |
Poojya sadgurudevji describe in details about the bad or good shakun and also the chink and their result according to the direction in his book **MAHURAT JYOTISH**, iam not mentioninghere the list of somany good or bad Shakun , you have already read manytimes .so come forward and learn this science, to understand the gift of mother nature.	पूज्य पाद सदगुरुदेव जी ने ,"महूर्त ज्योतिष " में दिशा के अनुसार छीकों का परिणाम ,साथ ही साथ अनेको शुकन (शुभ /अशुभ) के बारे में विस्तार से समझाया हैं | तो आप आप आगे बढ़ कर इस विज्ञानं को आत्मसात करे , और प्रकृति के इस देन को समझे |

Always think positive even the circumstances totally adverse to you,nothing stay the same than how can bad sitution always stand infront of you.

हमेशा आशा वादी रहो चाहे वर्तमान परिस्थितिया कितनी भी विपरीत न हो , जब कुछ भी स्थायी नहीं हैं तब विपरीतता कब तक आपके सामने रहेगी .

Mantra Yog se Kaal Gyan

मंत्र योग से काल ज्ञान

Our ancient sages were real scholars of the science whose basic aim was to make invention through which the mankind can attain total happiness or the magnifying joy termed as "Anand" in the scriptures. Mean while they developed particular systems for the path of spirituality which lay the option of comfortable selection according to one's nature.

In this regard's total 108 system were been designed like Mantra, Tantra, Yoga, Dhayana, Darshana, Yagna, Paarad, Sury Siddhant etc. these were the particular branches leading to the same goal with different ways. As one is independent with differentiation of thoughts and way of conduct to live the life, they can select particular path in which they do attend a spiritual goal with best of the comfort.

हमारे प्राचीन ऋषियो ने सही अर्थो में विज्ञानं का अभ्यास किया था जिनका मूल उद्देश्य मनुष्य जाति के लिए इसे अविष्कार करना था जिससे वे उन खुशियों को प्राप्त कर सके जिसे हमारे शास्त्रों में आनंद कहा गया हैं . इसी दौरान उन्होंने आध्यात्मिकता के पथ पर कई इसी क्रिया पद्धतिओ की रचना की जिससे हर एक अपनी मानसिकता के अनुरूप पथ को चुन सके.

इसी राह में १०८ पद्धतिओ की रचना हुई जैसे मंत्र, तंत्र, योग, ध्यान, दर्शन, यज्ञ, पारद, सूर्य विज्ञानं,...ये सब अलगअलग खास पद्धतिया थी जिनका उद्देश्य एक ही था. जरुरी हैं की मनुष्य अपने जीवन में एक ऐसा रास्ता चुने जोकि उसे अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करे क्यूँ की हर एक मानव एक अलग विचार पद्धति एवं जीवन जीने का के लिए स्वतंत्र हैं .

But when the time passed, more research had been carried out by our Maharishis. They made a core balance between these systems and started innovating best possible systems, which can give quick and best results. Meanwhile they started combining various methods with each other and it gave a birth to very new and effective systems.

For example Sury Vigyan was complete science of atoms. When it was applied a bled with tantra it became easier. And a new way was found in which the lens used for Sury Vigyan was not required and the atoms of matters could be change with medium of eyes only, it became sury vigyan tantra. The same goes for Paarad Tantra, when paarad vigyan was combined with various tantrik processes, it became easier to handle paarad and take benefit of it.

In all Indian spiritual system, the most famous systems to everyone had remained Mantra and Yoga, though both are very different from each other. Mantra is science of Sounds only. Our ear can hear sounds up to some decibels, but sound is everywhere rather we can hear it or not, and sound do prepare a particular energy vibration. This

मगर समय चलते हमारे महर्षियोंने ज्यादा खोज की, उन्होंने पद्दतियो के मध्य स्थिरता स्थापित की और सबसे सहज पद्धतिओ के लिए खोज की, जिसमे जल्द और बेहतर परिणाम प्राप्त करे. इस दौरान , उन्होंने क्रिया पद्धतिओ को एक दुसरे के साथ मिलाना शुरू किया जिससे और नयी पद्धतिया सामने आई.

जैसे की सूर्य विज्ञानं पूर्ण रूप से अणु आधारित विज्ञानं हैं , जब उसे तंत्र के साथ सम्मिलित किया गया तो वो और सहज हो गया. और एक नया रास्ता मिला जिसमे सूर्य विज्ञानं लेंस की आवश्यकता न होके मात्र नेत्रों के माध्यम से पदार्थ परिवर्तन संभव था, इसी क्रिया को सूर्य विज्ञानं तंत्र कहा गया. यही तथ्य पारद तंत्र के ऊपर भी लागु होता हैं . जब पारद विज्ञानं का समन्वय तंत्र की विभिन्न क्रियाओ के साथ किया गया, तब पारद से लाभ प्राप्त करना और भी आसान हो गया.

भारतीय आध्यात्मिक प्रणालियों में सबसे ज्यादा प्रसिद्द प्रणाली मंत्र एवं योग रही हैं , वैसे तो दोनों एक दुसरे से बिलकुल अलग हैं . मंत्र सिर्फ ध्वनी का विज्ञानं हैं . हमारे कान सिर्फ कुछ एकं निश्चित आवर्ती तक ही ध्वनि सुन सकते हे, लेकिन ध्वनि तो हर जगह होती ही हैं . चाहे हम सुन सके या नहीं, ध्वनि से एक विशेष उर्जा का निर्माण होता ही हैं . इस तरह विशेष ध्वनि विशेष उर्जा का निर्माण करती हैं और जब अलग अलग ध्वनियो का निर्माण एक साथ किया जाता हैं वे एक साथ एक अलग ही उर्जा को जन्म देती हे. यही मंत्र विज्ञानं का सही

way, particular sound prepares a particular energy and combining various sounds it gives a set of specific energy. This is the actual concept of Mantra Vigyan. On the other side, Yoga deals with spiritual attainment with the help of body. In Yoga system body is counted as medium only. With particular exercise they generate energy in the body with leads a soul to the spiritual way. Well, in yoga even we have various types.

संकल्पना हे. दूसरी तरफ योग में आध्यात्मिक अनुभूतियो के लिए शरीर का सहारा लिया जाता हैं . योग पद्धति में शरीर को माध्यम मात्र ही गिना जाता हैं . विशेष प्रकार के व्यायाम से आत्मा को एक विशेष उर्जा के द्वारा आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढाया जाता हैं , अलबत्ता योग में भी विविध प्रकार हैं .

When this both science were combined for to invent a new system, it became Mantra Yoga. In this system, energy of the sound generated through specific chanting was combined with various yoga techniques. This made various accomplishments easy to achieve. Again they went deep and started researching more.

जब इन दोनों प्रणालियों को , एक विशेष प्रणाली खोजने के लिए एक साथ जोड़ा गया, तब वह मंत्र योग बना. इस प्रणाली में मंत्र जाप से निर्मित ध्वनि को , योग की विशेष तकनीक से जोड़ा गया. इससे कई सिद्धिया प्राप्त करना आसान हो गया. और इसमे भी आगे शोध कार्य हुआ. इसी दौरान ये तथ्य सामने आया कि कुछ विशेष तरीको से निर्मित ध्वनि की उर्जा, कुण्डलिनी में कोई विशेष चक्र को स्पंदित करती हैं . काल ज्ञान के विषय में, अनाहत चक्र जोकि हृदय पटल के पास स्थित हैं वही काल ज्ञान को समेटे हुए हैं . और उन्होंने खोज की काल ज्ञान के लिए उपयुक्त क्रिया की.

This way, they found that with some methods a vibration could be generated to activate particular chakra of Kundalini. In regards of kaal gyan, it is found that Anahat Chakra situated to side of Heart is the main holder of Kaal. And they innovated special method for Kaal Gyan.

इस प्रकार की पद्धतिया हमेशा ही गोपनीय रखी गयी, क्यूंकि इस प्रकार की प्रणाली को अभ्यास में लेने के लिए गुरु की तरफ से शिष्यों को ये शर्त हुआ करती थी कि वो मूल दो प्रणालियों पूर्ण हो. जैसे की यहाँ

Such exercises and Processes had always remained secret; because, to go through with such process, there was a condition for the disciples to master in both the sciences. Like in this case Mantra and Yoga. Or else if Guru is very pleased with disciple he will provide such process. Such processes are very easy in nature to perform and can be added into day to day life. Or else there are very less boundaries. It makes it very easy for householders. I have seen many yogis to give such process at very last time of their life to the chief disciples or to particular people which had been in very touch of them. One of such process I am sharing with you all.

…………………………………………………….

One should practice Poorak, Khumbhak and rechak of Yoga for some days. Simply to breath-in, Hold and Breath-out, but one should do it as long as they can and with no force at all. In some days it became very natural to do this.

After that one should follow the particular practice.

When Doing poorak Chant beej Mantra "Hreem". At the time of Khumbhak chant " Hraam"

मन्त्र एवं योग. या तो गुरु शिष्य से अत्यंत खुश हैं तो ही वो इस प्रकट की प्रक्रिया दे देते थे. इस प्रकार की प्रक्रियाए बहुत आसान होती हे और रोजबरोज के जीवन में की जा सकती हैं . या फिर इसमें इसमे ज्यादा बाध्यता नहीं हैं . इस लिए ये गृहस्थो के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं . मेरे देखने में आया हे कि ऐसी पद्धतिया गुरु अपने जीवन के आखरी क्षणों में अपने मुख्य शिष्य को देते रहे हैं या फिर कुछ इसे इंसानों को जो की उनके ज्यादा नजदीक रहे हो. में आप लोगो के सामने एक इसी ही प्रक्रिया रख रहा हूँ .

……………………………………

कुछ दिनों तक पूरक कुम्भक रेचक का अभ्यास करे. मतलब की सांस अन्दर खींचना अन्दर रोकना और फिर बाहर निकलना. जितना हो सके उतना लम्बी प्रक्रिया हो मगर कोई बलपूर्वक प्रयास नहीं. कुछ दिनों में ये क्रिया प्राकृतिक हो जाएगी.

इसके बाद नीचे दी गयी क्रिया का अभ्यास प्रारंभ करना चाहिए

पूरक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रीं " का उच्चारण करे .
कुम्भक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रां " का उच्चारण करे .
रेचक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रूं " का उच्चारण करे .

कुछ दिनों तक मन ही मन जाप होना चाहिए. फिर

At the time of Rechak chant "Hroom" In practice first you can chant in Mind, then practicing it for some days, you chant it with mouth. The eyes should be closed and concentration should be at anahat chakra with in. slowly you will start watching various scenes which previously you have not seen. Practicing it make you catch any moment of any tense and you will be able to see anything you desire when Anahat chakra becomes activated.	अभ्यास हो जाने के बाद उच्चारण भी हो ,अभ्यास से यह सहज संभव हो जाएगा. आँखे बंद होनी चाहिए और अनाहत चक्र पर ध्यान करे. कुछ समय बाद आपको कई द्रश्य दिखने लगेंगे जो की आपने पहले कभी नहीं देखे होंगे. इसी का अभ्यास आगे करते रहने अनाहत चक्र जाग्रत होने से आप काल खंड के किसी भी क्षण को पकड़ के देख सकते हैं .

सदगुरुदेव भगवान् ने हमें जैसा निर्देश दिया हैं हम वैसा ही करे , न किसी भी अन्य सन्दर्भ में कहे उनके वाक्यों को अपनी सुविधानुसार परिभाषित करें. गुरु क्या करते हैं उस पर नहीं, बल्कि हम क्या उनके अनुसार कार्य कर रहे हैं ? उस पर ध्यान दे.

what sadgurudev bhagvaan told us ,we have to do that way .we should not define his words,spoken in other context ,use them suits to our desire/selffishness . instead of what guru does, we have to care what we are doing.

Panchanguli - Sadhana

पंचान्गुली साधना

(भविष्य दर्शन की सरल अद्भुत साधना)

Panch aungli or five finger without that life hardship can not be imagined . is it any special deity who rules on that . you want to be a good astrologer, or palmist, and worry how far your prediction will be true, is any sure way, by which name and fame can be achieved, all the questions answer lies on a single answer –Panchanguli sadhana.	पांच उंगली या पंचागुली इनके बिना जीवन की कठिनाइयों को बताया नहीं जा सकता|क्या कोई विशेष देवी हैं जो इन की आधिष्ठार्थी हैं ,इसी तरह कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं कि कैसे अच्छा ज्योतिषी या हस्तारेखाविद बना जा सकता हैं ,आप चिंतित हैं कि कितने आपकी भविष्यवाणी सत्य होंगी . क्या कोई ऐसा तरीका हैं जिससे यश ,नाम भी प्राप्त हो सके | इन सारे प्रश्नों का एक ही उत्तर हैं पंचागुली साधना |
Next question is why we need to do that ,when so many astrological books and institution available today, and people are running from one astrologer to other. but could not get the proper advice, when all the astrologer's prediction is based on this or that books, why some time their prediction fails. All the answer depend upon. The lack of spiritual power.	अगला प्रश्न ये उठता हैं कि हमें इसकी आवश्यकता क्यों हैं ,जबकि आज इतने संस्थान और ज्योतिष पर किताबे उपलब्ध हैं |.और लोग एक ज्योतिषी से दूसरे के पास भागते फिर रहे हैं |सही परामर्श प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं जबकि सारे परामर्श किसी न किसी किताब पर अधिकांशतः आधारित होते हैं ही , फिर क्यों भविष्य वाणी गलत हो जाती हैं |
If any one who studied astrology could easily amazed that our ancient astrologer known as "jyotirvid". They asked for many qualities to be	यदि कोई भी जिसने ज्योतिष का अध्ययन किया होगा तो वह निश्चय कि आश्चर्य चकित हो जाता हैं कि प्राचीन काल में ज्योतिषियों को ज्योतिर्विद कहा जाता था |और उनसे बहुत सारे गुणों/नियमो को

present/followed by a astrologer, but in modern times, very few, can maintain that label or try to follow that .reason may be any .

मानने या पालन करने के लिए कहा जाता था/या अपेक्षा होती थी , कारण चाहे जो भी हो ,आज के इस आधुनिक समय में बहुत कि कम लोग उनको मान या पालन कर सकते हैं, ।

There are many kundli(horoscope) charka about 16 in a horoscope , how many astrologer able to read pred. according to following all 16 chart ,that, if all the 16 chakra are not having any omportance than why they are made, most of the astrologer follows lagna chakra and moon chakra kundali chart , and some also has a ability to read navmaansh chakra.

कुंडली में १६ प्रकार के चक्र होते हैं, आज कितने ज्योतिषी हैं जो इन सब का बारीकी से अध्ययन करके परिणाम दे सके ,यदि इन चक्रों कि उपयोगिता नहीं होती तो ये क्यों बनाये जाते|अधिकांशतः ज्योतिषी जन्म चक्र और चन्द्र चक्र और कुछ विशेष ही नवांश चक्र को समझने कि योग्यता रखते हैं |

There are many sadhana Sadgurudev ji mentioned in the mantra Tantra Vigyan magz.like **karna pishachini**(do not get afraid by name , and do not just go by name, this has a varga , and this sadhana can be completed by rajsic manner too), **madalsa sadhana**, **karna matangi sadhana**, **chaaya purush sadhana** and so many more. Sadgurudev ji also mentioned described Panchaguli sadhana many times and he has written one book names "HASTA REKHA VIGYAN AUR PANCHANGULI SADHANA" still available.

सदगुरुदेव जी ने अनेकों प्रकार की साधनाये इस सन्दर्भ में , मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं पत्रिका में दी , जैसे कर्ण पिशाचिनी साधना (नाम से भय न करे ,क्योंकि इस नाम का एक वर्ग हैं और इसकी राजसिक रूप से भी साधना संपन्न होती हैं) |मदालसा साधना ,कर्ण मातंगी साधना छाया पुरुष साधना इसके अलावा कई ओर भी साधना हैं |सदगुरुदेव जी ने कई बार इस पंचागुली साधना के बारे में बताया हैं |और उनके द्वारा लिखित एक किताब हस्त रेखा विज्ञानं और पंचान्गुली साधना अभी भी प्राप्य हैं |

In the very young age, very interested in palmistry, always reading book of only poojya

बहुत कि कम उम्र से ही मुझे हस्तरेखा विज्ञानं में रूचि थी ओर मैंने सदगुरुदेव जी कि ही किताबे पढ़ी (कारण मैं भी नहीं जानता था) तो यह बहुत ही प्राकर्तिक था कि मुझे इस साधना में रूचि हो ,ओर

Sadgurudev ji (reason I know not).so its natural that I also quite interested in this sadhana, I have got a PANCHANGULI YANTRA from jodhpur gurudham and start chanting the mantra 21 times daily (wearing while colored dhoti) and nothing more ritual is needed, MENTIONED IN MATRA TANTRA VIGYAN MAGZ. in a month or 2 /3 month you would get result. I was not hoping that I could get result so early ,so I included it, in my daily pooja . days passing by so monthA, I could not get any divine exp at all.

मैंने जोधपुर गुरुधाम से यह पंचागुली यन्त्र प्राप्त कर प्रति दिन २१ बार इस मंत्र का जप किया करता था | कोई भी अन्य नियम कि आवश्यकता नहीं थी|पत्रिका में दिया था कि २/३ महीने में परिणाम कि प्राप्ति होगी |मैं इतने कम समय में परिणाम प्राप्ति कि कल्पना नहीं कर रहा था ,इसलिए इस प्रक्रिया को मैंने अपने दैनिक पूजा में ही शामिल कर लिया था|दिन गुजरते गए उसी तरह महीने भी |मुझे किसी भी प्रकार का दिव्य अनुभव नहीं हुआ |

My prediction ability was very good. later I started learning how to read horoscope and started predicting (off course my initial and only client were my friends ,their family and mine relative) here also mine predicting ability shine again. I was able to predict even without asking any details /horoscope chart.

मेरी भविष्य वाणी करने कि क्षमता बहुत ही अच्छी थी ,मैंने ज्योतिष सीखना भी प्रारंभ करदिया था और उस के माध्यम से भविष्यवाणी करना भी ,(निश्चय ही मेरे प्रारंभिक सलाह लेनेवाले लोग मेरे परिवार के मित्रों के परिवार के ही लोग होते थे)मेरी भविष्यवाणी करने कि क्षमता बढती जा रही थी ,मै उस समय कुंडली के बिना भी भविष्यवाणी कर सकता था |

As it should not happened , but happened when I could not any so called divine exp. I carelessly stopped the mantra. years later , again I started reading /revisiting the horoscope science, now I found it, to much difficult and very conflicting theory, every one claiming that they view are right, on application of theory in practical ,if one case that

परन्तु जो होना नहीं चाहिए था वह किया , कि मैंने इतने समय तक जब कोई दिव्य अनुभव नहीं हुआ तो इस साधना को असावधानी पूर्वक बंद कर दिया| कुछ वर्षो बाद मैंने पुनः ज्योतिष को सीखना, विस्तार से प्रारंभ किया ,अब मैंने पाया कि यह ज्योतिष शाश्त्र तो बेहद कठिन बल्कि आपस में विरोधाभाष लिये हुए था |यहाँ हर कोई अपनी बात/तथ्यों को ही सत्य बता रहा हैं |जब इनको प्रायोगिक रूप में परखे तो पाते कि किसीएक केस में तो सही साबित हुए पर दूसरे केसों में नहीं हो

right ,than fails in others cases.

I go through, many great giants books specially Late DR.BV RAMAN books, in that he also emphasized the need to have divine power,(and mentioned one such exp of him.)in his book "my exp in astrology."

Now, I puzzled, why I mine prediction were accurate even when I knew very little in this oceanic field ,and failed miserably, not able to get successful pred. now even when I knew something.

It was the power of GODESS PANCHANGULI MANTRA SADHANA, I was expecting only miracle, did not understand until a stage sadhak reached, divine forces worked silently.The complete sadhana details mentioned in Sadgurudev ji 's book and many exp of sadhak and sadhikas are also in the book. Who do not have much time to go for that , surely go for this simple procedure.If any one can, get panchanguli diksha and sphotikaran kirya from Sadgurudev ji at jodhpur, then result will be remarkable, name and fame both can be easily gain, and success in the palmistry/horoscope field is sure. You can get this mantra from jodhpur office or siddhhram.org site or Sadgurudev ji book hast rekha vigyan and panchanguli sadhana.(this 5/6 line large

पाए|

मैंने बहुत ही आधुनिक उच्च ज्योतिषियों जिनमे डॉ *B V RAMAN* भी हैं उनकी किताबो को पढ़ा |,उन्होंने भी गहरी अंतर क्षमता या दिव्य क्षमता के बारे में स्वीकार किया(उन्होंने इस संदर्भ में अपना एक अनुभव भी दिया ,) जो कि "MY EXPERIENCE IN ASTROLOGY" नाम कि किताब में वर्णित हैं |

अब मैं बेहद अनिर्णय कि अवस्था में था की क्यों ,जबकि मेरा ज्ञान बहुत ही कम था ,लगभग नगण्य जैसा ,तब तो मेरे परिणाम बिलकुल सही साबित होते थे, ओर जब आज देखता हूँ तो क्यों गलत हो जाते हैं |जबकि अब तो कुछ जानता भी हूँ| बास्तव में पहले पंचागुली साधना का ही परिणाम था , मैं केबल चमत्कार ही अपेक्षा कर रहा था ,नहीं समझ पाया इस बात को कि जब तक साधक का स्तर एक अपेक्षित स्तर तक नहीं आ जाता तब तक ये दिव्य शक्तियां चुप चाप ,छुपे रूप या प्रछन्न रूप में ही काम करती हैं|बहुत सारे अनुभव साधक ओर साधिकाओ के , सदगुरुदेव जी की इस किताब में दिए हुए हैं पूर्ण साधना विधान भी दिया हैं ओर जिन्हें उतना समय न हो वे इस सरल प्रक्रिया को कर सकते हैं . यदि कोई साधक या साधिका पूज्य सदगुरुदेव जी से जोधपुर जाकर पंचागुली साधना दीक्षा ओर स्फोटीकरण क्रिया भी प्राप्त कर ले ,तब निश्चय भी परिणाम आश्चर्य चकित प्राप्त होंगे साथ ही साथ नाम ओर यश की भी प्राप्ति संभव हैं |आप इस बृहद पंचान्गुली मंत्र को (५/६ लाइन के इस मंत्र को स्थानाभाव के कारण नहीं दे रहा हूँ) सदगुरुदेव जी की कृति " हस्त रेखा विज्ञानं और पंचान्गुली साधना " में से या मन्त्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं पत्रिका या जोधपुर कार्यालय से पंचान्गुली यन्त्र प्राप्त करते समय या www .siddhrshram .org साईट में से भी देख /प्राप्त कर

mantra , due to increase in size ,not mentioning here,) chanted/recited 21 times daily, after taking bath and wearing a while colored dhoti.	सकते हैं , जिसका मात्र २१ बार जप सफेद धोती धारण कर नहा कर करके प्रतिदिन किया जा सकता हैं ओर व्यक्ति कि श्रद्धा भावना के अनुसार परिणाम प्राप्त होते ही हैं I

श्री माँ शारदा के जीवन का एक गुरुत्व युक्त , ममतामय घटना क्रम

Due to misforchune /bad luck one shishy was leaving sangh , onthe time of his leaving shree maa sharda weeping .seeingthis the shishy also weep. after some time mother ,clear her tears with the aanchal and ask him to wash his face and very blessfully ask him "do not forget me, though i know that you will not forget me ,but still i am asking to you " shishy also asked mother " will you forget me?.

shree maa replied " how can a mother forget his child , always remember that i am with you , not to fear " and she was standing onthe door till that shish reach out of her material vision.

(moral of the great incident that how can sadgurudev forget us, it is us who always think on seeing this or that , he forget us ..but he never ..)

दुर्भाग्य से एक शिष्य ,संघ छोड़ कर जा रहा था .उसके जाने के समय श्री माँ शारदा स्वयं भी रोने लगी साथ ही साथ वह शिष्य भी रोने लगा कुछ देर बाद आचल से मुह पूछ कर उसे भी मुह धोने कर आने के लिए कहा .फिर स्नेह पूर्वक कहा " मुझे न भूलना , मैं जानती हूँ कि तुम भूलोगे नहीं पर फिर भी कह रही हूँ " .शिष्य ने पूछा "और आप तो नहीं भूलोगी .." श्री माँ ने कहा " क्या माँ कभी बच्चे को भूल सकती हैं ?जानना कि मैं हर घडी तुम्हारे साथ ही हूँ कोई डर नहीं " शिष्य को जाते देख कर वे तब तक खड़ी रही जब तक कि वह आँखों से ओझल नहीं हो गया .(इस घटना से यही पता चलता हैं कि सदगुरुदेव कभी भी अपने शिष्यों को कैसे भूल सकते हैं , हाँ ये जरुर हैं कि हम ही कभी इसे या उसे देख कर कह उठते हैं ही वे हमें भूल गए , जबकि ऐसा तो कभी संभव ही नहीं हैं .)

Sammohan se Kaal Gyan

(काल ज्ञान की अद्भुत सरल प्रक्रिया - सम्मोहन विज्ञानं)

Sammohan or hypnotism is the word nowadays every body nows, this is also a complete branch of our ancient culture . though it may possible that in modern era this branches can be highly practiced in western world and in our country it is once again gaining ground. now a day not only medical field but in military /war zone , solving personal problem , to make employee more obedient to become popular means almost every field this is being used. Now you all are well informed that through hypnotism a person can be easily taken back to his past .and the cause of various illness known and unknown can be easily know and also	सम्मोहन या हिप्नोटिज्म आज का एकजानाप हचाना शब्द हैं, हर कोई इससे परिचित हैं ही ,क्या आप जानते हैं कि ये भी हमारे प्राचीन शास्त्रों के मध्य में उपलब्ध ज्ञान की एक अद्भुत शाखा हैं जिसे आजक ल पाश्चात्य जगत मेंज्यादा उपयोग किया जाता हैं अब हमारे देश में भी इसका प्रच लन धीरे धीरे बढ़ रहा हैंन केबल चिकित्सा क्षेत्र बल्कि सेना में भी व्यतिगत समस्या को सुलझाने में ,कर्मचारियों को और अधिक अनुकूल बनाने में इसका अधिक प्रयोग किया जा रहाहैं अब आपजानते हैं कि इसके माध्यम से आप किसी भी व्यक्ति को उनके भूतकाल में आसानी से ले जा सकते हैंऔर बिभि न्न रोगों (ज्ञात या अज्ञात)के कारण को जान सकतेहैंऔर यह विज्ञानं आपके ब हुत सारी मानसिक ,काल्पनिक रोगों के उ पचार को भी आपके सामने रखता हैं . परन्तु यहाँ विषय हैं क्या इसके माध्यम से काल ज्ञान संभव हो सकता हैं

this science very helpful to provide remedy of various mental illness . but here our topic is on the kaal gyan . how authentic is to bring back to past . naturally you can check up with the person and check the event date and time and confirm the event . if theses all proved very correct than same thing can be easily tried for past lives where the same acid test applied , since mind is very powerful medium and he can play with us through such a way we can not understand the things and its play. If the event provided or narrated by person through in hypnotic sleep condition proved to write. Than only authenticity of the person can be well understand .

? , क्यों नहीं , ज्ञान कि हर शाखा अपने आप में पूर्ण होती हैं आवश्यकता इसमें उसके प्रामाणिक ज्ञान और उसमें सिद्ध हस्त व्यक्तियों कि ही हैं. क्या यह विज्ञानं इतना प्रामाणिक हैं किसी भी व्यक्ति का भूतकाल में जाना जा सकता हैं ? तो इसका यही उतर हैं कि,व्यक्ति द्वारा बताये गए घटनाओं को दिन औरसमय द्वारा /या वहां जा कर खुद निश्चय कर सकते हैं यदि वे बताई गए सारे तथ्य ओर जानकारी सही उतरती हैं तो यह विज्ञानंसहीहैंतब आप पिछले जीवन के बारे मेंभी यही प्रक्रिया पालन करें , सिर्फ " बाबा बाक्य प्रमाणं " न माने .क्योंकि ये मन , वह बहुत ही शक्तिशाली माध्यम हैंवह कब हमारे साथ ही खेल करने लगे ये बताना पानां बहुतही कठिन हैंअब जब सभी घटनाये सही निकले तब आप मान सकते हैं कि जो बताया गया था वह सत्य कि कसौटी पर खरा निकलातभी व्यक्ति/ओरइस विज्ञानंकि प्रमाणिकता सिद्ध हो सकेगी .

But kaal is the unbroken unending link , past present and future is just the name given by us , he knew nothing. Sadgurudev ji clearly mentioned that until outer mind and inner mind can be unite together till than any concrete gain is not possible.

ये काल ज्ञान या काल तो एक अंतहीन श्रृंखला हैं जिसका कोई ओर छोर नहीं हैं इसे भूत काल वर्तमान काल , भविष्य काल के तीन भागों में तो हमने बाटा हैं इसे कौन बिभाजित कर सका हैं? .सदगुरुदेव जी नेकहा था कि जब तक बाह्य मन और आतंरिक मन एक नही होंगे तब तक इस विज्ञानं में भविष्य सम्बंधित कोई ठोस उपलब्धियां प्राप्त नहीं हो सकती हैं .

But the question is how that can be possible, shakti chakra is the first

पर अब भी प्रश्न ये सामने हैं

answer, if person try to have Tratak on that at least 32 minutes with taking every possible precaution mentioned in Sadgurudev ji book PRACTICAL HYPNOTISM and quality of Tratak is maintained . than he is able to have vision either past or present future. And than he can move forward for next step, Tratak on the mirror on yourself image also proved to be very helpful. Same way Sadgurudev motioned some step like moon Tratak , agni Tratak, and finally sun Tratak . sun Tratak can be very harmful until practiced very competent and expert but its result can be very encouraging . off course some very important mantra if practiced along with the Tratak various step than what can not be achieved .

why mantra jap is essential think for a minute have you not seen various photo of sun namskar in that various mantra also mentioned who has time to follow the same way here also some mantra jap is essential for that your Gurudev can be best guide. Use the mantra and various Diksha are related to this field if taken with Sadgurudev ji bless, your success in the path is sure only your little effort is needed.

कि कैसे इसे प्राप्त किया जाये , पहला उत्तर तो शक्ति चक्र हैं , इसके माध्यम से ये संभव हैं .यदि कोई व्यक्ति इसके ऊपर 32 मिनिट का त्राटक जैसा कि सदगुरुदेव जी ने अपनी किताब "प्रक्टिकल हिप्नोटिज्म " में दिया हैं उसके पालन करते हुए करे और इस त्राटक कि गुणवत्ता बनायीं बनाये जा सके तो भूत काल या भविष्य काल को जानना कोई कठिन नहीं हैं इसके बाद व्यक्ति दर्पण त्राटक को कर सकते हैं जिसमें आप अपने प्रतिबिम्ब के ऊपर भी त्राटक को करेंगे .यहाँ पर भी 32 मिनिट की लिमिट कम से कम करनी ही होगी .ये बहुत ही उत्साहवर्धक रहा हैं सदगुरुदेव जी ने इसके आगे चन्द्र त्राटक तारा त्राटक अग्नि त्राटक और फिर सूर्य त्राटक के बारे में विस्तार से लिखा हैं . सूर्य त्राटक बहुत नुकसान दायक हो सकता हैं यदि इसे किसी अच्छे जानकार या एक्सपर्ट कि सलाह बिना न किया जा रहा हो ,इस तथ्य का ध्यान रखे .पर सफलता पूर्वक करने पर इसके परिणाम बेहद उत्साहवर्धक रहे हैं. यदि इन प्रक्रिया के साथहीसाथ कुछ विशिस्ट मन्त्रों का

जप भी किया जाये तो सफलता मानो हाथ बंधे ही खड़ी रहती हैं . पर इसकी क्या आवश्यकता हैं ?आपने सूर्य नमस्कार के चित्र तो देखें ही होंगे

Slowly and slowly person knew that how can he focus on the future of not only his but anybody else. hypnotism purify you, all your so called bad thought can be easily eliminated and once your inner mind becomes still (free from all the disturbances) so once mind is calm than any image of past and future can be easily seen. That is not single day show you have to work very seriously and very discliepine your life only than the fruits of hypnotism can be achieved.

while practiced some of the precaution/ essential must be practiced ,

1. You should not wear very tight clothes ,
2. place will be neat and clean , and
3. open air fresh and natural will be available ,
4. your eye sight should be perfectly normal and if having any problem than plz do not practice this , this could be very harmful to eye.
5. Place will be naturally lighted .
6. if possible your stomach should

जिसमें अनेक मंत्र भी बताये गए हैं अब किसे टाइम हैं उन्हें करने का , तो यदि इन प्रक्रिया को गुरुदेव से निर्देशन प्राप्त करके करे तथा साथ ही साथ दीक्षा जो भी वे निर्देशित करे उसे ले कर इस विज्ञानं में पारंगतता की कोशिश करे तो सफलता तो मानो वरमाला लिए ही कड़ी होगी बस आपके थोड़े से प्रयास कि ही अब जरुरत हैं . धीरे धीरे व्यक्ति ये स्वयं जान जाता हैं की उसे कैसे भविष्य के किस भाग पर अपना मन या ध्यान केन्द्रित करना हैं जिससे न केबल वह अपना बल्कि किसी का भी भविष्य जान सकता हैं . सम्मोहन आपको भी शुद्धता प्रदान कर देता हैं कर आपके तथाकथित बुरे विचारों को भी दूर कर देता हैं और जब आपका अंतर मन शांतहो जायेगा (सभी प्रकार के विक्षोभो से हटकर पूर्ण शांत)तब किसी के भी मन का प्रतिबिम्ब या भविष्य का भी प्रतिबिम्ब बन जाना स्वाभाविक ही हैं

पर ये सब कोई एक दिन का चमत्कार नहीं हैं आपको अधिक गंभीरता से प्रयत्न करने पड़ेंगे ओर अपने जीवन को ज्यादा अनुशाषित करना पड़ेगा तब ही आप इस ज्ञान का प्रतिफल पा पाएंगे जब आप ये प्रक्रिया प्रारंभ करे तब ये सावधानी /

be empty,

7. Morning time should be for practicing the Tratak is good. And

8. Very importantly the practice can be start with little time and slowly the time duration should be increased.

9. Informed your family member that you should not be disturbed suddenly or any heavy noise has to be created that could be very harmful And

10. Finally shavasan at the end of practice will be the best.

Final level Tratak like Agni and sun can only be taken in hand when your Gurudev allowed for that , it is notthe things that until you reached that level only than uou can be success even in first or second leval (means shakti chakra and mirrir Tratak , if quality is best than uour goal is reached no need

आवश्यक बाते ध्यान में रखें .

1. आपने अधिक कसे हुए वस्त्र धारण नहीं किये हुए हो ,
2. वह स्थान साफ ओर स्वक्छ हो .
3. प्राकर्तिक और ताजा हवा वहां उपलब्ध हो .
4. आपको नेत्रों मैं किसी भी प्रकार का कोई रोग नहो अन्यथा आपको ये प्रक्रिया जय नुक्सान दे सकती हैं.
5. प्राकर्तिक प्रकाश की व्यवस्था हो . न ज्यादा तेज़ न कम .
6. आप का पेट खालीहो तो अच्छा हैं
7. प्रातः काल के समय इसका अभ्यास ज्यादा अच्छा होता हैं .
8. प्रारंभ में कमसमयके लिए अभ्यास करे फिर धीरे धीरे इसका समय बढ़ाये .
9. अपने परिवार के व्यक्तियों को पहले सेहीसूचना दे दे ,जिससे की अचानक कोई तेज आवाज आदि व्यवधान न आये ये नुक्सान दायक हो सकते हैं .
10. अंत में शवासन का अभ्यास जरुर ही करे .

अंत स्तर के अग्नि ओर सूर्य त्राटक तभी हाथ में ले जब गुरुदेव ने इसके लिए आपको अनुमति दे दी हो . ये आवश्यक नहीं हैं की यदि आपइसस्तर तक नहीं आ पाए हैंतो उपलब्धिया न मिलेंगी,

to go for further step , I personally meet a sadhak who only practiced til second level and he was successfully able to bear the very fruits of that level) In my view pleas once carefully study the Sadgurudev ji book and take guidance from Gurudev Trimurti at jodhpur and than success will be yours.....	में एक ऐसे साधक से मिला था जो मात्र शक्ति चक्र और दर्पण त्राटक के माध्यम से ही सफलता प्राप्त कर चुके थे मेरे अनुसार तो आपको पहले सदगुरुदेव जी की किताब इस हेतु अच्छी तरह से पढना चाहिए फिर गुरुदेव जी से जोधपुर में उचित मार्गदर्शन प्रा कर के आगे बढे , सफलता आपके सामने हो गी

When mahatma vijay krishndev was young and went to a saint for asking some direction and told him that though he was studying and giving pravchan on brahma and shastra , but still why his mental peace was not gained , how could he achieve that. On asking by the saint he replied that he still not had any guru nor he had any faith on guru vaad . the saint replied with smile that was the reason , what would happen/achieve even if he not believe in guru? even he(mahatma vijay khishan dev ji) well versed in shashtra than why spoke that way .avatar like ram and krishan too had guru .you people have made so good home but forget to made foundation. (later a very high accomplished yogi gave diksha to vijay krishan dev ji and later shri vijay krishan dev ji became a highly accomplished yogi and guru.)

जब महात्मा विजय कृष्ण देव युवावस्था में थे तो वे किसी अन्य संत से मार्ग दर्शन के लिए गए और उन्हें अपनी अवस्था के बारे में बताया था कि ब्रह्म ज्ञान ओर शास्त्रों कि आलोचना तो मैं बहुत करता हूँ पर मेरे मन में क्यों नहीं शांति हो पा रही हैं किस तरह से मैं ये प्राप्त करूँ .उन संत के पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि अभी तक गुरु धारण तो नहीं किया हैं ओर मैं गुरु मानता भी नहीं . वे संत मुस्कुराये ओर कहा इसलिए तो सब गड़बड़ हो गया ,तुम्हारे नहीं मानने से क्या होगा ? गुरु करण आवश्यक हैं तुम शास्त्रग्य हो कर भी कैसी बाते बोलते हो .राम ओर कृष्ण जैसे अवतारों ने भी गुरु धारण किया था , तुमने मकान तो बहुत अच्छा बनाया पर नीव नहीं होने से सब गड़बड़ हो गया . (आगे स्वयं उन्हें एक अति उच्चावस्था प्राप्त सदगुरुदेव से दीक्षा प्राप्त हुए ओर वे स्वयं एक उच्च कोटि के योगी , ओर गुरु बने)

Soot Rahshyam Part -2

सूत रहश्यम -2

(पारद विज्ञानं तंत्र के अप्रकाशित , अप्राप्य गोपनीय ग्रन्थ की श्रंखला का अगला भाग)

While describing surya vigyan told that where there is nothing ,that is shuonya .and existence of everything in that shuony, is known as purntv or completeness. Surya or sun represents purntv i.e. completeness. and getting purntv from shuonya is possible through sun , there are three form of sun(surya).

Ghranim

Surya

Aaditya

The whole sun science is depend on those upper mentioned form, this fact we all knew that or read that through sun science creation of everything/making is possible .but..what will achieve by this conversion or making of substance ??? can we have ability to conserve this science,? can we have ability to conserve and digest/absorbs in heart the

सूर्य विज्ञानं को समझाते हुए बताया की –जहाँ कुछ नहीं है वह शुन्य है और इसी शुन्य में सभी कुछ की उपस्तिथि पूर्णत्व कहलाती है . सूर्य का पर्याय पूर्णत्व भी है , शुन्य से पूर्णत्व की प्राप्ति सूर्य साधना से ही संभव हो सकती है , सूर्य के तीन ही रूप हैं :-

घृणि

सूर्य

आदित्य

इन्ही तीनों रूप पर ही सूर्य सिद्धांत टिका हुआ है. ये तो हम सभी जानते हैं या हमने पढ़ा ही होगा की सूर्य सिद्धांत के माध्यम से पदार्थों का सृजन संभव है . पर..... क्या होगा पदार्थों का सृजन या रूपांतरण करने से ??? क्या हम इस ज्ञान को संरक्षित कर सकते हैं , क्या हम इन दिव्य ज्ञान परंपरा को आत्मसात कर रोक पाएंगे ???

इस प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए चेतना

parampra (orders) theses divine sciences.

To have this type of divine gyan ,one must have /raise the level of his chetna (mental attentiveness) up to a divine standard and same level of chetna , one has to pass to coming generation. We have to understand the sanskars (a special ways by which purification body, mind and soul is possible) through which not only our coming generation but our self ,can too become sanskarised and become purn chaitnya . all the 16 sanksar ,have special meaning in human life. They are a not any general karam kand (simple procedure). But carries a special meaning and effectiveness . through theses a person can equipped with / have with bal, buddhi and veerta (courage ,wisdom, and manliness)and brilliance .

A complete man /person can only born when his ,the seed time/tithi and time is finalize after taking care planetary bal .completing the special mantra's jap as instructed by a competent guru for the instructed period and then husband and wife physically unite ,than outcome of that i.e. seed , is fully be with Garbhadhan

का एक दिव्य स्तर चाहिए होता है. और हमें इस स्तर की चेतना ही अपनी आने वाली पीढ़ियों को देनी होगी . हमें उन संस्कारो को समझना होगा जिनके द्वारा अपने वंशजों और स्वयं को भी हम पूर्ण चैतन्य हो सकते हैं. जिन १६ संस्कारों का मानव जीवन में उल्लेख होता है , वे कोई सामान्य कर्मकांड नहीं है अपितु उनका विशेष महत्त्व है , इन संस्कारों से ही तो तेजस्विता, बल, बुद्धि और वीरता से मनुष्य युक्त हो जाता है.

पूर्ण मनुष्य की उत्पत्ति तभी हो सकती है जब ग्रहों का उचित बलाबल देखकर बीजारोपण की तिथि और समय तय किया जाये, गुरु से उन विशेष मन्त्रों को प्राप्त कर उसका नियत समय तक विधि पूर्वक जप किया जाये और तत्पश्चात सहवास करने पर जो बीजारोपण होता है वो गर्भाधान संस्कार से युक्त होता है या ये कह लो की बीजारोपण के साथ ही गर्भाधान संस्कार प्रारंभ हो जाता है .तब जो संतान होती है वो पूर्ण ही होती है.

इसी प्रकार सूर्य सिद्धांत के माध्यम से भी बिना गर्भ के संतान उत्पन्न की जा सकती है , उसका सृजन किया जा सकता है , जरुरत है प्रामाणिक क्रिया की. और ये कोई नवीन बात नहीं हो रही है अपितु पौराणिक काल से ऐसा होता आया है. यदि उचित मंत्र हो , सूर्य सिद्धांत का ज्ञान हो तो

Sanskar. Or you can say through beejaropan (seeding) garbhadhan sanksr starts, then whatever child male or female born become complete i.e. purn.

Through the same way without any garbha (womb), child can be born or created. The need is to have authentic gyan and process. Theses are not any new facts but it happening from very puranik age, if having appropriate mantra and knowledge of surya vigyan correct procedure than it is possible.

If we try to understand the various symbol like there is the story comes in shiv puran that lord ganpati is created by ma parvati through her ubtan only. Theses are not any imaginary things. Through this process if any one want to create any child than reverse process (vilom prakriya) can be done on ubtan of human body, through each part of the ubtan , same portion of the new created one ,has to be made. This creation has to be done through vilom gati means first foot has to be created than as.. to proceed upward means slowly and slowly toward head. Than the sun (sury) mantra comparise of 21 rays has to be used to inducing the pran to the

ऐसा संभव है .

यदि हम प्रतीकों को समझे तो शिव पुराण में विवरण आता है की भगवान गणपति की उत्पत्ति माँ पार्वती ने अपने उबटन से किया था . ये कोई कल्पना मात्र नहीं है , पुंसवन संस्कार का प्रयोग करके ही ऐसा संभव हो पाता है . इस पद्धति के द्वारा जब बिना गर्भ के सृजन करना हो तो शरीर की उबटन से विलोम गति से निर्माण कार्य किया जाता है. प्रत्येक भाग के उबटन से सृजित का वही भाग बनाया जाता है , निर्माण विलोम गति से होता है मतलब पहले पैरों का निर्माण होगा इसी क्रम से धीरे धीरे शीश तक पंहुचा जाता है.

तत्पश्चात सूर्य मन्त्रों में समाहित २१ किरणों के द्वारा पूर्ण चेतना को प्रदान कर प्राण दिए जाते हैं. तभी उत्पन्न जीव पूर्ण होता है, सामान्य मानवों के जैसे आभास न होकर सार्थक व्यक्तित्व लिए होता है. और ये सभी ज्ञानसे परिपूर्ण होते हैं आप जैसे ही ज्ञान से इन्हें युक्त करना चाहोगे ये उस ज्ञान से परिपूर्ण ही होते हैं. मेरी बात को आप अन्यथा न ले क्योंकि आधुनिक विज्ञानं भी किसी प्राणी के डी.एन.ए. से ठीक उन्ही गुणों से युक्त वैसा ही प्राणी बनाने की तकनीक प्रस्तुत कर चुके हैं , और ये डी.एन.ए. शरीर के मैल से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है .यहाँ मैं वैज्ञानिक विस्तार पर नहीं जाना चाह रहा हूँ.

body. Only than created being is called complete. and carrying the real personality not any shadow of that. Do not take mine thought as other wise, through modern science also demonstrate the process to create the same living being through DNA. and this DNA can be easily gained/found through ubtan (mail) of human body.

और ऐसा भी नहीं है की गर्भस्थ शिशु को या हमें पुंसवन संस्कार की उपलब्धियां प्राप्त नहीं हो सकती. जीवन के कैसे भी अभावों को इस क्रिया द्वारा दूर किया जा सकता है . और यदि ये मन्त्र जो की अत्यधिक गोपनीय है , मात्र इनका मूल ध्वनि में श्रवण किया जाये तो पूर्णता प्राप्त करने से हमें कोई नहीं रोक सकता .

And also this is not the situation that unborn child or us can not be benefitted by the PUNSWAN SANSKAR. And any type of misery of life can be removed easily through that .this mantra that is too much hidden and secretive if we only listen that ,so that result can be easily gained and completeness can be achieved. If listen in their original voice and pronunciation than completeness is at our door. We are still fortunate that this mantra still available to us as in its original voice and pronunciation. That too in Poojya Sadgurudev ji divine ,time less voice . **मैं गर्भस्थ शिशु को चेतना देता हूँ**"" (I am giving the chetana to unborn child (in womb)) this audio cassettes carries the mantra in its original form. Those who want to have

और हम भाग्यशाली हैं की आज भी ये मंत्र हमें ब्रह्मांडीय मूल ध्वनि में प्राप्य हैं वो भी सदगुरुदेव की कालान्जयी वाणी में. "**मैं गर्भस्थ शिशु को चेतना देता हूँ**" नामक कैसेट में वो दुर्लभ मन्त्र मूल ध्वनि में ही उपस्थित है. जिसे सौंदर्य चाहिए उसे सौंदर्य को प्रदान करने में ,जो तंत्र में प्रवीण होना चाहता है उसे तंत्र प्रावीण्य प्रदान करने में, जो आर्थिक उपलब्धि चाहता है उसे मनोवांछित उपलब्धि देने में ये मंत्र समर्थ हैं.

जरुरत है इसे श्रुति करने की. मैंने जो कुछ लिखा है वो कुछ भी नहीं हैं उस संस्कार को समझाने में. जिसे की कही अधिक सरलता से और विस्तार से सदगुरुदेव ने समझाया है , यहाँ विषय को विस्तार देने की जरुरत नहीं थी,इसलिए मैंने यहाँ वो विस्तार नहीं किया है , सूत रहस्यम सूर्य विज्ञानं, तंत्र विज्ञानं और पारद विज्ञानं का योग

beauty for that it works, those who want to be expert in tantra for that too, like that in financial field too. The need to listen it. What i have written here, just stand nowhere ,while understanding Sanskar as Sadgurudev ji define in that. here there is no need to elaborate that topic that s why I did not. soota rahshyam is the complete combination of surya vigyan, tantra vigyan and parad vigyan. Since this Sanskar is realted to kriyatmak aspect of sun science that's why I write it here just for having little glimpse . In next issue the topic of the article of this series is based on how to get ever youthfulness through surya mantra.	विधान है . और ये संस्कार क्यूंकि सूर्य सिद्धांत की क्रियात्मक पद्धति से ही सम्बंधित है इसलिए मात्र उसका दिग्दर्शन करने के लिए ही ये लेख इस बार संक्षेप में यहाँ दिया गया है . अगले अंक का लेख सूर्यमन्त्र के द्वारा चिरयौवन प्राप्त करने से सम्बंधित रहेगा.

Swarn Rahshyam Part -2

स्वर्ण रहस्यम-2

कालज्ञान और औषधियों से रस सिद्ध दर्पण निर्माण

To achieve siddhita in ras karam (parad tantra science) , the type of Aaoshidhi (herbs) used known as siddhoshidhi ,divyoshidhi and mahaoshiddhi . punanrnava ,sahdevi, tarmprabha , mahabala, kakjangha , dhatura , ravi, sarpunkha ,matsyakshi,khadinjari, indrayan,shinhika are the important herbs that provide/gives his abhisht /goal/ aim. only criteria is need that sadhak will be well informed about their inherit qualities.

Its very important that while attempting metal transmutation that keep in mind that the herbs used in that are belongs to the donar or accepter varga /section. Here we need to understand the proper meaning of that words. Accepter herbs are those who accept only a very small part of any metal's metallic element. And donor are those who provide

रस कर्म में सिद्धि पाने के मार्ग में जिन औषधियों का आश्रय लिया जाता है उन्हें सिद्धौष्धियों,दिव्यौषधि तथा महौष्धियों में विभक्त किया गया है . पुनर्नवा, सहदेवी, ताम्रप्रभा , महाबला,काकजन्घा , धर्तुर,रवि,सर्पोंखा, मतस्यक्षी,खंड्जिरी, इन्द्रायण, सिंहिका आदि प्रभुतिकी वनस्पतियां हैं जो रस शास्त्र के साधक को उसका अभीष्ट प्रदान कर देती हैं, शर्त मात्र यही है की साधक को उसके गुण धर्मों का भली भांति ज्ञान हो.

धातु परिवर्तन करते समय इस बात का ध्यान रखना अत्यधिक अनिवार्य है की हम जिस वनस्पति का प्रयोग रस कर्म के लिए कर रहे हैं , वो ग्राहक है या दात्री. यहाँ इन दोनों शब्दों के उचित अर्थ को समझना आवश्यक है. ग्राहक वनस्पतियां वो कहलाती हैं जो किसी भी धातु के धात्विक अंश को मात्र ग्रहण करती हैं. दात्री वो कहलाती हैं जो भूमि में प्राप्त धात्विक अंश को किसी अन्य धातु या पारद में प्रदान कर देती है . परन्तु कुछ वनस्पतियां ऐसी भी होती हैं जो की किसी काल विशेष में ग्राहक का गुण रखती है और किसी

metal's metallic portion to other metal or in mercury. And some of the herbs has the quality of accepter and donor both on the time based means on some part of the day /month /year they behaves as the donor and other time like accepter. for example one such a herbs is sarpunkha and we are using it for silver making purpose. if we do khral with her juice with silver or kharal with silver kamdheny with that and after 4/5 hours we set aside silver for one side and the remaining juice is again kharal with mercury and use for mardan Sanskar, and after tighten it, as per sharab samput and heat up as appropriate than the mercury present in that samput get into contact with herbs ansh and behave like kshetra and accept silver seed present in that juice .and in the out come ,he left its water ansh and became solid silver. And the same process is done with dhatura plants juice for making gold here only the difference is that juice of dhatura is, khral with (mardan) with swarna kamdhenu only than process happened.

कालविशेष में दात्री के गुणों से युक्त हो जाती हैं. मान लो की तीव्र प्रभावों से युक्त एक वनस्पति है सर्पोंखा जिसका प्रयोग रजत निर्माण के लिए किया जाता है तो यदि हम उसे प्राप्त करके उसके स्वरस में रजत चूर्ण का मर्दन करते हैं या रजत के काम धेनु का मर्दन करते हैं और ४-५ घंटों के बाद उस रजत में से रस को प्रथक करके ठीक उसी स्वरस में पारद का मर्दन या संस्कार करते हैं और शराव सम्पुट करके जब हम उस सम्पुट को वांछित अग्नि देते हैं तो उस सम्पुट में उपस्थित पारद का उस वनस्पति से संपर्क हो जाते के कारण वो पारद क्षेत्र धर्म का निर्वाह कर रजत बीज का चरण कर लेता है और स्वयं का जलीयांश त्याग कर स्वयं रजत में परिवर्तित हो जाता है , ठीक यही क्रिया वो धतूरे के साथ स्वर्ण में परिवर्तित होने के लिए करता है. अंतर यहाँ सिर्फ इतना ही होता है की धतूरे के स्वरस का मर्दन स्वर्ण कामधेनु के साथ किया जाता है तभी ये प्रक्रिया होती है.

परन्तु एक महत्वपूर्ण तथ्य भी मैं आपको बता देता हूँ की वनस्पतियों के ये गुण ॠतु अनुसार कम या ज्यादा होते जाते हैं. मुझे स्वामी प्रज्ञानंद जी जब ये प्रक्रिया समझा रहे थे तो उन्होंने अलग अलग ॠतु में ठीक उसी पौधे के रस से ये क्रिया करके दिखाई परन्तु प्रत्येक बार पारद में क्षेत्र रूप में जो बीज चारण हुआ था उसके परिणाम स्वरुप पारद उससे १०० गुना ही रूपांतरित हो पाया. तब मैंने उनसे निराशाजनक स्वर में पूछा की तब तो शत प्रतिशत परिणाम पाने के लिए अनुकूल ॠतु का इंतजार करना होगा?

And one more important fact I will describe here that theses quality of herbs increases and decreases as per the season. when **swami pragyanand ji** describing this process he did the same process in different, different season with the same plant's juice and the seed accepted by the mercury various differently and in result only 100 times mercury get transmutation , than sadly I asked him than I have to wait till the appointee season comes.

He answered no. in every 24 hours theses all the season comes one by one that means in time of summer season definitely summer will be prominent but winter and rainy season also come one by one. Than we can use the herbs for to get desired result as per according to their season and our need. Its very important facts that one ras shashtri must/ should know that when any herbs is have their full effect only than with the use of proper mantra herbs juice should be taken out. These herbs has their own section like rakt varga (red color based secation), swaet varg (white color), yellow and blue section like that. Theses herbs works with the mercury give their respective color means

तब उन्होंने उत्तर दिया की नहीं २४ घंटों में भी अलग अलग समय ग्रीष्म,शरद,शिशिर, बसंत आदि ऋतुएं प्रकट होती हैं और प्रत्येक मौसम में सभी ऋतुएँ आती हैं. मतलब ग्रीष्म ऋतु के २४ घंटो में ग्रीष्म तो आएगी ही परन्तु बसंत और शरद आदि ऋतुयें भी आएँगी ही. तब उस वनस्पति का प्रयोग उनके गुणों के अनुसार अल्प या अधिक परिणाम पाने के लिए किया जा सकता है. एक रस शास्त्री को ये जानना भी आवश्यक होता है की वनस्पतियों अपने पूर्ण प्रभाव को कब देती हैं. तभी उचित मन्त्रों के द्वारा उनका आवाहन करके उनके अंग विशेष को प्राप्त कर उनसे स्वरस निकालना चाहिए. वनस्पतियों का अपना अपना वर्ण वर्ग होता है , रक्त वर्ग, श्वेत वर्ग,पीत वर्ग , नील वर्ग आदि आदि. ये वनस्पतिया पारद से क्रिया कर उसे रग प्रदान करती हैं अर्थात रंजन कर अपना वर्ण प्रदान कर देती हैं . और यही राग गुण पारद तब धातुओं या शरीर को प्रदान करता है जब उसका क्रामण उन पर किया गया हो.

यदि विशिष्ट क्रम और अनुपात से इन औषधियों का योग कराया जाये तो ये विलक्षण प्रभाव दिखाने में समर्थ होती हैं . मुझे भली भांति याद है की जब मैंने पहली बार स्वर्ण तन्त्रं पढ़ी थी तो उस ग्रन्थ को पढ़ कर मैं सदगुरुदेव के पास गया और मैंने उनसे प्रश्न किया की सदगुरुदेव क्या कोई ऐसी पद्धति है जिससे उन रस सिद्धों का आवाहन किया जा सके जो की इस ग्रन्थ में वर्णित हैं, क्यूंकि जैसी

ranjan kriya happened, and the same color or rang mercury or parad provide to other mental or body if kraman kriya is done on that .	पारद गुटिका आपने बताई है, वो बनाना कम से कम मेरे लिए अभी तो संभव नहीं है , तब क्या कोई उपाय नहीं है ,जिससे मैं उन्हें आवाहित कर सकू??
If through a specific way and specific ratio theses herbs are mix together than un imaginable effect can be seen. I still remember that while I first read the SWARNATANTRA and after reading that I went to Sadgurudev ji and told him that if there are any paddhati through that I can also aawahan to ras siddh mentioned in that books , but incurrent it s very difficult me to make such a gutika as mentioned in the books. Are their not any process by which I can aawahan to them.	सदगुरुदेव ने कहा की है क्यूँ नहीं , पर बात रस सिद्धों और साधिकाओं की है तो इसके लिए माध्यम रूप में पारद को लेना ही पड़ेगा और ये पारद ६ गुना गंधक जारण से युक्त हो(ये संस्कार साधक स्वयं ही करे तभी ये क्रिया हो पाती है)फिर इस पारद का संयोग कुछ वनस्पतियों से करके उसके द्वारा एक विशिष्ट पद्धति से दर्पण बनाया जाये तो इस प्रकार के दर्पण के द्वारा रस सिद्धों का आवाहन किया जा सकता है और उनसे अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी प्राप्त किया जा सकता है .
Sadgurudev ji replied why not, but the question is about aawahan of ras siddh and sadhika than we have to use parad as a medium and that parad should be of six times Gandhak/salpher jarit (all the necessary sanskar needed for that already be done bythe sadhak who want to have this mirror) and through application of various herbs to this parad and finally a solution is prepared and through a specific way a mirror Is	इस दर्पण का निर्माण किस प्रकार किया जा सकता है ? और इसकी ये योग कैसे कराया जाता है? तब गुरुदेव ने रस सिद्ध दर्पण निर्माण की तीन विधियाँ बताई जिनका मैंने प्रयोग करके देखा ,उनमे से एक प्रक्रिया को मैं आप सभी गुरुभाइयों के समक्ष रख रहा हूँ. ८ वे संस्कार से युक्त पारद से शिवलिंग तो बनाया जा सकता हैं पर इसके साथ अग्निक्रिया नहीं की जा सकती हैं .अर्थात अग्नि के माध्यम से इसका बंधन नहीं कर सकते हैं .वाम मार्ग में ऐसा कर सकते हैं पर गंधक जारण नहीं कर सकते हैं. शिवलिंग निर्माण के लिए अष्ट संस्कार वाले पारद

prepared and on this mirror any ras siddha can be aawahan and person get the answer of any queries to them.

How this mirror scan be prepared and what is the process by which herbs are used in that ?.

Sadgurudev ji describe to me three way , that I practically did all , one of that I am here describing you my guru brother.

Parad with having stage of asht Sanskar , can be used for shivling \making but on that parad agni kriya/using fire is not allowed means through fire we can not make bandhan /solidifying that .vaam marg we can do that but using gandhak is not permissible . for shivling making asht sankar parad is needed, but for this prayog we require at least six times Gandhak jarit parad , prepare at least 100 to 200 gram of such a sankarit and jarit parad by self only (no other person help can be taken), since if other person touch this type parad the mercury accept his mental and physical vibration. That creates obstruction. In fulfilling our procedure / kriya.

की आवश्यकता होती हैं, पर इस प्रयोग के लिए तो ६ गुना गंधक जारित पारद की अनिवार्यता हैं ही . स्वयं के द्वारा कम से कम १०० ग्राम से २०० ग्राम तो पारद गंधक जर्न संस्कार से संन्सकारित करे, किसी अन्य से प्राप्त किया पारद इस प्रक्रिया में उपयोगी नहीं हैं .क्योंकि किसी अन्य के हाथ लगा पारद उस व्यक्ति विशेष के शरिरुइका और मानसिक स्पंदन को ग्रहण कर लेता है जिससे क्रिया में व्यवधान उत्पन्न होता है.

इसके अतिरिक्त निम्न पदार्थों की भी अनिवार्यता होगी , इस दिव्य तेजस्वी दर्पण के निर्माण में..

1. पीपल की अन्तः छाल का रस
2. अकरकरा का रस
3. वज्र(सेहुंड /त्रिधारा) का रस
4. काला संखिया
5. सरपुंखा का रस या दूध
6. बड (वरगद) का दूध
7. काली तुलसी का रस
8. काले धतुरा का रस
9. स्वर्ण क्षीरी का दूध
10. शंख की भस्म
11. धान्य अभ्रक
12. इन्द्रायण का रस
13. रक्त पुनर्नवा का रस /अर्क
14. अपामार्ग का अर्क
15. अगस्त्य वृक्ष का अर्क
16. माँ भगवती कामख्या महा पीठ का स्वयं निस्रत पवित्र जल

इन सभी पदार्थ की सम्मिलित कुल मात्रा उतनी

In addition to that following things are required for that making brilliance ,most divine mirror.

1. Inner core juice of pepal tree
2. Juice of akarkara
3. Juice of vajra (sehund)
4. Kala sankhiiya
5. Juice of bargad tree
6. Juice of kali tulsi
7. Juice ofblkack dhatura
8. Milk of swarna kshiri
9. Ash of shanksha
10. Dhyany Abhrak
11. Juice of indrayan.
12. Ark of rakt purnnava
13. Ark of apamarg
14. Ark of agstay tree
15. And the holy water comingout of ma kamakhya maha yoni peeth.

All the above mentioned juice total quantity should be just equal to as the weight of mercury is to be taken.mix all the substance in any series and in a khral and while doing khral chant mentally

ही होना चाहिए जितनी की पारद का वजन लिया गया हैं .

इन सभी को किसी भी क्रम से खरल में डाल कर खरल प्रारंभ करे , और एक विशेष मंत्र का लगातार उच्चारण करते रहे .जब सभी पदार्थ और पारद मिल कर एक रस हो जाये . वह मंत्र है **'ओम ब्लूम् ओम'**. इसके बाद उस मिश्रण को सामने रख कर स्नान कर के पश्चिम मुख होकर निम्न मंत्र का १०००० बार जप करे , याद रखिये किसी भी प्रक्रिया के क्रम को स्वयं के मन से परिवर्तित ना करे अन्यथा क्रिया की सफलता संदिग्ध ही रहेगी.

मन्त्र- ओम चले चुलेचंडे कुमारिक्योरगं प्रविश्य यथा भूतं यथा भव्यं यथा भवति सत्यं दर्शय दर्शय भगवति मा विलम्बय विलम्बय ममाशां पूरय पूरय स्वाहा

तब एक आयताकार या गोलाकार कांच का टुकड़ा ले . एक इसके अनुरूप आकर का फ्रेम भी ले जिसमें की यह अच्छी तरह से फिक्स हो जाये .एक लाल रंग का मख मलमल का कपडा भी ले ले .

प्रक्रिया प्रारभ करने से पहले स्नान कर के पूर्ण शुद्ध हो कर पूर्ण सदगुरुदेव पूजन करे सिद्ध कुंजिका स्त्रोत के ११ पाठ ,महा म्रत्यु न्जय मंत्र का ११ माला जप करे इसके बाद अघोर मंत्र का जप करे .समस्त रस सिद्धो के पूजन के बाद खरल में पारद मिश्रित लेप को उस फ्रेम और

the mantra **om bloom om** after that take bath and than facing west chant 10,000 times following mantra ,be careful do not modify the process mentioned here to suit you , other wise the success will be doubtful .

Mantra

Om chale chulechande kumarikyorang yatha bhutam bhavyam yatha bhavti satyam darshay darshay bhagvati ma vilambay vilambay mamansha puray puray swaha.

Than take any glass mirror either rectangular or circulare size and appropriate frame also take so thatit properly get fixed inthat. Take red colored makh mal mal cloth.

Before starting the process wash properly and have full complete Sadgurudev poojan and do 11 paath of Siddh kunjika strota, Maha Mritunjaya mantra 11 round rosary (mala), and then chant Aghor mantra .than after all the ras siddha poojan use that mixture of parad and herbs fill in the middle hollow portion of mirror and frame , and apply makhmalmal cloth on the mirror so that no other person see that .

दर्पण के मध्य खाली स्थान मैं भरना होगा . इस दर्पण के ऊपर मख मलमल का कपडा डाल दे .इसे आपके अतिरिक्त कोई ओर देखे नहीं . फिर एक स्टूल ले इस पर एक घी का दीपक लगा दे , और हमें दर्पण को ऐसे लगाना हैं कि कि दीपक कि लौ ओर इस दर्पण के मध्य का मध्य बिंदु एक सीध में ही हो . मतलब जब आप अपने आसन पर भूमि पर बैठे तो ये दीपक आपकी कि लौ और दर्पण का मध्य बिंदु एक ही सीध में ही होगे . अब इसको प्राण चेतना से अपूरित करने के लिए सिद्ध कुंजिका स्त्रोत के ५१ पाठ व गुरु मंत्र की ११ माला करे.आसन के लिए श्वेत कम्बल , स्वेत रंग का वस्त्र धरण करे , फिर रात्रि के १२ बजे के बाद से लेकर प्रातः के ५ बजे के मध्य में ही प्रयोग करें. पर इसके लिए पहले ५ माला गुरु मन्त्र का जप करे. फिर दीपक कि लौ (जो दर्पण में बिम्बित हो रही है)में अत्यंत ही विनीत भाव से आवाहन करे तो दर्पण में संबंधित रस सिद्ध आपके सम्मुख होंगे और आप उनसे पहले से ही लिखे प्रश्न नम्रता पूर्वक पूछे . सब्बंधित रस आचार्य या आचार्या आपके प्रश्नों के उत्तर देगे जो कि आपको सुनाई देगें

इसके बाद आप उन्हें नम्रता पूर्वक विदा करें , शांति पाठ करे पुनः एक माला गुरु मन्त्र जप करे . और उस दर्पण पर लाल रंग का मख मलमल का कपडा डाल दे.ये तो वनस्पतियों की सिद्धता का प्रमाण है जब आप इसे करके देखेंगे तो सत्यता और असत्यता का खुद ही पता चल जायेगा. इसी प्रकार इन वनस्पतियों में प्राकृत

than take any wooden stand of such an height and put a ghee Deepak on that , and fix the mirror on the wall such that middle portion of the mirror and flame of Deepak be in a staright line, means when you sit on the floor on your aasan than your eye , flame and middle portion of that mirror be in a line. Then for pranschetana a do chant 51 paath of siddh kunjika strota , and 11 round rosary of guru mantra . for aasan (sitting mat) it should be of while color kambal and white colored clothe should be used by you. And do this process in between 12 Am in night to 5 am in the Am morning only but for to use that 5 round of rosary of guru mantra is must. Tan see the reflection of the Deepak flame in the mirror concentrate on that and with full politeness have aawahan of any ras siddha. Ask him any of the question already written with you in this field related, the related ras acharya and achray will definitely give the answer which will be clearly audible to you.

After that very politely ask them to leave. Again do the shanti paath and 1 round of rosary of guru mantra. And red colored

धात्विक अंश तरल या द्रुति रूप में उपस्थित होता है और हमें काल का विशेष अध्यन कर ये जाना जा सकता है की किन क्षणों में स्वर्ण चैतन्य होता है और किन क्षणों में रजत बीज की प्राप्ति की जा सकती है . इसका ज्ञान भी अत्यंत आवश्यक है.

(क्रमशः)............

[गंधक, शहद,पारद को एकत्र कर के ४८ घंटे खरल करें यहाँ एक बात ध्यान रखना जरुरी है की पारद और गंधक संस्कार तथा बीज युक्त होना आवश्यक हैं अन्यथा क्रिया बिगड सकती है फिर उस मिश्रण को आतिशी बोतल में भर कर ३५ दिनों के लिए जमीं में गड्ढा खोदकर दबा दे और ऊपर की भूमि पर दिनभर सूर्य का प्रकाश लगता रहे , ऐसी जगह पर ही ये क्रिया करें . अवधि पूर्ण होने पर इसे निकाल ले और इसकी एक माशे के बराबर की मात्रा १ तोला रजत को स्वर्ण कर देती है.]

makhmalmal cloth again put on that mirror. Theses are the authentication of herbs siddhita, when you yourself try that you can understand fully yourself. Like the same way various herbs has metallic ansh in liquid or in druti form. And can calculate the specific proper time when swarna (gold) becomes chaitnya, and in which moment silver... that gyan is also must.

In continue....

[Gandhak (sulpher). Shahad (honey) ,parad (sankarised mercury) mix together and khral for 48 hours, here note that parad and Gandhak should be of sakarait and beej yukt. Other wise the process could not be successful. Fill that mixture in any aatishi shishi (glass flask) and kept in earthen hole already created for 35 days , and that earthen hole should be situated in such a way that day light of sun should be onthat. after that duration complete take out that flask , this paste one masha can convert 1 tola of silver in gold.]

Ayurved

आयुर्वेद के अचूक सिद्ध सरल प्रयोग

if on the place of burn applied the pulp of gwarpatha 's green leanes than burn pain gets down and no mark will appear on that place infuture.	हर जगह आसानी से प्राप्त ,घृत कुमारी या ग्वार पाठा के हरे पत्ते को काट ले इसका आंतरिक गूदा यदि जले हुए भाग पर लगाया जाये तो तत्काल ही जलन शांत होती हैं तथा दाग भी नहीं पड़ता हैं
take juice of dudhi plant's juice and apply onthe place where waist pain happens. it will reduce that .	दुधि नाम की वनस्पति का रस लेकर हाथ से मसल ले या फिर पीस ले इसे कमर में अचानक उठे दर्द के स्थान पर लगाये दर्द शांत हो जाता हैं.
properly heat up the laung on the round plate of iron and grind it and if taken it very small quantity with honey than it will very helpful inreducing the khansior cough but after time plz do not drink water nearly 1 hour.	लौंग को तबे पर सेंक ले और पीस कर इसकी अल्प मात्रा को बहुत थोड़े से शहद के साथ चाटने से खांसी में आराम होता हैं पर कुछ देर तक फिर पानी न पिए.

Saral Lakshmi Prayog

लक्ष्मी प्राप्ति का अत्यंत सरल सहज प्रयोग

To become wealthy is a dream of any human being , and now a days situation is so difficult that , this became bitter truth . how to make her stationary i.e. who is ever moving. How many type of sadhana and how many ways are of goddess lakshmi in sadhana field, but when time is less and one has to get his desire aim ,than no one can turn his face towards the usefulness of small sadhana means prayog . I am here mentioning a very small prayog if done with full faith than you can yourself see the changes in your financial life.

Take one small earthen pot normally used for keeping coin by small children (gullak) and whenever you want to deposit any amount (greater or lesser it does not matters) first chant the mantra 108 times only than place that amount in that. Gradually goddess lakshmi bless your home with her presence.

Mantra

Shreem hreem hreem shreem om||

लक्ष्मी वान बनना तो मनुष्य का सपना रहता आया हैं कम से कम आज के जीवन की कठोर परिस्थितियों को देख कर के तो यही कटु सत्य लगता हैं ,पर इन चंचला को कैसे स्थायित्व दिया जाये.कितनी साधना , कितने ही पद्धतियों इनके बारे में साधना जगत में प्रचलित हैं पर सबका मूल मन्त्र तो यही हैं की जल्द से जल्द इनकी कृपा प्राप्त हो पर कैसे ? जब पाना हो अभीष्ट, और न हो समय तब इन प्रयोगों की उपयोगिता से कौन मुंह मोड़ सकता हैं .नित्य प्रति के जीवन में सफलता प्रदायक एक ऐसे ही प्रयोग को आपके समक्ष रख रहा हूँ, यदि आप इसे पूर्ण विस्वास से करेंगे तो इसके परिणाम आप स्वयं ही अनुभुत कर आश्चर्य चकित हो उठेंगे .

घर में पैसे जोड़ने में उपयोग आई जाने वाली मिटटी की गुल्लक ले ले . ओर जब भी आप इसमें कोई भी धन राशी कम या ज्यादा डाले(इससे फरक नहीं पड़ता हैं) तब निम्न मंत्र का उस धन राशि को हाँथ में रखते हुए १०८ बार केबल उच्चारण कर ले ,फिर गुल्लक में उसे डाल दे धीरे धीरे आप के घर में स्वयं ही लक्ष्मी वास /स्थिरता होने लगेगी .

मंत्र :श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं ॐ ||

Third Issue

March - 2011

Tantra kaumudi

Table
of
Contents

SADGURUDEV - PRASANG

****

सप्त जीवन सर्व देवत्व सर्व साधना सिद्धि दीक्षा

Is this true????Only this I kept thinking that night....But Why, I was thinking only this one point again & again?????Even, I was restless, cannot make for the sleep.....But, not able to make Why????

Now, it's enough, I will definitely ask Sadgurudev tomorrow anyhow...

Actually what happened there was Navratri Encampment and on the first day in first session approximate at 12:00 pm in the mid of the session Gurudev suddenly told that the

क्या ये सच है ??? बस यही सोचता रहा उस रात ..... आखिर क्यूँ उसी बात को मैं बार बार सोच रहा था .

अब नींद भी नहीं आ रही थी मुझे , पर क्यों??

बस अब नहीं समझ में आ रहा है , अब तो कल मैं सदगुरुदेव से पूछ कर ही रहूँगा. दर असल में हुआ ये था की नवरात्री का शिविर चल रहा था और उस दिन प्रथम सत्र में लगभग १२ बजे गुरुदेव ने अचानक अपने प्रवचन के मध्य बताया की " तुम लोगो से मेरे सम्बन्ध आज के नहीं हैं बल्कि मैं पिछले २५ जन्मों से तुम्हारा गुरु हूँ" और बस तभी से ये बात मेरे दिमाग के दरवाजे खटखटाने लगी और उसके बाद तो बस बैचेनी सी मेरे मन में समा गयी थी. और अब प्रतीक्षा थी तो बस

relations between You and Mine is not from today, but we are bonded as a Shishya and a Guru from last 25 birth-cycles......& that was the point which got stucked in my mind and I became so curious....only, I was waiting for the moment I will meet Sadgurudev....

At last, on Ashtami day, I was able to meet Sadgurudev & that too he called me up & patted on my head saying –(All the conversation was between me & Gurudev)

Gurudev - now what new is running in my head & can you give rest to your heart & mind???

Me - Gurudev, you only told that a devotee should have the ability to be curious – I answered by lowering my eyes down....

Gurudev -Yes, My son this is very much true, but the more important thing is no matter the Guru is wholesole,still express the emotions either in written or oral in his feets...

Me – But, what if meeting is not possible???

Gurudev - Don't you have any of the Guru Picture with you? Do express in front of his picture...

Me – But, what if Guru Picture is also not with you???

Gurudev – My Son, Guru and Shishya are not separate, they are two bodies but one soul....You only tell, how departed from the soul, one can be able to act as a Shishya.....When the devotees

सदगुरुदेव से मुलाकात की.......

आखिरकार अष्टमी को उनसे मुलाकात संभव हो पाई और वो भी खुद उन्होंने ने ही बुलाया और सर पर चपत मारकर कहा – अब तेरे दिमाग में ये क्या नया घूमने लगा , तू कभी अपने दिल दिमाग को आराम भी देगा.

जी आप ने ही तो कहा है की शिष्य बनने के पहले साधक को जिज्ञासु होना चाहिए- मैंने आँखे झुका कर उत्तर दिया.

हाँ बेटा ये सही बात है और उससे भी ज्यादा जरुरी ये है की,चाहे गुरु सर्व समर्थ हो तब भी अपने मन के भाव उनके चरणों में लिख कर या बोलकर व्यक्त करना ही चाहिए .

पर यदि उनसे मुलाकात संभव नहीं हो तब ????

क्या तेरे पास गुरुचित्र भी नहीं है, उसके सामने व्यक्त कर .

और यदि कभी गुरुचित्र भी पास में न हो तब??

बेटा गुरु और शिष्य प्रथक नहीं होते हैं. बल्कि वो दो देह औए एक प्राण ही होते हैं, भला आत्मिक रूप से अलग अलग रहकर कोई कैसे शिष्य बन सकता है. जब गुरु के प्राणों से साधक के प्राण मिल जाते हैं या एकाकार हो जाते हैं तभी तो वो साधक सच्चे अर्थों में शिष्य बन पाता है. गुरु के प्राणों में उसके प्राण एक तीव्र आकर्षण से जुड जाते हैं , और ये जुड़ाव इतना तीव्र होता है की इसे विभक्त किया ही नहीं जा सकता .

और खुद ही सोच जब आत्मिक रूप से दो प्राण एकाकार हो जाते हैं तब चाहे शिष्य कितने बार भी जन्म ले ले , कही भी जन्म ले ले, गुरु अपने उस अंश को ढूँढ कर अपने पास बुला लेता है , ठीक वैसे ही जैसे मैंने तुम सभी को खोज कर बुलाया है. पर ये इतना सहज नहीं होता है , क्योंकि तब वो शिष्य अपने संबंधों की तीव्रता को महसूस नहीं कर पाता है और न ही उसे अपने जीवन का मूल चिंतन ही याद रहता है , उसे तो बस अपने आस पास के स्वार्थलोलुप रिश्तों की ही याद रहती है और प्रेम की सत्यता को तो वो समझ ही नहीं पाता. बस जिन्हें वो शुरू से देखता आया,वो रिश्ते ही उसकी दृष्टि में सत्य होते हैं. पर जब शिष्य गुरु के प्राणों के तीव्र आकर्षण से उनके श्री चरणों में पहुच जाता है तो गुरु उसे पूर्णत्व प्रदान कर ही

get attached with the soul of the Guru, then only a devotee is able to become a true Shishya...The soul of the Shishya gets attached with the Guru soul with great attraction & this attraction is so much bonded that it cannot be departed....

& now you only think when the two different life becomes one through the soul, then no matter the Shishya takes infinite birth he will be identified by his Guru from anywhere and will be called near to him just as I have called all of you.....But, this is not so easy, because at this time the Shishya cannot realize the intensity of the relations and neither he is able to recollect the main base of his life...He is just carried away with the relations which are near to him and is unaware of the fat of true love because he believes only those relations which he had seen since his childhood and grown up with them....But, as soon as he devotes himself into the guidance of the Guru, the Guru provides him the completeness of the life....

Me – Can I experience my previous birth???

Gurudev - Yes, why not???Any devotee can see this if he performs – **Madalsa Sadhna**, this act will become easy....Simliarly, by performing **Tratak Kriya on Pardeshwar** will also help in experiencing of his previous birth....

Me – But, I want to experience all my previous birth in which I was devoted to you and my life got blessed under your shelter.....Is this possible???

देते हैं.

क्या मैं अपना पिछला जीवन देख सकता हूँ ?

हाँ क्यूँ नहीं देख सकता. पिछला जीवन तो कोई भी साधक देख सकता है , यदि वो **मदालसा साधना** संपन्न कर ले तो ये क्रिया सहज हो जाती है . इसी प्रकार **पारदेश्वर** के ऊपर त्राटक की क्रिया कर साधक अपने विगत जीवन को देख सकता है.

पर मुझे वो सभी पूर्व जन्म देखने हैं जिनमे मैं आपके श्री चरणों में था और आपके दिव्य साहचर्य से मेरे जीवन सुवासित और पवित्र हुए थे .

क्या ये संभव है??

हाँ मेरे बेटे यदि उपरोक्त साधनाओ को साधक लगातार करता रहता है तो निश्चय ही वो और ज्यादा जन्मों को देख सकता है. **पारद शिवलिंग पर त्राटक** की क्रिया तो होनी ही चाहिए .

क्या मैं पिछले जीवन में की गयी साधनाओ को इस जीवन से जोड़ सकता हूँ??

निश्चय ही जोड़ सकते हो. पर एक बात याद रखो की पिछले जीवन को देखना और उसमे की गयी साधनाओ का इस जीवन से योग करना ये दो अलग अलग बाते हैं. क्यूंकि उन साधनाओं को इस जीवन से जोड़ने में जिस ऊर्जा और शक्ति की आवश्यकता होती है वो सामान्य रूप से एक नए साधक में नहीं होती है.

तब ये कैसे हो सकता है?

यदि गुरु अपने तपः बल से साधक को एक विशेष दीक्षा दे तो निश्चय ही ऐसा संभव हो जाता है , क्यूंकि चाहे साधक ने कितने ही जीवन में साधनाएं की हो पर अत्यधिक कठिन होता है पिछले सात जीवनों की शक्तियों को एकत्रित करना सम्पूर्ण चक्रों के जागरण के बगैर उनकी चैतन्यता को प्राप्त किये बगैर ये संभव ही नहीं है , परन्तु जब सद्गुरु उसे ऐसी विशेष दीक्षा दे दे और स्वयं के प्राणों का घर्षण कर शिष्य को वो मन्त्र प्रदान कर दे तो साधक उस मन्त्र का **पारद शिवलिंग** पर त्राटक करते हुए जितना ज्यादा जप करता जायेगा उसे वो सब सामर्थ्यता धीरे धीरे प्राप्त होते जाती है फिर चाहे उस शिष्य ने अपने पिछले जीवनों में

Gurudev - Yes, my Son, if you will practice the above Sadhna regularly, you will able to feel the experience of more & more previous birth life.... & yes **Tratak Kriya on Pardeshwar** is must...

Me – Can I get connected with the previous devotions also in this life???

Gurudev - Yes, you can definitely do it but do remember to experience previous birth and to connect the devotions with this life are totally different from each other because to connect those devotions from that life to this life requires too much energy and power and a new devotee does not contains that much of amount....

Me – Then, how is this possible???

Gurudev - If the Guru by recollecting all his devotional power and energy gives a special convocation (Deeksha) to the Shishya, it becomes possible...because no matter a devotee has worked so hard for the devotions but to recollect the last 7 births energy and to activate the whole chakras & auras without the activations of these energy is very much difficult....But, when the Guru gives such a special convocation and keep his all his life on sake for the Shishya and gives that mantra & when the Shishya performs that Mantra on Parad Shivling by the Tratak Kriya he is able to become capable enough to recollect & experience all those energy & powers which he conducted or performed in his

किसी भी प्रकार की , कितनी भी साधनाएं की हो चाहे वो किसी भी शक्ति की हो , वे सभी साधनाएं और उनका पूर्ण प्रभाव साधक को इसी जीवन में प्राप्त हो ही जाता है और साधक उन सभी प्रक्रियाओं में पूर्ण रूपें पारंगत हो जाता है. और सात जीवनों की यात्रा के बाद तो साधक की यात्रा इतनी सहज हो जाती है की उस मन्त्र के अभ्यास से से वो और पीछे जाते जाता है और उन शक्तियों को क्रमशः प्राप्त करते जाता है. और सद्गुरु हमेशा यही चाहते हैं की उनका शिष्य अपने अस्तित्व को पूर्ण रूपें समझे और अपने लक्ष्य को प्राप्त करे. इससे ज्यादा गुरु को और क्या चाहिए .

क्या मुझे वो दीक्षा प्राप्त होने का सौभाग्य मिल पायेगा? इसे प्राप्त करने की पात्रता क्या है?

इसके पहले तीन ऐसी दीक्षाएं हैं , जिन्हें प्राप्त कर साधक उससे सम्बंधित साधनाओं को पूर्णता के साथ संपन्न करे तो निश्चय ही साधक को सद्गुरु उसके आग्रह पर ये अद्वित्यीय दीक्षा प्रदान करते ही हैं और साथ ही साथ इससे जुड़े रहस्यों को उजागर भी कर देते हैं.

सदगुरुदेव के आशीर्वाद से मैंने उन तीनों दीक्षाओं को प्राप्त कर उनसे सम्बंधित साधनाएं भी संपन्न की और तब मैंने गुरुदेव से उस अद्भुत दीक्षा और उससे सम्बंधित रहस्यों का ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रार्थना की. तब उन्होंने अत्यंत करुणा भाव से मुझे वो पूर्ण क्षमता युक्त अद्भुत दीक्षा प्रदान की जिसे सिद्धाश्रम के योगियों के मध्य **"सप्त जीवन सर्व देवत्व सर्व साधना सिद्धि दीक्षा"** के नाम से जाना जाता है.

बाद में मैंने उनके निर्देशानुसार साधनाओं को क्रियाओं को संपन्न कर उन रहस्यों को समझ पाया जो मेरे पिछले जीवन से जुड़े हैं.और आज मैं जो कुछ भी समझ पा रहा हूँ उसके मूल में यही रहस्य है. जीवन का सौभाग्य होता है साधनाओं को संपन्न कर अपने पिछले जीवन को अपनी इन्ही आँखों से देख पाना, क्यूंकि तभी तो हमें अपने इस जीवन के दुर्भाग्य का कारण ज्ञात हो पाता है.

मैं आप सभी लोगो से भी यही प्रार्थना करता हूँ की इन पंक्तियों को पढों नहीं बल्कि इसमें छुपे अर्थ को समझ कर उसे अपना लीजिए. आज हमारे मध्य एक नहीं बल्कि गुरु त्रिमूर्ति के रूप में तीन तीन सामर्थ्यवान गुरु मौजूद हैं, जिनके श्री चरणों में आग्रह कर हम भी अपना जीवन इस दिव्या क्रिया से युक्त कर सकते हैं. क्या अब भी हम गिडगिडाकर ही जीवन जीते रहेंगे. अब मर्जी है आपकी

Mayuresh Strot Sadhana

मयुरेश स्त्रोत साधना

किसी भी प्रकार की मानसिक या शारीरिक समस्या को दूर करने के लिए

Bhagvaan Ganesh is the first devta who have lordship over gan means senses(working or sensory one.) he the pratham Poojya in any work from house holders to sadhana field though his form may be different one but everyone is agree that he is most lovable form of god . in day to day life every person is suffering with so many problem some of may be told and others may be of not to be told. So due to this his mental tension is increases ,

भगवान गणेश ही प्रथम ऐसे देवता हैं जो गणाधिपति भी हैं यहाँ गण से तात्पर्य हैं गण अर्थात इन्द्रिया फिर वह चाहे किसी भी प्रकार की क्यों न हो . यही हैं हर कार्य में प्रथम पूज्य ,फिर चाहे वह किसी भी गृहस्थ का कार्य क्यों न हो हो या फिर साधना क्षेत्र से सम्बंधित ही क्यों न हो , हाँ यहाँ परकार्य विशेष के अनुसार उनका स्वरुप जरुर बदल सकता हैं पर वे सच में मंगल कारी ही हैं .. पर इस तथ्य पर तो सभी एक मत होने की भगवान का यह रूप बहुत ही मनोहारी हैं .

दिन प्रति दिन के कार्य में हर व्यक्ति अनेकों प्रकारकी समस्याओं से ग्रस्त रहता हैं ये समस्याए किसी भी प्रकार की हो सकती हैं बताई जा सकने योग्य से लेकर न बताई जा सकने योग्य भी. तो क्या कोई एक ऐसा भी रास्ता होगा जिसके माध्यम से हम कम से कम समय में तीव्र परिणाम

so is there any way that too a simpler one but effective one to provide remedy. Here is the one sadhana for removing mental worry of any kind. Process is the very simple you have only single time chant the strotam for just 11 days . his mental tension sure be removed due to his grace. This strotam can be utilized for removing any illness too. Process is like that In the morning take bath and wear silky cloth (if have).and chant the strotam just for one time in front of Bhagvaan Ganesh statue, do the process daily till the desired work will complete.(off course if problem is serious one than you can ask guidance from guru dham in this regard but it is sure that you will definitely get the result if having faith towards Sadgurudev ji and isht and also Bhagvaan Ganesh.	की प्राप्ति कर सके . यहाँ पर एक ऐसा ही सरल साधना आपके समक्ष हैं जो आपके किसी भी प्रकार के मानसिक तनाव को दूर करने में समर्थ हैं , प्रक्रिया अत्यधिक सरल हैं कमसे कम आपको ११ दिन तक प्रातः काल १ पाठ तो इस स्त्रोत के करना ही हैं .यह स्त्रोत किसी भी प्रकार की शारीरिक अस्वस्थता में भी उतना ही प्रभावकारी हैं . प्रातः काल स्नान कर के रेशमी वस्त्र धारण कर किसी भी गणेश चित्र या मूर्ति के सामने अपने आसन पर बैठकर इस स्त्रोत का १ पाठ तो अवश्य की करे ओर ये प्रकिर्या तब तक लगातार करे जब तक की आपको अपेक्षित लाभ प्राप्त न हो गया हो .(यदि समस्या गंभीर हो तो आप गुरुधाम से संपर्क कर के दिशा निर्देश प्राप्त कर सकते हैं पर यह निश्चित हैं की सदगुरुदेव जी पर और अपनी साधना पर यदि पूर्ण विस्वास हैं तो परिणाम जरुर मिलेगा .

मयुरेश स्त्रोत

मयूरेशस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा। मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्। गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया। सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्। नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम्॥

इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्। सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्। सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्। भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्। समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्। सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्। अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम्। सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्॥

कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्। आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्॥

Isht Darshan Prayog

ईष्ट दर्शन प्रयोग
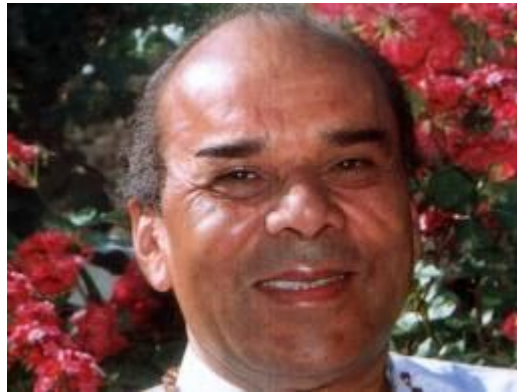
गुरु यन्त्र के माध्यम से ईष्ट के दर्शन की अत्यंत सरल परम दुर्लभ साधना

For a person his first desire to have /get achievement in material wealth/world ,since without having success in material life its very hard to have success spiritually into days life . and also there is big difference between want and desire, after a point person hide himself in the shadow of one desire or that desire but still his quest for to know himself is unsuccessful. Since to know self the yatra have to be done inwardly , outer search with outer mediun, that can not give u the success. Than only on this point a person comes in front of you. yes the case may be the different that maybe recognise him or not ,	मानव जीवन की प्रारंभिक उपलब्धयां तो भौतिक रूप से सफल होने की होती हैंक्योंकि उसके आभाव में आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त हो पाए कम से कम आज के परिवेश में कठिन सा होता जा रहा हैं , साथ ही साथ वास्तविक आवश्यकता और चाह में अन्तर होता ही हैं, एक समय के बाद व्यक्ति अपने स्वरुप से बचने के लिए कभी ये ख़ुशी तोकभी वह खुशीकी तलाश में निकलता हैं पर सारी कोशिशें एक प्रकार से व्यर्थ सी हो ती हैं की अपने को पहचानने की ,क्योंकि यात्रा तो अंतर गत हैं भला बाहय कर्म काण्ड या व्यवस्थाओं से अंतर गत उपलब्धियां कैसे हस्त गत होगी , ओर जीवन के ठीक इसी मोड़ पर एक व्यक्तिव सामने आता ही हैं , हाँ ये वात अलग हैं की हम उसे पहचान पाए या नहीं , और वह होते हैं व्यक्ति के गुरु जिन्हें सदगुरुदेव की संज्ञा से बोधित किया जाता हैं , हम तो यही मानते आये हैं की हम ही गुरु को ढूढ़ते हैं पर सच में कहा हैं. भला यदि विराट अपना ही अंश हमारे अन्दर पहले से न डाल दे तो क्षुद्र भला कैसे

the pserson is known as a guru orwe known him asa sadgurudev ji.we til date assume thatwe serched the guru , butthis is notthe truth,greater /almighty already serched us than we can starts the way, he alreadyplces his love inside us only than we can search/love him.(if a river has not have water already came outfrom sea asa evoporationhow can she reach toits destination. if he already notplces his prana inside us than how itis possible to have sadgurudev ji like that.

विराट कोकैसे पहचान सकता हैं,(यदि नदी में समुद्र का जल न हो तो नदी कैसे समुद्र तक की यात्रा कर सकती) हमारी ये महानता नहीं हैं की हमने उन्हें पहचाना या समझा बल्कि यदि उन्होंने ही पहले से हमारा हाथ न पकड़ा होता हैं हमें पहले से न चाहा होता तो हममें अपने प्राण न डाले होते तो हम कैसे उनके तक पहुचते हैं.तो उन्होंने ही हमें चुना हैं हमने नहीं ...जरा सोचिये

when we reach tosadgurudev than he decide which one canbe our iasht so that the remaimimg travellinh may be little easily. til that ishat is just a imagination. and how it is possible to have imegination's dhyan possible.first place to have ishtdarshan onlythan dhyan canbe done,sadgurudev jionmanyplaces writtenn about this.but we never intersted tolearn that science , than how we can have isht darshan is abig question .withouit isht in general sense how long a yatra runns.

अब उनतक पहुच गए पर यात्रा के लिए सदगुरुदेव जी आपके लिए एक इष्ट निर्धारण करते हैं जिसके माध्यम से आप इस यात्रा को थोडा सा सुगम तरीके से गतिमान कर सकते हैं . पर ये तो अभी इष्ट केबल कल्पना हैं ओर कल्पना का ध्यान कैसे किया जा सकता हैं, आप कहेंगे किपहले साधना करे फिर इष्ट दर्शन पर सच तो ये हैं की पहले इष्ट दर्शन फिर उनका ध्यान तभी वह वास्तिविक हो सकता हैं ,सदगुरुदेव भगवान ने अपनी कृतियों में कई जगह इसका उल्लेख किया हैं , पर जब हमने ही उस विज्ञानं को उपेक्षितकर दिया तब आज हमें अपने इष्ट के दर्शन कैसे हो .कल्पना के इष्ट से कितनी देर यात्रा चल सकती हैं .

मनुष्य जीवन का उद्देश्य अपने इष्ट को अपने अंदर स्थापित कर लेना या खुद के अस्तित्व को इष्ट में विसर्जित करदेना हैं . लेकिन इष्ट आखिर किस को कहा जाए, सदगुरुदेव ने बताया हैं की इष्ट का मतलब हे वो शक्ति जो ब्रम्हांड को गतिशील रखता हैं , जिसे ब्रम्ह कहा गया हैं , और वह कोई भी हो सकता हैं क्यूंकि ब्रम्ह सर्वत्र व्याप्त हैं सर्व में स्थापित हैं . अगर देवी देवताओ की बात करे तो सर्व देवी एवं देवता का ब्रम्हांड की गति में एक निश्चित सुनियोजित योगदान हैं , मनुष्य जिस देवी या देवता की उपासना में साधना में रत हो, वही उसका इष्ट हैं क्यूंकि वह ब्रम्ह के रूप

को समझने में उसका माध्यम हैं .

The of purpose of the human life to establish Isht (favored) into self or to immerse one self in Isht. But whom can we call Isht, Sadgurudev have said that Isht means the power which maintains the continuity of the universe, which is called Bramha, and that could be anyone because Bramh is everywhere and it is established in everything. If we speak in term of god and goddess, every one of them contributes words specific well organized continuity of the universe, who so ever prayed with medium of sadhana and upasana that is Isht because it is the medium to understand Bramh.

पुरे जीवन काल में मनुष्य का यह स्वप्न होता हैं की वह अपने इष्ट का दर्शन करे और आशीर्वाद प्राप्त करे लेकिन यह इतना सहज संभव नहीं हे क्यूँकी हम सामान्य मनुष्यों के सामने ब्रम्हांड नियंत्रित करने वाली शक्तियां भला सहज में क्यों प्रकट होंगी. इसी लिए कई मनुष्य अपना पूरा जीवन इस कार्य में लगा देते हैं फिर भी कुछ एक विरले लोगो को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता हैं की वह अपने चरम चक्षुओ अपने इष्ट को देख सके और अपने जीवन को धन्य कर सके.

In the whole life, the dream of the human remains that he get sight of the Isht and have blessings but it is not so simple because why the controlling powers of the universe will appear in front of we common human beings so easily, therefore many people lay down their complete life to accomplish this task but then too few fortunate only have that boon to have a sight of their Isht with their eyes and can have a blessed life.

साधना जगत में कई साधक की चाह होती हैं की वह कोई एसी साधना प्राप्त करले जिससे अपने इष्ट को अपने सामने प्रत्यक्ष कर ले मगर इस प्रकार की साधना मिलना असंभव नहीं तो अति दुष्कर तो हैं ही. सदगुरुदेव ने इष्ट दर्शन सबंधित साधनाए शिष्यों के मध्य रखी हैं और कई साधको ने आगे बढ़के उन साधना पद्धतियों को अपनाया हैं और अपने इष्ट को प्रत्यक्ष अनुभव किया हैं , साधको ने स्वीकार किया हैं की यह साधनाए अपने आप में निश्चित फलदायक हैं लेकिन श्रम साध्य भी. सामान्य व्यक्तियो के लिए एसी साधनाए करना अति कठिन हैं , समस्त नियमों का पालन करते हुए, लाखो की संख्या में मंत्र जप आज के युग में करना थोडा मुश्किल हैं .

In the world of the sadhana, many sadhak wish to have a sadhana through which they can let their Isht appear in

जब मेने इस बारे में अपनी जिज्ञासा सदगुरुदेव श्री निखिलेश्वरानन्दजी के समक्ष रखी तो उन्होंने कहा की इष्ट दर्शन करना दुष्कर हैं क्यूँकी इसके बाद की स्थिति यह होती हैं की इष्ट से हर समय उर्जा प्रवाहित होती रहती हैं जो साधक को भौतिक और आध्यातिम

front of them but though to get such sadhana is not impossible then too it is very difficult. Sadgurudev have many time revealed such sadhanas related to Isht darshan to the disciples and Sadhaks have adopted these sadhanas willingly and experienced their Isht. Sadhaks accepted that these sadhanas are surely fruitful to do but tough in practice. To do such sadhanas by common men is relly difficult, with following all rules, it is difficult in this time of world to do laks of mantra chanting.

When I spoke in this regards with Sadgurudev Paramhansh Nikhileshwaranandji, he said that to have a sight of Isht is really difficult because after that the energy of Isht keeps on flowing on the sadhaka which lay him ahead in the path of material and spiritual success, but if sadhak is not able to do such difficult sadhana there is another ritual which seems very common but it can fulfill a wish of Isht's sight. This is done on Guru yantra. All the god goddess and Bramh is established inside guru and Guru yantra is the symbol of him only. When sadhak +blessings of Sadguru they can see Isht inside Guru yantra.

With my special request he gave me that sadhana and for the task of isht

उन्नति की और बढाती रहती हैं , लेकिन अगर कोई साधक कठिन साधना न कर सके तो उनके लिए एक प्रयोग और भी हैं जो दिखने में अति सामान्य हैं लेकिन इससे इष्ट दर्शन निश्चित रूप से हो जाते हैं . यह प्रयोग गुरु यन्त्र पर होता हैं . गुरु के अंदर सर्व देवी देवता और स्वयं ब्रम्ह स्थापित होते ही हैं और उन्ही का प्रतिक गुरु यन्त्र होता हैं , जब साधक इस यन्त्र के सामने एक गोपनीय मंत्र का निश्चित संख्या में जप करता हैं तो गुरु कृपा से उस यन्त्र के मध्य में इष्ट प्रत्यक्ष हो जाते हैं .

मेरे विशेष अनुरोध पर उन्होंने कृपा करके मुझे यह साधना दी और जिस इष्ट दर्शन के लिए में चार साल से प्रयत्न कर रहा था वह इस साधना से मात्र ३ दिन में ही संभव हो गया और मेरे जीवन की एक बहोत बड़ी साध पूरी हुयी. साधक अंदाज़ा लगा सकते हैं की कहा कई साल विशेष नियमों के अंतर्गत साधना करना और कहा बस कुछ दिनों में ही वही परिणाम प्राप्त करना. यह गोपनीय और देव दुर्लभ साधना के लिए जितना भी कहा जाए उतना कम हैं . जीवन में इस प्रकार की साधना करने के लिए आतंरिक प्रेरणा मिलना सौभाग्य का उदय ही हैं . और इस प्रकार की साधना उपलब्ध होने के बाद भी कोई इसका प्रयोग न करे तो फिर उसे क्या कहा जाए.

इस साधना के लिए साधक के पास ' सिद्धाश्रम गुरु यन्त्र ' या फिर गुरु यन्त्र होना जरुरी हैं . यह साधना गुरुवार की रात्रि से शुरू होती हे. और यह प्रयोग ३ दिन का हैं .

साधक सर्व प्रथम गुरुदेव का पूजन करे और फिर उनसे

darshan which I was trying for 4 years, I had been successful in just 3 days only and the one of very big wish of my life was fulfilled. Sadhak can understand that where stands the many many years for sadhana with special rules and regularion and where else this sadhana can give the same result in just few days. What ever we say about this rare and secret sadhana is truly not enough. It is fortune to have inspiration to do such sadhana and if one does not accomplish such sadhana after gaining it what would you call that.

To accomplish this sadhana one must have "Siddhashram Guru Yanta "or Guru Yantra. This sadhana could be started on Thursday night. This is for 3 days.

Sadhak should do guru Poojan first and pray him to get success in the sadhana. After that one should think their isht in the form of Sadguru's part only and again pray for the success. After that looking at guru yantra chant 101 rosaries of the following mantra with Sfatik Rosary.

Aum Sadguru Isht Me Darshay Hum Hum

इष्ट दर्शन में सफलता के लिए प्रार्थना करे. फिर अपने इष्ट को सदगुरुदेव का ही एक स्वरुप समझ कर उनसे साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करे. उसके बाद रात्रि में स्फटिक माला से यन्त्र पर देखते हुए निम्न मंत्र की १०१ माला करे

ॐ सद्गुरु इष्ट में दर्शय हूं हूं

इस प्रकार १०१ माला करने पर साधक इष्ट और सदगुरुदेव को नमस्कार करके जप समाप्त करे. अगले २ दिन तक इसी तरह से जप करते रहे. तीसरे दिन, रात्रि में जप समाप्ति से पहले पहले निश्चित रूप से इष्ट के दर्शन गुरु यन्त्र पे हो जाते हैं और आगे भी जीवन में इष्ट की कृपा बनी रहती हैं . यन्त्र को पूजा स्थान में स्थापित करे और माला को भविष्य में यही प्रयोग अगर वापस करना चाहे तो उपयोग में ले सकते हैं .

यह अत्यंत ही सहज और सरल प्रयोग पुरे जीवन को बदलने की सामर्थ्य रखता हैं

Shree Nikhileshwaranand kavach
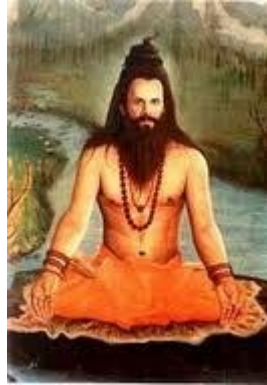
ब्रम्हांड का सर्वाधिक तीव्र प्रभावशाली रक्षात्मक एवं मनोवांछित इच्छापूर्ति करने वाला एकमेव कवच

Every body want to win this war happening day to day life but how that will be possible, every body want to become winner but that also required some price are you ready for that ,actually like in day to day life sadhana field also a place like war where you have to win not only other forces but dark and hidden forces already inside you, devta and devi all theses not are coming from outside actually they are all inside but only need to be realized and why that is not still possible till that ? since we are ignorant about our own true character and ability.	हर व्यक्ति जीवन के इस लगातार चल रहे युद्ध में विजयी होना ही चाहता हैं पर ये सोचने मात्र से तो संभव नहीं हैं ,जो भी विजयी होना चाहेगा उसे उसकी कुछ तो मूल्य चुकाना ही पड़ेगा .क्या आप इस कीमत को अदा करने के लिए तैयार हैं . ठीक हमारे दिन प्रति दिन की तरह साधना जीवनमें भी युद्ध की स्थति सदा बनी रहती हैं ही जहाँ हमारा क्षण प्रति क्षण युद्ध ,हमारे अंतर निहित गुप्त ,तामसिक शक्तियों से लगातार होता ही रहता हैं . देवता और दानव ये कही बाहर से नहीं अपितु हमारे अन्दर से ही आते हैं हमें इस थे को समझाना हैं बस , और हम ये क्यों नहीं समझ पाते हैं क्योंकि हम अपने आप के सही चरित ओर क्षमता से अपरिचित रहते हैं और अ ज्ञान ता के शिकार हैं आप य यजन्ते हैं ही एक युद्ध में व्यक्ति को शास्त्रों से सुसज्जित होना ही पड़ता हैं तो की आप सोचते हैं की साधन क्षेत्र में आपको ये सब न करना पड़ेगा. पर सत्य बात तो ये हैं की साधना क्षेत्र में इन सब की अधिक अनि वार्ता हैंहम ये समझने में बहुधा चुक जाते हैं की हमारा सामना ऐसे शत्रुओं से

But in war you have to be well equipped , so you think that will not be a essential things in sadhana actually that is needed most but we often we failed to realize that .we are fighting our internal enemy those who have not any definitive shape. I think in need to Little bit elaborate the subject.

This all you already aware that so many inferior devi and devta always around us, when we start or do any mantra jap they took full effect of that from us ,and even our hard work produced no positive result , and at the end we blame this or that, so we need to think on that ,secondly in day today life we cannot controlled our thought about others man/woman bad or dirty what ever you call, they also added negatives minus, resultant our positive energy again decreases. but in the beginning it is not possible to control our all thought and action , infect tantric does not teaches to control you but its emphases on that to understand the inner working and try to understand than to control.

If you are too much mixing with negative mind people we aware of that that also a cause for need to think .

I think still you have some doubt mine view so just look what is **shree ma** , a disciple of great mahayogi Shri Arvindo

हैं जिनका कोई निश्चित आकार या समय , स्थान नहीं हैं , में इस विषय को और विस्तृत करता हूँ.

इस तथ्य से आप सभी परिचित हैं ही की हरसमय हमारे चारों ओर बहुत सारे क्षुद्र देवी देवता हमें घेरे हुए रहते हैं .जब भी हम कोई भी मंत्र जप या साधना करते हैं उस का सारा प्रभाव वे ग्रहण कर लेते हैं , तो इस तरह से हमारा कठिन श्रम निष्फल हो जाता हैं अंत में हम इस पर या उस पर बात पर अपनी असफलता का दोष मढ़ते हैं. हमें इस थी ओर भी ध्यान देना ही चाहिए , दूसरी महवपूर्ण बात ये हैं की दिन प्रति दिन के दैनिक जीवन में हम अपने विचार अच्छे या बुरे किसी भी परिचित/अपरिचित महिला/पुरुष के बारे में नियंत्रित नहीं कर पाते , ये भी हमारे साधनात्मक जीवन की उर्जा को क्षय करने वाले हैं जिसके फलस्वरूप हमारी धनात्मक उर्जा नष्ट हो ती रहती हैं .प्रारंभ में यह विचारों ओर कार्यों को नियत्रित करना इतना आसान नहीं हैं ,तंत्र हमें बलपूर्वक नियत्रण करना नहीं सिखाता हैं बल्कि हमें समझाता हैं की हम अन्दर चल रही प्रक्रियाओं को समझे , ओर जैसे ही हम समझे इनसे हमें आपने आप पर स्वतः ही नियंत्रण आ जायेगा .

यदि आपके संपर्क क्षेत्र में यदि बहुत सारे ऋ णा त्मक विचार धारा के लोग हैं तो आपको इस बारेमें भी सोचना चाहिए , येभी साधना सफलता में बाधक हैं .

मैं सोचता की अभी भी आप यदि मेरे दृष्टी कोण से सहमत न हुए होतो में महा ऋ षी श्री अरिविंद घोष जी शिष्य "श्री माँ" के जीवन के बारेमें उन्होंने लिखा हैं की बचपन में वे वे एक प्रार्थना गृह में जाया करती थी,जहाँ पर बड़ी मकड़ी छत पर रहती थी, वह मकड़ी सभी व्यक्तियों के द्वारा किजाने वाली प्रार्थना को ग्रहण कर लेती थी , क्या इस बात पर आसानी से बिश्वास कर सकते हैं , पर आध्यत्मिक जीवन के बहुत से ऐसे तथ्य हैं जिनके ऊपर सामान्य व्यक्ति बिश्वास ही कर प् सकता हैं

जब तक की वह स्वयं किसी भी दिव्य गुरु की शरण में आ पाया हो .

ghosh of pandichery , who know not about her, she also wrote that in a particular church where she in her child hood used to go , there was a big spider on the ceiling , that spider consume all the prayer offered by the people in that church, can you believe that ,or think this is believable but .spiritual field has so many secret that normal general people cannot understand till he comes under the divine shadow of a true guru

we always take this or that great diksha but are you aware of the fact that their effect are also day by day decreasing in fighting our negativism. a very highly placed army doctor , our guru brother once I asked him , now what is the status of his spiritual level since in first Allahabad shivir Sadgurudev himself talked about him on . he simply replied I have to again take diksha from the beginning ,

why so..

you are already taken so many before..

Sadgurudev ji told him that all the power of that Diksha already utilized so...

But question is here, til we not control our thought , til that our faith in Sadgurudev ji not so strong, or on sadhana and mantra tantra not so strong, or we are not able to take any great diksha than.. what is left for us..................

हम लगातार ये या वह दिव्य दीक्षा गुरु त्रिमूर्ति जी से लेते हैं रहते हैं पर क्या आप इस तथ्य से अवगत हैंकि इन दिव्य दीक्षाओं का अ सर भी लगातार हमारे जीवन की ऋणा त्मक परिस्तितियों से संघर्ष करते करते धीरे धीरे कम हो जाता हैं . एक भारतीय सेना में उच्च पदस्थ गुरु भाई जिनके बारेमें अलाहाबाद शिविर में सदगुरुदेव ने हम सभी से परिचय कराया था , उस घटना के कई वर्षों के बाद जोधपुर गुरुधाम में मिलने पर में उनसे पूछह की आपका सधान्त्मक स्तर तो बहुत ही अच्छा होगा ,उन्होंने कहा की सदगुरुदेव भगवान् ने उन्हें फिर से सभी दीक्षाएं लेने को कहा हैं

पर क्यों

अरे अपने तो पहले से भी कई दीक्षा ले चुके हैं

सदगुरुदेव जी ने कहा था की ली गए सारी दीक्षाओं का असर ,उपयोग हो गया हैं .

यहाँ पर एक प्रश्न सामने आता हैं कि जब तक मानसिक विचारों पर हमारा नियंतरण न आये, जब तक सदगुरुदेव जी के प्रति हमारा बिश्वास अडिंग न हो या साधना या मंत्र के प्रति आगाध श्रद्धा न हो , जब तक कोई महा दीक्षा प्राप्त का कर ले तब तक क्या हम हाँथ पर हाँथ रखे बैठे रहे.

जहाँ पर परमहंस निखिलेश्वरानंद जी हैं वही पर विजय हैं जीत हैं वहीँ सब कुछ धनात्मक हैं.इसलिए जो कुछ भी सदगुरुदेव जी से सम्बंधित होगा उसमें स्वतः ही उनकी महानता दृष्टी गत हो गी ही . फिर चाहे वह गुरु मंत्र , गुरु यन्त्र हो , ओर यही बात पुर्णतः से लागु होती हैं इस महान , विशेष कवच पर भी .क्या कुछ भी संभव नहीं हो सकता हैं इस कवच के माध्यम से ,अर्थात सब कुछ पुर्णतः संभव हैं . यदि आप अभी भी ये सोच रहे हैं की ये तो सामान्य सी बात हैं जो की हर कवच के साथ लिख दी जाती हैं .ध्यान रखे ये कवच उन सभी कवच की श्रेणी का नहीं हैं ये तो हमारे सदगुरुदेव जी से संबंधित हैं . आप ये बात पुर्णतः ध्यान रखे की जिन्होंने भी सदगुरुदेव जी का सन्यास काल में एक क्षण के लिए भी दर्शन कर पाए थे , उन्हें स्वतः ही पूर्ण शक्तिपात हो जाया था ,

Where paramhansa Nikhileshwaraanand ji , is, there is victory and all the positive is. So anything related to Gurudev ji definitely have the greatness of our Poojya Sadgurudev ji, either guru mantra, of him, guru yantra and same things applicable of this great kavach.nothing can be impossible from this kavach, oh you think this is a common word written of any kavach, but keep in mind all are not that type of kavach like this one of our ever Sadgurudev ji's kavach,.people were lucky to see even a second glimpases of Sadgurudev ji and have shaktipaat , than think we are so close to him how much lucky, and when Sadgurudev very own kavach is available to children like than what is consider more boon .

Dear one not to be so disappointed, Sadgurudev ji 'sanyasi shishy swami shridharaanand ji living in siddhasharam had make a such a prayog/kavach ,we knew as sri nikhileshwaraanand kavach, and that Sadgurudev ji 's blessing that too is available to us .many of you already aware of that that kavach is available in ***danaik guru poojan vidhan*** book in the last pages, and in complete form OF that kavach (WITH vINIYOG AND KAR NYAS AND HRDYA NYAS) was first appeared in page 33 of july 1993 issue of MANTRA TANTRA YANTRA VIGYAN .

And what will be the process of applying

फिर उनके सन्यासी स्वरुप से संबंधित ये कवच के बारे में लिखना मानो सूर्य को दीपक दिखाना हैं . सोचे हम सभी उनके बच्चे कितने भाग्यशाली हैं जो उनके इस महत्पूर्ण कवच जो आज हमारे पास उपलब्ध हैं , उनकी कृपा के अतिरिक्त क्या हैं .

प्रिय गुरु भाइयों क्यों निराश होना, जबकि सदगुरुदेव जीके सिद्धाश्रम स्थित सन्यासी शिष्य स्वामी श्री धरा नन्द जी ने इक प्रयोग रूपी यह महत दुर्लभ कवच को प्राप्त कर /निर्माण कर ,सदगुरुदेव जी आशीर्वाद स्वरुप से हम सभी को उपलब्ध कराया हैं.आप में से अनेक इस कवच के बारे में पहले से ही जानते हैं यह कवच "दैनिक गुरु पूजन विधान" किताब के अंतिम प्रष्टों में दिया हुआ हैं . (कर न्यास , ह्रदय न्यास , ओर विनियोग के साथ ये कवच विस्तार से "मन्त्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका के जुलाई १९९३ अंक के पेज ३३ पर दिया हुआ हैं)

पर इस का उपयोग या प्रयोग किस प्रकार से करना हैं , इस का पूर्ण पाठ सम्पूर्ण न्यास , विनी योग सहित किसी भी साधना के प्रारंभ और अंत में जरुर करे , जिससे की साधना का प्रभाव दोनों ओर से कवचित हो सके , ओर हमारे मंत्र जप का प्रभाव काल का शिकार न बने , न ही कोई अद्रश्य सत्ता उसके प्रभाव को हम से छीन सके .कवच का सुरक्षात्मक घेरा सभी १० दिशाओं से हमें कवचित कर सफलता दे सके . इसका तो येभी मतलब हुआ की इस कवच का हम प्रयोग किसी भी साधना फिर चाहे वह शमशान या अघोर साधना ही क्यों न हो , यदि उसमें आपको कोई भी सुरक्षा चक्र निर्माण की विधि न प्राप्त हो .उसमें किसी भी आवश्यकता के समय बेहिचक किया जा सकता हैं . हाँ ये बात भली भांति जन ले की शमशान कोई खेल का मैदान नहीं हैं जिसमें आप कोई भी मन से खिल वाड करने को स्वतंत्र हैं और ऐसा करने पर आप उसके परिणाम को सहन करने की लिए फिर तैयार रहे. तो आप ये सोच सकते हैं की किसी भी प्रकार की साधना में सामान रूप से उपयोगित ये कवच क्या उनके द्वारा दिया गया महत वरदान ही नहीं हैं ...

यदि आप इस महत कवच का प्रयोग अपनी दैनिक या हमेशा की जाने वाली साधना में यदि अब भी

that do recite with full faith and devotion and heart to our beloved Sadgurudev ji in the beginning and after of the sadhana that makes a full protection of your sadhana mantra jap not to be wastes / theft by any un foreseen forces. Kavach is protecting coat/shield working all the 10 direction around us. and this mean kavach is equally applicable to sadhana related to home . what will happen when we do any type of sadhana in shamshan can anything protect us in time of need , if we do not know any protecting things, firstly try to understand that shamshan is not a play ground where you go for just play doing thing whatever you like ,if you do any thing there than ready to bear consequences. shamshan sadhana and aghor sadhana or any type of sadhana you can think, now realize what a great boon given to us from Sadgurudev ji to our guru bhai. Now even if you do not apply daily or routinely done sadhana than whose fault is this, I also pray that we all benefitted by that by applying in day to sadhana. Have a blessing of our sadgurudev ji...	नहीं करते हैं तो ये किसकी गलती होगी ...हम सभी इस कवच का प्रयोग अपने हर साधना में कर सदगुरुदेव के ज्ञान को अंतर समाहित कर उनका गौरव प्रवर्धित करे

श्री निखिलेश्वरानंद कवचम

ॐ अस्य श्री निखिलेश्वरानंद कवचस्य ,श्री मुदगल ऋषि: .अनुष्टुप छंद :.

श्री गुरुदेवो निखिलेश्वरानंद परमात्मा देवता .

"महोस्त्वं रूपं च " इति बीजम.

"प्रबुद्धम निर्नित्यमिति " कीलकम .

"अथौ नैत्रं पूर्ण " इति कवचम .

श्री भगवतो निखिलेश्वरानंद प्रीत्यर्थं पाठे विनियोग :.

कर न्यास :

श्री सर्वात्मने निखिलेश्वराय - अन्गुष्ठाभ्यां नमः .

श्री मंत्रात्मने पूर्णेश्वराय - तर्जनीभ्यां नमः .

श्री तंत्रात्मने वागीश्वराय - मध्यमाभ्यां नमः .

श्री यंत्रात्मने योगीश्वराय - अनामिकाभ्यां नमः .

श्री शिष्य प्राणात्मने सच्चिदानंद प्रियाय - कर तल कर पृष्ठाभ्यां नमः .

अंग न्यास :

श्रीं शेश्वर: हृदयाय नम : .

ह्रीं शेश्वर: शिरसे स्वाहा .

क्लीं शेश्वर: शिखायै वषट .

तंप् सेश्वर : कवचाय हुम .

तापे शेश्वर: नेत्रयाय वौषट .

एकेश्वर: करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट .

रक्षात्मक देह कवचम

शिरः सिद्धेश्वरः पातु ललाटं च परात्परः |
नेत्रे निखिलेश्वरानन्द नासिका नरकान्तकः || १ ||

कर्णौ कालात्मकः पातु मुखं मन्त्रेश्वरस्तथा |
कण्ठं रक्षतु वागीशः भुजौ च भुवनेश्वरः || २ ||

स्कन्धौ कामेश्वरः पातु हृदयं ब्रह्मवर्चसः |
नाभिं नारायणो रक्षेत् उरुं ऊर्जस्वलोऽपि वै || ३ ||

जानुनि सच्चिदानन्दः पातु पादौ शिवात्मकः |
गुह्यं लयात्मकः पायात् चित्तंचिन्तापहारकः || ४ ||

मदनेशः मनः पातु पृष्ठं पूर्णप्रदायकः |
पूर्वं रक्षतु तंत्रेशः यंत्रेशः वारुणीँ तथा || ५ ||

उत्तरं श्रीधरः रक्षेत् दक्षिणं दक्षिणेश्वर |
पातालं पातु सर्वज्ञः ऊर्ध्वं मे प्राण संज्ञकः || ६ ||

कवचेनावृतो यस्तु यत्र कुत्रापित गच्छति |
तत्र सर्वत्र लाभः स्यात् किंचिदत्र न संशयः || ७ ||

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं |
धनवान् बलवान् लोके जायते समुपासकः || ८ ||

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः |
नश्यन्ति सर्वविघ्नानि दर्शानात् कवचावृतम् || ९ ||

य इदं कवचं पुण्यं प्रातः पठति नित्यशः |
सिद्धाश्रम पदारूढः ब्रह्मभावेन भूयते || १० ||

Gopniy Shukra Tantra Sadhana

गोपनीय शुक्र तंत्र साधना

जो साधक के लिए अनिवार्य ही है ,को सिद्ध करने का दुर्लभ विधान

Shivmesh Brother - Gurudev, yesterday also, the same incident happened with me…..What's my fault???? I am performing this act whole heartedly from so many years, but the moment I reach near to the success, each time the same incident happens…..For what reason, I am suffering for this…..Where I am lacking in my devotion ???? Shivmesh brother was crying in front of Sadgurudev….Neither his sobbing stopped nor he stopped crying… I was standing on the main door as Sadgurudev has called me up with a glass of water….When I was about to enter in the room, I heard this conversation….He was yelling with tears in his eyes that	गुरुदेव कल फिर मेरे साथ वही घटना घटित हुयी है , आखिर मेरा क्या दोष है? पूर्ण मनोयोग से मैं पिछले कई वर्षों से ये साधना कर रहा हूँ पर जब भी मैं सफलता के निकट पहुचता हूँ , हर बार बस वही घटना घटित हो जाती है. आखिर किन कर्मों का फल मैं भुगत रहा हूँ? क्या कमी है मेरी साधना में. शिवमेश भाई सदगुरुदेव के चरणों से लिपट कर रोते हुए कह रहे थे. ना तो उनकी सिसकियाँ बंद हो रही थी और न ही उनका प्रलाप. मैं दरवाजे पर खड़ा था और गुरुदेव ने मुझे पानी का गिलास लेकर भीतर बुलाया था. मैं पानी का गिलास लेकर जब भीतर पंहुचा तो ये आवाज मेरे कानों में पड़ी. वे रोते हुए कह रहे थे – हे गुरुदेव न तो कभी मैं विषय वासनाओं का चिंतन ही करता हूँ और न ही कभी कोई तामसिक आहार का सेवन ही मैंने किया है, मैं स्वयं पाकी (खुद भोजन बनाकर खाने वाला) हूँ , तो जब ऐसी कोई गलती मैंने की ही नहीं तब साधना के मध्य कामुक चिंतन और स्वप्नदोष कैसे संभव है???? और जब भी मैं साधना के अंतिम चरण की और अग्रसर

होता हूँ ये क्रम घटित होने लगता है.

Shivmesh Brother -Sadgurudev I am never engaged in the materialistic things nor I have ate any Non-vegetarian food, I myself cook the pure vegetarian food….When I have not done any mistake, then how the indecent feelings and Nocturnal Emission (Swapnadosh) are possible????? And whenever I reach at the last point of my devotion, this happens…..

पिछले १७ वर्षों से मैं इस स्वप्न को साकार करने में लगा हूँ और हर बार माँ ललिताम्बा का प्रत्यक्षीकरण बस स्वप्न ही बन के रह जाता है. ब्रह्माण्ड स्तम्भन, ब्रह्माण्ड भेदन और अष्टादश सिद्धियाँ तो मेरा सपना ही रह जाएँगी. अब मुझे इस जीवन से कोई मोह नहीं है,मैं इस शरीर को नष्ट कर देना चाहता हूँ.....

From last 17 years, I am trying my best to achieve my this dream and every time it becomes just a dream to feel the experience of Maa Lalitamba…..I think all the acts like Brahmand Stambhan, Brahmand Bhedan and Ashtadash Siddhi will become only dream of mine…..I am no more interested in my life and I want to end this life….

बच्चों के जैसे बाते न करो- सदगुरुदेव ने डपटते हुए कहा .

तुम जिस सफलता को पाना चाहते हो उसके लिए साधक अपना जीवन लगा देते हैं . क्या ब्रहमांड भेदन इतना सहज विषय है की बस उठे और हाथ बढाकर उसे वृक्ष से तोड़ लिया. अरे जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की क्रियाओं में ही आपका हस्तक्षेप हो जाये तो भला बाकी क्या रह जाता है .

Sadgurudev – Don't act childish….You want to achieve that success for which the devotees give their whole life…. & what do you think that Brahmand Bhedan is such an easy subject that you just raise your hand and it will come like a fruit from the tree…..When the interference occurs in the work of the Universe activities, then what next remains????

तो फिर मैं क्या करूं ??

Shivmesh Brother - Then what will I do???

अच्छा बताओ मानव जीवन के चार पुरुषार्थ कौन कौन से हैं- सदगुरुदेव ने पूछा.

Sadgurudev – Ok, now tell me what are the four main "Purusharth"????

जी धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष .

Shivmesh Brother -These are Dharma, Arth, Kaam & Moksh

ठीक, पर क्या तुम्हे पता है की मोक्ष का अर्थ मृत्यु कदापि नहीं होता . वास्तव में मोक्ष को लेकर भ्रांतियों के शिकार हैं सभी. मोक्ष तो समस्त इच्छाओं के पूर्ण होने पर पूर्ण तृप्त होने की क्रिया है जहाँ पर कोई वासना, कोई चाह शेष न रह जाये. पर हम तो भ्रम जाल में फँसे हुए हैं. और मनुष्य जब साधक बनकर पूर्णत्व अर्थात मोक्ष के मार्ग पर बढ़ता है तो उसकी अपनी सहचरी ये प्रकृति उस परम लक्ष्य तक पहुचने के पहले उसे भली भांति परख लेती है. और तुम्हे पता है ये परीक्षा कहाँ होती है ??

जी मुझे नहीं पता ...

देखो हमारी सभी शक्तियाँ और हमारी कमजोरियां हमारे भीतर ही होती है , हैं ना.

जी बिलकुल है .

Sadgurudev – That's right….but do you know

that the Moksh does not at all related with Death….Eventually, many people are confused between Death and Enlightenment……Moksh is related with the complete satisfaction of the total desires of a person where no desires left….but we all are stucked in illusions and when a simple man turns into a devotee and walks on the path of completeness i.e. enlightenment then his basic nature verifies him before achieving his main aim and target….and do you know, where this exam happens ????

Shivmesh Brother -No, I don't know this…

Sadgurudev – Look, all our unconscious powers and weakness lies in ourselves, right???

Shivmesh Brother -Yes, that's true…

Sadgurudev – Then you must not be aware what are mythological and holy books says….They states that "Yat Pinde Tat Brahmande"….that means whatever lies inside us is visible in this Universe and similarly we see the beauty of nature from outside, the vacuum and capabilities lies inside us….And you only think, the things which lies inside us, we will be more able to understand the loops and holes rather than any outsider….But, remember this examination of the Nature differs for each person….A normal person gets engaged in the materialistic things and he is not able to focus on the aim and then the person pass away all his whole life in filling his greed and dies….But, when a person fights against all the odds to acquire his destiny he has to face all the difficult tasks of this nature….

तब क्या तुम्हे ये नहीं पता की शास्त्र क्या कहते हैं. शास्त्र का ही उद्घोष है " यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे" अर्थात जो कुछ हमारे भीतर है वही इस बाह्यागत ब्रह्माण्ड में दिखाई पड़ता है. और जिस प्रकार प्रकृति की सुंदरता हमें बाहरी रूप से दिखती है उसी प्रकार उसकी न्यूनता और सामर्थ्य हमारे भीतर ही होता है . और तुम खुद ही सोचो जो हमारे भीतर होगा उसे किसी अन्य की अपेक्षा हमारे कमजोर पक्ष की कही ज्यादा जानकारी होगी. परन्तु प्रकृति का परिक्षण व्यक्ति विशेष के लिए भिन्न भिन्न प्रकार का होता है . सामान्य मानव को उसकी दमित वासनाओं में उलझा कर वो लक्ष्य के बारे में सोचने का समय ही नहीं देती और एक आम इंसान अपने लालच का मटका भरते भरते ही इस जीवन से चला जाता है. परन्तु जब कोई अपनी नियति को प्राप्त करने की और कदम बढाता है तो उसे सबसे पहले इसी प्रकृति का विरोध झेलना पड़ता है.

भला ऐसा क्यों??

क्योंकि जब आप अपनी नियति अपने अस्तित्व को प्राप्त करने की और अग्रसर होते हो तो उसका अर्थ होता है पूर्णता को प्राप्त कर लेना, क्यूंकि विराटता सिर्फ श्री कृष्ण में ही नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य में निवास करती है. और अपने अस्तित्व को जान लेने का अर्थ ही होता है अपनी विराटता को समझ लेना.तब ऐसा क्या है जो हम संभव नहीं कर सकते , ऐसा क्या है जो हमारी इच्छा मात्र से हमें प्राप्त नहीं हो सकता तब प्रकृति आपकी सहचरी बनती है न की स्वामी, परन्तु तब भी वो विराट मानव प्रकृति के नियमों की अवहेलना नहीं करता , क्योंकि विराट भाव मिलने का दूसरा अर्थ पूर्ण विवेक की प्राप्ति भी तो होता है . परन्तु ये इतना सहज नहीं होता, क्योंकि जन्म के साथ ही मानव प्रकृति के चक्र में फँस जाता है. या ये कह लो की हमारे जन्म के पहले ही प्रकृति को ज्ञात होता है की हम क्या बनेंगे. तब उसके लिए तो रास्ता आसान हो जाता है .

वो कैसे ??

क्योंकि हमारा जीवन प्रकृति की उन्ही शक्तियों में से एक नवग्रहों के अधीन हैं . और ये नवग्रह ही उन चारो पुरुषार्थों के प्रतिनिधि हैं. और सामान्य ज्योतिष इन बातों को नहीं समझ सकता . इसके लिए ही तो जीवन में सद्गुरु की आवश्यकता होती है.

Shivmesh Brother - But why this happens???

Sadgurudev – Because whenever you tries to accomplish your identity from your destiny it means you are very near to accomplish the completeness because the vastness not only exists in Shri Krishna but in every person & to understand the complete identity means to know the vastness of our selves….Then what is it which stops us to make it possible just as we desire….What is it that even when the nature becomes friendly not the master, still that vastness of the person cannot avoid the rules of the nature & that is because the experience of this vastness is another meaning of acquiring complete knowledge and sense of yourself…..But, this is not so much easy because a human gets entangled in the basic human nature as soon as he gets life or you can say before our birth the nature is well aware what we will be in future and the way becomes easy for the person…

Shivmesh Brother - But how???

Sadgurudev – Because our life is in under the supervision of the almighty powers of one of the Nine ruling planets and these ruling planets are the representatives of the four "Purusharths" & the normal astrology cannot explain these aspects….For this, you have to be in guidance of Sadgurudev….Only, he can tell which planet is in favor and which is against his work….but, the main obstacle in the path of Moksh or Dharma is the intense feeling of all the lecherous things and that too in the devotion time and the limit crossed when this feeling gets increased for the devotional God & Goddess and even for the Guru also……and this point is not under the control

वे ही बता सकते हैं की कौन सा ग्रह तुम्हारे लिए प्रतिकूल है और कौन सा अनुकूल. पर धर्म पथ पर या मोक्ष के मार्ग में जो सबसे बड़ा व्यवधान होता है वो होता है काम भाव का अति आवेग , वो भी साधना के दिनों में और हद तो तब होती है जब वो आवेग साधनात्मक इष्ट , समबन्धित देवी देवता और यहाँ तक की गुरु के प्रति भी हो जाता जाता है . और यही पर साधक के बस में कुछ नहीं होता. जहाँ जीवन में आर्थिक या अध्यात्मिक उन्नति का परिचायक शनि होता है , वहीं पर उसकी **दमित काम भावना, कुत्सित या सुप्त विचार, साधनाओं में व्यवधान के रूप में कामुक चिंतन, स्वप्न दोष, आसन पर बैठने की क्षमता में न्यूनता,चित्त की बैचेनी और आसन स्खलन** आदि का प्रतिनिधित्व शुक्र ग्रह करता है , शुक्र स्त्री ग्रह है, सौंदर्य और प्रेम का प्रतीक है पर तभी तक जब तक उसकी शक्ति संतुलित है . परन्तु ९७% व्यक्तियों की कुंडली में ऐसा नहीं होता है . वे शनि,मंगल अथवा राहू केतु की शक्ति को तो मानते हैं और उसका समाधान करने का भी प्रयत्न करते हैं पर शुक्र को तो गिनती में ही नहीं रखते , अरे बारहवाँ भाव मोक्ष का तो है पर यदि उसमे शुक्र की पूर्ण संतुलित अंशों में निरापद उपस्थिति हो जाये तो ये सोने में सुहागा ही होगा. अब हर कुंडली में तो ये नहीं हो सकता परन्तु यदि शुक्र को प्रयासपूर्वक व्यक्ति संतुलित कर ले तो निश्चय व्यक्ति को इसके सकारात्मक परिणाम मिलते ही हैं. यथा साधना में पूर्ण सफलता,प्रबल आकर्षण क्षमता,ऐश्वर्य, विशुद्ध प्रेम की प्राप्ति और सबसे बड़ा काम भाव पर विजय,यदि सामान्य रूप से एक आम व्यक्ति भी इस साधना को संपन्न कर लेता है तो उसे भी अद्वितीय सुंदरता,पूर्ण ऐश्वर्य और विशुद्ध प्रेम की प्राप्ति होती ही है.यदि कोई स्त्री या पुरुष अपने आप को कुरूप मानता हो या सौंदर्य में वृद्धि करना चाहता हो तो ये एक अद्भुत प्रभावकारी साधना है. और तंत्र अपनी कमियों को स्वीकार कर विजय प्राप्त करने की ही क्रिया है, ना की उसका दमन करने की. तुम भोजन में सात्विकता बरत सकते हो पर तुम्हारे शरीर, तुम्हारे चिंतन का जो प्रतिनिधित्व कर रहा है उसके लिए तुमने क्या किया? क्या कभी ये सोचा है ? तुम अकेले नहीं ८०% साधक इसी बाधा में फस कर सफलता से कोसो दूर रहते हैं.

आपने मेरी आँखे खोल दी- शिवमेश जी सदगुरुदेव के चरणों में गिर पड़े .

of the devotee where the Saturn (Shani) rules the financial and dedicational aspects as well as Venus (Shukra)rules all the lecherous feelings with the nocturnal emissions or diverting feelings, the capacity gets decrease for the devotion…because Venus represents – a female planet and represents love and beauty till the time the powers are balanced….but at the times,97% of the horoscopes does not focus on this part…People assumes Mars(Mangal),Rahu and Ketu as the main powerful planets and finds way to cure them but ignores the Venus planet(Shukra)…without knowing the fact that the 12th position is of Moksh and if the Shukra presence is there with the proper fragments it will be the best ever position…..Now, this is not possible in each horoscope. but if a person tries to balance the position of the Venus (Shukra),the person will definitely gets the positive result…

When the devotee performs the devotion with complete dedication he will acquire all the powers of strong attraction, wealthness, pure love & the most important victory on all the feelings…..and if a normal human being also performs this he will become able to control all the above powers….If a person feels that he or she is not attractive and is ugly can perform this devotion and wants to develop the beauty, this is the best unique devotion to get the same accomplished…& the Tantra is meant to control and come over all the lacking not to demoralize the aspects….You can maintain the dignity of the food as you wants but what about the body demands and the representative who is governing your emotions and feelings….What have you done for that???Have you ever thought for that????You are not alone; my son….80% of the devotees gets stucked in this problem and remains far away from the success…

अब आप बताइए मैं इस क्रिया को कैसे संपन्न करूँ.

देखो शिवमेश हो सकता है की हमें लगता हो की हमारे जन्मचक्र में ग्रह अनुकूल बैठा है पर वास्तव में ऐसा नहीं होता है . आज जो जन्मकुंडली का स्वरुप समाज में प्रचलित है वही मतभेद में घिरा हुआ है ,किसे जन्म समय मानें यही स्पष्ट नहीं है तो कुंडली का सही निर्माण और विवेचना कैसे संभव होगी.और मानव के जीवन में सिर्फ इस जीवन का नहीं बल्कि पिछले जीवनों का भी प्रभाव रहता है क्योंकि ये तो एक श्रृंखला है जो उत्पत्ति से अभी तक चली आ रही है. हो सकता है की आज तुम्हारा शुक्र अनुकूल हो पर विगत किसी जीवन में तुम उसकी प्रतिकूलता से पीड़ित रहे हो तब ऐसी दशा में उसका साधनात्मक परिहार कर लेना कही ज्यादा बेहतर रहता है . ऐसे में वो तुम्हारी साधना में बाधा भी नहीं बनेगा उलटे तुम्हे अनुकूलता देकर तुम्हारे अभीष्ट को भी दिलवाएगा. प्रत्येक साधक को अपने जीवन में इस साधना को एक बार अवश्य कर लेना चाहिए और हो सके तो अपने साधना जीवन के प्रारंभ में ही ऐसा कर लेने पर कही ज्यादा अनुकूलता होती है . और इस साधना को कोई भी कर सकता है , ये विचार करने की कोई आवशयकता नहीं की हमारी कुंडली में शुक्र या अन्य ग्रहों की क्या स्थिति है.

इतना कहकर सदगुरुदेव ने इस साधना का विधान उन्हें बता दिया , और उन्हें प्रणाम और श्रृद्धा अर्पित कर शिवमेश वह से प्रसन्न मन से चले गए.

गुरुदेव अब ये पानी ?????

अब इसकी कोई जरुरत नहीं –सदगुरुदेव ने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराकर कहा .

बाद में मैंने भी इस साधना को संपन्न कर इसके लाभ को प्राप्त किया और कई वर्षों बाद माँ कामाख्या पीठ में अचानक कालीदत्त शर्मा जी के यहाँ जब शिवमेश जी से मेरी मुलाकात हुयी तो उनका चेहरा सफलता के प्रकाश से जगमगा रहा था. मेरे पूछने पर उन्होंने बताया की हाँ सदगुरुदेव के यहाँ से लौटने के बाद उन्होंने इसी साधना को किया और इसके बाद उस साधना को संपन्न किया तो माँ ललिताम्बा की वो अद्भुत साधना पहली बार में ही सफलतापूर्वक संपन्न हो गयी , और मुझे वो सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी जिनके लिए कई वर्षों से मैं साधना कर रहा था . उन्होंने अपनी साधना शक्ति से

Shivmesh Brother - You have opened my eyes...& he fell in the holy feets of the Sadgurudev…Pls.tell me how can I perform this act????

Sadgurudev – Look Shivmesh,it may happen that we feel that this planet is in favor in our horoscope, but this is not the actual position…..In today's context the format of the horoscope is having too many different views….When we are not aware what is the correct birth time how can we analyze the right and accurate calculations because the person life not only gets affect by the current life but also gets affected by the previous birth as it is a long chain which is in existence from the first survival till now….It may happen that in today life, Venus planet is in favor with you but in your previous birth, it was against your positions….In this condition, to know and to at according to the position is the right thing for the devotee….By this,that planet will not harm you but will provide favor for your devotion and will fulfill your aim too…Each devotee needs to conduct this act in his devotional life once and is possible in the first learning phase gives more favor…This devotion can be done by anyone and no need to give second thought on this that in which position the Venus is lying with other planets…

After stating this Sadgurudev explained the method to perform this act and Shivmesh Brother went happily with the blessings of the Sadgurudev from there….

Me – Gurudev, what about the glass of water????

Sadgurudev – Now there is no need

कई अद्भुत कार्य भी करके मुझे दिखाए. सदगुरुदेव ने जो विधान बताया था वो मैं नीचे वर्णित कर रहा हूँ.

अनिवार्य सामग्री-सफ़ेद आसन व वस्त्र(साधक सफ़ेद धोती और सध्काएं सफ़ेद साडी का प्रयोग करे), ताम्र पत्र या रजत पत्र पर उत्कीर्ण चैतन्य और पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित शुक्र यंत्र,सफ़ेद हकीक की माला, घृत दीपक,अक्षत , सफ़ेद पुष्प(मोगरा मिल सके तो अतिउत्तम),खीर आदि.

प्रातः काल स्नान कर सफ़ेद धोती धारण कर पूजा स्थल में बैठे और आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) दिशा की और मुह कर बैठे , पूर्व भी किया जा सकता है. सामने बाजोट पर सफ़ेद रेशमी वस्त्र बिछा ले और उस पर चावलों की ढेरी बनाकर उस पर शुक्र यंत्र की स्थापना कर ले . हाथ में जल लेकर शुक्र साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए सदगुरुदेव और भगवान गणपति से प्रार्थना करे. तत्पश्चात गुरु मंत्र की ४ और गणपति मन्त्र की १ माला संपन्न करे , इसके बाद शुक्र का ध्यान निम्न मन्त्र से करे. और इस ध्यान मन्त्र को ५ बार उच्चारित करना है.

हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं ब्रहस्पतिम्.

सर्वशास्त्र प्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्..

इसके बाद उस यंत्र को जल से स्नान करवा ले और अक्षत की ढेरी पर स्थापित कर उसका अक्षत,चन्दन की धूपबत्ती, घृत दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करे.पूजन करते हुए

ॐ शुं शुक्राय नमः अक्षत समर्पयामी ,

ॐ शुं शुक्राय नमः पुष्पं समर्पयामी , धूपं समर्पयामी .....

आदि कहते हुए पूजन करे. तत्पश्चात निम्न मन्त्र की ५१ माला जप करे और ये क्रम १४ दिनों तक करना है जिस्सके साधना में पूर्ण सफलता की प्राप्ति हो और सभी लाभ मिल सके.

मन्त्र- ॐ स्त्रीम् श्रीं शुक्राय नमः

और प्रतिदिन जप के बाद मन्त्र के अंत में **'स्वाहा'** लगाकर उपरोक्त मन्त्र के द्वारा सफ़ेद चन्दन बुरे की २१

son….Sadgurudev smiled at me…

After this incident, I performed this act and gets benefits from the same….After so many years at Kamakhya Peeth co-incidentally I met Shivmesh Brother at the house of Kalidutt ji Sharma….& I saw his face was gleaming with the success…..and he told me that after reaching back from the Sadgurudev place, he performed all the devotion and in the first time he was able to feel the great and divine experience of Maa Lalitamba and apart from this he was able to accomplish all the other devotions for which he was trying for so many years…He also demonstrated me many divine acts….I am explaining the ritual which Sadgurudev has told for the devotion….

Essential Things – White Mat with white clothes (white dhoti for men devotee and white saree for women devotee), fully active and complete accomplished Shukra Yantra carved either on the copper or silver foil, White Hakik Mala,Ghee,Deepak,White flowers(Jasmine – best option),Kheer,etc…

Process – Early morning after taking bath, put white clothes and sit in the Agneya (South-East)direction facing towards it, can also face in east direction…Put the silk cloth on the stand and keeps rice heap and establish Shukra Yantra on it…Take holy water in palms and pray to the Sadgurudev and Lord Ganesh for the success of the devotion…Afterwards, accomplish 4 Malas of Guru Mantra and 1 Mala of Ganpati Mantra….After this,medidate by assuming Shukra image by the following mantra and this dhyan mantra needs to be enchanted 7 times –

"Himkund Mranalabham Daityanaam Param

आहुतियाँ डाले , ये नित्य प्रति का कर्म है ,जिसे १४ दिनों तक करना ही है ,इसके पश्चात जप पुनः एक माला गुरु मन्त्र की करके जप समर्पण कर आसन से उठ जाये.

अपने २४ वर्षों के साधनात्मक जीवन में मैं हजारों गुरुभाइयों और साधकों से मिला हूँ और उनमे से बहुतेरे को मैंने इन्ही समस्या से पीड़ित पाया है . और इसी कारण मैं सदगुरुदेव से प्रार्थना कर उस अद्वित्यीय साधना को आप सभी के समक्ष रखा है ये विधान अभी तक गुप्त रखा गया था. यदि आप इसे अपनाएंगे तो यकीन मानिये आपको कदापि निराश नहीं होना पड़ेगा. अब मर्जी आपकी है.

Dhoomra Vigyan Tantra Rahasy
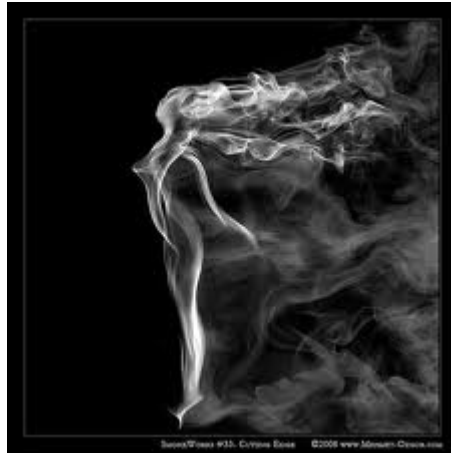
१०८ विज्ञानं में से एक दुर्लभ गोपनीय विज्ञानं के कुछ अनछुए पृष्ठ

In front of me there was Ashok, my cousin brother, was on the bed struggling for his life, will he survive or not? From his childhood he used to take all type of drugs in the company of sadhu and sanyashi without ever thought that it might leads to him at the door of death. Rear chances that he could survive now, unspeakable on the moment, I just asked him why? He anyhow gathered the strength replied me only that brother does not involve in this circle and this dhroom secret spoil my life.

मेरे सामने ही लेटा हुआ था अशोक, जो की रिश्ते में मेरा चचेरा भाई लगता हैं , मरणासन्न. पता नहीं जीवित भी रहेगा की नहीं. बचपन से ही साधुओ और सन्याशीओ के मध्य में उसने बिना कुछ सोच विचार किये नशीले पदार्थो का दम लगाना शुरू कर दिया था. और यह लत उसे ले डूबी ओर ले आई उसे मौत के मुख तक. शायद ही उसका बच पाना संभव हो. में कुछ बोल नहीं पाया बस पूछा की की क्यों? तो उसने जेसे तेसे मुझे इतना कहा की भाई इन चक्करों में मत पड़ना न ही किसीको पड़ने देना, इस रहस्य - धूम्र ने बर्बाद कर दिया मुझे.

देखके तरस आ रहा था मुझे उस पर, जीवन उसने बर्बाद किया ही था लेकिन देखा देखि में. अगर गांजा या चरस का सेवन करने से ही कोई

listening his word i was very sorry for him, he spoiled his valuable life ,just taking that very lightl, he never thought that if by just taking the drugs like ganaja and charas one may become the siddha than all the raods will be floded with sucha siddhas, drug taker are not the siddha. the world of siddha is very different one, where each process have definite purpose and meaning , if we follow any ritual than we are just expoiling ourself , due to such elements who are taking the name of tantra do fulfill their selfish deeds, no process of tantra is bad actually they are the way to reach ultimate goal not for tofulfill persons greeds. writing this i remembered the incedent..

सिद्ध बन जाता तो आज गली कुचे सिद्धो से ही भरे होते. नशा करने वाले सिद्ध नहीं होते. सिद्धो का संसार ही कुछ और हैं जहा पर कोई भी प्रक्रिया एक विशेष उद्देश्य के साथ होती हे, बिना कुछ सोचे समझे हम उनका अनुसरण करते हे और बर्बादी को अपनी तरफ मोड लेते हे. और ऐसे ही कुछ स्वार्थीओ के कारण पुरे तंत्र को भय से देखा जाता हे. कोई भी प्रक्रिया गलत नहीं होती जब वह मोक्ष का रास्ता हे भोग का नहीं. और यु ही बैठेबैठे याद आ गयी मुझे वो घटनाये...

Radiant faces, black hakeek and rudraksh rosary in his neck, deep reddish eyes with well built body, the person sitting with me in the room, in mysterious atmosphere, there was the none other than Tantrik PATRA, who have established various feats in tantra, I just checked and found it

तेजस्वी मुखमंडल, गले में काले हकीक और रुद्राक्ष की माला, गठीला शरीर, कुमकुम के सामान लाल आँखे, उस कमरे के रहस्यमय वातावरण में मेरे सामने बेठा हुआ ये वही व्यक्ति था जिसने तंत्र के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये थे. तांत्रिक पात्रा. घडी पर नजर डाली रात में १ बजे का समय हो गया था, वह अपने जीवन की दास्ताँ मुझे सुना रहा था, बीच बीच में धुए से कस लगाये जा रहा था, "मेरे फूफा जो की एक भयंकर तांत्रिक थे, उन्होंने वाम मार्गी पद्दति से खेचरी सिद्ध की थी, जिससे वह खटिया या पुरे पेड़ को अपने साथ उड़ा ले जाते" उसकी चमत्कृत कर देने वाली बाते कोई सुने तो सदा ही अविश्वास ही आए, लेकिन कुछ ही क्षणों में वो कुछ ऐसी चीज़े दिखा देता था की सामने वाला व्यक्ति नतमस्तक हो जाए.

साथ ही थे तांत्रिक पात्रा के शिष्य अविनाश जी ,रात की नीरवता में हम तीनो बाते कर रहे थे ,तंत्र जगत के रहस्यों की और अज्ञात तंत्रों की, जड़ता दूर करने के लिए अविनाश जी एक सिगरेट निकाली और धीरे

was1 Am at night, telling his life story and in between them smoking too.

"My phupha(uncle) is a fearful/dangerous tantraik thorough vaam margi process he achived the siddhita in khechrai process. Through that he can fly with bed or even the whole tree." His miraculous talks hardly earned believe from the surrounding person but within minite he shows something that everyone bows down to him.

In that deepening night we were accompanied by avinash ji, tantraik patra jis disciple were sitting there, talks were oriented towards tantra 's secrets and very confidential process. To remove the boredom avinash ji just lighted the cigarettes and take one or two kash , than "why to waste that smoke/ dhroom" patra ji shouted to him. He replied "who can destroy the droom /smoke," he instructed either to put out that cigarettes or give it that to him. He took the cigarettes in his hand wait for two minutes and move that in air and again give that back to avinnash ji, again avinash ji lighted that and have a kash, now the world has changed for avinash ji, later he understand that the tobacco of that

धीरे धुए को अपने अन्दर खीचने लगा, तभी उन्होंने एक दम लगाते हुए कहा की क्यों बर्बाद कर रहे हो धुए को ? उन्होंने कहा कहा पात्राजी धुए को कौन बर्बाद कर सकता हे. उसने कहा उसे बुझा दो या फिर मुझे दे दो, अविनाश जी ने वो सिगरेट उसे देदी, उसने आँखे बंद की और दो बार उस सिगरेट को हवा में घुमाया, फिर अविनाश को देदी, अब जब अविनाश जी ने कश लगाया तो एक अलग ही दुनिया थी, शुरू में समझ तो आया की यह तम्बाकू अब गांजा जेसी कोई चीज़ बन गयी हैं लेकिन उसके बाद की अनुभूति गज़ब की थी.

अविनाश जी ने बाद में कहा :

धीरे धीरे मेरा मन विचार शून्य हो गया, और आँखे बंद की तो बोध हुआ की जगत में हमारी गति ही क्या हे, सब तो उस ब्रम्ह के हाथ में हैं , वही जो कार्य करवाता हे उसे हम पाप या पुण्य मान लेने का बोध करते हैं , पर जब स्वयं में ब्रम्ह हैं और वह सदेव हर घटना में निहित ही हैं तो फिर क्या पाप और क्या पुण्य.... " उनको भूल, उनको चुन, जोगी अवधूत को पाप न पुन " आँखे खोली तो जेसे में निर्मल हो चुका था,मेरा दुनिया देखने के नजरिया ही बदला था. बस कुछ ही क्षणों की बात थी, मगर, सब कमाल तो उस धूम्र का ही था. मुझे आश्चर्य होना चाहिए था लेकिन उस समय मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ न ही कोई और भाव आया.

फिर खोज में लग गया की आखिर धूम्र ही क्यों? हविष्य को देवताओ तक पहोचाना धूम्र के माध्यम से ही संभव हैं. क्या खास बात हे इसमे जो एक क्षण में किसी को जीवन मुक्त करने की कबेलियत रखता हैं.

cigarettes changed to any ganaja like drugs, but the feeling was totally different.

Avinash ji later told me:

slowly slowly my mind became thought less,when i closed mine eyes ,found that in the whole universe where are we? everything is in his hand,whatever he do though us,we could foolish understand bad or good. when he is everywhere and in everywhere than what is punya or paap......""unko bhool,unko chun,jogi avdhoot ko pap na punah" means forget that ,selcet that, oh hey jogi for you never a sin can touch.when i opend mine eyes, i felt like i born agin, my attitide towards the world has changed, this only happens only in a second,but miracles has been done by that dhroom/smoke. i felt something amaze but at that time that feeling was even absent.

Later I searched why dhroom only. The havishya (food for god through yagya) is also reached to gods through dhroom /smoke. What that dhroom, has the power that in a second that can free a person.

सर्व जड़ का सत्व सार धूम्र ही हैं. जो शेष हे, जो अंतिम हैं, जो मुक्त हैं, जो स्थूल हैं तो सूक्ष्म भी, सभी में द्रश्यमान हैं तो अद्रश्य भी, जो साश्वत हैं ,हैं लेकिन अस्तित्व प्रकट करने पर ही दीखता हैं, वही हैं "धूम्र" .

सबसे पहले मैं ने जाना की आखिर चिल्लम या चुंगी जो कि नागा, नाथ अघोर सम्प्रदाय के मध्य प्रचलित हैं उसका क्या रहस्य हैं एक उच्च कोटि के अघोरी से जानने को मिला की " यह अति जटिल एवं गोपनीय क्रिया हैं जिसमे शिव और शक्ति का संयोग किया जाता हैं . विशेष मंत्रोचार से और विविध मुद्रा के माध्यम से जब चिल्लम सुलगाई जाती हैं तब उसमे योगिनी का आवाहन किया जाता हैं, और उसके सत्व को खिंचा जाता हैं, योगिनी का सत्व रज हैं जो की शक्ति का स्वरुप हैं. शरीर में रहे वीर्य को जो की शिव का स्वरुप हैं उसे शरीर में ही संगृहीत कर वायुवान बनाया जाता हैं.

जब इस शिव बीज और शक्ति बीज का आपस में वायु स्वरुप में ही संयोग कराया जाता हैं तो साधक सहस्त्रार भेदन कर लेता हैं ." इसमे भी अनेको भेद हैं जिसमे चिल्लम का चुनाव, जर्दा, उसे पीने के लिए मुद्राए, आसन, नाद और साफी जेसे अनेको भेद रहे हैं जिसे सिर्फ सिद्ध हस्त गुरु ही समझा सकता हैं. उदाहरण के लिए शाक्त मार्ग में दीक्षित साधको को कुण्डलिनी जागरण के लिए सुबह सिद्धासन में बेठ के दर्भासन पे अनामिका मुद्रा से लाल साफी से, शुद्ध किये हुए वछनाग का वनस्पति के संयोगो से जर्दा बना कर उसका सेवन कराया जाता हैं.

The essence of every stationery things in this world is dhroom. The remaining , is the end, is the free, that which is sthool and sooksham too.
Visible in all and invisible too. That is eternal but when take form visible than known as "dhroom"

इसी तरह अघोर और वाम मार्गी साधक अघोर प्याला का निर्माण करते हैं जिसमे स्वयं का मल एवं मूत्र भी होता हैं जिसे सुखा के श्मशान के मध्य में श्मशान भस्म के आसन पर क्रोध मुद्रा में मध्य रात्रि में, काली साफी का उपयोग करके सेवन करने से आसन सिद्धि एवं भूतकाल ज्ञान सिद्धि होती हैं इसी तरह के अनेको भेद हैं जो की गुरु गम्य हैं और ये भेद पाना आसानी से संभव नहीं हैं. बाकि तो नशा कर के अपने आपको बर्बाद ही करते हैं.

in the beginning I was willing to know what is the secret of chillam or chungi mostly available in naga, aghor or nath sect. through a highly accomplished aghor sadhu I was able to know that " this is very complex process through that shiv and shakti unite to one, though various mudra and mantra when chillam lighted up than aawahan of yogini is possible in that. The yoginis satv tatv has been attracted through that, this satv tatv is raj of her,is a form of shakti. And the veerya tatv, come to contact through the special process than through this body gets stored the essence in it , and body get highly energies.

पारद विज्ञानं के क्षेत्र में पांच प्रकार के वेध हैं लेप वेध जिसमे वनस्पति और खनिजों को पदार्थ पर लेप करके उसे वेध किया जाता हैं शब्द वेध जिसमे मांत्रिक प्रक्रिया और विशेष मुद्राओ से धातुओ को वेध करके परावर्तित किया जाता हैं, क्षेप वेध, जिसके माध्यम से तैयार किये रसायन को ही वेधित करके उसे धातु परावर्तित किया जाता हैं, कुंत वेध जिसमे तैयार किये गए रसायन की मात्रा उससे कई गुना ज्यादा मात्रा में वेध करती हैं,
और धूम्र वेध, जिसमे मात्र धूम्र के सहयोग से ही वेध किया जाता हे. इन पांच वेध में सबसे उत्तम धूम्रवेध कहा गया हैं. इसी तरह रसायन में, सोमल को शुद्ध कर उसे विशेष तरीके से चिल्लम पीने से शरीर में आतंरिक वेधन होता हे और योगी निर्जरा अवस्था को प्राप्त कर लेता हैं, कह ने की जरुरत नहीं हैं की यही धुए से अगर किसी हलकी धातु पर फूंक लगादी जाय तो वह स्वर्ण में परावर्तित हो जाती हैं.

When this shiv beej and shakti beej get united in air form , than sadhak 's shashtradhar get bhedit means sahstradhar bhedan Is possible. This process is very complex and own very hidden ways like the selection of chillam, tobacco, mudrayen , aasan, naad and safi . These all can be only taught by a competent master/guru.

कई विशेष उग्र साधनाओ खास करके भैरव साधना में

For example the sadhak belongs to shakat mat, if want to have kundalini jagaran has been asked to sit in siddhasan and in darbhasan using anamika mudra, with red safi , have to take a tobacco purified by using vachchanag , has been made,

Like that the sadhak belongs to Aghor and vaam narg sects makes a aghor pot in that have self stool and urine too, after fully dried in shamshan, at the night hour, on asan of ashes available shamshan through krodh mudra and with the help of black safi if consumed than the siddhi of aasan siddhi and bhut kaal kaal can be easily get. There are several such a various differences / process available but all are can be only get through a competent master. Getting that process is very difficult, others are just destroying themselves doing whatever they like taking the name of tatrik process..

There are five type of vedh mentioned in ras granth means granth related to parad field first one is lep vedha- through that, using various herbs and minerals a paste is made and vedh process can be done. second is the shabd vedh – through

जो की षट्कर्म से सबंधित होती हैं , गुरु द्वारा निर्देश होने पर कई बार साधक को धुए का सेवन करने से सिद्धता जल्द प्राप्त होती हैं क्योंकि धूम्र भैरव को प्रिय हैं और साधना के मध्य में भैरव का शरीर में निवास रहता हैं . लेकिन एसा कोई कोई विशेष साधना में ही विधान हैं. १०८ विज्ञानं में भी धूम्र विज्ञान का समावेश होता हैं जिससे धूम्र के माध्यम से पदार्थो का निर्माण करना, परिवर्तन करना या फिर सिर्फ धूम्र की सहायता से अष्ट सिद्धि प्राप्त कर लेना आदि सहज संभव हैं, मगर ये विज्ञान जरुर दुर्लभ हैं.

सदगुरुदेव को इस विज्ञान का भी पूर्ण रूप से ज्ञान हैं और उन्होंने अपने कई सन्याशी शिष्यों को इसमे पूर्ण निपूर्ण किया हैं.धूम्र के देवता सदाशिव धुम्रेश्वर स्वरुप में हैं. धूम्र के बारे में जितना लिखा जाए उतना कम हैं. मगर तंत्र में एसे अनगिनत रहस्य छूपे हुए हैं जिन्हें सिर्फ गुरु कृपा के माध्यम से ही जाना जा सकता हैं. बाकि तो व्यर्थ में नसे में आदि होके अपने अस्तित्व को समाप्त करने की मूर्खता करते हैं और कुछ अपने आपको महान कहने वाले साधू और तांत्रिक कुछ पैसे ठीकरो के लिए अपने ग्राहक शिष्यों को उलटी सीधी पट्टी पढ़ाके उनका जीवन नशे में बर्बाद करने से ज़रा भी कतराते नहीं.

Beej Mantra Rahasy

बीज मंत्रो से मंत्र सिद्धि

बीज मंत्रो के प्रकार और उनकी शक्ति से परिचित करता लेख

In the beginning there was a word alone , so whole universe is coming out of that word. Except god everything has a beginning and end, and for beginning there must be some seed required. And the what would be out come , totally depend upon what Is inside a seed. So word or seed definitely has some weight to carry or you can understand everything is depend upon that . what is mantra have you ever thought that is just a combination of some beej mantra and other helping words also.	जीवन के प्रारंभ में में केवल शब्द था .. ओर सारा विश्व इस शब्दसे ही उत्पन्न हुआ हैं . सिर्फ इश्वर के अलावा हर चेज का अदि ओर अंत हैं , किसी भी नए निर्माण के लिए बीज होना जरुरी हैं और क्या ओर किस प्रकार का निर्माण होगा ये तो पूरी तरह से बीज कि क्षमता ,गुण वत्ता पर ही निर्भर हैं इसलिए इस बीज या शब्द को समझना ही होगा ये तो मानना ही पड़ेगा की हर वस्तु (जीवित या निर्जीव) सभी के मूल में इस बीज की सत्ता हैं ही . मंत्र क्या हैं कभी आपने सोचा ? कुछ बीज मन्त्रों के साथ सहयोगी शब्दों से बना समूह ही तो हैं.फिर से जानना चाहूँगा की की क्यों इतने बीज मंत्रो की सहायता से एक मंत्र का निर्माण होता हैं . इन बीज मन्त्रों को समझने से पहले यह समझना जरुरी हैं की आखिर ये बीजमंत्र हैं क्या ? वास्तव में

and I gain ask you have you ever notices that why so many beej mantra is added to make mantra.

But before understanding the beej mantra , the question arises what is beej mantra. Actual they are the special holiest sound representing in writing combination of letter. Like hreem pronouncing as reem and in that remember h is silent through for writing is write like hreem , like that so many beej mantra..

How many beej mantra do you know? everyone raise hand ,but if I ask you what is rama beej?, which is vadhu (new bed) beej?, what is maya beej? , like that if I go on and on may be some of us have little problem to answer that .so first we try to understand that .taking some...

1. Maya beej mantra – hreem
2. Kaam beej mantra – kleem
3. Rama beej mantra – shreem
4. Vadhu beej mantra – streem
5. Krodh beej mantra – hooum.
6. Shrsti beej mantra - ayeem
7. Taar beej mantra – om

अत्यंत पवित्र ब्रह्माण्ड में गुजते हुए शब्दों का लेखन अक्षर के माध्यम से ही हैं उदहारण के लिए " ह्रीं" का उच्चारण hreem किया जाता हैं पर इसमें "h " का उच्चारण नहीं किया जाता हैं . हाँ लेखन की दृष्टी से लिखा "hreem " ही जायेगा .इसी तरह से अनेकों बीज मंत्र के साथ क्रिया हैं .

आप कितने बीजमंत्रों को जानते हैं ? हम में से सभी हाँथ उठाने के लिए मानो तैयार ही बैठे हैं , पर यदि आपसे पूछू की "रमा बीज " क्या हैं ? "वधु बीज" क्या हैं ?"माया बीज " क्या हैं ? इसी तरह से पूछता जाऊ तो थोडासा तो समस्या सभी को उत्तर देने में आयेगी ही . चलिए कुछ के उत्तर हम देखते हैं .

1. माया बीज -ह्रीं
2. काम बीज -क्लीं
3. राम बीज - श्रीं
4. वधु बीज - स्त्री
5. क्रोध बीज - हुं
6. श्रृष्टि बीज --ऐं
7. तार बीज - ॐ
8. कूर्च बीज - हुं
9. काम कला बीज -ई
10. अग्नि सुंदरी बीज मंत्र -स्वाहा

इसी तरह हम सामान्यतः कुछ बीज मन्त्रों को जो किसी भी देवी/देवता से सम्बंधित हैं . इसी प्रकार हैं

1. भगवती माँ बल्गा मुखी बीज मंत्र - ह्लीं
2. भगवती माँ तारा बीज मंत्र -स्त्री
3. कामख्या बीज मंत्र -त्रीम
4. महालक्ष्मी बीज मंत्र - स्त्री
5. सरस्वती बीजमंत्र - ऐं
6. भगवान हनुमान बीजमंत्र - हुं
7. महाकाली बीज मंत्र - क्रीं
8. भैरव बीजमं -भ्रं
9. गणेश बीज मंत्र – गं

इसी तरह के कई ओर भी बीज मन्त्र हैं ,यहाँ में इस

8. Kurch beej mantra - hum
9. Kaam kala beej mantra - e
10. Agni sundari beej mantra – swaha

Like that we generally know some of the beej mantra related to daity.. like that

1. Bhagvati ma Balgamukhi beej mantra – hleem
2. Bhagvati ma Tara beej mantra – shtreem
3. Kamakhaya beej mantra - treem
4. Malakshami beej mantra – shreem
5. Sarasswati beej mantra - ayem
6. Bhagvaan hanuman beej mantra – hum
7. Mahakali beej mantra – kreem.
8. Bhairav beej mantra - bhram
9. Ganesh beej mantra _ gam

There are many more to list , here I pointed out that beej mantra

बात से अवगत कराना चाहूँगा , विशेष कर जो बीज मंत्र "ह" से प्रारंभ होते हैं जिस तरह से ह्रौं , ,ह्रें आदि आदि , इनमें " ह" का उच्चारण नही किया जाता हैं , पर बीज मंत्र "ह्लीं" में "ह" का उच्चारण किया जाता हैं ., और इस तरह से जब तक आपको बीजमंत्रो का सही उच्चारण ठीक से उच्चरित करना नहीं आयेगा , तब तक मन्त्र अपनी शक्ति कैसे प्रदर्शित करेगा .

इसी तरह के कुछ बीज मंत्र हैं जो एक से ज्यादा एक ही प्रकार के या बिभिन्न बीज मंत्रो के योग से बने बने हैं उन्हें भी बीज मन्त्रों की श्रेणी में ही रखा गया हैं . जैसे " " या "त्रीम त्रीम त्रीम ".

आखिर सामान्य सांसारिक भाषा में इन बीज मन्त्रों का क्या अर्थ हैं .यहाँ पर में परमहंस स्वामी विशुद्धानंद जी के शब्द उच्चारित करना चाहूँगा "कि ब्रह्मा ,विष्णु , महेश की भी सामर्थ्य नहीं हैं कीं बीज मंत्रो की शक्ति या इनके पीछे की शक्ति का वर्णन कर सके " ठीक इसी तरह सदगुरुदेव जी ने "नवार्ण मंत्र साधना " ओर अलाहाबाद शिविरमें कहा था -" सारे विश्व का निर्माण केबल त्रि गुणा त्मक शक्तियों - महाकाली , महालक्ष्मी , महासरस्वती से बना हैं , यदि कोई इन तीन बीज मंत्रो को पूर्णता के साथ सफलता के साथ पूर्ण सिद्धित्ता प्राप्त कर लेता हैं तो उसके लिए इस संसार मेंकुछ भी असंभव नहीं रह जाता हैं ."

अधिकांश महा साधक जैसे कि परमहंस निगमानंद जी महाराज और अन्य ने भी जीवन के प्राम्भिक काल में सिद्धता इन बीज मंत्रो के माध्यम से ही पाए थी , हम में से कौन निगमानंद जी महाराज कि प्रारंभिक कष्ट ओर संघर्ष से अवगत न होगा जो उन्होंने सही तरीके से तारा बीजमंत्र कि प्रक्रिया सिखने के लिए लगभग सारे भारत कि यात्रा ही कर डाली थी .और अंत में परम योगी वामा ख़ेपा (राम पुर हाट पश्चिम बंगाल) ने उन्हें अपनाया ओर इस ओर सही मार्ग दर्शन किया . इस बारेमें कुछ कहना चाहूँगा कि यहाँ बीजमंत्रों से मेरा तात्पर्य मात्र हमेशा एक अक्षर से ही नहीं हैं बल्कि जो भी गुरुदेव द्वारा निर्देशित हो , जो मन्त्र उनके द्वारा दिया जाये , जो भी प्रक्रिया बतलाई जाये , उसमें ही आपको सफलता मिलेगी ,न कि आप भी किसी भी साधक कि

specially started with h has should take some care , mantra like hroum ,hreem, hren, hraoum ets have h silent but beej mantra alike hleem have ha has to speak here in that this "h" is not silent .without understanding the pronunciation how will mantra will have power.

There are some mantra which is made by combination of either two same beej mantra or different beej mantra also come into the category of beej mantra. Like on "kreem kreem kreem" and "trieem treem treem" etc.

What is worldly meaning carries by these beej mantra , here I would like to write the word says our great Parahansa swami Vishuddhanand ji that . *" even brahma and Vishnu and mahesh not having the power to define the power carries and behind by these beej mantra*. " like the same way Sadgurudev ji says in "Navararn mantra" audio castes and also in Allhahad shivire held at minto park s " *the whole universe is made by or have tri- Gunatmak shakti means Mahakali Mahalakshami and Mahasaraswati and even if anyone have siddihta in these three beej mantra completely and successfully alone*

कॉपी करके ठीक वैसे ही बन जायेंगे , क्योंकि उस साधक ने उस प्रकार से सफलता पाई थी. हां हाँ आप भी सफल हो सकते हैं और उनसे भी अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं पर ये तभी संभव होगा जब गुरुदेव से आप निर्देशित हो , उनकी आज्ञा पालन करें .

सारी साधना जगत कि यात्रा उन दिव्य चरण कमलों से प्रारभ होती हैं और अंत में उन्ही के श्री चरणों में अंत होती हैं पर बिना यात्रा किये ये कहना कि , हमें सब ज्ञात हैं ,हमारी यात्रा पूर्ण हुए . मात्र अपने आप को छल करना हैं ही , इसके सिवा कुछ नहीं .

कई बार अपने कुछ बीज मन्त्रों को मंत्र के प्रारभ में पाते हैं पर वे ही बीज मन्त्र, मंत्र के अंत में विप रीत क्रम से लगे हुए पाते हैं तो इस प्रकार इसलिए होता हैं जिससे मंत्र कि शक्तियों में प्रवर्धन होता हैं , मन्त्र शक्तिशाली होता हैं . वह हमारे लिए उपयोगित हो सके .इन मन्त्रों कि रचना मंत्र पूत महयोगियों के द्वारा होती हैं जो ब्रम्हांड कि ध्वनि के ज्ञाता ओर उनका किस प्रकार से उपयोग किया जाये कि वह हमारे लक्ष्य /इच्छा पूर्ति कर सके .

कितना जप इन बीजमंत्रो का किया जाये जिससे कि इनमें सिद्धता पायी जा सके ?.

शाश्त्रोंमें वर्णित हैं कि जितने अक्षर जिस मंत्र में होते हैं उतने ही लाख मन्त्र जप किया जाने चाहिए , तो इस हिसाब से तो काफी कम समय लगेगा इन बीजमंत्रो कि साधना में .

आखिर बीजमंत्रो कि साधना करे ही क्यों ?

आप ही सोचिये कि कौन सा तरीका उत्तम होगा , सारे पेड़ के पत्ते पर पानी डालना या फिर जड़ में ही पानी डालना .

क्या हमें इन बीज मन्त्रों कि साधना में भी साधना काल के नियम का पालन करना पड़ेगा ?

nothing is impossible for him in this world.

Many great sadhak like Paramhansa swami Nigamanandji maharaj and others too have siddhita in earlier part in their sadhana life, through beej mantra, who can forget his(swami Nigamanandji) quest and struggle for to get the proper way to do the jap of ma tara beej mantra for that he traveled almost whole india , later Param yogi Vama Khepa a sadhak of ma tara resideds at Rampur hat at west bangal. accepted him and provide the direction for that, here I would like to mentioned that , beej mantra that means always not the single letter's mantra it is depend upon your Gurudev to decide how and when and which type a particular sadhana can be done under a proper guidance can only bring fruit, not to make just copy of other thinking that iof he has this way get siddhita than why not you, yes you can have but that too be followed word by word direction of your Gurudev.

The whole sadhana world journey start from his divine lotus feet and later comes to end on that divine lotus feet . but without the journey saying that yes I am realized, is just

क्यों नहीं जो भी नियम एक साधना के होते हैं जैसे उचित निर्देशित धोती पहिन ना , निर्देशित माला , ओर इस बीज से सम्बंधित यंत्र भी मिलजाए तो , क्या यह वरदान नहीं होगा.

क्या इनका जप सीधे ही ऐसे किया जाये या फिर ॐ का उच्चारण आगे पीछे किया जाये .?

एक उच्चस्तरीय सन्यासी गुरु भाई ने मुझे बताया था कि यदि आगे पीछे यदि ॐ का उच्चारण किया जाये तो ज्यादा उचित होगा . क्या ये ज्यादा उचित नहीं होगा कि जोधपुर में गुरुदेव त्रिमूर्ति से सपर्क जिस भी बीज मंत्र में रूचि हैं उससे सम्बंधित दीक्षा प्राप्त कर उनके निर्देशन में साधना यदि कि जाये , ओर फिर वे ॐ के साथ या बिना ॐ के साथ जप करना हैंजैसा बताये , आप उनके निर्देश का ही पालन करें. तभी सफलता आपके पास होगी .

11 Durlabh Adbhut Tantra Prayog

सदगुरुदेव से प्राप्त ११ दुर्लभ तंत्र प्रयोग जो हमारी धरोहर हैं, अब भी कोई कहे ....

Torn clothes, tangled hair and his dress was strange and I was feeling very uncomfortable with him, but it was Bengali Maa's order for me that I have to live with him because he has compiled many granths about different sadhnaas produced by SADGURUDEV himself and I need to share his experience as well. When I listened that he has such a great collection of books about sadhnaas I reached Mughalsarai station via Kaali Kho (Vindhyachal) and sat in the train of Jabalpur.

All the way I was thinking whatever

फटे कपडे, बिखरे और उलझे बाल , अजीब सी ही वेशभूषा थी उनकी और बहुत असहज सा महसूस कर रहा था मैं उनके साथ , पर बंगाली माँ का आदेश था मेरे लिए की मुझे उनके साथ रहना है और सदगुरुदेव के द्वारा प्रदत्त विभिन्न साधनाओं का जो संकलन और अनुभव उन्होंने प्राप्त किया है वो मुझे उनके सानिध्य लाभ से लेना है. उनके पास ऐसा संकलन है ऐसा सुनकर मैं काली खोह (विन्ध्याचल) से मुगलसराय स्टेशन पहुंचकर जबलपुर जाने वाली ट्रेन में बैठ गया .

रास्तेभर जो भी माँ ने उनके बारे में बताया था वही सब सोचता रहा , जबलपुर पहुच कर पहले बाज्नापीठ जाकर भैरव के दर्शन किये और फिर माँ नर्मदा के तट की और चल पड़ा. जबलपुर मेरा इसके पहले भी कई बार जाना हो चूका था. और आश्चर्य की बात ये है की हर बार एक नवीन रहस्य ही मेरे सामने खुलते जाता साधना

Maa had told about him and after reaching at Jabalpur firstly I took the blessing of BHAIRAV at BAJNAMATH and then walked towards the banks of Narmada. I had come many times in Jabalpur and every time I came to know a new secret about sadhnaas.

This city was full of SIDDHS does not matter they belong to Jain Tantra, Muslim or Shaaber Tantra. There was a time when all the tantric procedures done here was matchless but with time SIDDHS and their tantric process became/turned secret. Bhai Arvind, Hasadbakhs, Jeevan Laal, Manikaa Nath, Avdhooti Maa was known to me but now I am going to meet a new gurubhai Paritosh Banerji.

In 1993 when shivir arranged on Chaitra Navraatri's had completed I directly went to Bengali Maa in Vindhyachal for my sadhnaas and it was summer season so weather was hot, hot and just hot. In that shiver GURUDEV gave me knowledge about a new fact," to complete SHAAKT SADHNAS you need to go Vindhyachal and remember in SHAAKT SADHNA acquire deep knowledge of SWER TANTRA by this very soon you will get success in the field of sadhnaa because when process of breathing (SHWAS PRASHWAS) is going on chanting (JAP) of every SHAKTI MANTRA is good because at that time MANTRA PURUSH remain conscious and during the middle of RIGHT breathing(DAAYE SHWAS PRASHWAS)

जगत का.

एक से एक सिद्धों से भरा हुआ शहर , चाहे वो जैन तंत्र से सम्बंधित हो या फिर मुस्लिम या शाबर तंत्र से सम्बंधित , किसी ज़माने में यहाँ की जाने वाली तांत्रिक क्रियाओं का कोई जवाब नहीं होता था पर समय के साथ साथ ये सिद्ध और इनकी परम्पराएँ गुप्त सी ही हो गयी थी. भाई अरविन्द, हसदबक्स , जीवन लाल , मणिका नाथ , अवधूती माँ और अब एक नए गुरुभाई पारितोष बनर्जी से मुलाकात होने जा रही थी.

सन १९९३ की बात है चैत्र नवरात्री का शिविर संपन्न होने के बाद मैं अपनी साधनाओं के लिए सीधे विन्ध्याचल बंगाली माँ के पास चला गया था और तबसे से गर्मी, गर्मी और गर्मी.उस शिविर में ही गुरुदेव ने एक नवीन तथ्य का मुझे ज्ञान दिया था की **"तुम शाक्त साधनाओं को संपन्न करने के लिए विन्ध्याचल चले जाओ और ध्यान रखो की शाक्त साधनाओं के स्वर तंत्र का गहन अभ्यास करना,उससे साधनाओं में शीघ्र ही सफलता मिलती है क्योंकि बाये स्वर द्वारा जब श्वास प्रश्वास की क्रिया चल रही हो तभी शक्ति मन्त्रों का जप उचित होता है क्योंकि मन्त्र पुरुष तब चैतन्य होता है और दाये श्वास प्रश्वास की क्रिया के मध्य शक्ति सुप्त रहती है परन्तु और बेहतर होता है की जिस भी मंत्र का जप किया जा रहा हो उस मन्त्र के पहले और बाद में "ईं" बीज जो की कामकला बीज है लगाकर जप करने से भगवती शक्ति की निद्रा भंग हो जाती है" इसी तथ्य को ध्यान में रख कर अपनी साधनाएं मैंने पूरी की.**

वहाँ से जब जबलपुर पंहुचा था तब मई का मध्य आ गया था और मई की गर्मी जैसे दिमाग को फोड ही डालती , सूरज सिर को जैसे पिघलाने को ही आतुर था, बोतल का पानी भी खत्म होने वाला था पर जैसे तैसे जी कड़ा कर मैं लगातार चलते ही जा रहा था . मुझे माँ ने बताया था की तुम्हे सरस्वती घाट से नीचे उतर कर बस सीधे हाथ की तरफ नाक की सीध में चले जाना. लगभग ३ किलोमीटर के अंदर ही शमशान से लगी हुयी उनकी झोपडी है .

पर मैं उन्हें पहचानूँगा कैसे –मैंने माँ से पूछा था.

तुम उसे नहीं बल्कि वो तुझे पहचान लेगा-माँ ने कहा .

बस इसी शब्द के सहारे मैं चलता चला जा रहा था ,

power remain sleeping but chanting becomes more better if word "EEM" used at starting and ending on the mantra which is being chanted. This "EEM" beej is Kaamkala beej and by using it at starting and ending of JAP MANTRA sleeping of BAGHWATI SHAKTI get disturbed" by keeping all these in my mind I completed my sadhnaas.

From there when I reached at Jabalpur it was mid of May and hot sun rays were dying to melting me and water in the bottle was about to finish but by making my heart bold continuously I was walking on. Maa has told me that by stepping down from SARASWATI GHAAT I have to go straight on right side. Within the range of 3 kilometers nearby at SHAMSHAAN his hut was there.

But how I will recognize him-I asked Maa.

It's not you but he will recognize you-Maa replied.

Keeping these words in my memory I was going on and Narmada ji's water which flows at such speed that gives birth to fog (dhuaan) but just 2 kilometer away from that place at here SARASWATI GHAT its water was running with slow and sound tides. In such a bone melting hotness by seeing its water the satisfaction I felt, I cannot express in words. At first I took bath, changed clothes and start walking side by side of river. Suddenly someone call

नर्मदा जी की धाराओं में जो गति धुआँधार में रहती है उससे कही ज्यादा सौम्यता बस उससे २ कि.मी. आगे इस सरस्वती घाट से लगकर बह रही उनकी धाराओं में थी. तपती दोपहरी में जो सुकून मुझे जल को बहते देखकर हो रहा था वो शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है. सबसे पहले मैंने जी भर कर नहाया ,वस्त्र बदले और आगे बढ़ता चलागया नदी के किनारे किनारे ही. अचानक किसी ने मेरे नाम को पुकारा .... मैंने रुक कर देखा एक मध्यम कद काठी का गौर वर्णीय व्यक्ति मुझे हाथ हिलाकर आवाज़ दे रहा था. मैं उस और बढ़ गया.

जब मैं उनके नजदीक पंहुचा तो उन्होंने 'जय गुरुदेव' कहकर मेरा अभिवादन किया , मैंने भी उत्तर दिया तो उन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा, बाकी सब तो ठीक था पर उनकी वेश भूषा से मुझे बड़ी कोफ़्त हो रही थी, खैर जैसे तैसे उनके घर तक पहुचे, कच्चा मकान जिसमे मात्र दो कमरे थे , एक कमरा रसोई और बैठक के काम आता था और दूसरे में बहुत सारे हस्तलिखित ग्रन्थ,खरल,मृग चर्म आसन,बाजोट,बाजोट पर करीने से रखे विविध यंत्र तथा पूर्ण तेजस्वी तथा भव्य सदगुरुदेव का चित्र उस कमरे को भव्य ही बना रहा था.

चाहे बाहर से कितना ही छोटा दिख रहा था वो मकान पर भीतर से अजीब सा सुख लग रहा था उस घर में, उस तपते दिन में भी अजीब सी शीतलता थी वहाँ पर.

शाम हो गयी थी,पारितोष भाई अपनी मध्यान्ह साधना में व्यस्त थे और अब शाम घिर आई थी.वे साधना कक्ष से बाहर निकले और मेरे पास बैठ गए, मैं भी भोजन और नींद लेकर स्फूर्ति से भर गया था.वे मुझे लेकर नदी के तट पर चले गए जहा हम पानी में पैर लटका कर बैठ गए और बहुत देर तक चुप रहने के बाद मैंने उनसे उनके बारे में पूछा तो, उन्होंने कहा-" सन १९८२ में मेरी सदगुरुदेव से मुलाकात हुयी थी तब मैं अपने ननिहाल मिदनापुर (बंगाल) गया हुआ था, नाना जी कि तंत्र में बहुत रूचि थी और उन्होंने सदगुरुदेव से दीक्षा लेकर विविध साधनाएं भी संपन्न कि थी. बंगाली होने के नाते स्वभावगत हम सभी माँ आदि शक्ति कि पूजा करते थे, मेरा रुझान माँ काली कि साधनाओं में कही ज्यादा था , मैं घंटो नाना जी के पास बैठ कर उनकी साधनाओं के अनुभव को सुना करता था.वे भी अपने अनुभव बताते और कई चमत्कार भी दिखलाते. क्या मैं भी ऐसा कर पाउँगा-मैंने नाना जी से पूछा. बिलकुल कर

my name...I stopped and saw a man of middle height with fair complexion was calling me by waving his hand. I stepped forward at that direction.

When I reached closed he welcomed me by saying" JAI GURUDEV", I replied the same and he said to me to come with him. Everything was all right but I was irritating by his dress, but at last we reached at their house, it was mud house with two rooms, one room was used as kitchen and drawing room and other room was filled with many hand written granths, kharal, Mrig Charmasan, Bajot, on the Bajot arranged different types of Yantra and majestic picture of SADGURUDEV was making this room more majestic.

From outside though this house was looked strange but from inside I was feeling a different type of comfort and on that hot day it was cooling inwardly.

It was evening and Paritosh Bhai was busy in his MADHYANAH SADHNA and when it was about to dark he came out from his sadhnaa kaksh and sat by me. I too was feeling fresh after having food and sleep. He took me to the river bank where we sat down having our legs in water and after a long silence I asked him about his life and he said," in 1982 when I was in my granny's house(nanihaal) at Midnapur(Bengal) first time I met with SADGURUDEV. My Nana ji had great interest in Tantra and he took DEEKSHA from SADGURUDEV and had completed many sadhnaas. As

पाओगे, पर तंत्र का रास्ता इतना सहज नहीं है, तलवार कि धार पर चलने से भी ज्यादा खतरनाक है पर,ये बहुत आसान हो जाता है यदि कोई समर्थ गुरु आपको अपना ले तो. तब मेरी जिज्ञासा और रुझान को देखकर उन्होंने मुझे सदगुरुदेव से मिलवाया और उनसे दीक्षा देने कि प्रार्थना की.सदगुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी और फिर मैं उनके निर्देशानुसार साधनाएं करने लगा, समय के साथ साथ साधनाओं को गति भी मिलने लगी. सफलता असफलता दोनों को पूरे मन से स्वीकार करता था मैं . ये देखकर एक बार सदगुरुदेव जब जबलपुर आये तब,उन्होंने मुझे अपने हाथ से लिखी हुयी एक तीन मोटी मोटी डायरी दी. जिसमे उन्होंने विविध प्रकार के तांत्रिक प्रयोग लिखे थे, बस उन्ही डायरी के आधार पर मैं साधनाएं संपन्न करने लगा और विविध प्रकार की सफलता भी मैंने पाई."

रात होते होते ही हम वापिस लौट आये. रास्ते में उन्होंने बताया की वे जीवन यापन के लिए बैंक में जॉब करते हैं. और उनका स्थायी निवास गोरखपुर(जबलपुर) में है , पर वो अपनी साधनाओं की वजह से विगत कई वर्षों से यहाँ पर रह रहे हैं. और मैं हमेशा ऐसा नहीं रहता हूँ- उन्होंने अपने स्वरुप की तरफ इंगित करते हुए कहा और हँसने लगे.

मैं अभी कोई अघोर क्रम कर रहा हूँ इसलिए ऐसी वेशभूषा हो गयी है, इसके लिए मैंने ३ महीने की बैंक से छुट्टी भी ली हुयी है.

रात में उन्होंने अपनी प्रेत शक्तियों की मदद से मेरा मनपसंद भोजन बुलवाया.

क्या आपको भय नहीं लगता?

किससे-उन्होंने पूछा .

इन भूत प्रेतों से ...

क्यूँ लगेगा भला, ये तो अत्यधिक निरापद होते हैं.और सदगुरुदेव ने इनको सिद्ध करने की इतनी सहज विधियाँ बताई हुयी है की सामान्य व्यक्ति भी भली भांति अपना जीवन यापन करते हुए इनको सिद्ध कर सकता है. रात को उन्होंने कालिका चेटक का प्रयोग कर स्वर्ण का निर्माण कर के दिखाया , पारद विज्ञानं के माध्यम से रत्नों का निर्माण कैसे होता है ये समझाया. उच्छिष्ट

we are Bengalis so it's in our nature to pray MAA AADI SHAKTI, my whole attention was in MAA KAALI's sadhnaa and by sitting with nana ji I regularly heard his experiences about his sadhnaas for hour and hour. He too shared his experiences and also showed some chamatkaars. I asked from nana ji- can I do the same. He replied yes you can but tantra field is not a bed of roses but it becomes easy if one gets an able guru. After seeing my curiosity he took me to SADGURUDEV and requests him to give me DEEKSHA. SADGURUDEV gave me DEEKSHA and than according to his direction I started sadhnaas and with time it came into action. I accept success and failure with an equal heart. After seeing all that once when SADGURUDEV came to Jabalpur he gave me three heavy-heavy diaries which were full of with different types of TANTRIK PARYOGS. After that I completed my sadhnaas based on that diaries and get success."

When it gets dark we came back and in the way he told me that for his earnings he does job in a bank. His permanent residency is in Gorakhpur (Jabalpur)but from many years he is living here for his sadhnaas and I do not remain the same he pointed at his dress and start laughing-

I am doing some AGHOR KRAM that's why I am on three months leave from my bank.

At night by his PRET POWERS he

गणपति प्रयोग के द्वारा वशीकरण की अत्यधिक सरल क्रिया बताई. रोगमुक्ति, बगलामुखी साधना द्वारा शत्रु स्तम्भन का सरल मगर तीव्र प्रभावकारी प्रयोग,शमशान चैतान्यीकरण प्रयोग , दीप स्तम्भन का विधान समझाया, किन मन्त्रों से तंत्र प्रयोग दूर किया जाता है उसकी मूलभूत क्रिया समझाई. पूर्वजन्म दर्शन की गोपनीय क्रिया बताई. व्यापार वृद्धि के एक से बढ़कर एक प्रयोग प्रायोगिक रूप से करके दिखाया और इन सभी साधनाओं का आधार उन डायरियों को मुझे देखने और नोट करने के लिए दिया, वे डायरियां १९६३,६५,६८ और ७३ की थी मैंने लगभग ४६८ प्रयोगों को उनमे से २२ दिनों में लिखा. बाद में भी कई बार मैं उनके पास गया और उन्होंने उदारतापूर्वक उन क्रियाओं और साधनाओं को मुझे समझाया भी और लिखने भी दिया

एक से बढ़कर एक प्रयोग थे वे सभी,बाद में मैंने उनमे से बहुत से प्रयोग और साधनाएं संपन्न की तथा पूरी तरह सफलता भी पाई. जब इस अंक का विचार आया था तो हम सभी अपनी साधनाओं के लिए ६४ योगनी मंदिर में मिले थे तब मैंने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने मुझे कहा की अब वो प्रयोग तुम्हारे अपने हैं तुम उन्हें निश्चित ही अन्य गुरुभाइयों और बहनों के साधनात्मक जीवन को आगे बढ़ाने के लिए देने के लिए स्वतंत्र हो. आज उन्ही प्रयोगों और साधनाओं में से ११ प्रयोग मैं इस महा विशेषांक में आगे के पृष्ठों में दे रहा हूँ . मैंने यंत्रों का आवरण पूजन और प्राण प्रतिष्ठा विधान वगैरह नहीं दिया है क्यूंकि हमारे गुरुधाम जोधपुर और दिल्ली में परम पूज्य गुरुत्रिमूर्ती की साधना शक्ति से युक्त ये सभी यंत्र पूर्ण चैतन्यता के साथ मिल जाते हैं तो फिर जटिलताओं को देने से साधना पक्ष कठिन ही होता. क्यूंकि हर यंत्र के लिए अलग अलग प्रतिष्ठा विधान होता है जो बेहद जटिल भी हैं. ये सभी प्रयोग मेरे अनुभूत हैं और मैंने इनका प्रभाव अपने जीवन में करके देखा है. और मैं आशा करता हूँ की आप सभी भी एक बार अवश्य इन प्रयोगों को अपनी आवश्यकता या सामर्थ्यानुसार अवश्य करेंगे और सामर्थ्यवान बनकर सदगुरुदेव, परम पूज्य गुरु त्रिमूर्ति तथा सिद्धाश्रम साधक परिवार के गौरव को बढ़ाएंगे.

1 तीव्र उच्छिष्ट गणपति साधना

(Teevra Uchchhisht Ganpati Sadhana)

ON KRISHAN PAKSH KI ASHTAMI take root of bitter neem and make statue(pratima)of lord GANESHA equal to your thumb. During the first part(pehla pehar) of night wear red clothes and sit on red altar(aasan) facing west direction and with the unbrushed or stale mouth(JOOTHA MUH) put(sthapit) that GANESH pratima on plate in front of you and then pray in front of SADGURUDEV for his blessing and then make your resolution and after that offer Laal chandan(RED SANDAL), akshatt(RICE), pushp(FLOWERS) to LORD GANESHA and then with the rosary of Laal Chandan(RED SANDAL) do MANTRA JAP five times and remember you need not to fresh you mouth(arthaat muh jootha hi hona chahiye). Continue the process for seven days and on eighth day means on AMAAVASYAA with five dry fruits (PANCH MEWA) offer 500 aahuties. With this MANTRA get SIDHH and then you can do many usages of it and two usages are given here- -1- The person to whom you want to attract or hypnotize establish(sthapit)SIDHH LORD GANESHA pratima on his or her	कड़वे नीम की जड़ से कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन अंगूठे के बराबर की गणेश की प्रतिमा बनाकर रात्रि के प्रथम प्रहर में स्वयं लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर पश्चिम मुख होकर झूठे मुँह से सामने थाली में प्रतिमा को स्थापित कर साधना में सफलता की सदगुरुदेव से प्रार्थना कर संकल्प करें और ततपश्चात गणपति का ध्यान कर उनका पूजन लाल चन्दन,अक्षत,पुष्प के द्वारा पूजन करे और लाल चन्दन की ही माला से झूठे मुँह से ही ५ माला मन्त्र जप करें. सात दिनों तक ऐसे ही पूजन करे और आठवे दिन अर्थात अमावस्या को पञ्च मेवे से ५०० आहुतियाँ करें इससे मंत्र सिद्ध हो जाता है. तब आप इनके विविध प्रयोगों को कर सकते हैं. २ प्रयोग नीचे दिए गए हैं. जिस व्यक्ति का आकर्षण करना हो चाहे वो आपका बॉस हो, सहकर्मी हो, प्रेमी,प्रेमिका या फिर कोई मित्र या शत्रु हो जिससे, आपको अपना काम करवाना हो.उसके फोटो पर इस सिद्ध प्रतिमा का स्थापन कर ३ दिनों तक १ माला मन्त्र जप करने से निश्चय ही उसका आकर्षण होता है. अन्न के ऊपर इस सिद्ध प्रतिमा का स्थापन कर ११ दिनों तक नित्य ३ माला मंत्र जप करने से वर्ष भर घर में धन धान्य का भंडार भरा रहता है और यदि इसके बाद नित्य

photograph and do MANTRA JAP for three days to get success. This person can be anyone your boss, lover, beloved, colleague, friend or enemy.

2.On grain (Ann) get this SIDHH PRATIMA establishes (sthaapan) and for 11 days everyday complete three rosary circle of MANTRA JAP. By doing this in the whole year there will be no shortage of money and food in your house and after that if you do this MANTRA JAP everyday than the results remain same forever otherwise repeat this process within 6 months or a year.

DHYAAN MANTRA-

दंताभये चक्र- वरौ दधानं कराग्रग्रम् स्वर्ण घटं त्रि-नेत्रं ,

धृताब्जयालिंगितमब्धि-पुत्र्या लक्ष्मी-गणेशं कनकाभमीडे.

Dantabhaye chakra varau dadhanam karagragram swarn-ghatam tri-netram,

Dhritabjayalingitamabdhi-putrya lakshmi ganesham kankabhmide.

मंत्र- ॐ नमो हस्ति मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घे घे उच्छिष्ठाय स्वाहा

Om namo hasti mukhaay lambodaray uchchhisht mahatmane kraam kreemhreem ghe ghe uchchhishthaay swaha.

५१ बार मंत्र को जप कर लिया जाये तो ये भंडार भरा ही रहता है. नहीं तो आपको प्रति ६ माह या वर्ष में करना चाहिए.

ध्यान मन्त्र –

दंताभये चक्र- वरौ दधानं कराग्रग्रम् स्वर्ण-घटं त्रि-नेत्रं ,

धृताब्जयालिंगितमब्धि-पुत्र्या लक्ष्मी-गणेशं कनकाभमीडे.

मंत्र- ॐ नमो हस्ति मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घे घे उच्छिष्ठाय स्वाहा.

2. निशा काली – पूर्ण गृह और परिवार की रक्षा हेतु

(Nisha Kali – For Complete Protection of Home & Family)

When it comes to the safety of family and home community nothing better we can have than this stuff.It is used Siddhiprad immediately. We make very agreeably home, build wealth, but suddenly in the home office is robbed, is fire, disasters face etc etc, and we remain with empty hands. If you want complete safety of the family, home to complete legislation that will be used by the view, you will be surprised to see its use. Macro-level national security to be done if the experiment will prove this amazing armor. This is just the application of only one night and relaxing throughout the year. I myself have used this many times. Even i did it for last the two workshop's safety and all my guru brothers witness that any kind of damage of health or life not happened infact results were amazing.

In evening make a Bhagwati Mahakali black statue of the clay and establish her and start worshipping in the night with all due instructions mentioned in 'Mahakali Sadhna " book published by Shree Sadgurudevji.The given method in texts they

परिवार की और घर की समाज की सुरक्षा की आती है तो इस प्रयोग के सामान कोई और प्रयोग है ही नहीं. ये प्रयोग तत्क्षण सिद्धिप्रद है . हम बहुत चाव से घर बनाते हैं ,संपत्ति का निर्माण करते हैं,पर अचानक घर में डाका पद जाता है, आग लग जाती है, आपदाओं का सामना करना पड़ता है आदि आदि, और हम हाथ मलते रह जाते हैं. यदि आप घर परिवार की पूर्ण सुरक्षा चाहते हैं तो पूर्ण विधान से इस प्रयोग को अवश्य करके देखे, आप इसके प्रयोग को देख कर आश्चर्यचकित रह जायेंगे. वृहद स्तर पर यदि इस प्रयोग को किया जाये राष्ट्र सुरक्षा के लिए ये अद्भुत कवच साबित होगी. ये मात्र एक रात्रि का ही प्रयोग है और वर्ष भर की निश्चिन्तता. मैंने खुद इस प्रयोग को कई बार किया है. घर के लिए तो करता ही था , पर पिछली दो वर्क शॉप की सुरक्षा के लिए भी इस प्रयोग को मैंने किया और सभी गुरु भाई साक्षी हैं की किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य या जीवन क्षति नहीं हुयी

सायंकाल मिटटी से भगवती काली की प्रतिमा का निर्माण कर रात्री में उनका स्थापन कर 'महाकाली साधना' ग्रन्थ में दी हुयी पद्धति से उनका रात भर पूजन तथा बलिदान की क्रिया संपन्न करे और एक रात्रि में १२१ माला निम्न मन्त्र की करें तथा सूर्योदय के पहले ही उस प्रतिमा का

must conduct all night worship and sacrifice a 121 mala to the following mantra and before sunrise immersion of statue in water must be done.By doing this procedure throughout the year it provides armor to us.

At the time of worship appropriation must be done in such way :-

Om Asya shree nisha kali mantrasya dakshinaamurti rishi:, pankti: chhand, shree nisha kali devta:, hreem beejam,hreem shakti:,keelakam, gruha(kutumbam) raksharthe jape viniyogah :,

Karnyass and Shadang nyas -

Hraam Angushthabhayam Hraday Namah:

Hreem Tarjanibhyam Shirashe Swaha

Hroom Madhyamaabhayam shikhaye Vashat

Hraim Anamikabhayam Kavachay Hum

Hroum kanishthabhayam Netrataryaay Vo ushat

Hrah karatalkarprashthaabhyam Astraay Phat

Trust must carry out factor that is now part guided by the mantra Speaking associated organs should touch to -

Om Atma tatvay swahaa paadaadi nabhi paryantam

Om hreem vidyaa tatvay swahaa nabhyaadi hriday paryantam

Om hasau : shiv tatvay swahaa hridayadi mastak paryantam

जल में विसर्जन कर देने से ये प्रयोग वर्षभर के लिए कवच प्रदान कर देता है.

पूजन के समय विनियोग करे.

ॐ अस्य श्री निशा काली मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः ,पंक्तिः छन्द,श्री निशा काली देवताः,ह्रीं बीजं,ह्रीं शक्तिः, कीलकं, गृह(कुटुंब) रक्षार्थे जपे विनियोगः .

करन्यास एवं षडंग न्यास -

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां हृदाय नमः

ह्रीं तर्जनीभ्यां शिरषे स्वाहा

ह्रूम् मध्यमाभ्यां शिखायै वषट्

ह्रैं अनामिकाभ्यां कवचाय हुम्

ह्रौं कनिष्ठाभ्याम् नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्

अब तत्व न्यास संपन्न करे अर्थात मन्त्र बोलते हुए सम्बंधित अंग से निर्देशित अंगों तक स्पर्श करे-

ॐ आत्म तत्वाय स्वाहा पादादि नाभि पर्यन्तं

ॐ ह्रीं विद्या तत्वाय स्वाहा नाभ्यादि हृदय पर्यन्तं

ॐ ह्सौः शिव तत्वाय स्वाहा हृदयादि मस्तक पर्यन्तं

ध्यान मंत्र का ११ बार उच्चारण करे –

चतुर्भुजां कृष्ण वर्णां मुंड माला विभूषिताम्,

खड्गं च दक्षिणे पाणो विभ्रतिन्दिवर द्वयं.

Attention should pronounce dhyan mantra 11 times -

chaturbhujam krushna varna mund mala vibhushitam,

Khadang ch dakshine pano vibhritindavar davayam

Katri ch kharpram chaiv kramad vamen vibhritim

Dayaam lihintim jatamekaam vibhritim shirsa davayam

Mund mala dharaam sheershe grivaayaamath chaparam

Vakshagre naag haaram ch vibhritim rakt lochanaam

Krushna vastra dharam katyaam vyaghraajin samvitaam

Vaam paadam shav hridi sansthapyay dakshinam padam

Vilapya siham prashthe tu lelihaanaasavam swayam,

Sattahaasaam mahaa ghor raav yuktaam su bheeshanaam.

Their after chant by 121 mala of the following mantra should then complete the above mentioned procedure and accordingly pray for the blessings and success from shree Sadgurudev.

Mantra - Kreem hreem hreem

कर्त्री च खर्परम् चैव क्रमाद् वामेन विभ्रतिम्,

द्याम् लिहंतिम् जटामेकाम् विभ्रतिम् शिरसा द्वयं

मुंड माला धराम् शीर्षे ग्रिवायामथ चापरां,

वक्षाग्रे नाग हारम् च विभ्रतिम् रक्त लोचनाम्.

कृष्ण वस्त्र धरां कट्याम् व्याघ्राजिन समंविताम्,

वाम पादं शव हृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम्.

विलप्य सिंह पृष्ठे तु लेलिहानासवं स्वयं,

सट्टाहासाम् महा घोर राव युक्ताम् सु भीषणाम्.

ततपश्चात १२१ माला निम्न मन्त्र -की करे

मंत्र - और उसके बाद ऊपर बताये अनुसार पद्दति को पूर्ण कर सदगुरुदेव से आशीर्वाद और सफलता की प्रार्थना करे.

मन्त्र-

Mantra - Kreem hreem hreem

3. कालीका चेटक साधना

(Kalika Chetak Sadhana)

The type of alchemy, mercury, sun and star science discipline are the authentic ways of realization of the gold, exactly in the same way if sadhak just studiously seek mother Bhagwati Mahakali world to take this wonderful Chetka proven in some time,he can earn some gold towards the realization of her continual on daily basis.Now first of all place this Mahakali yantra and chant this mantra in front of it the first full quarter million of legislation in only 7 days,u can find the procedure of worship in book written by Sadgurudev "Mahakali Sadhana" is described in texts, worship her in the same order.Then chant the following mantra with full concentration and devotion should chant the mantra throughout 7 days a quarter million should be done, on 8th day take jasmine flowers together with melted butter, let the 1000 holocaust same mantra. **Mantra - Om kali kankali kile kile swahaa**	जिस प्रकार रसायन विद्या,पारद, सूर्य विज्ञान और तारा साधना से स्वर्ण की प्राप्ति होती है , ठीक उसी प्रकार से साधक यदि पूर्ण मनोयोग से भगवती जगत जननी महाकाली के इस अद्भुत चेटक को सिद्ध कर ले तो उसे नित्य प्रति कुछ मात्र में स्वर्ण की प्राप्ति होती है . इस मंत्र को पहले महाकाली यन्त्र के सामने पूर्ण विधान से सवा लाख की मात्र में ७ दिनों में जप कर ले, पूजन का विधान आप सदगुरुदेव द्वारा लिखित “महाकाली साधना” ग्रन्थ में वर्णित है, आप उसी क्रम से पूजन करले और फिर आप निम्न मंत्र का जप पूर्ण एकाग्रता के साथ करे जिससे ७ दिनों में सवा लाख मन्त्र पूरे हो जाये, ८ वे दिन चमेली के फूलों को घृत मिलकर १००० आहुति इसी मन्त्र से दें. **मन्त्र- ॐ काली कंकाली किलेकिले स्वाहा.**

4. हाजरात प्रत्यक्षीकरण प्रयोग

(Hajraat Pratykshikaran Prayog)

After moon rises on Friday after a quarter pound of barley flour which an effigy of Bnoan called Hajrat.These actions can perform out of d town or village may be held by visiting a shrine. Take a water full container having a tap in it and wash ur your hands, feet in the water, mouth wash and rap up the apron and chekks inner or a kurta can be wear.If the asan's and shirt color is green the it would be better.Then spread perfume heena and offer sweets.Then be seated in heroic posture or take a same posture as a muslim prayer does at the time of reading namaz facing towards west direction and the lock the directions.Then establish the Hajrat infront of u, first read Hajrat Derud decent for 101 times Allah Humma Salle Ala Saiyadano Maulana Mauhdiv Bareeik vasallm Salato Salamoka ya Rasulallah Salallaho tala Alaiah vasallam . Then the following mantra should be chanted with 11 rosary mala hakik one and this order other than a Friday to Friday, the statue is suppose to be the	शुक्रवार को चाँद निकलने के बाद जौ के सवा किलो आटे से एक पुतला बनाओं जिसे की हाजरात कहा जाता है, ये क्रिया शहर या गाँव के बाहर किसी मजार पर जाकर संपन्न की जा सकती है. टोंटीदार लोटे में पानी अपने साथ लेजाकर अपने हाथ पाँव,मुह धो ले और लुंगी तथा जाली दर बनियान या कुरता धारण करे रहे , यदि हरा आसान और वस्त्र हो तो ज्यादा बेहतर रहता है .उस मजार पर हिने का इत्र और मिठाई चढ़ा दे और आसन पर वीर आसन की या नमाज पढ़ने की मुद्रा पश्चिम दिशा की और मुह करके बैठ जाये और दिशा बंधन कर अपने सामने हाजरात को स्थापित कर सबसे पहले १०१ बार दरूद शरीफ पढ़े. **अल्लाह हुम्मा सल्ले अला सैयदना मौलाना मुहदिव बारीक़ वसल्लम सलातो सलामोका या रसूलअल्लाह सल्ललाहो ताला अलैह वसल्लम.** इसके बाद निम्न मन्त्र की हकीक माला से ११ माला करे और ये क्रम एक शुक्रवार से दुसरे शुक्रवार तक करना है,पुतला वही रहेगा जिस पर आपने पहले दिन साधना की है.ऐसा करने से हाजरात प्रत्यक्ष हो जाता है तब उससे तीन बार वचन लेकर उसे जाने को कह देना और जब भी जरुरत हो उसे बुलाकर कोई भी उचित कार्य करवाया जा सकता है. कमजोर दिल वाले साधक इस साधना को ना करे और करने के

same on which the first day you have performed.Doing in same way the Hajrat directly appears before u then take three times prmise frm him and then let him go.Then call him when it is required, by calling him any appropriate action can be made. The spiritual seeker should not the weak hearted and definitely take the first master's orders. **Mantras - Ya Yayyyal Alau Innee Kalkia Ilallaya Kitabun Karim** **Ernn Uananuhu min Sulemana Minn Hu bismilllahhirrahamanirraheem**	पहले गुरु की आज्ञा अवश्य ले लें. **मंत्र- या यैययल अलऊ इन्नी कलकिया इलैलया किताबून करीम** **ईन्न उन्नुहु मिन सुलैमाना मिन्न हु बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम**

5. अचूक विद्वेषण प्रयोग – जिसका प्रभाव कभी खाली नहीं जाता

(how to win over Enemy)

Many a times in our lives also increases the enemies would not interfere or spouse, or children are trapped in the wrong correspondingprocedure that use these displays intense effects. If only the holi's aupicious night chanting of the 7 Rosary is done facing south and the	बहुत बार हमारे जीवन में शत्रुओं का दखल ना चाहते हुए भी बढ़ जाता है या पति या पत्नी, या संतान गलत संगत में फँस जाते हैं तब ऐसे में ये विद्वेषण प्रयोग तीव्र प्रभाव दिखाता है. होली की रात्रि में यदि मात्र इसका ७ माला जप दक्षिण की और मुह करके कर लिया जाये तो ये मन्त्र पूरी तरह से सिद्ध हो जाता है,फिर जब भी आवशयकता हो सूखी हुयी ढाक

mantra gets fully proved siddh, then when need do take a dry Huyie Dack (Palass, Pkar) brought the dry stems and 108 of mudar fresh leaves following the mantra that you have perfected and so and so write their names on it between whom u want fight. And at midnight in alone take that dry stems and fire it and while firing just chant that mantra once facing south direction and just put one by one leave on which desired name is written offer it in the fire.In the mantra where amuk amuki is written just pronounce the names of those person between whom u want fight.Similarly offer all 108 leaves your desire will be accomplished if it's appropriate . Mantra - **Aak dhaak dodno bagrai,amuk amuki aise lare jas kukur-bilai.** **Aadesh guru satya naam ko.**	(पलास,पाकड़) की लकडियाँ ले आये और आक के १०८ ताजे पत्तों पर निम्न लिखित मन्त्र जिसे आपने सिद्ध किया है लिख ले और अमुक और अमुकी की जगह उन व्यक्तियों का नाम लिखे जिनके मध्य झगडा करवाना हो. और आधी रात के समय एकांत में ढाक की लकडियों को जलाकर दक्षिण मुख करके १ बार मन्त्र पढकर एक पत्ता डाल दे मन्त्र में भी नाम का उच्चारण करना है,इसी प्रकार १०८ पत्ते डाल दें,निश्चय ही आपका मनोरथ यदि उचित है तो सिद्ध हो जायेगा. **मन्त्र- आक ढाक दोनों बगराई ,अमुका अमुकी ऐसे लरे जस कुकुर-बिलाई.** **आदेश गुरु सत्य नाम को .**

6. सात्विक प्रेत वशीकरण साधना

(Saatvik Pret Vashikaran Sadhana)

Often whenever people hear ghost ghostly name they filled with a prevalent fear. So who ll say to prove them, in anyways the ways by which they can be proven are really not meant for a normal person or weak hearted person. Upon that various illusions are spreader that whosoever proves them is always troubled. Even they finished off the remaining confidence by doing such acts. But all these facts are very far from reality. Phantom Ghosts are such souls who are restless for their liberation in any way to his release by direct and indirect are willing to cooperate. They performs both type of work whether it is good or bad, right from wrong but when the seeker misuse them becomes the salvation of souls is the seeker's life is miserable. But their utilization on where you play the role of the medium to be free spirits there is protected from any harm. So present's u a harmless from any and effective method and it can be done by any seeker, Due to this sadhna only well discipline and high values of Phantom or ghosts get in your control, who remains with u like a true friend without the harming and always ready to help you.

On full moon day of take shower and keep fast for whole day with purity, only have fruits and wear red cloths, with divine and pious way just remember the ghost and phantom whole day, think that they remain with u are friendly to me to be fully cooperative, this thinking should be in your mind. In night go under the Bodhi tree, take

अक्सर भूत प्रेत का नाम सुनकर लोगो में भय व्याप्त हो जाता है उन्हें सिद्ध करने की कौन कहे,वैसे भी उन्हें सिद्ध करने की जो क्रियाएँ वर्णित होती हैं वो कम से कम सामान्य साधको और कमजोर मनोमष्तिष्क वालों के लिए तो नहीं है.ऊपर से ये भ्रान्ति की जो इन्हें सिद्ध करता है उसे ये तकलीफ दते हैं, साधक का बचा खुचा मनोबल भी समाप्त कर देते हैं.परन्तु ये सभी तथ्य वास्तविकता से कोसो दूर है. भूत प्रेत तो अपनी मुक्ति के लिए बैचेन ऐसी आत्माएं होती हैं जो किसी भी प्रकार अपनी मुक्ति चाहती हैं और परोक्ष अपरोक्ष रूप से सहयोग के लिए तत्पर होती हैं,वे सही और गलत कार्य दोनों कर सकती हैं परन्तु,जब साधक उनका दुरूपयोग करता है तो उन आत्माओं की तो मुक्ति हो जाती है पर साधक का जीवन दूभर हो जाता है. लेकिन उनका सदुपयोग करने पर आप जहाँ उन आत्माओं को मुक्त होने में माध्यम की भूमिका निभाते हो वहाँ किसी भी प्रकार हानि से भी सुरक्षित रहते हो.प्रस्तुत पद्धति किसी भी प्रकार से हानि रहित और प्रभावकारी है और इसे कोई भी साधक कर सकता है ,इस साधना की वजह से सिर्फ उच्च संस्कारों वाले प्रेत या भ्होत ही आपके वश में होते हैं ,जो एक सच्चे मित्र की भांति बिना नुक्सान पहुचाए हमेशा आपकी मदद को तत्पर रहते हैं.

अमावस्या के दिन स्नान कर पूर्ण पवित्रता के साथ व्रत रखे, फलाहार करे और लाल वस्त्र धारण करें, सात्विक रूप से प्रेत का चिंतन करे, वो पूर्ण रूप से सहयोगी बन कर मेरे साथ मित्रवत रहे ,यही चिंतन आपके मन में होना चाहिए.रात्रि में पीपल वृक्ष के नीचे जाकर पीपल के पांच हरे पत्तों पर पूजा की पांच सुपारी रख कर उनमे प्रेत शक्ति का ध्यान किया जाना चाहिए , फिर लोहबान अगरबत्ती

five green leaves and keep five nuts of worship and should keep in mind the ones that phantom power, then myrrh incense sticks, black sesame and laid flowers, then keep curd rice on that leaves then sprinkle rose water on it. And their only on standing mode just do the chanting 11 rosary of black mala from the following mantra.

Mantra : **Om kreem kreem sadaatmane bhutay mam rupen siddhim kuru kuru kreem kreem phat.**

After chanting the mantra and pray that you bless me and remain with me as my friend, to this order, you have to do that is just for three times on moon to the moon every time. Then just after 3 moon as the divine forms appears in front of u and promise u help and for 3 years remains in the hands of the seeker

,काले तिल और फूल अर्पित करें और पीपल के पत्तों पर ही दही चावल का भोग गुलाब जल छिड़क कर लगादे और काली हकीक माला से वही खड़े खड़े ११ माला निम्न मन्त्र की करें.

मन्त्र- ॐ क्रीं क्रीं सदात्मने भूताय मम मित्र रूपेण सिद्धिम कुरु कुरु क्रीं क्रीं फट्.

और मन्त्र जप के बाद प्रार्थना करे की आप मेरी रक्षा करे और मेरी मित्र रूप में सहायता करे , ये क्रम मात्र ३ अमावस्या तक आप को करना है अर्थात प्रत्येक अमावस्या को को मात्र ३ बार ऐसा करना है.३ अमावस्या को सद् रूप में भूत आपके सामने आकार आपकी सहायता का वचन देता है.और ३ वर्ष तक साधक के वश में रहता है.

7. रतिपति गन्धर्व साधना

(RatiPati Gandharva Sadhana)

In sadhna world we didn't get much detail on gandhaarv sadhna, With the blessings of Sadgurudev I received apparently varios Gandharvs containing various strengths of the discipline .From that I got complete pleasure in household discipline the sadhna called Ratipati Gandharv sadhna is done. Even though swami Pragyanand ji also says that if individual sperm in semen is not even the full been given to this discipline is the origin of sperm and the person who normally work for him this spiritual power greater than any deficiency does not remain thereafter.

On full moon morning worship the lord Mahamrityunjay, Ganapathy and mother's Parvati and do the chanting of Mahamrityunjay mantra 11 times. Do satisfy the Bhrahmin with the food and donate something. In night be seated on asan in the bedroom and wear that **Gandharva Mudrika** and deep ignite grease before holding pearl rosary mala and chant for 21 rosary.Do it for one full moon to second full moon should be continually chanting the following mantra 21 mala. Showing the effects of meditation takes you from day one woman or man power to complete work and children are equipped with the ability to achieve go. And it is much more than usual Rati power.

साधना क्षेत्र में गन्धर्व साधना का विवरण ज्यादा प्राप्त नहीं होता है, सदगुरुदेव के आशीर्वाद से कुछ विभिन्न शक्तियों से युक्त गंधर्वों की साधना मुझे प्राप्त हुयी थी.उनमे से पूर्ण गृहस्थ सुख के लिए रतिपति गन्धर्व की साधना की जाती है , स्वामी प्रज्ञानंद जी का तो ये भी कहना रहा है की यदि व्यक्ति के वीर्य में शुक्राणु न हो, तब भी पूर्ण निष्ठां से की गयी ये साधना शुक्राणुओं की उत्पत्ति कर देती है और सामान्य रूप से जिस व्यक्ति में काम शक्ति की न्यूनता है उसके लिए तो इस साधना से बड़ी कोई साधना ही नहीं है.

पूर्णिमा की प्रातः भगवान महामृत्युंजय का पूजन गणपति और माँ पार्वती के साथ करें तथा महामृत्युंजय मन्त्र की ११ माला भी संपन्न कर ले.ब्राम्हण को भोजन तथा दान दक्षिणा से तृप्त कर दें ,रात्रि में शयन कक्ष में ही आसन पर बैठ कर हाथ में गन्धर्व मुद्रिका धारण कर सामने घृत दीप प्रज्वलित कर मोतियों की माला से २१ माला मंत्र जप संपन्न करें. एक पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा तक नित्य निम्न मंत्र का २१ माला जप होना चाहिए. साधना का प्रभाव तो पहले दिन से ही दिखने लग जाता है स्त्री या पुरुष पूर्ण काम शक्ति और संतान प्राप्ति की क्षमता से युक्त होते जाते हैं. और ये रति शक्ति सामान्य से बहुत अधिक होती है.

मन्त्र- ॐ गन्धर्व रतिपति रतिबलम् कुरु ॐ.

Mantra : **Om Gandharva ratipati ratibalam kuru om**.	

8. गुरु प्रत्यक्ष दर्शन साधना

(Guru Pratyaksh Darshan Sadhana)

If the seeker wants to get direct vision and philosophy of his master to get their continuous guidance to the effect of this meditation is wonderful miracle, the Guru Mantra Mantras of the quarter million by the discipline to carry out the ritual to be done, then of course, success get. On a blank pious space establish the **Guru yantra** and **Guru pratyaksha darshan siddhi yantra** and pray to achieve success in meditation with this resolution and start the daily meditation method given by Sadgurudev's texts provided the whole procedure to carry out worship of Guru mantra chanting mala to 11 The following day, according mantra chanting spells to be done following the 2 months, 9 million mantras happens, then of course the master has the benefit of Views and get their continuous guidance is in	यदि साधक को अपने गुरु के दर्शन करने हो और उनका सतत मार्गदर्शन प्राप्त करना हो तब इस साधना का प्रभाव अद्भुत चमत्कारी रहता है , यदि गुरु मन्त्र के सवा लाख मन्त्रों का अनुष्ठान संपन्न करके इस साधना को किया जाये तो निश्चय ही सफलता मिलती है.पूर्ण निर्जन स्थान या पीठ में **गुरु यन्त्र** और **गुरु प्रत्यक्ष दर्शन सिद्धि यंत्र** स्थापित कर साधना में सफलता प्राप्त हो ऐसा संकल्प लेकर उनयंत्रों और गुरु चित्र का दैनिक साधना विधि ग्रन्थ में दिए विधान से पूजन संपन्न कर गुरु मन्त्र की ११ माला जप करने के बाद प्रतिदिन इस हिसाब से मंत्र जप निम्न मंत्र का किया जाये की २ मास में ९ लाख मन्त्र हो जाये , तो निश्चय ही गुरु के दर्शनों का लाभ होता है और उनका सतत साधनात्मक मार्गदर्शन भी प्राप्त होता रहता है. इस साधना को गुप्त रखना चाहिए अन्यथा लाभ नहीं मिल पाता है. मन्त्र- **ॐ गुं गुरुदेव हुं फट्**

sadhnatmak way. The secrecy should be maintain otherwise no benefit can be achieve Mantra : **Om gum gurudev hum phat.**	

9. मुक़दमे में विजय प्राप्ति हेतु तंत्र प्रयोग

(Prayog For - To win in litigation)

Trial system used to achieve victory in life sometimes deceitful person who take money and give back not only to the person or for no reason just assured the court the affair, whether it is honesty how many ways but lawyers from the intrigues his and his family's life becomes miserable, Therefore for getting favour in his side that the lawyers and judges mind gets divert towards him,to customize this experiment is a simply mash. If you wear blue clothes and be seated on s blue or black asan facing towards south direction in midnight and establish Chinnmsta yantra and Masters image then worship them by the full procedure and then if 21 rosary of blue beads is done with following mantra then the mantra becomes activate for him.Whenever its debate time or to go to trial hearing at court then, only 3 rosary beads run by chanting let the party is	जीवन में कई बार व्यक्ति का धन लोग छल से ले लेते हैं, और वापिस ही नहीं करते सिर्फ आश्वासन ही देते हैं या व्यक्ति अकारण ही कोर्ट कचहरी के चक्कर में फस जाता है, चाहे वो कितनी भी इमानदारी बरते परन्तु वकीलों के षड्यंत्रों से उसका व उसके परिवार का जीवन दूभर होता जाता है तब वकीलों,विपक्षियों और जज की बुद्धि अपने अनुकूल करने में इस प्रयोग का कोई सानी नहीं है , यदि नीले वस्त्र धारण कर नीले या काले आसन पर बैठकर दक्षिण मुख हो कर मध्य रात्रि में छिन्नमस्ता यंत्र को सामने रख व्यक्ति उनका और गुरु यन्त्र चित्र का पूजन पूर्ण विधान से करके और नीली हकीक माला से २१ माला निम्न मन्त्र की कर ले तो ये मन्त्र उसके लिए जाग्रत हो जाता है , और जब भी वाद विवाद के लिए या मुक़दमे के लिए जाना हो तो मात्र ३ माला जप करके चला जाये तो कार्यवाही साधक के ही पक्ष में होती है , याद रखिये जप के मध्य कोष्टक के शब्दों का उच्चारण नहीं करना है , जब प्रयोग करना है तब उस स्थान पर नाम भी जोड़कर मंत्र करना है.

in the action seeker and in his favour only. Remember not to pronounce the words between parentheses, when to use by adding the name instead of it and then spell it Mantra : **Neeli Neeli Mahaneeli(shatru/vakeel/judge's name) jeebhi taalu sarva khili,sahi khilo tatskhanay swaha**	मन्त्र- **नीली-नीली,महानीली (शत्रु/वकील/जज का नाम)** **जीभी तालू सर्व खिली ,सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा.**

10 तीव्र आकर्षण साधना –गुमशुदा व्यक्ति को बुलाने के लिए

(Teevra Akarshan Sadhana – To Attract missing Person)

To call back the missing persons I have found the effect of this particular experiment simply astonishing. And rather than mantras proving this mantra is much easier and does not have any problem, In Navratree, if the number of 10,000 mantras are done then it said to be to proven. Just place Teevra Akarshan Yantra in front of it do chanting with coral beads for 14 times on the mantra of continual 9 days to prove it is spiritual. Whether such Mantra is proved or not to test it take Binolah, yellow mustard, and mud of rats home, while mixing it do the 108 times spellbound, and a reed in the middle of the rip to two different people to be caught out strongly and read mantra spellbound mix that died on the reed. Let the cane ge joint each other added to the sense of taking has been successful. Then when a lost person to call	गुमशुदा व्यक्तियों को वापिस बुलाने के लिए मैंने इस साधना का प्रभाव बहुत अचरजकारी है. और अन्य मन्त्रों के बजाय इसे सिद्ध करने में कोई दिक्कत भी नहीं आती, नवरात्री में १०,००० की संख्या में इस मन्त्र को कर लेने से ये सिद्ध हो जाता है , सामने तीव्र आकर्षण यन्त्र रख कर मूंगा माला से इस मंत्र को १४ माला नित्य करने से ९ दिन में ये साधना सिद्ध हो जाती है. मन्त्र सिद्ध हुआ या नहीं इसका परीक्षण करने के बिनोला,पीली सरसों,तथा चूहे के बिल की मिटटी को मिला निम्न मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे,और एक सरकंडे को बीच में से चीर कर दो अलग अलग लोगो को जोर से पकडे रहने के लिए दे दे , और मन्त्र पढ़ कर उस अभिमंत्रित मिश्रण को उस सरकंडे पर मारे .यदि सरकंडा आपस में जुड जाये तो समझ ले की

back take the lost person's picture in the middle of the night before or put clothing on him spellbound Pishte mantra recited 540 times. If the person is alive as soon as possible so of course he comes back. Mantra : **Om Namo bhagwate rudraye e drishti lekhi naahar : swaha** **Duhai kansasur ki jut-jut, furo mantra ishawaro vacha**	सफलता मिल गयी है . फिर जब भी किसी खोये हुए व्यक्ति को वापिस बुलाना हो तो मध्य रात्रि में खोये हुए व्यक्ति का चित्र अथवा वस्त्र सामने रख उस पर अभिमंत्रित पिष्टी को ५४० बार मंत्र का उच्चारण करते हुए मारे. यदि व्यक्ति जीवित है तो निश्चय ही शीघ्र अतिशीघ्र वो वापिस आ जाता है. मन्त्र- **ॐ नमो भगवते रुद्राय ए दृष्टि लेखि नाहर : स्वाहा,** **दुहाई कंसासुर की जूट-जूट ,फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा .**

11 सर्व विष हारक गरुण साधना

(Sarv Vish Haarak Garun Sadhana)

In world of sadhnas many sadhnas are performed at lonely places, When desired wishful sadhnas are accomplished then we need the help from herbs.In such situation we have to visit woods for getting such herbs and their there is afraid of reptiles like snake etc. But if the seeker do the following mantra Gharoon for 3000 times and sit in front of Parad shivlingam and do worship after that the mantra is siddh. When you enter the forest before Let chant the mantra 108 times and then blow up the wood on the ground strongly and in that way no curse of snake fear does exists. We	साधना जगत में कई साधनाए निर्जन में होती हैं, कई बार मनो वांछित साधना के लिए किसी वनस्पति की आवश्यकता होती है .ऐसे में वन में जाने पर सर्प आदि का भय होता है , परन्तु यदि साधक निम्न गरुण मन्त्र को ३००० बार पारद शिवलिंग के सामने बैठकर उनकी पूजा करने के बाद कर ले तो ये मन्त्र सिद्ध हो जाता है और जब भी वन में जाये तो प्रवेश करने के पहले इस मन्त्र को १०८ बार पढकर जमीन पर लकड़ी से आघात कर दे तो कोसो तक सर्प का भय नहीं होता

also use this mantra in our workshop. Mantra : **Om pakshiraj rajpakshi om thah: thah: thim thim yaralav om pakshi thah: thah:**	है. इस मंत्र का प्रयोग भी हमने दोनों वर्कशॉप में किया था . **मन्त्र- ॐ पक्षिराज राजपक्षि ॐ ठः ठः ठीम् ठीम् यरलव ॐ पक्षि ठः ठः**

Here, I provide the sadhana, that have very high value in my life, I did that and get positive result, I also urge you all that do once **You will azamed to see the result , if Sadgurudev ji blessing with me, than in this series many more mysterious facts revealed to you.**	ये जो भी साधनाएं यहाँ पर मैंने आप लोगो के सामने रखी है, उनका मेरे जीवन में बहुत मूल्य है. मैंने इनका प्रयोग करके देखा है और लाभ प्राप्त किया है. मैं यहीकहूँगा की आप भी एक बार जरुर करके देखे. प्रभाव देखकर आप स्वयं आश्चर्य के सागर में डूब जायेंगे. यदि सदगुरुदेव की इच्छा और आशीर्वाद रहा तो क्रमशः और भी कई नवीन और गोपनीय तथ्य फिर आपके सामने होंगे.

3 Durlabh Tantrik Prayog

३ दुर्लभ तांत्रिक प्रयोग

३ दुर्लभ तांत्रिक प्रयोग

होली के अद्वितीय अवसर पर संपन्न कर सफलता अपने भाग्य में स्वयं ही लिख ले .

होली के अद्वितीय अवसर पर संपन्न कर सफलता अपने भाग्य में स्वयं ही लिख ले .

the holi festival is not only realeted to colours only nether itis started due to the famous epic story of burning of holika , but the basic root of this festical reaches to time immorial , true itis that the festival celebrated in this forms only now the basic values are loosing its ground. but this festival actually a maha tantraik festival whatever type ofsadhana which you were not able	होली का पर्व मात्र रंग गुलाल तक ही सीमित नहीं हैं न ही ये होलिका के जलने से प्रारंभ हुआ हैं , इसकी मूल जड़े तो अर्वाचीन काल से हैं हाँ ये जरुर हैं की ये अब इसी स्वरुप से ही मनाया जाता हैं, इसके शालीनता अब कहीं खो सी रही हैं , पर ये पर्व तो महा तांत्रिक पर्व हैं जो साधना वर्ष भर किसी भी कारण से न कर पाए हो उन सभी के लिए भी उचित महूर्त हैं पर जरा सोचे सम्मोहन से लेकर धन तक हर साधना के लिए यदि यह काल होगा तो यह अद्भुत ही होगा ये पर्व. कुछ गृहों का कुछ नक्षत्रों का ऐसा संयोग

to do the reason/cause of any, can be done without any hesitation again. think about a minit if anysadhan from finance to wealth can be done even , any means any. either aghor to shamshan or saber too, this simply means definitely this days has some very special combination made from planets and stare position . and this days such avivration is developed that the gandharv and yaksh lok also vibrated, and yakshini are the ruler of tantra when they are having the vibration than this days is the tantra days .,

when this holi day is approches than our heart is full of happiness and vivration is also having happiness and joy . ifthese can be stable for the whole year than what could be more usuful. than each days be full of joy , happiness . but how this can be popossible colours will be feded within some days , but colours of sadhana will be of whole life, only if we pay attention on this , merely reading does not create the

होता हैं की सफलता मानो कदम बढ़ाये स्वयं ही आ जाती हैं ,गंधर्व ओर यक्ष लोक के लिए भी इन दिनों कुछ ऐसे तरंगे बनती हैं , क्योंकि यक्ष लोक में ही सारे तंत्र से सबंधित यक्षिणीयों का निवास हैं तो फिर तंत्र से सबंधित हर साधना ही हो सकती हैं .

जब होली का समय आया हैं तो मन में हंसी की उल्लास ही जो तरंगे बनती ही हैं उन्हें यदि सारे वर्ष के लिए यदि स्थायी करदिया जाये तो क्या हर दिन ही उल्लास मय, प्रसन्नता मय , उर्जा मय न हो जायेगा , पर ये होगा कैसे , रंग ओर गुलाल तो कुछ ही दिन में फींके पड जायेंगे पर साधना का रंग तो सारे जीवन भी चल सकता हैं .पर यदि हम साधनामय बने तो . मात्र लेख पढ़ने से क्या होगा .

इन्ही तथ्यों को ध्यान में रख कर आनेवाले होली के महा पर्व समय के लिए तीन सरल पर तीव्र प्रभाव दायक प्रयोग आपके सम्मुख रखे जा रहे हैं इन्हें पूर्ण मनोयोग से करे ओर अपने जीवन में गुरु के ज्ञान को निहित कर आत्मसात कर अपना ही नहीं सद गुरुदेव जी के गौरव को प्रवर्धित करे.

सर्व सम्मोहन प्रयोग :

सम्मोहन के शब्द से ही मन खिल जाता हैं पर

situation.

While taking care thses facts , in coming holi festival here are the three sadhana which are very easy with having most effective are being in front of you, do this very very sincerely, having faith in your Sadgurudev /gurutrimurti ji . have a sadgurudevjis divine knowledge in yourheart , do not only glorified your life but also raise the glory of sadgurudevji.

ये मात्र किसी अन्य को तो वश में करने से ही तो नहीं चलेगा, इस प्रयोग से आपके अंतर में भी परिवर्तन प्रारंभ हो जाते हैं , जब अंतर मन ही सम्मोहन युक्त हो ता जायेगा तो बाह्य पर भी तो असर दृष्टी गत होगा ही .

कैसे हमारे चेहरे में ही नहीं सम्पूर्ण जीवन में ही सम्मोहन हो जाये , तो क्या बात हैं. किस किस को वश में करने के लिए आप साधना करते जायेंगे , जीवन में पौरूषता लाये , आप सदगुरुदेव जी के शिष्य हैं यह तथा हमेशा याद रखे , तो जीवन में उन्नति के अवसर आने हो लगेंगे . पर केबल सोचने से हो तो नहीं होगा उसके लिए साधना का बल भी तो चाहिए . ओर जहाँ सदगुरुदेव जी को मन में धारण करना लिखा या बोला गया हैं वहां तो तात्पर्य केबल ओर केबल उनके द्वारा दिए गए ज्ञान को अपने शरीर के रक्त कण कण में स्थापितकरना ही हैं, मात्र जय कारा लगाने से तो कुछ नहीं होगा .

Sarva Sammohan prayog:

merely reading word sammohan , spark a rays in ourheart , butonly controlling others does not serv the purpose, throughthis prayog internal changes inside you has started and when internal changes started than how long outer changes will be stopped. means outer also get affected.

स्वयं का सिन्दूर से तिलक करके ,काली हकीक माला से या रुद्राक्ष माला या फिर कोई भी माला से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप लाल आसन पर बैठ कर करे. यह प्रयोग होली की रात्रि में ११ बजे के बाद करे.

ॐ सर्व सम्मोहितं दुर्गाय महादेवी हूं

अगले ९ दिनों तक प्रतिदिन इस मंत्र की १ माला करके स्वयं सिन्दूर का तिलक लगाये.

how not only ourfaces but whole life completely get changed, how many times you can do the sadhan to attracts aother poeple to you , how manytimes ,instead of it would not be better that that converted your life in a way that who so ever sees you will automatically get hypnotise . have manliness in your personalty. yoy are the sadgurudev most beloved shishy, always keep this faith in your heart.and the door of opprtunity will opend to you. but merealy thinking will not serve the purpose. for that you needed a force of sadhana, and where ever the written that to have sadgurudev ji in your heart sinply means that try to have sadgurudev ji knowledge as a shandhan in your heart . merely jai gurudev will not serve the purpose. his knowledge has to be digested in our heart and soul.

apply sindur on your forehead , and through black hakeek rosary or rudraksha rosary do chant 51 times round of rosary th ebelow mentioned mantra on sitting on ared colour aasan, and do start the jap after 11 P.M. night only on holi .

यह प्रयोग से चहरे पर एक आकर्षण छा जाता हैं सर्व जन उसे सन्मान की नज़रों से देखते हैं . इस प्रयोग से भौतिक सफलता प्राप्त करने में अत्यधिक अनुकूलता रहती हैं

धन प्राप्ति प्रयोग:

आजके दिन प्रतिदिन के जीवन का धन तो आधार ही हैं अब प्राचीन काल के भिक्षाम देहि सेतो आज का जीवन नहीं चल सकता हैं, ये प्राचीन काल में भी बहुत उचित नहीं माना गया हैं , हमारे वैदिक ऋषि भी आर्थिक दृष्टी से संपन्न रहे हैं , साधक अपने जीवन धन से परिपूर्ण रहे इस हेतु तो उसे हमेशा साधना मय रहना चाहिए , क्योंकि एक प्रयोग कर लिया फिर कभी उसे दोहराना नहीं क्या साधना की दृष्टी से ही नहीं बल्कि दैनिक जीवन की दृष्टी सभी से कितना जरुरी हैं आप स्वयं ही समझ सकते हैं , क्या एकबार भोजन ग्रहण कर के बाद फिर अगले दिन भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ेगी.

अपने सामने ही एक सुपाड़ी स्थापित कर इसे देवी का स्वरुप मानते हुए इसकी सामान्य पूजा करे. इसके बाद निम्न मंत्र से ३१ माला का जाप

	करे
om sarv sammohitim durgaay mahadevi hum.	ॐ द्रव्य सिद्धिम गौ योगिनी नमः
next 9 days do the same process continuously and daily applu sinduoor on your forehead.	मंत्र जप के बाद इसी मंत्र से १०८ बार आहुति शुद्ध घी से दे.
The resultant effect of this prayog creates such a attraction that every one sees sadhak with a respect, when this happens than the material success how far can away.	यह प्रयोग संपन्न करने पर व्यक्ति के आय के स्त्रोत खुलने लगते हे, किसी न किसी रूप में उसे सहायता मिलती हैं जिससे उसे धन सबंधित समस्याए समाप्त होने लगती हैं .
Dhanprapti parayog :	शत्रु उच्चाटन प्रयोग:
In today s life finance is basic base of normal day to day living . now a days old era 's "bhiksham dehi " will not serve the purpose, even that era it is not highly considered very respectful. Our vedik sages were also financial healthy , sadhak always be financially sound for that he should always engaged in such type of sadhana understand this fact that once you did a sadhana and never try to repeat it again if get some positive result , is not a	साधना जगत भी जीवन की मूल भूत आवश्यकताओं के लिए उदासीन नहीं हैं न ही वह कोई कल्पना लोक में रहने की बात करता हैं , सदगुरुदेव तो स्पस्ट करते ही रहे हैं की पहले जीवन की नीव को दृढ बनाओ फिर अपने कदम आगे बढाओ , जब नीव ही कमजोर होगी तब उस पर आधारित घर कितने झटके झेल पाएगा . उन्होंने कभी आकाश वृति या आर्थिक रूप से विपन्न रहने को कभी कहा नहीं , न ही शत्रुओं के सामने सर नीचा करने को कहा , वीर पुरुषों का ही क्षमा भूषण हो सकती हैं पर केबल क्षमा करने से आप वीर नहीं हो जायेंगे , ये तथ्य ध्यान में रखे, जीबन के छोटे छोटे से कार्यों के लिए व्यर्थ में ही गिड गिडाते रहने मानव जीवन

wise decision , think for a second that if taken food on a day that means on second day you do not need that .	का उपहास ही तो हैं .
To have a supari(betel nut) in front of you , considered that form of devi, have a small puja og it and do chant 31 round of rosary of below mentioned mantra.	अपने सामने एक हल्दी का टुकड़ा रखके उसे पर सिन्दूर का अच्छे से लेप कर दे. उसके ऊपर अपने शत्रु का नाम लिखे और हल्दी की माला से निम्न मंत्र का जाप ३१ माला रात्रि में १० बजे के बाद करे
Om dravay siddhim gou yogini namah	**ॐ ह्लीं शत्रु स्तंभन कुरु में देवी रक्षयामि नमः**
And after completing themantra do offer 108 aahuti through ghee	
Through the completing this prayog sadhak finds that the clodes door offinance agin opening up for him, and many ways he gets helps ,so his worry of financial matters starts getting down.	इस प्रयोग से शत्रु निस्तेज हो जाता हैं और भविष्य में वह कभी भी आपके लिए परेशानी खड़ी नहीं करता. देवी कृपा से साधक की सभी तरफ से रक्षा होती रहती हैं .
Shatru uchchtan prayog :	
Sadhana world also recognize the day to needs of various needs of life and had not turn away his faces towards this. Neither it recommended to live fools paradise. Sadgurudev ji's on many	

Isht Devta And His Sadhak

ईष्ट देवता और उनके साधक
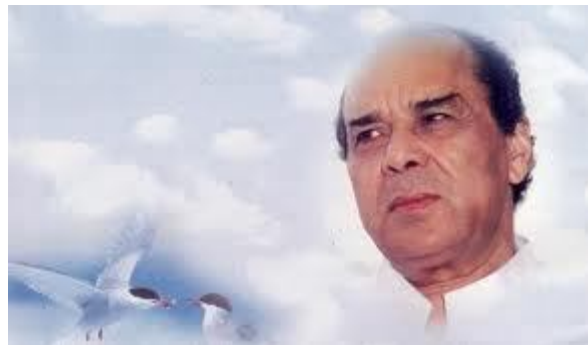
क्या अपने ईष्ट के स्वरुप जैसे ही साधक में परिवर्तन आने लगते हैं

Sadhana world has many unfold and untold secrets and without knowing that meaning of moving on this path not make good sense. so countless sadhana and same countless devta and devi are available in sadhana field . sadhak often, when read some specific writing about particular devi or devta , make his mind that this is the required devta to full filled his needs..off course worldly desire and wishes whatever you may call. Is this decision made with/ due temptation can be considered with wisdom?.

If some writing comes about ma Tara

साधना जगत में अनेकों सुलझे या अनसुलझे रहस्य हैं ओर उनको जाने /समझे बिना इस पथ पर चलते रहना कोई बुद्दिमत्ता तो नहीं कही जा सकती हैं . अनगिनित साधनाए ओर उनसे सम्बंधित अनगिनित देवी देवता से भरा ये साधना संसार ,साधक के लिए कभी कभी उसकी बुद्धि को चकरा देने वाले तथ्य बन जाते हैं . और जब भी साधक किसी भी देवी देवता के बारे में कोई विशेष तथ्य पढता हैं तो उसे लगता हैं की यही वह देवी देवता हैं जो उसकी भौतिक ओर साधनात्मक तृप्ति प्रदान कर सकने में सक्षम हैं , ओर वह उस साधना / देवता की अग्रसर हो जा ता हैं पर इस तरह से लिया गया निर्णय क्या बुद्धिमत्ता युक्त कहा जा सकता हैं

यदि कोई लेख माँ भगवती तारा के बारेमें आता हैं की वह ये हैं वह वे हैं ओर वे अधिस्ठार्थी हैं इस क्षेत्र की या उस क्षेत्र की ,तो साधक गण बिना एक सेकंड भी समय गवाए ये निर्णय ले लेते हैं की की आज से चलो माँ तारा की साधना प्रारंभ करेंगे, पर जब उनकी रूचिओर आशा अनुकूल परिणाम नहीं मिलता हैं तो वे अत्यधिक परेशान हो उठते हैं ओर इस पर या उस पर आरोप

about that she is this or that and she has the ruling over this or that, sadhak without thinking a second take a decision, and when result are not coming as per his expectation then he worried more and more. usually tries to blame this or that , that he has not been guide properly. ,but who has taken the first step to go for that sadhana , is you so why to blame, have you ever tried to understand what are the specialty and peculiarity related to that devta or devi?... No than why to blame.

Yes you have taken Diksha and following the instruction as much as your per your worldly responsibly allows you than still not got the desired result than where is the problem. (in mine blog post "sadhana main saflata" I pointed some of such sadhana related problems), in this article we will move further.

I remembered while I was attending parad workshop- first , in ashram one sanyasin whom we call didi ask me ,when I was discussing with other guru brother about the devta's quality. I was telling that sadhak of maa durga always has to fight the negativity of the world and of course negativity of inside too , since what is out side is also inside ,"yatha pinde tatha brahmaand." Maa has form of a warrior so his devotee has also has the same warrior like condition in his

आरोपित करते हैं .कहते हैं की उन्हें सही तरीके से /उचित मार्गदर्शन नहीं दिया गया .पर किसने इस साधना करने की दिशा में पहला कदम बढाया था ,वह तो आप ही थे , तो अन्य को अपनी असफलता का दोष क्यों देना?क्या आपने कभी भी ये जानने की कोशिश की उस देवी देवता की क्या विशेषता हैं उनसे संबंधित क्या विशेष तथ्य हैं ? नहीं न .. तो फिर किसी अन्य को दोष क्यों देना

ये भी सत्य हैं की आपने दीक्षा भी प्राप्तकर ली हैं ओर अपने भौतिक जीवन की सामर्थ्य नुसार साधना से संबंधित सारे नियमो का भी पालन किया पर अब भी वैसा अभी भी इच्छानुसार परिणाम प्राप्त नहीं हुआ तो असफलता के मूल में क्या तथ्य हैं (ब्लॉग में दिए गए पोस्ट "साधना में सफलता " में कुछ ऐसे ही संदर्भो की चर्चा की गयी हैं , पर उनसे भी आगे यहाँ विवेचना करते हैं)

में पारद कार्यशाला -१ में एक दिन बातों बातों में चर्चा किसी देवता के विशेष गुण पर चल पड़ी , हम जिस आश्रम में रह रहे थे वहां पर एक सन्यासिन जिन्हें हम सभी दीदी कहते थे , ने उस समय पूछा जब ये कहा जा रहा था कि माँ दुर्गा के साधक को हमेशा ही विश्व कि ऋ णा त्मक शक्तियों से संघर्ष करते ही रहना पड़ता हैं फिर चाहे वह अंतर गत कि हो या बाहय गत हो , क्योंकि ये कहा भी गया हैं "यथा पिंडे तथा ब्रम्हांड " माँ एक योद्धा के स्वरुप में हैं तो उनके साधक को भी उसी तरह कि परिस्थितियों का सामना अपने जीवन में करना पड़ता हैं ही . बिना समय दिए हुए उसके सामने एक के बाद एक इस तरह कि स्थितियां आती ही रहती हैं , परये भी उतना सत्य हैं कि उसकी हार कभी नहीं हो सकती हैं वह हमेशा विजयी के रूप में ही होता हैं .उसकी हार तो संभव ही नहीं हैं , इतना सुनने के बाद उन्होंने कहा कि "भैय्या आप जो कह रहे थे वह सही हैं ", उन्होंने लगातार आपने जीवन में एक के बाद एक कठिन समस्या का सामना कर रही थी , ओरभी अभी ओर परीक्षायें उनका इंतज़ार कर रही थी , पर अब वे ,ये जानती थी कि ऐसा क्यों हैं .

साधना जगत का लक्ष्य क्या हैं यही न्ना कि साधक अपने धनात्मकता को अपने गुरु द्वारा प्रदत्त साधना ,निर्देशों का , ओर आज्ञा पालन करते हुए अपनी ऋ णा त्माकता सेकई गुना ऊपर उठाये,साधारणतः ४ लक्ष्य साधक के लिए सामने होते हैं

life, he has to fight continuously and no waiting for him , one by one more trouble some condition imposed upon him, yes it is also true that he definitely comes out of as winner , there is no loosing to him , that is sure. On listing that next day she told me bhaiyya , what you were telling Is true that she also facing a lot of trouble all around but always comes out of that with success, but some more test waited for her, now she understand why that is so.

What is the aim of sadhana or spirituality to increase your positivity over your own negativity through proper and under controlled direction of your own guru. And the four aims a sadhak has to his isht deity .

1. Salokya
2. Saropya
3. Sah yojya
4. Shreshthey nirvana

In salokya . sadhak will have the opportunity to live along with his/her ishat daity, what a joy.In second ,sadhak has the same appearance to sadhy means both are one. means having the same personality radiance. In third sadhak will have any of the kala (special quality) of his isht daity. And in nirvaan , sadhak's man(mind) finally fully absorbs .

सालोक्य

सारुप्य

सहयोज्य

श्रेष्ठ निर्वाण

सालोक्य में साधक अपने इष्ट के साथ ही रह पाने में समर्थ हो पाता हैं कितने आनंद दायक क्षण होंगे, दूसरी अवस्था में साधक का स्वरुप अपने इष्ट के सामान ही हो जाता हैं यहाँ मेरा तात्पर्य इष्ट के गुणों को आत्मसात करना हैं . तीसरी अवस्था में साधक अपने इष्ट क़ि किसी भी कला को धारण करने में समर्थ हो जाता हैं .ओर अंत अवस्था में साधक इष्ट के ब्रम्ह स्वरुप में ही लीन हो जाता हैं.

ये चारों अवस्थाये क्रमानुसार ही साधक के जीवन में आती हैं .प्रारंभ में साधक के मानसिक स्तर पर उसके इष्ट के सद्रश्य ही परिवर्तन दृष्टी गोचर होता हैं इस तथ्य को ध्यान में रखे क़ी जो भगवान् हनुमान के साधक हैंउनमें साधना काल समय , उनमें क्रोध क़ी भावना एक दम से बढ़ने लगती हैं ओर ऐसा किसी के साथ हो रहा हैं तो वह उसकी हनुमान साधना में प्रगति के लक्षण हैं

हाल ही में एक उग्र भैरव के साधक से मिला , जिन्होंने मुझे अपनी कालेज के दौरान क़ी साधना प्रारभ के पहले ओर सम्पूर्ण रूप से सफल होने के बाद क़ी फोटोग्राफ दिखाई , फोटो स्वयंम ही अपनी कहानी कह रही थी .उनका स्वरुप साधना काल में भैरव साद्रश्य हो गया था ,ओर क्यों ऩा ऐसा होगा क्योंकि न तो तेल ,जल के साथ ओर ,न ही जल रेत के साथ मिल सकता हैं ,जब तक आप ओर आपके इष्ट में तनिक सी भी जगह रहेगी सफलता प्राप्ति कोशों दूर हैं .

इसी तरह माँ तारा के साधक को हमेशा ,चाहे वह कोई भी काम कर कर रहे हो , क़ी यह महसूस होता रहता था क़ी उनका जीवन बस कुछ दिन का ओर शेष हैं , पर ये भावना उनमें कोई ऋ णा त्मकता नहीं लाती थी बल्कि हर समय ,समय क़ी महत्ता उन्हें पता रहती थी . एक दिन उन्हें किसी अन्य माँ तारा के अनुभव पढने को मिले उससे उन्हें पता चला क़ी ये तो माँ क़ी कृपा हैं कि वे अपने साधक को संसार क़ी आसरता से सदैव याद दिलाये रहती हैं .

isht 's brahma swarup .

Actually theses four stages comes one by one , in the beginning , sadhak mental attitude will change reflection starts coming to his isht. like *sadhak who is the worshipper Bhagvaan hanuman will have high degree of anger, and if this happening specially in the sadhana that is the sign*. so keep that in mind.

Recently I have meet sadhak of ugra bhairav he showed me his college time photograph before starting the sadhana and after completing the successfully the sadhana photo were saying the story itself his appearance changes like bhairav, why should not be that, since oil can not mix with water, or water and sand cannot mix together, so until you and your isht deity are one how can you expect success . and when both are one. Success is at your door step.

I also meet *a sadhak of ma tara who has always the feeling that his days are numbered*. no matter what he do, he has not having any problem to this type of thought, actually more joyful his personality , now he tries to live each moment, one day he read other sadhak's exp. on ma Tara that mother Tara blessing such that her sadhak never forgot the temporary existence in this mortal world .

यहाँ पर में कुछ संकेत दे रहा हूँ ,जो भी भगवान गणेश के साधक हैं वे सारे जीवन हांथो में लड्डू लिए सिहांसन में बैठे ही जीवन व्यतीत करते हैं तात्पर्य ये हैं क़ी उनका जीवन पूर्ण भौतिक सुख सुविधा से उनका जीवन परिपूर्ण रहता हैं .हम मेंसे अधिकांश साधक माँ भगवती के महाविद्या स्वरुप के उपासक हैं . इस में कोई गलती क़ी नहीं बल्कि भाग्य ओर उच्चता क़ी बात हैं ,परक्या उन्हें ये ध्यान रहता हैं क़ी ये माँ के १० सर्वोच्च स्वरुप क़ी साधना हैं . तो उनके इन महत ,सर्वोच्च स्वरुप क़ी साधना क्या इतना आसान होगी .वास्तव में माँ ही अपने साधक क़ी कड़ी परीक्षा लेती ही रहती हैं, ओर परीक्षा का की मतलब यहाँ मुझे यहाँ लिखने क़ी आवश्यकता नहीं हैं .उसमें आप ये नहीं यह कह सकते हैं क़ी मेरा भाग तो पूरा हुआ .माँ के स्नेह को प्राप्त कर पाने क़ी परीक्षा में बहुत ही कम ही ठहर पाते है. सम्पूर्ण जीवन ही उस के परीक्षा काल का रहता हैं .

यह तथ्य भी विदित रहे क़ी जो साधक बहुत जल्दी क्रोध पर अपने नियंतरण नही कर पाते हो ओर वे यदि हनुमान साधना में प्रवेश करे तो ये क्रोध समस्या ओर भी बढ़ सकती हैं जो उनके दिन प्रति दिन के जीवन में काफी परेशानी खडी कर सकती हैं .

अपने युवा काल में स्वामी विवेकानंद जी किसी गृहस्थ के घरपर ठहरे थे , जब उनके व्यक्तिव से प्रभावित हो कर गृह स्वामी ओर उनकी पत्नी ने उनसे दीक्षा देने के लिए प्रार्थना क़ी ,स्वामी जी के लगातार मना करने पर भी वे दोनों अपने निश्चय से तनिक भी डिगे नहीं .तब उन्होंने पूछा क़ी वे भगवान् के किस स्वरुप क़ी उपासनाअभी तक करते आये हैं , दोनों ने कहाँ ऐसा तो कभी किसी विशेष के लिए किया नहीं , कभी इसकी क़ी कभी उस देवता क़ी ,स्वामी जी ने हस्ते हुए कहा ऐसा कभी नहीं करते हैं , किसी विशेष देवता के तरंगो से ही साधक के तरंग मिलती हैं वही उसका इष्ट होता हैं ओर उसकी उपासना से साधक शीघ्रता से अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता हैं उसके बाद स्वामी जी ध्यानस्थ हो कर बैठे फिर उनसे जल से भरे घड़े को स्थपित करने को कहा .....

तो इस का निर्धारण तो गुरुदेव ही कर सकते हैं कि किस देवता क़ी उपासना में साधक सफल हो सकता हैं ,और किस देवता /देवी /महाविद्या साधक के लिए इष्ट या सफलता दायक हो सकती हैं , या यदि साधक क़ी रूचि , किसी विशेष देवी /देवता कि साधना करने में ही हैं तो

Here is the general indication some of the lord. *One who worship Bhagvaan ganesh , rest of the life he eats laddu and with joy. Means he will leads a life with complete comforts*. one more important that many sadhak just to became mahavidya sadhak ,nothing wrong in it actually very blissful thing in the life but keep in mind that they are the supreme most 10 form of mother divine, ***so how can you just think its so easy, actually mother take much teste to her sadhak, tested means you know , you cannot say from your side this is over, to have mother love , very few can stand that test.all his life so many type of this or that trouble always comes his way.***

Like you already if you are *having short temper problem and doing sadhana of hanuman ji surely your anger also boost up that could be a problem in your day to day life think about a minit . .*

once swami Vivekanand in his youth time stay in a house owner and his wife so much impress him that asked him to give them Diksha ,he simply refused , but they also continued for their request, later swami ji ready for that ask them which form of god they aware worshipping till that , they replied nothing special ,some time this some time that, swami ji smiled and said this

किस उपाय / किस दीक्षा के माध्यम से यह संभव हैं .. आप सभी इन बातों का ध्यान रख कर और पालन कर साधना करें ,सदगुरुदेव जी के आशीर्वाद से आप निश्चय ही सफल होने ही ...

Kaal Sarp Yog - In My View

काल सर्प योग -- मेरे दृष्टीकोण में

From few years I have came across the fact that the people are getting afraid by the few Astrologers bya myth Kaal Sarp Yoga (A planetary position in a horoscope which is not considered good at some instances). Kalsarp Yoga has become a very popular astrological concept today with a number of controversies surrounding its authenticity and true nature. Many astrologers claim that there is no mention of Kalsarp Yoga in any of the classical astrological texts.

Now let us first understand what it is????What is Kalsarp Yog? Why and how it is formed? What are its

विगत कुछ वर्षो से एक आधार रहित योग से लोगो को अनावश्यक भयभीत किया जा रहा है.और लोग ज्ञान और सच्चाई के अभाव में भयभीत होकर मानसिक शान्ति और धन दोनों का नाश कर रहे हैं.और ताज्जुब तो यह है की हर ज्योतिषी को इसके बारे में पता है फिर भले ही उसने अभी ही ज्योतिष की प्रवेशिका को हाथ में लिया हो.इसका कारण इस योग की नकारात्मक प्रभाव का प्रसार ही है.और यह तो हमारे परंपरा और संस्कृति में है कि यदि किसी चीज से नुक्सान हो रहा है तो फिर उसका सच मत जानो बस भयभीत रहिये और अनावश्यक उपाय में अपना धन और कीमती समय लगाओ.

यह हो सकता है कि कई वरिष्ठ ज्योतिषियों को मेरी बात ग़लत लगे पर यदि ऐसा हो तो वे निम्नाकित तथ्यों का खंडन सटीक और

solutions and remedies? If all the seven planets come between Rahu and Ketu then Kalsarp Yog formed.	शास्त्रोक्त आधार पर करें ताकि सबको सच्चाई तो पता लगे.काल सर्प जैसा कोई योग या दोष नहीं है. इस बात के लिए मेरे निम्न तथ्य हैं:
If in between Rahu & Ketu all seven planets come then it is not considered good in Astrological studies. It is assumed that if a person who takes birth in this yoga suffer from various problems like child problems, loss in business, family problems etc. Rahu is known as snack and Ketu is its tail. All planets come under the execs of Rahu & Ketu because of which Kaal Sarp Yog is formed in horoscope.	जन्मकुंडली में जो ९ ग्रह हैं उनमे २ ग्रह, छाया ग्रह हैं .राहू और केतु.तथा पृथ्वी का स्थान जातक का स्वयं का स्थान यानि की लग्न होती है. राहू और केतु का प्राकट्य-चंद्रमा का परिक्रमण ताल पृथ्वी के परिक्रमण ताल की सीध में नही है बल्कि कुछ झुका हुआ है,इस का औसत झुकाव ५ अंश ८ कला और ४५ विकला है.यही झुकाव कभी कभी बढ़कर ५ अंश २० कला भी हो जाता है तो कभी घटकर ४ अंश ५७ कला भी रह जाता है.और पृथ्वी के सूर्य की परिक्रमा करने के कारण चंद्रमा का ताल वर्ष में कम से कम २ बार सूर्य के केन्द्र की दिशा में आ जाता है.
This Kalsarp Yog can be formed in any person's horoscope like king, rich, president, prime-minister, peon, poor etc. and those who has Kalsarp Yog in their horoscope, instead of they have all kind of facilities but always suffer from any tension, fear, insecure.A person who has bitten by snack cannot sit comfortably like this a person who has Kalsarp Yog in his horoscope always fear from death.	जब पृथ्वी और चंद्रमा के यह परिक्रमण ताल एक दुसरे को एक सीधी रेखा में काट देते हैं तो इस रेखा के मिलन बिन्दु को 'संपात' कहते हैं.जब चंद्रमा पृथ्वी को काट कर ऊपर चढ़ता है तो उसे आरोही संपात और जब नीचे उतरता है तो अवरोही संपात कहते हैं यही आरोही संपात राहू और अवरोही केतु कहलाता है. केतु को चंद्र छाया और राहू को पृथ्वी की छाया कहा जाता है.पृथ्वी की छाया मंडलाकार होती है और राहू इसी छाया में भ्रमण करता है.
Why this yog is formed? This yoga is more dangerous than other malefic yoga. This yoga effects a person till 47 years and some time throughout his life, its depend upon the position of	खगोल विज्ञानं के अनुसार चंद्रमा महीने में सिर्फ़ २ बार ही पृथ्वी पथ को काटता है.इसी तरह राहू केतु कभी एक साथ निर्मित नही हो सकते क्यूंकि एक संपात बिन्दु से दूसरे संपात बिन्दु तक पहुचने में १३ दिन और ११ तो १२ घंटे लगते हैं. राहू केतु सदैव एक दूसरे से ७ वे स्थान में होते हैं या १८० डिग्री दूर होते है . इसलिए अधिकतर

Kaal Sarp yoga.If, in a horoscope, all the planets are placed between Dragons-head (Rahu) and Dragons-tail (Ketu), it is

considered to be Kalsarp yoga. According to Indian astrology, there are many types of Kaal Sarp yoga-

If inauspicious planets like Mars and Saturn are placed on the opposite side of Rahu and Ketu, then it is considered to be a partial Kaalsarpa Yoga. In the partial Kaalsarpa Yoga, the effects are not as powerful as Kalsarp Yoga

Lets again come to our pointThe people are wasting their money and energy both by the above misconceptions and I am amazed that the Astrologers are well known about these facts and realities no matter they are new or old in this profession The main reason of all this is the assumption of the ill

effects of this yoga.Its in our culture and custom that if something is harmful for us; the people will not find the root cause of that; the only thing they will do is to get away from the things and will fear always and will find the solutions by wasting time and money.

It might happen that the few respected and superior astrologers

कुंडलियों में अधिकांश या सारे ग्रह इनके बीच हो सकते हैं.पर इसका अर्थ यह नही हो सकता कि अन्य ग्रहों की प्रबलता या प्रभाव को ये शुभ या अशुभ कर सके.यह दोनों छाया ग्रह हैं अतः न तो इनकी कोई राशि है और न ही इनका कोई भाव . अतः भावेश के गुणों को यह ग्रहण कर लेते हैं.

जन्म कुंडली में ३,६,११ भावः में राहू की स्थिति शुभकारक या धनात्मक होती है. राहू केतु के प्रभाव क्षेत्र में बाह्य वर्ती ग्रह मंगल,बृहस्पति, तथा शनि आ हि नही सकते. जब राहू त्रिक स्थान पर शुभ प्रभाव देता है तो कालसर्प योग के वासुकी ,महापद्म, विषाक्त आदि कैसे दुष्प्रभाव देंगे जरा बताइए तो...जबकि इन स्थानों से निर्मित होने वाले काल सर्प योगों का विवरण भयानक ही है. सबसे अहम् बात यह है कि यह काल सर्प एक योग है या एक दोष ,इस विषय में ही मतभेद है.

ज्योतिष में कोई भी योग ४ मूलभूत नियमो के अंतर्गत निर्मित होता है:

१.ग्रहों के परस्पर संबंधो के आधार पर.

२.ग्रहों की सापेक्ष स्थिति के आधार पर.

३.आकृति विशेष से ग्रहों का समय होने पर.

४.ग्रहों की राशि विशेष में स्थित होने पर.

अब जबकि कोई भी योग या तो शुभ फल देता या अशुभ फल प्रदाता है तो काल सर्प योग कैसे किसी को शुभ और किसी को अशुभ फल दे सकता है.यह राहू से केतु के मध्य ग्रहों के स्थित होने पर होगा या केतु से राहू के मध्य ,इस बात पर ही मतभेद है उन महानुभावो में ,जो की इसका समर्थन करते हैं.

may find my version wrong; and if this is the point they are free to oppose my facts through the accurate base from the knowledgeable books so as to bring the Truth in front of all The Kaal Sarp Yoga is not a curse for anyone and for this I have few

facts which are as follows:-

In a birth horoscope, there are 9 Planets in which 2 Planets are the Shadow Planets Rahu & Ketu the planetary position of the Earth is considered as the Planetary position of the person itself which is also known as LAGNA...

The origin of the Rahu & Ketu is because of the tilt resolution of the Moon in compare with the straight resolution of the EarthIt is average tilted 5 Ansh 8 Kala & 54 VikalaThis tilt sometimes become higher and becomes 5 Ansh 20 Kala & sometimes become less to the 4 Ansh 57 KalaBecause of the Sun and

Earth rotation, the tune of the Moon minimum 2 times in a year comes in the centre direction between the Sun position.

Whenever the resolution of the Earth and the Moon cut each other in a straight line the adjoining point of the line is known as SAMPAATWhenever the Moon cuts the position of the Earth and get above on it is known as

इस योग का प्रचलन कब हुआ और किस प्राचीन ग्रन्थ में इसका विवरण है यह भी कोई समर्थन करने वाला ज्योतिषी नही बता पाता है . और आप ख़ुद ही सोचिये की दिव्य दृष्टि संपन्न हमारे प्राचीन ऋषियों से भला इतना भयानक योग बचा रहा यह बात मेरे गले के नीचे नही उतरती...और जो भी इसके समर्थन में तथा इसकी प्राचीनता को सिद्ध करने के लिए निम्न श्लोक बताते हैं :

"पुत्र भवः सर्प शपत सूत क्षय,नाग प्रतिष्ठाया पुत्रः प्राप्ति"

तो यह श्लोक तो पंचमस्थ राहू का फल बताता है न कि काल सर्प योग का.और इतने सारे इसके प्रकार और उप प्रकार बता दिए गएँ है जितने कि कुल ज्योतिष योग की संख्या भी नही है.अब इन तथ्यों को यदि ग़लत साबित किया जा सके, तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर तो ही इस योग या दोष को सही माना जा सकता है .अन्यथा व्यर्थ में भयभीत करना तो ग़लत ही है.....

एक बात तो निश्चित हैं की आधारहीन बात को ही हज़ार बार मजबूती से कह दिया जायेगा तो वह भी सत्य सामान लगने लगेगी . अब ढेरों किताबे ढेरों नियम, उपनियम इसके लागु होने के , उतने ही वही इसके प्रभाव हीनता के भी , अब क्या क्या एक व्यक्ति याद रखेगा . किस किस की बात माने ओर किस की बात न माने , सभी तो अपने तरकश में तीर भर कर छोड़ रहे हैं .

एक बात विचारणीय हैं की दक्षिण भारत के वैदिक ज्योतिष के उच्च कोटि के विद्वान डॉ. श्री बी , व्, रमण ने जिन्होंने अपना सारा जीवन ही ज्योतिष के क्षेत्र में लगा दिया , ज्योतिष पर अनेकों किताब के रचियता ओर

AAROHI SAMPAATsimilarly when it gets down it is known as AVROHI SAMPAAT or AAROHI SAMPAAT Rahu or AVROHI SAMPAAT Ketu.

The Ketu is assumed as the shadow of the Moon and the Rahu as the shadow of the EarthThe Rahu revolve in the Mandlakaar shadow of the Earth

According to the Space Science, The Moon cuts the course / path of the Earth 2 times only in a monthDue to this, the Rahu & the Ketu cannot create together in any condition as the time taken to reach from 1st Sampaat to the 2nd Sampaat is approx 13 Desh and 11 12 Hours

The Rahu & The Ketu remains together or they lie on the 180 degree positionsIn most of the horoscopes, almost or maximum planets lie in between these twobut this doesnt mean that these two will cause any useful or harmful effects on the strength or the effect of the planetsRemember, these two are the shadow planets hence neither they resemble any zodiac sign nor they have any ratings hence they both acquire the ratings of the dominating positions In a birth horoscope the position of the Rahu lies in the 3rd, 6th & the 11th positions The external Planets like Mars, Jupiter & Saturn cannot come across in the effects of both Rahu & Ketu

विख्यात व्यक्तिव्त्व ने भी अपनी कृति " "A catechism of Astrology " में इस काल सर्प योग को अमान्य किया ओर चूँकि प्राचीन आचार्य वराह मिहिर ओर सत्याचार्य ने अपनी कृति में इसका उल्लेख ही नहीं किया इस हेतु , उन्होंने इस योग की इसकी प्रमाणिकता ओर प्रभाव क्षमता पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया हैं , अर्थात उन्होंने भी इसकी मान्यता नहीं दी हैं.

और अंत में आधुनिक युग के वराह मिहिर तथा भीष्म पितामह माने जाने वाले सदगुरुदेव जी जिन्होंने ज्योतिष की पुनर्स्थापन इस युग में की हैं ओर जिनकी सूक्ष्म दृष्टी से कुछ छूट पाना संभव ही नहीं हैं , उन्होंने भी इस योग को कोई मान्यता नहीं दी हैं इसका खंडन ही किया हैं ओर उनकी की दो किताबे ज्योतिष योग पर अभी भी उपलब्ध हैं , "ज्योतिष योग चन्द्रिका" ओर "ज्योतिष योग दीपिका" , तो क्या उन जैसे व्यक्तिव से आप ये उम्मीद कर सकते हैं की लगभग ३०० योग उन्होंने दिए हैं इस महत्वपूर्ण योग को भूल वश छोड़ दिया हो . नहीं यह संभव ही नहीं हैं .आधार हीन तथ्य हीन ओर प्रभावहीन योग को क्या कहा जाये . क्योंकि सदगुरुदेव ने "बाबा वाक्यं प्रमाणं " को आधार नहीं बनाया बल्कि वे तो आंखन देखि ही कह्ते रहे हैं .

अब एक नयी बहस छेड़ने से कोई फायदा ही नहीं हैं, दो अति उच्च कोटि के विद्वानों की बाते आपके सामने रख दी हैं , शेष जिन्हें जिसकी बाते मनानी होगी वे मानेगे ही . आखिर जीवन हैं ये

White Tara Sadhana

परम दुर्लभ श्वेत तारा साधना

(दस महाविद्या में से एक भगवती तारा के अत्यंत दुर्लभ स्वरुप की साधना)

Truly, the fortune of the human arises when they go ahead in the path of sadhana world. And passing with sadhanas, prepares for mahavidhya sadhanas. Who the one will be in the world of sadhana that after receiving one sadhana of any mahavidhya among ten, have not accepted him self as wealthy as Kubera. These 10 mahavidhyas controls universe. Really, whole sadhana world is merged with these forms of maa parambaa. Every Mahavidhya is completely powerful but because of their own specialties of	सही अर्थो में मानव का भाग्योदय तब होता हैं जब वह साधना के रास्ते पर अग्रसर होता हे. और जब साधनाओ के मध्य में अपने आपको आगे बढ़ाते हुए वह महाविद्या की साधनाओ के लिए तैयार होता हैं .साधना क्षेत्र का कौन सा ऐसा व्यक्तिव न होगा जो अपने मन में कभी १० महाविद्या मेंसे किसी भी एक की भी साधना मिल जाने पर अपने आप को कुबेर वत न समझ लिया हो, यह १० महाविद्या ब्रम्हांड का संचालन करती हैं , सत्य हैं माँ पराम्बा के इन दिव्य रूपों में तो सारा साधना क्षेत्र ही सिमट आया हैं , हर महाविद्या अपने आप में सर्व समर्थ पर अपने ही कुछ विशेषताओं के कारण साधक वर्ग में अत्यधिक लोक प्रिय होती हैं जैसे की भगवती छिन्मस्ता तो वीरों की आराध्य रही हैं तो शासक वर्ग के /राजपुरुषों के मध्य ज्यादा लोक प्रिय रही हैं माँ को

powers they has remained most favorite among sadhaks like for bravo people, Chinnamasta had remained as deity because the people involved in political world and kingdom gets attracted toward her

But who can give relief from the all 3 problems related to Material, spiritual and Physical; generally people makes mother Mahakali as base but only few people know that mother is naked and to the naked mother only child is allowed to go, that's why sadgurudev have always been thoughtful to give related diksha, because sadhak must owns clear holy mind. Then, don't we have other solution?Why not?

Every mahavidhya has many forms, impossible actually that one who is in the sadhana world had not dreamed for Mahavidhya Tara's sadhana. Mahavidhya tara not only gives boon of fulfilling wishes but it is famous among sadhak that also, after completion of sadhana, there would no more worries regarding monitory problems in the future till whole life and complete material success is also be gained. The sadhana of bhagawati Tara is a bit difficult but then too there are sadhak who have completely accomplished sadhana.

Today in this world filled with all short of problems, every human, unbounded

रुधिर अधिक प्रिय हैं , तो उनका रुझान आसानी से समझा जा सकता हैं .

पर इस जीवन में त्रि ताप से कौन मुक्ति दे सकता हैं , भौतिक ,शाररिक ,आध्यात्मिक तापों से मुक्ति कोन देगा , साधारणतः लोग पहले महाकाली माँ के स्वरुप हो ही आधार बनाते हैं पर बहुत कम ही जानते हैं की माँ काली तो दिगम्बर| हैं ओर दिगंबरा माँ के पास तो केबल शिशु ही जा सकता हैं , इस लिए सदगुरुदेव् जी इनसे सम्बंधित दीक्षा बहुत सोच विचार कर ही देते हैं, क्योंकि साधक को निर्मल चित्त तो पहले बनना पड़ेगा ही. तब क्या कोई उपाय नहीं हैं क्यों नहीं .

सभी महाविद्याओ के भी कई रूप भेद हैं संभव ही नहीं हैं की साधना जगत में साधक को महाविद्या तारा की साधना करने की इच्छा न हुयी हो. महाविद्या तारा अपने साधको को मनोवांछित सिद्धि देती ही हैं , और साधको के मध्य प्रचलित हैं की तारा महाविद्या साधना करने के उपरांत पूर्ण रूप से भौतिकता प्राप्त होती हे और भविष्य में धन सबंधी समस्या उसे कभी नहीं सताती. भगवती तारा की साधना थोड़ी कठिन जरुर हैं लेकिन कई साधको ने इसे पूर्ण रूप से सिद्ध किया हैं .

आज के त्रि ताप से दग्ध समाज ,हर परिजन व्यक्ति , देशकाल की सीमा से परे एक ही साधना के शरण में जा ता हैं , सद्गगुरुदेव भगवान् ने भी भूरी भूरी प्रसंशा , माँ पराम्बा के इस अद्वितीय रूप की हैं. क्योंकि जो तारे वही तारा हैं, सूर्य की अद्भुत शक्ति के पीछे माँ ही हैं, ओर दस अवतार में भगवान राम की आधारभूता शक्ति भी यही हैं . पर ऐसा क्या हैं विशेष माँ इस रूप में .

भगवती तारा के इस रूप की विशेषता हैं की इन के साधक को आर्थिक आभाव से मुक्ति मिलती हैं ,उसे किसी अन्य के सामने हाँथ फैलाने से माँ बचाती हैं लगातार किसी न किसी स्त्रोत के माध्यम से उसे सहायता मिलती ही रहती हैं, यो तो

by the boundaries of country goes to one sadhana only. Sadgurudev Bhagwan also widely appreciated this divine form of mother Parambaa. Because the one who saves from every problem that is Tara. Behind the amaizing power of the sun, there is mother Tara. And in Dasawatar, the Skati of the rama is also the same. But what is so special about her this form?

The specialty about this form is the sadhak of her get ride on monetary troubles, mother save the sadhak who goes into debt, continue with any medium the sadhak receives her help. Though the worship of the mother could be with Chinachaar system, the simple form of the mother do not expect the fluency of prayers from sadhak but if sadhak is bit even egoistic then in thousands life even the success can not be gain though following all the rules even. For the simple heart mother stands always, we need not to call her, the child might be unknown to the name of mother but she is always everything for him. If this is the base mentality of the sadhak, nothing remains impossible. Mother is always with him.

Mother is giver of knowledge & wealth she saves from every danger. But every

माँ की साधना चीनाचार पद्धति के माध्यम से ही की जा सकती हैं, माँ का यह सरल रूप अंपने साधक से किसी पांडित्य ता की अपेक्षा नहीं रखता , अगर साधक थोडा सा भी अंहकारी हैं तो हज़ार वर्ष में भी सफलता सारे नियम उप नियमो के पालन के बाद भी नहीं मिल सकती हैं. वही सरल ह्रदय के लिए तो माँ तो पहले से ही खड़ी हैं , क्या उन्हें भी बुलाना पड़ेगा, भला शिशु माँ कानाम कही जानता हैं, उसके लिए तो वह सबकुछ होती हैं यही भावभूमि धारण करने वाले साधक के लिए मानों क्या असंभव हैं .माँ तो सदा साथ ही हैं .

माँ ज्ञान विज्ञानं बुद्धि धन्प्रदाता हैं साथ ही साथ तारने वाली हैं. पर माँ के भिभिन्न रूप में हर रूप की अपनी एक अलग ही विशेषता हैं , चाहे वह नील तारा हो या एक जटा या महौग्र तारा हो या उग्र तारा हो , किस रूप की साधना की जाये ये तो सदगुरुदेव का ही अधिकारका क्षेत्र हैं , वही निर्धारण कर सकते हैं .साधक कि मनोभाव माँ के किस रूप से मिल पा रहे हैं ओर उसका लक्ष्य किस रूप की आराधना से पूर्ण हो सकता हैं.

बौद्ध तंत्रों की जो अद्भुत श्रंखला इस देश में आई वह अद्वितीय थी, साधना के अनेको ,ज्ञान विज्ञानं के ऊँचे ऊँचे कीर्तिमान जो खड़े किया गए वे अपने आप में बेमिसाल थे, ये तो कालांतर में कतिपय दुर्बल मानसिकता ,स्वार्थी तत्वों की अकलुषित मानसिकता के कारण सही पद्धति ह्रास के कगार में पहुच गयी , तब भगव द पाद अदि शंकराचार्य को सनातन संस्कृति की पुर्नस्थापन करनी पड़ी .

जन सामान्य के मध्य माँ तारा , बौद्ध तंत्रों की देवी हैं सुच भी हैं माँ सरेबौद्ध तंत्रों की अधिस्थार्थी हैं भी , वहां पर माँ के अनेको रूपों से सम्बंधित साधना हैं पर जन सामान्य से कोशो दूर किसी अगम्य मठों में ही माँ के कुछ रूपों की साधना आज भी पाई जाती हैं , माँ के इन रूपों में एक हरित तारा का भी हैं , पर स्वेत तारा का रूप के बारेमें तो कभी

divine form has their own specialty, rather it is Neel tara or Ek jata or Mahogra tara or Ugra tara, who should be worshiped that is completely depend on Sadgurudev, he only can decide that with which form the mentality of the sadhak does match and sadhana of which form can lead him to achieve desire.

The system of buddh tantra which came to the nation was unique. Many pillors of the knowledge and science made were incomparable, it was the cheap thinking and selfishness of few who made this system vanished and extinct, at that time holy Shankaracharya were made the re establishment of the ancient Sanatan tradition.

In the middle of general public, mother tara is diety of Buddhtantra. It is fact, she is diety of all buddhisth tantra. There we can find so many sadhanas in regards of different forms of her but very far from the general people, in some Maths only such sadhanas could still be found. In the various forms of the mother, there is Harit tara, but Swet tara is not even been heard by anyone. The unique sadhana of this divine form is not difficult but it is too rare.

सुना ही नहीं हैं , इस दुर्लभ रूप की सधना कठिन तो नहीं हैं पर अगम्य, अत्यधिक दुर्लभ हैं ही .

पूज्य पाद सदगुरुदेव जी के सानिध्य में बैठना ही जीवन की उच्चता हैं परि पूर्णता हैं सौभाग्य हैं, और बातों बातों में कुछ ऐसे दुर्लभ अगम्य अप्राप्य रह्श्य खोल देते ,उस दिन भगवती तारा के दिव्य रूपों की चर्चा चल पड़ी , मैंने पूछा की क्या गुरुदेव के कोई रूप उनका ऐसा हैं हैं जो दुर्लभ हैं पर अपने आप में परि पूर्णता देने वाला हो , साथ ही साथ साधना भीकम समय की ही हो , की इतने सारेदुर्लभ संयोग उनके किसी रूप में संभव हैं.

क्यों नहीं उन्होंने कहा ओर कहाँ , की एक ऐसे हो रूप की साधना हैं जो भगवती के **श्वेत** तारा रूप की हैं .

श्वेत तारा ,गुरुदेव ये नाम तो सुना नहीं , कुछ इसके बारेमें प्रकाश डाले ????

सदगुरुदेव मुस्कुरातेहुए बोले- भगवती का यह रूप अत्यंत हि मनोहारी हैं, शुभ प्रकाश से जिसकी कान्ति चहुँ ओर खिली हैं ,जिन्होंने **श्वेत** वस्त्र ही धारण किये हुए हैं .वह कल्याण कारी तारा का रूप तो अत्यंत ही दुर्लभ हैं .भगवती साधक को मनोवांछित वरदान दे कर अपनी कृपा का अमृत वरसाती हैं .भगवती के इस रूप का जिसने दर्शन कर लिया उसने साधना जगत में अपना ही एक स्थान बना लिया .

उच्च कोटि के योगी भी ये साधना सपन्न करने की इच्छा रखते हैं .इस तारा रूप के साधक को सभी आदर की दृष्टी से देखते

To sit in the holy feet of sadgurudev is the hights of spiritual life, totality and best fortune. And mean while the talk he used to open rare and incomparable secrets of the sadhana world. That day the talk went on for divine forms of bhagawati Tara. I asked that Gurudev is there any form of her which is very rare and can give totality, that too in short span of time is this possible that all these co-incidence could be find in one single form ?

Why not, he said there is such sadhana which is related to bhagawati's form Swet tara.

Swet tara?, Gurudev I never heard of this name, please throw some light on this.

Sadgurudev smiled and told: the form of the goddess is really attractive; the white glow which is shining brightly, the one who is in white cloth, that welfare provider form of tara is rare. She showers her blessings on sadhak to fulfill his whole wishes. The one who get sight of her have made a remarkable place in the sadhana world.

Very highly accomplished yogis even wish to complete such sadhanas. Everyone look with respect to the

हैं .क्योंकि ये साधना केबल ओर केबल उच्च कोटि के योगियों के मध्य ही प्रचलित रही हैं इसलिए प्राप्त करना असंभव तो नहीं पर कठिन जरुर हैं.

मैंने सदगुरुदेव जी से कहा की गुरुदेव क्या में इस साधना की प्रक्रिया जान ....?????

उन्होंने मेरे मनोभाव को पडते हुए , इस देव दुर्लभ साधना के गोपनीय पक्षों को समाहित करते हुए अत्यंत हो सरल विधान सामने रखा जो में आपके सामने पूज्य सदगुरुदेव जी की अनुमति से रख रहा हूँ. ......

यह साधना किसीभी बुद्धवार या रविवार की रात्रि को १० बजे शुरू करदे. अपने सामने तारा यन्त्र स्थापित करले. श्वेत तारा देवी के शुभ्र स्वरुप का ध्यान करे और नीचे दिए गए मंत्र का १०००० बार जप मोती माला या फिर सफ़ेद हकीक माला से करे.

ध्यान :

सोम स्वरुप शुभ वस्त्र धारिणी पुष्प माला

सह पाश रक्त सर्वारिणी सौम्यकान्ति

नीर्जारा : श्वेतेश्वरी त्रिपुरा :

साधकं कल्याण प्रदायिनी नमामि तवं पुनः पुनः

मंत्र:

ॐ त्रां त्रीम त्रूम श्वेत ताराये नमः

जप पूर्ण होने के बाद साधक को इसी मंत्र से हवन करना हैं . हवन के लिए श्वेत अपराजिता के १००० पुष्पों का रस लेना हैं श्वेत अपराजिता को सफ़ेद गौकर्णी, श्वेत पुष्पा, श्वेत गिरिकर्नी, कटभी, गर्दभी, दध्रू पुष्पिका आदि नमो से जाना जाता हे, अगर १००० फूल संभव न हो तो जितने भी संभव

sadhak of this form of tara. Because this sadhana has remained with very high accomplished yogis therefore to gain such sadhana is not impossible but then too is really difficult.

I asked sadgurudev rather may I have details of the sadhana?

With my pray he gave me the details of the sadhana and the secrets with easy process which I am placing hereby with permission of sadgurudev.

This sadhana can be started in the night time after 10 PM on any Wednesday or Sunday. Place tara yantra in front of you. Meditate on goddess's bright form and after that chant 10000 times following mantra with Moti rosary or White Hakeek rosary.

Dhyan :

som swarup shubh vastra dharini pushpa mala

sah pash rakt sarvarini soumy kaati

nirjaraah shweteshweri tripurah

sadhakam kalyan pradayini namami tvam punah

Mantra :

हो उतने पुष्पों का रस निकल ले और उसमे इतना शहद मिला ले की जिससे उस मिले हुए द्रव्य से १००० आहुति दी जा सके.

यह पूरी साधना उसी रात हो जानी चाहिए.

साधना के मध्य में या हवन पूरा करते करते साधक को निश्चित रूप से श्वेत तारा का दर्शन हो जाता हे और साधक उससे मनोवांछित वरदान मांग सकते हैं .

वर्ष के इस समय जब इतनी उच्च कोटि की साधना सदगुरुदेव जीके आशीर्वाद स्वरुप प्राप्त हो रही हैं तब भी उस ओर ध्यान न दे तब किसकी भाग्य हीनता कही जाएगी .

साधक कल्पना कर सकते हैं की सिर्फ एक रात में यह साधना क्या परिणाम दे सकती हैं, परन्तु श्रद्धा और विश्वाश साधक के अति आवश्यक अंग हैं , उसके बिना किसी भी साधना में सफलता प्राप्ति संभव हो, कहा नहीं जा सकता. आप सदगुरुदेव जी के प्रति विनम्र व साधना के प्रति पूर्ण निष्ठां भाव से संपन्न करे , निश्चय ही आप सफलता प्राप्त करेंगे करें.

Sadhana And Siddhiyan

(क्या हैं आखिर साधना करने का वास्तविक उद्देश्य)

Sadhana bhav bhumi (mental attitude)is the most important thing that a sadhak must know. But many of us lacking understanding the common thing , but common thing is very uncommon. We stared our journey and even a single round of rosary not started and we wait for the out come ,why not siddhit still came? As the result already mentioning our Sadgurudev ji in patrika, so may be the process mentioned in that is not complete or worried on the reason god knows.. Many person who totally disappointed	साधना की भाव भूमि (मानसिक दृष्टी कोण)अत्यधिक महत्पूर्ण तथ्य हैं जिसे हर साधक को जानना ही चाहिए .हम में से अधिकांश इस तथ्य की उपेक्षा कर जाते हैं ,क्योंकि सामान्य सरल बाते ही बड़ी असामान्य होतीहैं .हमने इस पथ पर अभी यात्रा भी आरम्भ नहीं की हैं ,एक ही माला भी मनोयोग से नहीं कर पाए पर हमें तो परिणाम की अभी से चिंता होने लगी हैं की वह सिद्धि अभी तक मिली नहीं /आई नहीं . जो सदगुरुदेव भगवान ने पत्रिका में लिखी थी . क्यों नहीं मिली और हम ये सोचते हैं की शायद पत्रिका में साधना ही पुर्णतः से नहीं दी थी ,या कुछ ऐसे कारण पर चिंतित होते हैं जिन्हें भगवान ही जाने . अधिकांश व्यक्ति जो किसी कारण वश साधना में सफल नहीं हो पाए या सफलता प्राप्त नहीं कर पाए

regarding the sadhana and start blaming that either the sadhana are mentioned incomplete or its their luck .,but think a second, they ever tries to find out where there will be the fault . we are going to control unforeseen power and here is the current condition that even a person in our family does not listen our talk, than the sadhana is such a easy things, us because you bought some material and do some jap means you are entailed for to get siddhi..... Its not that...

,निराश हैं वे कभी साधना कि पुर्णतः पर या अपने भाग्य पर दोषारोपण करते पाए गए . पर एक सेकंड के लिए विचार करे कि क्या कभी उन्होंने सोचा की क्यों आखिर उन्हें सफलता क्यों नहीं मिल पाई ?अद्रश्य शक्तियां जो आज तक हमारे सामने नहीं आई, उनपर हम मात्र एक सेकंड में अधिकार करना चाहते हैं जबकि हमारी यह स्थिति हैं की हम अपने घर में ही जिनको वर्षों से जिन्हें जानते हैं उनसे एक बात भी मनवा नहीं पा रहे हैं , तो आगे आप ही सोचें , की कितना उचित हैं . क्योंकि हमने तो मन लिया हैं की साधना तो बहुत ही सरल चीज हैं हमने कुछ साधना सामग्री ले ली हैं कुछ मन्त्र जप कर लिया हें इसलिए हम सिद्धि प्राप्त करने के अधिकारी हैं . . पर यहाँ साधना क्षेत्र में ऐसा तो नहीं होता ..

There is not anywhere in sky a registered is maintaining and someone sitting there maintain the record that you have completed so and so many mantra jap and this siddhi is yours.and allot a siddhita no such a things is applicable...

ऐसा कहींभी नहीं हैं की आकाश में कहीं कोई ,अपने हाँथ में एक रजिस्टर लेकर , उसे लगातार लिख रहा हैं . की आपने इतने मन्त्र जप कर लिया हैं तो आप इस सिद्धि के लिए अधिकारी हो गए हैं और आपको एक सिद्धि में सिद्धिता प्रदानकर दी .मानिये की ऐसा कहीं भी नहीं हैं ...

Have a faith if it is not so easy than what.?.

भरोसा रखे , यदि यह इतना सरल नहीं हैं तो क्या करे ?

we have various our guru brother and sister who get success in sadhana , how can they ?... what will be the cause....?

हमारे बीच में ही बहुत सारे ऐसे गुरु भाई बहिन हैं जिन्होंने यदि साधना में पूर्ण सफलता पाई हैं तो कि क्या कारण हैं जो उन्हें सफलता मिली ... ?

Sadgurudev ji says in "Nabhi Darshana Apsara Cassetes" that audio castes one of mine favorite reason is.. that sadhana pre mental condition how that should be in the Sadgurudev ji own divine voice). *" if you do the sadhana than this is most easiest sadhana and it also have than most difficult sadhana is this, many of shishy get success in first round and if they*

मेरी प्रिय केसेट्स मेंसे एक"नाभि दर्शना अप्सरा साधना " में साधना में किस प्रकार की मानसिक भाव भूमि रखना चाहिए , सदगुरुदेव जी कहते हैं - यह साधना सबसे सरल साधना हैं ओर सबसे कठिन साधना भी ,अधिकांश शिष्य तो पहली बार में इस सधना में सफलता प्राप्त कर सके हैं , और शेष तो दूसरी ओर तीसरी बार में सभी सफल हुए ही हैं . किसी भी को चतुर्थ प्रयास नहीं करना पड़ा , पर तुम्हे इतने अधिक बार प्रयास करने में सफलता नहीं मिल पा रही हैं तो में यह सोचता हूँ , की एक क्लास भी वही , शिक्षक भी वही , कुछ बच्चे फर्स्ट क्लास में तो ,कुछ फ़ैल क्यों हो गए , जबकि सभी को एक जैसा

any reason not unsuccessful they got success in second round and even if some lacks than third round definitely give success, and this is the must ,not even one of his shishy need to go for more than fourth round,

but you get unsuccessful even more chance taking that than that, than this is one of the painful question for him why they got success ? and here is the case not like that , when a teacher teaches one class and material that has been teaching is also same , why some students got first division and some second and some even failed. Why...?. Cause is clear , those who think that what has been taught is right now only they have to do their part with hard work and faith ,than result they got in first div.

Same things happening here ,

Sadhana is the way, to go to achieve... siddhi , is the not the aim, sadhana means having siddhta in your inner and outer being , instead of controlling any outer mysterious power, suppose you get controlled on a force we call karan pishachini, who tells you secret of till date of any person comes to you , to your ear,..... wow... great thing.but think about a second that before attempting that either are you capable enough to handle that siddhi?,, yes I means .. when she

ही पढाया गया . कारण ये था की, जिन्होंने समझ लिया की अब हमें बस मेहनत करके अपना कार्य पूरा मन लगा कर करना हैं वे प्रथम क्लास में पास हो गए ओर जो मेहनत से बचते रहे वे......

यही वास्तिविकता तो साधना क्षेत्र की हैं

साधना तो एक रास्ता हैं ...न की सिद्धि प्राप्त करने की मंजिल .. ये सिद्धि प्राप्त करने का लक्ष्य नहीं हैं .साधना का मतलब अपने अंतर ओर बाहय अस्तित्व को जानना और उसमें सिद्धित्ता प्राप्त करना , न की किसी रह्श्य मय शक्ति को अपने नियंत्रण में करना .मानलो की अपने एक ऐसी शक्ति "कर्ण पिशाचिनी " में सिद्धित्ता भी प्राप्त कर ली , जो आज तक का कोई भी गोपनीय तथ्य किसी भी व्यक्ति का आपके कान में बता सकती हैं ... क्या बात हैं ..... पर क्या आपने एक सेकंड के लिए भी सोचा हैं की की आप अपने प्रिय जनो के गोपनीय तथ्य चाहे आपकी मान्यता अनुसार या विपरीत भी क्या आप उन्हें स्वीकार कर पाएंगे .क्या आप ये स्वीकार कर पाएंगे की आपके प्रिय जन कभी कभी आपके बारे में बुरा / असभ्य /गलत भी सोच सकते हैं पर इस सबसे बाद जुद भी वे आपको स्नेह करसकते हैं . आप ही बताये..

तब क्यों साधना की आवश्यकता हैं .....

साधना - आपको अपने सत्य स्वरुप से परिचय करने का मौका देती हैं , ओर ये कोई एक दिन का खेल तो नहीं हैं .अपने सत्य स्वरुप को जानने के लिए कुछ समय ओर धैर्य की जरुरत तो होगी ही . मंत्र ओर साधना आपके अंतर की प्रक्रिया को प्रारंभ कर देती हैं पहले मन की दुर्बलता , कठि नाई ओर मानसिक कमजोरी ही तो बाहर आएँगी, तभी तो अंतिम परिणाम प्राप्त होगा . मतलब सिद्धि नहीं नहीं .... ये तो लक्ष्य नहीं हैं.

हमारी हजारों साल से चल रही अपना परिचय प्राप्तकरने की यात्रा का ,सिद्धि तो एक मील का पत्थर हैं . जो की हमने भूल वश खो दिया हैं .एक

stared giving details of your near and dear one. Are you capable enough to digest , no no its not so easy . give others also right that they can also be think something's bad or dirty and unhealthier to you even though they also like you. Answer you know…….

Than why the sadhana is necessary,

Sadhana – gives you opportunity to understand your true self and that should not be in day game. To discover the real in you, need some time and patience , the mantra and sadhana start the process inside you, first weakness and trouble some mental condition came out. Than the final result come..but that means siddhi is,,,, not the aim, yes..

that is the mile stone of our journey that we are doing from ages searching our own address, unfortunately missed by us. Take small example . suppose you have to go manali to jaipur, and you reached until delhi ,a great sign of success but still you need to complete rest of the journey and you returned to manali is journey can be said complete or successful ,same way, if we are not able to reach our aim given by Sadgurudev i,e, siddhshram, can be happy just with some siddhi, that make not much sense.

Sadgurudev ji used to tell that *To get siddhi one by one and sitting in room and*

उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं -मानलो हमें मनाली से जयपुर जाना हैं ओर हम दिल्ली पहुच गए, यात्रा का एक बहुमूल्य पड़ाव (या सिद्धि) ,ओर अभी भी यात्रा तो पूरी नहीं हुए , ओर यहाँ से आपको मनाली वापिस लौटना पड़ा तो क्या आपकी यात्रा पूरी मानी या सफल जाएगी इसी तरह से सदगुरुदेव द्वारा दिए गए लक्ष्य "सिद्धाश्रम प्राप्ति " से कम पर संतुष्ट होकर किसी सिद्धि से संतुष्ट होकर रह जाये तो इसका कोई अर्थ हैं.

सदगुरुदेव जी कहते हैं - एक एक बाद एक सिद्धिप्राप्त करते जाये , ओर किसी एक कमरे में बंद हो कर बस मन्त्र अजप करते जाये , तो आप में ओर उस व्यापारी में जो रोज़ अपनी तिजोरी में धन गिनता रहता हैं कोई खास अंतर नहीं हैं एक सिद्धि तो दूसरा धन गिन रहा हैं .आखिर इसका समाज या देश की उन्नति में की योगदान हैं. हमें तो अपना भाग मनोयोग से मन्त्र अजप कर उसे सदगुरुदेव जी के श्री चरणों में सपर्पित कर देना हैं . बे ही शक्तिशालियों के शक्तिशाली हैं कोई भी सिद्धित्ता जब तक वे नहीं चाहेंगे , आप तक नहीं पहुंचेगी भी.

यदि मन्त्र जप से आप और आपका परिवार , ज्यादा प्रसन्न , ओर खुशुयों भरा , रोग रहित , कोई भी दुखदायक घटनाओ से भरा हुआ नहीं हैं आपको अच्छी नीद बा आपका स्वास्थ्य भी ठीक हैं तो आपके चारों रहने वाले आपसे ,व्यक्तित्व से प्रभावित् हैं तो क्या ये सफलता की अग्रिम सूचना हो नहो .

यदि अभी भी आप इस बात से प्रभाबित हैं

मैं आपसे मन्त्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं की एक पुराने प्रकाशित लेख की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा , जिसमें अमेरिका के एक बड़े हॉस्पिटल के मेडिकल रजिस्ट्रार ने पूज्य सदगुरुदेव से एक बार में ही २५-३० दीक्षाए एक साथ अपने पूरे परिवार के साथ ली , ५/६ माह के उपरान्त उन्होंने सदगुरुदेव से फ़ोन कर के पूंछा की क्यों उन्हें जैसा वे परिणाम चाहते हैं प्राप्त नहीं हो रहा हैं आप गुरुदेव बताये .कहाँ पर कमी रह गयी हैं .

just doing mantra and mantra jap , is like a business man counting his money in closed door , both are same ,one is counting money other is siddhi.. till that be useful to samaj or even country how that can be said useful and we have to do our part and leave/offer our mantra jap to his sad Gurudev divine holy feet. *He is the supreme most power full of all the power and so called siddhita does not reach to you until he allowed to go.*

If through doing jap /sadhana, you feel happy, your family life us much, much joyful, no disease or any major untoward event happens to your home, and you have healthy sleep, smile on your faces, and person around feel changes in you and your personality than this is also a sign of success.

Still not believe in this theory,

I will ask to go to mantra tantric yantra mag old issue (one article)in that one registrar of a big medical college of USA took 25-30 diksha in a one single time with his whole family and later 5/6 month he telephoned to Sadgurudev and asked his advice on this point that he is not getting any spiritual gain as per his expectation, where is the fault.?

Sadgurudev ,angrily told to him, does he (registrar) not feeling much healthier and happy, no tension, or any bad event

सदगुरुदेव जी किंचित क्रोध से बोला की क्या वे और उनका परिवार इन अवधि में ज्यादा स्वस्थ , प्रसन्न , ओर बिना किसी भी अशुभ घटनाओ के हैं क्या ये बात सत्य नहीं हैं .

उन्होंने कहा - पूज्य गुरुदेव आप बिलकुल सही हैं .

सदगुरुदेव जी ने कहा किमैं कोई जादू दिखने वाला बाबा नहीं हूँ , और किस सत्यता/प्रमाण की उन्हें आवश्यकता हैं , जो भी जीवन में ठोस लाभ देता हैं उसमें थोडा सा समय तो लगता हैं ही .

किसी भी रेल यात्रा के समय ,रात्रि के समय जब हम नीद में होते हैं तब कितने स्टेशन से हम निकल चुके हैं इसका तो हमें ज्ञान भी नहीं होता हैं केवल सदगुरुदेव जी ही जानते हैं , ठीक इसी तरह हमारे कितने स्टेशन की यात्रा ओर अभी आना शेष हैं कितने की हम यात्रा कर चुके हैं .उन्हें ही पता हैं .

ठीक यही तथ्य साधना जगत में लागु होता हैं , आप जैसा की गुरुदेवजी ने निर्देशित किया हैं उस अनुसार अपना कर्तव्य करते जाये तात्पर्य मंत्र जप करते जाये .साधना के पूर्ण होने पर .व्यतिगत रूप से , पत्र के माध्यम से , या फ़ोन के माध्यम से उनसे अपने साधना के दौरान, क्या क्या अनुभव हुए हैं या नहीं भी हुआ हैं तो भी स्पष्ट रूप से बताये , तो उनके आधार से वे आपको ज्यादा उचित सलाह ओर कैसा साधना में परिवर्तन करना हैं या नहीं ,निर्धारण करेंगे .उसके आधार पर आप अपनी साधना में ओर तेजी से सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं ,साधना तो एक ऐसा माध्यम हैं, न की मंजिल, जिसके माध्यम से आप को आगे बढ़ाना हैं, न की किसी भी मील के पत्थर (सिद्धि) पर रुक जाना हैं . ये सब तो मार्ग के दिशा सूचक हैं अभी तो मंजिल बहुत दूर ,सदगुरुदेव जी के श्री चरणों में लीन होना हैं . इसलिए सिद्धि मिली या

happened to him/or in his family in those period, he replied yes Gurudev , you are right. Sadgurudev *replied I am not any magic shower baba. What more proof he wants,What is solid gain for a life ,will take time to adjust*, While travelling through a train for long journey, in night time in sleep we do not how many station we already pass , same thing here in sadhana field, only Sadgurudev ji know that how many more station we still have to cross, and how many we already cross without knowing. Same thing applicable on the sadhana field, do your duty, means mantra jap , as per instruction of Gurudev ji, after completing that again try to meet him either in person or through phone/letter, discuss your exp if happened in the sadhana time and ask their guidance to move go forward.. sadhana is a way for to get the manzil and not the way to stop only on any mile stone(siddhi), they are the sign board, real manzil is far far away in the divine lotus feet of Sadgurudev ji. So not to pay too much attention on siddhita,. Move toward ultimate goal. Success is a journey not a goal to achieved.	नहीं इस पर ज्यादा ध्यान न दे कर अंतिमलक्ष्य की ओर बढे . सफलता एक यात्रा हैं न की कोई लक्ष्य जिसे प्राप्त करना ही एक मात्र उदेश्य हैं .

Sangeet Tantra

संगीत तंत्र रहस्य

सप्त सुरों का सप्त चक्रों से सम्बन्ध क्या हैं

Since ancient time, human being's relation has remained with music, human used music as a medium to express the feelings. In the ancient time, it was not just a medium for entertainment. Many of our ancient sages were accomplished in music and today even many high spiritual level attended yogis are accomplished in music. Have we thought once even that the one who remain in joy of god realization, what is the need to them of this outer entertainment?

It can not be said that what do we understand by music today but in ancient time it was medium of spirituality. With the help of music, many

प्राचीन काल से मनुष्य का सबंध संगीत से रहा हैं , संगीत को मनुष्य ने अपने भाव को व्यक्त करने का माध्यम बनाया था. प्राचीन समय में यह मात्र एक मनोरंजन का स्त्रोत नहीं था. हमारे कई ऋषि मुनि संगीत शाश्त्र में निपूर्ण थे. और आज भी कई उच्च कोटि के योगीजन संगीत में पूर्ण होते हैं . क्या हमने एक बार भी यह सोचा की जो हमेशा इष्ट के आनंद में रहते हैं उन्हें यह बाहरी मनोरंजन के माध्यम संगीत की क्या जरुरत हैं .

people attained totality. There are several examples in front of us like Meerabai and Narsinh to name few. Then what the difference is this?	संगीत का मतलब आज क्या लिया जाता है ये कहा नहीं जा सकता लेकिन प्राचीन काल में ये एक आध्यात्मिक माध्यम ही रहा था. संगीत के माध्यम से ही कई लोगो ने पूर्णता प्राप्त की हैं मीराबाई या फिर नरसिंह जेसे कई उदाहरण हमारे सामने ही हैं . तो फिर यह भेद क्यों ?
In true term we have never understood music, Sadgurudev used to say that the hum of the insect is even a music which if applied to hear daily, the human can gain thoughtless mind. For general humans music must be based on entertaining point of view but for yogis it has deep definitions.	वास्तव में हमने संगीत को कभी समझा ही नहीं, सदगुरुदेव कहते थे की भवरे की गुंजन भी एक प्रकार से संगीत ही हैं जिसे रोज सुना जाये तो आदमी धीरे धीरे विचार शून्य हो जाता हैं . सामान्य मनुष्यों को संगीत मनोरंजन आधारित होना चाहिए लेकिन योगीजन के लिए संगीत बहुत गहरी परिभाषा लिए हुए हैं .
The importance of sound is accepted widely and specific sound creates specific energy. The Saptak of music Sa, Re Ga Ma Pa Dha Ni are not just words. To just give name and pronunciations anything could had been given but Sa, Re Ga Ma Pa Dha Ni has a deep meaning. With a special rhythm if one specific sound is applied to incorporate, then it creates vibration on specific chakras of the body.	ध्वनि की महत्ता निर्विवाद रूप से मानी जाती हैं और एक विशेष ध्वनि कोई न कोई विशेष उर्जा प्रसारित करती ही हैं . संगीत के सप्तक या सा रे ग म प् ध नि आदि शब्दों के कोई सामान्य समूह नहीं हैं . देने को तो इन ध्वनियों को कोई भी उच्चारण दे दिया जाता लेकिन सा रे ग म प ध नि का गहन अर्थ हैं . जब एक विशेष लय के साथ एक मूल ध्वनि सम्मिलित होती हे तो वह शरीर में
All Sapt Sur are representative of elements and every Sur (tone) hold a command over one element in which Sa-Earth , Re and Ga – Water, Ma Pa – Fire, Dha – Air and Ni – Eather.	
The way we have 7 tones, we even have 7 voice force from which a sound could be made. These are head, nose, throat, lungs, navel, Abdomen and groin, if we watch carefully, these all places are very close to 7 chakras. This way, in relation to Kundalini 7 tone can vibrate chakras in Sangeet tanra.	

Sa – Muladhar (Earth element, sound generation – groin) Re – Swadhisthan (Water element, Sound generation - Abdomen Ga – Manipur (Water element, Sound generation – Nevel Ma – Anahat (Fire element, Sound generation – Lungs) Pa- Visuddh (Fire element, Sound generation – Throat) Dha – Agya (Air element, sound generation – nose) Ni – Sahashtrar (Eather element, Sound Generation – Head If these tones are generated with related sound then the specific starts awaking and they start having many mysterious experiences. But this is Chakra Jagaran and not Chakra bhedan. That's why many Raga's were meant, in which with the help of sounds, specific Raga is made which can completely open Chakras. For example, with the help of Malkosh Raga, Visuddh chakra can be awaken, same way daily exercise of Kalyan raga even helps in vibrating Visuddh chakra. And one this chakra is activated, then sadhak can realize the etmoshperic	किसी एक विशेष चक्र को स्पंदित करती हैं . सभी सुर अपने आपमें तत्वों के प्रतिनिधि हैं और हर सुर एक विशेष तत्व के ऊपर अपना प्रभुत्व रखता हैं . जिसमे सा- पृथ्वी, रे, ग – जल तत्व म,प – अग्नि तत्व ध- वायु और नि- आकाश तत्व के प्रतिनिधि हैं . अब जिस तरह से ये सप्त सुर हैं उसी तरह शरीर में सप्त सुरिकाए हैं जहाँ से सुर का या ध्वनि की रचना होती हैं . यह हे सर, नासिका, मुख-कंठ, ह्रदय (फेफड़े), नाभि, पेड़ू और ऊसन्धि. ध्यान से देखा जाए तो ये साडी जगह शरीर के सप्त चक्रों के अत्यंत ही नजदीक हैं . अब इस तरह संगीत तंत्र में कुण्डलिनी सबंध में सप्त सुर एक एक चक्र को स्पंदित करने में सहयोगी हैं सा – मूलाधार (पृथ्वी तत्व, सुरिका- ऊसन्धि) रे – स्वाधिष्ठान(जल तत्व , सुरिका – पेड़ू) ग – मणिपुर (जल तत्व , सुरिका – नाभि) म – अनाहत (अग्नि तत्व, सुरिका – ह्रदय)

waves and can convert them into sound but Ragas like Kalyan have to be sung into evening only means quick after sun set. With the help of Nand Raga Muladhar gets activated. And one can understand the Vedas completely only when the Muladhar is active completely. This Raga should be sung in 2nd phase of night. The That Bilabal Raaga Devgiri can active Anahat Chakra and then one can hear Anhad Naad & owns every accomplishment related to it, this way every Raga gives effect to vibrate and open specific chakra.

But is it that music can only activate kundalini? No. With the power of music, Singing Deepak Raga; Tansen lighten a lamp. Baiju Bawara on other hand sung a specific raga and melted a Stone, he threw his music instrument TanPura into that and when he stopped the Tanpura was inside the solidified liquid of stone. These are just few examples, Music is also complete Tantra. Everything in this universe is made of five basic elements. The 7 tones of music can control these five elements. If with the help of specific tone or Raga, if we increase our Air element and lessen our Earth and Water element, one can have power to fly in sky and can have power to get invisible. And if this also applied outer side on anything, that will even becomes invible. Or else it is incorporated with on elements of any specific item and elements are subjected to change, in this condition the whole substance changes. Or with the help of music one can gather

प – विशुद्ध (अग्नि तत्व, सुरिका – कंठ)

ध – आज्ञा (वायु तत्व, सुरिका – नासिका)

नि – सहस्त्रार (आकाश तत्व, सुरिका – मस्तक)

इन स्वरों का, उपरोक्त स्वरिकाओ से इनसे सबंधित चक्र का ध्यान करने से चक्र जागरण की प्रक्रिया शुरू हो जाती हैं और उसे कई विशेष अनुभव होने लगते हैं . मगर ये चक्र जागरण होता हैं , भेदन नहीं.

इसी लिए विभ्भिन रागों की रचना हुयी हैं , जिसमे ध्वनिओ के संयोग से कोई विशेष राग निर्मित किया जाता हैं जो की वह विशेष चक्र को भेदन कर सकता हैं .

जैसे मालकोष राग के माध्यम से विशुद्ध चक्र को जाग्रत किया जा सकता है , इसी प्रकार कल्याण राग के निरंतर अभ्यास से भी विशुद्ध चक्र को स्पंदन प्राप्त होता है और वो जाग्रत हो जाता है. और एक बार जब ये चक्र जाग्रत हो जाता है तो साधक वायुमंडल में व्याप्त तरंगों को महसूस कर सकता है और उन्हें ध्वनियों में परिवर्तित कर सकता है , पर कल्याण राग जैसा राग सांयकाल के समय ही गाना उचित होता है. अर्थात सूर्य अस्त के तुरंत उपरांत. नन्द राग के द्वारा मूलाधार चक्र जाग्रत हो जाता है . और वेदों का सही अर्थ व्यक्ति तभी समझ सकता है जब उसका

elements in the air and can make anything out of this word in few moments. Truly our ancient sages were scientist but we were never bothered to understand.

मूलाधार पूरी तरह जाग्रत हो. इस राग को रात्रि के दुसरे प्रहार में गाना चाहिए. ठाट बिलाबल राग देवगिरी के प्रयोग से अनाहत चक्र की जाग्रति होती है व्यक्ति अनहद नाद को सुनने में और उसकी शक्तियों की प्राप्ति में सक्षम हो जाता है, इसी प्रकार सभी राग किसी न किसी चक्र को स्पंदित करते ही हैं.

लेकिन क्या, संगीत सिर्फ कुण्डलिनी जागरण के लिए ही हैं ? नहीं. संगीत की शक्ति से तानसेन ने दीपक राग का प्रयोग कर जहा दीपको को प्रज्वलित कर दिया था वही बैजू बावरे ने संगीत के एक विशेष राग का प्रयोग कर पत्थर को पिघलाकर उसमे अपना तानपुरा दाल दिया था और राग बंद कर दिया था जिससे की वो तानपुरा उस पिघले हुए पत्थर में ही जम गया था. ये सब तो कुछ उदाहरण मात्र हैं संगीत भी अपने आप में एक पूर्ण तंत्र हे. ब्रम्हांड के सभी पदार्थ ५ तत्व से ही निर्मित हैं . संगीत के सप्त सुर इन ५ तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं . संगीत से किसी विशेष सुर या राग के माध्यम से हम अपना वायु तत्व बढ़ाले और भूमि एवं जल तत्व को कम करदे तो मनुष्य अद्रश्य एवं वायुगमन सिद्धि प्राप्त कर लेता हैं .. यदि साधक सही तरीके से संगीत का प्रयोग करे तो बाह्य चीजों पर यही प्रयोग करने पर वह भी अद्रश्य हो जाएगा. या फिर उसके तत्वों के साथ संयोग करके तत्वों को बदल ने पर उसका परिवर्तन भी संभव हैं .

	या फिर संगीत के माध्यम से हवा में ही सबंधित कोई भी वस्तु के तत्वों को संयोजित कर के उसे कुछ ही क्षणों में प्राप्त किया जा सकता हैं . वास्तव में ही संगीत मात्र मनोरंजन नहीं हैं, हमारे ऋषि मुनि अत्यंत ही उच्चकोटि के वैज्ञानिक थे मगर हमने समझने की कभी कोशिश नहीं की हैं

Yantra Main Prana Pratishtha

यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा

The whole universe is be of yantra . in this whole universe the greatest yogis have felt that the controlling higher existence's form can be represented as a geometrical form known as yantra . and this all available for common man . the yantra does not merely the some lines and figure is made as a person belief ,but contain the very great higher science of the universe in these figure . this science is so great even a person can devote his whole life even than if he explored a percent that can be greatest achievement. In general sadhak are not much having the awareness of these science ,but when the sadhana kaal comes than

यह सारा विश्व ही यंत्र मय हैं ओर इस सम्पूर्ण ब्रम्हांड में जिस चेतना को महा योगियों ने अनुभव किया उसे ही यंत्र के रूप में परिणित कर साधारण मानवो के हितार्थ प्रस्तुत किया , यन्त्र केवल मात्र कल्पना नहीं हैं की कुछ विशेष आकृति अपने मन से बना ली ओर उसे प्रस्तुत कर दिया , यंत्र महा विज्ञानं तो इतना विस्तृत हैं की सारा जीवन भी इसमें लगा दे तो भी बूँद मात्र भी समझ पानां संभव नहीं हैं , साधरणतः साधक गण इस विज्ञानं की बारीकियों के प्रति अनिभिग से रह ते हैं , पर जब साधना काल आता हैं तो सोच में पड जाते हैं की कैसे इन यंत्रों को जल्द से प्राप्त कर लिया जाये . पर कभी समयाभाव तो कभी अर्था भाव के कारण यह संभव नहीं रहता हैं .

सदगुरुदेव भगवान् कहते हैं की क्यों छोटी छोटी से बातों पर गुरु पर भी निर्भर रहना , ओर जब हम उनके ही आत्मंश हैं तो क्यों नहीं इस बात को ह्रदय गम करते हैं की ज्ञान कीसभी विधियाँ , प्रक्रिया जो भी गुरुमुख से प्राप्त हैं , सदगुरुदेव/गुरुदेव त्रिमूर्ति जी से प्राप्त हैं वह तो हम सब के लिए हैं ही . क्यों नहीं हम कुछ तो सबल बने , ओर अपने

they started having worry how to get theses yantra so early, sometimes due to lack of finance or lack of times this will not be possible.

Sadgurudev ji used to tell that why to depend upon such a small ,small things on own guru . and when we are the part of his soul than why not we try to understand that even learning the any science through Gurudev is also a boon since every sciences comes from is divine. What are the process that has been available through Sadgurudev ji and and Gurudev Trimurti ji is, easily available to us. Than why not try to learn that and be a able shishyas of Sadgurudev jis.

But how we can provide or induce chetna to yantra even, are we having such a chetna in us. But we a shishy of Sadgurudev ji why we can think of such a things, his shishy is a depended no, no.. not possible ,if he has true loving and ability to absorbs his gyan.

All the god and goddess can be easily represented through yantra. In the beginning level a sadhak does not have such a aatmik power to attract his isht deity and able to get the desired result through them. Than how the inner feeling of sadhak could reach to his isht. Is there any medium. why not the

सदगुरुदेव जी, गुरुदेव त्रिमूर्ति जी का गौरव प्रवर्धित करे ,

पर हम चाह के भी यन्त्र को चेतना कैसे दे सकते हैं जबकि हम स्वयं उतने सक्षम नहीं हैं , तो फिर इतना कहना हैं की सदगुरुदेव जी का शिष्य ओर असक्षम , संभव ही नहीं हैं .....

सारेदेवी देवता भी यंत्रों के माध्यम से प्रदर्शित किये जासकते हैं क्योंकि प्रारंभ स्तर पर साधक की चेतना इतनी प्रखर नहीं होती की वह सीधे ही अंपने इष्ट को प्रत्यक्ष कर उनसे अपने हेतु कार्य संपन्न करवा सके , तो साधक की मन की बात कैसे ,उसके इष्ट तक कैसे पहुचे , की क्या कोई भी माध्यम नहीं हैं ?हाँ क्यों नहीं , सदगुरुदेव जी ही एक मात्र माध्यम हैं पर उनके द्वारा दिए गए यन्त्र रूपी भी ज्ञान भी क्या उनका का प्रतीक नहीं हैं.तो अब तो यन्त्र भी एक माध्यम न हुआ,साधक के किये जा रहे जप को परावर्तित कर ,प्रवर्धित कर उसके इष्ट तक पंहुचा देता हैं , वही इष्ट के आशीर्वाद को साधक तक पहुचने का सेतु /हेतु भी बनता हैं .

कर्म फलों की कालावधि को कैसे कम किया जाये , कैसे साधना की जटिलता को कम करके मानव जीवन को उसके लक्ष तक पहुचाया जाये . यही साधना क्षेत्र के महत योगियों का स्वप्न रहा हैं . इस यन्त्र रूपी उनके आशीर्वाद को चेतना कैसे दी जाये वही इस लेख की विषय वस्तु रही हैं . में आगे की पंक्तियों में ऐसे ही कुछ प्रक्रिया आपके सामने रख रहा हूँ. क्योंकि कैसे अपने प्राणों को अपने इष्ट से जोड़ दिया जाये .

1. सदगुरुदेव जी से प्राप्त कोई धुल का भी कण भी उतना ही प्रभावशाली हैं जितना की कोई पूर्ण निर्माणित यन्त्र .उनका स्पर्श हो जाये और उनके श्री मुख से उस धुल के कण के लिए भी यदि बोल दिया जाये की यह तेरे लिए शंकर ही हैं तो वह भगवान शंकर ही होंगे उस साधक के लिए.
2. किसी शास्त्राग्य से पूर्ण प्रमाणिक पद्धति से यदि प्रक्रिया संपन्न कर दी जाये तो भी उस यन्त्र में चैन्त्यता आजाती हैं.

only medium is the Sadgurudev ji, and his divine gyan in the form of yantra is also a medium. since Sadgurudev ji means gyan. The yantra get reflected or transmitted the sadhak jap to his isht deity and side by side blessing of isht also through that could reach to sadhak.

How to reduce the effect of past lives karma's , how to reduce the complexity of the sadhana so that normal person can easily also reach to his aim. this was/is the aim of great yogis and tantra field scholar. And how to energies this yantra is the main subject of this article. Here I am giving such processes through that how to energize the yantra can be easily and possible. means through that how our pran be one without isht.

Here getting even any single particle from Sadgurudev ji is also having the same effect or i could much better than a full flagged yantra. If he tells that he is a Shankar that that particle will be lord Shankar for that sadhak , and even more.

If complete process of energy inducement is done under a competent scholar and well versed in shshtriy way of energisation.

Even any shabd or any word for a

3. किसी पूर्ण कुंडलिनी जाग्रत साधक के मुख से उच्छिन्रत शब्द या संकल्प मात्र से भी वह यन्त्र प्राण प्रतिष्ठित बन जाता हैं

एक सरल सी दुर्लभ प्रक्रिया आपके लिए भी ...

प्रातः ४ से ६ बजे के मध्य उठे , स्नान कर स्वेत वस्त्र धारण कर ,उतर दिशा की और मुह करके , सामने भगवान् रूद्र ओर सदगुरुदेव जी के चित्र के सामने बैठे सामने बजोट पर भी स्वेत वस्त्र बिछाएं .

पवित्री करण: बाये हाँथ में जल लेकर निम्न संकल्प करे.

ॐ अपवित्रो वा पवित्रो सर्वास्थां गतो स पि वा या स्मरेत पुण्डरी काक्षं साः बाहय आभ्यंतर: शुची: |

आचमन : सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . ओर जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वरः ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि |

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में

sadhak having fully awake kundalini is also induces such chetna, One very easy and rear process for you. Awake early morning between 4 to 6 am and after taking shower and completing daily routine process , wear white colored cloths and sit on asan having white colored cloth covering and also having bajot is also having white color cloths. Pavitri karan:-have little water ion your left hand and take oath like this *Om apavitro va pavitro sarvasthan gatoopi va ya smaeret pundarikaksha saah bahyaabhyanterh shuchih*" Aachman: take little water in the right hand and chant the mantra 4 times and than drink the water. Om aatam tatavm shodhyami swaha. Om vidya tatavm shoudhyami swaha. On gyan tatavm shoudhyami swaha. Om shiv tatavm shoudhyami swaha. Guru dhyan : *Gurur bramha gurur Vishnu gurur devo maheshwarah.* *Guru sakshat parbramh tasmai shree*	जल समर्पित करे) श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं) श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं) श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं) यंत्र की चांदी या तांबे के पात्र में रख कर स्नान करवाए . इसके बाद 108 बार यन्त्र गायत्री मन्त्र पढ़े . ॐ यंत्रराजाय विद्म्ह्ये महा यंत्राय धीमहि तन्नो यन्त्र : प्रचोदयात | निम्न मन्त्र का 108 बार उच्चारण करे . ॐ आं क्रों ह्रीं असि आ उ सा य र ल व् श ष हंस अमुकस्य (यन्त्र का नाम यहाँ पर ले) त्वाग्र शास्त्र मांस मेदोऽस्थि मज्जा शुक्राणि धातव: अमुकस्य (पुनः नाम ले)यंत्रस्य काय वाड.मन श्चाक्शु: गोत्र घ्राण मुख जिव्हा सर्वाणि इन्द्रियाणि शब्द स्पर्श गंध प्राणा यान समानोदान व्याना: सर्वे प्राणा: ज्ञान दर्शन प्राण श्च इहेब आशु आगच्छत आगच्छत संवोषट स्वाहा |अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्वाहा | अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट वषट स्वाहा |अत्र सर्वजन सौख्याय चिरकालं नन्दतु वद्वातां वज्र मय भवन्तु | अहं वज्रमयान करोमि स्वाहा | हाँथ में फूल लेकर यंत्र पर डाले "नाना सुंगंध पुष्पाणि यथा कालोद भवानी च पुष्पान्जलीर मया दत्ता गृहाण परमेश्वरा "

guruve namh. *Shri guru charnobhyo namh dhyan samarpyami.* Poojan : *Shree guru charno bhayo namah paadyam samarpyami*.(offer the water to his holy feet) *Shree guru charno bhayo namah ardhy samarpyami*.(offer water inhis hand) *Shree guru charno bhayo namah kumkum tilakm ch samarpyami*.(offer kumkum and tilak) *Shree guru charno bhayo namah dhoopm deepam darshyami*.(offer dhoop and deep) *Shree guru charno bhayo namah naivdyam navaidyami* .(offer naivaidya to Sadgurudev and yantra) Than place the yantra in silver or copper plate and wash through water and chant 108 times the mantra. Om yantraaraajaay vidmahye mahayantray dheemahi tanno yantrah prachodyaat. Thanchant 108 times following mantra. *Om aam krom hreem asi aam u sa ya ra la va sha hans amuksya (here*	प्रार्थना : आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में | जप समर्पण : हाँथ में फूल गुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे ॐ गुह्यति गुह्य गोप्ता ग्रहाण स्मत कृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वत प्रसादन महेश्वर || प्रार्थना : ॐ पूर्ण मद : पूर्णमिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते पूर्णस्य पुर्णा मादाय पूर्ण मेवाव शिष्यते || फिर जल को अपने पर छिणकते हुएउठ जाये ॐ शांति: शांति: शांति:

Soot Rahasyam - Part 3

(पारद विज्ञानं तंत्र के अप्रकाशित , अप्राप्य गोपनीय ग्रन्थ की श्रंखला का अगला भाग)

Prana is a bramha tatav enclosed in our body ,surrounded by body , desire, senses, to get free from that and relies its own nature is the result of prana. Whole life business depends upon that, rishi vashisht notonly due to intense research search the prana but alos founded pranayaam through that notonly human body 's power/strength canbe increade but he canalo contact to other loks.(this is other facts that othaer than siddhashram ,no other place this science is poreserved.many times Sadgurudev notonly fully exemplified this to thir shishyas but their deepest secreats are also revealed to the shishyas.)

He told that the life force of outer living

प्राण हमारे शरीर,इन्द्रियों और उनकी विषय वासनाओं में पाशबद्ध "ब्रह्मी" अथवा चेतना तत्व है,उसे उस बंधन से मुक्ति दिलाकर चैतन्यता का बोध करना ही प्राणों का परिणाम है. इसी से जीवन का सारा व्यापर चलता है.वशिष्ट ने वायु में से ही प्राण-विद्युत की गहन शोध करके ही प्राणायाम के उन विधानों को खोजा था जो न केवल मानवीय क्षमताओं को बढ़ाते हैं बल्कि,मनुष्य का सम्बन्ध अन्य लोको की सूक्ष्म शक्तियों से भी जोड़ते हैं(ये अलग बात है की सिद्धाश्रम के अतिरिक्त इस ज्ञान को वर्तमान में और कहीं संरक्षित नहीं रखा गया है ,और सदगुरुदेव ने कई बार अपने शिष्यों को इस ज्ञान से न सिर्फ परिचित करवाया है ,बल्कि इस ज्ञान के सूक्ष्मातिसूक्ष्म पक्षों को भी प्रायोगिक रूप से समझाया है).

उन्होंने बताया था की स्थूल जगत की समग्र जीवनी शक्ति का केंद्र सूर्य ही है, उसके पांच प्राण तत्व हैं.प्राण को ऋषियों ने २ भागो में विभक्त किया है.

अणु- अणु का संलयित रूप पदार्थ है और अणु पदार्थ के संगठित रूप में ही दृष्टिगोचर होता है, अपूर्व शक्ति संपन्न होकर पदार्थ को सक्रीय शक्ति प्रदान करता है.

visible worlds , is sun. this tatav has five prana part. Prana has been divided in two part by the ancient rishis.

Anu- the combined form of various anu is the matter.any can be visible once is condensified by the other anus. This provides the infinate power to the matters.

Vibhu- in the chetna world ,what is visible , life hirangarbh rup is the vibhu.

If sun rays are not able to reach to earth than all the activity here in the planet earth, became stand still since whatever activity shown in the planets is because of sun. the oxygen basic elements to sustain life in this palets comes as a pranan from the sun. this is the reason where too much cold or less sunrays reaches , there also low percent of oxygen than the lungs has to work hard to get required oxygen , the outcome is the cough and cold , like that illness generally more in the cold weather like sititaion.

We all heard the sun namaskar process or seen that or work onthat , but only saluting the sun and offer water to the sun can notcomplete the process. The sun not only sustained power , force and redience of us but alos our past lives karmas, and the power of sdhana completed by u sin past lives too. And through an special process /way/mantra one can get that power through sun, and the amzing power and ability and also the secreats of sun science can be achieved.here I am just introducing to you the secreat procedure of special ardhy the complete process can be get with describe in datails through

विभु- चेतना जगत में जीवन पंकर दृश्यमान होता है. जैसे हिरण्यगर्भ समष्टि रूप विभु ही हैं.

यदि सूर्य की किरणे पृथ्वी तक न पहुचे तो यहाँ सर्वथा स्तब्धता, हलचल से विहीनता ही दिखाई देगी. जीवन का आधार मणि जनि वाली ऑक्सिजन सूर्य से ही प्राण रूप में प्रवाहित होकर आती है. तभी तो जहाँ ज्यादा ठण्ड होती है या सूर्य का प्रकाश लंबे समय तक नहीं पहुच पता है वहाँ वायु विरल हो जाती है अर्थात वहाँ आपको ऑक्सिजन ग्रहण करने के लिए फेफड़ों से अधिक जोर लगाना पड़ता है, और श्वाँस की बीमारियाँ दमा आदि भी ठण्ड में मौसम में ही अधिक होती है.

सूर्य को नमस्कार करना तो हम सभी ने सुना है,किया है या देखा है.लेकिन सिर्फ नमस्कार करने से या सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर देने से ही क्रिया पूर्ण नहीं हो जाती है .सिर्फ शक्ति, सहस और तेजस्विता नहीं अपितु तंत्र का एक गूढ़ पक्ष ये भी है की सूर्य हमारे प्रारब्ध और पिछले कई जीवनों की साधना और सामर्थ्य शक्ति को भी संरक्षित करके रखता है और एक विशेष क्रम और मंत्र के द्वारा उस ज्ञान को प्राप्त भी किया जा सकता है. और उस अद्भुत क्षमता और सूर्या विज्ञानं वा सिद्धांत के गोपनीय रहस्यों को आत्मसात भी किया जा सकता है उसे प्रायोगिक रूप से संपन्न करने की क्षमता भी. यहाँ पर मैं उस विशेष अर्घ्य की विधि बता रहा हूँ और वो दुर्लभ मन्त्र भी ,परन्तु इसका क्रियात्मक विधान आप सदगुरुदेव से ही प्राप्त करें और क्यूंकि वे अपने प्राणबल से आपको इसके सफलता प्रदान कर सकते हैं,और वही उचित है , मैं वचन में बंधा हूँ इसलिए मात्र यहाँ पर परिचय ही करवा रहा हूँ.

प्रतिदिन प्रातः काल में सूर्योदय के समय एक ताम्र पात्र में कुमकुम.राई,जवा पुष्प,कुश आदि डाल कर रखें और पात्र में गंध,पुष्प,नैवेद्य आदि के द्वारा सूर्या और उनकी अंग पूजा करे.उसी पथ को करते हुए सूर्य मन्त्र का १०८ बार जप करे.तत्पश्चात सूर्य को पूर्ण अर्घ्य प्रदान करे.इसके बाद पुनः १०८ बार मंत्र का जप करें इसके साथ की जो गोपनीय क्रिया और सम्पुट मन्त्र हैं वो आप गुरुदेव से ही प्राप्त करें ,वही इससे सम्बंधित दीक्षा मंत्र और गोपनीय पद्धति दे सकते हैं. जो मन्त्र मैं यहाँ पर मैं आप लोगो के समक्ष रख रहा हूँ वो यदि आप प्रयोग करते हैं तो आपको अपना पूर्वजन्म समझने में सहयोग करेगा. जिससे इस सिद्धांत को समझना सहज हो सकता है.अर्घ्यदान करने का दुर्लभ मंत्र निम्न लिखित है .

Sadgurudev ji, I am under the oth of this science that s why I can only provide to you the introduction parts. Eavery day in the morning hours in a pot made of cuppoer metel,fill kumkum , rai, java flowers, and through gandh , flowers , naivaidya do the pooja to sun , than on the same place do recite 108 times the sunmantra, than offer water to sun. the special process and secreats samput mantra of this science , it would be better , you will get from Gurudev ji. Only they can only give toy the secreat s Diksha mantra and process for that. Here iam giving you the mantr which will help you to understand your past live and also get a way to go for surya siddhanta sadhana , th e confidential mantra is.. Om bho dev prathvi pal sarvshaktisamanbite ,mamardhych grahan tvam purv vidya prakashy.	ॐ भो देव पृथ्वीपाल सर्व्शक्तिसमंविते,ममार्घ्यांच ग्राहण त्वं पूर्व विद्या प्रकाशय.

Swarn Rahasyam - Part 3

स्वर्ण रहस्यम-3

रस तंत्र और उसमे असफलता के कारण

Ras Tantra and the causes of failure in that,well Ras Shastra is not fiction science nor a cheek that is a misnomer, All power is infinite potential value perforation of mercury. Many works have been described in the series like Anand Kand, Rasoupnishad, Rasratnakar, Rasarnav, Rashriday Tantra, from the Ras shastra the knowledge of Dhatuvad and Dehvad accomplishment is done.The details are given in the Vedas, actually these are the texts which proved the code metheods of Dhatuvad. Between Ras Scholars 54 meanings of that are very publicised and famous. Out of these facts I m giving a meaning of only one of the shlokas from it

रस शास्त्र कोई कपोल कल्पना नहीं है और न ही ये कोई मिथ्या है,सर्व शक्ति मान पारद की वेध क्षमता अनंत है. तभी तो आनंद कन्द , रसोपनिषद, रसरत्नाकर , रसार्णव,रसहृदय तंत्र आदि अनेक ग्रंथों में उसकी श्रृंखला पद्धति का वर्णन दिया गया है, रस शास्त्र के ज्ञान से धातुवाद और देहवाद की सिद्धि होती है इसका विवरण वेदों में दिया गया है, यहाँ तक की जिस श्रीसूक्त का पाठ हम लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए करते हैं, वस्तुतः वो धरुवाद को सिद्ध करते की कूट विधियाँ हैं, रस मर्मज्ञों के मध्य इस सूक्त के ५४ अर्थ प्रचलित हैं . मैं इस श्री सूक्त में से मात्र एक श्लोक का अर्थ उदाहरण स्वरुप यहाँ पर दे रहा हूँ.

आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो,वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः .

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः.

इसके तात्विक अर्थ पर जरा ध्यान दीजिए –

“ हे अग्निदेव, हे भगवान सूर्य आप मुझे उस क्रिया में पूर्ण

as an example.

"Adityay Varne tapasoudhijato,vanaspati vrikshouth bilva:

Tasya Phalani tapasaa nudantu mayantara yashch baahya alakshmi:"

Just pay attention to its intrinsic meaning - "Oh Lord of Fire, Sun God you please bow me the blessings of success in that action and knowledge above all plants and trees and the best among them i.e. the best Bilv (Bell) fruit juice which converts the metals copper by fire to put in baking and produce an innocent Laxmi (Gold, Silver) are associated with the receipt and by which I can finish away all my sorrows and pains (Although the same stuff that put confidential in this shlokas given the method of baking, but our goal is not to mention that it here.)

We were always been told the same thing by Sadgurudev, that the detail secrets of this Dhatuvad action is not so comfortable, easy and even not that casual that u ask for it to master & he would give u. First we must show our urge, desire,

सफलता प्राप्त होने का आशीर्वाद और ज्ञान दीजिए जो की सभी वनस्पतियों और वृक्षों में सर्वश्रेष्ट बिल्व (बेल फल) रस के द्वारा ताम्र आदि धातुओं को अग्नि में पुट पाक कर निर्दोष लक्ष्मी(स्वर्ण,रजत) की प्राप्ति से सम्बंधित हैं. और जिसके द्वारा मैं अपने दुःख-दारिद्रय को दूर कर सकू.

(हालाँकि इसी श्लोक में वो गोपनीय पुट पाक की पद्धति भी दी हुयी है, पर यहाँ पर उसका उल्लेख करना हमारा ध्येय नहीं है.)

सदगुरुदेव स्वयं यही बात हमेशा हमें समझाते थे की ये धातुवाद की क्रिया के रहस्यों का विवरण इतना सहज नहीं है की, गुरु के पास गए और उसने उठाकर दे दिया, पहले आप अपना समर्पण भी तो दिखाइए , आप तो आते हैं, घंटे दो घंटे या ज्यादा से ज्यादा २ दिन साथ में रहते हैं और ये अपेक्षा करते हैं की गुरु आपकी चाटुकारिता भरी बातों से प्रसन्न हो जाये और आपको वो गोपनीय कुंजी आपके हाथ में पकड़ा दे और आप उसे लेकर अपना कर्जा दूर कर दे. और ऐश्वर्य के चरम शिखर पर पहुच जाये .

मुझे भी अपने जीवन में ऐसे ही लोग मिले हैं, उनका लेना देना ज्ञान से नहीं है, वो ये नहीं समझते हैं की गुरु सेवा के नाम पर पहले अपने जीवन को ऐश्वर्य से मुक्त करेंगे फिर गुरुसेवा के लिए समय और साधन देंगे जैसी बातों से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता. इस शास्त्र को समझने के लिए लगातार धैर्य और उत्सुकता का चरम भाव बनाये रखा जाता है. इस ज्ञान को तो प्रायोगिक रूप से बैठकर ही समझा जा सकता है और यदि कोई इस ज्ञान को देना चाहता है तो फिर वो जब बुलाए, जहाँ बुलाए वहाँ पहुचना ही चाहिए , क्यूंकि जो विशुद्ध नहीं होगा उसको ये विद्या फलीभूत भी नहीं होती.इसलिए लगातार खुद को मांजते रहना चाहिए.

किन कारणों से इस विद्या में सफलता नहीं मिल पाती, इन पृष्ठों पर मैं आज उन्ही कारणों का वर्णन कर रहा हूँ-

अनुभव शुन्य क्रिया करने से,जो क्रिया समझाई गयी हो उसे पूरी तरह से न करने से,अस्थिर चित्त से क्रिया करने से,शास्त्रों के वाक्य में विश्वास न करके मन से क्रिया करने से, ये क्रिया उन लोगो को भी फलीभूत नहीं होती जिनमे हानि झेलने का सहस नहीं होता या जिनके पास इस क्रिया के लिए पर्याप्त धन का आभाव हो,बिना सदगुरुदेवके आशीर्वाद और मार्गदर्शक के क्रिया करने से,समय पर आवश्यक औषधि और पदार्थ न मिलने से,किसी भी पदार्थ का सही ज्ञान न

dedication and of course seriousness for achieving it. If you come, for an hour or two hours with more than 2 days to live and then expect the things to shapeup as you wann it ! Then you try to please the master by buttering him and you ll get that secret key held in your hand and you took it away to pay off your debts and ultimately would reach at the peak of prosperity??? No no no....

I also found the similar people who have nothing to do with the knowledge, And they cannot make fool of their masters by giving such stupid statements that on account of master service u will enjoy the worldly leisure and master would not be able to see this? Hnnaaa…. No dear it is not at all like that... You know what any single action is not hidden from our Master's eyes. So to understand these scriptures constantly need to be extremely patient and a sense of curiosity is need to maintained. This knowledge can then be understood and treated as practically sitting and then someone wants to give this knowledge, whenever he call you, as called there u must reach to learn it promptly. Because whosoever will be pure can get this knowledge and fruits of it. Which are those reasons due to which we do not get success in this discipline, these lines would describe

होने से और उसकी जगह उसका विकल्प प्रयोग करने से, गुरु या दैवीय कोप से, यदि गुरु असंतुष्ट है तो भी ये क्रिया नहीं हो सकती,आलस्य का जोर होने से, पूर्वजन्म के पापों की प्रबलता से,इन्द्रिय भोगो में व्यस्त रहने से, चरित्र की कमजोरी से, गुरु के साहचर्य में ना होने से मन्त्र और रस सिद्धि की कोई क्रिया नहीं हो सकती.

जिनके पास संसाधन और धन की उचित व्यव्स्था नहीं है उन्हें बिलकुल भी इस क्षेत्र में प्रयास नहीं करना चाहिए.ये क्रियाएँ लगातार ज्ञान अर्जन करने से ही सिद्ध हो सकती हैं. इसलिए पहले आत्म अवलोकन करके ही आगे बढ़ना चाहिए

Ayurved

आयुर्वेद और सौंदर्य समस्याओं का समाधान

1.Take equal quantity of NARAKCHOOR and SAMUNDRAFEN and get them crushed in water and apply on face. When mixture or now we can say face pack get dry then wash it. Applying this norm for some days can solve pimple problem. 2 .Above explained problem can resolve with the mixture of black pepper (Kaali mirch) with some juice of	१. नरकचूर और समुद्रफेन –दोनों को संभाग पानी में पीसकर चेहरे पर लगाएं. सूकने पर चेहरा धो धो लें.कुछ ही ही दिनों के प्रयोग से कील मुहासे दूर हो जायेंगे. २. जामुन के थोड़े से रस में कालीमिर्च को घिसकर लगाने से भी उपरोक्त समस्या दूर हो जाती है. ३. तुलसी के पत्तों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर चेहरे पर रगड़ने से मुंहासे दूर होते हैं. ४. रात में आंवले का चूर्ण २ चम्मच लेकर पानी में भिगो दे और सुबह उस पानी को कपडे से छान कर

Blackberry (jamun). 3- To solve moles problem (muhaase) leaves of Basil (tulsi ke pattey) crushed with Butter (makkhan) and then acquire paste use as a scrubber on your face. 4 .At night take 2 spoons AMLA POWDER and put in water. At morning filter this water with clean cloth and then wash your face with it. It helps you to get rid of blemishes. 5 .By applying milk cream with wheat pouder on face can solve blemish and dryness problem of your face. 6.By applying Coconut Oil (nariyal ka tail) with the juice of Lemon (nimbu) will increase inner beauty and make you face more beautiful. 7.If you have oily face then pour 3 drops of Vinegar (sirka) in water and wash your face with it and after this clean your face with soft towel. It will make your skin shiny. 8.If your face is dry and dull then drink one glass Carrot Juice everyday and continue it till 15 days. This will help	मुह धो लेने से झाई दूर हो जाती है. ५. दूध की मलाई में गेहूं का आटा मिलाकर लगाने से चेहरे की झाई और सूखापन दूर हो जाता है . ६. नारियल के तेल में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने से चहरे का सौंदर्य बढ़ता है और कांति में वृद्धि होती है. ७. यदि चेहरा अधिक तैलीय हो तो पानी में सिरके की तीन बूँद डालकर चेहरा धो ले.फिर मुलायम तौलिए से धीरे धीरे चहरे को सुखा ले , चेहरा निखर जाता है. ८. यदि चेहरा सूखा हो और उस पर कोई कांति न हो तो १५ दिन तक नित्य १ गिलास गाजर का रस पीने से भी चेहरे की आभा बहुत बढ़ जाती है . ९. हरा धनिया पीसकर मस्से पर लगाने से मस्से दूर हो जाते हैं. १०.नाखूनों को मजबूत बनाने के लिए उन पर नीबू के छिलके रगड़ना चाहिए. ११.नीबू के रस में बरगद की थोड़ी से जटा पीसकर उसे बालों पर लगा लें,फिर आधा घंटा बाद बालो को धो लें,और उन्हें सुखाकर नारियल का तेल लगाने से बालों का झडना बंद हो जाता है.तथा बाद चमकदार और लंबे होने लगते हैं.

Totaka Vigyan

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

f anyone rubs Dhatura (Harebell), Adrak (Ginger), Baad, Moonga (Coral) and its base portion of Moonga (Coral) and puts its Tilak on the forehead and goes in front of any rival, the rival will loose all the confidence… One can gain the Vashikaran power – Enchantment power (Power of hypnotism in which once person gets trapped performs the act according to the power ruler) by tying the Palash leaf on the hand in Hast Nakshatra… If on Bhojpatra, name of the rival is written and is dipped in honey, that rival comes in total control of the person… If anyone puts Tilak of Gular Root (Sycamore - Name of the tree) on the forehead, one can gain the power of Vashikaran (Enchantment)…	१.धतुरा,अदरक,बाद और मूंगा की मूल संभाग लेकर पानी में घिसकर तिलक कर शत्रु के सामने जाये तो शत्रु भय ग्रस्त हो जाता है. २.हस्त नक्षत्र में पलाषा का पत्ता हाथ में बांधने से सर्व वशीकरण की क्रिया होती है. ३.भोजपत्र पर शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबोकर रखने से वह साधक के वश में हो जाता है. ४.गूलर की जड़ घिसकर तिलक करने से वशीकरण होता है. ५.वनगोभी और मयुरशिखा को मुह में या रखने या मस्तक पर धारण कर कोर्ट में अपने मुक़दमे के लिए जाने से कोर्ट के मामले में विजय प्राप्त होती है. ६.जिन व्यक्तियों को स्वप्नदोष की

By keeping Vangobhi or Mayurshikha in the mouth or putting on the forehead results in the victory in the court cases…

6. The person who suffers from the Nocturnal Emissions (Swapnadosh), if they sleep by writing their mother's name on the paper and keeps it below their pillow will definitely gain the effect…

If any person makes the snake of Red Hakeek (sort of a stone), it will result in the development of the mental strength…

By keeping Fitkari (Alum) near the head in night, all the nightmares get stops…

By putting the iron ring in the middle finger of the right hand helps in curing the stone problem…

) By wearing the Chui-Mui root(Mimosa root) in the neck helps in curing of cough…

1. The persons whose Navel or Umbilical Cord gets dislocated from the position, if they wears the Mimosa root (Chuimui root) ring in waist the navel will automatically comes at the original place…

शिकायत होती है यदि वे अपनी माँ का नाम एक कागज पर लिखकर तकिये के नीचे रखकर उस तकिये पर रखकर सो जाये स्वप्नदोष नहीं होता है.

७.लाल हकीक को नाग बनाकर यदि पास में रखा जाये तो मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है.

८.फिटकरी सिरहाने रखकर सोने से भयावह स्वप्न का दिखना बंद हो जाता है.

९.दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में लोहे की अंगूठी धारण करने से पथरी रोग धीरे धीरे दूर हो जाता है.

१०.छुई मुई की जड़ गले में बाँधने से खांसी दूर हो जाती है.

११.जिन लोगों की नाभ या धरण अपनी जगह से हट जाती है वो यदि छुई मुई की जड़ शनिवार को लाकर उसका छल्ला बनाकर कमर में धारण करे तो नाभ ठिकाने पर आ जाती है.

....

Vaam Tantra And Woman

वाम तंत्र और नारी

man(male) is by nature is a worshipper of Vaam marg. Woman is the main factor in his life to again draw man on right path or Dakshin marg. Many person will just laugh on that but its true that .. says one great scholar, but how do we believe that we all already knew that we are the follower of Dakshin Marg ,.. as many of you already married one, or going to soon be married or at least witnessed some marriage function specially held at Hindu. Have you noticed before that saat feron (7 round of fire), girl sit right side of the boy so boy position is left to girl, means that man is vaam side . and in 7 promises girl ask to boy if you fulfill this promise than she will sit to your left side or vaam side, when girl sit Vaam side i.e. left side than boy	पुरुष तो स्वाभाव से ही वाम मार्ग का उपासक होता हैं और यह तो महिला या नारी ही हैं जो उसे सीधे रास्ता या दक्षिण मार्ग पर ये आती हैं , अधिकांश व्यक्ति इन बातों का उपहास ही उड़ायेंगे , परन्तु यह तो एक सत्य हैं... तंत्र जगत के एक विद्वान का यही कथन हैं , पर हम कैसे इसे मानेगे जब की हम सभी दक्षिण मार्ग के उपासक हैं . आप मैं से आधिकांश विवाहित हैं या विवाह करने शीर्घ जा रहे हैं या कम से कम किसी भी हिन्दू विवाह कि प्रक्रिया तो देखी ही होगी . क्या आपने सात फेरों से पहले किप्रक्रिया ध्यान से देखी ही होगी . जिसमें कन्या , लड़के के सीधे हाँथ की ओर ही बैठती हैं अर्थात पुरुष कन्या के परिपेक्ष में वाम भाग में बैठ पाया जाता हैं , और जब कन्या सात बचन लड़के से मांगती हैं ओर जब लड़के के द्वारा वादा किया आजाता हैं तब कन्या वहां से उठ कर लड़के के वाम पक्ष में जा कर बैठ जाती हैं .मतलब लड़के के लिए वह वाम पक्ष में जाती हैं.अब आप को कुछ कहना हैं .

position is left to right. What you want to say.

Shakti is always Vaam side to devta or god. So Vaam side can not be just consider bad , inferior or dirty is because some one or some group did wrong taking benefitted of that in this age or from any era. Taking on the name of Vaam Marg .

We all are the child of Sadgurudev ji at least should have courage to read and digest the philosophy behind that , just like reading a detective novel you can not be detective, same thing applied here.atleast have a courage to read this.

Once swami Vivekanand ji when he was very yong , describe about some so called bad practices happened in Some KAPALIK marg, sri Ramkrishana Paramhansa patiently listen that and instructed to swami ji *not to blame that since many man already belong to that path comes out a great personality..*

What to consider "chewing tobacco" bad or good, yes it is bad naturally from scientific reason , but you know that great saint of Utternchal sri Neem Karori baba ji had been asked to criticized , he simply refused said that if someone gaining enjoyment why should he blame that.

So it's the view differ from person to person. i am not advocating this is right or wrong leave it upon you and your wisdom to decide.

I am not here discussing that

शक्ति हमेशा से देवता या ईश्वर के दाहिनी ओर होती हैं. तो वाम मार्ग केबल इसलिए गलत /भ्रांति /गलत प्रचार का शिकार बन रहा हैं या हेय हैं क्योंकि किसी समय किसी युग में अनेको ने /अनेको ग्रुप/समूह ने इस के आड़ में अपने स्वार्थ मय मतलब की कुत्सिक प्रक्रिया की और उन्हें वाम मार्ग का नाम बताया .इस कारण इस मार्ग का उच्च कोटि का चिंतन अब काल के गर्भमें हैं .

हम सभी जो सदगुरुदेव के बच्चे हैं कम से कम इतना सहस तो रखे की इस ओर के ज्ञान को कम सेकम खुले मन से सुने तो /समझे तो , जिस प्रकार किसी भी जासूसी उपन्यास के पड़ने मात्र से आप जासूस नहीं बन जाते हैं यही नियम तो यही लागु होता हैं .कम से कम इस बारेमें पढने का तो साहस रखे ही,

कभी अपने युवा काल में स्वामी विवेकानंद जी ने अपने गुरुदेव श्री राम कृष्ण परमहंस जी से किसी कापालिक मार्ग द्वारा की गयी प्रक्रिया को देख कर उसका खंडन करने को कहा , परमहंस देव जी ध्यान से उनकी बात सुन कर बोले उस मार्ग की आलोचना ठीक नहीं हैं क्योंकि बहुत सारे लोग उसके माध्यम से उच्च स्तरीयता प्राप्त कर चुके हैं .;

आप तम्बाखू खाना को अच्छा या बुरा क्या कहेंगे, हाँ वैज्ञानिक दृष्टी कोण से तो निश्चय ही सही हैं पर आप क्या जानते हैं जब एक उच्च कोटि के संत नीव करोरी बाबाजी से इस को बुरा बता कर किसी विशेष शिष्य को रोकने को कहा गया था , तो उन्होंने मना कर दिया कहा की जब उसे उसी में आनंद आता हैं तो में इसको गलत क्यों कहूँ.

तो इस तरह से हर व्यक्ति के विचार किसी एक ही बात को लेकर अलग अलग होते हैं, में यहाँ किसी भी एक पक्ष का तरफ नहीं हूँ , हाँ क्या सही या गलत हैं आपके बुद्धिमत्ता पर छोड़ देता हूँ .

consider woman as a object of enjoyment or object of worship. Both view not reflect true situation.	में यहाँ ये नहीं कह रहा हूँ की आप नारी को एक उपभोग की बस्तु या पूजा की बस्तु माने , वास्तव में दोनों की दृष्टी कोण गलत हैं .
Yoga teaches you to proceed on the path by controlling so called bad or dirty thought. But its not very helpful for common man, since the situation we know that already (here i am saying of mental condition, not on physical way).we are much bounded by asth pash. since suppressing of feeling often create emotional problem	योग हमें अपने मन ओर इन्द्रियों को नियंतरण करना सिखाता हैं , साथ ही साथ हमारे बुरे /अश्लील विचारों को भी रोकना सिखाता हैं पर हम तो अपनी वास्तिविकता को जानते हैं की ये तो साधारण व्यक्ति के लिए बहुत कठिन होता हैं .(में यहाँ केबल मानसिक अवस्था की ही बात कर रहा हूँ) हम तो अष्ट पाश से बंधे हैं ,और मानसिक भावनाओ को दबा देना तो कई अन्य समस्या उत्पन्न कर देता हैं .
*But **Tantra** take a different approaches to proceed on the path he accept of the emotional and feeling bad or dirty may be, it does not criticized on that. He simply say yes if the problem is this than try to understand the basic mechanism behind that and get free , but its all process works under the strict controlled and in the guide lines of Sadgurudev, you cannot make cock tell of your choice and if does so than liable for punishment.*	वही दूसरी ओर तंत्र इस समस्या के प्रति दूसरा दृष्टी कोण रखता हैं . वह मानसिक भावनाए चाहे अच्छी या किसी भी हो को स्वीकार करता हैं ओर केबल इस के कारण इनको सही / गलत नहीं कहता . वह कहता हैं की यदि समस्या इसके कारण हैं तो उसे समझों और साथ ही साथ साक्षी भाव से देखो की क्यों ओर कैसे यह आती हैं, और जब ऐसा हो जाता हैं तब आप इससे मुक्त हो जाते हो .पर तंत्र की सारी प्रक्रियाएं , केबल सदगुरुदेव के मार्गदर्शन ओर सूक्ष्म निर्देशन में ही संपन्न होती हैं , यदि आप इसमें अपने रूचि अ नुसार काम करते हैं तब आप निश्चय ही दंड/अपयश /अपमान के भागी होते हैं .
Tantra accept basic things in the whole universe one is male and other female part. This is true in respect to from flower to man /woman. Male is positive energy and female is negative energy, and you already know the negativity has its own power. And when both forces unite the complete circle formed, here I am not saying outer worldly way , inwardly every man has woman in it , and after that male body . this happens alternately . same thing with woman, she has next body to man and than same alternate	तंत्र ये बात स्वीकार करता हैं की इस सम्पूर्ण ब्रम्हांड में एक तत्व स्त्री हैं ओर दूसरा तत्व पुरुष हैं .और ये बात एक पुष्प से लेकर हर आदमी , महिला पर भी सामान रूप से लगती हैं . पुरुष धनात्मक उर्जा का रूप हैं तो महिला/नारी ऋ णात्मक उर्जा का रूप हैं /प्रतीक हैं . आप स्वयं जानते हैं की की ऋण उर्जा की अपनी शक्ति होती हैं . ओर जब दोनों उर्जाये एक होती हैं तो शक्ति का उर्जा का एक पूर्ण चक्र पूरा होता हैं . यहाँ पर मैं सांसारिक रूप से एक होने की बात नहीं कर रहा हूँ , आंतरिक रूप से हर व्यक्ति के अंतर एक महिला/नारी हैं ही , अगला शरीर पुनः पुरुष फिर नारी यही क्रम ७ शरीर तक रहता हैं ओर

way going up to total seven body.	यही बात नारी पर भी उसके आन्तरिक शरीर के बारे में, पूर्ण रूप से लगती हैं तंत्र शास्त्र सामान्यतः ७ शरीर की अव धारणाये रखता हैं .
Have you not noticed that after 55 years of age man nature changes to like woman he became more cool and contrary to woman she became more controller, why ..reason their next body taking grip over mental control .off course many of the exception of this rule.	क्या आपने कभी ध्यान दिया हैं की महिलाये ५५ वर्षों के बाद उनका स्वाभाव काफी उग्र सा हो जाती हैं अधिकार सा प्रदर्शित करना लगती हैं वही पुरुष वर्ग ज्यादा शांत सा ,सौम्य सा हो जाता हैं . क्योंकि उम्र के इस पड़ाव पर उनके अगले शरीर उनपर अधिकार करने लगता हैं , हर नियम की भांति इस नियम के कुछ विपरीत उदाहरण भी संभव हैं .
Than whom you blame woman?????, which is just next to your body. .it can not be denied that power of love/ sneh of a woman either as mother /sister friend what ever you may call. Since she guided by emotion and man generally works as according to reason,.	तो क्या नारी को दोष दे ???? जो की आपका अपना दूसरा शरीर हैं , किसी भी नारी की स्नेह करने की शक्ति फिर वह चाहे माँ के रूप में / बहिन के रूप में या रिश्ते को कोई भी अन्य नाम दे ,की सक्षमता से कोई भी इनकार नहीं कर सकता हैं . क्योंकि वे भावनाओ से तथा पुरुष कारण से संचालित होते हैं .
Tantra does not see that woman as a lesser to man, instead of that teaches you to have equal,and when your eyes clean and have ability to see that .. than whole world is full of divinity. Or otherwise just to blame everybody even yourself.	तंत्र कभी भी नारी को पुरुष से नीचे नहीं देखता हैं वह तो उसे एक सामान ही मानता हैं , यहाँ लिंग भेद नहीं हैं, दोनों सिर्फ साधक हैं बस . जब आपकी आँखे साफ होगी तो देख सकेंगे की सारा विश्व ही दिव्यता से भरा हैं ,अन्यथा आप सिर्फ अपने को छोड़ कर हर किसी को दोषी ठहराने में स्वतंत्र हैं ही .
Nearly ail the tantric granths is a talk between mother Parvati to Bhagvaan shiva. Do you consider mother lesser to father, how can you, here in this country we says matra devo bhav than we call pitr devo bhav, but what is happening today…. You know , and this is one of the cause of today's loosening of various values in society.	लगभग सारे तंत्र ग्रंथ भगवान शिव और माँ पार्वती के आपस के संवाद के रूप में ही उल्लेखित हैं . क्या आप माँ को पिता से नीचे देखते हैं , इस देश में हम पहले मात्र देवो भव : फिर कहते हैं की पित्र देवो भव:. पर आज क्या हो रहा हैं ... आप जानते हैं ही . और यही कारण हैं आज समाज में अनेकों स्थापित मूल्यों के गिरावट का .
*Do you know **VAAM-KESHWER TANTRA** advocates not to even talk hard to woman, even flower should not be used as punishing rod to her. still you say.tantra see woman as a*	

lowerer object.

Off course ,merely repeating the word , I feel no difference between man and woman treat as a equal , til you really realize the trueness, how can the merely words carry any weight. Those who have read the small book about neem karolri baba. In that his most beloved shishy a "Richard or later known as ram das" unable to see woman as a Shakti . when on repeating instruction his showed his inability to do so. Than babaji has asked a astral yogini to teach some very rear specific procedure through that ram das free from his this pash.

Even param yogi "vama khepa" also said that (woman) are Maya and re-presentitaive of maha-maya, without his blessing how can any one go higher in spirituality.

This is not just introduction of the great subject. We all are having such a courage so that we can have some healthy out look on the subject,

क्या आप जानते हैं की वामकेश्वर तंत्र तो यहाँ तक उल्लेखित करता हैं की कभी भी नारी से कड़वा न बोले और कभी भी उसे यहाँ तक की फूलों की छड़ी से भी दंड न दे . क्या आप अभी भी इस अवधार णा ये रखते हैं की तंत्र नारी के प्रति कोई निम्न विचार रखता हैं .

हाँ केवल ये कहाँ की मैं नारी यों के प्रति दुर्भावना नहीं रखता हूँ , केवल शब्द हैं ओर सिर्फ शब्दों की कोई मूल्य नहीं हैं जब तक की इस सत्य का आपने स्वयं साक्षात् कर न कर लिया हो . जिन्होंने भी नीव करोरी बाबा जी की जीवनी पढ़ी हैं वे इस सत्य को जानते हैं की उन्होंने अपने प्रिय शिष्य रिचर्ड जो की बाद में राम दास के रूप मैं विख्यात हुए को बारबार , जब नारियों को माँ के रूप में देख पाने मैं असमर्थ पाया तो बाबाजी ने एक सूक्ष्म जगत की योगिनी को आमंत्रित कर उसके माध्यम से तंत्र क्रियाओं के द्वारा राम दास की ये भावना / इस पाश दूर की., या मुक्त किया .

यहाँ तक महा योगी वामा खेपा ने कहा था की नारियां माया हैं ओर महामाया का अंश तो बिना उनकी आशीर्वाद के बिना कैसे आध्यात्मिकता में बढ़ा जा सकता हैं ,

यह केवल इस विषय का परिचय नहीं हैं बल्कि की हम में इतना साहस हैं की हम इस विषय को भी स्वथ्य दृष्टी से पढ़ सकते हैं .

यक्षिणी एवं चेटक साधना महाविशेषांक

Fourth Issue

April - 2011

Tantra kaumudi

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

SADGURUDEV - PRASANG

सद्गुरुदेव प्रसंग

****

जब पूज्य गुरूदेव ने षोडशी साधना सम्पन्न की

भगवती त्रिपुर सुन्दरी षोडशी के नाम का स्मरण ही सौन्दर्य और जीवन का श्रृंगार है । कितनी भी महाविद्या साधनाएं क्यों न कर ली जाएं, कैसी भी शक्ति या सिद्धियां क्यों न प्राप्त कर ली जाएं, किन्तु भगवती षोडशी की साधना के बिना सभी कुछ अधूरा ही तो है । बिना षोडशी के लावण्य से अभिभूत हुए जीवन नीरस और निस्तेज ही तो है । क्योंकि यथार्थ में 'श्री' की जननी काव्य की सृजनकर्त्री और वैभव की आश्रयस्थला भगवती षोडशी ही तो हैं । केवल जिनके सौन्दर्य और श्रृंगार का वर्णन करने में ही योगी और लालित्य से विभूषित कविरूपा मुनिजन जीवन-पर्यन्त परिश्रम कर करके थक गए किन्तु फिर भी अतृप्त ही रह गए, क्योंकि देवी का यही स्वरूप, सही अर्थों में प्रकृति का सम्पूर्ण स्वरूप है । अन्य महाविद्या स्वरूपों में तो वे किसी एक पक्ष विशेष की स्वामिनी हैं, किन्तु षोडशी स्वरूप में प्रकृति स्वरूपा बनकर प्रतिक्षण गतिशील और प्रकृति की ही भांति प्रवाह से भरी हैं । जहां अन्य महाविद्यायें शक्ति की प्रखरता से, दिव्यता से आभूषित हैं, वहीं मां भगवाती षोडशी एक वेगवान नदी की ही भांति सम्पूर्ण सौन्दर्य और विविधता के साथ निरन्तर गतिशील हैं ।

महाविद्या साधनों में तो ये एक परम्परा की परिचायक 'श्री' कुल की गौरवशाली स्वामिनी हैं। शस्त्रों में वर्णित है कि जिन्हें सौभाग्य से षोडशी साधना का क्रम गुरू-परम्परा में प्राप्त हो जाए, जीवित जाग्रत गुरु के श्रीमुख द्वारा ज्ञात हो जाए, उनके सौभाग्य की तो तुलना ही नहीं की जा सकती, क्योंकि इस प्रकार की साधना-परम्परा प्राप्त होने का अर्थ है कि ऐसा शिष्य अपने जीवन में पूर्ण सफल, वाक्सिद्ध, ऐश्वर्यवान व नेतृत्व करने वाला होगा ही। 'षोडशी' जो कि सम्पूर्ण वैभव की एकमात्र गर्वीली अधिष्ठात्री हैं, उनका आश्रय प्राप्त हो जाने के बाद इसमें आश्चर्य कैसा? गुरु-परम्परा में यही विद्या इतनी अधिक गोपनीय रखी गई कि इसके सिद्ध साधकों की सूची में आज तक गिने-चुने साधक ही सम्मिलित हो सके हैं। आदि शंकराचार्य इसी मत के पोषक व सिद्ध आचार्य थे। भगवत्पाद् आद्यशंकराचार्य प्रारम्भ में अद्वैत के ही पोषक थे किंतु कालान्तर में उन्होंने भी जब शक्ति की आराधना व आवश्यकता जीवन में अनुभव की, तब शक्ति के इसी स्वरूप का अपने जीवन में उतारा। उनके बाद योग्य शिष्यों के अभाव में यह महत्वपूर्ण साधना ''श्रीविद्या' साधना लुप्त ही हो गयी।

मुझे यद्यपि ज्ञात था कि पूज्यपाद गुरुदेव के कंठ में आद्य शंकराचार्य के पश्चात् लुप्त हो गई यह महत्वपूर्ण विद्या सुरक्षित है किन्तु प्रसंग आने पर उन्होंने उसे हर बार दूसरी ओर मोड़ दिया और मैं अपनी पात्रता की कमी जानकर उनसे आग्रहपूर्वक ज्ञात न कर सका, क्योंकि श्रीविद्या साधना सामान्य विद्या नहीं है, यह न षोडशी महाविद्याय, एक महाविद्या मात्र है। षोडशी तो पूरे जीवन का और समस्त साधनाओं का सार है। षोडशी का अर्थ ही है जो अपने-आप को षोडश कलायें समाहित किए हुए हो, जिन षोडश कलाओं से युक्त भगवान श्रीकृष्ण जैसे अवतरण सम्भव हुए। किन्तु पूज्य गुरुदेव के सन्यस्त जीवन के साक्षी, श्रेष्ठ सन्यासी स्वामी प्रवज्यानन्द जी के द्वारा इस बात का भेद खुल सका कि पूज्यपाद गुरुदेव न केवल इस साधना के सिद्धतम आचार्य हैं, वरन् वे अपने नित्य के जीवन में भगवती त्रिपुर सुन्दरी का साक्षात् प्रतिक्षण करते ही रहते हैं। भगवती षोडशी का साक्षात् करना एवं उनका साहचर्य होना इस बात का परिचायक होता है कि जीवन में ऐसी अजेयता मिल जाती है जिससे जीवन के समस्त क्षेत्रों में व्यक्ति अद्वितीय बन सकता है। उसको इतना अधिक सम्मोहनकारी प्रभाव प्राप्त हो जाता हैकि उसे देखने मात्र से, उसके रोम-रोम से आते तेज से, सामने वाला आज्ञा पालन करने को तत्पर हो उठता है। वह फिर सम्मोहन करता नहीं, सामने वाले स्वयं सम्मोहित हो बाध्य हो जाते हैं।
स्वामी प्रवज्यानन्द जी, पूज्य गुरुदेव की भांति इसका रहस्य बताने के विशेष इच्छुक नहीं थे, किन्तु मेरे अत्यधिक आग्रह के बाद वे भी उन दिनों में खो गए जब पूज्य गुरुदेव के साथ उनकी भी षोडशी साधना के क्षण व्यतीत हुए, मां के नर्तनशील स्वरूप-षोडशी स्वरूप की साधना में....
सारी प्रकृति ही उस सायंकाल षोडशीमय होती लग रही थी जब स्वामी प्रवज्यानन्द जी अपने साधानत्मक दिनों की याद में लीन हो गए, मानों मां भगवती जगदम्बा स्वयं ही उस दिन वर्णन सुनने उपस्थित हो गई थी, दिवस का अवसान हो रहा था और डूबते सूरज का सिन्दूरी रंग पत्ते-पत्ते पर बिखरता हुआ सारी घाटी को लालिमा और सुनहरी आभा से भरता हुआ उनकी अभ्यर्थना में अपना अर्ध्य प्रस्तुत कर रहा था। मन्दाकिनी के तट पर उस अगस्त्य मुनि की घाटी में पक्षी नित्य कलरव करना भूल गये थे, सारी प्रकृति अपना व्यापार कुछ क्षणों के लिए शांत करने का आतुर हो गई लगने लगी थी, मन्दाकिनी का जल नर्तन करना भूल रहा था और आसमान में उड़ते बादल भी

ज्यों ठिठक गए थे । देखते ही देखते सामने हिमालय की चोटियां सुनहरे रंग में रंग गई और जब उस निःस्तब्धता को और भी निःस्तब्ध करती हुई स्वामी प्रवज्यानन्द जी की गुरू-गम्भीर वाणी गुंजरित हो उठी.... यही से कुछ दूर था वह स्थान जहां मैंने औरा निखिल जी ने साथ-साथ साधना प्रारम्भ की थी । मैं उनका छोटा गुरूभाई होने के कारण उन दिनों लगातार उनके सान्निध्य में रहने का सुअवसर पा सका था । निखिल जी उन दिनों सर्वथा मौन रहने लग गए थे । एक प्रकार से इस पार या उस पार का हठ ठान चुके थे, जो उनकी पुरानी आदत रही है । दिन-रात केवल भगवती षोडशी का ही चिन्तन, भगवती षोडशी का ही स्तवन और मंत्र-जप । हमें हमारे गुरूदेव ने स्पष्ट कह रखा था कि मै। अपने ढंग से सन्तुष्ट होने के बाद ही निर्णय ले सकूंगा कि क्या षोडशी दीक्षा प्रदान करूं अथवा नहीं । एक प्रकार से यह साधना तो निखिल जी षोडशी दीक्षा पाने के लिए कर रहे थे, मुख्य साधना और मुख्य क्रम तो अभी बहुत दूर था, क्योंकि षोडशी दीक्षा प्राप्त हो जाना ही अपने-आप में इतनी गम्भीर घटना है, जिसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता । क्योंकि षोडशी दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक विश्व स्तर से भी ऊपर उठकर ब्रम्हाण्ड के रंगमंच पर आने की तैयारी में संलग्न हो जात है । निखिल जी को कोई चुनौति जैसी बात जीवन में मिले और ये उसे सामान्य घटना की तरह लें यह मैंने देखा ही नहीं । मैंने उनके साथ रहकर यह देखा कि वे जिस साधना में बैठ जाते हैं, अपने-आप को पूरी तरह से उसमें डुबों देते है । इतने अधिक तल्लीन हो जाते हैं कि साक्षात् उस देवी या देवता की प्रतिकृति ही लगने लगते हैं । साधना का सूक्ष्मता से अध्ययन करना, जहां जो भी जानकारी मिले एकत्र करना और फिर एकान्त में जाकर साधना में संलग्न हो जाना, यह इनकी सदैव से विशेषता रही है । इसी से जो साधनायें अन्य साधकों को वर्षो और जन्मों में सिद्व होती है, वे उनको माह भर में ही सिद्व होते देखा है ।

किन्तु इस बार चुनौति कठिन थी क्योंकि इस बार सामान्य साधना नहीं, साधनाओं की गल भगवती षोडशी की साधना ही सम्पन्न करनी थी । सर्वथा मौन रहते हुए वे साधना में संलग्न थे और मैं तो अपनी साधना से भी अधिक उनके साथ गुरूभ्राता होते हुए भी शिष्य रूप में उनकी सुख सुविधाओं को ध्यान अधिक रख रहा था, उनके शरीर और हावभाव में होने वाले परिवर्तनों की ही अधिक पढ़ रहा था । मेरे समक्षा उनका व्यक्तित्व एक साधना ग्रंथ की भांति पृष्ठ दर पृष्ठ खुलता जा रहा था और सही कहूं तो मैं उनके आचरण से वह सब कुछ सीख रहा था जो मेरे लिए आसन पर बैठ कर माला घुमाने से अधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि जब तक साधना के इन आयामों को नही समझा जाता जब तक कोई साधना सिद्व हो भी कैसे सकती है? कोई भी साधना और विशेष रूप से षोडशी महाविद्या साधना इतनी हल्की साधना है ही नहीं कि उसे जब चाहे जब सिद्व कर लें । साधना के लिए देवतामय बनना पड़ता है ओर देवतामय कैसे बना जाता है, इसी का व्यवहारिक ज्ञान मैं निखिल जी के साथ रहकर प्राप्त करता जा रहा था ।

षोडश बीज मंत्रों को समाहित किए हुए भगवती षोडशी का स्वरूप क्या पड़, क्या चेतन और क्या जीवन के एक-एक पक्ष सभी कुछ तो समाहित किए है और मैं स्पष्ट अनुभव कर रहा था कि निखिल जी ने सामान्य पद्वति का त्याग कर भगवती षोडशी के षोडश बीज मंत्रों को एक-एक कर के अपने शरीर में समाहित करना प्रारम्भ कर दिया है । एक अद्भुत सम्मोहन ओर अजीब सी चमक उनके सारे शरीर पर उतर आई थी और सदा से मौन रहने वाले

निखिल जी दिन प्रतिदिन एक ऐसे आनन्द में विभोर होते जा रहे थे जिससे मुझे उनसे वार्तालाप के जो दुर्लभ क्षण मिलते थे वे भी समाप्त होने लग गये साधना काल में उनके चेहरे और सम्पूर्ण शरीर के आसपास इतना अधिक प्रकाश उमड़ आता था कि उनकी ओर देखना कठिन हो जाता था । षोडशी साधना का यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि साधक को प्रारम्भ में काम, क्रोध, ईर्ष्या व मोह से अपने-आप को सर्वथा मुक्त कर लेना होता है । इस 'साधना' को करने के बाद ही भगवती षोडशी की 'महासाधना' प्रारम्भ होती है । एकान्त के क्षणों से निकल कर जब वे कभी बाहर आते और साधना कक्ष के बाहर स्थित एक बड़ी चट्टान पर अपना व्याघ्र चर्म बिछाकर बैठ जाते तथा एकटक आकाश की ओर देखते रहते तो उनके चेहरे पर उत आया दप, ओज और भगवती षोडशी का लावण्य उनको ऐसी आभा देने लगता था ज्यों साक्षात् कोई सिंह ही बैठा हो । निस्पृह भाव से देखती उनकी दृष्टि कभी मन्दाकिनी के प्रवाह की ओर गुड़ जाती तो कभी शून्य में खो जाती । कभी ऊंच-ऊंचे वृक्षों को निहारने लगती और कभी अकाश के पल-पल में हो रहे परिवर्तनों को । उनकी दृष्टि परिवर्तन के साथ ही उनके चेरहे के भाव भी बदलते जाते थे, कभी उनके चेहरे पर नदी सा कुछ उमड़ने लगता, कभी वृक्षों सी कुछ छांव उतर आती और कभी आकाश की ही भांति निष्प्रपंच ! मानों प्राकृति स्वरूपा मां षोडशी एक ऐसे पवित्र विग्रह का आश्रय लेकर उसमें स्थापित होती हुई अपनी हीरची प्रकृति को निहार रही हों । उनके गुरू-गम्भीर चेहरे पर उनकी चिर-परिचित दृढ़ता के साथ-साथ जो कोमलता और लावण्य उतर आया था वह स्पष्ट से उन्हीं मां भगवती षोडशी का ही तो असीम सौन्दर्य था। एक माह तक उनकी यही स्थिति रही । आहार आदि दिन प्रतिदिन सूक्ष्म होते-होते समाप्त हो गया था किंतु इतनी कठिन तपस्या के बाद भी चेहरे पर न तो कोई झुंझलाहट थी, न बैचेनी, न पीड़ा, बस वही एक भाव कि " मुझे षोडशी दीक्षा लेनी है और अवश्य लेनी है ।"

एक माह बीतते-बीतते वह सुखद क्षण भी आया गया जब एक अन्य गुरूभ्राता ने आकर यह शुभ समाचार दिया कि हमें गुरूदेव ने बुलाया है । हमारे गुरूदेव उस स्थान से थोड़ा हटकर भीतर एक गुप्त स्थान पर पधारे थे । उनका यह आदेश एक प्रकार से संकेत था कि उन्होंने निखिल जी को षोडशी दीक्षा देने का मन बना ही लिया है और ऐसा ही हुआ । दीक्षा प्राप्ति के बाद निखिल जी के प्रयासों में और भी अधिक सघनता आ गई । पहले जहां वह तीन घंटे विश्राम करते थे अब वह समाप्त होता हुआ एक घंटे का ओर उसके उपरान्त आधे घंटे का ही रह गया । उसे विश्राम कहना भी उचित नहीं होगा । क्योंकि उस आधे घंटे में वे अपनी नित्य क्रियायें सम्पन्न करने के लिए ही तो उठते थे ।

ऐसे ही एक अवसर की बात है जब वे कुछ अधिक प्रसन्न थे, मैने डरते-डरते पूछा कि, "आप इतना अधिक परिश्रम क्यों कर रहे है, जबकि मैं तो स्पष्ट देख रहा हूॅ कि पूज्य गुरूदेव से दीक्षा प्राप्त करने से पहले ही आपके शरीर में भगवती षोडशी अपने सोलह बीज मंत्रों के साथ सम्पूर्ण करूणा और सम्पूर्ण श्रंृगार के साथ समाहित हो ही चुकी हैं, स्पष्ट है कि आपको दीक्षा के पूर्व ही भगवती षोडशी का प्रत्यक्षीकरण भी हो ही चुका है, फिर इतना अधिक परिश्रम क्यों, इतना अधिक तक क्यों?" उस अवसर पर उन्होंने अपने मोन को भंग कर जो बात कही वह इतिहास का एक अमिट क्षण है । वे बोले- " यह सत्य है भगवती षोडशी का साक्षात् मुझे साधना के प्रारम्भ में ही हो गया था, किंतु मैं इस साधना के प्रत्यके पक्ष और प्रत्येक बिन्दु को अपना कर देख लेना चाहता था जिससे मैं अपने शिष्यों के समक्ष स्पष्ट बता सकूं कि इस साधना के क्या-क्या पक्ष है, कौन-कौन से उतार-चढ़ाव आते हैं और उनके क्या समाधान है ।"

जीवन में ऐसा प्रखर चिन्तन, इतनी उच्च भाव-भूमि और इतनी पैनी दृष्टि केवल उन्हीं की हो सकती है, जो जन्म से ही गुरुत्व के गुणों से विभूषित हो। एक प्रकार से उनकी यह बात सुनकर मुझे अपने-आप पर लज्जा हो आई क्योंकि मेरी साधना का उद्देश्य कुछ और था। मैंने षोडशी साधना के द्वारा केवल अपने जीवन को संवारने का चिन्तन रखा था। निखिल जी की बातों से मेरे सामने जीवन का एक नया अध्याय खुला कि साधनाएं किस प्रकार अपने 'स्व' से ऊपर उठकर की जानी चाहिए और जिस प्रकार निखिल जी कर रहे हैं। शायद यही रहस्य है कि वे जिस साधना को हाथ में लेते हैं वह उन्हें कुछ महीनांे में ही सिद्ध हो जाती है, जबकि अन्य उसे वर्षों और कभी-कभी तो जन्मों में जाकर सिद्ध करते हैं।

हठ, आग्रह, तेजस्विता और उदात्तता का जैसा अनोखा सम्मिश्रण मैंने निखिल जी में देखा वैसा मैंने अपने साधक जीवन में और अब इस गुरु पद पर भी अन्य किसी में देखा ही नहीं केवल एक ही व्यक्तित्व मुझे उनकी तुलना में समकक्ष लगते हैं और वे हैं महर्षि विश्वामित्र। यद्यपि मैंने महर्षि विश्वामित्र का साक्षात् दर्शन तो नहीं किया, किन्तु निखिल जी के रूप में मुझे सदैव ऐसालगता ज्यों महर्षि विश्वामि? ही इस रूप में गतिशील हैं। कभी मैंने निखिल जी के श्रीमुख से ही सुना था कि महर्षि विश्वामित्र जिस साधना को करने का निश्चय कर लेते थे उसके विषय में जाकर केवल अपने गुरु से निवेदन मात्र कर देते थे और कुछ समय पश्चात् सिद्ध करके जब वापस आते थे तो अगली साधना की आज्ञा मांगने के लिए ही आते थे। विविध साधनाएं और विविध पद्धतियां उनके हाथों में खेलती रहती थी और इसी प्रकार निखिल जी ने अपने जीवन में , अपने साधक जीवन और शिष्य जीवन में जिया है। एक साधना को लेकर या एक महाविद्या को पकड़कर उन्होंने कभी अपने को पूर्ण माना ही नहीं। निरन्तर शोध करते रहना, निरन्तर संलग्न रहना और आत्मलीन रहना यही उनका सबसे बड़ा गुण और उनकी प्रियता का वातावरण है।

आज आश्चर्य होता है कि कैसे इतना प्रखर व्यक्तित्व अपनी उच्चकोटि की साधनात्मक भावभूमि छोड़कर, अपनी आत्मलीनता छोड़कर समाज में पहुँच गया है। शायद निखिल जी को इसका आभास था कि एक न एक दिन उन्हेंेें उनके गुरु समाज में भेजेंगे ही और उन्होंने अपने को विष पीने को तैयार भी कर लिया था किन्तु मेरी स्मृति में तो वे कुछ एक क्षण ही अंकित हैं जब मैंने उनका साधनात्मक जीवन अत्यन्त समीप रहकर देखा। उनके साधनात्मक जीवन में ही उनके 'गुरुत्व' का अनुभव किया। निखिल जी से मुझे बाद में वह सम्पूर्ण विवरण भी ज्ञान हुआ जो उन्हें भगवती षोडशी की साधना के मध्य हुआ था। मां के उस जाज्वल्य औरलालित्य से भरे स्वरूप को उन्हों ने एक अत्यंत मधुर व गम्भीर पद के माध्यम से काव्य में बािंधा है, जिसका स्तवन उनके विशिष्ट शिष्यच नित्य करते हैं और जिसके माध्यम से भगवती षोडशी का पूर्ण जाज्वल्यमान दर्शन करने में सफल होते हैं क्यों कि वह स्तोत्र मात्र स्तोत्र ही नहीं, निखिल जी के प्राणों और तप से घर्षण कर उत्पन्न हुआ अग्नि स्फुलिंग है जिसके प्रकाश में ही मां भगवती षोडशी का सम्पूर्ण सौन्दर्य और विशेषता देखी जा सकती है औरमैने भी देखी है। किन्तु निखिल जी के समान मां भगवती षोडशी के स्वरूप दकी पंक्तियों के माध्यम से मैंे अंकित करने में असमर्थ हूं। मां तो विविध स्वरूपा हैं। उनके अन्दर इतने अधिक पक्ष समाहित हैं कि मैं किस पक्ष को लेकर उनका वर्णन करूं ? उनका प्रत्येक पक्ष इतना अधिक सौन्दर्य से भरा है, कि उसको देखने के बाद चित्त उसी एक पक्ष में रमाजाता है।

.........यह कहते-कहते प्रवज्यानन्द जी भाव-विभोर हो गए, उनकी आंखों में आ गया एक अश्रुकण कह रहा था कि उन्हांेने वास्तव में पूज्य गुझदेव की कृपा से अपने जीवन में भगवती षोडशी का साक्षात्कार किया है । . स्वामी प्रवज्यानन्द जी गम्भीरता और उन क्षणों की बोझिलता से मैं यह पूछने से वंचित रह गया कि वे वास्तव में किस बात से द्रवित हो उठे हैं- जगज्जननी मां भगवती षोडशी का स्मरण करके या पूज्यपाद गुरूदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का स्मरण करके ।

****

WHEN SHODASHI SADHNA IS COMPLETED BY REVERED GURUDEV

Just recalling the name of Tripur Sundari Bhagwati Shodashi is the beauty and elegance of life. Doesn't matter how many mahavidyaien, sadhnaye can be done, any type of shakti i.e. powers or sidhis can be achieved but all is uncompleted without the sadhna of Bhagwati Shodashi. Life remains totally dull and unexciting until it cannot get the beauty of Shodashi because in reality it is only Shodashi which is regarded as mother of "Shri", founder of poetry and final destination of magnificence and completeness. She poccess such a beauty that many yogis and saints spent their whole life just to express her beauty but their all tiring hard work did not satisfy them because this marvelous beauty of this Goddess is the actual form of nature. In other forms of Mahavidya she poccess a particular status in particular field but in her Shodashi form she presents herself in shape of nature and as continuous and full of life as nature is. Where there other mahavidya get themselves beautify with Shakti (power) and divyata (divines) at that place Maa Shodashi just like a tremendous river is continuously flowing with wholeness of beauty with mind.

She represents a tradition in Mahavidya sadhna and is a great final authority of "Shri" dynast. It is explained in shastras that who gets the honor of doing Shodashi sadhna in Guru parampraa and come to know its procedure from living Guru is considered luckiest person because having this honor means shishya is going to live a life full of success, richness, grandeur and surely will have leadership qualities. Shodashi who is the proudy owner of luxuries and the person who gets her blessings is bound to lead a fruitful life. In Guru Parampraa this sadhna is kept with great secret that there are very few sadhaks who has done this sadhna. Aadi Shankracharya is the care taker and Sidh Acharya of this sect. In the beginning Bhagwatpaad Aadshankracharya was follower of Advaeit but as time passed he realized the importance and need of Shakti in life and then he started following Shakti in her Shodashi form but after him due to lack of good students this very important sadhna" Shrividhya" get lost.

I was sure that after ADYA SHANKRACHARYA revered Gurudev has sole authority over this Shodashi sadhna but whenever I tried to learn about it every time he changed the topic and I felt myself less deserver of it so did not dare to ask anything further because this sadhna is not a common sadhna but a kind of grand mahavidya. Shodashi is nothing but the essence of life and all sadhnas. Shodashi means the one who poccess all Shhodshh kalayein as Lord Shri Krishna was. But it was only due to great sage Prvajyanand ji, who was a witness of Gurudev's sanyast life, a great secret was disclosed that Gurudev was not only sidhtam Acharya of this sadhna but he used to get the glimpse of Shodashi every second. To have the company and visualization of Shodashi means get success over life and achieve matchless status in each and every field of life. He becomes so attractive that just by looking at him and the heavenly light which comes out from his body the other person becomes ready to follow his order. After all that he needs

SHREE GANESH PRAYOG

सम्मोहन प्राप्ति के लिए भगवान् श्री गणेश प्रयोग

सम्मोहन प्राप्ति के लिए

भारतीय संस्कृति में जितने लोकप्रिय ये भगवान का स्वरुप हैं उतना शायद कोई भी नहीं हैं , जिसका जैसा मन आया वसा बना लिया , कोई पत्ते से कोई लड्डू से कोई तिल से सभी स्वरुप में भगवान श्री गणेश का विग्रह मिल सकता हैं , विश्व के अनेक कोने में इनके अनेक ऐसे प्रतिक पाए गए हैं जिन पर मन सहसा विश्वास नहीं कर सकता . दक्षिण मार्ग से लाकर जितने मार्ग हैं सभी में इनकी उपस्थिति हैं ही , हाँ स्वरुप बदल सकता हैं पर उनका कल्याणकारी स्वरुप तो हैं ही .

हने लगातार इनके शुभ स्वरुप से संबंधित प्रयोग आपके सामने रख रहे हैं, साधना जगत में एक बात हमेशा याद रखना चाहिए जरुरी नहीं हैं की प्रयोग बड़ा हो , बड़ा मंत्र हो तभी सफलता मिलेगी

, सदगुरुदेव भगवान हमेशा से कहते रहे हैं की एक विशालकाय हाथी को बश में करने के लिए मात्र एक छोटा सा अंकुश ही काफी हैं .

सम्मोहन की महत्ता से कौन नहीं परिचित हैं कितनी साधना करे? ओर कब तक ? पर जब समय न होतो क्यों न ये छोटे सा सरल प्रयोगकर आप स्वयं देखें . किसी भी प्रकार की साधना सामग्री की आवश्यकता इस लघु प्रयोग में नहीं हैं .

विधि :प्रति दिन स्नान कर पवित्र हो कर , किसी भी आसन में बैठ कर सदगुरुदेव भगवान से प्रार्थना करें ओर गुरु मंत्र जप करे , इसके बाद मात्र आधे घंटे इस मंत्र का जप करें

"वक्र तुन्डाय हूम "

इस सरल प्रयोग को कर के देखें आप अपने में आने वाले परिवर्तन देखकर स्वयं ही आश्चर्य चकित हो जायेंगे .

****

in indian sadhan field , therr so many god and godess , but shree ganesh is most popular one,. there are so many vigrah available , one cannot imagine that in this type of ganesh vigrah can be possible, strange but true .not only dakhin marg butin every type of section of sadhana , shree ganesh is there , though poojan way may different but the main concern toprotect his sadhak and procced onthe way toprosperty is common.

we generallyhave a though that if the sadhan is lenghty and and bigger mantra equpped with so many beej mantra produced reasult early , but this is not the facts, sadgurudev ji pointed out it many occasionthat to contral a elephant a small ankhush is enough.

so keep this fact in your mind,

this small ptayog induces you sammohan power , and who do not want to get it , if this possible throughthis very simple prayog why not go for that.

process: in th emorning have bath , and after that , sit on your aasan with any way which will be easier to you and after completing sadgurudev ji poojan and prayer do jap this small mantra at leat 30 minits, and when you do this process regualrly you will amazed to see the result.

mantra :

“vakratunday hum”

no sadhana samnagri is essential .

YAKSH LOK

क्या वास्तव में यक्ष लोक हैं

भारतीय साधना या यूँ कहे तो साधना जगत में कुछ ऐसे ज्ञान की दृष्टी से आयाम हैं जिन पर एक आदमी तो क्या समाज के उच्च संभ्रांत वर्ग के व्यक्ति भी विस्वास नहीं कर पायेगें /या करते हैं , उसे मन गढ़ंत या कपोल कल्पना ही मानते हैंओर अभी तक आये भी हैं .पर केबल "प्रत्यक्ष किं प्रमाणं " की अबधारणा के आधार पर तो ये अत्यंत गोपनीय उच्च रहस्य केबल इसलिए तो दिखाए जा सकते कि कोई कहता हैं की में नहीं मानता .व्यक्ति को अपनी योग्यता, स्वयं सिद्ध करनी पढ़ती हैं /या पड़ेगी केबल ये कहने मात्र की में नहीं मानता से तो जीवन में कुछ उपलब्ध खास कर इन विषयों का नहीं हो पायेगा .

हमारे साधनात्मक ग्रन्थ ही नहीं अनेको पवित्र किताबो में अनेको लोक लोकांतर ,आयामों कि चर्चा बार बार आई हैं जैसे भुवः लोक, जन लोक , सत्यम लोक . तप लोक ओर इनके साथ अनेक ऐसे लोकों के नाम भिलागातार आते रहे हैं जैसे गन्धर्व लोक , यक्ष लोक , , पित्र लोक देव लोक ओर इन सभी कि इस द्रश्य/अद्रश्य ब्रम्हांड में उपस्थिति हैं ही . मानव त्रि आयामात्मक हैं वही इनमेंसे अनके लोक या उनमें निवासरत व्यक्तित्व द्वि आयामात्मक हैं इस तथ्य का कोई सत्यता या प्रमाण हैं क्या ?सबसे साधरण तह तो हम सोचे कि हमारे पूर्वजो को यह सब लिख कर क्या फायदा होना था , क्या वे हमें दिग्भ्रमित करना चाहते थे(उन्हें इससे क्या लाभ होता), क्या उन्हें कोई रोयल्टी मिल रही थी कि चलो लिख दो . ऐसा कुछ भी नहीं हैं यह तो महरी सोच ही पंगु हो गयी हैं इस कारण हम हर चीज /तथ्य कि सत्यता का प्रमाण मांगते रहते हैं.महानतम अमर योगी पूज्य महाव्तार बाबाजी जी , परमहंस योगनान्दजी कि विश्व विख्यात कृति में कहते हैं कि "देख कर तो कोई भी मान लेगा , धन्य हैं वह जो बिना देखे मान लेता हैं " यहाँ पर वे अविज्ञानिक होने को नहीं कह रहे हैं , पर एक दम प्रारंभ में तो ऐसा कर ना पड़ेगा ही . हम मेसे से अनेक गणित के प्रश्न हल करते हैं ही उसमे तो

पहली लाइन होती हैं कि मानलो ये वस्तु कि कीमत बराबर x हैं तो .... जब कि हम सभी जानते हैं वह वस्तु कि कीमत , बराबर x कभी नहीं होता हैं ,पर अगर ये भी ना मने तो वह प्रश्न हल कैसे हो ..

ये सभी लोक (यक्ष लोक) भी हमारे बहुत पास हैं यु कहे तो हमारे साथ ही साथ खड़ा हैं बस आयाम अलग हैं दुसरे अन्थो में कहे तो "यथा पिंडे तथा ब्रम्हांड " कि अब धारणा के हिसाब से तो हमारे अन्दर ही हैं . ऐसे अनेको उदहारण यदा कदा पाए गए हैं जब किसी अगोचर प्राणी या व्यक्ति ने अचानक मदद की हैं ,अब इस तथ्य के प्रमाण के बारेमें तो उसी से पूछिए ,हर अंतर्मन की बातों का कोई प्रमाण तो नहीं हैं . वास्तव में यक्ष या यक्षिणी एक शापित देव/देवी हैं जो किसी गलती या अपराध के कारण इस योनी में आ गए हैं ओर जब तक वे एक निश्चित संख्या में मानव लोक के निवास रत व्यक्तियों की मदद /सहायता न कर ले, वे इस से मुक्त नहीं हो सकते हैं .

इन्हें भूत प्रेत पिशाच वर्ग के समकक्ष न माने , ओर वैसे भी भूत प्रेत डरावने नहीं होते हैं इन वर्गों ओर लोकों के बारे में एक तो हमारा चिंतन स्वथ्य नहीं हैं साथ ही साथ हमारा स्वानुभूत ज्ञान भी इस ओर नगण्य हैं , जो भी या जिसे भी हम ज्ञान मानते आये हैं वह रटी रटाई विद्या हैं उसमें हमारा स्वानुभूत ज्ञान कहाँ हैं , तीसरा , जो मन में बाल्यकाल से भय बिठा दिया गया हैं वह भी समय समय पर सामने पर सर उठाता ही रहता हैं .हमारा अपनी ही कल्पना हमें भय कम्पित करती रहती हैं

हम में से अधिकाश ने महान रस विज्ञानी नागार्जुन के बारे में तो सुना ही होगा उन्होंने लगभग १२ वर्ष की कठिन साधना से वट यक्षिणी साधना पुर्णतः से संपन्न की ओर पारद/ रस विज्ञानं के अद्भुत रहस्य प्राप्तकर इतिहास में एक अमर व्यक्तित्व रूप में आज भी अमर हैं .(उनकी साधना पद्धिति अलग थी)

ये यक्ष लोक से सबंधित साधनाए अत्यंत सरल हैं इन्हें कोई भी स्त्री या पुरुष , बालक या बालिका आसानी से संपन्न कर करसकता हैं

यक्ष लोक के निवासी अत्यंत ही मनोहारी होते हैं साथ ही साथ वैभव ओर विलास के प्रति उनकी रूचि अधिक होती हैं , हमेशा उत्सव में लें या उत्सवो जहाँ हो रहे हो वहां उपस्थित रहते हैं इसका साधारणतः अर्थ तो यही हैं की माधुर्यता ओर आनंदता इनके मूल में ही समाहित हैं . पर इनकी वेश भूषा हमसे इतनी अधिक मिलती हैं की इन्हें पहचान पाना बेहद कठिन हैं

यह अद्भुत आश्चर्य जनक तथ्य हैं की हर किताब इनके बारेमें एक भय का निर्माण करती हैं ,हमें इसके बारेमें चेतावनी देती हैं ,इन साधनाओ को न किया जाये , करने पर यह या वह होसकता हैं , ओर उस साधक के साथ तो ऐसा ऐसा हुआ . पर परम पूज्य सदगुरुदेव जी ने सारा अपना भौतिक जीवन इन अनेक दिग्भ्रमित ता उत्पन्न करने वाले तथ्यों के बारे में तथा हमें सत्य तथ्यों से अबगत कराया उन्होंने जिस भी प्रकार की कोई भी साधना या यक्षिणी साधना भी ,कोई भी मंत्र, शिविरों में या पत्रिका में या किताबोंमें दिए हैं वह सभी साधक के लिए बेहद सफलता दायक ओर प्रसन्नता प्रदायक रही हैं , जिन्होंने भी इन साधनों में आगे बढ़कर सफलता पाई हैं वे सभी न केबल भौतिक बल्कि आध्यात्मिक क्षेत्र में भी सफलता की चोटी पर लगातार बढ़ते रहे हैं ही .

.हम दीपावली की रात्रि को कुबेर (यक्ष और यक्षिणीयों के अधिपति हैं) का पूजन क्यों करते हैं कारण एक दम साफ हैं की वे देवताओं के प्रमुख खजांची माने गएहैं ओर उनकी साधना उपसना से भौतिक सफलता के नए आयाम जीवन में में खुल जाते हैं , यक्षिणी वर्ग नृत्य कला में भी अपना कौशल रखता हैं ओर वे अपने नृत्य के मध्यम से साधक को प्रसन्नचित्त बनाये रखती हैं साथ ही साथ यदि साधक चाहे तो इनसे ये भारतीय संस्कृति की अद्भुत कला विद्याये सीख भी सकता हैं .एक प्रिय मित्र के रूप में आपके साथ हमेशा रह सकती हैं (आपको द्रश्य रूप में दिखाए देती हैं पर

अन्य इसे नहीं देख सकते हैं) साथ ही साथ हम ये तथ्य जान ले की जो भी मानवोत्तर वर्ग हैं वे एक बार आपके मित्र होने पर ,वे धोखा जैसी मानसिक विकारात्मक चीजे जानते ही नहीं हैं

यक्षिणीयां तंत्र की विशेष विधा की न केवल उच्च कोटि की जानकर बल्कि वे उस बिभाग की अधिस्ठार्थी भी होती हैं यदि साधक चाहे तो इनकी सहायता से उस तंत्र के विभाग में अत्याधिक योग्यता ओर उच्चता पाई जा सकती हैं .ओर यह कोई न माने वाली बात नहीं हैं .ओर क्या क्या लिखा जाये इस वर्ग या लोक के बारे में , आप आगे बढिए तो सही फिर इससे भी अद्भुत रहस्य आपके सम्मुख होंगे केबल इन तथ्यों को पढ़ने से तो कुछ नहीं होगा . ये क्या आपकी आध्यात्मिक जिज्ञासा को ढकने का काम तो नहीकर रहा हैं , बल्कि होने तो ये चाहिए की आपमें आगे बढ़ने ओर सिखाने की प्रबल इच्छा ओर जगा दे.

यह लोक भी हमारे साथ ही उपस्थित हैं पर उसका आयाम अलग हैं साधन के माध्यम से आयाम भेद मिट जाता हैं .हमारी आँखों में यह क्षमता जाती हैं की हम इस लोक या अन्य लोकों भी देख सकते हैं , आप के और हम सभी के ऊपर जब हमारे आध्यात्मिक पिता का वरद हस्त हैं तो इस बारेमें बेसिरपैर के तथ्य पर धयान न दे , आप आगे बढे ओर आपको सफलता प्राप्त होगी ही .

****

Yaksh Lok

Bharitya sadhana or Indian sadhana world have various such a dimension that not only general common masses but people belongs to higher section of the society cannot believe easily. And pratyash kim pranam on the basis of that one cannot say that higher level of secrets will be relived to him is just because he /she cannot trust. One must has to show his eligibity merely I do not believe will not serve the purpose.

There are various other plane or lok has been mentioned on various places in holy text like swas lok , bhu lok , bhvah lok , jan lok, styam lok , tap lok etc and apart from thses well known plane other lok like gandharav lok, yaksh lok , pitar lok etc also exists in this universe. Man is three dimension living things where these are two dimension one. What is the proof of this doctrine, is the simple why so many incidents mentioned in the holy book just because they wanted to miss lead us, or they were in mind of getting any royalty of that, lacking part is our understanding. Greatest sage immortal yogi Mahavtaar babaji tells in Autobiography that" dekh kar to koi bhi biswas karlega , paranti jo bina dekhe biswas karta hain wah sherthey hain " means when the miracles shown to us than question of non belive does not arise , but that will be most important who without seeing that believe that"

Thses lok(yaksh lok) are very close to us, infacts there are many incident in that they helped us without coming any visible form. Actually yaksh and yakshini are the cursed Devi devta because of that curse they fall from their original position. And till

YAKSHINI SADHANA - MY EXPERIENCE

मैंने क्या सीखा इस साधना से आप भी ...

१९८७ की पत्रिका के जिस एक अंक मेरे हाथ में आया , दिव्यगना स्वर्ण प्रभा यक्षिणी साधना का लेख सदगुरुदेव जी प्रकाशित किया , इतनी सरल विधान ओर यहाँ तक लिखा था की की ये साधनातो लक्ष्मी साधना से भी ज्यादा महवपूर्ण हैं , और अन्य सभी लाभ जैसे की किसी भी यक्षिणी साधना में वर्णित रहते हैं एक मित्र, सखी रूप में प्राप्त होना , आपकी मानसिक शारीरिक इच्छा पूर्ति करना आदि सभी दिया था . एक पत्रिका सदस्य बना कर इस साधना सामग्री को फ्री में उपहार स्वरुप प्राप्त करना था, किसी तरह ये शर्त भी कर दी , ओर वह दिन भी आ गया जब ये साधना सामग्री मेरे पास थी, बस अब साधना में बैठना था.

असफलता का तो नहो पर सफलता का थोडा सा ज्यादा मन में उथल पुथल चल रही थी की, क्या होगा कैसे साक्षात्कार होगा. रात्रि काल में साधना में बैठ कर जैसे निर्देशित किया था , वैसे ही मंत्र जप किया , जप करते समय बार बार आखे खोल कर देखता था की कोई आया तो नहीं, कहीं धुएं की आकृति तो नहीं बन रही हैं . मंत्र जप तो मात्र २१ माला ही था तो लगभग १ घंटे से भी कम समय में संपन्न हो गया , कोई अनुभूति नहीं , कोई प्रगट नहीं हुआ.

थोडा सा निराशा तो हुए, जो इस बात का सबुत की कहीं आशा तो थी.

एक बार पुनः कोशिश की पर सफलता अब भी प्राप्त नहीं हुयी . तभी पत्रिका के एक अंक में कुछ गुरु भाइयों के नाम

ओर पते प्रकाशित हुए , जो साधना में काफी सफल थे , उनमें से एक मेरे नगर में निवासरत थे, एक सायं काल को में उनके सामने थे , काफी देर तक उनकी बात सुनाता रहा फिर उन्होंने मुझसे पूछा की विबाहित हो? मेरे माना करने पर उन्होंने कहा की अच्छा होगा की इस यक्षिणी साधना को मत करो ,

क्यों ?

ये वर्ग यदि किसी भी अविबाहित के संपर्क में आता हैं तो उसे फिर नहीं छोड़ता . में तो भय कम्पित सा हो गया , घर पर आ के सदगुरुदेव भगवान को पत्र लिखा की अगर ये बात हैं तो आप ऐसी खतरनाक साधना को देते क्यों हैं, उन्होंने मुझे पत्र में कई बार समझाया , की ऐसा कुछ नहीं हैं , तुम पुनः साधना करो , पर मेरे मन में उन गुरु भाई की कही गयी बात कहीं कूट कूट कर बैठ गयी थी . तीन वर्ष बीत गए में अपने मन से ये बात निकल ही नहीं पा रही था . तभी एक दिन सदगुरुदेव जी का पत्र मिला ..

“कैसे शिष्य हैं तू में कह रहा हूँ की ऐसा कुछ नहीं हैं ओर तू हैं की बस किसी की बात पकड़ कर बैठा हैं , तुझे गुरु बचनो पर विस्वास नहीं "

इन शब्दों को सुन कर सारा मन में छाया में धुंध सब साफ हो गया .

"सुनत बचन सदगुरु के , संशय सब जाये "

(यहाँ एक बात विशेष हैं की उस समय लगातार ५ वर्ष से उन्हें पत्र लिख रहा था पर वे मुझे प्रारंभिक दीक्षा देने के लिए भी तैयार नहीं होते थे उनका कहाँ था मेरा शिष्य मेरा ही प्रति रूप होने की योग्यता रखता हो हाँ गुरु मन्त्र जप की आज्ञा उन्होंने दे दी थी ,) .

एक अप्सरा साधना में बार बार प्रयास कर रहा था , ज्यो ही सबंधित दिवस आता मेरा मन उस साधना करने का विचार छोड़ देता , रात्रि में समय निकलने के बाद मन में बहुत खेद होता क्योंकि उस समय साधना के लिए आवश्यक पुष्प या माला लाना संभव नहीं हो पाता ,एक दिन ओर उस साधना से सम्बंधित गया. जब ये समस्या बढ़ गयी तो मैंने गुरुदेव त्रिमूर्ति जी से मैंने निवेदन किया तो उन्होंने हस्ते हुए कहा की कहा कोई बात नहीं मन में कोई अन्यथा विचार न लाओ . मनो योग से तुम बिना पुष्पों के ही साधना करो.

हाँ में यहाँ आपको एक बात से अवगत कारन चाहता हूँ की जब आप किसी भी व्यक्ति के घर का कचड़ा अपने घर में डालने नहीं देते , तब किसी भी व्यक्ति के जिसने साधन की ही नहीं हो उसके अव्यवहारिक विचारों का कचड़ा अपने मन मस्तिष्क में क्यों आने देते हैं , लोग सलाह देते समय , सत्य के साथ अपने मन का असत्य भी दे देते हैं . इस हेतु आप भली भांति सोच कर ही इस संदर्भ में सलाह ले .कोई व्यक्ति मात्र उम्र में बड़ा होने से ओर आपका गुरु भाई होने से मात्र सलाह देने का पात्र नहीं बन जाता हैं जब सदगुरुदेव भगवान् के एक मात्र अधिकृत प्रतिनिधि के रूप में गुरुदेव त्रिमूर्ति जी जब हमारे सामने सुलभ हैं तो फिर किसी अन्य से क्या निर्देशन लेना .

मैंने एक गलती की बिना सोचे समझे अपने मन में किसी की बात को भी आने दिया ,मेरे साधनात्मक जीवन के तीन वर्षों का नुकसान मुझे हुआ.

साथ ही साथ मैं आप सभी को ये बता देना चाहता हूँ की सामान्यतः साधक ये चिंता ग्रस्त रहते हैं की कहीं साधना खास कर के यक्षिणी की गलत हो गयी तो क्या होगा , हाँ ये बात जरुर हैं की कुछ साधनाओ में सावधानी बहुत जरुरी हैं सदगुरुदेव जी ओर गुरुदेव त्रिमूर्ति जी समय समय पर पत्रिका में इस बारेमें निर्देशित करते हैं , ओर यह तो सर्व विदित तथ्य हैं की साधना कोई मजाक की नहीं बल्कि एक अत्यंत ही गंभीर विषय हैं ओर वह अपनी गरिमा के अनुकूल

साधक की मनः स्थिति ओर एक निष्ठता चाहता हैं .

इस संदर्भ में आपके सामने कुछ तथ्य रख रहा हूँ , उनको ध्यान में रख कर आप इस मार्ग पर चले तो सदगुरुदेव भगवान् ओर गुरुदेव त्रिमूर्ति जी के आशीर्वाद निश्चय ही आप सफल होने ही .

बिना गुरु दीक्षा ओर साधना सम्बंधित दीक्षा के बिना तो यह तो होना ही था, पर मुझसे कहाँ गलती हुए इसका पता लगाने में जुट गया .वही सभी तथ्य आप के सामने रख रहा हूँ जो की आप की सफलता प्राप्ति की अवसर कई गुना बढ़ा देंगें ही.

१. जीवन में काम भाव का भी एक अर्थ हैं हमारे मनीषियों ने इसको भी चार पुरुषार्थ मेंसे एक माना हैं. पर इसके बारे में भी स्वस्थ चिंतन बहुत ही आवश्यक हैं पर वर्त्तमान की स्थति भी सभी के सामने हैं ही, हम जब भी इस प्रकार के वर्ग की साधना करने बैठते हैं तब साधना के विपरीत भाव हमारे मन में इतने आ जाते हैं , ओर हम शारीरिक इच्छा पूर्ति के भाव से इतने अधिक भर जाते हैं की हम भूल जाते हैं की ये भी एक देव वर्ग हीं जो भले ही शापित हो पर हैं तो देव वर्ग ही, इस प्रकार की भावना ही साधना में व्यर्थ का तनाव ओर असफलता देती हैं.जो कोई भी इन्हें मात्र इच्छा पूर्ति का मध्यम मान कर करेगा उसे तो संभव ही नहीं की सफलता मिले.

हम कभी मान भी नहीं पाते की इसे भी अपने जीवन पर्यंत ,मित्र के रूप में सिद्ध करने की पवित्र के साथ भावना लेकर बैठे तो सफलता कहीं ओर ज्यादा पास होगी.

साथ ही साथ यदि मानव जीवन में भी किसी भी लड़की का मन जीतना चाहे तो भी आपको कितना प्रयत्न करना पड़ेगा , फिर तो ये देव वर्ग हैं आपके मन के विचार को आपसे पहले परख लेती हैं , जब इस लोक की कन्या को अपना बिस्वास दिला पाना कठिन हैं उसका बिस्वास अर्जित कर पाना तो ओर भी कठिन , तब आप खुद सोचे की किस प्रकार की मनो व्रती आप की/हमारी होना चाहिए..

२. यह सही हैं की हम हर साधना में सफलता पा सकते हैं पर किसी में थोडा जल्दी तो किसी में थोडा सा देर से, यदि हम गुरु द्वारा बताई गयी साधना करते हैं तो और भी सफलता के निकट होंगे.

३.साधना कक्ष जितना अधिक पुष्प सुगंध ओर इत्र से सुवासित कर सके उतना अच्छा हैं आखिर आप अपने मित्र को निमंत्रित कर रहे हैं . इतना तो होना ही चाहिए.

४. साधना को रात्रि के १० बजे के बाद करें,

५.एक दिवसीय साधनाओ में अत्यधिक उर्जा लगती हैं ,आपकी एकाग्रता ,मनः स्थिति , भाव सभी का एक लक्ष्य होना बहुत ही आवश्यक हैं , इसके ज्यादा अछछा होगा की आप इस सन्दर्भ में बड़ी साधनों के प्रति भी मन बनाये.

६, प्रतिदिन साधना आप एक निश्चित समय पर ही करें . ५/१० मिनिट का विलम्ब स्वाभिविक सी बात हैं पर इससे ज्यादा न करें.

७. यक्षिणी साधना से सम्बंधित मुद्राये का ज्ञान प्राप्त करें , पर इतना ही काफी नहीं हैं आप किस समय साधना के दौरान करें , इनमें से कौन सी साधना के मध्य में ,कौन सी पहले, कौन सी बाद में करें इसका विधिवत ज्ञान प्राप्त करें.

८.सदगुरुदेव जी के द्वारा लगभग १०/१५ ऑडियो सी ड़ी का निर्माण हुआ हैं उन्हें ध्यान से बार बार सुने वे किन तथ्यों को ध्यान में रखना बता रहे हैं उनका तो ध्यान दे ही, ये आप ओर हमारे लिए तो उन्होंने इतने श्रम करके बनवाई थी .अनेको गुरु बहियों ने इस तथ्य की ओर ध्यान देना उचित नहीं समझते हैं .

९. साधना से संबंधित उन व्यक्तियों से मिले जिन्होंने इन साधना में सफलता पाई हो , उस साहित्य को भी ध्यान से पढ़े जो इस हेतु आपको निर्देशित करे.

९.इन साधना से संबंधित कोन कोन से देवी देवता हैं ? उनका कैसा पूजनध्यान कैसा करना हैं ,? इस तथ्य को भी ध्यान रखे .

१०. साधना को कवचित करने के लिए निखिल कवच का उपयोंग तो आपको ज्ञात हैं ही .

११.हर साधना को संपन्न करने का एक महूर्त होता हैं ओर सप्ताह में एक दिन भी निश्चित हैं , उस अवसर को उपयोग में करे साथ ही साथ होली दीपावली .जन्माष्टमी , के साथ साथ सूर्य व चन्द्र ग्रहण तो मानो प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार हैं ,इनसब का प्रयोग करे.

12.साधनाए तो वास्तव में सन्यासी साधकों के लिए ही थी पर हम जो गृहस्थ इन्हें सदगुरुदेव जी ओर गुरुदेव त्रिमूर्ति जी की कृपा तले कर रहे हैं तो हमें कम से कम साधना काल में अपनी मनः स्थिति वैसी ही रखना ही पड़ेगी तभी तो सफलता मिल पायेगी.

१३.ब्रह्मचर्य पालन यूं तो आवश्यक हैं पर जहाँ कहीं पर अनिवार्यता हो उसका द्रढ़ता से पालन करे , यदि कुछ देश काल परिश्थिति की समस्या हो तो गुरुदेव त्रिमूर्ति जी से मार्ग निर्देशन प्राप्त करे, वे तो पिता सामान हैं उनसे क्या छुपा हैं वह इस अम्दर्भ में भी आपको निर्देशित करेंगे ही.

१4. सदगुरुदेव जी ओर गुरुदेव त्रिमूर्ति जी ने कई बार यह तथ्य उद्घाटित किया हैं की अनेक प्रयासों के बाद भी सफलता नहीं मिल पा रही हो तो साधक को पर्यंत कर पूर्व जन्म कृत दोष निवारण दिक्ष ओर साधना सिद्धि दीक्षा प्राप्त कर न ही चाहिए.

15. जब कुछ प्रयासों के बादभी सफलता नहीं मिल पा रही होतो गुरुदेव त्रिमूर्ति जी के पास बिना हिचक जाये बताये आपको गुरुदेव आपको निर्देशित कंरेंगे ही .

****

यक्षिणी साधना जो मैंने सबसे पहली बार की ...

in 1987 i found the issue of mantra tantra vigyan mag issue in that one yakshini sadhana had been published by sadgurudevji “DIvyaangana swaran prabha yakshini sadhana” with very very simple procedure and sadgurudevji clearly mentioned that this sadhana is more useful than any lakshami sadhana all the benefit from any other yakshini sadhan like like she will be with you as a true friend and fulfill your mental and physical desire is also be there . to make a new mwnber

SECRETS OF YAKSHINI SADHANA

यक्षिणी साधना के अत्यंत दुर्लभ रहस्य

यक्षिणी साधना के लिए साधक का चिंतन क्या होना चाहिए ?

यक्षिणी साधना के लिए साधक का चिंतन क्या होना चाहिए ?

वस्तुतः सिर्फ यक्षिणी के लिए ही नहीं बल्कि प्रत्येक साधना के लिए साधक का चिंतन पूर्ण सात्विक होना ही चाहिए, जब एक सामान्य स्त्री भी आपको देखकर आपके मनोभाव का पता आपकी दृष्टि से लगा लेती है तो फिर अपार शक्ति संपन्न यक्षिणी भला क्यूँ कर आपके मनो भाव को नहीं समझ पाएंगी. शायद तुम्हे पता नहीं है की जैसा चिंतन हमारे मन में होता है तदनुरूप ही साधक के चारो और रहने वाला ओरा भी होते जाता है .भले ही सामान्य मानव अपनी सामान्य दृष्टि से उस ओरा को नहीं देख पाता हो पर जिनकी आकाश दृष्टि और दिव्य दृष्टिजाग्रत होती है ,उनसे ये सूक्ष्म परिवर्तन नहीं छुपाया जा सकता है. तामसिक भाव से युक्त होने पर साधक का ओरा गहरे धूसर वर्ण का ह जाता है और ये एक ऐसा रंग है जिससे निकलने वाली किरने दृश्य या अदृश्य रूप में मन को उच्चाटित ही करती हैं और ये किरणे अन्य रंगों की प्रभावी किरणों के मुकाबले कही ज्यादा तीव्र गति से संवेदन शील प्राणियों में असुरक्षा को पनपाती हैं ,जिसके कारण उस प्राणी, मानव या वर्ग को तुमसे असुरक्षा का अहसास होता है.ऐसे में वे कदापि उत्सुक नहीं होंगे तुम्हारे समक्ष आने के लिए.और यक्षिणी तो साक्षात् शक्ति का ही पूर्नंश होती हैं अतः उनसे आपके मन के सुक्ष्मतिसुक्ष्म परिवर्तन भी नहीं छुप

पाते. अतः साधक को मन के विकारों को दूर करके ही साधना पथ पर बढ़ना चाहिए,साधना का मूल उद्देश्य ही अपने मन को व्यर्थ के भ्रम जाल से मुक्त कर विकार रहित हो अपनी समस्त न्यूनता पर विजय पाकर मानसिक और आत्मिक रूप से स्वतंत्र होना है.

और बात सिर्फ यही नहीं है बल्कि आपका चिंतन एक प्रकार से मौन वार्ता ही है अर्थात शब्द जो की मुख से निकलते हैं और ईथर में परिवर्तित होकर सम्पूर्ण ब्रम्हांड के चक्कर लगाते हैं ठीक वैसे ही हमारे शरीर का प्रत्येक रोम छिद्र मुख ही है और हमारे मष्तिष्क या ह्रदय का सम्पूर्ण मन: चिंतन अन्तः ब्रम्हांड के साथ बाह्य ब्रम्हांड को प्रभावित करता ही है. और ये शक्ति ब्रम्हांडीय ही होती हैं, साधना के द्वारा हम अपनी कल्पना योग को साकार योग में परिवर्तित करता है, वो जिस रूप में अपने साधना इष्ट का ध्यान करता है उसी ध्यान का संगठित रूप भविष्य में हमारी साधना शक्ति से प्रत्यक्ष होता है.

मंत्र मात्र किसी शब्द विशेष का समूह नहीं होता है. बल्कि जब सद्गुरु अपने स्वयं के प्राणों से घर्षित कर शिष्य या साधक को मंत्र प्रदान करते हैं तो वो अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने वाला दिव्यास्त्र ही हो जाता है .हाँ ये सही है की साधक के प्रारब्ध के कारण उस पर एक प्रकार का आवरण आ जाता है जिससे साधक को मंत्र का प्रभाव कुछ समय तक दृष्टिगोचर नहीं हो पाता परन्तु जैसे जैसे साधक मंत्र जप में अपनी एकाग्रता और समय बढाता जाता है या उसका जप प्रगाढ़ होते जाता है वैसे वैसे वो आवरण शिथिल होते जाता है और अंत में पूरी तरह से नष्ट हो जाता और बाकी रह जाता है तो पूर्ण दैदीप्यमान मन्त्र जो साधक के मनोवांछित को प्रदान करने समर्थ होता है. इसीलिए कहा जाता है की जितना ज्यादा जप होगा उतना ज्यादा आप सफलता के नजदीक होते जाओगे ,है ना.....

जी बिलकुल.

पर जैसा मैंने कहा की चिंतन से तो ब्रम्हांड भी प्रभावित होता है तो भला तुम्हारा मन्त्र क्यों नहीं होगा. इसीलिए जिस साधक को सफलता चाहिए होती है उसे अपना चिंतन आत्मविश्वास से लबालब और पूर्ण सात्विक रखना चाहिए, यद् रखो जरा सा भी नकारात्मक विचार आपके पूरे किये कराये पर पानी फेर देता है ठीक वैसे ही जैसे दूध से भरे हुए पात्र को फाड़ने के लिए मात्र एक बूँद नीबू ही बहुत होता है.

आपके मन्त्र जो की ईथर के रूप में ब्रम्हांड के चक्कर लगाते हैं उन्ही के आकर्षण बल से ये शक्ति आबद्ध होकर खिची चली आती है, चिंतन की नकारात्मकता उस आकर्षण बल को भी कमजोर कर देती है.जिससे वो शक्ति प्रकट नहीं हो पाती.अतः चिंतन के प्रभाव से सफलता अछूती नहीं रह सकती.इसलिए सकारात्मक चिंतन और सफलता का दृण संकल्प लेकर जब साधक साधना के लिए तत्पर होता है और मन पर संयम रखते हुए साधना पथ पर आगे बढ़ता है तो उसको सफलता मिलती ही है.

साधना में स्थिरता का क्या महत्व है ?

साधना के प्रारंभ में नए साधक उत्तेजित अवस्था में रहते हैं. जिससे उनकी श्वास-प्रश्वास की गति तीव्र होती है .और एक बात भली भांति समझ लेना आवश्यक है की श्वांस की ये तीव्रता मन को भी स्थिर नहीं होने देती है अतः मन की एकाग्रता के बगैर साधना सही तरीके से न तो संभव हो सकती है और न ही उससे उचित परिणाम मिल सकते हैं.क्यूंकि विचलित मन साधना में व्यवधान उत्पन्न करता है और साधक साधना के लिए जिन ध्यान मन्त्रों की परिकल्पना कर अपने इष्ट की छवि की अपने मन में स्थापित करता है ,और यदि मन विचलित होगा तो वहाँ पर जिस छवि का निर्माण

हम करते हैं वो टूटती और जुड़ती रहती है.जब ये ध्यान बिम्ब ही स्थिर नहीं होगा तो सफलता कैसे मिल सकती है.इसलिए साधना के प्रारंभ में प्राणायाम का विधान होता है और अतः साधना के लिए हम जिस भी आसन जैसे की सिद्धासन ,सुखासन या पद्मासन में बैठते हैं तो मन्त्र जप के पूर्व अपनी सुविधा अनुसार आसन पर सीधा बैठ कर अपने हाथ के अंगूठे को तर्जनी से मिला कर ध्यान मुद्रा बना ली जाये और ऐसा दोनों हाथों से करके अपने घुटने पर रख लो, ऐसा करने से साधना के द्वारा निर्मित उर्जा बाह्य गमन नहीं कर पाती और इस दौरान मूलबंध का अभ्यास करना चाहिए. इस क्रिया को करने से धीरे धीरे शरीर स्थिर होने लगता है तथा आसन में साधक अधिक लंबे समय तक बैठ पाता है.और जब साधक स्थिर मन और आसन से मन्त्र जप की क्रिया करेगा तो उसकी प्रतिक्रिया में ये ब्रम्हांडीय शक्तिया सफलता का वरदान तो देंगी ही ना.

मन्त्र कैसे कार्य करता है ?

मन्त्र का चयन कभी भी ग्रन्थ देखकर नहीं किया जाना चाहिए बल्कि मंत्र की अपने गुरु से विधिवत प्राप्ति की जनि चाहिए अर्थात गुरु के चरणों में जाकर अपने अनुकूल मन्त्र प्राप्ति की याचना करनी चाहिए.तब गुरु रिपु,सार्थक और और स्व प्राणों से घर्षित मंत्र साधक की सफलता के लिए अपने आशीर्वाद के साथ प्रदान करते हैं.अधिकांश साधक इस भय से की न जाने हम जो साधना कर रहे हैं उसे जानकर गुरुदेव हमारे बारे में क्या सोचेंगे अपने गुरु से साधना और मन्त्र के बारे में कोई बात नहीं करते हैं ,पर आप खुद ही सोचो की उस परब्रम्ह गुरु सत्ता से भला क्या छुपाया जा सकता है ,और आपको सफलता प्रदान कौन करेगा ??? वही गुरु ना. तब सफलतादायक मन्त्र भी तो आप उन्ही से प्राप्त कर पाओगे ,उनके श्रीमुख से मन्त्र की मूल ध्वनि और उसका आरोह अवरोह भी आप को भली भांति समझ में आ जायेगा. यदि किसी मजबूरी वश उनके श्रीचरणों में जा पाए तब उनके द्वारा निर्देशित या लिखित मन्त्र की साधना उनसे पूर्ण विनम्रभाव से मानसिक आज्ञा लेकर ही करना चाहिए.और यदि इसी मध्य आपको गुरुधाम जाने का अवसर प्राप्त हो जाये तो उनसे मिलकर अपना जप मन्त्र बता दे ताकि यदि उच्चारण में या मन्त्र में कोई मात्र या वर्ण दोष हो या गलती से वो आपके शत्रुकुल का हो तो गुरु उसका परिहार कर सके.

ये शत्रुकुल क्या है ?

अष्टादश सिद्ध विद्याओं को छोड़कर अन्य देवी देवताओं के मन्त्र ग्रहण में काफी विचार करना पड़ता है,शास्त्रों में इसके लिए कई प्रावधान और नियम बताये गए हैं जैसे की क्या मन्त्र देव अपने कुल का है,उसकी राशि और अपनी राशि में क्या सम्बन्ध है,उसका नक्षत्र क्या है.तथा जो मंत्र हम जप करने जा रहे हैं वो किस तत्व को प्रतिनिधित्व करता है ,वो तत्व हमारे नामांक तत्व का मित्र है, शत्रु है या तठस्थ है.और ये सारी क्रिया अत्यंत जटिल है.क्यूंकि यदि गलती से भी साधक शत्रु मंत्र का चयन कर लेता है तो मंत्र देव अपनी प्रतिकूलता से साधक को परेशां कर देते हैं. इसलिए इतने लफड़ों में न पड़कर सबसे अच्छा यही है की साधक गुरु मुख से ही मन्त्र की प्राप्ति करे या उनके द्वारा निर्देशित मन्त्र की साधना करे. क्यूंकि उसमे ऐसा कोई भय नहीं होता है.

मैंने सुना है की मन्त्र का पुरश्चरण करना पड़ता है, तभी सफलता मिलती है.ये पुरश्चरण क्या है ?

गुरु के द्वारा निर्दिष्ट जप संख्या को क्रम विशेष से निर्धारित अवधि में पूर्ण करना ही पुरश्चरण कहलाता है.तथा इस अवधि में साधक को संयमित जीवन यापन करना पड़ता है .इन दिवसों में वो सामाजिक कार्यों से दूरी बनाये रखता है.

पुरश्चरण के पांच अंग होते हैं-

जप-इसमें मंत्र के देवी या देवता का विधिवत पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन किया जाता है,इन उपचारों के अतिरिक्त देवता पूजन का विशेष क्रम तांत्रिक साधना में किया जाता है.

भूमि शोधन-साधना कक्ष के स्थान का पूजन भूमि शोधन कहलाता है.द्वार देवताओं का पूजन कर धरती को अर्घ्य प्रदान करे,फिर आसान शोधन मंत्र से भूमि पर पुष्प,अक्षत आदि अर्पित कर आसान बिछाए और उस पर बैठे.

देह शोधन-साधक प्राणायाम संपन्न करता है,फिर भूत शुद्धि,मातृकाओं से न्यास, अपने इष्ट मन्त्र आर ऋष्यादिन्यास,करन्यास आदि संपन्न करने से साधक का शरीर शुद्ध हो जाता है .

द्रव्यदिशोधन-साधक की साधना का अनिवार्य अस्त्र होती है उसकी साधना सामग्री,इसमें साधना में प्रायोजित सभी सामग्री जैसे, यन्त्र, माला,पुष्प,दीप,धुप,वस्त्र आदि सभी सामग्री आ जाती है.इनका पूर्ण रूपेण मन्त्रों केर द्वारा शोधन किया जाता है तत्पश्चात आगे की क्रिया की जनि चाहिए.(द्रव्यशोधन एक अनिवार्य और लंबी साधनात्मक क्रिया है जिसका पूर्ण साधनात्मक विवरण इसी पत्रिका में अन्यत्र दिया जा रहा है)

माला पूर्ण रूपेण संस्कारित होना चाहिए ,असंस्कृत माला से जप करने पर सफलता तो मिलती नहीं उलटे मानसिक तनाव की अप देवताओं के द्वारा प्राप्ति होती है वो भी मुफ्त में.यदि जप काल में साधक अखंड दीपक प्रज्वलित कर ले तो कही ज्यादा अनुकूल रहता है.और यदि ऐसा न हो सके तो कम से कम जप काल में दीपक न बुझने पाए ऐसी व्यवस्था कर लेनी चाहिए.

होम-नित्य प्रति के जप का दशांश हवन नित्य यदि कर दिया जाये तो उचित होता है ,कई व्यक्ति हवन के बदले दशांश जप कर लेते हैं , पर मेरे मतानुसार हवन करना कही ज्यादा अनुकूल और लाभदायक होता है.क्योंकि हवन करने से मंत्र दीप्त होता है और उसमे विशेष चैतन्यता आती है.

तर्पण-हवन करने के बाद बड़े से ताम्बे के बर्तन में या किसी सरोवर में हवन की मात्र का दशांश तर्पण करे. बर्तन को अष्टगंध,कपूर ,दूर्वा आदि मिश्रित जल से पूरित कर दे और जो भी देवता या देवी हो उसका नाम लेकर 'तर्पयामि नमः' कह कर जल अर्पित करें.

मार्जन-तर्पण के बाद उसकी दशांश संख्या से सरोवर में खड़े होकर अपने सिर पर दूर्वा द्वारा कुम्भ मुद्रा से देवता का नाम लेकर "अभिषिन्चामि नमः' कहकर जल का अभिषेक करें.

उसी दिवस या अंतिम दिवस ब्राम्हण भोज और कुमारी भोज का आयोजन करे.

तत् पश्चात अपनी साधना की पूर्णता प्राप्ति के लिए गुरु के श्री चरणों में प्रार्थना ज्ञापित करे. यदि कोई इस प्रकार का क्रम साधना में अपनाता है तो उसे निश्चय ही अनुकूलता मिलती ही है.

किन स्थानों पर साधना करने से यक्षिणी साधना में शीघ्र सफलता मिलती है?

सिद्धपीठों,गुरु गृह,नदी तट,पर्वत शिखर,एकांत वन ,विल्व या पीपल वृक्ष के नीचे, साधना करने से सफलता शीघ्र ही मिलती है. इस साधना को यदि कामाख्या पीठ के सौभाग्य कुंड या प्रांगण में संपन्न किया जाये या फिर अलकापुरी में या पचमढ़ी ,माउन्ट आबू ,हिडिम्बा मंदिर आदि स्थानों पर साधना करने से कही ज्यादा अनुकूलता मिलती है. यदि ऐसा संभव ना हो पाए तो घर में भी ये साधना की जा सकती है .पर साधना काल के मध्य कोई और उस कमरे में ना जाने

पाए.

इस साधना में सौभाग्य कुण्ड की क्या महत्ता है ?

यदि साधक यक्षिणी साधना के प्रारंभ में " **ॐमम सर्व मनोरथान पूर्णार्थे अस्य सौभाग्य वारिः पूर्णयक्षिणी सिद्धये नमः**" बोलकर २१ बार जल का तर्पण का माँ कामाख्या से करता है तो उसे सफलता की प्राप्ति होती ही है.ये क्रिया सिर्फ सौभाग्य कुण्ड में ही हो सकती है.इस प्रकार की साधनाओं में उस स्थल की अपनी अलग महत्ता और प्रभाव है.

साधक का आहार क्या होना चाहिए ?

साधक को यथा संभव अत्यधिक तिक्त या अत्यधिक मधुर भोजन ना करके शुद्ध सात्विक आहार का प्रयोग साधना काल में करना चाहिए यदि हविष्यान्न का प्रयोग किया जाये तो और बेहतर है. इसके अतिरिक्त भूमि शयन,पूर्ण मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन भी किया जाना चाहिए.

यक्षिणी साधना में मंत्रजाप के पूर्व क्या कोई विशेष क्रिया कर लेनी चाहिए?

यदि साधक यक्षिणी मंत्र के पहले **'स्त्रीं'** का जप अपने विशुद्ध चक्र पर ध्यान लगाकर और उसका स्पर्श करके १० बार कर ले तो उचित है.तथा मंत्र जप के पूर्व **'ओम'** का १० बार उच्चारण भी कर लेना चाहिए.प्रत्येक यक्षिणी साधना के पूर्व पूर्णिमा को पूर्ण पवित्र होकर शुद्ध चित्त से ११ दिनों तक महामृत्युंजय मंत्र का ५००० जप अवश्य संपन्न कर लेना चाहिए.और इसके साथ नित्य प्रति कुबेर मंत्र की भी तीन माला संपन्न करनी चाहिए.ये एक अनिवार्य कर्म है ,अधिकांश साधक साधना को सिर्फ खानापूर्ति मानते हैं,जितना जप बताया है ,उतना कर लिया और गिनती गिनते गए और कह दिया की भाई मैंने तो मंत्र जप किया था, न तो शुचिता –अशुचिता का ध्यान रखा और न ही अपने मनोभावो को और अपने दृष्टिकोण को परखा.बस मुह उठाकर कह दिया की भाई साधना-वाधना सब बकवास है.यक्षिणियों के अधिपति कुबेर होते हैं.और यदि आप अधिपति को ही प्रसन्न नहीं कर पाएंगे तो बगैर उनकी अनुमति के क्यूँकर कोई यक्षिणी आपका अभीष्ट साधने आएगी.इसी प्रकार भगवान मृत्युंजय की उपासना और मन्त्र से ही कुबेर सिद्धि का द्वार खुलता है और वे प्रसन्न होकर आपका मनोरथ पूर्ण करते हैं. यदि वर्ष में मात्र एक बार गुरु पूर्णिमा से अगली पूर्णिमा तक किसी भी विल्व-वृक्ष के नीचे बैठ कर भगवान शिव का पूर्ण षोडश उपचारों से पूजन और अभिषेक करने के बाद उत्तराभिमुख होकर मृत्युंजय मंत्र का जप रुद्राक्ष माला से करे.तत्पश्चात निम्न कुबेर-मन्त्र की ३ माला जप करे –

ॐयक्षराज नमस्तु शंकरप्रिय बांधव,एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीम् कुरु ते नमः

ठीक इसी प्रकार से पूर्ण रूप से कुबेर साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए कुबेर की शक्ति कुबेर यक्षिणी मंत्र की भी एक माला नित्य करनी चाहिए ,वैसे कुबेर यक्षिणी को प्रत्यक्ष करने और उनका अनुग्रह प्राप्त करने का अपना एक विशेष विधान होता है परन्तु अन्य यक्षिणियों की साधना और कुबेर साधना में सफलता प्राप्ति के निमित्त भी इस साधना के मंत्र की १ माला कुबेर मन्त्र के साथ होनी ही चाहिए.इसके प्रभाव स्वरुप जहाँ आर्थिक अनुकूलता प्राप्त होती है वही यक्षिणी के पूर्ण साहचर्य की प्राप्ति हेतु कुबेर देव की कृपा भी मिलती है-

ॐकुबेर यक्षिण्यै धन धान्य स्वामिन्यै धन धान्य समृद्धि में देहि दापय स्वाहा

इसके बाद मूल यक्षिणी साधना प्रारंभ करना चाहिए ,और हो सके तो नित्य कुमारी पूजन करना चाहिए.

यक्षिणी कितने प्रकार की होती हैं,और इनके कितने प्रकार होते हैं ?

यक्षिणी के कई वर्ग होते हैं,ये अलग अलग पांच तत्वों से सम्बंधित होती हैं और इनमे उसी तत्व विशेष के अनुसार शक्ति होती हैं.जैसे कोई रसायन क्षेत्र का ज्ञान देती है तो कोई निधि दर्शन और प्राप्ति का सामर्थ्य प्रदान करती है,कोई अतीन्द्रिय लोक का ज्ञान देती है तो कोई पत्नी सुख देती है, किसी के सहयोग से रस्सिद्धि की प्राप्ति होती है तो कोई प्रेम के साथ अतुलनिय संपदा प्रदान करती है. इसी प्रकार विभिन्न वनस्पतियों में भी इनका वास होता है,जैसे-

बिल्व यक्षिणी

निर्गुण्डी यक्षिणी

कुश यक्षिणी

आम्र यक्षिणी

सहदेवी यक्षिणी

पिप्पल यक्षिणी

तुलसी यक्षिणी

आदि पर जब भी इन यक्षिणियों की साधना की जाये तो सम्बंधित वनस्पति के आस पास ही की जानी चाहिए , वैसे बसंत ऋतू और श्रावण मास इनकी साधनाओं के लिए अधिक उपयुक्त होता है ,क्योंकि इस काल में सम्पूर्ण प्रकृति में मानो आपकी सहयोगी हो जाती है. परन्तु ये भी ध्यान रखने योग्य है की जो वनस्पति जिस काल में विकसित होती हैं उसी ऋतू विशेष में उस वनस्पति से सम्बंधित यक्षिणी की साधना करनी चाहिए. उपरोक्त वानस्पतिक यक्षिणियों की शक्ति भी भिन्न भिन्न होती है, जैसे कोई ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री होती है तो कोई अशुभ का निवारण करती है, कोई विद्या प्रदान करती है तो कोई वाक् सिद्धि और राज्य सुख प्रदान करती है.पूर्ण सफलता के लिए प्रायः सभी यक्षिणियों की कम से कम एक माह तक तो साधना करनी ही चाहिए.

क्या मृत्युंजय अभिषेक की भी कोई गोपनीय पद्धति है?

हाँ अवश्य है,यक्षिणी साधना में सफलता के लिए **'लाकिनीश मृत्युंजय'** की उपासना व अभिषेक किया जाता है.क्यूंकि इनका निवास मणिपूर चक्र में होता है और ये स्थान अग्नि और अमृत दोनों का ही होता है अतः इनका अभिषेक करने से अग्नि की आकर्षण शक्ति आपमें तेज की वृद्धि कर देती है और निसृत अमृत आपको जरा रोगों से मुक्त कर कायाकल्प करता है,और यही तेज व पौरुष बल यक्षिणी को आपकी और खीचता है.इसके लिए पारद शिवलिंग के ऊपर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूर्ण विनम्र भाव से अक्षत अर्पित करे.

ॐपरम कल्याणाय नमः

ॐविश्वभावनाय नमः,पार्वतीनाथाय,उमाकान्ताय ,विश्वात्मनाय,अविचिन्ताय,गुणाय,निर्गुणाय,धर्माय,

ज्ञानमक्षाय,सर्वयोगिनाय,कालरुपाय,त्रैलोक्य रक्षणाय,गोलोकघातकाय,चन्डेशाय,सद्योजाताय,देवाय,शूल धारिणे, कालान्ताय,कान्ताय,चैतन्याय,कुलात्मकाय,कौलाय,चन्द्रशेखराय,उमानाथाय,योगीन्द्राय,शर्वाय,सर्वपूज्याय,ध्यानस्थाय, गुणात्मनाय,पार्वतीप्राणनाथाय,परमात्मनाय.

उपरोक्त नामो के पहले ॐतथा बाद में नमः लगाकर अक्षत अर्पित करे. इसके बाद मृत्युंजय मंत्र का जप करते हुए कच्चे दूध और जल के मिश्रण से अभिषेक करे.मृत्युंजय मंत्र सदगुरुदेव की पत्रिका में कई बार प्रकाशित हुआ है.

सर्व सामग्री को उत्कीलन करने का क्या विधान है ?

पूजा या साधना में प्रयुक्त सामग्री जैसे,यंत्र,माला,पुष्प,फूल,फल आदि लगभग सभी सभी सामग्रियों का नितांत शुद्ध होना आवश्यक है.यदि इनमे से कोई भी सामग्री में जरा सी भी वैचारिक या स्पर्श की वजह से अशुद्धता आ गयी तो फिर इनके प्रयोग से साधना में कोई लाभ नहीं होता.हम साधना के निमित्त बाजार से पुष्प,फल इत्यादि लेते हैं,अब जिनसे आपने लिया है वो किस शारीरिक या मानसिक स्थिति में थे किसे पता,उन्होंने शंका निवारण के पश्चात हाथों को धोया था या नहीं और कैसी मनः स्थिति में उन्होंने आपको सामग्री दी है,इसी प्रकार पूजा स्थल में यन्त्र माला इत्यादि रखे हैं और उसे घर के बच्चो या अन्य सदस्य ने उठा लिया या स्पर्श कर लिया तब भी उनकी प्राणशक्ति और शारीरिक मानसिक शुचिता से वे साधना सामग्री प्रभावित होंगी ही. रसोई से नैवेद्य बनकर साधना कक्ष में आते आते न जाने किसकी दृष्टि पद जाये या जब भोजन तैयार हो रहा था उस समय बनाने वाले का चिंतन कैसा था.यन्त्र के ऊपर कीट,पतंगे,चूहे,छिपकली आदि के चलने से भी यन्त्र माला इत्यादि दोषपूर्ण हो जाते हैं.अतः ऐसी स्थिति में उन्कपरिहार करने के लिए या उत्कीलन करने के लिए एक विशेष मंत्र का प्रयोग किया जाता है ,जिसे पहले सिद्ध करना अनिवार्य है.

निम्न मंत्र को पहले ५१ माला मंत्रजप करके सिद्ध कर लेना चाहिए,बाद में जब भी आप साधना हेतु सामग्रियों का प्रयोग करे तो इस मन्त्र को १०८ बार जप कर उससे जल को अभिमंत्रित कर सभी सामग्रियों पर छिड़क दे.

मन्त्र- **ॐह्लीं त्रिपुटि त्रिपुटि कठ कठ आभिचारिक-दोषं कीटपतंगादिस्पृष्टदोषं क्रियादिदूषितं हन हन नाशय नाशय शोषय शोषय हुं फट् स्वाहा.**

यक्षिणी साधना के अन्य गोपनीय तथ्य क्या है,जिनका प्रयोग करने से निश्चित सफलता मिल ही जाये ?

यक्षिणी साधना के मूल यंत्र के साथ दो सामग्रियों की और अनिवार्यता होती ही है-

अप्सरा यक्षिणी तंत्र प्रतीक

निश्चित यक्षिणी सायुज्य पारद गुटिका

इसके अतिरिक्त स्वयं के हाथो से या गुरु के द्वारा निर्मित यक्षिणी का चित्र या विग्रह भी पास में होना चाहिए ,इससे ध्यान में अनुकूलता मिलती है.यक्षिणी साधना में यक्षिणी कीलन की गोपनीय क्रिया भी की जाती है ,इस क्रिया में भोजपत्र या सफ़ेद कागज पर त्रिगंध से यक्षिणी का लघु चित्र या यन्त्र बनाया जाता है और उस चित्र के मध्य में मूल मंत्र लिखा जाता है. यदि आपने यन्ता का अंकन किया है यतो उसके मध्य में मंत्र नहीं लिखना है.अब उस चित्र के चारो और गोलाकार में मंत्र लिखना रहता है .उसका तरीका ये है की पहले मंत्र लिखा फिर मूल मंत्र का पहला अक्षर फिर मंत्र लिखा फिर दूसरा अक्षर इसी प्रकार मंत्र फिर अक्षर फिर मन्त्र फिर अक्षर और अंत में फिर मंत्र लिखा जाता है ,circle

वृत्त या गोलाकार रूप में और ये क्रिया साधना के प्रारंभ में की जाती है तथा मंत्र लिखते समय जब आप मंत्र के अक्षरों को लिखते हो तो उस अक्षर पर २१ बार मूल मंत्र को जप कर अनामिका अंगुली का स्पर्श करना चाहिए ,ये क्रम अंतिम अक्षर तक रहता है .ये क्रिया कीलन कहलाती है और इस क्रिया के द्वारा यक्षिणी को साधक अपने मन्त्रों से कीलित या बांध लेता है.और यक्षिणी को प्रत्यक्ष होने और सिद्धि देने के लिए बाध्य होना पड़ता है. ये क्रिया और आगे का पूर्ण जप वीर भाव से ही होना चाहिए वो भी क्रोध मुद्रा में. इसके अतिरिक्त निश्चित यक्षिणी सायुज्य पारद गुटिका को प्राप्त कर उस पर भी मूल मंत्र की ५ माला कर लेना चाहिए जिससे वो गुटिका उस यक्षिणी विशेष से सम्बंधित हो जायेगी.इस गुटिका पर आप अलग अलग कई यक्षिणियों की साधना कर सकते हैं. इसी प्रकार ध्यान के बाद साधना के पूर्व यक्षिणी का आवाहन करने, उन्हें आसन देने ,उन्हें आसान पर बैठने और उनके सान्निध्य के लिए,उन्हें ह्रदय में स्थापित करने के लिए , उनका पूजन करने के लिए तथा जप के उपरांत उनका विसर्जन करने के लिए भी कुछ विशेष क्रिया की जाती है जिनका वर्णन नीचे किया जा रहा है.

इसी प्रकार कुछ मूल मंत्र के अतिरिक्त कुछ विशेष मन्त्रों और मुद्राओं की भी अनिवार्यता होती है.**(मुद्राओं के चित्र तो आपको ग्रुप के फाइल सेक्सन में मिल जायेंगे,क्योंकि अभी वेब साईट का कार्य चल रहा है इसलिए उसे कामाख्या कार्य शाला के बाद अपलोड कर दिया जायेगा)**

यक्षिणी मुद्रा- क्रोधान्कुशी मुद्रा-जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व को ही आकर्षित किया जा सकता है.

इस मुद्रा का प्रयोग करके निम्न मंत्र से यक्षिणी का आवाहन करे.

ॐह्रीं आगच्छागच्छ अमुक यक्षिणी स्वाहा.

आवाहन के बाद सम्मुखिकरण मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए निम्न मंत्र को उच्चारित करे-

ॐमहा यक्षिणी मैथुन प्रिये स्वाहा.

फिर सान्निध्य करण मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए –

ॐकामभोगेश्वरी स्वाहा

मंत्र का उच्चारण कर आसन प्रदान करे.इसके बाद दोनों हाथ की मुट्ठी एक साथ बांध कर अपने वक्षस्थल पर रखे और

ॐह्रीं हृदयाय नमः

का उच्चारण करे .फिर प्रमुखी मुद्रा अर्थात दोनों हाथ की मुट्ठी बांध कर तर्जनी और मध्यमा अंगुली को फैलाये तथा निम्न मंत्र से यक्षिणी का गंध,पुष्प,धुप,दीप,नैवेद्य आदि से पूजन करे –

ॐसर्व मनोहारिणी स्वाहा.

सम्पूर्ण जप के पश्चात पुनः आवाहन मुद्रा का ही प्रयोग करते हुए बाये को बाहर की और हिलाते हुए निम्न मंत्र का प्रयोग कर विसर्जन करे, याद रखे आवाहन में दाये अंगूठे को बाहर से अंदर हिलाते हैं और विसर्जन में बाये अंगूठे को अंदर से बाहर .

ॐह्रीं गच्छ गच्छ अमुक यक्षिणी पुनरागमनाय स्वाहा

यदि इन क्रियाओं का प्रयोग करने पर भी इन यक्षिणियों का साहचर्य न प्राप्त हो तब क्या करना चाहिए?

वैसे ऐसा संभव नहीं होता है की इन क्रियाओं का प्रयोग किया जाये और आपका मनोरथ सिद्ध न हो ,यदि आपको उपरोक्त मुद्राओं का ज्ञान न हो पा रहा हो तो भी तंत्र रहस्यम केसेट्स में बताई गयी पांच मुद्राओं का १०-१० सेकेंड प्रदर्शन करने से भी अनुकूलता मिलती है .यथा दंड,मत्स्य,शंख,अभय और ह्रदय मुद्रा.

उपरोक्त मन्त्र के प्रभाव से जप और पुरश्चरण अवधि पूर्ण होने पर भी यदि हाथ धर्मिता के करण ये शक्तियां सामने नहीं आ रही हो तो –

ॐबंध बंध हन हन अमुकी हुं मंत्र का ८००० बार जप करे तथा २१ माला ॐसर्वसिद्धियोगेश्वरी हुं फट मन्त्र की जप करें ,इससे निश्चय ही सफलता की प्राप्ति होगी ही. उपरोक्त सभी क्रियाएँ गोपनीय व दुर्लभ हैं. इनका प्रयोग निश्चित ही कालानुसार करना चाहिए.

****

FOR YAKSHINI SADHNA HOW A SADHAK’S MENTALITY SHOULD BE?

Without any second thought for every sadhnaa his heart and mind should be pure because if a common lady can read your thoughts by looking at into your eyes than it is thousand times easy for powerful YAKSHINI to read your thoughts at once. May be you do not know that according to your thoughts your surrounding release the same vibrations. Though a common man cannot see or catch these vibrations but one who has his AKASH DRISHTI and DIVYA DRISHTI activated can see all these micro changes. If Sadhak poccess TAMSIK BHAV than this aura get visible in smoky black color and this color directly or indirectly tempt the mind and as compare to other color rays these rays work faster and give birth the feeling of insecurity in the mind of a person, community from you. And in this situation they will not come closer to you and YAKSHINI is lively source of energy so you cannot hide these micro emotions of your mind from her. So for this reason before starting any sadhnaa Sadhak should make him free from all these temptations and sins so that he can feel himself mentally and spiritually free.

Not enough yet because your meditation is just like speechless conversation(MOUN VAARTA) just like the sounds which are changed into ether(upper air) after spoken move into the whole universe just like every pore(ROME SHIDRA) of our body is just like a mouth and our every concentrated thought cast effect on universe. By sadhnaa we change our imagination

APSARA AND YAKSHINI

अप्सरा और यक्षिणी - सफलता प्राप्ति के रहस्य

ध्यान की आवश्यकता क्यों हैं .क्या इससे भी अंतर पड़ता हैं ..

अधिंकाश गुरुभाइयों ने मुझे इ मेल करके अप्सरा ओर यक्षिणी साधना में सफलता कैसे प्राप्त की जाये ओर साथ ही साथ इन दोनों साधना में मुख्यतः क्या अंतर हैं ओर इस साधना को किस प्रकार से लिया जाना चाहिए इस पर भी जानने की उत्सुकता दिखलाई हैं

कोई भी साधना चाहे वह सामान्य या उग्र हो वह इन बात पर निर्भर करती हैं की किस पद्धति से ओर किस प्रकार से उसे संपन्न किया जा रहा हैं.

संयतः तीन प्रकार से कोई भी साधना की जा सकती हैं ओर उस साधना से संबंधित देवी /देवता किये गए प्रकार के अनुसार ही प्रत्यक्ष होते हैं .

सात्विक ध्यान

राजसिक ध्यान

तामसिक ध्यान ..

इनमें से तामसिक ध्यान का प्रयोग तो मात्र शमशान साधनाओ में होता हैं इस के कारण शक्ति , साधक की सभी उग्र इच्छाओं की पूर्ति तत्काल कर देती हैं, पर यह पद्धति हर साधक के लिए नहीं हैं , क्योंकि यह कठिन ओर दुष्कर तो हैं ही.

साथ हि साथ सदगुरुदेव जी ने पत्रिका ओर साधना शिविरों में केबल वही साधनाए दी हैं जो की आसानी से घर पर भी रहते हुए एक सामान्य साधक भी सम्पन्न कर सके .

जीवन के कुछ विरल क्षण होते हैं जब इन साधनाओ की जरुरत भी आन पड़े

एक तथ्य यहाँ पर बहुत ही स्पष्ठं हैं की जिस भी यक्षिणी या अप्सरा की साधना सदगुरुदेव जी द्वारा दी गयी हैं वह किसी भी प्रकार से साधक के लिए नुक्सान दायक नहीं हो सकती हैं. जो भी आवश्यक तथ्य होते हैं वह निश्चय ही बता दिए जाते हैं . अप्सरा देव वर्ग की गौर वर्ण की शक्ति हैं वही शक्ति का यक्षिणी स्वरुप ,यक्ष लोक से सम्पर्कित कुछ सावला पन सा लिए होती हैं .यदि एक सामान्य तरीके से कहा जाये तो यदि साधना काल में कुछ विशेष मुद्रा का प्रदर्शन न किया जाये ,अप्सरा का प्रत्यिक्षिकरण , कठिन सी क्रिया हैं .यदि कुबेर साधना ओर महा मृतुन्जय साधना संपन्न कर लेने के उपरान जब साधक इन ओर कदम बढ़ता हैं तब उसे अनुकूलता तो प्राप्त होतीहैं ही चाहे वह अप्सरा साधना हो या यक्षिणी साधना हो, साधना काल में काम भाव को बढ़ावा देना या ऐसी मानसिकता रहना सफलता प्राप्ति के अवसर कम करता हैं अप्सरा. ओर यक्षिणी साधना में यदि मुद्राओं का प्रयोग किया जाये तो साधक को उच्च स्तरीय सफ़लत अप्राप्त हो सकती हैं, आप इन मुद्राओं के बारे में मंत्र रहस्य या सीधे सदगुरुदेव जी से निवेदन करके प्राप्त किजा सकती हैं ओर किताबों में प्राप्त ज्ञान अपनी जगह हैं पर सदगुरुदेव जी के श्री मुख से उच्चरित ज्ञान के सामने वह तो नगण्य हैं ही.

इन मुद्राओं की जानकारी तो साधक को होना ही चाह्हिये , सदगुरुदेव जी ने एक एक मुद्रा के बारे में बताया था. यदि साधक अप्सरा या यक्षिणी निश्चित सिद्धि दीक्षा प्राप्त करके साधना करता हैंतो फिर इन मुद्राओं की प्रदर्शित करने की साधनाओ की कोई आवश्यकता नहीं हैं.

यदि हम इन दोनों के साथ कमला वत योग का निर्माण होया हैं जब आवाहन मुद्रा का प्रयोग का सीख ले ले तब अप्सरा का भी वशी कारण हो सकता अब आप सदगुरुदेव जी से से सीधे दीक्षा प्राप्त करोंगे, तभी आप सभी सदगुरुदेव जी को मन में धारण करते हुए पाए जाएँ सदगुरुदेव भगवान् तो आज भी हाँथ फैलाये हुए हमारिप्रतिक्षा रख ते हैं अगर अब भी हम न समझे तो दोष किसका हैं

YAKSHINI SADHANAYE

कुछ सरल परन्तु अचूक यक्षिणी साधनाएं
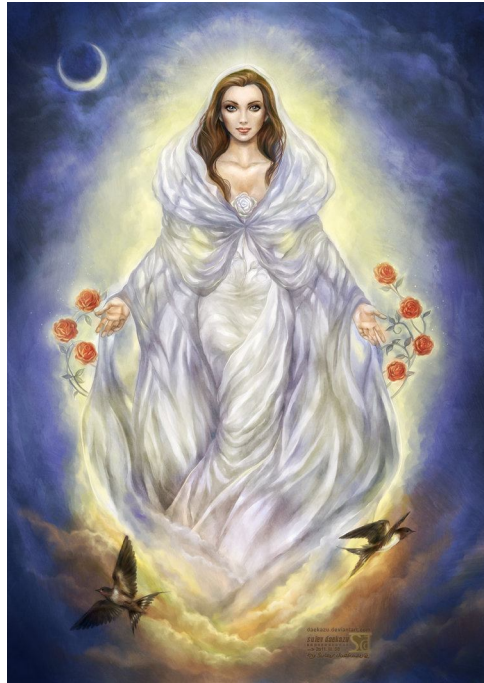
क्या अब भी आप इन्हें सिद्ध नहीं करना चाहेंगे

कुछ सरल परन्तु अचूक यक्षिणी साधनाएं

जीवन में धन के महत्त्व को कोई नहीं नकार सकता,फिर वो चाहे राजा हो,योगी हो,दरिद्र हो या फिर हम जैसे सामान्य मनुष्य. पर इसकी प्राप्ति तो सभी के लिए दुष्कर है और दुष्कर नहीं है तो सहज तो कदापि नहीं हो सकती सूर्य तंत्र के गोपनीय रहस्यों को समझने के लिए जब मैं सदगुरुदेव की आज्ञा से भटवाडी के भासकरेश्वर महादेव मंदिर के निकट के एकांत स्थल पर साधना कर रहा था, ये वही स्थान है जहाँ पर मार्तंड सूर्य ने भगवान शिव की हजार वर्षों तक तपस्या की थी की महाकाल शिव सदैव सदैव के लिए उनके दोनों नेत्रों में स्थापित हो जाये, और इसी स्थान पर भगवान शिव ने सूर्य को प्रत्यक्ष दर्शन देकर उनकी तपस्या के फलस्वरूप उनकी मनोकामना पूर्ण की थी.सूर्य तंत्र के अद्धयेताओं के लिए ये स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण है और यहाँ पर सूर्य तंत्र में सफलता प्राप्ति का प्रतिशत बढ़ जाता है. खैर वो एक पृथक विषय है जिसकी

कभी और चर्चा की जायेगी, उसी काल खंड में एक तेजस्वी सन्यासी श्री विनयानंद जी वहाँ पर नित्यभास्कर प्रयाग में स्नान के लिए आया करते थे,उनके चेहरे पर अद्भुत आकर्षण था.मैं भी नित्य सूर्या को अर्घ्य देने के लिए वह जाया करता था.धीरे धीरे वो मुझे देखने भी लगे और मेरे अभिवादन का प्रत्युत्तर भी देने लगे.

क्या तुम यहाँ कोई साधना कर रहे हो- उन्होंने पूछा.

जी-मैंने कहा और किस प्रयोजन से मैं ऐसा कर रहा था,वो भी उन्हें संक्षेप में बता दिया.

धीरे धीरे वार्तालाप का क्रम प्रारंभ हो गया,ऐसे ही एक दिन मैंने उनसे कहा की- क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ ?

पूछो....

आप जब भी मेरे समीप से गुजरते हैं तो गुलाब,चमेली और मोगरे की मिश्रित मंद खुशबु सी फ़ैल जाती है , जो की किसी इत्र की तो कदापि नहीं हो सकती.

तो तुम्हे क्या लगता है की किस चीज की गंध है !

जी,मैं जहाँ तक समझता हूँ की यदि कोई साधक यक्षिणी का पूर्ण साहचर्य प्राप्त कर लेता है तो प्रतीक रूप में वो अपनी गंध साधक को प्रदान कर देती है . पर ये किसी एक यक्षिणी की गंध नहीं है अपितु मुझे कई प्रतीकों का मिश्रण अनुभव हो रहा है-मैंने सकुचाते हुए कहा.

हाँ ये सत्य है,और ये भी सत्य है की ये किसी एक के साहचर्य का प्रतीक नहीं है.बल्कि अपने सद्गुरु श्रद्धेय किंकर स्वामी की आज्ञा से हिमालय की श्रृंखला के कई दुर्गम और गोपनीय स्थानों पिछले ३० वर्षों से यक्षिणियों की विभिन्न साधनाओं को परखने में ही मैंने अपने आपको लगा दिया है.जिनमे जो सफलता प्राप्त हुयी है बस ये उन्ही का स्मृति चिन्ह हैं.

क्या गृहस्थ जीवन के लिए अनुकूल और सरल कोई साधना नहीं है जिससे इन यक्षिणियों को घर में किया जा सके??

है क्यूँ नहीं, परन्तु बहुत सी साधनाओं के लिए जो वातावरण चाहिए होता है ,वो सामान्यतः घर पर तो उपलब्ध नहीं हो पाता है.घर का वातावरण यदि पूर्ण आध्यात्मिकता से युक्त हो,तो इन साधनाओं को घर पर भी एक अलग कक्ष में किया जा सकता है.और जब तक साधना चलती है तब तक उस कक्ष में किसी का भी प्रवेश नहीं होना चाहिए.

जी और साधना काल में साधक का दिनचर्या क्या होना चाहिए ?

सबसे पहले तो ये बात भली भांति समझने की आवश्यकता है की ये साधना उत्साह,पौरुष शक्ति और प्राणशक्ति से ही सिद्ध की जा सकती है. यदि साधक में अपने गुरु पर श्रृद्धा,साधना में विश्वास,प्रामाणिक पद्धति का ज्ञान,संयमित उत्साह,सिद्ध करने का दृण भाव,सकारात्मक चिंतन और विशुद्ध प्रेम का भाव है तो उसे ये साधना सिद्ध होती ही है.क्योंकि यक्षिणी वर्ग को विशुद्ध प्रेम अपनी और आकर्षित करता ही है.रही बात काया कल्प की तो जब ये किसी साधक को सिद्ध हो जाती हैं तो जीवन में शारीरिक,मानसिक और आर्थिक सुखों का भंडार खोल देती हैं. यदि साधक में इनके प्रति निष्ठा हो तो ये जीवन संगिनी या प्रेमिका बन कर सम्पूर्ण जीवन उसके साथ ही रह सकती हैं,और यदि साधक इनके साथ जीवन यापन न करके इनके गुणों को ही अपने जीवन साथी में चाहे तब भी,ये अपने साधक के प्रेम और साधना बल के वशीभूत साधक के जीवन साथी में अपने उन गुणों का ही प्रवेश करा देती हैं.और तब साधक का गृहस्थ जीवन पूरी तरह प्रेम माय और परस्पर एक दुसरे के लिए आजीवन प्रेमभाव से युक्त हो जाता है ,क्योंकि तब ये आकर्षण शारीरिक न होकर मानसिक हो जाता है. उनके

द्वारा बताई गयी साधना विधियों में से दो साधना विधियों को मैं यहाँ पर दे रहा हूँ,जिनमे से पहली जीवन में आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए है,इसके द्वारा शेयर बाजार,व्यापार और अन्य कई श्रेष्ट उपायों से आकस्मिक धन प्राप्ति का मार्ग और विधान स्वतः ही ज्ञात होने लगता है,जिससे धन प्राप्ति का मार्ग सरल हो जाता है.और दूसरी साधना पूरी तरह से विशुद्ध प्रेम को अपने जीवन में उतारने की. और ये सबसे अनिवार्य तत्व है क्योंकि आज ९२% वैवाहिक जीवन में प्रेम और आकर्षण जैसी कोई चिड़िया ही नहीं होती तो सुख क्या खाक होगा. पति और पत्नी ,प्रेमी-प्रेमिका ये सभी थोड़े ही समय में एक दुसरे के प्रति आकर्षण और प्रेम भाव खो देते हैं तब इन संबंधों को स्थायित्व कैसे मिलेगा.मगर इस साधना से साधक के जीवन में परस्पर दैहिक, मानसिक और आत्मिक आकर्षण की तीव्रता परस्पर पूरे जीवन ही रहती है.(इसी अंक में वे सभी गोपनीय विधान बताये गए हैं ,जिनके द्वारा पूर्ण सफलता की प्राप्ति होती ही है.अतः उन सूत्रों को यथा संभव प्रयोग करे जिससे सफलता की प्राप्ति होगी ही)

आकस्मिक धन प्रदाता स्वर्ण यक्षिणी साधना

इस साधना के लिए किसी भी शुक्रवार की रात्री को स्नान करके पीले वस्त्र धारण कर साधना कक्ष में पीलर आसन पर उत्तराभिमुख होकर बैठ जाये सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर गुरुधाम से प्राप्त 'एक मुखी मधु रूपेन रुद्राक्ष' की स्थापना करे.सामने घृत का दीपक प्रज्वलित कर लें. तत्पश्चात सदगुरुदेव,गणपति और दीपक का पूजन कर उनसे इस साधना में सफलता का आशीर्वाद देने की प्रार्थना करे.तत्पश्चात कुमकुम,धुप,सुगन्धित पुष्प और सुस्वादु नैवेद्य से रुद्राक्ष का पूजन कर यक्षिणी माला से २१ माला मंत्र जप करे ,ये क्रिया ११ दिनों तक संपन्न करना है. इसके पश्चात उस रुद्राक्ष को पीले कपडे में बांध कर पूजन स्थल पर ही रख दे और जब भी आपको आकस्मिक धन प्राप्ति की आवश्यकता हो तब, रात्रि में ५ माला मन्त्र जप कर सो जाये,रात में आपको स्वप्न में ही वो विधान आपको यक्षिणी बता देगी ,जिससे आपको निश्चित धन की प्राप्ति होगी. यदि आप नित्य एक माला मंत्र जप सुबह पूजन में करते हैं तब भी धनागमन के नए स्रोत खुलते चले जाते हैं.

मन्त्र-**ऐं स्वर्णयक्षिणी मम कार्य सिद्धिं करीं प्रत्यक्षं सिद्धिं स्वर्ण वर्षा ऐं ऐं नमः**

पूर्ण प्रेम सुख प्राप्ति हेतु प्रमदा साधना

इस साधना को भी शुक्रवार से ही प्रारंभ किया जाता है ,साधक किसी एकांत वन में या कक्ष में अर्ध रात्रि मो स्नान कर लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर उत्तराभिमुख होकरबैठ जाये और मंत्र जप में सफलता का संकल्प ले ,पूर्ण गुरु पूजन और गणपति पूजन करे और उनसे साधना हेतु आज्ञा व सफलता प्राप्ति की प्रार्थना करेऔर ध्यान करे-

ध्यान- **केयूर मुख्याभरणाभिरमाम्,वराभये संदधतीम् कराभ्यां.**

संक्रन्दनादयामर सेव्यपादाम,सत्कांचनाभाम् प्रमदाम् भजामि.

सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा हुआ हो और उस पर पूर्ण यक्षिणी सायुज्य पारद गुटिका की स्थापना कर उसे स्नान करवाकर ,अक्षत,पुष्प,धुप,दीप तथा नैवेद्य से पूजन करे .

फिर न्यास करे-

१.शक्ति ऋषये नमः शिरसि ,गायत्री छंदसे नमः मुखे,प्रमदा देवतायै नमः हृदये,विनियोगाय नमः सर्वांगे.

२.ह्रां अंगुष्ठाभ्याम् नमः,ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,ह्रूम् मध्यमाभ्याम् नमः,ह्रै: अनामिकाभ्याम् नमः,ह्रौम् कनिष्ठिकाभ्यां नमः,ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः.

३.ह्रां हृदयाय नमः,ह्रीं शिरसे स्वाहा,ह्रूम् शिखायै वषट्,ह्रै: कवचाय हूं,ह्रौम् नेत्रत्रयाय वौषट,ह्रः अस्त्राय फट.

मन्त्र- **ह्रीं प्रमदे स्वाहा**

यदि मात्र देवी के गुणों को आप अपने जीवन साथी में उतरना चाहते हैं तो उपरोक्त मन्त्र की २१ माला नित्य करनी है १४ दिनों तक.इससे आपको मनोवांछित प्रेम की भी प्राप्ति होगी ,पर आपको भी उतनी ही ईमानदारी बरतनी होगी.और यदि आप इस शक्ति का ही साहचर्य और प्रत्याल्शिकरण चाहे हैं तो इसी मन्त्र का पूर्ण पुरश्चरण नियमों का पालन कर ६ लाख मन्त्र जप करना होगा.इसके लिए निर्जन वन में जाकर दिन में तथा रात्रि में नित्य १० हजार मंत्र करना होगा,जप का दशांश हवन घी और खीर से करे.तब निश्चय ही प्रमदा देवी प्रत्यक्ष होकर साधक का अभीष्ट पूरा करती है.आवशकता पड़ने पर ११ माला जप करने से वो आपका कार्य कर देंगी.

उपरोक्त दोनों साधनाओं का मुझे भी व्यक्तिगत अनुभव है,अतः आप निश्चिन्त होकर इसे प्रयोग करके देखे.यदि पूर्ण नियमों का पालन किया गया तो अवश्य ही सफलता मिलेगी.

****

Some easy but very accurate Yakshini sadhnas are not denied the importance of money in life,then its abt any king, or Yogi, or any poor, or common persons like us.But its quiet difficult to achieve it and if not difficult then nor easy also. Isn't it?

To understand the secrets of Surya Tantra, with permission of revered sadgurudev I was pursuing my sadhna at a lonely place nearby Bhaatwadi's Bhaskareshwar mahadev mandir.U know this is that temple were martand surya perform his persistence for thousand years for that Mahakal shiv must be established in his both eyes.And on the same place Lord shiva appeared infront of Surya and fulfilled his wish.This place is very sacred and significant for Surya tantra seekers as the success rate increases if surya tantra are erformed at this holy place.

Well that's altogether a different matter on which we ll disscuss later on.On the same timeperiod one saint was always used to come for bath in that bhaskar prayag.His face was astonishingly attractive and glowy.I also used to visit that place for offering Arghya to surya devta in early

ASTROLOGY

क्या साधना जगत में इनका भी महत्व हैं ...

जन्मकुंडली और साधना में सफलता के योग

संपूर्ण ब्रह्माण्ड १२ राशियों और २७ नक्षत्रों में विभाजित है , और हमारी जन्म कुंडली को भी उसी काल पुरुष का ही रूप मान कर १२ भागो में विभक्त किया गया है और इन्ही भागो में जिन्हें स्थान या भाव भी कहा जाता है, में ये नौ ग्रह स्थित हो कर अपना प्रभाव दिखाते हैं. प्रत्येक भाव में जो भी राशि होती है उस राशि का स्वामी भावेश कहलाता है . इन भावों में ग्रहों की स्थिति ही तो जीवन के ऐसे ऐसे खेल दिखाती है की बस पूछो मत ....

और इन खेलों का पता हमें चलता कहाँ से हैं ..... हाँ भाई उसी लग्न स्थान से जो की जातक या पृथ्वी का प्रतीक है जन्म कुंडली में , और जहाँ से खड़ा होकर जातक देख सकता है भिन्न भिन्न स्थानों पर अवस्थित ग्रहों का प्रभाव . याद रखिये जन्मकुंडली की सत्यता और शुद्धता का निर्धारण गर्भ कुंडली या बीज कुंडली के द्वारा होता हैं अन्यथा सामान्य कुंडलियाँ तो मात्र दिल को बहलाने के ही काम आती हैं जिनके द्वारा ज्योतिष के अधिकांश सिद्धांत अनुमान मात्र ही रह जाते हैं ..... कारण साफ़ है क्योंकि जन्म समय की सत्यता कैसे की जाये , कैसे सही जन्म समय का निर्धारण किया जाये .... ये अत्यंत ही दुष्कर कार्य है. अब जब जन्म समय ही शुद्ध नहीं होगा तो उस समय पर आधारित जन्मकुंडली से भला सही फल कथन कैसे किया जा सकता है . तब तो आपके द्वारा किया गया फलित मात्र

अनुमान ही तो रह जायेगा ना.

यदि सही जन्म कुंडली हो तो फल कथन भी सत्य होगा और सत्य होगा जीवन के प्रत्येक पक्षों का दिग्दर्शन भी . (चित्र में जनम कुंडली में जो भाव क्रमाक दिए गए हैं ,ये बदलते नहीं हैं ये स्थाई हैं , हाँ ये जरूर हैं की ,ज्योतिष की गणित के हिसाब से इन भाव में आने वाले अंक बदल जाते हैं. (जनम के समय के अनुसार).अब आप पचम और नवम भाव देख सकते हैं,आप अपनी कुडली में lagna भाव स्थान पर क्या अंक लिखा हैं उन्हें देख ले, आप अपनी लग्न जान गए हैं.प्रिय मित्र यदि १ लिखा हैं तो मेष हैं, २ लिखा हैं तो वृषभ ,कृपया लिस्ट के अनुसार देख ले.)
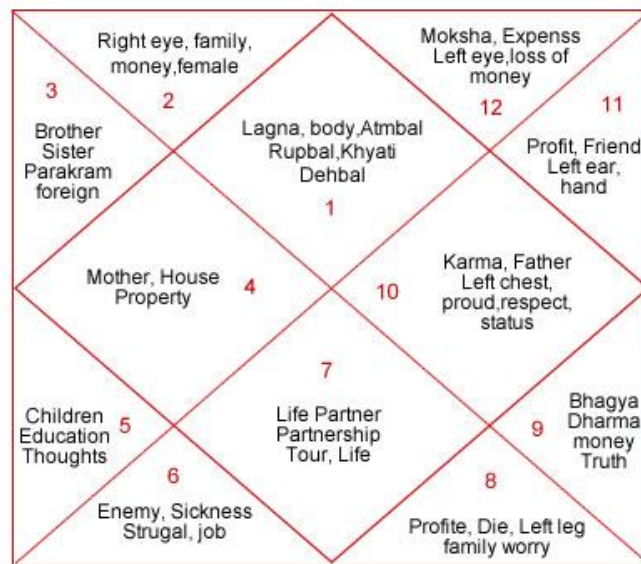
इस लेख का आशय मात्र जातक की कुंडली के साधना पक्षों का अध्यन करना ही है , जिससे ये जाना जा सकता है की किस ग्रह स्थिति से कैसी साधना और किस पद्धति में सफलता मिलती है , इसकी जानकारी मात्र हो जाये. ये सूत्र सद्गुरुदेव द्वारा प्रदान किये गए हैं . जो की साधक को अपनी कुंडली देख कर सही पद्धति का निर्धारण करना सिखाते हैं(याद रखिये ये निर्धारण स्वयं के द्वारा का है क्यूंकि यदि हम गुरु के चरणों में उपस्थित होकर प्रार्थना करते हैं तो वो बिना किसी कुंडली के भी आपको उस पद्धति से परिचित करा देते हैं).

पिछले किसी लेख में मैंने आपको पंचम और नवम भाव से इष्ट का निर्धारण बताया था , आज हम कई अनछुए और नवीन सूत्रों के द्वारा अपने आध्यात्मिक जीवन का अध्यन करेंगे. तो शुरुआत करते हैं जन्म लग्न द्वारा इष्ट के निर्धारण

से ......

1. मेष लग्न – सूर्य,दत्तात्रेय , गणेश
2. वृषभ- कुलदेव ,शनि
3. मिथुन-कुलदेव , कुबेर
4. कर्क- शिव, गणेश
5. सिंह- सूर्य
6. कन्या- कुलदेव
7. तुला- कुलदेवी
8. वृश्चिक- गणेश
9. धनु- सूर्य ,गणेश
10. मकर - कुबेर,हनुमंत,कुलदेव,शनि
11. कुम्भ- शनि, कुलदेवी,हनुमान
12. मीन- दत्तात्रेय,शिव,गणेश

यदि जन्मकुंडली में बलि ग्रह हो........
सूर्य तो व्यक्ति शक्ति उपासना कर अभीष्ट पाता है,
चंद्र हो तो तामसी साधनों में रूचि रखता है,
मंगल हो शिव उपासना
बुध हो तो तंत्र साधना में
गुरु हो तो साकार ब्रह्मोपासना में
शुक्र हो तो मंत्र साधना में
शनि हो तो मन्त्र तंत्र में निष्णात व विख्यात
इसी प्रकार.............
प्रथम भाव या चंद्रमा पर शनि की दृष्टि हो तो जातक सफल साधक होता है.
चंद्रमा नवम भाव में किसी भी ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो व्यक्ति श्रेष्ट सन्यासी होता है.
दशम भाव का स्वामी सातवे घर में हो तो तांत्रिक साधना में सफलता मिलती है
नवमेश यदि बलवान होकर गुरु या शुक्र के साथ हो तो सफलता मिलती ही है.
दशमेश दो शुभ ग्रहों के मध्य हो तब भी सफलता प्राप्त होती है .
यदि सभी ग्रह चंद्रमा और ब्रहस्पति के मध्य हो तो तंत्र के बजाय मंत्र साधना ज्यादा अनुकूल रहती है .
केन्द्र या त्रिकोण में सभी ग्रह हो तो प्रयत्न करने पर सफलता मिलती ही है.
गुरु, मंगल और बुध का सम्बन्ध बनता हो तो सफलता मिलती है .

शुक्र व बुध नवम भाव में हो तो ब्रह्म साक्षात्कार होता है.
सूर्य उच्च का होकर लग्न के स्वामी के साथ हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ साधक होता है .
लग्न के स्वामी पर गुरु की दृष्टि हो तो मन्त्र मर्मज्ञ होता है.
दशम भाव का स्वामी दशम में ही हो तो साकार साधनों में सफलता मिलती है.
दशमेश शनि के साथ हो तो तामसी साधनों में सफलता मिलती है.
राहु अष्टम का हो तो व्यक्ति अद्भुत व गोपनीय तंत्र में प्रयत्नपूर्वक सफलता पा सकता है.
पंचम भाव से सूर्य का सम्बन्ध बन रहा हो तो शक्ति साधना में सफलता मिलती है.
नवम भाव में मंगल का सम्बन्ध तो शिवाराधक होकर सफलता पाता है.
नवम में शनि स्वराशि स्थित हो तो वृद्धावस्था में व्यक्ति प्रसिद्द सन्यासी बनता है.

पर में यहाँ एक बात आपके सामने रखना चाहूँगा ,एक कहानी के माध्यम से, सत्य घटना हैं,दतिया के आदरणीय पूज्य स्वामीजी महाराज का एक शिष्य उनके पास आया और कहा की वह कई साल से छिन्नमस्ता साधना कर रहा हैं पर सफलता उसे नहीं मिल रही हैं, उसे जबाब मिला माँ बगलामुखी की साधना करो, साधक को एक ही रात में जो अनुभव हुए उससे वह तो हिल गया ,अगले दिन स्वामी जी से कारण पूछने पर की क्यों सालो साल छिन्नमस्ता माँ की साधना से फल नहीं मिला, यहाँ एक दिन में ही माँ बल्गामुखी से मिल गया, स्वामी जी ने कहा, बेटा तेरा अकाउंट tranfer कर दिया हैं और कुछ नहीं, साधक के फिर से पूछने पर उन्होंने कहा की माँ तो एक ही हैं, वास्तव में बेटा तू अपने कुल (घर) में चल रही छिन्नमस्ता साधना को करता आया हैं, परन्तु पिछेले कई जन्मो के उसके संस्कार माँ बगलामुखी के थे. इसी कारन उन्होंने उसके द्वारा किये गए जप को बल्गामुखी माँ के जप में बदल दिया. अब आप लोग समझे ,की सदगुरुदेव की क्या आवश्यकता होती हैं और क्यों .

यहाँ तक की इस ब्लॉग के एक लेखक को पूज्य सदगुरुदेव जी ने माँ छिन्नमस्ता की साधन बताए थी, परन्तु उनसे वोह पत्र में लिखी बात भूल गए ,और वह माँ तारा की साधना करते रहे, कई वर्ष के बाद उन्हें वह पत्र मिला, अपनी गलती समझ कर उन्होंने सदगुरुदेव से बात की, परन्तु जबाब आया की माँ तारा की साधन ही करते रहो,बदलने की जरूरत नहीं हैं. वोह ये बात समझ नहीं पाए की पहले तो सदगुरुदेव ने कुछ और बोला था, अब क्यों नहीं बदल सकते हैं, कई वर्षो के बाद उन्हें ये ज्ञात हुए की दस महाविद्या वास्तव में मूल रूप से तीन महाविद्या हैं और माँ छिन्नमस्ता ,का माँ तारा में ही समहिती करण माना जाता हैं.

तो अवलोकन कीजिये अपनी कुंडली का और देखिये क्या कहती है आपकी कुंडली .

SECRETS OF CHOUSATH YOGINI

चौसठ योगिनी रहस्य -मेरे जीवन का सुनहरा पन्ना

क्या यह भी संभव हैं ....

Chousath yogini rahasya-mere jeevan ka sunhara panna

अर्ध रात्रि का समय था और आकाश में चतुर्दशी का चंद्रमा अपनी चांदनी को बिखेर रहा था,सामने नर्मदा का जल कल-कल की ध्वनि के साथ बह रहा था,और ठंडी हवा बहते पानी को छू कर शीतलता का अनुभव दे रहा था,हम भेडाघाट के तट पर बैठकर आपस में वार्ता कर रहे थे.कई दिन हो गए थे मुझे यहाँ आये हुए.नित्य तंत्र के नवीन रहस्यों का उद्घाटन होना आम बात थी. नित्य रात्रि को हम भिन्न भिन्न घाटो पर बैठकर तंत्र की चर्चा करते और मध्य रात्रि और ब्रम्ह मुहूर्त में साधना का अभ्यास करता.मेरे मन की विविध उलझनों को सुलझाने का दायित्व उन्ही दोनों अग्रजों ने जो ले रखा था.पारितोष भाई और अवधूती माँ का साहचर्य जो मुझे प्राप्त था.

भाई, ये चौसठ योगिनी मंदिर का क्या रहस्य है ?

अरे भाई, जब माँ यहाँ पर उपस्थित है तो भला मैं कैसे कुछ कह सकता हूँ.आप माँ से ही इस विषय की जानकारी लीजिए ,उन्होंने सदगुरुदेव के निर्देशन में यहाँ के कई गुप्त रहस्यों को आत्मसात किया है.

हाँ हाँ क्यूँ नहीं,निश्चय ही इस रहस्य को तो प्रत्येक साधक को समझना ही चाहिए,साधना की पूर्णता योगिनियों की कृपा के बगैर.अगम तंत्र ६४ भागो में विभाजित है अर्थात ६४ तंत्रों की प्रधानता हैं और माँ आदिशक्ति की सहचरी उनके ये ६४ शक्तियां ही उन तंत्रों को की स्वामिनी होती है.ये योगिनी ही उन तंत्रों की मूल शक्ति होती है और जब साधक

अपने साधना बल से इनका साहचर्य प्राप्त कर लेता है तो उसे वो तंत्र और उसकी शक्ति भी प्राप्त हो जाती तब साधक इनके सहयोग जगत से वैश्वानर और अगोचर सत्ता के ऐसी ऐसे रहस्यों को ज्ञात कर लेता है,जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती.

माँ क्या ये साधना सहज रूप से की जा सकती है? मैंने पूछा.

नहीं मेरे बच्चे इन साधनों को कभी भी हलके में नहीं लिया जा सकता,जिनमे प्राणशक्ति की कमी हो वो तो इस साधना की शुरुआत भी नहीं कर पाते हैं ,जैसे ही साधक इन्हें आवाहन का मानस बनाता है वैसे ही,इनकी सहचरी उपशक्तियां व्यवधान उत्पन्न करने लगती है.घृणा और जुगुप्सा के भाव को ये अति संवेदनशील बनाकर तीव्र कर देते हैं और अंतर्मन में दबा हुआ भय तीव्र होकर बाह्यजगत में दृष्टिगोचर होने लगता है.और साधक का शरीर इस तीव्रता को बर्दाश्त नहीं कर पाता है फलस्वरूप साधक का शरीर फट ही जाता है.इसलिए बिना गुरु के उचित निर्देशन के ऐसी साधनाओं में हाथ नहीं डालना चाहिए.

प्राणशक्ति की तीव्रता के कारण इनके मानसिक शक्ति के विद्युतीय परिपथ के संपर्क में आने वाला साधक मानसिक विक्षिप्तता को ही पाता है,सफलता के लिए तो अद्भुत प्राणबल होना पहली और अनिवार्य शर्त है.और ये भी तय है की इनकी सहायता जिसे प्राप्त हो जाती है परा और अपरा जगत के विविध रहस्यों की परते उसके लिए उघड़ने लगती हैं.

क्या इस स्थान से ,इस योगिनी मंदिर से इनका कोई लेना देना भी होता है ?

हाँ बिलकुल होता है,वास्तव में जहाँ जहाँ इस प्रकार के या नाथ पीठ होते हैं (अर्थात जहाँ उन्होंने साधना की हो) वहां आकाश में निर्गत द्वार होगा ही.लोकिक रूप से तो ये तारों का घना झुण्ड होता है परन्तु वो उनके लोक विशेष में जाने का और उस तंत्र के उद्गम स्थल तक पहुचने का मार्ग होता है.जिसके द्वारा ये साधक उस लोक तक की यात्रा उन शक्तियों के सहयोग से आसानी से कर लेते हैं जो की उन्हें उन योगिनियों से प्राप्त होती है.उस शक्ति के कारण उनका सूक्ष्म शरीर सहजता से वासना शरीर या कारण शरीर से शिथिल होकर सरलता से विभक्त हो जाता है तब,काल,स्थान और दूरी का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है. पंचतत्वों की सघनता भी इन क्षेत्रों में होती है.

इनका स्थापन यहाँ कैसे किया गया होगा और उसका उद्देश्य क्या था ?

देखो इस मंदिर की स्थापना कलचुरी नरेश के शासन काल में हुयी है. अक्सर अघोर पंथ, शाक्त या पाशुपत संप्रदाय के असीम शक्ति संपन्न साधक ही इनका पूर्ण रूप से आवाहन कर इनकी स्थापना कर सकते हैं.पाशुपत संप्रदाय के संस्थापक नकुलीश के समय अघोर साधनाओं का प्रभुत्व चल रहा था और कलचुरी नरेश कृष्णराव,शंकरगण और बुद्धराज,ये तीनों अघोर पद्धति से भगवान अघोरेश्वर महाकाल की उपासना करते थे. अपने सम्प्रदाय को आगे विस्तार देने के लिए ही ये सभी आदि शक्ति और शिवलिंग तथा शिव प्रतिमा को अलग अलग जगह फैलाते थे.ये सभी योगिनी मंदिर जो मध्य प्रदेश,छत्तीसगढ़ तथा अन्य प्रान्तों में स्थापित होते न सिर्फ वास्तु कला की दृष्टि से बल्कि भयंकर साधना की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहे हैं.इन मंदिरों में जिन योगिनियों का स्थापन किया जाता है वो पूर्ण तामसिक भाव से की जाती है तथा बलि आदि कृत्य भी संपन्न किये जाते हैं ,उसके फलस्वरूप उस अगोचर तामसिक लोक की प्रधान शक्ति का सीधा संपर्क यहाँ से स्थापित हो जाता है.उसी के प्रभाव से ये समय समय पर किन्ही खास क्षणों में ये प्रतिमाये जीवंत हो जाती है और जब मन्त्र बल से इन्हें कोई साधक जीवंत कर दे तो ये सामूहिक रूप से अपनी उस प्रधान शक्ति को भी आवाहित कर साधक को प्रचंड शक्तियों का स्वामी बना देती हैं. और ऐसा जब भी होता है प्रकृति में कोई न कोई विकृति आ ही जाती है.

तो क्या इन्हें सामान्य रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता है ?

किया जा सकता है ,परन्तु सिर्फ सद्गुरु ही इनके आवाहन मन्त्रों की भयंकरता को सौम्यता में परिवर्तित कर सकते हैं, और उनके द्वारा प्रदत्त ध्यान तामसिक न होकर राजसिक और ज्यादातर सात्विक भाव युक्त ही होते हैं.और सद्गुरु अपने तपबल से इनकी ज्यामितीय आकृति को उकेर कर यन्त्र का रूप देकर इन सभी योगिनियों का स्थापन उसमे कर देते हैं.

और एक महत्वपूर्ण तथ्य भी मैं बता देती हूँ की मूल योगिनी पीठ हमेशा इस मंदिर के ऊपर या नीचे स्थापित होते हैं ,जहाँ विग्रह की स्थापना न होकर मूल यन्त्र ही वेदिमय होता है.और यदि साधक इसके द्वार को खोलने का तरीका जान कर सिद्ध कर ले तो वहां पहुचने पर उसने जिस प्रकार का ध्यान किया है तदनुरूप ही उसे वह का वातावरण और शक्ति का प्रभाव अनुभव होता है.इस द्वार भेदन की क्रिया चतुवष्टि कल्प कहलाती है.

क्या मैं इसमें प्रवेश कर सकता हूँ ?

आज नहीं कल,क्योंकि कल पूर्णिमा है और पूर्णिमा को इनकी तीव्रता उतनी नहीं रहती है,इनकी तीव्रता अमावस्या और अँधेरी रातों में भयानक रूप से रहती है ,खास तौर पर दीपावली और सूर्य ग्रहण की रात्रि में. अतः नए साधक को इस अदृश्य लोक में प्रवेश प्रारंभ करने का उपक्रम पूर्णिमा से ही प्रारंभ करना चाहिए. उसके कुलदेवी के वर्ग की योगिनी साधक का सहयोग कर इसके अन्तः गर्भगृह में जाने का मार्ग प्रशस्त करती है.

उसके बाद दुसरे दिन हम तीनों ही एक विशेष मन्त्र के द्वारा उस अन्तः गर्भगृह में प्रविष्ट हुए,लंबा गलियारा पार कर हम गर्भ गृह तक पहुचे, वो एक लंबा चौड़ा कक्ष था,जहा एक अद्भुत ही उर्जा प्रवाहित हो रही थी तथा दीवारों से मंद मंद प्रकाश फूट रहा था जिससे वह रौशनी बिखरी हुयी थी. कक्ष के मध्य में ही एक काले पत्थर पर उत्कीर्ण यन्त्र वेदी पर स्थापित था जो ४ गुना ४ फुट के पत्थर पर अंकित था.वहां माँ और भाई ने विधिवत पूजन किया तथा मैंने भी उनका अनुसरण किया,वे जिन प्रणाम मन्त्रों को बोल रहे थे वे ऊपर स्थापित विग्रहों के नाम से मुझे भिन्न प्रतीत हुए,उस समय तो मैं शांत रहा पर बाद में जब मैंने भाई से उसकी वजह पूछी तो उन्होंने बताया की एक ही देवी के अलग अलग नाम सम्प्रदाय विशेष में होता है ,अतः जैसी परंपरा होगी साधक उन्ही स्वरूपों का ध्यान करता है ,परन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता,पानी को जल कह देने से तत्व तो नहीं बदल जाता. खैर अर्चना के मध्य ही उस यन्त्र के विभिन्न भागों से प्रथक प्रथक धूम्र रुपी किरणे लगी जो अंततः आखिर में रक्त वस्त्रों से सुसज्जित एक २५-२८ वर्षीय कन्या में परिवर्तित हो गयी.जो लाल पत्थरों की चूडियाँ और हार पहने हुए थी.जिनसे प्रकाश उत्सर्जित हो रहा था .उनके मुख से आशीष वचन निकल रहे थे,थोड़े समय बाद वो पुनः किरणों के रूप में विखंडित होकर यन्त्र में ही विलीन हो गयी.अद्भुत था वो दृश्य और यदि साधक उस कल्प का प्रयोग सिद्ध कर ले तो बहुतेरे अध्यात्मिक और भौतिक लाभ की प्राप्ति उसे होती ही है.परन्तु गुरु आज्ञा के बगैर ऐसा कल्प नहीं दिया जा सकता,क्यूंकि उसको सिद्ध करने का विधान जटिल है और उसमे बहुत सावधानी की जरुरत भी है परन्तु यदि साधक उन योगिनियों का प्रतिक चिन्ह चतुवाष्टि यन्त्र की प्राप्ति गुरु धाम से करके उस पर रविवार रात्रि से ११ दिन तक नित्य निम्न नाम के आगे 'ओम' और पीछे नमः लगाकर , जैसे-**ओम काली नित्या सिद्धमाता नमः**. लाल कुमकुम से रंगे हुए अखंडित अक्षत अर्पित करे और इसके बाद "**ओम चतुवष्टिः योगिनी मम मनोवांछित पूरय पूरय नमः**" मंत्र की २१ माला संपन्न करे उसके बाद पुनः निम्न नामो के साथ अक्षत अर्पित करें. थोड़े ही समय में उसे अद्भुत चमत्कार अपने नित्य जीवन में दिखाई देने लगेंगे.

Kali Nitya Siddhamata, Kapalini Nagalakshmi,Kula Devi Svarnadeha,Kurukulla Rasanatha,Virodhini Vilasini,Vipracitta Rakta Priya,Ugra Rakta Bhoga Rupa,Ugraprabha Sukranatha,Dipa Muktih Rakta Deha,Nila Bhukti Rakta Sparsha,Ghana MahaJagadamba,Balaka Kama Sevita,Matra Devi Atma Vidya,Mudra Poorna Rajatkripa,Mita Tantra Kaula Diksha,Maha Kali Siddhesvari,Kameshvari Sarvashakti,Bhagamalini Tarini,Nityaklinna Tantraprita,Bherunda Tatva Uttama,Vahnivasini Sasini,Mahavajreshvari Rakta Devi,Shivaduti Adi Shakti,Tvarita Urdvaretada,Kulasundari Kamini,Nitya Jnana Svarupini,Nilapataka Siddhida,Vijaya Devi Vasuda,Sarvamangala Tantrada,Jvalamalini NaginiChitra Devi Rakta Puja,Lalita Kanya Sukrada,Dakini Madasalini,Rakini Papa Rasini,Lakini Sarvatantresi,Kakini Naganartaki,Sakini Mitrarupini,Hakini Manoharini,Tara Yoga Rakta Poorna,Shodashi Latika Devi,Bhuvaneshwari Mantrini,Chinnamasta Yoni Vega,Bhairavi Satya Sukrini,Dhumavati Kundalini,Bagla Muki Guru Moorthi,Matangi Kanta Yuvati,Kamala Sukla Samsthita,Prakriti Brahmandri Devi,Gayatri Nitya

MRITYUNJAYA ABHISHEK

अद्भुत रहस्य पहली बार

क्या मृत्युंजय अभिषेक की भी कोई गोपनीय पद्धति है?

हाँ अवश्य है,यक्षिणी साधना में सफलता के लिए **'लाकिनीश मृत्युंजय'** की उपासना व अभिषेक किया जाता है.क्यूंकि इनका निवास मणिपूर चक्र में होता है और ये स्थान अग्नि और अमृत दोनों का ही होता है अतः इनका अभिषेक करने से अग्नि की आकर्षण शक्ति आपमें तेज की वृद्धि कर देती है और निसृत अमृत आपको जरा रोगों से मुक्त कर कायाकल्प करता है,और यही तेज व पौरुष बल यक्षिणी को आपकी और खीचता है.इसके लिए पारद शिवलिंग के ऊपर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूर्ण विनम्र भाव से अक्षत अर्पित करे.

ॐपरम कल्याणाय नमः

ॐविश्वभावनाय नमः,पार्वतीनाथाय,उमाकान्ताय ,विश्वात्मनाय,अविचिन्ताय,गुणाय,निर्गुणाय,धर्माय, ज्ञानमक्षाय,सर्वयोगिनाय,कालरुपाय,त्रैलोक्य रक्षणाय,गोलोकघातकाय,चन्डेशाय,सद्योजाताय,देवाय,शूल धारिणे, कालान्ताय,कान्ताय,चैतन्याय,कुलात्मकाय,कौलाय,चन्द्रशेखराय,उमानाथाय,योगीन्द्राय,शर्वाय,सर्वपूज्याय,ध्यान स्थाय, गुणात्मनाय,पार्वतीप्राणनाथाय,परमात्मनाय.

उपरोक्त नामो के पहले ॐतथा बाद में नमः लगाकर अक्षत अर्पित करे. इसके बाद मृत्युंजय मंत्र का जप करते हुए कच्चे दूध और जल के मिश्रण से अभिषेक करे.मृत्युंजय मंत्र सदगुरुदेव की पत्रिका में कई बार प्रकाशित हुआ है.

सर्व सामग्री को उत्कीलन करने का क्या विधान है ?

पूजा या साधना में प्रयुक्त सामग्री जैसे,यंत्र,माला,पुष्प,फूल,फल आदि लगभग सभी सभी सामग्रियों का नितांत शुद्ध होना आवश्यक है.यदि इनमे से कोई भी सामग्री में जरा सी भी वैचारिक या स्पर्श की वजह से अशुद्धता आ गयी तो फिर इनके प्रयोग से साधना में कोई लाभ नहीं होता.हम साधना के निमित्त बाजार से पुष्प,फल इत्यादि लेते हैं,अब जिनसे आपने लिया है वो किस शारीरिक या मानसिक स्थिति में थे किसे पता,उन्होंने शंका निवारण के पश्चात हाथों को धोया था या नहीं और कैसी मनः स्थिति में उन्होंने आपको सामग्री दी है,इसी प्रकार पूजा स्थल में यन्त्र माला इत्यादि रखे हैं और उसे घर के बच्चो या अन्य सदस्य ने उठा लिया या स्पर्श कर लिया तब भी उनकी प्राणशक्ति और शारीरिक मानसिक शुचिता से वे साधना सामग्री प्रभावित होंगी ही. रसोई से नैवेद्य बनकर साधना कक्ष में आते आते न जाने किसकी दृष्टि पद जाये या जब भोजन तैयार हो रहा था उस समय बनाने वाले का चिंतन कैसा था.यन्त्र के ऊपर कीट,पतंगे,चूहे,छिपकली आदि के चलने से भी यन्त्र माला इत्यादि दोषपूर्ण हो जाते हैं.अतः ऐसी स्थिति में उन्कपरिहार करने के लिए या उत्कीलन करने के लिए एक विशेष मंत्र का प्रयोग किया जाता है ,जिसे पहले सिद्ध करना अनिवार्य है.

निम्न मंत्र को पहले ५१ माला मंत्रजप करके सिद्ध कर लेना चाहिए,बाद में जब भी आप साधना हेतु सामग्रियों का प्रयोग करे तो इस मन्त्र को १०८ बार जप कर उससे जल को अभिमंत्रित कर सभी सामग्रियों पर छिड़क दे.

मन्त्र- **ॐह्रीं त्रिपुटि त्रिपुटि कठ कठ आभिचारिक-दोषं कीटपतंगादिस्पृष्टदोषं क्रियादिदूषितं हन हन नाशय नाशय शोषय शोषय हुं फट् स्वाहा.**

****

Is their any secret process for doing 'Mrityunjay Abhishek'?

Yes of course, to get success in Yakshini sadhnas the ‘Lakineeshi Mrityunjay’ the worship and abhishek is done.because they resides at Manipur chakra.and this place consist both fire and amrut. So there abhishek gives u glow by fire’s attractive power and Pure amrut cleans ur body and keeps diseases away from u an rejunevate u totally.And the same charm and manliness attracts the yakshini towards u. For this purpose u must have parad shivling and then devote akshat(rice) on it withfull dedication.

OM PARAM KALYANAAY NAMAH

OM VISHVABHAVNAAYA NAMAH, PARVATEENAATHAAYA, UMAKAANTAAYA, VISHVAATMANAAYA, AVICHINTAAYA, GUNAAYA, NIRGUNAAYA, DHARMAAYA, GYAANAMKSHAAYA, SARVAYOGINAAYA, KAALRUPAAY, TRAILOKYAAY RAKSHANAAYA, GOLOKGHAATKAAYA, CHANDESHAAYA, SADYOJAATAAYA, DEVAAYA, SHULDHARINE, KALAANTAAYA, KAANTAAYA, CHAITANYAAYA, KULAATMAKAAYA, KAULAAYA, CHANDRASHEKHARAAYA, UMAANAATHAAYA,

SOOTA RAHASYAM PART- 4

सूत रहस्यम - 4

(पारद विज्ञानं तंत्र के अप्रकाशित , अप्राप्य गोपनीय ग्रन्थ की श्रृंखला का अगला भाग)

सूत रहस्यम- ब्रम्हाण्डीय ऊर्जा प्रादुर्भाव का रहस्य

ब्रम्हांडीय ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत सूर्य है,जिसमे जीवन कणों का संघटित रूप विद्यमान है . सामान्य नेत्रों से इन कणों को देख पाना संभव ही नहीं है.इन्ही कणों की उपस्थिति से ही तो हमारे शरीर में प्राणों का उचित रूप से प्रवाह हो पाता है. पर ये प्राणों का संचरण सिर्फ मानव शरीर में ही होता है ऐसा नहीं है ,जबकि पहले ही ये बता दिया गया है की सूर्य सम्पूर्ण ब्रम्हांडीय ऊर्जा का स्त्रोत है तो इसमें सब आ जाते हैं, फिर चाहे वो किसी भी वर्ग या योनी विशेष का ही क्यूँ न हो. वैज्ञानिक अध्यन से भी ये सिद्धांत प्रमाणित हो गया है.

ब्रम्हाण्डीय ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत ध्वनि ही है और ऊर्जा का परिवर्तन किस रूप में,कितने वेग से होगा और उसकी तीव्रता कितनी होगी,ये शब्द विशेष पर निर्भर करता है .सूर्य के भीतर भी निरंतर ध्वनि गुंजरित होती रहती है और ध्वनि के कम्पन्न से ही ऊर्जा का प्रस्फुटन होता रहता है , वैज्ञानिकों का भी ये कहना है की सूर्य में कई जगह पर काले धब्बे दिखाई देते हैं पर ये धब्बे और इनकी आकृति कोई निश्चित नहीं है. इसका प्रमुख कारण है ध्वनि का सभी क्षेत्रों में एक सामान कंपन का न होना, जैसे जैसे ध्वनि की तीव्रता मंद या तीव्र होती है वैसे वैसे ऊर्जा का उत्पादन भी मंद या तीव्र होते जाता है. और जहाँ जहाँ ऊर्जा का प्रस्फुटन मंद होता है वहाँ की दृश्यता अपेक्षाकृत हलकी दिखाई देती है जो की दूर से देखनेपर धब्बों का ही आभास देती है.

पर ये ध्वनि तरंगे हैं किस प्रकार की ????

वास्तव में ॐका नाद ही सम्पूर्ण ब्रम्हांड में व्याप्त है और उसी में सभी वर्ण मातृकाएँ समाहित हैं,वेदों में कहा भी गया है की

जब कुछ नहीं था तब ॐही था और जब कुछ नहीं होगा तब भी ॐही होगा.

तो क्या सूर्य में जो ॐका गुंजरन है उसे सुना जा सकता है और उस गुंजरन के फलस्वरूप जो प्राण दायिनी ऊर्जा मुक्त होती है उसे महसूस किया जा सकता की और देखा भी जा सकता है??

बिलकुल और इसके लिए हमें बहिर्गत सूर्य की यात्रा करने की कोई आवशयकता कदापि नहीं है, विज्ञानं को बाहर की यात्रा करने दो, यदि हमें प्रकृति के रहस्य को समझना है तो हमारी यात्रा अंतर की होनी चाहिए, बाहर की नहीं. वैसे भी शास्त्रों में कहा गया है की ...'यत् पिंडे तत् ब्रम्हांडे'

अर्थात जो भीतर है वही हमें बाहर दृष्टि गोचर होता है. अनहद नाद की यात्रा वैसे तो मूलाधार चक्र से ही प्रारंभ हो जाती है और उसकी मूल ध्वनि को अनाहत पर पूरी तरह सुना जा सकता है पर यहाँ पर बात उस ऊर्जा को देखने और महसूस करने की हो रही है तो, इसके लिए हमें अग्नि तत्व या अग्नि चक्र मणिपुर की सहायता लेनी पड़ेगी .

हमारे शरीर में यही ऐसा चक्र है जो सम्पूर्ण आंतरिक ऊष्मा और अग्नि का केंद्र है.एक सामान्य व्यक्ति भी यदि इस ऊर्जा की मात्रा को घटाना बढ़ाना चाहे तो वो भी यदि वीरासन में बैठकर मात्र १० मिनट तक **'रं'** बीजमंत्र का उच्चारण करे तो उसके शरीर का तापमान स्वयं ही बढ़ जाता है. पर यदि उस ऊर्जा को उत्पन्न होते देखना हो तो इसी चक्र का एक गोपनीय साधना क्रम है जिसे साधक को सम्पादित करना पड़ता है. और यदि साधक इस क्रम को अपने नित्य की क्रिया में करता रहता है तो वो कई गोपनीय रहस्यों को भली भांति हृदयंगम कर लेता है. इस क्रिया के फलस्वरूप वो उस ऊष्मा को शीतल रूप में भी रख सकता है और आवश्यकता पड़ने पर तीव्र भी कर लेता है ,जिससे साधक निर्जरा देह को प्राप्त कर लेता है. वस्तुतः ये पञ्च तत्वों में से एक अग्नि तत्व की ही साधना पद्धति है. और यदि इस तत्व पर साधक नियंत्रण कर ले तो इस ऊर्जा और अग्नि ऊष्मा के सहयोग से वो अमृत रुपी जीवन द्रव्य को संचयित कर सकता है .

ये कोई कपोल कल्पना नहीं है ,बल्कि लगभग हम सभी लोगो ने ये पढ़ा या सुना होगा की लंका नरेश रावण की नाभि में अमृत कुण्ड विद्यमान था जिसके कारण उनकी मृत्यु सहज नहीं थी.

सुना है न......

पर क्या वो अमृत कुण्ड जन्म से ही उनकी नाभि में था????

नहीं,वो जन्म से उनकी नाभि में नहीं था .....बल्कि उन्होंने साधना बल से उस कुण्ड को अपनी नाभि में स्थापित किया था. और ये रहस्य उन्हें 'रससिद्धिदा यक्षिणी' की साधना से प्राप्त हुआ था.इसी यक्षिणी ने उन्हें ऊर्जा विखंडन और अमृत संलयन के इस गोपनीय ब्रम्हाण्डीय विधान को बताया था.और ये मैं इस लिए नहीं कह रहा की ऐसा मैंने सुना है . ऐसा बिलकुल नहीं है ,बल्कि मैंने इस घटना क्रम को अपनी आँखों से देखा है .....मेरे प्रश्न के उत्तर स्वरुप मुझे अपने साधना बल से बंगाली माँ ने ये दृश्य पचमढ़ी के **'तत्वदिप्त आश्रम'** में दिखाया था, जो की शैव-शाक्त साधको का भव्य प्रशिक्षण स्थल है .खैर..... यहाँ पर हम बात उस गोपनीय क्रिया की कर रहे थे ...तो मैं बता दूँ की यक्षिणी वर्ग अपने आपमें शक्ति विशेष का प्रतिनिधित्व करती हैं. जैसे वट यक्षिणी जहाँ पर रस विज्ञानं के गुप्त सूत्रों से परिचित कराती है, मधु मेखला आकर्षण शक्ति से युक्त करती है, अच्युता मन्त्रों में सफलता देती है वैसे ही रस सिद्धिदा पारद और सूर्य तंत्र के अनबुझे रहस्यों को आपके सामने खोल देती है. सामान्य बुद्धि और बाह्य मन से इन रहस्यों की परतें तो कदापि नहीं खोली जा सकती हैं, परन्तु जब आपका मन से अतिमानवीयता युक्त शक्तियों का प्राण बल मिल जाता है तो उसके सहयोग से ये सब संभव हो ही जाता है. विगत पृष्ठों में कुछ अतिमहत्वपूर्ण साधना के उन पक्षों को हमने देने का प्रयास किया है जो सदगुरुदेव की असीम कृपा से

ही हम सभी के समक्ष उजागर हुआ है, और इन सूत्रों को शास्त्रों में भी नहीं दिया गया है , कंठ से कंठ तक की यात्रा से ही ये सूत्र गुरु से शिष्यों तक पहुचे हैं. अतः उन सूत्रों का यदि हम यक्षिणी साधना में प्रयोग करते हैं तो सफलता का प्रतिशत कही ज्यादा हो जाता है. उन्ही सूत्रों का प्रयोग साधक को प्रत्येक यक्षिणी साधना में करना चाहिए

SOOT RAHASYAM-BRAHMAANDIYAE OORJA PRADURBHAV KA RAHASYA

Sun is the main source of universal energy in which atoms, related to life, are presented in united form. With common eye it is not possible to see them. It is only due to these atoms our body gets life force energy in perfect manner. But this life force energy is not only for humans as said before that sun is a store house of energy for whole universe so in this wholeness everyone includes though from a particular sect (Werg) or biological order (Yoni). This principle is also proved by scientific researches as well.

Sound (Dhvani) is the main source of energy of universe but in which form this energy will change, velocity (Teevrta) and density (Veag) of this change is depend upon that special sound. Even in the center of sun all the time sound get produced and echoed (Kmpann) which give birth to this energy. According to the scientists in the sun at some places there are black spots which are visible but there counting and shape is not fixed. Its main reason is that echo (kmpann) produced by sounds is not equal at every place. As sound (Dhvani) speeds gets slower and faster production of energy also gets slower and faster. So where production of energy gets slow at that places visibility (dekh skne ki shmtaa) becomes lighter so from distance it looks like black spots.

But what types of these sound vibrations (Dhvani trangein) are????

Actually in this whole universe only one sound is presented i.e. “OM” which contain all alphabets (Vern) and vocabulary (Maatraayein). Even in Vedas it is said that when nothing was presented and when nothing will be presented only OM was existing and will be existed.

Now the question is whether the sound of OM which is echoed in sun can be heard or listened and due to this boom (Kmpann) the life force energy get produced can be seen and felt??

Ofcource and for this there is no need to visit the sun, let the science do this because if we want

SWARNA RAHASYAM PART- 4

स्वर्ण रहस्यम-4

निश्चित यक्षिणी सायुज्य गुटिका निर्माण

पारद प्राणशक्ति को तीव्रता के साथ आकर्षित कर लेता है ,और इसकी चंचल प्रकृति को जब मंत्रो,वनस्पतियों और रत्नों तथा धातुओं के योग से बद्ध किया जाता है तब ये बद्ध स्वरुप में आपके किसी भी अभीष्ट को पूर्ण करने की क्षमता रखता है. यक्षिणी साधना के लिए निश्चित यक्षिणी सायुज्य गुटिका एक अनिवार्य सामग्री है .ये गुटिका जिस किसी के भी पास होती है,यक्ष लोक से उसका संपर्क सरल हो जाता है.यदि साधक इसको सामने रख कर साधना करता है तो निश्चय ही उसे सफलता प्राप्त होती ही है.अभी तक इस गुटिका की निर्माण विधि को अत्यंत ही गुप्त रखा गया था परन्तु सदगुरुदेव ने अपने शिष्यों को हमेशा ही ज्ञान रुपी मशाल हाथ में थमाई है,अज्ञान के,भ्रम के अन्धकार को दूर करने के लिए. आज इन पन्नों पर मैं आपको वही कलेजे का टुकड़ा निकाल कर दे रहा हूँ ताकि मेरे गुरु भाई बहन उस सफलता को प्राप्त कर सके जो की उनका साधना के क्षेत्र में स्वप्न रही है.

१५ ग्राम अष्ट संस्कारित पारद लेकर उसमे १ रत्ती हीरक भस्म,२ ग्राम स्वर्ण का चूर्ण,३ ग्राम रजत चूर्ण दाल कर शिवलिंगी और पान के रस से खरल करे ,ये खरल की क्रिया अपने आसन पर बैठ कर की जानी चाहिए,खरल करने के साथ साथ रसायन सिद्धि मंत्र का भी जप किया जाना है.

ॐनमो नमो हरिहराय रसायन सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा

ऐसा ८ घंटे तक करने के बाद उस खरल पात्र में सेंधा नमक और गरम पानी डालकर खरल करे जिससे पानी काला होता जायेगा.तब उस पानी को बहार फेक दे ,ध्यान रखना कही पारद बाहर न गिर जाये और ये नमक मिश्रित पानी डालकर तब

तक खरल करे जब तक पानी काला आता रहे जब,पानी साफ़ आने लग जाये तब उस पारद को, जो की पिष्टी रूप में हो गया होगा को निकाल कर सूती कपडे से छान ले,कपडे में ठोस पारद बचा होगा जिसे निकाल कर गोली बना ले और ३ दिन के लिए शिवलिंगी के रस में रख दे ,जिससे वो कठोर हो जाये. तत्पश्चात इस गुटिका को शुक्रवार के दिन प्रातःकाल में श्वेत वस्त्र पर स्थापित कर ले और स्वयं भी श्वेत वस्त्र धारण कर पहले गुरु पूजन ,गणपति पूजन और दीपक पूजन करे, तथा गुरु मंत्र की २१ माला जप करे ,उस गुटिका के सामने घृत का दीपक स्थापित होना चाहिए.

सबसे पहले गुटिका का पंचोपचार से पूजन करे तत्पश्चात यक्षिणी का आवाहन निम्न मंत्र और मुद्रा से उस गुटिका में करे,याद रखिये की जिस यक्षिणी का आप आवाहन कर रहे हो अमुक की जगह उसी का नाम लेना है –

ॐआं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी एहि एहि संवोषट

इसके बाद यक्षिणी को उस गुटिका में आसन प्रदान करे,ये क्रिया अनामिका के द्वारा गुटिका को स्पर्श करते हुए करे ,इस मंत्र का ११ बार उच्चारण करना है.

ॐआं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी तिष्ट ठः ठः

इसके बाद निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण करते हुए अक्षत को उस गुटिका पर डाले.

ॐआं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी मम सन्निहिता भव भव वषट्

फिर निम्न मंत्र का उचाचरण करते हुए पंचोपचार से उस गुटिका का पूजन करे.

ॐआं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी जल अक्षत पुष्पादिकान् गृण्ह गृण्ह नमः

इसके बाद निम्न मन्त्र की २१ माला मंत्र जप यक्षिणी माला से करें, ये सम्पूर्ण क्रिया ३ दिनों तक करनी है.

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूम् ऐं श्रीं पद्मावती देव्यै अत्र अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ सर्व जीवानां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा

इसके बाद विसर्जनी मुद्रा से निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यक्षिणी का विसर्जन करे.

ॐआं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी स्वस्थानं गच्छ गच्छ जःजः

इस क्रम को पूर्ण करने पर एक तेजस्विता सी उस गुटिका में दृष्टिगोचर होती है और वो थोड़ी गर्म भी लगती है.इसका अर्थ ये है की अब उसमे यक्षिणी की प्राणश्चेतना का सयुज्यी करण हो गया है. इस गुटिका पर इसी पद्धति से किसी भी यक्षिणी की साधना की जा सकती है और यदि मात्र ये घर में भी रहे और नित्य इसके सामने पूजन हो तब भी ये आर्थिक अनुकूलता देती है और भविष्य की दुर्घटनाओं से बचाती है.

रजत कल्प –दो टोला श्वेत सोमल लेकर उस पर त्रिवर्नात्मक मंत्र(ॐ हुं ह्रीं) का जप १००८ बार करे और ठीक इसी प्रकार काली गाय के दूध पर भी इतनी बार ही मंत्र का जप करे,बाद में दौला यन्त्र से इस सोमल को उस दूध में पचित करे.जब दूध समाप्त हो जाये तो,सोमल को निक्कल कर गंगा जल से धकर उसके सामने ११००० बार मंत्र जप करें. फिर १० ग्राम ताम्बे को अग्नि में गला कर उसमे इस सोमल की २ रत्ती मात्र को मोम में लपेट कर दाल दे और चर्ख दे.सारा तम्बा चांदी में

Ayurved

आयुर्वेद और सौंदर्य समस्याओं का समाधान

Treatment of baldness- boil 250 gm of mustard oil in a tinned basin and continue putting in, by and by, a little quantity of henna leaves. When 90 gm of the afore- said leaves are thus burnt in the oil the same should be filtered through a cloth and stored well in bottle. Regular massage of the head with this oil for few months produces abundant hair on the bald head.

Herbs that prevents conjunctivitis- take any number of Gorakhmundi flowers and swallow them without the help of water and without chewing them. Thus taking one flower the user from troublesome conjunctivitis for one year, two for two yearand so on; that is my personal experience.

Herb for curing piles in a day – put 8 kg of fruit of Indrayan in the cauldron and ask the patient to stand on it and tread till be feels bitterness in his mouth . then ask the patient to lie down. After half an hour the patient will have a bad smelling motion and will get rid of this nasty disease for all time of come.

Herb of tighten the Breasts of women- The following recipe is quite simple and can be tried practically. Warm the leaves of the Dhatura plant moderately and tie them tightly on the breast. If this practice is continued for a few days the flagged breast become hard and protuberant and the woman looks as young without much trouble and expense.

Totaka Vigyan

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

Take a lemon, and apply sindoor on it. After that chanting the following mantra one should poke small metal pins into the lemon. Total 108 pins should be poked. Do not remove any pin after pocking. The process should be done on Tuesday evening.

Mantra: Hum hanumante rudratmkaay hum phat

After the process is completed place it in your worship place, whenever there is any suspicion of tantra badha, the mantra should be chanted 7 times while the lemon should be roamed around the head of the suspicious person and then one should drop it in the river. This way tantra badha is removed.

****

At the Friday night one should fill a small clay vessel with curd and prepare a lamp of the wheat flour. With these material one should go to smashana and there one should place that vessel after that light a lamp of oil which is prepared and turn back and say : lakshmi aave, daridrata ruke " and one should directly go to home. One should not turn back and see while returning home. This way prosperity is gained.

Before travelling if one fears of anything unknown then one should take some salt and mix it with water. After that the solution should be dropped on some stone with request to save from the unknown danger. This helps in vanishing all the unknown troubles

****

If one is not getting a desired level in the work place, do take a root of dhatoora and place it in worship place, then chant the following mantra 108 time after 10 pm on sunday night.

Klim ichhapuray namah

Do this for a week, appropriate result could be gain through divine grace of mahakali. After ritual the root should be dropped into river.

****

If some one has feelings of being trape and of unknown enemies, one should wear black cloths on the Ashtami of any month and prepare aasan of smashan bhasm, pray goddess kal ratri for protection and chant the following mantra 11 rounds with black hakeek rosary. direction should be north and the ritual is done on friday night.

Mantra : Aum namo kal ratri

The rosary, till the time remains around the neck, will protect you from all the dangers.
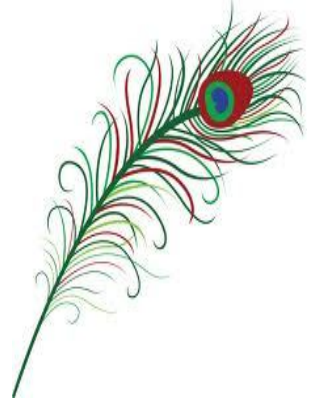
साबर तंत्र महाविशेषांक

Fifth Issue

July - 2011

Tantra kaumudi

Name of the Articles

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

SADGURUDEV - PRASANG

हाँ मैं तांत्रिक हूँ !

महर्षि व्यास के परम विद्वान पुत्र शुकदेव एक अवसर पर अपने पिता से कुछ आगे चलते हुए कहीं गोष्ठी में जा रहे थे और महर्षि व्यास अपनी आयु अधिक होने के कारण मन्द गति से गतिशील थे। आगे कुछ रूपवती अप्सराओं का एक दल सरोवर में जल क्रीड़ा करता हुआ किलोलें कर रहा था। शुकदेव उनके समीप से होकर निकल गए, किन्तु अप्सराओं के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। थोड़ी ही देर बाद जब महर्षि व्यास उस झुंड के समीप आए तो समस्त अप्सराओं में खलबली मच गयी और वे एक दूसरे को धक्का देती हुई वस्त्र पहिनने की हड़बड़ी में पड़ गयीं। यह देखकर महर्षि व्यास का क्रोध युक्त होना स्वाभाविक ही था, उन्होंने अप्सराओं को धिक्कारते हुए कहा कि जब मेरा युवा पुत्र तुम्हारे समीप से निकला तब तो तुम्हें कोई लज्जा नहीं आई और जब मैं वयोवृद्ध पुरूष तुम्हारे समीप से निकल रहा हूं तो तुम्हें इस प्रकार लज्जा व भय अनुभव हो रहा है। अन्य अप्सराएं तो चुप रहीं, किन्तु उनमें से एक अनुभवी व किंचित प्रौढ़ अप्सरा ने सहज उत्तर दिया - "महर्षि यही तो खेद है कि आप 'पुरूष' हैं। आपके पुत्र जब हमारे समीप से निकले तो वे आत्मवत् स्थिति में रहते हुए स्वयं में लीन थे, उन्हें भान ही नहीं कि हम कौन हैं और

क्या कर रही हैं इसी से हमें कोई लज्जा भी अनुभव नहीं हुई, किन्तु आपने कुछ दूर से देखा कि शायद स्त्रियां हैं, पास आकर पुनः आंखें मींचीं, किक्या ये निर्वस्त्र होकर स्नान कर रही हैं ! और आपकी आंखों के भाव से ही हमें लज्जा का अनुभव हुआ।''

यही कथा आज तंत्र के विषय में भी कही जा सकती है। जो आत्म-चक्षु से इसे देख रहा है उसके लिए कोई हड़बड़ाहट या विकृति नहीं, किन्तु शेष सभी की आंखों में एक चमक उतर आती है कि - क्या? क्या तंत्र? अर्थात् पंचमकार! अर्थात् मांस-मदिरा और मैथुन? यह तो घोर पाप है ! सीमित दृष्टि केवल पाप-पुण्य का विवेचन कर, अपने अन्दर की विकृतियों को थोड़ा गुदगुदा कर, एक खास नजरों से चटखारे लेकर तृप्त हो जाती है। पुनः पुनःवही लिखना पड़ता है कि नहीं, 'तंत्र का यह स्वरूप नहीं।' तंत्र का वास्तविक स्वचरूप तो कुछ और है, मांस का अर्थ कुछ और है, मदिरा का अर्थ कुछ और है तथा मैथुन का अर्थ शिव-शक्ति का मिलन है। अब समय आ गया है कि इस तथ्य का खुलासा कर ही दिया जाए और स्पष्ट कर दिया जाए कि वास्तव में तंत्र क्या है, तांत्रिक कौन है, 'पंचमकार क्या है, और उनका वास्तविक प्रयोग क्या है। जिस प्रकार से स्पष्ट शब्दों में मैंनें कहा कि हां! मैं तांत्रिक हूँ, उसी प्रकार दो टूक स्पष्ट शब्दों में कहता हूँ कि वास्तव में जो पंचमकार हैं वे वास्तविक हैं, उनका कोई दूसरा अर्थ है ही नहीं, वे उसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं जिस रूप में उनकी संज्ञा है। अश्लील या श्लील होना व्यक्ति-विशेष की दृष्टि होगी। तांत्रिक और तंत्र के वेत्ता की दृष्टि में वे केवल स्थितियां मात्र हैं, न श्लील न अश्लील, ठीक महर्षि शुकदेव की भांति।

मैंने प्रारम्भ में ही कहा कि मेरा यही परिचय है कि मैं तांत्रिक हूँ, जो पूर्ण भी है और अपूर्ण भी, क्योंकि यथार्थ रूप से एक विद्वान की दृष्टि में इससे अधिक परिचय की आवश्यकता ही नहीं, अतः यही पूर्ण परिचय है, किन्तु समाज की दृष्टि में यह अपूर्ण है, क्योंकि उसकी परिभाषाएं सीमित हैं, दृष्टि एकांगी है और सही कहा जाए तो लोलुप है। मैं इसी से समाज से कहना चाहूंगा कि मैं सौन्दर्यवान हूं, मैं रूपवान हूं, मैं करूणामय हूं, मैं आस्थावान हूं, मैं सृजन की क्षमता से युक्त हूं, मैं शिवमय हूं, मैं शक्तिमय हूं और यह सूची यहीं पर समाप्त नहीं होती, जिससे एक ही शब्द में पुनः कहना पड़ता है कि, मैं तांत्रिक हूं !
तंत्र जीवन का सौन्दर्य है, तंत्र एक दर्प है, तंत्र कोई भोग की लिजलिजाहट या भोग, मैथुन में डूबा विषय नहीं। यह तो सक्षम पुरूषों के जीवन की विषयवस्तु है और सक्षम पुरूष शब्द उच्चारित करते ही जो बिम्ब बनता है, जबकि सक्षम पुरूष तो वह है जो हृदय से नारी हो, सृजन की क्षमता से युक्त हो, पालन करने के आग्रह को अपने में समेटे हो, ममतामय हो, करूणामय हो, आस्थावान और तेज युक्त हो। अर्द्धनारीश्वर हो, भगवान शिव की करूणा और जगदम्बा की पालन-क्षमता समेटे हो, जिसकी एक आंख में क्रोध झलक रहा हो तो वहीं दूसरी आंख में प्रेम तैर रहा हो। विनष्ट कर देने की क्षमता रखता हो तो पुनः निर्मित कर देने का साहस भी समेटे हो। ऐसे ही व्यक्ति से जीवन की पूर्णता निर्मित होती है। ऐसे ही व्यक्ति के अंदर गुरुत्व समाहित हो सकता है। ऐसा ही व्यक्ति सकारात्मक रूप से कुछ प्राप्त कर सकता है।

सही अर्थों में देखें तो हम और आप प्रत्येक तांत्रिक ही तो हैं, अन्तर केवल तंत्र का है, प्रयुक्त किए जाने यंत्र का है। एक मिस्त्री अपने हाथ में छन्नी लेता है और मकान गढ़ देता है। एक लुहार अपने हाथ में हथौड़ी लेकर कोई ढांचा खड़ा कर देता है। कलाकार अपने हाथ मंे कूची लेकर चित्र बना देता है और लेखक कलम लेकर काव्य रच देता है। आसपास चारों ओर प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रचना में तल्लीन है ही। प्रत्येक ने एक "मद्य" का पान कर रखा है और अपने कार्य को पूर्णता देने में खुमारी में डूबा हुआ है। प्रत्येक ने एक 'मुद्रा' धारण कर रखी है। प्रत्येकने अपने मांस अर्थात् 'मत्स्य' की भांति गहरे जाकर तल्लीन है और एक सुखद रचना के आनन्द में मग्न है, जो कि सांसारिक भाषा में मैथुन के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? प्रत्येक पुरूष में एक स्त्री छिपी है और प्रत्येक स्त्री में एक पुरूष और वह आत्म रूप से उससे मिलने के प्रयास में संलग्न है ही। यही तंत्र भी कहता है, इतना ही तो तंत्र समझाने का आग्रेह करता है, किन्तु उसे पूर्वाग्रहों से भी अधिक दुराग्रह में बद्ध कर दिया गया है। यह केवल दमित वासनाएं और कुछ का कुछ खोजने की दबी-छिपी प्रवृत्ति का अंग नहीं तो और क्या कहा जा सकता है?

तंत्र ऊर्जा का एक विस्फोट है, सृजन विशेष का क्षण है और इस विस्फोट की चरम परिणति को स्त्री-पुरूष मिलन के क्षणों में परिभाषित करने के अतिरिक्त भला किन अर्थों में किया जा सकता है? यथार्थ तांत्रिक को तो एक स्त्री देह की आवश्यकता होती ही नहीं, क्योंकि वह स्वयं ही रजमय बनता हुआ उस स्थिति को प्राप्त कर लेता है और स्त्री भी स्वयं वीर्यमय बनती हुई तंत्र की ज्ञाता बन सकती है, किन्तु सामान्यक जन के लिए इसे इस रूप में परिभाषित करने का परिणाम यह हुआ कि मैथुन ही तंत्र का सर्वाधिक चर्चित व ख्याति प्राप्त तत्व हो गया। मैथुन को आधार बना कर प्राचीन काल में ही विकृतियां नहीं पनपीं वरन् आज एक तन्त्र के नाम पर जो कुछ भीकहा या रचा जा रहा है, वह भी अधकचरा व अपूर्ण है। मनुष्य की जो मूल प्रवृत्ति होती है, और इसी से छद्म बुद्धिजीवियों, छद्म कलाकारों ने अपनी रचनाओं में तन्त्र का अर्थ मैथुन ही प्रगट किया।

तंत्र मनुष्य की इसी प्रवृत्ति को जो उसकी मूल प्रवृत्ति है, उसको स्पष्ट रूप से कहता है, उसका निदान बताता है। तंत्र इतना हल्का विषय नहीं है, तंत्र इतना सीमित विषय भी नहीं है, तंत्र इतना सहज और आम चर्चा का विष तो है ही नहीं, किन्तु आज की परिस्थितियों के सन्दर्भ में यह आवश्यक हो गया कि तंत्र का पुर्नआंकलन तो कर ही लिया जाय, साथ ही तंत्र की भावभूमि को भी स्पष्ट किया जाए जिससे तंत्र के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण हो, नूतन चेतना का आविर्भाव हो, नए वातावरण का सृजन किया जा सके।

आन्दोलनों, प्रचारों और राजनीति के सहारे तो बहुत प्रयास किए जा चुके हैं अब क्यों न तंत्र के माध्यम से एक सम्पूर्ण समाज के गठन की बात सोची जाए? क्यों न इस माध्यम से एक-एक जीवन को सम्पूर्ण व परिपूर्ण बनाने

का प्रयास किया जाए? क्योंकि तंत्र ही एक ऐसा मार्ग है जो जीवन में कुछ भी त्याज्य या अश्लील घोषित नहीं करता, जो भोग के प्रति त्याग की धारणा को बल नहीं देता, जो एक शिष्ट खुलेपन का समर्थक है और रूग्ण मानसिकता के स्थान पर स्वस्थ व परितृप्त मानसिकता के सृजन का हामी है, क्योंकि त्याग की प्रवृत्ति कष्ट से अर्जित की गई प्रवृत्ति होती है, और मानव की मूल प्रवृत्ति भोग के विरूद्ध होती है । तंत्र भोग का पर्याय नहीं है, किन्तु मनुष्य को स्वस्थ रूप से भोग मार्ग में प्रवृत्त कर शनैः शनैः उस ओर प्रवृत्त कर देता है जहां उसे स्वतः ही भोगों से अरूचि हो जाती है ।

अपने गुरु के निर्देशन में पंचमकारों का सेवन करने से व्यक्ति शीघ्र ही समझ जाता है कि यह सुख उस परम सुख की तुलना में अत्यन्त तुच्छ और अस्थायी है । तंत्र की इस उदारता का अर्थ यदि मनमाना लगा लिया गया, तो इसमें तंत्र का दोष कहां से उत्पन्न होता है? इतना तो एक साधारण बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी समझता है ।

इसी से मैं स्पष्ट कहता हूं कि हां ! तंत्र में पंचमकार उसी रूप में है, किन्तु भोगियों के लिए ही नहीं, वरन् योगियों के लिए ही, क्योंकि उनकी भाव-भूमि सर्वथा भिन्न होती है और जो व्यक्ति उस स्थिति पर अवरूढ़ नहीं हो सकते, उनके लिए भी ऐसा नहीं कि तंत्र का मार्ग बंद हो, उन्हें कुछ अलग ढंग से उसमें प्रवृत्त होना पड़ता है, दक्षिणमार्गीय तंत्र का आश्रय लेना पड़ता है ।

यदि अंतिम लक्ष्य हमारी आंखों के सामने स्पष्ट हो, तभी स्पष्ट हो सकेगा कि तंत्र के समक्ष तो कोई भी ज्ञान या चेतना टिकती ही नहीं, क्योंकि तंत्र सृजन कर देने का विज्ञान है । कोरे उपदेशों व भटकावदार सुनहरे मार्गों की अपेक्षा दो टूक स्पष्ट सीधा रास्ता है, यह बात और है कि यह रास्ता थोड़ा पथरीला है, इसमंे ठोकरें लगने का कदम-कदम पर डर है, लेकिन यह मार्ग किसी मृग-मरीचिका पर जाकर नहीं समाप्त होता, इस मार्ग के उस ओर तृप्ति का मीठा सागर है, शक्तिमयता का अनोखा अमृत है और प्रकृति से पूर्णतः तादात्म्य स्थापित कर लेने की अनोखी क्रिया है ।

जिसने प्रकृति से ही तादात्म्य कर लिया वह तो मां भगवती जगदम्बा का ही एक अंश हो गया, फिर वह ओछा और घटिया कहां से रह सकता है? और इसी से यथार्थ तांत्रिक के करुणा का अपार सागर लहराता रहता है । जिस प्रकार एक स्त्री सृजन की शक्ति से युक्त होते हुए भी अपने पुत्र के प्रति वात्सल्यमय रहती है, ठीक वहीं दृष्टि, वही चेतना एक तांत्रिक की होती है, जो स्थितियों का सृजन कर सकता है, वह स्वतः परम कारुणिक हो ही जाता है । यही तंत्र का आन्नद है, यही तंत्र की उच्चता है और इसी भाव-भूमि पर खड़ा होकर मैं अत्यन्त गर्व से कह रहा हूं कि- हां ! मैं तांत्रिक हूं ।

****

SHREE GANESH PRAYOG

कार्य बाधा निवारण श्री गणपति प्रयोग

बाधा निवारण के लिए

जीवन में किसी भी शुभ कार्य करना हैं तो हम सभी कहते हैं ही कि श्री गणेश किया जाये, पर इतने कहने मात्र से तो बढ़ाये दूर नहीं हो जाएँगी , व्यक्ति को दिन प्रति दिन के जीवन में छोटी छोटी कई समस्याओ का सामना करना ही पड़ता हैं तो इनसे बचने के लिए एक अत्यंत ही लघु प्रयोग आपके सामने हैं.

मंत्र : ॐ गं ॐ

इसमें आपके पास कोई भी गणपति प्रतिमा या गणपति यन्त्र होना चाहिए किसी भी काम हेतु फिर चाहे वह छोटा या बड़ा हो , यदि आप उपरोक्त मंत्र का २१ बार मात्र उच्चारण कर ले , फिर घर से निकले , या वह कार्य करने के लिए , आप अपने कार्य क्षेत्र से निकले , आपके जिन कार्यों में इतनी बढ़ाएं आती थी वह कम होने लगेगी ओर आप सफलता के ओर ज्यादा नजदीक होंगे . यह एक तथ्य जरुर ध्यान में रखे जब भी घर से बाहर जा रहे हो तब आप अपना दांयाँ पैर सबसे पहले घर से बाहर निकले. यह

लघु प्रयोग आपके जीवन में सफलता के नए द्वार खोल देगा ..

****

If we want to start any subh means positive work in our life we used to say that " shree ganesh kiya jaye" but to havemore chances of success one must follow the small prayog.

Mantra : om gam om .

Only ritual for this sadhana that when ever you have to go for any business meeting just 21 times narrates the above mentioned mantra, and you will amazed to see that what you have done. But one things is very important that take 1s step from right leg when you come cout of your home. And for this pryog you have to have a Bhagvaan ganpati statue or siddh ganpati yantra ,

Sutra's for Sabar Sadhana

साबर साधना में सफलता प्राप्ति के दुर्लभ सूत्र

साबर साधनाओ में सफलता पाने के अचूक उपाय

पंचमी माई ,जैसा नाम वैसे ही जीवन के पञ्च गुणों यथा ,प्रेम,ममता,करुणा,ज्ञान और समर्पण के भावो से भरी हुयी. उत्तराखंड से उनका बहुत लगाव रहा है.यहाँ की पर्वत श्रृंखलाओं पर ही उन्होंने सदगुरुदेव के सानिध्य में अपने सन्यस्त जीवन में विविध सिद्धियों को हस्तगत किया है. एक बार १९९४ में वे जब सदगुरुदेव से मुलाकात करने भिलाई नवरात्री शिविर में आई थी तभी मेरा भी सदगुरुदेव की कृपा से संपर्क हुआ था ,तभी सदगुरुदेव ने मुझे ये कहा था की ये साबर साधनों में अग्रणी हैं और इन्होने मुझसे साबर साधनाओं के समस्त अज्ञात रहस्य को प्राप्त किया है और सफलता पूर्वक उसका प्रयोगात्मक परिक्षण भी किया है.

सदगुरुदेव के आशीर्वाद तले विविध साधनाओं का अभ्यास सभी साधक साधना शिविरों में किया करते थे.१९८१ से १९९८ का स्वर्णिम काल साधक समाज के मध्य हमेशा स्मरण रहेगा. १९८६ और उसके बाद भी सदगुरुदेव ने दो बार साबर साधना शिविर आयोजित किये थे.जिसमे उन्होंने इस साधना के विविध सूत्रों को साधकों के मध्य रखा और जिसका प्रयोग कर साधकों ने आशातीत सफलता भी प्राप्त की. हालाँकि मेरी दीक्षा १९८८ में हुयी थी तो मैं उन रहस्यों को १९८६ में तो प्राप्त कर ही नहीं पाया(ये स्वाभाविक भी था) परन्तु इसकी कचोट मेरे ह्रदय में हमेशा रही है. परन्तु जब मैं साधना के लिए सदगुरुदेव के पास गुरुधाम में बाद में अलग अलग २ वर्षों तक रहा तो यथा अवसर वे मेरी इस तंत्र की जिज्ञासा का

शमन अवश्य किया करते थे और उन्होंने बहुत सरे रहस्यों को अनावृत भी किया जो की साबर साधनाओं में सफलता प्राप्ति के लिए अनिवार्य ही थे और मात्र उच्च साधकों के पास ही सुरक्षित थे. उसी समय उन्होंने मुझे कहा था की "मेरी एक शिष्या है 'पंचमी माई' उसे मैंने इस साधना के दुर्लभ सूत्र प्रदान किये हैं,जब कभी तुम्हे इस विषय को समझना की अभिलाषा हो तो तुम उसके पास चले जाना". बाद में १९९४ में मेरी उनसे मुलाकात हो ही गयी,सदगुरुदेव के आदेश देने पर उन्होंने विषय को समझाना स्वीकार कर लिया.

समय समय पर मैं उनसे संपर्क करता और इस विषय को समझता भी रहा तथा बाद में इस विद्या का गोरखपुर और अन्य पीठो में अभ्यास भी किया तथा उन स्थानों के योगियों से भी बहुत से साबर मन्त्रों को प्राप्त किया ,मुख्य बात हमेशा ये रही की वे सभी सदगुरुदेव को बहुत ही आदर दिया करते थे और उनके व्यक्तित्व को अलंघनीय और अकल्पनीय मानते थे.सदगुरुदेव के महाप्रयाण के बाद १९९९ के दिसंबर में एक बार मैं १९८५ के आस पास की पत्रिका का अध्यन कर रहा था,तभी उसमे दी गयी एक साधना के ऊपर मेरा ध्यान गया,जिसका शीर्षक था'वह साबर मंत्र जो मैंने भगवन शंकर से प्राप्त किया' उसमे एक बहुत ही अद्भुत मन्त्र दिया हुआ था परन्तु साथ ही साथ ये भी लिखा हुआ था की इस मंत्र में कुछ गुप्त मुद्राओं और किसी खास पद्धति का प्रयोग होता है तभी सफलता प्राप्त होती है. अब मेरी उत्सुकता इस मंत्र को लेकर इतनी ज्यादा हो गयी थी की मैं इसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया को येन-केन प्राप्त करना ही चाहता था. मैंने कई वरिष्ट गुरु भाइयों से भी संपर्क किया पर कोई भी संतोषजनक उत्तर कही से नहीं मिला या फिर वे अनभिज्ञ थे इस क्रिया से.

तब मेरे मन में माई से मिलने का विचार आया और थोड़े दिनों बाद जब वे पचमढ़ी आई तो उन्होंने मुझे वह बुलवा लिया. वही पर उन्होंने मेरी सभी शंकाओं का समाधान किया और उस क्रिया को सप्रमाण दिखा कर समझाया भी.

साबर साधनाओं में सफलता के विभिन्न सूत्र जो मुझे परम पूज्य सदगुरुदेव और माई से प्राप्त हुए हैं वो मैं आप सभी के लाभार्थ यहाँ पर दे रहा हूँ,और आशा करता हूँ की आप सभी को निश्चय ही इससे पूर्ण लाभ होगा और विषय को आत्मसात करने में सहयोग भी मिलेगा.

१. साबर मन्त्रों को सिद्ध करने के लिए गुरु द्वारा निर्देशित पद्धति और दिवस का आश्रय लेना चाहिए ,जहाँ पर पद्धति और दिवस का वर्णन न हो वहाँ पर कोई भी ग्रहण,होली, नवरात्री,दीवाली की रात्रि या रविवार,मंगलवार या शुक्रवार का प्रयोग किया जा सकता है .स्थान के रूप में सिद्ध पीठ , नदी या सरोवर का किनारा,पर्वत शिखर ,कोई सिद्ध मंदिर या फिर एकांत कक्ष का भी प्रयोग कही ज्यादा उचित होता है.

२.लोहबान धूप का प्रयोग साधनाकाल में किया जाना अधिक उचित है .

३.साधना स्थल पूर्ण रूपेण स्वच्छ होना चाहिए यदि गाय के गोबर से लीप कर चौका बनाया जाये तो ज्यादा उचित रहता है.

४.गुरु,मन्त्र और देवता के प्रति पूर्ण समर्पण और श्रृद्धा होना आवश्यक गुण है.

५.साबर साधनाओं में भी पवित्रता का महत्वपूर्ण योगदान होता है और ये पवित्रता शारीरिक के साथ साथ मानसिक,स्थानिक और भोजन से सम्बंधित होती है,इसमें ढील की कोई गुन्जायिश नहीं रहती है.साबर साधनाओं में वातावरण की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता.अनुकूल वातावरण में ये मंत्र शीघ्र ही सफलता प्रदान करते हैं.

६.मानसिक,दृष्टिक,शारीरिक,स्पर्शिक ब्रह्मचर्य का प्रयोग यथा संभव साधक को साधना काल में करना ही चाहिए.क्या लाभ

यदि साधक शरीर से तो ब्रह्मचर्य का पालन करे परन्तु,विचारों और दृष्टि से वो कामुक चिंतन करता रहे .

७.एकाग्रता अनिवार्य तत्व है.एकाग्र मन से किये गए मन्त्र शीघ्र ही सफलता प्रदान करते हैं.

८.प्रत्येक वर्ष उस विशेष तिथि पर जिसपर आपने उस मन्त्र को सिद्ध किया था,पुनः मंत्र को जप कर ले ताकि मन्त्र की शक्ति सुप्त ना हो पाए.जप के बाद मन्त्र की कम से कम १०८ आहुति भी डाल दे.

९.यदि आसन निर्दिष्ट ना हो तो,कम्बल का आसन प्रयोग करे.माला मूंगे की या रुद्राक्ष की प्रयोग की जाती है. साबर सिद्धि माला या गोरख माला का प्रयोग अधिक उचित है.मंत्र जैसा दिया गया है वैसे ही जप करे ,अपने आप उसमे कोई सुधार न करें. निर्दिष्ट जप संख्या में ही जप करे उससे कम नहीं.तेल के दीपक का प्रयोग अधिक उचित होता है.

१०.साधना के मध्य में आसन का त्याग न करे.

११.यदि निर्दिष्ट ना हो तो हवन के लिए घी,गुग्गुल और सामान्य हवन सामग्री का प्रयोग करे,मुस्लिम साबर मंत्रो के लिए लोहबान की आहुतियाँ प्रयोग होती हैं.साबर मंत्र साधना में वसोधारा की जगह नीबू को मंत्र पढकर काटकर हवन अग्नि में निचोड़ा जाता है. और नीबू की बलि भी दी जाती है.

१२.गणपति पूजन ,भैरव पूजन अनिवार्य कर्म है.इसे प्रत्येक साधना के पूर्व अवश्य करे.'रं' बीज का पञ्च पात्र में रखे हुए जल पर १०८ बार उच्चारण करे और उस जल को –

वज्र क्रोधाय महादंताय दश दिशो बंध बंध हूँ फट् स्वाहा .

साबर साधनाओं में यूँ तो सफलता प्राप्त करने के कई गोपनीय उपाय साधकों के मध्य प्रचलित है परन्तु यहाँ पर हम गृहस्थ साधक किन प्रक्रियाओं का प्रयोग कर निश्चित सिद्धि पा सकते हैं उन ५ गूढ़ सिद्ध क्रम विधानों को मैं स्पष्ट कर रहा हूँ.

1. भैरव उत्थापन क्रिया

साधना के एक दिन पहले रात्रि काल में भैरव उत्थापन क्रिया का प्रयोग अवश्य कर लेना चाहिए. वैसे तो ये कई पद्धतियों से की जाती है और कई विभिन्न क्रमों से भी परन्तु निरापद क्रम के लिए एक भोजपत्र पर कुमकुम से मंत्र को लिख कर उसे मिष्ठान (खीर,हलवा) पीपल के सात पत्ते,तीन लौंग,एक इलायची के साथ एक मिटटी के कोरे पात्र में स्थापित कर दे और उस पात्र को अपने सामने एक उर्ध्वमुखी कुमकुम से बने हुए त्रिकोण में स्थापित कर ले.मुख पूर्व या उत्तर की ओर होगा. गुरु का पूर्ण पूजन करने के पश्चात (ज्यादा उचित होगा की साधना काल में तंत्रोक्त गुरु पूजन पुस्तक में दिए गए साबर गुरु पूजन का प्रयोग करे.तत्पश्चात दंड मुद्रा और क्रोध मुद्रा का प्रदर्शन कर स्वयं की **नाभि** पर ध्यान केंद्रित कर अपनी जप माला से ५ माला निम्न मंत्र की करे.

ॐ सर्वार्थ साधिनी स्वाहा

इसके बाद १ माला निम्न मन्त्र की करे-

ॐ भ्रं भ्रं भ्रं भ्रं भ्रं भ्रं भ्रं भ्रं भ्रं फट

उसी रात को समस्त सामग्री को लेजाकर पीपल के पेड़ के नीचे रख दे और भगवान भैरव से साधना में सफलता की प्रार्थना करे .दुसरे दिन किसी छोटी कन्या को माँ असावरी का रूप मानकर मिष्ठान और दक्षिणा देकर तृप्त करें और आशीर्वाद ले.इस प्रकार भैरव उत्थापन क्रिया संपन्न होती है.

****

2.साबर सुमेरु मंत्र

जिस प्रकार तांत्रोक्त मन्त्र की सिद्धि के लिए तंत्र साफल्य मंत्र का प्रयोग साधना के प्रारंभ में होता है,वैसे ही साबर सुमेरु मंत्र को सिद्ध कर प्रत्येक साबर साधना में जप के पहले इस मंत्र का जप किया जाता है इसके बाद ही साध्य मंत्र का जप उचित है.

गुरु सठ गुरु सठ गुरु हैं वीर,गुरु हैं वीर,गुरु साहब सुमरौं बड़ी भांत.सिंगी टोरो बन कहाँ,मन नाऊँ करतार.सकल गुरु की हर भजे,घटता पाकर उठ जाग,चेत सम्हार श्री परमहंस.

इस मंत्र का पहले ११ माला जप कर स्वयं के लिए सिद्ध कर लेना चाहिए,हाँ पवित्रता के साथ ही इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए.साबर मन्त्रों में ये सुमेरु मन्त्र कहलाता है.और ये जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में सफलता प्रदान करने वाला मंत्र है.

****

3. दो विशिष्ट साधना सामग्री

वैसे तो साबर साधनाओं में सफलता के लिए प्राकृतिक सामग्रियों का ही प्रयोग किया जाता है या ये कहे की प्राकृतिक सामग्रियों को ही आधार मानकर उन पर सम्बंधित मंत्र का जप कर सिद्ध कर लिया जाता है ,परन्तु वर्तमान में वो वनस्पतियां और सामग्रियां सहजता से उपलब्ध नहीं होती हैं.जैसे मीन मुक्त में स्वभाविक रूप से गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी का वास होता है , बांस मुक्तक या बंश लोचन में गुरु कनिफा नाथ का वास होता है,इसी प्रकार कई ऐसी वनस्पतियां और सामग्रियां होती है जिनमे इन नवनाथों और ८४ सिद्धों का वास होता है और जिन्हें प्रतीक रूप में यदि प्रयोग किया जाये तो इन अधिष्ठाता इन नाथों से सम्बंधित तंत्र की सिद्धि अधिक सहजता से हो जाती है जिसके द्वारा कुंडलिनी जागरण ,कृत्या साधन,परकाया प्रवेश, अष्टादश सिद्धियाँ,गुरु प्रत्यक्षीकरण ,अप्सरा सिद्धि आदि असंभव कार्य भी संभव किये जा सकते हैं.ये सभी भी साबर मन्त्रों से संभव है.किन्तु यहाँ मैं उन सामग्रियों का विवरण देना उचित नहीं समझता हूँ उसका सबसे बड़ा कारण है उन जीवों या वनस्पतियों का अल्पमात्रा में होना,यदि लोगो को जानकारी हो जाये की इस वनस्पति या जीव के द्वारा ये साबर तंत्र सिद्ध किया जा सकता है तो,लोग उन्हें समाप्त प्रायः ही कर देंगे.परन्तु ये सभी लाभ २ विशिष्ट साधना सामग्री के द्वारा १००% लिए जा सकते हैं.

साबर सिद्धि महा यन्त्र

साबर सिद्धि प्रदायक महा सिद्ध नव नाथ पारद गुटिका

जिन लोगो ने भी साबर सिद्धि महायंत्र के बारे में पढ़ा होगा ,उन्हें पता होगा की उसमे ये लिखा गया था की सदगुरुदेव ने अपनी असीम करुणा के वशीभूत होकर इतना महत्वपूर्ण यन्त्र हमारे सामने रखा है,जिसके द्वारा किसी भी साबर साधना में निश्चित सफलता पायी जा सकती है.और भविष्य में ना जाने वो इस यन्त्र पर कैसे कैसे प्रयोग दे दे.

इसी प्रकार साबर गुटिका नवनाथ मन्त्रों से अनुप्राणित और चैतन्य होती है तथा उसका विशेष क्रम से अभिशिन्चितिकरण भी हुआ होता है जिसके प्रभाव से वो ऐसे बहुत से लाभ आपको प्रदान करती है जो कल्पना तीत है.उस गुटिका की निर्माण विधि और उसपर किये जाने वाले ३ प्रयोग इसी अंक में दिए गए है

- साबर गुरु प्रत्यक्षीकरण साधना
- साबर कुंडलिनी जागरण साधना
- साबर यक्ष गन्धर्व सिद्धि साधना

ये सभी साधनाएं पहली बार ही किसी भी किताब या पत्रिका में आ रही हैं,मैं आभारी हूँ **पंचमी माई** का और मैं मात्र यही कह सकता हूँ की सदगुरुदेव प्रदत्त ज्ञान की श्रृंखलाए इतनी विस्तृत है की जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है.खैर इस गुटिका और यन्त्र को सामने रख कर १ माला निम्न मंत्र की अवश्य ही कर लेना चाहिए.सदगुरुदेव ने बताया था की वैसे तो ६२ क्रियाएँ करनी पड़ती है साबर साधना में सफलता के लिए.परन्तु उनका प्रयोग और ज्ञान सभी के लिए सहज नहीं है.**(इसी कारण उन क्रियाओं को यहाँ नहीं दिया जा रहा है)**इसलिए यदि साधक वो सब ना करके इन पांच क्रियाओं का ही प्रयोग यथानुसार कर ले तो उसकी सफलता निश्चित हो जाती है. वो मन्त्र है-

ॐ आदि नाथ ज्योति रूप बसों तुम जानि,सकल पदार्थ तुम् बसे ,बसी जगदम्बा साथ तोहारे,नीली ज्योति रूप तुम्हारा,कारज पूरा आतम शक्ति का ,आशीष सकल गुरु शक्ति का.

इसके बाद वो गुटिका आपके लिए साधना में प्रयुक्त की जा सकती है.इसके साथ उस अद्भुत महायंत्र की स्थापना तो साधक का महा सौभाग्य ही होता है.जिसके बाद साबर साधनाओं में सफलता के द्वार उसके लिए खुल जाते हैं.

****

4. अभिकीलन क्रिया

इस क्रिया को अभिकीलन क्रिया कहते हैं ये हाथ पूर्वक साबर शक्ति के बंधन की क्रिया है.इसमें भगवान शिव की अमृतेश्वरी शक्ति का प्रयोग किया जाता है ताकि सम्बंधित साबर साधना आपको ना सिर्फ पूर्ण सिद्ध होती है अपितु उसका फलदायक अमृत प्रभाव आपको आजन्म प्राप्त हो तथा परिवार को भी अमृत तत्व की प्राप्ति होकर पूर्ण आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति होती रहे.इस क्रिया से वो सामग्री और मंत्र पूरी तरह चैतन्य और प्रभावकारी,शुभ दायक हो जाती है.

साधना वाले दिन प्रातः काल स्नान कर सभी सामग्रियों को श्वेत वस्त्र में बाँध(वैसे जिस वस्त्र के बारे में सम्बंधित साधना में

विवरण हो ,उसी रंग के वस्त्र में वो सामग्रियां बांधनी चाहिए,और बाद में उसी वस्त्र को बाजोट पर बिछाया जाता है) कर बाजोट के ऊपर उर्ध्वमुखी त्रिकोण जो की श्वेत चन्दन और कुमकुम मिलकर बनाया गया हो.के ऊपर स्थापित कर दे,सामग्रियों को बाँधने के पहले उसे भली भांति स्नान कराकर पोछ कर बंधे साथ में.उसी समय अपना संकल्प किसी कोरे कागज पर पर कुमकुम की स्याही से लिख कर बाजोट के आगे वाले दाहिने पाए के नीचे दबा दे,**(ये पर्ची तब तक दबी रहेगी जब तक की साधना पूरी न हो जाये.बाद में उस कागज को सामग्री के साथ विसर्जित कर दे.)** जब सभी सामग्री को आप बाजोट पर बाँध कर रख दे और पर्ची को भी आप बताये अनुसार स्थापित कर दे तब स्व नाभि पर ध्यान केंद्रित करते हुए १ घंटे तक निम्न मंत्र का जप करे,ये मन्त्र अद्भुत चमत्कारी मंत्र है जो आपकी साधना को आपके लिए पूर्ण प्रभावकारी बना देता है-

ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युन्जये भगवति चैतन्यचन्द्रे हंससंजीवनि स्वाहा.

इस मंत्र को यदि विशेष तरीके से प्रयोग किया जाये और इसके साथ महामृत्युंजय मंत्र का योग किया जाये तो साधक के परिवार को भी अकालमृत्यु के भय से मुक्ति मिल जाती है.

****

5, असावरी देवी मंत्र विधान

यदि आपने पहली ४ क्रिया के बगैर कोई साबर साधना की हो परन्तु आप उस साधना को कई बार कर चुके हो तब इस साधना को करने के बाद ही दुबारा अपनी साधना को करे निश्चय ही आपको सफलता की प्राप्ति होगी,ये क्रिया तो किसी ग्रन्थ में हो सकती है पर इससे सम्बंधित मंत्र सर्वप्रथम बार सदगुरुदेव की कृपा से आप सभी के सामने आया है.

रविवार को रात में असावरी देवी की पूर्ण पूजा करके कांसे की थाली को रख से मांज ले

और प्रत्येक प्रहर के प्रारंभ में इस मंत्र को उस थाली में कुमकुम से लिख कर उसे सामने रख कर -

ॐ असावरी असावरी पूरण करो हमारी कामना,सिद्धि दीजो,रखियो लाज,असावरी मैया की दुहाई.

इस मन्त्र का २१ बार जप करे और जो मंत्र आप सिद्ध करना चाहते हैं उसे १०८ बार करे चौथे प्रहर में जप के बाद '**हे मन्त्र देवी जाग्रत हो,सिद्धि दे**'कहकर खैर की लकड़ी से उस थाली को बजाये.निश्चय ही इससे मन्त्र जाग्रत होकर सफलता देता ही है.

उपरोक्त क्रियाएँ आपको आपकी वांछित सफलता अवश्य ही प्रदान करेगी,ऐसी ही मैं सदगुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ.ये क्रियाएँ अभी तक अज्ञात थी,मुझे आज अपने सभी गुरु भाई बहनों के साथ इस ज्ञान को बांटने में बहुत आनन्द आ रहा है.आप सभी इसका लाभ उठाये और जीवन को गौरवान्वित करे.

Sarv Vadha Vinashak Sabar Sadhana

अब सफलता तो आपको मिलके ही रहेगी

कई बार व्यक्ति की समृद्धि अचानक रुष्ट हो जाती है,सारे बने बनाये कार्य बिगड जाते है,जीवन की सारी खुशिया नाराज सी लगती हैं,जिस भी काम में हाथ डालो असफलता ही हाथ लगती है.घर का कोई सदस्य जब चाहे तब घर से भाग जाता है,या हमेशा गुमसुम सा पागलों सा व्यवहार करता हो,तब ये प्रयोग जीवन की विभिन्न समस्याओं का न सिर्फ समाधान करता है अपितु पूरी तरह उन्हें नष्ट ही कर देता और आने वाले पूरे जीवन में भी आपको सपरिवार तंत्र बाधा और स्थान दोष ,दिशा दोष से मुक्त कर अभय ही दे देता हैं.

इस मंत्र को यदि पूर्ण विधि पूर्वक गुरु पूजन संपन्न कर ११०० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लिया जाये तो साधक को ये मंत्र उसकी तीक्ष्ण साधनाओं में भी सुरक्षा प्रदान करता है और यात्रा में चोरी आदि घटनाओं से भी बचाता है.मंत्र को सिद्ध करने के बाद जिस भी मकान या दुकान में उपरोक्त बाधाएं आ रही हो,किसी प्रेत का वास हो गया हो या अज्ञात कारणों से बाधाएँ आ रही हो,उस मकान में बाहर के दरवाजे से लेकर अंदर तक कुल जितने दरवाजे हो उतनी ही छोटी नागफनी कीलें और एक मुट्ठी काली उडद ले ले.इसके बाद मकान के बाहर आकर प्रत्येक कील पर ५ बार मंत्र पढ़ कर फूँक मारे और उडद को भी फूँक मार कर अभिमंत्रित कर ले,जितनी कीलो को आप अभिमंत्रित करेंगे उतनी बार उडद पर भी फूँक मारनी होगी.अब इस सामग्री को लेकर उस मकान में प्रवेश करे और मन ही मन मन्त्र जप करते रहे.आखिरी कमरे में प्रवेश कर ४-५ दाने उडद के बिखेर दे और और उस कमरे से बाहर आकर उस कमरे की दरवाजे की चौखट पर कील ठोक दे.यही क्रिया प्रत्येक कमरों में करे. और आखिर में बाहर निकल कर मुख्य दरवाजे को भी कीलित कर दे.इस प्रयोग से खोयी खुशियाँ वापिस आती ही है. ये मेरा स्वयं का कई बार परखा हुआ प्रयोग है.

मन्त्र-

ॐ नमो आदेश गुरुन को ईश्वर वाचा,अजरी-बजरी बाड़ा बज्जरी मैं बज्जरी बाँधा दशौ दुवार छवा,और के घालों तो पलट हनुमंत वीर उसी को मारे,पहली चौकी गणपती,दूजी चौकी हनुमंत,तीजी चौकी में भैरों,चौथी चौकी देत रक्षा करन को आवें श्री नरसिंह देव जी, शब्द साँचा,पिण्ड काँचा,चले मन्त्र ईश्वरो वाचा.

==

SARV BAADHA VINASHAK SABAR SADHNA

Some time we see that each and every happiness gets over from life, every attempt of success meets with failure, family life gets upsets, any person of family doing what he or she wants to do, leaving family without any reason then this mantra not only brings back not only happiness and prosperity but also remove the problems of Sthaan Dosh, Disha Dosh and make them permanent prosperous.

If one get sidh this mantra by moving rosary 1100 times then it protects the person from his deadly problems, secure him and his belongings during journey but to get all this done firstly one should do Guru Poojan. After getting mantra sidh in which house or shop mishappenings are occurring, some ill powers are residing there then from the main gate of that place to the every internal or external gate count them and take equal quantity of SMALL NAAGFANI NAILS(keel) and a handful of Black Odaad cereal(daal) . After that come out from the house and enchant 5 times mantra on every nail (keel) and blow mouth air (phoonk maarna) on it and cereal (daal). Each time when you will enchant mantra on nail equally you should do the same with the cereal now having these things in the hand entered into the house but internally keep on enchanting mantra japp. Finally while entering in the last room of the house spread some cereal(daal) and then come out from the room and mark the nail on the slit of door(ek keel drwaze ki chokhath per thook do). Follow the same procedure at each and every door then finally on main gate. This is my personal recognized practical.

MANTRA-

OM NAMO AADESH GURU KO ISHWAR VACHA,AJRI-BAJRI BADHAA BAJJRI BAANDHAA DASHAU DUWAR CHHAWA,AUR KE GHALON TO PALAT HANUMANT VEER USI KO

Sabar Guru Pratyksh Sadhana
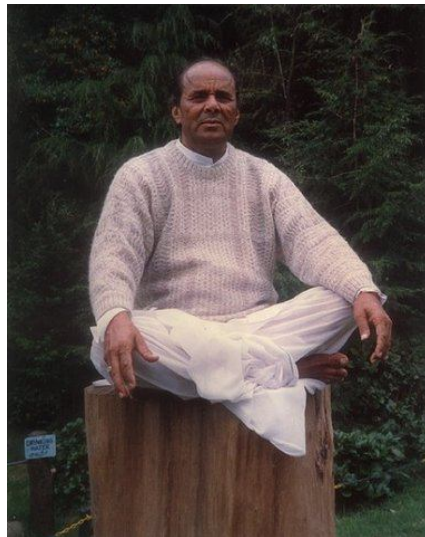
अब तो आपकी इच्छा अपने प्रिय सदगुरुदेव जी को देखने की पूर्ण होगी ही ..

साधक जीवन का सर्वोपरि सुख और आनंद जो है,वो एक मात्र गुरु की सायुज्यता ही है,गुरु के चरणों में बैठना,उनसे सतत ज्ञान की प्राप्ति करना,उनके मधुर साहचर्य में जीवन के अभावो की तपती दोपहरी से बच कर बैठने की क्रिया समझना.पर क्या ये इतना सहज है,नहीं ना........................

और जब गुरु ने स्वधाम गमन कर लिया हो तब तो चित्त की अशांति इतनी भयावह हो जाती है की उस अंधियारे में कोई राह नहीं दिखती है,तब साबर साधनाओ का ये अत्यधिक गोपनीय मंत्र उस पूर्णमासी के चाँद के रूप में आपको प्रकाश तक पहुचता है.यदि पूर्ण विधान से इसे **शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी और पूर्णिमा** को संपन्न किया जाये तो साधक को उसके बिम्बात्मक गुरु के दर्शन और दिशा निर्देशन सतत मिलता ही रहता है.ये प्रयोग सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं अपितु करकर देखने के लिए है.इससे आभास नहीं होता बल्कि उसे पूर्ण तेजस्वी बिम्ब के दर्शन होते ही हैं और यही नहीं बल्कि उसे गुरु के द्वारा भविष्य में जीवन के लिए उपयोगी निर्देश भी प्राप्त होते रहते हैं.

निर्देशित दिवस की रात्री के दूसरे प्रहर में पूर्ण स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर छत पर सफ़ेद उनी आसन पर उत्तराभिमुख होकर बैठ जाये.सामने बाजोट पर गुरु का चित्र स्थापित हो उनका पूर्ण विधि विधान से पूजन करे,सुगन्धित धुप का और पुष्पों का प्रयोग किया जाये,उसी प्रकार **महासिद्ध गुटिका** को भी चित्र के समक्ष अक्षत की ढेरी पर स्थापित कर पूजन करे,घृत दीपक का प्रयोग करे.खीर का भोग चढ़ाये,और स्थिर चित्त होकर **त्रिकूट** पर ध्यान लगाकर निम्न मन्त्र का ४ घंटे तक

जप करे. जैसे जैसे आपकी तल्लीनता बढते जायेगी,आपके **आज्ञा चक्र** पर एक सुनहरी-नीली ज्योति प्रकट होने लग जायेगी और अंत में आपके गुरु का पूर्ण तेजस्वी बिम्ब वहाँ प्रत्यक्ष हो जायेगा और आपके कानो में उनकी पूर्ण आवाज भी सुनाई देने लगेगी,आप जो भी प्रश्न पूर्ण कृतज्ञता के साथ अपने ह्रदय में लायेंगे,उनका उत्तर आपको कानो में सुनाई देने लगेगा,परन्तु ये प्रश्न आपके जीवन ध्येय और साधनाओं से सम्बंधित ही होने चाहिए.और यदि आपने यही क्रम पूर्णिमा को भी एकाग्रता पूर्वक संपन्न कर लिया तो जब भी आप अपनी साधना में बैठोगे उनका पूर्ण वरदहस्त आपके शीश पर ही होगा. उच्च कोटि के साधक इसी मंत्र से **त्रिकूट** के बजाय अपने सामने गुरु को आवाहित करने में सफल होते ही हैं.

मन्त्र- **आदि ज्योति,रूप ओंकार,आनंद का है गुरु वैपार,नीली ज्योति,सुनहरा रूप,तेरो भेष न जाने कोय,अनगद भेष बदलतो रूप,तू अविनाशी जानत न कोय,शून्य में तू विराजत,तेरो चाकर ब्रह्म बिष्णु महेश.किरपा दे,कर तू उपकार,जीवन नैया कर बेडा पार.जय जय जय सतगुरु की दुहाई.**

==============================

SABAR GURU PARTYAKSH SADHNA

The most blissful moment for saadhak's life are that in which he spend time with his guru while sitting at his feet and getting the lessons that how he can protect himself from the drastic ups and down of life but this is not as easy as it sounds……..

But it becomes most dreadful fact of life and cause pain if guru has proceeded to his final destination. But if this mantra of Sabar sadhnas can be enchant on the Shukl Pksh ki Chtudrshi aur on Poornima by following all the rules and regulations then sadhak can have not only the glimpse of his guru but also get direction and guideline from him. This practical is not merely to listen but authentic and by doing this one can have direct orders and guidelines from his guru not only for present but for future as well. Sadhak that are on high level in sadhnas field successfully call their guru himself at place of Trikutt.

Aadi jyoti,roop omkaar,aanand ka hai guru vaipaar,neelee jyoti,sunhara roop,tero bhesh na jaane koy,angad bhesh badalto roop,tu avinaashi jaanat naa koy,shunya me tu viraajat,tero chaakar bramha bishnu mahesh.kirpa de,kar tu upkaar,jeevan naiya kar bedaa paar,jai jai jai satguru ki duhaai.

Kundlini chakra Jagran Sabar Sadhana

जो विधान आज तक गोपनीय ही रहा अब आपके सामने ....

यदि उपरोक्त क्रम से पूर्णिमा की प्रातः पूजन कर निम्न मंत्र का त्रिकूट पर ध्यान लगाकर ३ घंटे नित्य ब्रह्ममुहूर्त में जप किया जाये तो कुण्डलिनी में तीव्र स्पंदन होने लगता है और जन्म जन्म से सुप्त कुंडलिनी जाग्रत होने लगती है. इस क्रिया को १४ दिन तक करना पड़ता है इसमें अलग अलग चक्रों की साधना नहीं करनी पड़ती अपितु ये सम्पूर्ण क्रम स्वतः ही पूरा कर लेती है.इस क्रिया के साथ आपको मूल बंध,और त्रिबंध का अभ्यास करना चाहिए.आसन सिद्धासन होगा या पद्मासन तो तीव्र प्रभाव होता है.

मन्त्र- सात लोक को सात जगत,सात बरन को सात शरीर,सात फूल में खेले ज्योति,काहे होवत नीर अधीर. फुंकार मारत जे डोलत है ,सात फन को जे करीर.उलटत फेरा बंधे हैं जो,खेलत मुस्कावत खोले गुरु बीर.जय जय जय सतगुरु की दुहाई.

KUNDALINI CHAKRA JAAGRAN SABAR SAADHNA

If by following the above given rules on the morning hour (bhram mhurat) of Poornima one does the following mantra japp for 3 hours daily by concentrating on Trikutt then one can feel the hard and fast

Teevra Yaksh Gandhrv Vashikaran Sadhana

अब इन उच्च वर्गों से संपर्क की एक अद्भुत साधना विधान

इस ब्रम्हांड में अन्य वर्ग की शक्तियों का भी वास है,जिनसे हमारी सभ्यता प्रभावित होती रहती है,इन उच्चस्थ या निम्नस्थ वर्ग की शक्तियों को अपने अनुकूल बना कर मनोवांछित लाभ पाया जा सकता है.साबर मन्त्रों में बहुत से ऐसे मंत्र हैं जो बहुत से अलग अलग कार्यों के लिए प्रयुक्त होने हैं.निम्न मंत्र जहाँ उपरोक्त शक्तियों को पूर्ण रूप से वश में करने के काम आता है वही ये सामान्य मनुष्य के लिए भी तीव्र प्रभावकारी है. सावन मास के किसी भी ११ दिनों में या ग्रहण काल में इसे जप कर सिद्ध कर ले,सावन में १००००० की संख्या में जप करना होगा और ग्रहण में १०० माला जप करना होगा,सामने महासिद्ध गुटिका हो तो अति उत्तम नहीं तो साबर सिद्धि यन्त्र तथा सुपारी रख कर इसे जप करना चाहिए.नित्य गुरु,गणपति.दुर्गा और शिव पूजन होना चाहिए.नित्य जप के बाद २१ आहुति गूगल की देना है.साधना पूरी होने के बाद कोई भी वस्तु,कपडा या सामग्री ३२४ बार मन्त्र पढकर अभिमंत्रित करके किसी को भी देने से वो पूर्ण अनुकूल हो जाता है,और यदि कुछ न हो सके तो मंत्र पढ़ कर फूँक मर कर भी यही स्थिति प्राप्त की जा सकती है.पूर्णिमा की रात्रि को इसी मंत्र की १०८ माला जप पर्वत शिखर पर उत्तर मुख करके करने से और सुगन्धित पुष्प,लवंग,खीर इत्यादि का भोग चढाने से यक्ष व गन्धर्व जाति से आपका संपर्क होता है.और अमावस्या को शमशान में या पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर,दही बड़े,पापड और उबला उडद का भोग रख काली हकीक माला से १०८ माला जप दक्षिण या पश्चिम मुख होकर करने पर भूत सिद्धि होती है.

मन्त्र-**क्लं क्लीं ह्रीं नमः.**

==============================

Teevra Yaksh Gandharv Siddh Saabar Sadhna:-

The universe is the abode of the powers of other classes, which have influenced our civilization. By making all these powers favorable for us whether they are low or high influential its benefits can be found. Saabar Mantra consists many more other chants (Mantras) which are useful in other wanted works. Below mentioned Chants is used to accomplish all the desires and on the other hand these all are very useful and beneficial for the normal human beings also….During Saawan month in any of the 11 days or during the eclipse period (Grahan Kaal) get it enchanted and accomplished….One needs to enchant it for about 100000 in no.s and in the eclipse period one needs to enchant 100 rounds …and if during this devotion if you have “Mahasiddh Gutika”in front then it is great, else enchant the process by keeping “Saabar Siddhi Yantra” and the beetle nut in front….Along with this you have to worship daily Guru,Ganpati,Durga and Shiv Poojan also…On daily basis after the enchanting process, one needs to give 21 holocaust (Aahuti) of Google….After the whole devotional practice, take any thing, cloth or any other asset and repeat it324 times to invoke the mantra in order to make it fully accomplished…and if still it is not workable, then blow this mantra by enchanting and can get the favorable conditions…

In Full Moon Light (Poornima Night), if practicing of the Mantra 108 times is done by facing in the North Direction at Parvat Shikhar and by offering Flowers, Jamaica and the Kheer one can contact with the Yaksh and the Gandharv and performing the same mantra in the Moonless Nite (Amavas Night) in Cemeteries (Shamshaan) or below the Peepal Tree and by offering Curd,Bade,Papad and boiled Urad facing either in South or West direction by performing the mantra 108 times with the Hakeek Mala ,one can accomplish “Bhoot Siddhi”…

Mantra: - Klam Kleem Hreem Namah

Vol . 0 1 - No 05

Dev Pratykshikaran Sabar Sadhana

एक दुर्लभ साधना विधान

कई बार हम सालों तक किसी महाशक्ति की आराधना करते हैं परन्तु ना तो कोई प्राकट्य होता है और न ही कोई अनुभव तब साधक साधनों को ढोंग समझने लगता है और उसे लगता है की उसकी म्हणत बेकार गयी,यदि ऐसा हो तो निम्न साबर मंत्र का प्रयोग अवश्य ही करके देखना चाहिए.साबर मंत्र कीलित नहीं है,ये बहुत तीव्रता से अपना प्रभाव दिखाते हैं.ये प्रक्रिया महासिद्ध गुटिका पर ही संपन्न होती है.गुटिका को सामने स्थापित कर किसी भी वटवृक्ष के नीचे बैठकर पूर्ण शुद्ध चित्त होकर जो भी आपकी साधना की वेश भूषा हो,उसे धारण करके सिद्धासन में बैठकर गोरख माला से २४ माला नित्य १४ दिवस तक करे,जप के बाद दशांश हवन करे और गुड का भो दें,आपका मनोरथ पूर्ण होगा और आपको सम्बंधित देव शक्ति का प्रत्यक्षीकरण और सानिध्य प्राप्त होगा.

मन्त्र-

ॐ डंक मुखे विधु जीभे हं हं चुटके जय जय स्वाहा

=====================================

Dev Pratayakshikaran Saabar Sadhna

Vivah Vadha Nivarak Sabar Sadhana

एक बहु प्रतिक्षित साधना विधान

जन्मकुंडली में कई ऐसे योग होते हैं जिनकी वजह से किसी भी व्यक्ति फिर वो चाहे पुरुष हो या स्त्री अपने जीवन की सबसे बड़ी खुशी विवाह से वंचित रह जाते हैं.... साथ ही कई बार ये रूकावट बाहरी बाधाओं या प्रारब्ध की वजह से भी आती हैं. फिर चाहे लाख प्रयास करते जाओ उम्र मानों पंख लगाकर उड़ते जाती है पर एक तो रिश्ते आते नहीं हैं,और यदि आते भी हैं तो अस्वीकृति के अलावा और कुछ प्राप्त नहीं होता है. लोग लाख उपाय करते रहते हैं पर समस्या का समुचित निदान नहीं हो पाता है.परन्तु निम्न प्रयोग नाथ सिद्धों की अद्भुत देन है समाज,को जिसके प्रयोग से कैसी भी विपरीत स्थिति की प्रतिकूलता अनुकूलता में परिवर्तित होती ही है और विवाह के लिए श्रेष्ट संबंधों की प्राप्ति होती ही है.

किसी भी शुभ दिवस पर मिटटी का एक नया कुल्हड़ लाए. उसमे एक लाल वस्त्र,सात काली मिर्च एवं सात ही नमक की साबुत कंकड़ी रख दें.हांडी का मुख कपडे से बंद कर दें.कुल्हड़ के बाहर कुमकुम की सात बिंदियाँ लगा दे.फिर उसे सामने रख कर निम्न मंत्र की ५ माला करे.मन्त्र जप के पश्चात हांडी को चौराहे पर रखवा दे. इस प्रयोग का असर देख कर आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे.

मन्त्र-

गौरी आवे ,शिव जो ब्यावे.अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करे.देर ना करे,जो देर होए ,तो शिव को त्रिशूल पड़े,गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै.

Muslim Sabar Sadhana

चोरी का पता लगाने का मुस्लिम साबर प्रयोग

एक गोपनीय साधना प्रयोग

निम्न मंत्र को पूर्ण पवित्रता के साथ मुस्लिम पद्धति से सवा लाख बार हकीक माला से जप कर सिद्ध कर लेवे,शुक्रवार के दिन से इस साधना को प्रारंभ करे और १४ दिन में इस साधना को पूरा करे. जब कोई वास्तु खो जाये या चोरी हो जाये,तब इसका प्रयोग करने के पहले और बाद में दरूद शरीफ का १४-१४ बार पाठ करे और ताली बजावे और बीच में १४ बार उस मूल मंत्र को करे,निश्चय ही या तो वो वास्तु मिल जायेगी या फिर उससे समबन्धित जानकारी मिल जायेगी,अचूक प्रयोग है.

मन्त्र-

हयहात हयहात लेमातु अदुन

==

Muslim Saabar Prayog for the Identification of Theft

Perform the below mentioned Mantra with whole determined and pure heart and soul as per the Muslim ritual 1 Lac 25 Thousand Times with the Hakeek Mala and get it accomplished. Start this ritual on Friday and complete the whole process in 14 days…Whenever any of the things gets stolen, perform the whole process and later on perform the “Darud Sharif” Paath 14 times twice and clap and in the middle perform the base mantra…By performing the practice, either you will

सूत रहस्यम- भाग - 5

सूर्य तत्व रहस्य

सर्व सर्वात्मकं के नियम अनुसार सृष्टि में पाए जाने वाले सभी पदार्थों में सब कुछ व्याप्त है,इसका अर्थ ये हुआ की लोहा लोहा मात्र नहीं है बल्कि उसमे कांच के भी गुण है और गुलाब के भी,परन्तु लोह तत्व की अधिक प्रधानता होने के कारण वो हमें लोह धातु के रूप में दृष्टिगोचर होता है.यदि किसी भी क्रिया का सहयोग लेकर उसके अन्य किसी तात्विक गुण का विस्तार किया जाये तो ऐसे में वो उस धातु,पुष्प या पदार्थ का ही रूप दिखाने लगेगा जिसके गुणों का विस्तार किया गया है. परन्तु ये इतना सहज नहीं है,क्यूंकि मात्र किसी विषय का ज्ञान होने से आप उसमे निपुणता नहीं पा सकते,बल्कि ज्ञान को विज्ञानं में परिवर्तित कर प्रयोग करने पर ही सफलता संभव है.

और तंत्र के इसी भाग का(जिसमे ज्ञान युक्त सिद्धांत को विज्ञानं रुपी प्रयोगात्मक क्रिया में परिवर्तित किया जाता है)प्रयोग करने से हम ऐसे ऐसे रहस्यों का विस्फोट कर सकते हैं जो सामान्य मानवीय कल्पनाओं से परे हैं.

वैमानिकी शास्त्र के रूप में सैकड़ों ग्रन्थ हैं जिनमे इस ज्ञान को विज्ञानं के रूप में परिवर्तित करने का विधान बताया गया है,अर्थात सूर्य के मूल तत्व को लेकर कैसे सरलता से अपने मनोरथ को साकार किया जा सकता है.पदार्थ परिवर्तन तो ठीक है उसके साथ ही वायुगमन किया जा सकता है,जल गमन किया जा सकता है, विराट अकार धारण किया जा सकता है अपने आपको बहुत भारी किया जा सकता है आदि आदि.... इसका सामान्य सिद्धांता ये है की सृजित पदार्थों में हमेशा पञ्च तत्व तो व्याप्त होंगे ही,मतलब पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु और आकाश. अब यदि किसी भी पदार्थ के भीतर अणुओं का परिवर्तन कर पृथ्वी और जल तत्व को विरल(कम) कर दिया जाये और आकाश तथा वायु तत्व को ज्यादा कर दिया जाये तो उस पदार्थ विशेष के सहयोग से सहजता से वायु गमन या शून्यता की प्राप्ति की जा सकती है.और यदि मात्र आकाश तत्व का विस्तार किया जाये तथा अन्य तत्वो को अत्यधिक न्यून कर दिया जाये तो अदृश्य होना संभव है.यदि अग्नि तत्व,वायु तत्व और आकाश तत्व को ज्यादा विस्तार दिया जाये और अन्य तत्वो का लुप्त प्रायः कर दिया जाये तो ऐसे में हम उन पदार्थों को भी प्राप्त कर सकते हैं जो भविष्य के गर्भ में छुपे हुए हैं और वर्तमान में जिसका प्राकट्य हमारे सामने नहीं है. आप खुद ही सोचिये की यदि सूर्य

विज्ञानं का प्रामाणिक और प्रायोगिक ज्ञान हमें हो सके तो कोई भी क्रिया असम्भव नहीं रह जायेगी.परन्तु इस ज्ञान को सीधे सूर्य से ही प्राप्त किया जा सकता है वो भी साधना के द्वारा,हमारे लिए सूर्य को अर्घ्य देना या सूर्य नमस्कार करना सामान्य सी बात होगी परन्तु हमें ये तथ्य ज्ञात नहीं है की इन क्रियाओं के साथ साथ जिन बीज मन्त्रों और मन्त्रों का प्रयोग होता है वे उस विशेष शारीरिक मुद्रा और अवस्था के साथ एक विशेष क्रिया करते हैं जिसे शरीरस्थ चक्रों में विशेष उर्जा और शक्ति का विखंडन और संलयन होता ही है.और यदि साधक इसके साथ सूर्य साधना के गुप्त मंत्र का भी जप करे तो उसे सूर्य विज्ञानं के गूढ तत्वो का ना सिर्फ ज्ञान होता है अपितु वो इसमें प्रायोगिक कुशलता भी प्राप्त कर लेता है.उत्पत्ति से लेकर ले तक के सभी गूढ रहस्यों से उसका साक्षात् हो जाता है. ये हम सभी जानते हैं की सूर्य नमस्कार करने से शरीर स्वस्थ रहता है या सूर्य को अर्घ्य देने से निरोगी देह और तीव्र नेत्र ज्योति की प्राप्ति होती है,परन्तु फिर भी आलस्य और प्रमाद के कारण इसे करने में कोई ध्यान नहीं देता,अरे थोडा सोचो की इन क्रियाओं को करने से आखिर हमारे शरीर पर सूर्य का क्या प्रभाव पड़ता है जो हमें आरोग्य और प्रकाश की प्राप्ति होती है.और वो भी तब जब हम अज्ञानवश इन क्रियाओं को कर ये लाभ पा रहे हैं,यदि पूरी जानकारी और एकाग्रता के साथ इन क्रियाओं को पूरे विधान के साथ किया जाये,तब भला क्या असंभव रह जायेगा......... जरा सोचिये......

==

Sooth Rahasyam – Part 5

(Surya Tatva (Sun Element))

As per Sarv Swartmkan rules all the substances found in nature contains everything, it means if an iron is there it is not just the iron, it contains iron and glass but also the rose properties, but more of iron due to the preponderance of the iron element, we see it as an Iron…and if with the help of right practice, the expansion of the main element is being studied, the same element will start showing the other properties also whether it is a flower or some other mass whose properties have been expanded…But, this is not so much easy, because only having knowledge of the subject is not essential and perfection cannot be accomplished just by the knowledge but it can be accomplished only when the knowledge is being converted into the Science…

And the Tantra part only where (the intuitive science theory into action is observed experimentally), we can use the secrets that can explode like that are beyond normal human imagination.

In Vamaniki Shastra, there are many more holy books in which the conversion of the Knowledge

Swarn Rahsyam Part - 5

रस तंत्र और महासिद्ध गुटिका निर्माण रहस्य

रस तंत्र के उत्थान के लिए जितना परिश्रम नाथ योगियों ने किया है,उतना किसी और ने नहीं किया,बल्कि ये कहा जाये की नाथ योगियों से ही इस विद्या के प्रादुर्भाव को सार्थकता मिली है.इन नाथ योगियों ने ही अपनी अथक तपस्या से सृष्टि के उन गोपनीय रहस्यों को आत्मसात किया और उन सूत्रों के सहयोग से विभिन्न क्रियाओं,प्रक्रियाओं ,तत्वों,पदार्थों,वनस्पति का योग पारद के साथ किया और उनके प्रभावों को लिपिबद्ध किया.उसी के परिणाम स्वरुप हमें इस विज्ञानं से सम्बंधित प्रचुर साहित्य प्राप्त हुआ है.रस रत्नाकर, रसार्णव आदि बहुत से ग्रन्थ आज भी प्राप्य हैं और बहुत से ऐसे ग्रन्थ हैं जो की या तो अप्राप्य है या फिर जिनके पास है वो कदापि इन्हें किसी को दिखाना या देना पसंद नहीं करते हैं.मुझे ज्ञात है की १९९४ में सदगुरुदेव ने 'पारद कंकण' नामक ग्रन्थ की रचना की थी और उन्होंने उसे छपवाने के लिए जब प्रेस में कार्यरत गुरुभाई को बुलाया और कहा की वे इस किताब की ५० प्रतियां छपवाना चाहते हैं और वो भी कल सुबह तक.ये घटना रात्रि के ११ बजे की है. परन्तु उन गुरु भाई ने विनम्रता पूर्वक सदगुरुदेव को बताया की सदगुरुदेव इस साइज के पेपर उपलब्ध नहीं हैं और यदि दुसरे साइज के कागजो को उस नाप में काटा भी गया तो भी रात्रि भर में ये नहीं छप पायेगी. सदगुरुदेव ने उस किताब को हाथ में लेकर वही फाड दी. अब ना जाने कौन सा दुर्लभ ज्ञान हमारे समक्ष प्रकाशित होने वाला था,परन्तु हमारा दुर्भाग्य आड़े आ ही गया.

खैर प्रज्ञानंद जी ने मुझे कभी बताया था की सदगुरुदेव के वरिष्ठ सन्यासी शिष्यों ने उनके निर्देशन में ऐसे बहुत से ग्रंथों की रचना की थी जिसमे तंत्र के विविध गोपनीय रहस्यों का संकलन होता था. पर उन्होंने उन्हें कई बार प्रकाशित भी नहीं करवाया.परन्तु ऐसी कई डायरियाँ उनके विविध शिष्यों के पास सुरक्षित रखी हुयी हैं धरोहर के रूप में. उन्ही में से एक ५०० पेज की डायरी मुझे दिखाई जिस पर हस्तलिखित अक्षरों में "रसेद्र मणि प्रदीप" लिखा हुआ था,जिसमे पारद के सहयोग से विविध अचरजकारी गुटिकाओं का निर्माण करना बताया गया था.उसी में एक प्रकरण विविध मन्त्रों और वनस्पतियों के सहयोग से साबर मन्त्रों के द्वारा खेचरी गुटिका,स्पर्श मणि,महासिद्ध साबर गुटिका आदि ५४ गुटिकाओं के

निर्माण पर था.जिसे उच्च नाथ योगियों के आवाहन कर प्राप्त किया गया था.और आश्चर्य ये था की ये सब निर्माण कार्य साबर मन्त्रों के सहयोग से होता है, अद्भुत पद्धतियों का समावेश लिए हुए ये क्रियाएँ थी.सर्वप्रथम जिस गुटिका की निर्माण विधि इस प्रकरण में अंकित थी वो इसी महासिद्ध साबर गुटिका की विधि थी...... जिसके प्रयोग से उन महासिद्धों का न सिर्फ आवाहन होता था अपितु विविध मनोकामनाओं की पूर्ती हेतु जिन भी साबर मन्त्रों को सिद्ध करना होता था,वे सभी सहजता से सिद्ध हो जाते हैं.

इस गुटिका के निर्माण के लिए जिस अष्ट संस्कारित पारद का प्रयोग किया जाता है उसके सभी संस्कार रसांकुश भैरव और भैरवी के मन्त्रों से होता है परन्तु ये मंत्र जप दीपनी क्रम युक्त होना चाहिए,तभी इस पारद में वो प्रभाव आएगा जो इस मणि के निर्माण के लिए अपेक्षित है.तत्पश्चात इसे स्वर्न्ग्रास दिया जाये और इसे मुक्ता पिष्टी के साथ खरल किया जाये,जब पारद के साथ उस पिष्टी का पूर्ण योग हो जाये तब उसे,काले विष, विशुद्ध ताम्र भस्म,बैंगनी धतूरे,सिंहिका,मतस्याक्षी,श्वेतार्क और ताम्बूल के स्वरस के साथ १२० घंटों तक खरल किया जाये,और खरल करते समय-

ॐ सारा पारा,भेद उजारा, देत ज्ञान उजारा ,दूर अँधियारा,शिव की शक्ति उरती आये,भीतर समाये,करे दूर अँधियारा जो ना करे तो शंकर को त्रिशूल ताडे,शक्ति को खडग गिरे,छू .

उपरोक्त मंत्र का जप करते जाये,जब भी रस सूखने लगे तो नया रस डालते जाये ,जब समयावधि पूर्ण हो जाये तो उस पिष्टी को सुखाकर शराव सम्पुट कर २ पुट दे दे,और स्वांग शीतल होने के बाद उस पिष्टी के साथ पुनः मंमालिनी मंत्र का जप करते हुए उस पिष्टी का १० वा भाग पारद डालकर खरल करे और मूष में रख कर गरम करे और धीरे धीरे विल्वरस का चोया देते जाये,लगभग १० गुना रस धीरे धीरे चोया देते हुए शुष्क कर ले.अब आप इसे पिघलाकर गुटिका का आकार दे दे,इस क्रिया में पारद अग्निस्थायी हो जाता है और गुटिका हलके रक्तिम वर्ण की बनती है जो पूर्ण दैदीप्य मान होती है.यदि पारद अग्निसह्य नहीं हुआ तो क्रिया असफल समझो.इस गुटिका को सामने रख पुनः ३ घंटों तक रसांकुश मन्त्रों का दीपनी क्रिया के साथ जप करो और गोरख मन मुद्रा का प्रदर्शन करो.तथा इसके बाद प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रों से इसे प्रतिष्ठित कर इसमें ६४ रस सिद्धों का स्थापन कर दो,फिर षोडशोपचार पूजन कर उस पर आप मनोवांछित प्रयोग कर सकते हैं.इसे कनकधारा मंत्र से यदि २१ माला मंत्र कर सिद्ध कर लिया जाये और पूजन स्थल पर स्थापित कर दिया जाये तो ये गुटिका लक्ष्मी को बाँध देती है जिससे व्यक्ति को प्रचुर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती ही है.

==

अष्ट संस्कारित पारद को यदि स्वर्णग्रास देकर कांच की बोतल में गधे के ताजे मूत्र के साथ डालकर जमीन में गडा दिया जाये तो ६ मास के बाद पारद की स्वतः भस्म बन जाती है और ये भस्म ताम्बे को स्वर्ण में परिवर्तित करती है.

==

SWARN RAHASYAM-Part 5

RAS TANTRA AUR MAHASIDDH GUTIKA NIRMAN RAHASYA

For the development of Rass Tantra the hard work and devotion performed by yogis nobody else could do the same that's why we can say that this science is presented in its present full fledge form just because of them. It was the same yogis who with their strong reverence explored the hidden aspect of nature and

Lakshmi Sadhana

प्रयोग

सम्पतिवान बनना कोई हेय कार्य नहीं है, हम अर्थ सम्प्पन बने और प्रभु के दिए इस जीवन को वैभव के साथ जिए. मनुष्य जीवन के चार मुख्य पक्ष मे त्याग सब से अंत मे रखा गया है, इसके पीछे का चिंतन यही रहा होगा की हमें जीवन के सर्व पक्षों को जान कर ज्ञान को अर्जित करना चाहिए. बिना किसी भी चीज़ के अनुभव किए सिर्फ उसे हे द्रष्टि से देख कर उसका त्याग करना कितना उच्चित है कहा नहीं जा सकता. हमारे ऋषियो ने भी अपने जीवन को पूर्ण वैभवता के साथ जिया है. वे श्री सम्प्पन थे और साथ ही साथ साधनाओ की ऊंचाईयो पर भी, जीवन को भौतिक व् आध्यात्मिक रूप से उन्होंने संयत किया था और जीवन के हर एक पक्ष को साधनाओ से निखार कर पूर्णता को प्राप्त की. इसी से जीवन मे अर्थ के महत्वपूर्ण स्थान के बारे मे कल्पना की जा सकती है. साधनाओ के माध्यम से हम अपनी न्यूनताओ को दूर करे और अपने जीवन को उल्लास के साथ जिए, ऐसा ही हमारे पूर्वजो का ऋषिमुनियों का चिंतन रहा होगा और इसी क्रम मे विविध साधनाओ का प्रादुर्भाव हुआ. हमारी न्यूनताओ को हटाना हमारा हक है और इसके लिए हमारे पास है हमारे पूर्वजो का आशीष व् मार्गदर्शन उनके द्वारा प्रणित साधनाओ के रूप मे. ऐसे ही कुछ चुनी हुयी साबर साधनाए निचे दी जा रही है.

वैभव साधना:

साधना को शुक्र वार से शुरू करे.

समय रात्रि मे १० बजे के बाद का रहे

स्नान के बाद अपने सामने लक्ष्मी के चित्र या यन्त्र को स्थापित करे और उसे कुमकुम से तिलक करे

इसके बाद कमलगट्टे के माला से निम्न मंत्र की २१ माला करे

ॐ वैभव लक्ष्मी वैभव प्रदाय संकटनाशिनी नमः

उसके बाद लक्ष्मीजी को सफलता प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे

यह क्रम अगले शुक्रवार तक करे. अंतिम रात्रि मे मंत्र जाप के बाद इसी मंत्र से शुद्ध घी की १०१ आहुति अग्नि मे समर्पित करे.

साधना पूरी होने के दूसरे दिन यथा संभव कन्याओ को भोजन कराये और दक्षिणा देकर संतुष्ट करे...

यह साधना से जीवन मे पूर्ण वैभव को प्राप्त किया जा सकता है और साधना पूरी होते ही जीवन की प्रगति चमत्कारिक रूप से बढ़ जाती है.

****

अष्टलक्ष्मी प्रयोग:

यह प्रयोग उनके लिए अत्यधिक उपयोगी है जिनको लंबे अनुष्ठान के लिए समय नहीं मिलता

इस प्रयोग मे साधक के पास अष्टलक्ष्मी यन्त्र होना चाहिए, सुबह स्नान करने के बाद यन्त्र के सामने लक्ष्मी देवी को भोग लगाये और यन्त्र के सामने खड़े खड़े ही एक माला निम्न मंत्र का स्फटिक माला से जाप करे.

ॐ अष्टलक्ष्मी भोग मोक्ष प्रदायिनी द्रव्यसिद्धिम कुरु नमः

उसके बाद लगाया हुआ भोग प्रसाद के रूप मे ग्रहण करे.

भोग लगाने से पहले कुछ भी ग्रहण नहीं करना चाहिए. इस मे और कोई विशेष नियम नहीं है. साधक इसे नियमित रूप से करता रहे. जीवन मे उत्तरोत्तर प्रगति मिलती रहेगी और आय के नए स्त्रोत सामने आते जाएँगे.

****

To become rich is not at all cheap from any point; we should be rich and should live life with

Why Sabar Sadhana ?

इन साधनाओं के सामान्य नियम /उपनियम आपके सामने ...

साधना जगत की विशालता के बारे मैं इतना ही कहा जा सकता हैं की कभी भगवान् बुद्ध के शिष्य आनंद ने उनसे पूछा था की उसका स्वयं का ज्ञान कितना हैं फिर भगवान् का ज्ञान कितना हैं और आखिर सम्पूर्ण ज्ञान कितना हैं , भगवान् बुद्ध ने हस्ते हुए कहा की जितने वृक्ष इस सम्पूर्ण जंगल में हैं उनसभी के कुल पत्ते बराबर सम्पूर्ण ज्ञान राशि हैं, मैं जिस पेड़ के नीचे खड़ा हूँ उतनी मेरी ज्ञान राशि हैं ओर इस पेड़ के जितने पत्ते नीचे गिर पड़े हैं उतनी तुम्हारा ज्ञान हैं . ठींक यही बात साधना क्षेत्र पर भी पूर्णत: से लागु होती हैं ,

एक और जहाँ शमशान साधना हैं दूसरी ओर अघोर साधना हैं फिर चाहे वह सात्विक हो या तामसिक हर जगह इन साबर मन्त्रों का प्रचलन पाया जा सकता हैं . ऐसी क्या विशेषता हैं इन मन्त्रों की ..

जब वैदिक कर्म काण्ड युक्त मंत्रो का काफी प्रचलन हो गया पर उसके ज्ञाता अनेकों बातों पर इतना अधिक जोर देते थे की विद्या सुपात्र के अभाव में समाप्त से होती जा रही थी वही दूसरी ओर युग धर्म के अनुसार लोग भी जितनी सुचिता रखा चाहते थे नहीं रख प् रहे थे तब इस विडम्बना को देखते हुए भगवान् शिव ने इन मन्त्रों की रचना की जो की अपने आप में अद्भुत हैं कीलित भी नहीं हैं सरल हैं श्रेष्ठ हैं तीव्रता युक्त हैं साथ ही साथ इन की

सिद्धिता करने के लिए कोई साधारण तयः कोई विशेष नियमों की आवश्यकता भी नहीं हैं.

ये इतने सरल हैं पर कई बार उच्च कोटिके तंत्रज्ञों को भी इनकी प्रभाव क्षमता को दख कर दाँतों तले अंगुलिया दबाना पड़ जाती हैं. क्या इनकी क्षमता मात्र कुछ छोटी क्रियाओ तक ही हैं , नहीं ऐसा नहीं हैं यक्षिणी साधना से लेकर उच्च कोटि की महा विद्या साधना भी इनके माध्यम से संपन्न की जा सकती हैं .

जन मानस का विश्वास हैं की गुरु गोरखनाथ द्वरा यह मंत्र प्रचलित हुए कई लोगो का विस्वास ये भी हैं की इसी परंपरा में चर्पटीनाथ ने यह प्रचलित किये हैं पर जो भी हो इन मंत्रो की प्राचीनता ओर प्रभावशालिता पर किसी भी प्रकार का संदेह तो किया जा ही नहीं सकता हैं .

इन मनीषियों ने अनथक श्रम करके ऐसी विधिया सामने प्रस्तुत की जिनकी तो कोई सानी ही नहीं नहीं. आप में से जिन्होंने पत्रिका के पुराने अंको में शाहों के शाह : साबर शाह " लेख पढ़ होगा वह ये तो बखुब जानते होंगे की , लड़की से लड़का बना देना, पुरे नगर को एक जगह से दुसरे जगह पंहुचा देना , भुत प्रेतों से अपने घर के कार्य करवाना ओर भी कई चमत्कार उन्होंने दिये थे ओर उनकी विधिया भी पूर्णता के साथ बताई थी.

पर कुछ विशेष नियम या ऐसे कहे की महत्वपूर्ण नियम भी जान लेने चाहिए ,

क्योंकि साधना को कभी भी आसानी से लेना नहीं चाहिए वह से सर्व काल से गंभीरता का ही विषय हैं , फिर जितना हम उसे अच्छे से लेंगे उतना ही परिणाम हमारे मनोकुल प्राप्त होंगे.

यु तो सफलता के लिए बहुत से कारण हो सकते हैं ओर इसी तरह असफलता के लिए भी कहा जा सकता हैं , आएये हम एक एक कर कुछ नियम पर बात करे ...

1. इन साधनाओ को कभी भी रात या दिन में किया जा सकता हें .हाँ जहाँ पर विशेष रूप से समय का निर्देश दिया गया हो वहां अवश्य ही पालन करें.
2. इन साधनाओ को पीले रंग के वस्त्र धारण कर करे , पर किसी साधना विशेष में उसके वस्त्र के निर्देश का पालन करे .
3. धूप ओर लोहबान का अपना ही महत्त्व हैं
4. गुरु पूजन ओर गुरु ,मंत्र के महत्त्व को आप नकार नहीं सकते हैं इसका तो अपना ही महत्त्व हैं
5. हर साधना के पहले ओर बाद में सदगुरुदेव पूजन हरहाल में करें ही
6. साधना के लिए न केबल अपने गुरु देव पर ,साधना सामग्री पर, विधिपर बल्कि अपने पर भी उतना ही विश्वास होना ही चाहिए ही.
7. साबर साधनों को ऐसे तोकभी भी किया जा सकता हैं पर यदि विशिष्ट दिवस पर या विशिष्ट महूर्त पर किया जाये तो विशेष सफलता प्राप्त ही हैं.
8. साबर साधनों से सम्बंधित दीक्षा भी यदि प्रस्कारले तो सोने में सुहागा की स्थिति भी निर्माणित हो जाती हैं .
9. साबर यन्त्र की स्थापन भी जरुर करे.
10. यु तो व्यापार या नौकरी कार्य भी किया जा सकता हैं उसके लिए कोई प्रति बन्ध नहीं हैं ,
11. यदि दो साबर मंत्रो सिद्ध करने जा रहे होतो उनके साधना प्रयोग एक के बाद एक न करे बल्कि कुछ घंटे का अंतराल जरुर रखे .
12. साबर साधनाओ में भय की स्थिती नहीं आती हैं पर यदि आये तो आसन ना छोडे नहीं , न ही भयभीत हो.
13. कुछ साधनाओ में गायत्री मन्त्र जप उस दौरान न करे .

14. यदपि साधनाओ में सफलता पर यदि प्रथम प्रयास में कुछ कारणों से नहि मिल पाए तो पुनः पुनः प्रयास करे .
15. नवग्रह या दशा अन्तर्दशा अनुकूल न चल रही हो तो तबभी साधना में असफलता नहिमिल पाती हैं तो नवग्रह को अनुकूल करने की साधनाओ परभी ध्यान रखे ही .
16. साबर साधनाओ के माध्यम से किसी को भी कष्ट पहुचने का प्रयास न करें ,न ही वशीकरण विद्या का प्रयोग अपनी स्वार्थता के लिए न करे. इस हाल में वह मंत्र निष्फल हो जाता हैं वह देव भी रुष्ट होकर आपके विरूद्ध होजाते हैं ,
17. ग्रहण काल तो भाग्य से ही मिल पता हैं ओर उसे साबर साधना में यदि उपयोग करे यदि किसी का मानस हैं तो वह अत्यंत श्रेष्ठ समय होता हैं .
18. यदि मुस्लिम मंत्रो का प्रयोग हो तो ध्यान रखे की उनमें माला उलटे ढंग से फेरी जाती हैं ओर वज्रासन में बैठना होता हैं .ओर धोती की जगह ,लुंगी का प्रयोग होता हैं.
19. सुचिता ओर शुद्धिता की विशेष अनिवार्यता तो नहीं रहती पर किसी भी साधना में यह करना ठीक ही रहता हैं .

ये तो साधारण नियम हैं पर कुछ ऐसे साधनात्मक प्रक्रिया ऐसी हैं जो आप को सफलता के एकदम सामने ला खड़ा करदेती हैं .. क्या हैं वह ..बस अगले किसी लिख में ..

****

Why Sabar sadhana has so much importance......

One upon a time Anand the disciple of Bhagvaan buddh asked to him that how much the total knowledge exists in this universe and what is his total knowledge and what about him. On listening this question , Bhagvaan buddh smile and said the total number of leaves exist in this forest , such is the number of knowledge and the total number of leaves on this tree ,inside that we are sitting is mu knowledge and the leaves falls on this tree is your knowledge. Same thing is applicable to sadhana kshetra. -

On one place where there is shamshan sadhana other place direction Aghor sadhana , either through saatvik way or tamsik ways , everywhere theses sabar mantra is found applicable . what is the specialty is of theses.

When vadaik mantra was in highly practices but the problem was their expert presses too much on various ritual , on because of that the knowledge , the exponent of the vidya are very few. And due to changing condition in person out look the purity of body and mind are not as it should be as per the vaidik mantra experts asked. On seeing this situation Bhagvaan shiv created theses mantra known as sabar mantra, they are a very

Importance Of Sabar Yantra

साबर यन्त्र की महत्त्व पूर्णता

अब सफलता कहाँ दूर हैं ......

हर किसी का सपना यह होता हैंकि कितनी जल्दी उसे साधना में सफलता मिल जाये , पर हम कभी जानने की कोशिश ही नहीं करते की यह साधना जगत अपने आप में कितनी गूढता रखे हुए हैं जहाँ मात्र कोई तात्कालिक लाभ प्राप्तकरने की कोशिश हैं वहां पर तो कोई भी प्रयोग चल सकता हैं, पर जब हम इस क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं . तब हमें धीरे धीरे इस जगत की सारी चीजे सीखनी ही पड़ेगी यह निश्चित की यह सब एक रात या दिन में नहीं होने वाला बल्कि धीरे धीरे हमें एक एक सूत्र सिखने होंगे एक एक गूढता और दुरुहता तो सीखनी ही होगी और इसकी भाव भूमि को भी ह्रदयंगम भिकारन पड़ेगा भी , तभी तो हम अपने आप को सदगुरुदेव भगवान का एक सच्चा शिष्य होने की दिशा में आगे बढ़ पाएंगे.सदगुरुदेव सच में चाहते हैं की हम इस क्षेत्रमें विशिष्ट ता प्राप्त कर पाए.

पूज्य सदगुरुदेव जी का यह सपना रहा हैं की उनका हर शिष्य अपने आप में विशिष्ट हो किसी भी क्षेत्रमें पर हो अपने आप में अद्वितीय .सम्पूर्णता के साथ पूरी विशेज्ञता उसे प्राप्त हो पर उसे यह कठिन श्रम ओर सच्ची श्रद्धा से प्राप्त करना ही होगा. परन्तु साथ ही साथ उसे एकांगी भी नहीं होना हैं , उसे तो हर हाल मेंसब सीखना ही हैं

आप जानते ही हैं की शिष्य /शिष्या शब्द का अर्थ ही हैं वहजो हमेशा सीखने को तैयार रहे .

तोहम साधना के इस भाग में कैसे सफलता प्राप्त कर सकते हैं, जिसे साबर साधना कहते हैं यहाँ इसमें सबसे महत्वपूर्ण

तथ्य यह हैं की श्रद्धा ओर बिस्वास आपका आपके गुरु के प्रति हर हाल में अडिग ही रहे , कोई भी परिस्थिति उसे डिगा नहीं पाए . क्योंकि अधिकांश साबर साधना में आप पायेगे की कुछ शब्द बार बार आयेंगे जैसे" मेरी भक्ति ओर गुरु किशक्ति " तोफिर इस शब्द श्रन्खला का कोई अर्थ होगा .इस पत्रिका के आगे आने वाले लेख में आपन इन मंत्रो में सफलता पाने के अभी तक गोपनीय रहस्य पायेगे. इस लेख मैं केबल उन बिन्दुओ की चर्चा कर रहा हूँ जो की आपके लिए जरुरी होगा .

सदगुरुदेव भगवानने कई बार इस थे की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कराया हैं की अगर हमें साधना में सफलता पानी हैं तो प्रामाणिक सही साधना सामग्री चाहिए ही हैं जो की पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित हो ही. बिना उसके कैसे एक साधक सफलता प्राप्तकर सकता हैं.अब आप सोचेंगे की हम ये साधना सामग्री कहाँ से प्राप्तकर पाएंगे तोक्यों नहीं सदगुरुदेव जी ने हमेशा से कहा हैं की जोधपुर ओर दिल्ली गुरुधाम से प्राप्त साधना सामग्री तो हमारे लिए ही तो तैयार करायी जा ती हैं, तो इस हेतु साधक बिना किसी भी हिचक के साधना सामग्री प्राप्तकर साधना करसकते हैं. तो जैसे ही हमें सही साधना सामग्री प्राप्त होती हैं हम अपनी साधना प्रारंभ कर सकते हैं .

नहीं

अभी भी कुछ ऐसे बिंदु हैं जिन्हें जानना जरुरी हैं मान लीजिये किसी कारण वश कोई साधना सामग्री आप प्राप्त नहीं कर पाए , या साधना काल में कोई आपने गलती कर दी तब ?इस तरह की सभी संभावनाओ के मद्दे नज़र हमें हमारी गुरु परंपरा से एक यन्त्र मिला हैंजो हम कभी समझ नहीं पाए , जिसके बारेमें सदगुरुदेव जी ने कई बार अपनी पत्रिका में हमें समझाया हैं और वह वरदान स्वरुप यंत्र हैं " साबर यन्त्र ".

यहाँ पर हमें न केबल मन्त्रों के बारेमें ही सीखना हैं वरन हमें इससे जुड़े अनेक चीजे जैसे यंत्रों के बारे में भी सीखना हैं क्या कोई यन्त्र हमें सफलता ज्यादा जल्दी दिला सकता हैं क्यों नहीं. यन्त्र वास्तवमें एक किले नुमा आकृति हैं जिसमें सम्बंधित देवी देवता के साथ उनकी सहयोगी शक्तिया भी निवास रत रहतीहैं, अभी भी ज्ञान की इस शाखा का पूरी तरह उपयोग नहीं हुआ हैं , इस क्षेत्र में अभी भी खोज के लिए अत्यधिक जगह हैं पता नहीं कितने रहस्य अपने खुलने की बाट जोह रहे

हाँ यह सत्य हैं

यह यन्त्र उन सभी के लिए बेहद उपयोगी हैं जो की इन साधना के क्षेत्र में आगे जाने के लिए अत्यधिक उत्सुक हैं ही यह यन्त्र साधना काल की अनेको कमियों को दूरकर साधक को सफलता की ओर अग्रसर कर सकता हैं यह यन्त्र तो हर साधक के पास होना ही चाहिए इसलिए नहीं की सदगुरुदेव भगवान् ने ने कहा हैं बल्कि इसलिए भी उनके अनुसार अनेको साधना इस यंत्र पर की जा सकती हैं , पता नहीं कब गुरुदेव कोई साधना इस पर भी दे दे , फिर पता चले यन्त्र मगाने के लिए समय /धन न हो, तो इस प्रकार का यन्त्र अपने पास रखना ही चाहिए. .

****

Sabar Yantra

(Now how for the siddhi in sabar mantra sadhana……)

Divine Mudra's Of Nath Sect

नाथ जगत की अद्भुत दिव्य मुद्राएँ

क्या अब भी आप इन्हें नहीं करना चाहेंगे

मुद्रा विज्ञानं के अंतर्गत कई एसी मुद्राओ का अभ्यास होता हे जिससे साधक साधनाओ की उत्च्तम स्थिति को प्राप्त कर लेता हे. तंत्र में मुद्रा को एक अत्यधिक आवश्यक अंग माना गया हे, और मुद्राओ का अभ्यास करने वाला साधक तंत्र में तीव्र गति से सफलता प्राप्त कर सकता है. सभी प्रकार की साधनाओ में मुद्रा का एक महत्वपूर्ण स्थान हे और इसी के अंतर्गत मुद्राओ के कई प्रकार हे. शक्तिओ को आकर्षित कर के केन्द्रीभूत करना मुद्राओ मुख्य कार्य है तथा मुद्राओ का आधार पंचतत्वों का नियमन हे. उंगलियां पंचतत्वो की प्रतिनिधि हे व् इनको निर्देशित दिशा में गतिविध करने पर शारीरिक तत्वों में परिवर्तन होने लगता हे जिसका सीधा सम्बन्ध परा जगत से होता है.

मुद्राओ का महत्व सिर्फ मात्र एक तथ्य पर भी जाना जा सकता हे की इन्हें वामाचार के मुख्य पंचमकार में भी यह एक अंग है. यु मुद्राए न सिर्फ आध्यात्मिक वरन भौतिक सफलताओ के लिए भी बराबर महत्व पूर्ण है. नाथ योगियो के मध्य गुप्त रूप से ही सही लेकिन कुछ एसी महत्वपूर्ण मुद्राओ का अभ्यास गुरु मुखी परंपरा से कराया जाता हे की साधक अत्यंत ही सहज प्रयास में वह सब कुछ हासिल कर लेता हे जो उसका अभीष्ट होता है, एसी मुद्राओ का उलेख्ख किसी ग्रन्थ में नहीं किया गया था ताकि इसका दुरुपयोग न हो सके और योग्यता वां व्यक्तियो को ही मात्र इसका ज्ञान हो सके. नाथ तंत्र दीक्षा के बाद इस प्रकार की मुद्राओ का अभ्यास अत्यंत गुप्त रूप से चुने हुए शिष्यों को कराया जाता है. कई नाथ संप्रदाय के महायोगी सिर्फ मुद्राओ के माध्यम से ही अष्टसिद्धियो को प्राप्त कर चुके हे. पूज्य श्री निखिलेश्वरानंद जी ने अत्यधिक कृपा कर के मुझे

कई एसी दुर्लभ मुद्राओ का ज्ञान दिया था. उन मुद्राओ का प्रभाव देख कर चमत्कृत व् दंग रह गया था में. आज उन्ही मुद्राओ में से कुछ मुद्राओ का उल्लेख में आगे कर रहा हू.

दिव्यात्मा आकर्षण मुद्रा:

अंगुष्ठ को मध्यमा अंगुली के निचे स्थापित करे. फिर मध्यम को अंगुष्ठ के ऊपर हथेली तक मोड दे. बाकि तीनों अंगुलिया सीधी रहे. दोनों हाथो में यही क्रिया हो, उसके बाद परस्पर दोनों हाथो को जोड़ दे. यह दिव्यात्मा आकर्षण मुद्रा बनती हे जिससे सिद्ध जगत की दिव्यात्माओ का आकर्षण होता हे. इस मुद्रा को यथा संभव ३० मिनिट तक ब्रम्ह मुहूर्त में और ३० मिनिट सोने से पहले अभ्यास करना चाहिए. इस मुद्रा के अभ्यास से साधक को दिव्यात्मा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में सहायता प्रदान करती है और साधना का मार्ग प्रसस्त करती है, अगर नियमित रूप से साधनात्मक नियमों के साथ इस मुद्राका साधक ११ दिन तक अभ्यास कर लेता हे तो उसे स्वप्न में दिव्यात्मा का दर्शन सुलभ होता है और साधक उनसे स्वप्नावस्था में साधना सबंधी प्रश्न पूछ सकता हे एवं उनका मार्गदर्शन ले सकता हे.

सिद्धनाथ दंड मुद्रा:

बाये हाथ की सभी अंगुलियों को मोड के हथेली तक लाया जाए. अंगुष्ठ सीधा तना हुआ रहे. अब दायें हाथ की अंगुलिओ से बाये हाथ के अंगुष्ठ को ऊपर से पकड़ा जाए, तथा दाये हाथ का अंगुष्ठ सीधा रहे. इस मुद्रा में दायाँ हाथ ऊपर और बाया हाथ निचे रहेगा. इसे सिद्धनाथ दंड मुद्रा कहते हे. इसका अभ्यास करते वक्त आंखे बांध रहे व् ध्यान नाभि पर रहे. इस मुद्रा का अभ्यास करने वाले साधक की ज्ञानशक्ति अत्यधिक बढ़ जाती हे और उसे सृष्टि के कई गोपनीय रहस्य अपने आप ही समज आने लगते हे, ज्ञान शक्ति बढ़ जाने पर उसे कई विविध प्रकार के चमत्कारिक अनुभव स्वयं ही होने लगते हे और साधना के गोपनीय रहश्य उसके सामने थिरकने लगते हे. स्थायी रूप से इस मुद्रा का अभ्यास करने पर कई सिद्धिया साधक को स्वतः ही प्राप्त हो जाती हे.

मंजरी मुद्रा:

दोनों हाथो तर्जनी अनामिका व् मध्यमा अंगुलीओको हथेली की तरफ मोड दे व् प्रथम अंगुली को एक दम सीधा रखे अंगुष्ठ को सीधा कर दे. अब दोनों हाथो के अंगुष्ठ को एक दूसरे से स्पर्श करने पर मंजरी मुद्रा बनती हे.

इस मुद्रा की जीतनी प्रशंशा की जाए कम है, इस मुद्रा के नियमित अभ्यास से व्यक्ति का मोह कम हो जाता है, उसमे साधना के प्रति एक आदर भाव उत्प्पन होता हे, साधना के लिए अनुकूल स्थिति उसे प्राप्त होती रहती है, यह मुद्रा आनंद कोष को जागृत करती हे फल स्वरुप साधक चाहे संसार के बाहरी क्रियाकलापों में हो या किसी भी कार्य में हो, अंदर से वो हर पल एक आनंद में डूबा रहता हे और अपने आप में ही खोया हुआ वह प्रकृति से एक कार हो जाता हे. वास्तव में यह मुद्रा अत्यधिक गुप्त हे क्यूंकि योगतंत्र की उच्चतम साधनाओ के लिए जिस प्रकार की भावभूमि साधक में होनी चाहिए यह मुद्रा उसी का ही स्थापन करती है.

****

Nath Yogiyon ki Adbhut divya mudraye

(Amazing divine hand gesture of Nath Yogies)

ASTROLOGY

चंडाल योग का प्रभाव

क्या हैं यह योग ओर कैसे इसके प्रभाव से बचे

मानव जीवन को प्रभावित करने वाले ९ ग्रहों में राहू अकस्मात् घटने वाली घटनाओं का चाहे वो अच्छी हों या फिर बुरी का सबसे बड़ा कारक है और काल सर्प जैसे तथा कथित योग की तुलना में इसका चंडाल योग कही ज्यादा भयानक है। राहू अत्याधिक आश्चर्य जनक प्रभावों से भरा हुआ ग्रह है जो की कई गुणों के साथ साथ विभिन्न दोषों से युक्त है.पाप ग्रहों में तो इसका स्थान ऊपर है ही. चंडाल योग का निर्माण कैसे होता है?......

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बृहस्पति पर इसकी पूर्ण दृष्टी या युति होने पर इस योग का पूर्ण सृजन होता है .क्या आपने कभी सोचा है की राहू का स्वरुप कैसा है......

इस छाया ग्रह का पौराणिक मान्यता के अनुसार शीश ही है धड है ही नही, अब आप ही सोचे की दुष्ट बुध्दी यदि ज्ञान से भरी होगी तो वह ज्ञान बुरे कार्यों के लिए ही प्रयुक्त होगा. इस प्रकार यह राक्षस बुद्धि, बृहस्पति जैसे ज्ञान दाता के प्रभाव से प्राप्त जातक की बुद्धि को भी उलट कर रख देता है.और ऐसे में वह विकृत ज्ञान क्या अनिष्ठ नही कर सकता? चंडाल योग के फल स्वरुप भाग्य हीनता ,मंद बुद्धिता,असंतोष व घावों की वृद्धि होती है. जातक इस योग के कारण जब भी किसी महत्वपूर्ण कार्य को संपन्न करने के लिएतैयारी करता है अचानक उसके कार्यों में विघ्न आने लगते

हैं.जिससे कार्य को वो सही तरीके से कर ही नही पाता जबकि उसकी तैयारी सटीक होती है. बुद्धि को अपराध की और अग्रसर करने में इस योग का स्थान महत्त्वपूर्ण है.क्यूंकि ये योग असंतोष का करक योग है .और तो और एक साधक यदि इस योग का शमन किये बगैर कभी भी अध्यात्मिक उच्चता को प्राप्त नहीं कर पाता , आसन की अस्थिरता , मंत्र जप में मन का न लग्न, साधना काल में ग़लत व गंदे विचारों का उपजना , साधना से मन का उचाट हो जाना भी इस योग का महत्वपूर्ण लक्षण है. व्यक्ति अथक प्रयास कर उन्नति की और जाना चाहता है पर एकदम मंजिल के करीब पहुच कर असफलता की प्राप्ति इसी योग के प्रभाव से होती है .

मित्र व जीवन साथी के द्वारा विश्वाश घात की स्थिति का ये जनक योग है . जीवन में आए प्रगति के अवसरों को नष्ट करने का कार्य यही योग करता है।

इस योग से मुक्ति के लिए सदगुरुदेव से" ग्रह बाधा निवारण दीक्षा" और राहू की अनुकूलता के लिए गुरु निर्देशित अनुष्ठान या चंद्र मौलिश्वर प्रयोग को पारद शिवलिंग पर करने से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है और जीवन में नकारात्मक अकस्मात का परिवर्तन सकारात्मक अकस्मात में हो जाता है

****

The effect of chandal yog

The planet Rahu is biggest karak of any event positive or negative happen in human life. So called Questionable yoga like "kaal sarp" (we do not believe this yog , reason already we have discussed) has stand nowhere compare to the "chandal yog" formed by Rahu . the planet Rahu is having very amazing quality , it has very positive quality and side by side having same degree of powerful negative quality . in malefic planet list , it stand on the top position.

But how this "chandal yoga" is formed.? According to jyotish shastra when Rahu directly aspect to the planet Jupiter or associated with Jupiter in any bhav of an horoscope/ janm kundli, than this yoga is formed.

Have you ever thought what is the form of Rahu?

According to puranik belief , it has only head no lower portion. Than it can easily be concluded if evil mind has gyan than that gyan will be used for malefic work only. So this planet , has a very adverse effect on the person gyan that he has got because of

Secret Of Nirgad Dwar

परम गोपनीय निर्गद द्वार रहस्य

पहली बार यह रहस्य अनावृत सिर्फ आपके लिए

दूर से ही विशाल वटवृक्ष नज़र आ रहा था, जो अपने आप में एक अलग आभा लिए हुए था. रात्री का प्रथम प्रहार ही था और किसी एक कार्य के लिए मुझे परमहंस निखिलेश्वरानंदजी के

तत्वाश्रम में पहोचने का और उनके दर्शन करने का मौका मिला था. उसी वट वृक्ष के निचे एक अत्यंत ही विशाल आसन पर सदगुरुदेव निखिलेश्वरानदजी अपने पूर्ण रूप में विराजमान थे. सामने कुछ शिष्य गण भी थे जो की अत्यंत विनम्रता से बेठे हुए थे. उनसे दसेक कदम दूर में खड़ा हुआ और नमस्कार किया, लम्बी जटाए, सुगठित शरीर और उनका तेजश्वी मुखमंडल, दिव्य गंध से ओत प्रोत सम्मोहित करता हुआ वातावरण,

वे कुछ सन्यासी गुरु भाइयो को निर्गद द्वार के बारे में बता रहे थे...तभी न जाने कहा से धूम्र का एक गुब्बारा सा प्रकट हुआ. सदगुरुदेव ने उसे हाथ में लिया और अत्याषिक आश्चर्य के साथ मेने देखा की वह उस धूम्र को अपने हाथो से आकार दे रहे हे, जेसे कोई कुम्हार अपने हाथ में मिटटी लेके उसे मनचाहा आकार दे देता हे ,उतनी ही या यु कहू की उससे भी कही अधिक सहजता से वह धूम्र उनके हाथो में गोलक के

रूप में परावर्तित हो गया. कुछ देर बाद उन्होंने उस गोलक को खींचना शुरू किया और कोई रब्बर की तरह वह लम्बा से लम्बा होता गया और कुछ अंडे के आकर का दिखाई देने लगा. लेकिन उस के बिच में कुछ अजीब

सा खिंचाव आ गया था और धूम्र के उस गोलक में सिर्फ किनारा ही जेसे धूम्र का रहा हो और बाकी अन्दर का भाग कुछ अलग ही रहा था. कुछ ही क्षणों में वह ३-४ फीट का हो गया तो हमने देखा की धूम्र की एक इंच किनारी के अलावा अन्दर जेसे पूरा एक भूभाग बन गया हे जब की वह हर तरफ से मात्र १ इंच से ज्यादा मोटा नहीं था पर दूर से ही उसमे सेकड़ो फीट का रास्ता दिख रहा था, उससे भी आश्चर्य यह था की वह कभी लाल, कभी सुनहरा तो कभी नीला तो कभी कोई अलग ही रंग का दीखता या फिर एक साथ कई रंग. बड़ा ही विचित्र द्रश्य था. तभी सदगुरुदेव परमहंस निखिलेश्वरानंदजी ने सबको संबोधित करते हुए कहा की यही वह निर्गद द्वार हे जिसकी में चर्चा कर रहा था, यु इसका निर्माण कई तरीको से हो सकता हे लेकिन तुम सब को मेने धूम्र विज्ञानं के माध्यम से इसका निर्माण कर के दिखाया हे, अगर कोई व्यक्ति अपने मन से किसी भी स्थान पर जाने की इच्छा रखते हुए इसमे प्रवेश करे तो तत्क्षण वह इसमे प्रवेश के साथ दूसरी तरफ ठीक वही स्थान पर निकलेगा जहाँ उसे जाना हे...इसका उपयोग सिद्धयोगी सूक्ष्मजगत से लेके अन्य किसी भी लोक में प्रवेश करने के लिए करता हे, साथ ही साथ अपना कार्य समाप्त करने पर वह उसी तरह निर्गद द्वार में प्रवेश कर के अपने स्थान पर वापस आ जाता हे और इस अवधि तक उस निर्गद द्वार का अस्तित्व बराबर बना रहेगा. एसे कई निर्गद द्वार पृथ्वी के अलावा अन्य लोक में स्थायी रूप से हे जिसका उपयोग सिर्फ सिद्धो के द्वारा ही संभव हे, इतना कहके उन्होंने अपने एक सन्यासी शिष्य को अपनी उंगली से इशारा किया. वह सन्यासी आगे बढे और ३ - ४ फीट लम्बे और महज १ इंच चौड़े उस निर्गद द्वार में धीरे से प्रवेश कर गए जबकि आश्चर्य यह था की वह दूसरी तरफ दिखाई नहीं दे रहे थे ,...गुरुदेव ने कहा की वह दिव्यलोक में घूमने गया हे, वह आ जाए उसके बाद एक एक कर के अन्दर जा के देख लेना. इतना कहके उन्होंने सीधे मेरी तरफ ताका में तो अभी जो भी देखा वह नशे में ही था..जब वह हलके से मुस्कुराये तो मुझे होश आया और मेने वही से खड़े खड़े उनकी अभ्यर्थना में दंडवत किया, जल्द ही उन्होंने मुझे सन्देश दे दिया जो मुझे पहोचाना था.समय बहोत कम था , में उन्हें नमस्कार करके वापस लौटने के लिए पीछे मुडा, न चाहते हुए भी एक द्रष्टि उस द्वार पर पड़ ही गयी वह अपनी जगह पे शून्य में स्थिर था और वह सन्यासी जो उसमे प्रवेश कर गए थे वे बहार आ रहे थे और दुसरे सन्यासी उसमे प्रवेश करने वाले थे...में सोचता हुआ चल पड़ा की हम कितने तुच्छ और बेपरवाह जीवन को जी रहे हे क्यूँ की जो हम जानते हे वह मात्र हमारे जानने का भ्रम हे,ज्ञान अनंत हे जो की सिर्फ सदगुरु के चरणों में बैठ के ही मिल सकता हे

खैर, कुछ दिनों बाद एक और घटना इसी सबंध में देखि.

आओ, कुछ दिखता हु इतना कह के राघवदास बाबाजी आगे बढ़ गए,में ठीक उनके पीछे चल रहा था, उनके साथ चलना मेरे लिए गर्व की बात रही हे, सदगुरुदेव के वे वरिष्ठ सन्यासी शिष्य हे और सदगुरुदेव के आदेश से ही उनसे मिलने का मौका मिला था. कुछ मिल घनेजंगले में चलने पर एक

जगह वह रुके और कुछ जाड़ियाँ हटाते हुए वे कुछ कदम आगे बढे,वहा पे एक बहोत बड़ी पहाड़ी चट्टान से सट के चारो तरफ से विशाल वृक्षों से घिरी हुई एक कुछ १० फीट करीब लम्बी और उतनी ही चौड़ी सपाट जमीन थी, मुझे उसमे कोई खास विशेषता नज़र नहीं आई मगर वहा पे कुछ ज्यादा ही उर्जा का अनुभव दूर से ही हो रहा था. बाबाजी ने कहा की यह एक निर्गद द्वार हे जिसका निर्माण मेने सदगुरुदेव के आदेश से किया हे,

यहाँ के आसपास के सिद्ध इस निर्गद द्वार का उपयोग किया करते हे जिससे उनकी गति पृथ्वी के अलावा ने लोक में भी बनी रहती हे और कई गुप्त आश्रम, अद्रश्य आश्रम व् सूक्ष्म आश्रम में तत्क्षण पहोचने के लिए इसका उपयोग होता आया हे....में आश्चर्य से उनकी और देख रहा था, उन्होंने कहा की तेरी इच्छा एसे कोई निर्गद द्वार को देखने के लिए थी जो स्थायी हो इस लिए तुजे दिखा दिया वर्ना यह अत्यंत

गुप्त हे और इसका ज्ञान ज्यादा किसीको नहीं दिया जाता. वहा पे कुछेक दूर एक सन्यासी थे उन्होंने बाबाजी की और देखा और नमस्कार किया, मुझे एसा लगा जेसे कुछ देर उनमे मौन वार्तालाप चला और उसके बाद बाबाजी ने मेरी तरफ देख के कहा चलो अब चलते हे...मेने जब पीछे मूड के देखा तो वह सन्यासी निर्गद द्वार की तरफ जा रहे थे और जेसे ही वे वहां खड़े रहे, एक क्षण में ही वे अद्रश्य हो गए. में कुछ बोला

नहीं तभी बाबाजी ने कहा की वह सिद्धाश्रम गया हे....मेने और कुछ पूछना उच्चित नहीं समजा बस मुस्कुराता रह गया

एसे कई निर्गद द्वार का निर्माण नक्षत्र तंत्रसे भी हुआ हे और कुछ एक सितारों के बिच में वह

निर्मित होता हे... ब्रम्हांड में एसे कई निर्गद द्वार हे. कहने के जरुरत नहीं की सिद्ध मंडली के सद्श्य वायु गमन करते हुए एसे निर्गद द्वारो का उपयोग विचरण करते हुए आज भी करते हे. निर्गद द्वार अत्यंत ही गुप्त रहते हे और इसके बारे में विवरण देना गुप्तता की मर्यादा को भंग करना हे इस लिए इसका ज्यादा विवरण योग्य नहीं. वेसे रात्रि काल में चमकते सितारों को देख के कौन बता सकता हे की

इसके बिच में वह रास्ता भी हे जो सूक्ष्म जगत में प्रवेश दिलाता हे जहा से विभिन्न लोको की यात्रा प्रारंभ होती हे...

----

the big banyan tree was visible from far away, which was having its own glow. the first face of the night was just begun and with an task I did received chance to visit Paramahansa Nikhileshwaranand and his divine Tantvashram. under the same tree, Sadgurudev Nikhileshwaranand were seated in his immortal form. there were few sanyashi disciples in front of him seated in very disciplined way. about 10 feet far, I made my self stand and bowed to him. Sadgurudev were giving knowledge about

My First Experience with Sabar Mantra

मेरा प्रथम अनुभव साबर मंत्र के साथ

एक सरल प्रयोग

साबर मन्त्रों की प्रसंशा तो हर जगह आई हैं इन दिव्य मंत्रो का तो क्या कहना, गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी राम चरित मानस में इन मन्त्रों के अनमेल योग ओर प्रभाव की महिमा गायी हैं, यहाँ तक की जब वह अपनी हाथ के दर्द से बुरी तरह पीड़ित हो गए ओर किसी भी प्रकार के इलाज से उन्हें राहत नहीं दिखाई दे रही थी तब उन्होंने एक पूरे ग्रन्थ का ही निर्माण साबर मन्त्रों की भाषा के तरीके से भगवान् हनुमान जी की स्तुति के रूप में किया और वह अपनी इस तकलीफ से मुक्त हुए .

यह तो निश्चित हैं की इन मंत्रो का कोई तोड़ नहीं , इनकी तीव्रता का कोई सानी नहीं,प्रभाव की कोई सीमा नहीं , की अनहि संभव हो सकत हैं ओर जीवन के किस विषय को ये नहीं स्पर्श नहीं करते हैं सदगुरुदेव जी एक स्थान पर कहते हैं यदि दो या तीन प्रकार से कोई एक साधना संपन्न हो सकती हैं तो हमेशा साबर साधना के तरीके को ही चुनना चाहिए क्योंकि ये ही तरीका सबसे श्रेष्ठ होता हैं .

मैंने कई बार इन मन्त्रों के बारेमें पढ़ था ,सदगुरुदेव जी ने अनेकों बार इनके विषय में समझाया था पर में तो महाविद्या साध ना या अन्य साधना में ही रूचि रखता था, साबर साधना पर कोई विशेष ध्यान नहीं था.

उसी दौरान एक बार मैं दांत के दर्द से बुरी तरह पीड़ित हो गया , कितने इलाज करवाए पर कोई विशेष लाभ नहीं होता दिख रहा था , आप मेंसे जो दांत के दर्द के भुक्त भोगी कभी रहे हैं वह स्वयं जान सकते हैं , रूट कैनाल सर्जरी के बाद भी कुछ विशेष लाभ नहीं मिल पाया .

तभी मुझे अचानक सदगुरुदेव जी की एक बात याद आई किजब कभी तात्कालिक परिस्थिति मैं लाभ प्राप्त करना हो तो एक दम से बड़ी साधन प्रारंभ करना वैसा ही हैं जैसे की सिरदर्द को दूर करने के लिए पूरा मेडिकल शास्त्र पढना चालू करना जहाँ मात्र एक गोली से काम हो सकता हैं तो बड़ी प्रक्रिया क्यों.

यह याद आते ही मैंने एक जगह दांत के दर्द से सम्बंधित मंत्र देखा जिसमें असर तो अच्छूक लिखा था पर सिध्ह करने की कोई विधि ही नहीं थी, अत्यंत ही सरल प्रक्रिया थी. उस विधि को मैं ने प्रारंभ कर दिया . मंत्र दो दिन के अन्दर ही दर्द सामाप्त हो गया तब से आज तक कभी दर्द फिर से लौटा नहीं, पर कभी सम्भावनाये दिखी तब इस मन्त्र अक थोडा सा जप ने पुनः दर्द आने की सम्भावनाये क्षीण कर दी .

विधि इस प्रकार्र हैं

भोजन करने के उपरान्त हाथ मैं जल लेकर इस मंत्र को सात बार पढ़े फिर इसी अभिमंत्रित जल से कुल्ला कर ले, सात बार करें ओर आप इसी प्रकिर्या को प्रतिदिन करें , आप इस मंत्र के चमत्कारिक परिणाम देख कर आश्चर्य चकित हो जायेंगे.

काहे रिसियाए हम तो हैं अकेला , तुम हो बत्तीस बार हमजोला,
हम लाये तुमबैठे खाओ , अन्तकाल में संग ही जाओ ..

****

My First experience with Sabar mantra

On many places the importance of theses sabar mantra expressed in many ways and its quite natural that what can be said about theses great mantra. Goswami tulsidas (the writer of shri ram charit manas) also expressed the greatness, important of thses mantra in which combination of various various word often does not create any straight meaning, but truth still lies, even once goswami ji had a very high pain in his arm he tried all the way but pain was still there, at that time a wrote a complete book named “Hanumaan bahuk” , and after that his pain totally vanished, what is the special point on this book , actually if one goes that book find that all book has been written like a sabar mantra style and on various place Bhagvaan hanuman has been remembered and asked to remove the pain,

This is sure that there is no equal of theses type of mantra in term of effect and simplicity. There is no limitation of theses mantra they touch every aspect of life.

Maha Siddh Yogtryanand JI

अद्भुत महा सिद्ध शिवयोगत्र्यानंद जी

उन्ही की कृपा से प्राप्त कुछ दुर्लभ प्रयोग

उस गुफा में बैठे बैठे में देख रहा था अपने सामने जल रही लकडियों को. कैसे और क्यों आना हुआ यहाँ आखिर किससे मुलाकात होनी है कुछ भी अंदाजा नहीं बस सदगुरुदेव के कहने पर ही उनके आशीर्वाद से पहोच गया में...कुछ ही देर में होने वाली थी यहाँ पे सिद्ध साधको की एक मुलाकात या यु कहा जाए की तांत्रिक सम्मलेन, लेकिन अभी तो यहाँ पे कोई नहीं है, में अकेला अपने आप में खोया हुआ बैठा था कभी कभी नज़र भर के देख लेता था उस लंबी चौड़ी गुफा में चारो और. पता नहीं कितना समय हो गया था और तभी एक तरफ से कोई दुबला पतला संयाशी आया मेने उसे रोक के कुछ पूछना चाह लेकिन उसने खामोश रहने का इशारा करते हुए एक तरफ को निकल गया या यु कहू की अद्रश्य ही हो गया...क्या करू यही सोच में बैठा रहा थोड़ी देर और फिर से देखने लगा उस आग को...और कुछ था भी तो नहीं उस पूरी गुफा में...तभी अचानक मुझे लगा की जेसे कोई मेरे पीछे खड़ा है, मेने पीछे मुड के देखा तो आँखे फटी की फटी रह गयी...लगभग सादे छे फूट का भरी भरकम कद...जटा एसी की मजबूत रस्सियों को परस्पर गूँथ दिया हो..गले में कुछ माला पहनी हुयी सी जो किस पदार्थ की थी में जान नहीं पाया...पूरा शरीर निर्वस्त्र आँखों के डोरे लाल..चेहरे पर लालिमा लिए हुए गोरापन उन्नत ललाट...एक गजब का आकर्षण था उस सन्याशी में की में देखता ही रह गया..कुछ सोच विचार करने की किंचित भी शक्ति नहीं रह गयी थी...भले ही उनका रूप अत्यादिक डरावना था लेकिन उनके चेहरे पर गजब की सौम्यता छाई हुयी थी...मेरे कंधे पर हाथ रख के वे किंचित मुस्कुरा दिए...में समज गया की यही है मुझे यहाँ भेजने का उद्देश्य...वह व्यक्ति थे साधको में विख्यात कापालिक शिवयोगत्रयानंदजी...इस व्यक्तित्व के बारे में तो यहाँ तक मसहुर हे की इन्होने कापालिक मार्ग से वे सिद्धिया प्राप्त की है जिनके बारे में साधक कल्पना भी नहीं कर सकता. यहाँ तक

की उन्होंने वाम मार्ग से धूमावती साधना सिद्ध की हे जो की अत्यधिक दुष्कर है जिसे सिद्ध करने पर साधक को रुपनुरुप्य सिद्धि प्राप्त होती है, पल भर में वह अपना रूप जू चाहे वैसे बदल लेता है...उन्होंने मुझे अपने पास बैठाया. उस दिन उनसे साधनाओ के बारे में काफी विस्तार से बात हुई. थोड़ी देर बाद उन्होंने रूप परिवर्तन का एक प्रयोग कर के भी दिखाया, एक क्षण मात्र में वह एक विदेशी युवक के रूप में मेरे सामने परावर्तित हो गए, उन्होंने न सिर्फ अपने श्रुशुत भी हटा लिए, कद छोटा कर लिया, उम्र तो अत्यधिक कम हो ही गयी थी, वर्ण भी थोडा गोरा हो गया था, तथा कपडे भी कुछ पश्चिमी सभ्यता के आ गए थे उनके शरीर पर और ये सब हुआ मात्र एक क्षण में...भौचक्का सा देखता रह गया में...निश्चय ही यह महान व्यक्तित्व है इसमे कोई दो राय नहीं...उन्होंने बताया की केसे सदगुरुदेव निखिलेश्वरानंदजी ने उनको साधनात्मक सहयोग प्रदान किया था और वे जो भी हे उनमे निखिलेश्वरानंदजी का बहोत बड़ा योगदान है... बाते होती रही और कब मेरा समय समाप्त हो गया पता ही नहीं चला...कुछ ही देर में यहाँ सिद्धो का जमावड़ा होने वाला था...तभी एक युवक सन्याशी ने अंदर आके कहा की माँ आने वाली है साथ में स्वामीजी भी पधारने वाले है...में समज गया की अब मेरा जाने का समय है..गुफाद्वार तक वे मेरे साथ चले तब तक उन्होंने अपना रूप वापस सन्याशी का कर लिया था...ऐसे महान व्यक्ति के पास अक्षय भंडार था साधनाओ का...साबर साधनाओ में भी वे सिद्धहस्त रहे हे...उन्ही के द्वारा प्रदान कुछ साबर साधनाओ को में यहाँ प्रस्तुत कर रहा हू...

मतभेद नाशन साधना:

गृहस्थ साधको के लिए मेने जब कोई साधना के लिए प्रार्थना की तब उन्होंने यह प्रयोग बताया था. इस साधना के अन्तरगत अगर आपका किसी के साथ भी मतभेद हो गया हो चाहे पति पत्नी मित्र प्रेमी प्रेमिका या फिर आपके कार्य क्षेत्र में, तब साधक को इस साधना को करना चाहिए.

इस साधना के लिए एक शियारशिंगी की जरुरत रहती है, अगर शियारशिंगी उपलब्ध न हो सके तो साधक वटवृक्ष का पत्ता ले, लेकिन कोशिश यही रहे की प्रयोग शियारशिंगी पर ही किया जाए. अपने सामने एक थाली रखे उसमे इच्छित व्यक्ति का नाम काजल से लिखे. उसके ऊपर शियारशिंगी स्थापित कर ले अब उस पर गुलाब का पुष्प चढ़ाये और कलि हकीक माला से निम्न मंत्र की रात्रि में १० बजे के बाद २१ माला मंत्र जाप करे. इसमे दिशा उत्तर रहे, वस्त्र आसान लाल रहे. इस साधना को किसी भी वार से शुरू किया जा सकता है.

मंत्र : कालिके माता मोरी कर भलाई का काम जीवे राखो जीवे चाखो करो दूर ठूं

यह क्रम ७ रात्रि तक नित्य करना है.

७ दिन बाद जब आप उस व्यक्ति के सामने जाए तो मन ही मन इस मंत्र का उस व्यक्ति के सामने ७ बार उच्चारण करना है. परिस्थितिया अनुकूल हो जाएंगी.

साबर मंत्रो में शब्दों के मतलब पर ध्यान नहीं दिया जाता वरन उसका प्रभाव देखा जाता है. इस प्रयोग को गुप्त रूप से किया जाता हे तथा प्रयोग कर लेने के बाद भी इसका उल्लेख कभी किसी के सामने नहीं किया जाना चाहिए.

शत्रु बाधा निवारण प्रयोग:

अगर जीवन में कोई शत्रु परेशान कर रहा हो तो यह प्रयोग को अजमा लेना चाहिए. यह प्रयोग अत्यधिक प्रभावशाली है और शत्रु को दूर कर देता है

इस साधना को साधक अमावश्या की रात्रि को सम्प्पन करे. यह उग्र प्रयोग हे, साधक को भयंकर आवाजे भी सुनाई दे सकती है, अतः साधक अपने क्षमता के अनुसार ही इस प्रयोग का चयन करे. साधक को रात्रि में ११:३० बजे का बाद यह प्रयोग आरंभ करना है, इस प्रयोग में दिशा दक्षिण रहे. वस्त्र काले रहे तथा आसान स्मशान भस्म का रहे.

अपने सामने एक तेल का दीपक लगाये जो की साधना पूर्ण होने तक जलता रहे. इसके बाद निम्न मंत्र की ५१ माला जाप उसी रात्रि में सम्प्पन हो जनि चाहिए

ॐ **भैरव अमुक शत्रु उच्चाटय मम रक्षा कुरु में नमः**

इसमे अमुक की जगह शत्रु का नाम लेना है. इस साधना में कलि हकीक माला का उपयोग होता है, साधना के दूसरे दिन माला को नदी में विसर्जित कर दे, यह मात्र एक रात्रि का ही प्रयोग है.

****

Adbhut maha siddh Shivyogtryanand ji

(two very important from his blessing)

While sitting in that cave I was watching the wood sticks burning in front of me. How and why I came here, whom I was suppose to meet, there was no idea just with words of sadgurudev seeking his blessings I went…in a very short time it was about to occur a meeting of accomplished Sadhaks here or in other word Tantrik Sammelan, but at present no one is here, I was all alone sitting there lost in myself. Sometime was used to look at the long wide cave. Was not aware how long the time passed and at the same time a thin sanyashi came from one direction, I tried to stop him and ask something but he gestured me to stay quiet and went to other direction or let say he went invisible…

With wonder what to do I set there for some more time and kept looking at the fire…elsewhere nothing was filled in that cave…the same moment I felt that someone is standing behind my back. When I looked back, my eyes went wide in shock…a heavy body of almost 6 and half foots…Jata was like strong ropes are bounded together…a rosary around a neck made of something which I was unable to identify…full naked body, red eyes…a very fair complexion of

Nath Siddh Pratykshikaran Sadhana

नाथ सिद्ध प्रत्यक्षीकरण साधना

जिनके दर्शन पाना ही दिव्यता हैं ...

आज, जगत के आध्यात्म में भारतीय सिद्ध प्रणाली की एक महत्वपूर्ण भूमिका है. साधना जगत में इसे आश्चर्य ही कहा जाएगा अगर कोई साधक ९ नाथ व् ८४ सिद्धो के बारे में नहीं जनता हो. ९ नाथ वह प्रारंभिक व्यक्तित्व है जिन्होंने साधना की उच्चतम स्थिति को प्राप्त किया था और अघोर वाम कॉल साबर और योग के विशेष साधनात्मक ज्ञान का प्रचार किया था.भगवान दत्तात्रेय के आशीर्वाद से वे साधना क्षेत्र में नए मंत्रो की रचना करने में समर्थ थे और इसी तरह उन्होंने करोडो साबर मंत्रो की रचना की जो की संस्कृत भाषा में न होते हुए सामान्यजन भाषा में थे. जिससे सामान्य व्यक्ति भी सफलता को प्राप्त करने लगा जो की उन्हें पहले उच्चारण दोष की वजह से नहीं मिल पाई थी. इस तरह ९ नाथ ने अपना कार्य पूर्ण किया, चूँकि वे मनुष्य योनिज नहीं थे, वे आज भी उनके मूल शरीर में विद्यमान है और आज भी कई साधको को सशरीर आशीर्वाद देते है. ८४ सिद्धो के लिए भी यही मान्य है. ८४ सिद्ध जिसमे कई सिद्ध नाथ का भी समावेश होता हे वह वो मंडली हे जो की सबसे उच्चतम साधनात्मक स्थिति को प्राप्त साधको की मंडली मानी जाती है जो की तांत्रिक व् योग्तान्त्रिक साधनाओ में निष्णांत है, उनमेसे कुछ रसायन में भी सिद्धहस्त है. इन महान सिद्धयोगियो का आशीर्वाद लेना व् उनसे साधना के क्षेत्र में मार्गदर्शन लेना किसीभी साधक का सर्वोच्च भाग्योदय व् एक मधुर स्वप्न सामान है.

इस विषय में एसी कई साधना हे जो साधक की इस इच्छा को पूर्ण करे. लेकिन यह करिये बहोत ही कठोर और समय लेने

वाली होती हे फिरभी साधको की मन की छह होती हे एसी साधनाए करना. फिर भी इन कठोर साधनाओ के मध्य भी एक ऐसी साधना हे जो सहज हे अगर इसे दूसरी साधनाओ के साथ देखा जाए तो और यह साधना साधक उन महान व्यक्तित्व के आशीर्वाद प्राप्त करने की अपनी महेच्छा को पूर्ण करा सकती है. यह साधना को मेने सदगुरुदेव से प्राप्त किया था.

साधना के लिए साधक के पास एक अलग कमरा हो जिसमे दूसरा कोई भी व्यक्ति प्रवेश न करे. इस साधना में कठोर नियमोंका पालन करना पड़ता है.

ब्रम्हचर्य पालन अनिवार्य है

भोजन में एक समाज फलाहार लिया जा सकता है, दूध कभीभी ले सकते है. साधक को और कुछ भी ग्रहण नहीं करना चाहिए

साधना काल में साधक कोई भाई व्यसन जैसे की मदिरा या तम्बाकू का युअग कर दे

साधना काल में क्षोरकर्म न करवाए

साधना कक्ष का फर्श गोबर से लिपा हुआ हो

आसान और वस्त्र पीले रंग के हो. दिशा उत्तर हो.

अपने सामने पूजास्थान पर एक सुपारी रखे, यह सिद्ध का प्रतिक है. इसका नियमित पूजन करे. भोग में मिठाई का उपयोग कर सकते है. ताजे फूल ही उपयोग में लाए.

अखंड दीप प्रज्वलित करना है जो की पुरे साधना काल दरमियाँ जलता रहे.

रात्रि में ९ बजे के बाद स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जाप करे

ॐ प्रकट सिद्ध अमुकं प्रत्यक्ष आण महादेव की

अमुकं की जगह इच्छित सिद्ध के नाम का उच्चारण करे

कुल १,२५,००० मंत्र जाप होने चाहिए जिसे २१ या कम दिनों में पूरा करना है. मंत्रजाप की संख्या रोज एक ही रहे.

साधना के अंतिम दिन सिद्ध सशरीर प्रत्यक्ष होते है और इच्छापूर्ति का आशीर्वाद देते है.

****

Nath Siddh Praytkshikaran Sadhana

The siddha tradition of india is one of the major role play in the spiritualism today. In sadhana world, it would be surprise if someone is not aware about Nav Nath and Chaurasi Siddha. The 9 nath are the very basic people who were able to attain highest spiritual levels and spread knowledge of very special sadhana of Aghora Vaam Kaul Shabar and Yoga too. With the

Adbhut Sadhana's received from Sadgurudev

मनोमय जगत की साधनाए जो सदगुरुदेव से प्राप्त हुयी
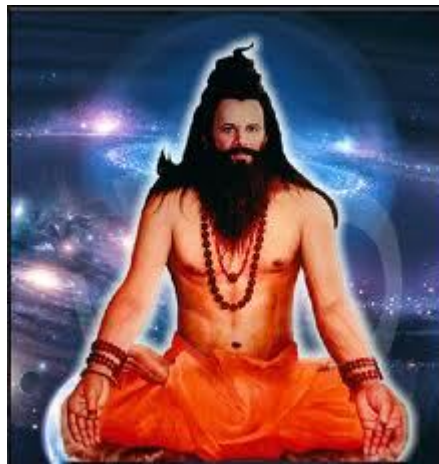
जो विधान आज तक गोपनीय ही रहा अब आपके सामने ....

सृष्टि अपने आपमें अनंत रहस्यों को अपने आपमें समाये हुए हे. जो भाग हम अपनी आँखों से देख रहे हे वह तो मात्र एक बूँद ही हे जो इस महासागर का एक अत्यधिक न्यून हिस्सा हे. जिस प्रकार दूध में धृत होता तो हे लेकिन वह सामान्य अवस्था में दिखाई नहीं देता ठीक उसी तरह इसी स्थूल जगत में समाहित हे कई जगत और यु कहा जाए की अनंत जगत और अनगिनत रहस्य. यु तो सूक्ष्म जगत साधको के मध्य प्रचलित रहा हे लेकिन जब साधक सूक्ष्म जगत में निर्गद द्वार से प्रवेश करता हे और जेसे जेसे अभ्यास बढाता जाता हे, आगे की जटिल क्रियाओ के माध्यम से वह जगत भेदन में सफलता प्राप्त कर लेता हे. यु मेने भी परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी से सूक्ष्म जगत से आगे के कई रहस्य समजे. जिसमेसे एक था मनोमय जगत

मनोमय जगत का आधार सूक्ष्म जगत की अंतिम अवस्था दिव्यतम जगत और माया जगत के मध्य स्थित हे. इस प्रकार यह जगत अपने आपमें कई कारणवश अत्यधिक महत्वपूर्ण हे. इस जगत में प्रवेश के बाद साधक को अत्यधिक महत्वपूर्ण साधनाओ का ज्ञान दिया जाता हे जो की अत्यधिक सहज ही होती हे लेकिन उसका प्रभाव अचूक होता हे. दूसरी ओर ये साधनाए इस प्रकार से निर्मित होती हे की वह सहज प्रयास में ही साधक को सफलता प्रदान करने में समर्थ होती हे.

यह जगत की सबसे बड़ी विशेषता यह हे की मनोमय जगत अनंत मन से जुड़ा हुआ होता हे तथा मन ही केन्द्रीभूत होने से इस जगत की गति मनोमय ही होती हे. यु इस जगत में साधना करने पर साधक अपने मन की गति से साधना समाप्त कर

सकता हे यु एक क्षण में वह चाहे तो सेकडो साधनाए भी सम्प्पन कर सकते हे. इस लिए अत्यधिक कम लौकिक समय में ही व्यक्ति साधना सम्प्पन हो सकता हे. यह क्रियाए इतनी सहजभी नहीं हे. इस क्रियाओ को मात्र सदगुरुदेव के चरणों में बैठ कर ही समजा जा सकता हे.

मनोमय जगत की अलौकिक और विचित्र साधनाओ में सभी प्रकार की साधनाए समाहित होती हे. चारो तरफ बिखरा हुआ शुभ्र स्वच्छ प्रकाश, मन में जिस भाव या जिस विचार को उत्प्पन किया जाता हे वह तुरंत स्थूल रूप धारण कर लेता हे. इस प्रकार के दिव्य जगत की साधनाए कितनी महत्वपूर्ण होती हे वह तो सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता हे. सदगुरुदेव निखिलेश्वरानंदजी की कृपा से उस दिव्य जगत में साबर साधनाओ का भी अभ्यास उनके शिष्यों द्वारा होता आया हे. कुछ एसी ही अलौकिक व् दिव्य साबर साधनाए आगे में प्रस्तुत कर रहा हू जो मुझे सदगुरुदेव निखिलेश्वरानंदजी की कृपा से वह दिव्य मनोमय जगत में प्राप्त हुयी थी

ध्यान प्राप्ति साधना:

यु तो ध्यान मात्र अभ्यास का विषय हे और जेसे की सदगुरुदेव ने कहा हे की तुरंत ही ध्यान लग जाए एसी कोई साधना नहीं हे, यह एक अभ्यास हे जो निरंतर करते रहने से ही सिद्धि प्रदान करता हे, लेकिन मुझे सदगुरुदेव से यह साधना प्राप्त हुयी थी जिसके विषय में उन्होंने कहा था की यह साधना करने पर साधक की ध्यान में आगे बढ़ाने की गति अत्यधिक तीव्र हो जाती हे और साधक कुछ दिनों तक इसका अभ्यास करता रहे तो उसे पूर्ण ध्यान की प्राप्ति इस साधना के सहयोग से अत्यधिक कम समय में हो जाती हे

यह साधना ब्रम्ह मुहूर्त में ही की जाती हे. दिशा उत्तर रहे. वस्त्र और आसान सफ़ेद हो. साधक को इसमे किसी भी प्रकार की माला का उपयोग नहीं करना हे. पद्मासन लगाने के बाद साधक आँखे बांध कर निम्न मंत्र का उच्चारण मन ही मन तब करना हे जब वायु कुम्भक अवस्था में हो. कहने का मतलब ये हे की साँस अंदर लेने के बाद इस मंत्र का मन ही मन उच्चारण कर के बहार निकले

ॐ कृष्णाय ध्यान प्रदाय कर जगत पतये नमः

मंत्र का उच्चारण करते वक्त आँखे बंद रहे और आतंरिक त्राटक भृकुटी के मध्य रहे. रोज नियमित रूप से इस मंत्र का ब्रम्ह मुहूर्त में मात्र १ घंटे जाप करना हे. यह प्रयोग २१ दिन का हे. जिसे किसी भी वार से शुरू किया जा सकता हे.

विचारशून्य मस्तिस्क के लिए:

कई बार अत्यधिक विचारों से मन बोजिल हो जाता हे और मानसिक संतुलन बिगडने लग जाता हे. यु कई बार साधक साधना के दौरान कई प्रकार के विचारों से त्रस्त रहता हे व् मानसिक उर्जा का क्षय यथा योग्य न हो कर के विभिन्न दिशाओ में मन भटक जाता हे जिससे हताशा और निराशा जेसी गंभीर मानसिक बीमारी स्वाभाविक हे. साबर साधना की उच्च कोटि की साधनाओ में से एक गुप्त साधना हे जो विचारशून्य मानस के लिए अचूक हे और जो सिर्फ मनोमय जगत के साधको के मध्य प्रचलित रही हे

यह साधना को गुरुवार से शुरू करे. यु यह साधना या तो मध्य रात्रि में १२ बजे के बाद की जाती हे लेकीन अगर यह संभव

न हो तो साधक इसे ब्रम्ह मुहूर्त में करे.

अपने सामने लोबान धुप को जला ले, साधना के दौरान साधना कक्ष में साधक के अलावा और कोई न हो. वस्त्र इसमे श्वेत रहे दिशा दक्षिण. फिर साधक श्वेत आसान पर बैठ कर एक हरा कपड़ा या हरा धागा अपनी दाहिनी बांह पर बांध ले और उसके बाद निम्न मंत्र का जाप २ घंटे तक करे. इस साधना में जप काल के दौरान पसीना आना स्वाभाविक हे

उलेउल्लाही उलेउल्लाही उलेउल्लाही

यह साधना ७ दिन तक करनी हे. ७ दिन तक दरगाह या मजार पर जा कर साधना सफलता के लिए दुआ करनी चाहिए. ८ वे दिन वह धागा या कपडा अपने हाथ से अलग कर के माजर या दरगाह पर चडा दे.

तंत्र शक्ति जागरण साधना:

हर एक तत्र साधक चाहता हे की वह अपनी तांत्रिक साधनाओ में आगे बढे और बढाता ही जाए लेकिन यु होता नहीं हे, इसका कारण यह होता हे की शरीर में निहित स्व तंत्र शक्ति सुषुप्त अवस्था में होती हे, यु मनुष्य खुद ही तंत्र स्वरुप हे क्यूँ की वह जिस ब्रम्ह की खोज कर रहा होता हे, मनुष्य उसका ही तो अंश हे. यु यह शक्ति की प्राथमिक साधना हे जिसे करने पर साधक के अंदर शौर्य व् निडरता का आभास होने लगता हे तथा उसका मन पहले की अपेक्षा ज्यादा लक्ष्य केंद्रित होता हे

यह साधना मंगलवार से शुरू होती हे. जिसमे दिशा उत्तर रहे. वस्त्र काले हो. भूमि पर ही आसान रहे, अगर साधक चाहे तो स्मशान भस्म का आसान भी बना सकता हे लेकिन और कोई आसान न रहे. यह साधना रात्रि में १.३० बजे के बाद शुरू करे. अपने सामने शिव का कोई चित्र स्थापित करे और अगरबत्ती जलाए. उसके बाद निम्न मंत्र की रुद्राक्ष माला से ११ माला जाप करना हे

ॐ शंकर जटा खोले शक्ति जरे स्वाहा

यह क्रम ७ दिन तक बना रहे. साधक इन ७ दिनों में अपने आप में वह बदलाव अनुभव करने लगेगा जो की हर एक तांत्रिक साधना की भावभूमि हे.

****

Manomay jagat ki sadhanaye jo ki Sadgurudev ji se prapt hue

The world lays infinite secrets in itself. The part of the world we are watching is just as small as drop of an ocean. The way milk owns butter in itself but it is invisible in its normal state, exactly the same way the sthool jagat or world contains so many worlds or we can say infinite worlds and innumerable secrets. Well, the Sukshm Jagat had remained famous among sadhak but when Sadhak enters into Sukshm Jagat from Nirgad dwar and when step by step the exercise increases, he may get success through some difficult processes of Jagat bhedan. This way, I

Ayurved

आयुर्वेद और सौंदर्य समस्याओं का समाधान

कौन नहीं चाहता की वह एक स्वास्थ्य शारीर का स्वामी हो , पूर्ण निरोगी शारीर तो स्वपन ही हैं पर सामान्य भाषा के अनुसार भी तो श रीर खरा उतरे , हर छोटी से बीमारी में एलॉपथी दवाइयां लेना ज्यादातर उचित तो नहीं कहा जा सकता पर यदि आप आवश्यक समझे तो इन बातों को ध्यान में रखें जिससे की आपका शरीर स्वास्थ्य रह सके ओर ज्यादा साधना मय हो सकें .

1. अस्वगंधा चूर्ण को एक चम्मच ले कर मीठा दूध पि ले यह बहुत ही गुणकारी औषधि हैं , इसे सभी लोग लेसकते हैं.
2. पानी में थोडा सा अजवाये न और एक चम्मच भर नमक दाल कर उबाले और इसकी भाप को किसी गिले कपडे में सोखकर यदि जोड़ पर इस कपडे को लगाये तो यह दर्द दूर करता हैं .
3. भोजन के अंत में थोडा सा गुड खाना भी लाभदायक हैं.
4. एक बादाम को अच्छे से घिस कर उसे दूध में मिलकर प्रतिदिन पिए यह तो बेहद लाभदायक हैं पर ध्यान रहे बादाम अच्छी तरह से बिलकुल महीन से महीन पीस ले क्यों यह इस तरह से ही असर दिखाती हैं.
5. शहद के साथ मांस मच्छली और मुली का सेवन कभी न करे यह बेहद नुक्सान देहक हैं.
6. यदि किसी को दस्त न रुक रहे हो तो आधा कप चाय ओर आधा कप मिलकर पिने से भी आ राम मिलाता हैं
7. जहाँ मधुमख्खी ने काटा हो वहां पर प्याज का रस लगाये दर्द ओर सुजन दोनों की कम होगी.
8. बेशरम के पौधे/झाड़ी का दूध जहाँ दाद हो रही हो वहां लगाये , २/३ दिन में दाद समाप्त हो

जाएगी

9. आधा चम्मच काली मिर्च थोड़े से घी में मिलाकर लेने से (दिन में दो बार) नेत्र ज्योति ठीक होती हैं .
10. गुलाब के फूल की पंखुडियां को दूध में मिलाकर इस दूध को लेप की तरह चेहरे में लगाये फिर आधे घंटे बाद धो ले , यह चेहरे की कांति वर्धक होगा

****

Who do not want to be have a healthy body , a body completely free from all type of dieses is a dream, but taking allopathic medicine in every small problem can not be consider good. If have time than follow some of the tips so that you can have healthy body and able to devote more time in sadhana.

1. If Ashwagandha powder taken about one spoon with milk(with sugar) proved to be very good from health point of view.
2. If little bit ajvayan and salt added to water and vapors of that water when heated absorbs in clean cloth, and if applied on joint, this reduces pain.
3. Eating gud at the end of meals is good for digestion.
4. Almonds if finely make powder type and taken with milk, than prove d to be very effective for health purpose.
5. Never take fish, meat, muli with honey, thi sbeacmes very harmful.
6. To stop loose motion ,drink mix. of half cup water plus half cup tea only once .
7. Aaply onion juice on the place where honey bee bite you .it heal the pain .
8. To remove daad (eczema a skin dieses) apply milk of beshram plants, in 2/3 days you will get relief.
9. With ghee if half spoon black pepar taken than it will be good for eye sight.
10. Mix some rose petals with milk and apply on your face and wash after half an hour, good for face.

Totaka Vigyan

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

दिन प्रति दिन का जीवन तो अनेको समस्याओ से घिरा ही हुआ हैं और व्यक्ति उनसे मुक्ति पाने के लिए प्रयासरत रहता ही हैं पर यह भी सत्य हैं की
यह हमेशा संभव नहीं हो ता की हमारे पास बड़ी साधनाओ में बैठने के लिए समय हो ही . इन परिस्थिति मैं यह सरल प्रयोग / टोटके हमारी सहायता के लिए एक रास्ता दिखाते हैं . इसलिए इस श्रंखला में कुछ ऐसे ही टोटके आपके जीवन के रस्ते को सरल बनाने के लिए ...

1. अमावस्या को खीर बनाये ओर उसे गाय को खिला दे यह पितृ दोष को समाप्त करता हैं .
2. घर की ऋण आत्मक उर्जा को समाप्त करने के लिए जब भी पौछा लगाया जा रहा हो तो उपयोग किये जा रहे पानी में थोडा सा नमक मिला ले .
3. किसी भी अपनी रोटी का एक चोथाई भाग गाय को ओर इतना ही बाग़ कुत्ते को खिला दे यह किसी भी बीमारी से ठीक होने में अत्यधिक लाभदायक होता हैं.
4. किसी भी फिटकरी के टुकड़े से इशान दिशा में स्वस्तिक बना दे यह मानसिक शांति प्राप्त करने में अत्यधिक लाभदायक होता हैं

5. जब सुबह अपनी दुकान खोल रहे हो ठीक उसी तरह जब दुकान बंद कर रहे हो तो यदि आप अपने प्रतिष्ठान का मुख्य दरवाजे को स्पर्श करते हैं तो यह उसकी सुरक्षा के लिए बहुत अच्छा होता हैं .
6. शत्रुओं से रक्षा के लिए प्रतिदिन प्रातः हनुमान चालीसा का पाठ करें.
7. मानसिक तनाब , अवसाद से मुक्ति के लिए भगवान् शंकर ओर शनि की पूजा करें
8. अपने घर में ९ बत्तियो वाला घी से भरा दिया जलाये यह धनागम के लिए अच्छा रहता हैं
9. अपनी क्षमतानुसार कुछ न कुछ दान करते रहे यह आपकी मानसिक शांति के लिए भी अच्छा रहता हैं.
10. जब भी शमशान से गुजरे कुछ सिक्के वहां पर डाल दे यह आपको कथोंय के समय सहायता दिलवाएंगे.

****

Totke for you .

Everyday life is full of complexity and one always try to get solution of the problem he /she is facing , and this also true that its not always possible that we have time for big sadhana, that's why some small prayog or totke comes to helps us. In this series we presents theses small totke that can help to ease your life.

1. make a kheer on amavasya and after that offer that to cow help to reduses the pitra dosh.
2. While washing home with clothe (pouchha) add small amount of salt in water, the reduces the negative energy in home.
3. Offer fourth part to cow and fourth part to dog or your chapatti , gives you benefit in any dieses.
4. Take fitkari and make a swastika on that place in north east side help to gain mantel health.
5. Every day on opening of and on the closing time one should touch the main door of his establishment from his head , this will give protection to his establishment.
6. Chant every day “ hanuman chahlisa “ is also a way from protection from enemy.
7. One who are depressed and tense he should have to pooja of shiv and shani too. He will get much relief.
8. Light a earthen lamp of ghee with nine batis, is good for financial purpose.
9. According to your ability offer some money as a daan to needed people.

तंत्र कौमुदी
सौन्दर्य तंत्र और कायाकल्प तंत्र महाविशेषांक
Sixth iSSue – August 2011
Part - i
Tantra kaumudi

Name of the Articles

Part -1

Part - 2

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

SADGURUDEV - PRASANG

एक दिन सदगुरुदेव और उनके साधना कक्ष में

क्या होती हैं सदगुरुदेव की महिमा,क्या हो ती हैं उनके साथ न रहने कि कसक आखों में भी नहीं दिल तकमे उतर गया था एक सुना पन.

स्वामी विस्व्बोधानंद जीद्वारा एक संस्मरण ...

किकैसे उनका एक पूरा दिन सदगुरुदेव जी के सानिद्ध्य में व्यतीत हुआ अनोखी रोमांचक अनुभूतियो के साथ..

कैसे भूल सकता हूँ वह २० फरबरी १९८७ का दिन ,जिस दिन मुझे उनके सानिध्य में पुरे २४ घंटे समय व्यतीत करने

का मौका मिला, और आज पूरे ३९ वर्षो के बाद उनके सदेह स्वरुप के दर्शन का सौभाग्य मुझे मिलने जा रहा था, आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व उन्होंने परम गुरुदेव स्वामी सच्चिदानंद जी के आदेश पर जब इस धरा पर आध्यात्म को पुनर्स्थापित करने की आज्ञा मिली थी , तब से उसने टेले पैथी के द्वारा निर्देशन और मार्गदर्शन मिलता रहा हिं पर उनके सदेह दर्शन कि कामना मन में बढती रहिहैं . और इसी बाल इच्छा को उनके सामने व्यक्त करदिया शायद माँ नित्य लीला विहारणी की कोई इच्छा होगी किजिसके माध्यम से वह सिद्धाश्रम स्थित योगी को भी बताना चाहती थी की इस तरह कि विपरीत परिस्थिया ओर अपमान जनक स्थितिया किस तरह सहन कर नी पड़ती हैं.

जिस दिन मुझे आज्ञा मिली उसके दुसरे दिन ही मैं शून्य मार्ग से जोधपुर में था,प्रातः काल का समय था पूज्यनीय माता जी तुलसी पर जल अर्पित कर रहीथी , तभी कुछ क्षणों के बाद्सद्गुरुदेव अपने कक्ष से बाहार निकल करसामने आये, परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी को इस तरह सामान्य गृहस्थ रूप में एकबार तो मुझ जैसा योगी जो योग तंत्र की उच्च अवस्था मे हैं एक क्षण के लिए भ्रमित सा हो गया .प् र सदगुरुदेव तो सदगुरुदेव होते हैं मेरे मानों भाव को पढ़ते हुए अगले क्षण वही दर्प उनके मुखमंडल में दिखाई दिया और मैं नतमस्तक था, और उनके चरण स्पर्श किया.

सुबह के सात बज रहे थे सदगुरुदेव जी ने मुझे अपने साथ पीछे आने को कहा , जहाँ सैकड़ों मिलने वाले उनका इंतज़ार कररहे थे , सभी सदगुरुदेव को देख कर प्रफुल्लित हो गए अब सदगुरुदेव सभी से व्यक्तिगत मिल रहे थे उनकी दिन प्रति दिन की समस्याए सुलझा रहे थे . साथ हिसाथ फोन कॉल पर भी फिर चाहे वह उच्च वर्ग के व्यक्ति हो या सामान्य की समस्याओ का निराकरण भी करते जा रहे थे, ,फिर चाहे मन्त्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं मासिक पत्रिका से सम्बंधित निर्देशन हो या किसीभी साधक या शिष्य के आये हुए पत्र का किस तरह से उत्तर देना व्यक्तिगत रूप से निर्देशन कर रहे थे, यह सब बिना किसी तनाव के वह करते जा रहे थे, उन्हें इस तरह कार्य करते देखन भी एक अद्भुत अनुभव था, जिनके सामने हिमालय का उच्च से उच्च स्तर का योगी भी सामने आने से और एक सेक ण्ड का समय लेने से पहले भी कई बार सोचता हैं , उन्हें इस तरह कार्य करते देख कर मुझे दुःख भी होरहा था किउनके कार्यों का समाज द्वारा अभी भी मूल्याङ्कन नहीं हो पा रहा हैं.

तीन बज रहे थे तभी माताजी के स्वयं आने के बाद भोजन के लिए सदगुरुदेव बड़ी ही अनिच्छा से उठे, फिर भोजन के उपरान्त सदगुरुदेव अपने गोपनीय दुर्लभ सधान्त्मक ग्रंथो के लेखन में लग गए कब शाम हो गयी पता हि नही चला चला तभी पूजा कक्ष से गुंजरित होती शंख की ध्वनि इस बात का संकेत था की सायं काल आरती का समय हो गया हैं अब समय आ गया था की जब सदगुरुदेव साधना रत होते हैं , जब मुझे अपने पास आने की आज्ञा हुए तोमुझे पता ही नहीं था की मुझे उनके साथ उनके साधना कक्ष में जाने का मौका भी मिलेगा, उच्च से उच्च योगी भी उनके साधना कक्ष को देखने की लालसा मनमे लिए रहता हैं और मेरा आज का दिन तो सोने की कलम से लिखा था जो मुझे यह सौभाग्य मिल रहा था .

जिनके पास एक क्षण भी खड़े रहने से व्यक्ति रोमांचित हो जाता हैं उनके साधना साधन कक्ष में ...

मंद प्रकाश से आलोकित वह छोटा सा कक्ष स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित , आश्चर्य की बात यह थी की प्रकाश की कोई व्यवस्था नहीं होने पर भी लगभग ६० वाट के प्रकाशमय था वह कक्ष ..शीतलता इतनी की मानों चारों और कपूर मिश्रण करके भरा हो ,

उस कक्ष कि ऊर्जा में मेरा आस्तित्व खोता जा रहा था , उस कक्ष के अलोकिक प्रकाश में में अपना होश खोता ही जा रहा था, किसी तरह दिवार को पकड़ने कीकोशिश की पर नीचे धम से गिर पड़ा. तब तक सदगुरुदेव अपने वक्ष स्थलको अनावृत करके अपने आसन पर बैठ करके मंत्रोच्चार प्रारम्भ कर चुके थे. चारों ओर एक रहस्यम वातावरण बनता जा रहा था, एक धुंएँ सी आकृति का निर्माण होता जा रहा था,

तभी मानो एक बिजली सी कडकी हो और अत्यंत प्रचंड तेजस्वी ,बलिष्टव्यक्ति रक्त नेत्रों की दहकता लिए प्रकट हुआ और सदगुरुदेव जीको साष्टांग प्रणाम किया और अर्पित नैवेद्य के लेकर पुनः प्रणामकर अद्रश्य हो गए , मंत्रोच्चार से जो सदगुरुदेव जीके श्री मुख से निसृत हो रहे थे समझ पाया की यह भगवान भैरव का सर्वाधिक उग्र स्वरुप महाकाल भैरव थे.

इसी क्रम में गणपति और माँ गायत्री का दर्शन सदेह मिला जो की कभी में सिद्धाश्रम में भी नहीं कर पाया , तभी मेरे मनमे वर्षों से छुपी इच्छा आई की काश में माँ काली के दर्शन कर पाता, ठीक उसी क्षण उन्होंने अपने प्रिय कलिका स्त्रोत प्रारंभ कर दिया "स्वरूपं त्वदीयं न विन्दति देवा " ताभिकमरे में प्रकाश की मात्र क्रमशः बढ़ने लगी औरसाथ ही साथ उस मुर्तिका आकार भी पर मुझे लगा की दीपक की लो के हिलने से ऐसा लग रहा हैं पर उस मूर्ति से निकली आक्रति छत तक पहुँचती जा रही और तभी.. सदगुरुदेव ने किन्ही विशिष्ट मंत्रो का उच्चरण किया और जल जमीन पर अर्पित किया ..

तीव्र कपूर गंध के साथ महाकाली अपने रुद्रतम स्वरूपमे मेरे सामने प्रकट ही गयी,वही रौद्रता ,वही वात्सल्य भाव, ,उनका स्वरूप का तो वर्णन कौनकर सकता हैं ,,उस स्वरुप की भयावहता देख कर मेरे होश खोते जा रहे रहे थे दोनों हाँथ जोड़े में प्रार्थना कर रहा था माँ अपने शांत स्वरुप में आओ .

तभी सदगुरुदेव जी के श्री मुख से शांति पाठ उच्चारित हो उठा .धीरे धीरे वहस्वरूप छोटा छोटा होता हुआ को उस मुर्तिमे समाहित होता गया तब मैंने जाना की विग्रह स्वरुप भी सत्य हैं यदि साधक के पास हो सदगुरुदेव की विशिष्ट गुरु उर्जा, उर्जा की अधिकता से तेज की आधिकता से मैं होश खोता ही जा रहा था, उस पूरी रात माँ के दिव्य स्वरुप बार बार मेरे सामने आते जा रहे थे.

अब सुबह हो गयी मुझे ध्यान ही नहीं रहा , जब माता जी ने कक्ष में प्रवेश किया , तब देखा तोसद्गुरुदेव निष्कंप अपने आसन पर विराजित थे. अब मेरे जाने का समय आ गया था, जब में सुबह जा रहा था, मूक दृष्टी से सदगुरुदेव जीकी और देखा तो उनके नेत्रों से यही उत्तर आया की उत्तरदायित्व तो उत्तरदायित्व हैंफिर चाहे परिस्थिया कोई भी न हो , वह अपने कक्ष की ओर कल की तरह बढ़ते जा रहे थे,

मैं सोचमे था किस समय वे साधना रत होते ? वे कब सोते हैं? , कब साधना करते हैं? कब अपने लाखो शिष्यों से सीधे सम्पर्कित रहते हैं? ....

कैसे वे एक देह से ही अनेको कार्य चाहे इस जगत के हूँ या फिर सूक्षम जगत के हो सम्पादित करते का जाते हैं? ,आज छः वर्षोंके बाद भी नहीं समझ पाता हूँ.

अंत में उनके सभी विविध स्वरुपोको प्रणाम करता हुए यही कमाना करता हूँकि जल्दीही हमारे जीवनमे वह सौभाग्य के दिन आये और पुनः वह उसी निश्चिंत सुख और आनंद से अपनी उच्च स्तर की समाधी में लीन हो सके ,हमें उच्च कोटि की साधनाओ में अंगुली पकड़ कर ले सके .....

मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं अक्टूबर ९३ से

****

One day with Sadgurudev and in his sadhana room :

What is the greatness of Sadgurudev and what is the pain and feeling when he is not with us physically that feeling reaches to our eyes from heart.

In word of swami yogiraaj viswabodhanand ji….

The feeling and experience of him of the day which he spent with Sadgurudev ji ….

How can I forget the day of 20 feb1987 , this is the day when after 39 years again I was again standing in front of him physically and able to see our beloved Sadgurudev ,

सदगुरुदेव ध्यान से सौन्दर्य और कायाकल्प

SADGURUDEV DHYAN SE SOUNDARY & KAYA KALP
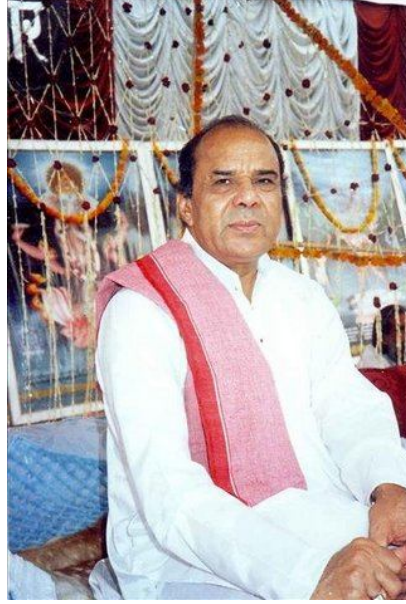
कैसे संभव हो यह दुर्लभ प्रकिर्या ......

सदगुरुदेव कितना प्यारा सा मन को मोह ले वह शब्द हैं लाखो लाखो के ह्रदय आराध्य ,और अनत योगियों के जीवन का लक्ष्य , जिनके लिए सारी प्रकृति भी न्रत्य मय हो उठती हैं , जो सिद्धाश्रम ही नहीं सम्पूर्ण विश्व चेतना के आधार हैं, जो ही इस सम्पूर्ण विश्व के सौन्दर्य हैं , जिन्होंने ही सिद्धाश्रम का कायाकल्प कर दिया , और सिद्धाश्रम का ही नहीं बल्कि सभी योगियों महायोगियो को जीवन जीने की अद्भुत कला में ने रास्ता दिखलाया बताया की कैसे नृत्य मयता भी जीवन का सौन्दर्य हैं , केसे माँ के पास उसका शिशु नृत्य मय होजाता हैं वेसे ही सदगुरुदेव के सामने सभी चाहे वह हजार वर्ष आयु प्राप्त महायोगी हो सभी नृत्य मय हो जाते हैं , इनकी कौन कहे स्वयं परम गुरुदेव जी भी मुस्कानित हो उठते हैं , फिर हम जैसे शिष्य और शिष्या के बारे मे कहाँ , उनके भावो को व्यक्त करना कहाँ संभव हैं .

जो अखिल ही नहीं निखिल विश्व के सौन्दर्य हैं उन्हें किसी साधना से सम्मोहित किया जा सकता हैं ?, भला कौन सा तंत्र उनपर किर्या शील होगा पर एक तंत्र हैं एक रस्सी हैं जिसमे वह वह स्वयं ही बांध जाते हैं वह हैं स्नेह की प्रेम की हमरे स्नेहित आसुओ की, भाल वे स्वयं ही हमारी बाल सुलभ चेष्टाओ पर मुग्ध होकर हमें अपने ह्रदय से न लगा लेंगे, क्योंकि उनके अलावा भला हैं भी हमारा कौन ....

जिन्होंने हमें सिखाया कि कैसे सधानात्मकता की उच्चता को स्पर्श करने के बाद भी एक परमोच्च महायोगी ही नहीं विश्व के नियता भी , हमारे सामने एक साधारण रूप मेंसामान्य पर अति सम्मोहक जीवन जिया जा सकता हैं, पल पल सुवासित उनका जीवन पर तो करोडो कामदेव का सौन्दर्य भी न्योछवर हैं , हम भला सौन्दर्य को समझे भी क्या जिस तरह शारीर की वासना ही हमारा प्रेम हैं स्नेह हैं , वह तो सदगुरुदेव आपने दिन रात श्रम करके हमें समझाया की प्रेम क्या हैं स्नेह क्या हैं वह केबल मात्र शरीर के सम्बन्ध तो हो ही नहीं सकता. हे सदगुरुदेव आपने ही तो समझया की सच्चा सौन्दर्य तो अपने सदगुरुदेव के चरणों में विलीन हों हैं सम्पूर्णताके साथ ..हर पल हर क्षण उनका ही नाम हो ह्रदय कमल उनकी याद में खोया रहे पर इसके बाद भी अपने सदगुरुदेव के कार्यों के सम्पूर्णता के साथ करना ही हैं , चाहे जो भी हो कोई सम्मान करे या कोई पत्थर मारे , सब प्रभु आपके निमित्त ही हैं ,

और क्या सदगुरुदेव ने सम्पूर्ण जीवन मात्र अपनेस्वयं के सदगुरुदेव ,परम गुरुदेव परमहस स्वामी सच्चिदानंद जी के एक मुस्कान पर सम्पूर्णत से न्योछ्वर नहीकर दिया , और सब पा लिया ,क्या सौन्दर्य क्या काया कल्प ,क्या सिद्धयाँ क्या ,ब्रम्हांड ता ,क्या नहीं उन्होंने पाया ,पर परम गुरुदेवजी की चेहरे पर की एक मुस्कान की उनके लिए सब थी परम गुरु जी के शब्द की यह मेरा ह्रदय हैं यह हैं मेरा सर्व प्रिय....उससे बड़ा और इस ब्रहाड में क्या सौभाग्य हो सकता हैं

सदगुरुदेव दिन रात जलते रहे पर उफ़ नहीं किया परम गुरुदेव जी के मन में, ह्रदय की एक भावना ,एक आकांक्षा पूरी हो , कैसे मेरे सदगुरुदेव का स्वपन साकार हो , उन्होंने अपना पूरा जीवन हमें दे दिया .हर पल कर क्षण , हर ख़ुशी ,आरामका हर पल ,अपनी पूरी जवानी ,क्यों की उनका सौन्दर्य उनके बच्चो में उतर आये , उनकी गरिमा से उनके मानस पुत्री पुत्रिया अपने आप में उनका ही प्रतिरूप बन जाये .यहं मेरा तात्पर्य स्वयं गुरु ही नहीं बन जाना हैं बल्कि उनकी चाल ,उनका ज्ञान , उनकी गरिमा,उन जैसी करुणा , उन्जैसे पाखंड पर प्रहार करने की क्षमता आये .की यहाँ तक हमरे आलोचक .हमारे विरोधी /शत्रु भी कहे की कुछ भी हो यह व्यक्तिव कुछ तो हैं .कुछ तो विशेष हैं ही इसमें ...

पर इतना धयान तो रखे ,इस पाखंड पर प्रहार करने की आड़ में हम अपने ही गुरु भाइयों पर अकारण तो ,बिन जाने बुझे , कुछ भी कार्य तो नहीकर रहे हैं, सदगुरुदेव जी के कार्य करने की आड़ में किसी अन्य के कार्य में बाधा तो नहीं कर रहे हैं , कभी अपने आप को प्रतिस्थपित करने का मोह तो नहीं हैं , जय गुरुदेव कहने की आड़ में . लोग हमें समझे की हम भी कुछ हैं की भावना तो नहीं हैं , क्या सदगुरुदेव जीकी साधनात्मक गरिमा उतर रही हैं हमारे मन ह्रदय में .

सदगुरुदेव सदैव कहते रहे हैं कि साधना सिद्धि ठीक हैं जब में कहूं तुम्हे साधना करना हैं तोकरना ही हैं पर साथ ही साथ ये हमेशा याद रखना हैं यदि में ही तुम्हारे अन्दर नहीं उतर पाया तो इन सबका का क्या अर्थ .. ये मेरे सामने एक क्षणांश कि चीज हैं में तुम्हे दे सकता हूँ पर तब जब मुझे विश्वास हो जाये कि ये शब्द ह्रदय से निकल रहे हैं , में चापलूसी को समझता हूँ , गुरु शिष्य के बीच यह तो सब नहीं होता हैं

और जरा ध्यान से सोचे तो सत्य ही हैं जब सदगुरुदेव जी ही हमारे मन में उतर आये हो हमारा ह्रदयमें स्थापित होकर हमें हल पल हर कष्ण निर्देशित करे पूर्ण चैतन्यता से पूर्ण क्षमता से तब क्या शेष रह जाता हैं .वे तो अनंत सिद्धियों के स्वामी हैं , समस्त साधनाओ ही नहीं सम्पूर्ण ब्रम्हांड को जिनने अपने हांथो में धारण कर रखा हैं , वे तो स्वयं सौन्दर्य को भी बनाए वाले हैं , अनत वर्षों से एक

ही ब्रम्हांड देह में सदगुरुदेव जी का स्वरुप परमहंस निखिलेश्वरानंद जी का चला आरहा हैं, की उन से से ज्यादा कोई काया कल्प को समझता होगा , जब बे ही हमारे अन्दर होंगे तब स्वयं सदगुरुदेव उर्जा और स्नेह ज्ञान से हम स्वयं सौन्दर्य शाली न हो जायेंगे ,

अपने ह्रदय में हाथ रख कर पूछे की हम में से कितने हैं जिन्होंने १९९१ से लेकर १९९८ तक की मन्त्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका पढ़ी हैं या बार पढ़ी हैं समझने की कोशिश की हैं की सद्गुरुदेव्का भी तात्पर्य हैं जो में समझ रहा हूँ या अपने कार्यों को उनके शब्दों की ओट में तो सही नहीं ठहरा रहा हूँ.

और यह पर ध्यान इसलिए भी जरुरी हैं की" बिन जाने होय न प्रीति" आपको सदगुरुदेव जी से स्नेह हैं उनमे न्योछ्छावर हों चाहते हैं और उनके बारे में जानते भी नहीं यह तो ठीक नहीं हैं.

मध्य कालीन संत कबीर दास जी ने ठीक ही कहा है की

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल ,

लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गयी लाल .

सच ही तो हैं जीवन मैं हम जिसे विचार रखते हैं वेसे ही तो हम हो जाते हैं , यदि व्यवसाय में सफलता पाना हो या व्यवसाय करना हो तो व्यवसाय करने वालों के साथ रहे ठीक इसी तरह अन्य क्षेत्र में भी नियम लगता हैं ,

कितनी साधना हैं ?कितने प्रयोग हैं? कितने उपाय हैं?,कितनी प्रक्रिया हैं?,कितने नियम हैं ?,

इन सबके बीच एक साधारण व्यक्ति क्या मन मसोस कर रह जाये ... के उसके भाग्य में मात्र ये साधना पढना ही हैं , कितना भी समझाया जाये पर व्यक्ति के मन में जो गठाने पड़ी हैं वर्षोंकी , क्या वह एक क्षण में दूर हो पायेगी वह कोशिश करता हैं पर सफलता के लिए उतना दृढ विश्वास नहीं हो पाता हैं तब क्या करें .

ध्यान रहे इसे एक आलस्य या अकर्मण्यता का हथियार नहीं बनाना हैं , क्योंकि उनसे कुछ छुपा नहीं जो ये सोचे कि जोर से जय गुरुदेव या जय जय कार कर ली कुछ फूल माला सदगुरुदेव भगवान्के श्री चरणों में अर्पितकर दी वह बहुत प्रिय हो गया ऐसा नहीं हैं वह तो आपके मन में आने वाले विचारों को पहले से जानते हैं वे भी हस्ते रहते हैं कि करने दो छल , जो ये कररहा हैंउसीका तो हज़ार गुना पायेगा, वे तो यदि सरल ह्रदय से पुरे मनोभाव से , बिना छल कपट के उनका ध्यान करे और न केबल पूजा के समय बल्कि हर समय जबभी समय मिले तो सदगुरुदेव उर्जा से जीवन सुवासित हो ही जायेगा , कोई साधना नहीं करना पड़ेगी , कोई प्रयास नहीं ,.

पर ज़रा सोचे कि यह तो कितना सरल हैं, पर मित्रो सरल ही तो कठिन होता हैं , हम इतने क्लिष्ट हैं कि सरल चीज न हम समझ सकतेहैं न हमारेगले उतर सकती हैं , हमे तो बड़ा मंत्र चाहिए , चाहिए कि सदगुरुदेव हमारे माथे पर कम से कम १० मिनिट तो शक्तिपात करते रहे ,क्योंकि एक सेकेंड में क्या हो जायेगा .

सर्वोच्च साधना हैं स्नेह कि प्रेम की, आलस्यता से बचने का रास्ता नहीं . जो उनके प्रेम में भींग गया वह कैसे शांत रह पायेगा की उसे अपने सर्व प्रिय के सपने साकार करने की दिशा में मनो एक कण के समान भीकाम करना हैं तो वह्करेगा , यह स्नेह प्रेम ,तीव्र बीर भाव देता हैं , साहस देता हैं, पाखंड पर प्रहार का तरीका देता हैं , छल को उजागर करने का तरीका , जीवन में छल का सामना करनेकी क्षम ता देता हैं और देता हैं अपमान सहन करने की क्षमता , क्योंकि वह जानता हैं अब उसे उच्चता का एक नया अध्याय लिखना हैं नाकि वह अपने कमरे में चुपचाप आंसूं बहाते रहता हैं.

साथ ही साथ जब पाखंड का सामना करने की बात हैं तो उसे खुद भी तो समर्थ बनना पड़ेगा, यह केबल जय गुरुदेव कहने से तो हो नहीं जायेगा ,सोच समझकर कदम उठाना पड़ेगा नाकि भेड़ चाल का हिस्सा बन कर .

उन्हें हर पल याद रखे , स्नेह से ,फिर देखें कैसे नहीं आपका व्यक्तित्व और ही नहीं बल्कि आपका रंग रूप भी सदगुरुदेव के स्नेह में डूब जायेगा और उनकी दिव्यता धीरे धीरे आपमें उतर जाएगी .

तब आप भी कह सकोगे की ..लाली मेरे लाल की .....

तो साक्षात् नारायण हैं जो जिस भाव से अर्पित करो उसी का हज़ार गुना स्वतः आपके पास आएगा .

आप मन में उन्हें धारण करे , फिर जो भी कार्य करेंगे वह गुरु कार्य होगा, आपके परिवार की भी जिम्मेदारी भी मानो गुरु कार्य का ही एक भाग होगी, जो भी साधना करेंगे वह भी तो गुरु की ही होगी, अरेजब सब कुछ सौप दिया तो सब कुछ ....

पर इतना तो ध्यान रखना ही हैं की सदगुरुदेव कहते रहे भक्ति नहीं हमें तो साधना चाहिए ये मन से भूले नहीं ..उन्होंने अपना उदहारण क्योंहमारे सामने रखा की हम समझ सके की किस तरह अपने सदगुरुदेव का कार्य करना ही सच्चा सौन्दर्य हैं , और उसी से ही तो शिष्य का काया कल्प होने लगता हैं ,

अब तो यही प्रार्थना आप हमारी असमर्थ तो जानते हो ही , हमारा मन , ह्रदय ,खून , विचार ,भावनाओ को शुद्ध कर दे , इतना कर दे प्रभु की ये जीवन आपके श्री चरणों में समर्पित होने के लायक हो जीवन आपके कार्यों में ही लगे

..**

Soundary Kayakalp Is possible through Sadgurudev dhyan

"Sadgurudev " what a sweetness in this small word, that will hypnotize our heart ,and object of pure love among million of millions shishy, and aim of uncountable yogies, forinfront of whom whole nature start dancing , who is not only the foundation of siddhashram but of whole universe, and is the real beauty of this universe, who kaya kalp the siddhashram and shows the way to siddhashram yogis that this is the way of life that narity is also a part of life, he told them see how a small child become naritymay when he is in his mother lap /arm, so like that almost every one has that naritymayta when Sadgurudev reaches in midst of them and even param Gurudev start smiling when he self see him, than it s almost impossible for us simple shishy and shishyaa to express our feeling.

Who is the real beauty of not only in this visible universe but even invisible universe, can he be hypnotize through any sadhana?, which tantra will work on them?, but there is a rope ? through that he can easily be tied that is rope of our pure sneh/love is rope of tears of sneh/love, than on seeing our child like activity he himself come to near to us and touch our heart , since who apart from him is really ours…

He exemplified himself in front of us how a person who is paramochch yogi and having unimaginable sadhanatmak height can be with us , so simple but with so smmohan , on his each moment of him millions life of kaamdev can be sacrifice.

How we can understand the real soundary real pure sneh/love since for us physical relation is the beauty and love our lust is our love.

शत्रु बाधा निवारक श्री गणपति प्रयोग

SHRI GANESH PRAYOG

बाधा निवारण के लिए

जीवन में शत्रु का होना भी जरुरी हैं , सदगुरुदेव जी कहते थे की की आपके शत्रु तो तभी होंगे जब की आप कुछ तो होंगे जीवन में नाकारा लोगों का कोई शत्रु नहीं होताहैं , पर जीवन आपधापी मेंजब इनके कारण आपकी स्वाभविक उन्नति में बाधायें आने लगे , मन दिन रात प्रतिदिन परेशान रहने लगे, तब सबसे पहले इस प्रयोग को करना
आपके लाभदायक होगा, जो उसकी आपके प्रति शत्रु भाव को विचार को ही समाप्त कर देगा .

जैसा की आप जानते हैं की बुधवार तो भगवान् गणेश जी का ही दिन माना जाता हैं , अतः आप इस इस प्रयोग रूपी साधना को कर के अपने जीवन को फिर से प्रसन्नता युक्त बनाये .

इसे रात्रि काल में करे यदि रात को ९ बजे के बाद करें तो ज्यादा उचित होगा , साथ ही सारा मन्त्र जप के लिए चूँकि यह शत्रु भाव को समाप्त करने की साधन हैं तो उसके लिए वीरासन ही ठीक रहता हैं, (जिस आसनमें भगवान् हनुमान जी बैठते हैं) किसी तांबे के पत्र में भगवान् गणेश जीकी मूर्ति स्थपित करे, हाँ लाल वस्त्र पर ही स्थपित करे और आप भी लाल वस्त्र धारण करें . सामान्य पूजन करे .

मंत्र : ॐ घ्रौं घ्रौं घ्रौंशत्रुनाशय गं ॐ फट ||
समय : मात्र आधा घन्टा
अवधि : कमसे कम तीन बुधवार तो करें ही .
क्रोध मुद्रा में ही मन्त्र जप करना हैं .

****

Shri Ganesh Prayog

(for the Distruction/ removal of evil thought of your enemy)

In life there , is also a need of some of the enemy, seems ridiculous , but its true , Sadgurudev ji often said that when there is some enemy of you , clearly means that you are something , not nothing, since people of total idle has no enemy. When in between daily life struggle, when theses enemy creating problem for your life and your progress . than to have peaceful life , this prayog has a very value, this remove the evil though of them.

As you all are aware that , the day of Wednesday is good for sri ganesh Bhagvaan related poojan/ sadhana. Than start this prayog on that day and make your life happy and enjoyful.

Start this sadhana after 9 pm than it would be better and wear red color clothes and on a red color cloth on a copper plate , place statue of shri ganesh , and this sadhana is related to destroy the evil thought of enemy than its quite natural that veerasan is the asan for this sadhana(inthis asan Bhagvaan hanuman is is used to sit.) do simple poojan of him.

SOUNDARY & KAYAKALP

सौन्दर्य और कायाकल्प को समझने की एक नयी दिशा

जीवन का आधार तो सौन्दर्य हैं , भारतीय जीवन तो सत्यम शिवम् सुन्दरम को ही आधार मानती हैं , पर आखिर किसे हम सौन्दर्य कहे , हर व्यक्ति की अपनी अपनी अवधारणा हैं , किसी के लिए शारीरिक सौन्दर्य का ज्यादा अर्थ हैं तो किसी के लिए आत्मा का सौन्दर्य तो किसी के लिए, किसी के लिए शब्दों की खूबसूरती अर्थ रखती हैं तो किसी के लिए अन्य. कोई एक नियम सब सबके लिए नहीं हो सकता हैं ,

पर प्राचीन आचार्य कहते हैं की वह जो पल प्रति पल बदल रहा हो नित नूतन हो वही सौन्दर्य की परिभाषा पर पहली परिभाषा पार करता हैं .

सदगुरुदेव भगवान् एक जगह कहते हैं की १६ वर्ष की गधी भी सुन्दर दिखती हैं , पर जो ८०वर्ष मैं भी सुन्दर दिखे वह हैं असली सौन्दर्य .

यह शारीरिक सौन्दर्य मैं भी अनेको माप दंड हैं , कहीं काला रंग खूबसूरती का प्रतिक हैं तो कहीं गोरा पन.
अब इस युग मैं शास्त्रोचित निर्दोष सौन्दर्य प्राप्त होना कठिन सा होगया पर साधनाए एक ऐसा मार्ग रखती हैं जिससे अपना स्तर बढाया जा सकता हैं . जहाँ नारी के लिए सौन्दर्य का अलग अर्थ हैं वही पर पुरुषों के लिए पुरुषोचित सौन्दर्य के अलग ही माप दंड हैं, उनके लिए मात्र खूबसूरती ही नहीं पुरुषोचित गरिमा भी होना चाहिए .

जहाँ सदगुरुदेव कहते हैं , नारी सौन्दर्य ऐसा हो की व्यक्ति बरबस ही कह सके की इस मखमली देह को ताज महल कहते हैं वही सिंह वत पुरुषों को देख कर मानवी ही नहीं बल्कि अप्सराये भी कह सके ही आह.

सौन्दर्य की कितनी भी परिभाषा कही जा सकती हैं पर सबसे महत्वपूर्ण तो यह हैं की क्या उसे देखने की ,समझ सकने की आँखें , महसूस करने के लिए हमारे पास दिल हैं क्या .

सारा संसार ही सौन्दर्य से भरा पड़ा हैं, उस परम सौन्दर्यवान की रचना भला असुंदर कैसे हो सकती हैं , हम ही सच्चे सौन्दर्य ओर छलावे मैं अंतर नहीं जानते हैं जिसे सौन्दर्य मानते रहे हैं वह तो कुछ पलों का धोका हुआ, गलती उसमें नहीं हमारी आखों में हैं , हमें सौन्दर्य से परिचय कहाँ ..

जिसके आने से मन हर्षित हो, जिसकी एक मुस्कराहट पर पर अपना जीवन न्योछवर हो, जिसकी एक अदावत से सारा गम खुशियों में बदल जाये , जो नित नूतन हो , सुगंधमय हो , जिसमें शारीरिक ही नहीं बल्कि आत्मिक सौन्दर्य हो .. जिसके लिए हर परिभाषा कम हो उसे ही सौन्दर्य का मापदंड कहते हैं . फिर भला हम कहाँ जाये, हमारे लिए तो हमारे सदगुरुदेव भगवान् में ही मानो सारा सौन्दर्य सिमट आया हैं, सौन्दर्य भी उनसे परिभाषा पाकर उनका सानिध्य , उनकी गरिमा से आपलावित होकर सौन्दर्य वान होता हैं , प्रफुल्लित होता हैं .किसी विद्वान ने सच ही कहा हैं अगर हमरी आखें सौन्दर्य से भर जाये तो हर तरफ सौन्दर्य भरा पड़ा हैं , इश्वर ने इतनी सौन्दर्य की नेमत दी हैं पर हम धन के पीछे ही तो भाग रहे हैं .

सौन्दर्य से रीते हम साधना भी क्या करेंगे

यह तो सच हैं की इश्वर ने सौन्दर्य के प्रतिमान के रूप में नारी की रचना की पर , लहरों का भी तो एक सौन्दर्य हैं , उसी तरह आकाश मैं स्थित तारों का अपना ही सौन्दर्य हैं , फिर हरितमा युक्त जंगल का एक अपना ही सौन्दर्य हैं , तब क्या हम साधना के सौन्दर्य ओर सदगुरुदेव के साहचर्य की सौन्दर्य का तो क्या कहने ..
इसे तो बाद ह्रदय ही समझ सकता हैं ...

वही काया कल्प के बारे में तो कितनो ने पढ़ा हैं पर हम सभी जो सौन्दर्य से रीते हैं तभी तो इस शब्द की जरुरत हैं जिसने सौन्दर्य को समझा हो प्रेम /स्नेह को महसूस किया हो उसे इसकी क्या जरुरत , पर इश्वर प्रदत्त इस देह का भी अपना महत्त्व हैं इसे मात्र भोग विलास की चीज समझ कर उपयोग करके एक दिन नष्ट होते देखना तो बस मुर्खता ही कही जाएगी.आज जीवन में सदगुरुदेव भगवान् कहते हैं की इस काया कल्प विधा मात्र नाग या सर्प प्रजाति के पास ही रह गयी हैं वह अपनी पुराणी त्वचा को उतर देता हैं नविन देह धारण कर चल देता ओर हम केबल मरण धर्मा बने हुए हैं

यह सब कपोल कल्पित नहीं हैं आज भी हमारे अनेको आचार्य आज भी भौतिक देह से हैं हजारों वर्षों से आज भी उसी देह को गतिशील किये हैं , शारीर से नहीं वह जो मन से ही जीवन बदल दे वह हैं काया कल्प .
ऐसा तो बस सदगुरुदेव ही कर सकते हैं ... पर जो अभी तक उस भाव भूमि में न आपये हो उनके लिए तो भौतिक देह का ही रुन्तरण ही काया कल्प हैं ,
ध्यान से सोचे तो पारद विज्ञानं से स्वर्ण विज्ञानं भी तो एक कायाकल्प ही हैं पर वह धात्विक हैं पर हैं तो काया कल्प का विषय ही , साधनाओ के द्वारा एक साधारण मानव जो परिस्थितियों का दास हैं से सर्व समर्थ वान बनाना ओर पौरुष वान बनाना ओर नहीं तो क्या हैं . जिसे एक काया कल्प की विधि समझ आगई वह किसी का भी कायाकल्प कर सकता हैं क्योंकि मुख्यतः तो आधार एक ही हैं .

यह सुनने या पढने में कठिन लग सकता हैं पर सत्य यही हैं ,

काया कल्प के अनेको प्रभेद हो सकते हैं कुछ आंशिक प्रक्रिया हैं तो कुछ पूर्ण कहीं अत्यंत कठिन हैं तोकाही सरल ..ओर अनेको प्रक्रियाये हैं , कहीं तंत्र प्रधान हैं तो कहीं आयुर्वेद प्रधान हैं युगानुकुल देखे तो तंत्र प्रधान ही विधिया श्रेष्ठ हैं पर . लोगों के पास समय नहीं न ही ऐसे विद्वान सुलभ हैं . तब यही आंशिक प्रक्रिया भी मिल जाये तब भी वह बहुमूल्य हैं .

प्रस्तुत विशेषांक में ऐसी ही अनेको प्रविधिया आपके सामने आ रही हैं ...

आप सभी सदगुरुदेव के द्वारा बताई गयी प्राविधि जो अनेक cd में सुरक्षित हैं प्राप्त करे ओर जीवन आप सभी के लिए हर दृष्टी से मंगल दायक हो यही सदगुरुदेव से प्रार्थना हैं , आपका पुनः काया कल्प हो , जीवन में सौन्दर्य रूपी सदगुरुदेव का महत्त्व आप समझ सके...

****

What is soundary and kaya kalp

Basic foundation of life Is the beauty. Indian way of life considered satyam shivam sundaram Is the basic foundation of our culture. But whom we consider beauty, each one has his own definition , for some physical beauty is the beauty , for others the beauty of soul is the beauty so for someone beauty of words spoken is the beauty, so for other, others meaning applicable, so there must not be a single definition suited to all for all circumstances. But our old ancient master says that that which is continuously changing in each moments , ever new, that will be consider the first step to the real definition of beauty.

Here Sadgurudev Bhagvaan used to says that on reaching at the age of 16 years even she donkey considered beautiful but not that but, who reaches at the age of 80yers of age and still considered beautiful is the beauty.

PRAKRITI SE SOUNDARY SADHANA

आश्चर्य जनक किन्तु सत्य साधना आपके लिए ही तो ..

प्रकृति हर क्षण मे परिवर्तनशील है और वही है सृष्टि के सर्जन-विसर्जन की मुख्य आधार शक्ति. अत्याधिक मनमोहक, हमारे अंदर समाती हुयी सी, या फिर आपखुद को विसर्जित करने पर मजबूर कर दे, यु ही तो नहीं होता है कोई सुखद परिवर्तन जो दिल को छू ले. कभी नज़र ही नही हटती खिले हुए फूलो से, अपने आप मे खोया हुआ, खुद पर ही मुग्ध, दूसरों को अपनी और खींचते हुए कुछ कहता हुआ, समजता हुआ. सायद यही कहना चाहता है वो की खो जाओ अपने आपमे, और इतनी हद तक उतर जाओ अपने अंदर की खुद को ही भुला बैठो, तुम्हारा स्व भले ही बिखर जाए, लेकिन प्रकृति तुम्हारा अस्तित्व कायम कर देगी. लिन हो जाओगे उस सत्ता मे जिसने हमको बनाया है...

यही तो वह प्रक्रिया है जिसे हमारे पूर्वजो ने ध्यान कहा था!

कभी स्थिर होके यु ही अपनी साखो से जुमते हुए, मचलते हुए पेडो को भी देखा है; पता नही क्यों? क्या है उसके अंदर जो उसे मजबूर कर देता है उसे इतना तरोताजा रहने के लिए, इतना स्थिर रहते हुए भी, अपने अंदर ही खुश रहते हुए, मचलते हुए, जिस पर कोई फर्क ही नही पड़ता की कोई आखिर कर क्या रहा है? क्या कोई उसे देख रहा है, सुन रहा है या फिर प्रसंशा या आलोचना? कुछ भी तो नही..क्या वेग है उसके अंदर जो उसकी प्रज्ञा को इतना स्थिर कर देता है, की उसके बाद उसकी कोई आकांशा न होते हुए भी उसे सुख ही सुख मिलता है...?

शायद इसी को आनंद कहा गया होगा, जो मजबूर कर दे अंदर ही अंदर स्थिर रहने के लिए, क्यूंकि आनंद की प्राप्ति ही तो स्व का बोध प्रकृति मे कराती है, तब ही तो समजा जा सकता हे की हम प्रकृति का भाग नहीं अपने आप मे एक सम्पूर्ण प्रकृति ही है.

उफनती हुई नदी भी कभी एक बूंद मात्र ही तो थि. लेकिन अपने अस्तित्व को अपने आप मे समेटे हुए, वह बूंद आगे बढती है, धीरे धीरे अपने सफर पर. किसीभी प्रकार का कोई भी भाव मन मे न लाते हुए अपने लक्ष्य को ही सर्वोपरी मानते हुए, एक के बाद एक पड़ाव जैसे वो पार करती जाती है, यु यु उसे आभास होने लगता है अपनी विशालता का, अपनी शक्ति का, उसके अंदर समाये हुए वो बीज का जिसने उसे प्रेरणा दी थि की “आगे बढ़ो” और स्थिर भाव से बढ़ते ही रहो और अंत मे क्या होता है, सारे बंधनों को तोडते हुए समां जाती है वह उसी महा कोष मे जिसका वह बिज थि, अपना अलग अस्तित्व होते हुए भी वो विसर्जित ही रहती है...

स्थिर रहते हुए एक के बाद एक पड़ाव को पार करते हुए, अपनी शक्तियों को पहचानते हुए अपने लक्ष्य मात्र को ध्यान मे रखते हुए अपने आप को उस ब्रम्ह महा कोष मे विसर्जित करना, उसका ही एक भाग बन जाना क्या कुण्डलिनी जागरण नहीं है? प्रकृति ने ही उसका सर्जन किया था, प्रकृति के अंदर ही विसर्जित होने के लिए.

क्या हमारे साथ भी यही ध्येय है प्रकृति का? लेकिन मूल मे वह कौनसी बात है, वह कौन स तत्व है, जो हमें जोड़ देता है प्रकृति से? उसके हर एक कण से? सौंदर्य!!! वही तो है, जो हमें आकर्षित करता है, खींचता है, बोध देता है स्व का...और आनद से मजबूर करता है वह देखने के लिए जो हमसे बेहतर है, जो हमसे ज्यादा आनंदित है, जो दिला सकता है हमें एक ऐसा शुकून, जो रूह मे बस जाए, फिर कोई भी तो राज़ नहीं रहेगा प्रकृति का. क्यूंकि सौंदर्य ही तो मिलाता है आपको अपने मूल तत्व से प्रकृति से, फिर प्रकृति की हर एक साधना या फिर साधना मे निहित प्रकृति, सौंदर्य अपने आप ही सामने ला देगा.

प्रकृति के सौंदर्य को एक साधक ही समज सकता है, यु इसी लिए साधको ने अपना डेरा हमेशा प्रकृति के बिच मे रखा जिससे वह उसके सौंदर्य से साधना के हर एक पक्ष को समजे और आत्मसार कर सके. क्या अब भी कुछ शेष बचाता है इस साधना की महत्ता को समजने के लिए जिसका प्रचलन सिर्फ उच्च कोटि के सन्याशी साधको के मध्य मात्र ही रहा है ?

इस साधना को करने के लिए साधक एसी जगह का चुनाव करे जो की प्रकृति के मध्य हो, शांत हो. साधना के दौरान सम्पूर्ण मौन का पालन अनिवार्य है

साधना के दौरान साधक को सर्वथा अकेले रहना है

साधना के दौरान सिर्फ दूध और ताज़े फल आहार मे ले सकते है

यह साधना किसी भी वार से शुरू की जा सकती है लेकिन जिस दिन रवि पुष्य नक्षत्र हो उस दिन प्रारम्भ करना ज्यादा उच्चित रहता है

स्फटिक माला से निम्न मंत्र की २५ माला सूर्योदय के समय और २५ माला सूर्यास्त के समय जाप करे

ॐ स्फम प्रकृतिर्र सौंदर्य सयुज्यात्मस्वरुपाय नमः

साधक मंत्र जाप पूर्ण करने के बाद तुरंत ही बहार घुमाने निकल जाये और जितना हो सके उतना शांत वातावरण मे रहे.

यह साधना ७ दिन की है और ७ दिन तक नियमित रूप से इस साधना को करने के बाद साधक का प्रकृति के वो रहस्य समजने लगता है जो की गुह्य होने के साथ साथ, अध्यात्म की उच्चतम अवस्था है

कई सन्याशी साधको को इष्ट सिद्धि होने के बाद देशटन के लिए १२ साल २१ साल ५४ साल या अपने संकल्प के मुताबिक भ्रमण पर जाना होता है, सद्गुरु अपने चुने हुए शिष्यों को भ्रमण पर भेजने से पहले गुप्त रूप से यह साधना सम्प्पन करा देते थे और जब वह भ्रमण से वापिस आते है तब तक प्रकृति से वह वो गुह्य ज्ञान प्राप्त कर के आते है जो की उनके ज्ञान के स्तरको सेंकडो गुना बढ़ा देती है और प्रदान करती है अपने आपको.

****

PRAKRITI SE SOUNDARY SADHANA

Nature is variable at every moments and that is the only main base power for the creation and immersion. Very France, immersing itself inside us; or else compelling us on the stage where there is no option except immersing our self in it, it is not often a creation taking place to a pleasant change which touches the heart. Sometimes, it tough to look apart from a glowing flower, lost in itself, self infatuated, drowning someone to tell something, to make something understand. Perhaps, it is the message from him to be lost within, and that too on extend where we forget our self, whatever if you lost your existence, but nature will make your permanent existence. One will merge to a power that made our existence.

That is the process which had been noticed by our ancestors and termed as meditation!

VAAK SHAKTI SE SOUNDARY SADHANA

क्या अपने शब्द सौन्दर्य से सबका का मन जीता जा सकता हैं हाँ पर कैसे ....

हमसभी तो शारीरिक सौन्दर्य को ही सौन्दर्य की पूर्ण परिभाषा मानते आये हैं हमने इस के अलावा कुछ और जाना ही नहीं हैं . पर एकपल के सोचिये की कोई अद्भुत रूप से ही सुन्दर व्यक्तित्व बस मानो दिल को छू कर जा रहा हो सभी दृष्टी से पूर्ण शारीरिक रूप से सुन्दर भी हो , वस्त्रों के विन्यास से भी वह सुन्दर हूँ पर जैसे ही उसने एक शब्द बोला की , हमने शब्द सुन कर कर अपना मुंह सा बना लिया , अब आप ही सोचिये की यह तो सौन्दर्य की पूर्ण परिभाषा नहीं न हुयी न , कुछ ओर चाहिए ..

साधना के माध्यम से आपने अद्भुत तर्क शक्ति प्राप्त कर ली या अपने कठोर श्रम से विभिन्न ग्रंथो के विषद पढाई से यह अवस्था प्राप्त कर भी ली ,

पर वाणी की वह सौन्दर्य कहाँ से लायेंगे आपने निश्चय ही अपने जीवन में लोग तो देखें होंगे ही जिन्होंने भले ही वह साधारण रंग रूप के हो या या उनकी शिक्षा साधारण भी हुए हो तब भी उन्होंने बोलना शुरू किया तो मानो सारे लोग मन्त्र मुग्ध से हो गए. ठीक इसी तरह , किसी के सामने ,आपने कुछ शब्द ऐसी मधुरता से कहे ही वह कई दिन तक उन शब्दोंकी गहरे मधुरता में डूबा सा रहा हाँ आपके शब्द चापलूसी से भरा हुए न रहे हो , तब आप क्या समझते नहीं हैं की यह भी एक सौन्दर्य का मापदंड हो सकता हैं .

आखिर हम सभी माँ महा सरस्वती की उपयोगिता कैसे भूल सकते हैं आखिर वाक् शक्ति उन्ही की कृपा ही तो हैं .

हम सभी ने इन सौन्दर्य की पूर्ण परिभाषा को एक सिंह वत पुरषोचित गरिमा को धारण किये हुए, धीर वीर , मधुर मुस्कान हमेशा धारण किये हुए उन परम पुरुष को अपने सदगुरुदेव जी के रूप में सदैव ही देखा हैं . वही उनके क्रोधमय स्वरुप के सामने तो मानो स्वयं माँ महाकाली ही नृत्य माय होजाती हैं सारा ब्रह्माण्ड ही काप जाता हैं .

अब प्रवचन की ही बात ले लीजिये , जब सदगुरुदेव बोल रहे होतो समय भी तो कुछ पल ठहर कर विश्राम ले कर उस उर्जा मय , प्रेरक भाव मय, साधना मय , उच्चता से परिपूर्ण गरिमा से सुनता जाता हैं और अपने आप को पुनः उर्जा मय बनाता हैं , साधक शिष्य तो मानो उस मधुर प्रवाह में वहे जाते हैं, वातावरण में गंभीरता होते होते ही सदगुरुदेव जी अपनी मुस्कान के साथ एक हास्य का प्रवाह किया मनो सारा शिविर हस्ते हस्ते ओतप्रोत हो गया हैं , जिन्होंने ने भी सदगुरुदेव का दिव्य प्रवचन में से वह हिस्सा सुना हो जिसमें उन्होंने " कैसे उधार लिया जाता हैं एक ही व्यक्ति से बार बार ही नहीं , बल्कि हर बार और वह भी सफलता पूर्वक " वह इन शब्दों को आसानी से समझ सकता हैं .वह आज भी उन क्षणों में जा कर उस हास्य का लाभ उठा सकता हैं मानो सदगुरुदेव उसी के साथ बात कर रहे हो .

क्योंकि वह तोपरम पुरुष हैं .

हमसभी सदगुरुदेव जीके प्रवचन तो अनेक बार सुने हैं ओर सुनते रहते हैं पर कभी आपने गौर किया हैं सदगुरुदेव किन व्यक्तियों पर या उनके साधना पर ज्यादा बोलते रहे हैं , उनमेंसे प्रथम तो हैं ब्रम्ह ऋषि विश्वामित्र, दुसरे हैं आदि शंकराचार्य , तीसरे लंकाधिपति रावण(सदगुरुदेव बेहद प्रयास किया की उस जैसे महा ज्ञानी अद्भुत तंत्र साधक जिन्होंने सारा ज्ञान सीधे भगवान् शिव /शंकर से हिप्राप्त किया हो उसे मात्र एक घटना के कारण उसके व्यक्तिव्य ओर उसके ज्ञान को ओछा मानना उचित नहीं हैं).

यह तो बात व्यक्तित्व की हैं पर यदि आपसे पूंछा जाये की उन्होंने आधुनिक युग की किस किताब के बारे में कहा हैं तो आप मेंसे से बहुत से आश्चर्य चकित हो जायेंगे की कौन सी ऐसी किताब आधुनिक लेखक की भी हो सकती हैं . यह तथ्य उतना ही आश्चर्य होगा जितना की आपसे कहा जाये उन्होंने एक उपन्यास कीभी रचना की थी जिस पर एक एक सफल मूवी का निर्माण किया गया था , उस उपन्यास "एक डाली रजनी गंध की "ओर फ़िल्मका नाम "रजनीगंधा " हैं .

पर वह प्रश्न तो छुट ही गया हैंकि वह किताब कौन सी हैं, ध्यान रहे इस किताब पर एक पूरा प्रवचन सदगुरुदेव भगवान् ने दिया हैं , इसी बात से उस किताब की महत्ता समझ आती हैं , वह हैं डेल कार्नेगी कृत " how to win friends and influence people " जो की हिन्दीमें "लोक व्यहार " के नाम से आसानी से उपलब्ध हैं , सदगुरुदेव जीने कहा था की व्यावसायिक जगत ओर पारिवारिक जीवन के लिए एक गीता सामान ग्रन्थ हैं

जब सदगुरुदेव ने उस पर कहा हैं तो हमें भी उस किताब को पढना चाहिए जिसके माध्यम से हम कैसे बोलना चाहिए , कैसे बात सामने रखना चाहिए, मधुर वार्ता लाप के गुण सीख सकते हैं (आपकी जानकारी के लिए बता दूं की सदगुरुदेव भले ही हमेशा साधनाओ पर बोलते रहे हैं पर वह हमेशा आधुनिक विज्ञानं विषय सम्बंधित किताबे जनरल ही पढ़ते थे.)

यूंतो एक तंत्र साधक को उग्र होना चाहिए तभी तो वह ऊपर उठ सकता हैं , तंत्र तो उग्रता का पुष्टि कारक हैं ही .पर उसमें मधुर ता भी तो होनी चाहिए यह सभी बाते सदगुरुदेव जी ने अपने व्यहार से हमसबके सामने स्थापित किया था .

सदगुरुदेव जीने उस दिन जोमुख्य बाते की थी साथ ही किताब में दी गयी कुछ बाते आपके लिए. जो आपके व्यक्तित्व के लिएमहत्त्व पूर्ण होंगे ही ,,

1. कुछ विशेष परिस्थिया को छोड़ दे तो आपको विवादों से बचना चाहिए व्यर्थ के तर्क वितर्क बहुधा किस की जीत नहीं बल्कि दोनो पक्षों के हार का कारण बनते हैं .
2. सामने वाले कीबात पहले सुने, उसके अनुभव को अपने से ज्यादा महत्त्व दे उसके अनुभव को सही ठहराते हुए अपनी बात नम्रता पूर्वक कहे .
3. हमेशा एक निस्छ्हल मुस्कान धारण करे.
4. बात चीत में पूर्ण नम्रता युक्तशब्द बोले.
5. क्रोध या तनाव में हमेशा तत्काल जबाब से बचे .
6. हर व्यक्तिके लिए उसका नाम ज्यादा महत्त्व पूर्ण होता हैं .उसका नाम लेकर ही बात करे उचित संबोधन लगा कर .
7. चापलूसी नहीं बल्कि मुक्त ह्रदय से की गयी प्रसंशा ज्यादा महत्त्व पूर्ण होती हैं .
8. जब भिकिसी योग व्यक्ति से सलाह मांगने जाये तब उस समस्या को सुलझाने सम्बंधित कुछ उपाय अपने पास रखे.
9. किसी भी रूप में सामने वाले व्यक्तिको निचा दिखा कर अपनी उच्चता सिद्ध न करे ..
10. अत्यंत कठोर सत्य को भी स्नेह से परिपूर्ण करके कहे किसी के व्यक्तिव को नीचा न दिखाए.

यह तो कुछ उपाय हैं , जो उस किताब में बताये गए हैं ऐसे अनेको उपाय उसमें आप देख सकते हैं . निश्चय हिउनका इस्तेमाल आपके न केबल वाक् शक्ति को प्रभावित करेगा बल्कि आपके व्यक्तित्व में आश्चर्य जनक परिवर्तन लायेगा

आप ज्यादा अच्छा होगा की अपने आप को किसी शीशे के सामने बैठ कर बोले तब आप अपने को देख कर अपनी बात कहने का ढंग में बदला वट लाकर देंखे, साथ ही साथ अपनी बात मैनेक उच्च स्तरीय हास्य का भी स्थान रखे .सामने वाले की आँखों में देखकर बोले पर घूरते हुए नहीं ..सीधे उसके चहरे पर ही हमेशा नहीं बल्कि उसके आखों के आलवा चहरे के अन्य भागोंको देखते हुए बोले.जब भी बोल रहे होतो अपने चहरे में हलकी सी मुस्कान तो रखे ही . यदि कुछ दिन त्राटक का अभ्यास किया हो तो यह तो सोने में सुहागा होगा,

साथ ही साथ कुछ स्तरीय शेर शायरी भी. किविताये कुछ मधुर चुटकुले भी याद रखे जो जब समय पड़े आपके वाता वरण को गंभीरता /बोरियत से बचा कर पुनः सभी का ध्यान एकाग्र करवा सकतेहैं .

अंत में एक बात यह कहाँ चाहूँगा आपने देख होगा की जब आप प्रसन्न होते हैं तब आपका चेहरा भी दमकने लगता हैं , वहीँ जब आप उदास होते हैं तब आपका चेहरा सच्चाई बता ही देता हैं , इसका यह मतलब तो यह हुआ की चेहरे का हमारे मन ह्रदय से गहरा सम्बन्ध हैं, तो यदि जब हम परेशान हो तो थोड़ी सी मुस्कान धारण करिए तो यह ह्रदय का तनाव कुछ तोकम करेगी.

इस किताब को गंभीरता पूर्वक पढ़े और अपने जीवन में उतारे और इस सौन्दर्य कायाकल्प की अद्भुत विधा आपके जीवन मैन्कितना परिवर्तन ला देती हैं आप स्वयं जान जायेंगे .

****

Adding beauty in your speaking power

In general , we all, are consider physical beauty is the real beauty and we never consider other aspect of beauty that can be possible. Just think for a minute that someone who is extremely beautiful , it seems like his/her beauty touch our heart , with physical beauty and also having very good clothes wearing style, than consider a beauty but when she speak a word from her mouth, on listening that word and style of that , we felt very bad, than that will be not a person who consider a beautiful according the definition.

Some thing more is needed.

DURLABH GOPNIY VAANI SOUNDARY SADHANA

अब उस सौभाग्य की क्या कहे जब माँ पराम्बा अपने स्वरूप से ही वाणी सौन्दर्य दे रही हो ...

सौंदर्य का अर्थ अत्यधिक संकीर्ण रूप मे प्रदर्शित हुआ है और वास्तव मे हम एक एसी अंधी दौड मे लगे है की सौंदर्य को सिर्फ गोरी चमड़ी मात्र का नाम देके अपने काम मे व्यस्त हो जाते है, लेकिन हकीकत तो सब के सामने ही होती है, उसे अनुभव करने की सायद हमें फुर्सत नही है, सौंदर्य तो एक भाव है, एक मिजाज़ है, एक भावभूमि है जहा से शुरू होते है जीवन के वो आयाम जिसमे हर एक क्षण मधुरता युक्त हो जाता है, फिर वह आनद का स्त्रोत खुद को ही मुघ्ध कर देता है ब्रम्हांड की उस महान रचना पर, जो धीरे धीरे अपने आप मे नज़र आने लगती है और बिखर जाती है चारो तरफ, ओर फिर क्या..धीरे धीरे आसपास के पूरे वातावरण मे समाहित हो जाता है और आसपास के वातावरण ओर सभ्यो को भी आनदित किये रहता है

वाणी का महत्व कितना और क्या है, ये बताने के लिए तो शायद शब्द ही कम पड़ जाए. वाणी की सत्ता सर्व व्यापी है, और क्यों न हो ये भी तो एक भाग ही है सौंदर्य का...! इंसान चाहे कितना भी स्वरुपवान हो लेकिन उसकी वाणी का प्रभाव नहीं तो फिर क्या रह जाएगी उसके रूप की महत्ता? वरन एक पल को यह भी सोचा जा शकता है की चाहे शारीरिक रूप से व्यक्ति सुंदर सम्प्पन न भी हो लेकिन अगर उसकी वाणी मधुर है, प्रभावशाली है तो लोग उसके पास खींचे चले आते है. तो क्या सौंदर्य का यह पक्ष भी महत्वपूर्ण नहीं है ? बिलकुल है और आज के युग मे तो इसकी महत्ता अत्यधिक बढ़ गयी है. लेकिन आखिर वाणी मे वो माधुर्य, वो लचक और लावण्य लाए भी तो कैसे? इसके जवाब मे साधना जगत मे इसी पक्ष से सम्बंधित कई प्रकार की साधनाए निहित है. महाविद्याओ की श्रेणी मे एक एसी ही साधना है जो की वाणी को निखर कर उसे सौंदर्य मे परावर्तित कर देती है. यह महत्वपूर्ण साधना मे महाकाली एवं त्रिपुरसुंदरी के बीज का संगम है, महाविद्या महाकाली वाक्सिद्धि वं वाक् चतुर्थ्य प्रदान करने की कृपा करती है जब की भगवती त्रिपुर सुंदरी वाणी मे लावण्य और मिठास का सौंदर्य प्रदान करती है.

इस साधना को सम्प्पन करने के इच्छुक साधक के पास मूंगा माला होनी चाहिए. यह मात्र ११ दिन की साधना है जिसे रात्रि काल मे ९ बजे के बाद सम्प्पन किया जाता है. इस साधना मे वस्त्र सफ़ेद रहे. दिशा उत्तर या पूर्व होनी चाहिए. साधना शुरू करने से पहले हाथ मे जल लेके संकल्प ले. उसके बाद निम्न मन्त्र की ११ माला जाप करे.

क्रीम हसकल क्रीम वाकचातुर्थ्य वाणीसौंदर्य प्रदायिनी नमः

साधना समाप्ति के अगले ही दिन से साधक को उच्चित परिणाम प्राप्त होने शुरू हो जाते है.

****

VAANI SOUNDARY SADHANA

The meaning of the word beauty has been described in very short way and in real we all are bounded in a blind run that just applying name of beauty to the fair skin we goes busy in our respective works but reality is always in front of everyone, but we do not have enough time to understand it. Beauty is a feeling, nature and a platform from where the sweetness of the life starts in which every moment become joyful, and then after that source of the joy let you float ourselves on the one of the bests creation of the universe, which starts being visualize in one's self and it gets on spreading in the surrounding…and then after….it immerse in the surroundings and keeps joyful environment for the surrounding members too.

What and how weighted the significance of the speech is; to describe this, words are too short.

सौन्दर्य को बहु मूल्य बनाने वाले अद्भुत सरल प्रयोग ..

SIMPLE PRAYOG FOR BEAUTY

इन सरल प्रयोगों को अपना कर के देखिये न ....

हर कोई सुन्दर दिखना चाहता हैं यह बात पहलेके युग मेंभी सत्य थी और आज के सन्दर्भ में औरभीसत्य आज पुरुष और महिला दोनों व्यावसायिक क्षेत्र में एक दुसरे को बराबरी से प्रतियोगिता दे रही हैं , इस

आप धापी मेंकिसकेके पास टाइम हैं की वह अपनी देखभाल कर सके ,वह तो अपने आपको या तो परिस्थितिपर छोड़ देता हैंया फिर बेयुटी पार्लर की शरण लेता हैं .

यह पर कुछ ऐसे सरल प्रयोग हैं जो आपके लिए बेहद ही मूल्य वान होंगे. –

प्रयोग क्रमांक 1

सबसे पहले किसी भी व्यक्ति की निगाहे आपके चहरे पर ही पड़ती हैं यही चेहरा से तेज झलक रहा हो कांति मय हो तो क्या कहने आज कल बाज़ार मैं एक से बढ़ कर एक अपना गुण गान करने वाले साबुन उपलब्ध हैं , पर इनके उपयोग की जगह यही अपने घर मैं आसानी से उपलब्ध होने वाले थोडा सा दही और इसमें बेसन मिला कर एक पेस्ट से बना ले , फिर इसे अच्छे से अपने चहरे बाँहोंमें गले में लगा ले , थोडा हलके हाथ से मसाज करें , फिर साफ पानी से इसे धोले , यदि इसे प्रतिदिन स्योग करें तो कुछ दिनों के अन्दर ही आप अपने चेहरे से कान्ति मयता से अचरज होजाएगी .

प्रयोग क्रमांक 2.

चेहरे की सुन्दरता तो लम्बे काले घने केश राशी से हैं इसके लिए भी सदियों से उपयोग होता हुआ ही प्रयोग ही ज्यादा कारगर हैं वह यह हैं की किसी भी खेत से प्राप्त काली मिटटी प्राप्त कर ले, उसे अच्छे से कूट पीट कर अत्यंत महीन कर ले ,साथ ही साथ किसी भी साफ कपडे से साफ कर ले (ऐसा करना संभव न हो पा रह हो तो उस मिटटी का पूरा धेला ही उपयोग कर कर सकते हैं केश धोने से पहले उसे पानी में अच्छे से भिगो दे , फिर हांथो से अच्छे से मिला दे एक पेस्ट जैसा बन जाये तो अपने केश को भी पानी से धोले फिर अहिस्ता अहिस्ता से इसे अपने केशों में लगा ले , फिर १०/१५ मिनिट बाद पानी से केशों को धो ले, आपके केश बिलकुल अच्छी तरह से मुलायम होजाएंगे

प्रयोग क्रमांक 3.

शरीर व चेहरे की सुन्दरता में जल की उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता हैं आज के अस्त व्यस्त जीवन में संतुलित जीवन शाली मानो दुर्लभ ही हैं साथ ही साथ आवश्यक जल पीना भीकम होता जा रहा हैं . इसके लिए आयुर्वेद कहत हैं की सूर्योदय के पहले कमसे कम ३/४ गिलास पानी पीना चाहिए , (निश्चय ही जिनकी आदत नहीं वह धीरे धीरे इस आदत को पनाये ओर जल की मात्र धीरे धीरे बढ़ाते जाये) , दिन में यथसंभव जब भी प्यास लगे तो इसे रोके नहीं , चेहरे की कांति स्वयं ही आती जाएगी .

इसके बाद नाश्ते में , अंकुरित चने के साथ एक गिलास हल्का कुनकुना दूध भी पि ले, कुछ दिन में ही आपको अन्तर महसूस होने लगेगा.

प्रयोग क्रमांक 4

संभव हो तो प्रतिदिन अपने शरीर की मालिश करे यह एक प्रकार का व्यायाम भी हैं साथ ही साथ सरीर से थोडा सा पसीना भी निकलेगा जो की रोम छिद्र को खोल देगी , जो की त्वचा के सौन्दर्य के लिए बहुत अच्छा हैं .

प्रयोग क्रमाक 5

मुल्तानी मिट्टियो को पानी में भिगो दे इसका पेस्ट सा बना ले इसमें थोडा सा चन्दन ओर गुलाब जल मिला कर अचची तरह से पुनः पेस्ट सा बना ले, जब सब एक रस हो जाये तब इसे अपने चेहरे पर लगा ले , फिर १५/२० मिनिट के बाद इस पेस्ट को पानी से धो ले , यह भी कांति वर्धकउपाय हैं .

प्रयोग क्रमांक 6

गुलाब की पंखुड़ियों को दूध में मिलाकर या तो चेहरे या फिर पुरे शरीर पर लेप लगाये यह भी बेहद गुणकारी उपाय हैं .

प्रयोग क्रमांक 7

तुलसी तो सभी के घरों में आसानी से मिलने वाला अद्भुत पौधा हैं जिसका आयुर्वेदिक रूप से भी अत्याधिक महत्त्व हैं तुलसी की पत्ती पानी में पीस कर लेप जैसा बना कर लगाये ,फिर पानी से धो ले , निश्चय कुछ दिनके प्रयोग से आपका मुख मंडल की कांति बढ़ जाएगी .

प्रयोग क्रमांक 8

इसी तरह से हर घर में आसानी हल्दी ओर काली तिल को पिस कर चेहरे में लेप जैसा लगाये यह भी कांतिवर्धक हैं .

प्रयोग क्रमांक 9

पपीता का फल एक ओर जहाँ पेट सम्बंधित रोगों में अत्यधिक लाभदायक हैं वही दुसरे ओर खूब पके पपीते के गुदे को चेहरे पर मलिए फिर गरम पानी से धो ले, कुछ दिन में मुहांसे भी दूर हो जायेंगे

प्रयोग क्रमांक 10

केशों में रूशी की समस्या से अधिकतर लोग पीड़ित रहते हैं यदि आधा नीबू लेकर एक कप पानी में निचोड़ ले उससे सर धोने से रूशी दूर हो जाती हैं,

प्रयोग क्रमांक 11

हलकी मालिश यदि चेहरे की जाये तो क्या कहने हैं फिर यदि यह मालिश जैतून के तेल में नीबू का रस मिलकर रात्रि में सोने से पहले चेहरे पर करे तो फिर देखिये कुछ दिनों में आपके चेहरे में क्या अद्भुत निखार लाता हैं .

प्रयोग क्रमांक 12

ठीक इस तरह दही के गुण कारक गुणों से कौन परिचित न होगा तो यदि दही को चहरे पर रोज़ मले कुछ दिन में ही चेहरे का रंग साफ हो जायेगा.

****

VAAM SOUNDARY YANTRA SADHANA
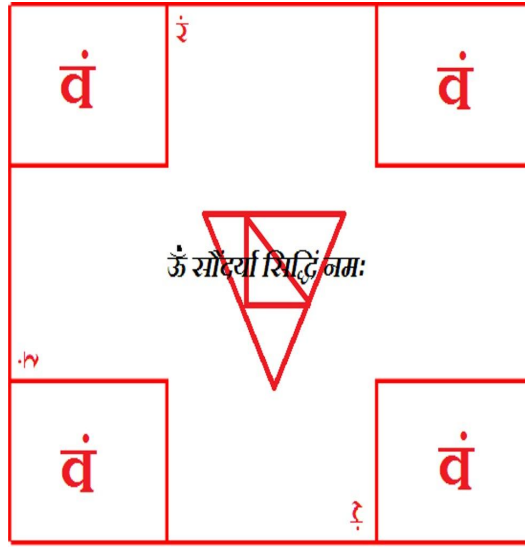
सौंदर्य प्राप्त करने का अद्भुत यन्त्र प्रयोग

यंत्रो की महत्ता के बारे मे जितना भी कहा जाए कम ही है, यन्त्र अपने आप मे एक पूर्णविषय है. यन्त्र विशेष आकृतियों से उर्जा का निर्माण कर के ब्रम्हांड की शक्तियों को अपनी तरफ आकर्षित करने का एक अद्भुत विज्ञानं है. वह एक महज आकृति मात्र नही होती, वह एक प्रतीक होता है जो निश्चित उर्जा को जन्म देती है. लेकिन यंत्रो के बारे मे एक महत्वपूर्ण बात जानना ज़रूरी है की यंत्र मे चैतन्यता होनी अत्यधिक आवश्यक है क्यूँ की जो खुद ही अचेत है वह किसी भी प्रकार की उर्जा का निर्माण कर भी कैसे सकता है. उसी के लिए कई विशिष्ट विधान है. यु हमारे ऋषिमुनियों ने अत्यधिक श्रम के बाद इस दिशा मे खोज कर के जीवन के सभी आयामों एवं महत्वकांक्षाओ की पूर्ति हेतु महत्वपूर्ण यंत्रो का निर्माण किया है

प्रस्तुत यन्त्र भी इसी क्रम मे एक अनूठा यन्त्र प्रयोग है, अत्यधिक गुप्त रूप से इसका प्रचलन रहा है सौंदर्य प्राप्ति हेतु. इस यन्त्र का प्रयोग करने पर एक आकर्षण युक्त सौंदर्य प्राप्त किया जा सकता है. इस यन्त्र को वाम सौंदर्या यन्त्र कहा जाता है.

यह एक सामान्य यन्त्र मात्र लगता है लेकिन इसमे कई विशेषताए छिपी हुई है जिसका संक्षिप्त विवरण कुछ इस प्रकार है.

मध्य मे अधः मुखी त्रिकोण है जो की शक्ति का प्रतीक है, यहाँ पे यह सौंदर्या के वाम पक्ष का प्रतीक चिन्ह है. उसके अंदर का तिरछा त्रिकोण का अर्थ अत्यधिक गुप्त है, यहाँ पे त्रिकोण भेदन न करते हुए उसके छोर तक ही है, मतलब यह सर्जन क्रिया न होते हुए आकर्षण क्रिया को जन्म देती है जो की ब्रम्हांड का मुख्य नियम है की पूर्ण सर्जन से पूर्व आकर्षण ज़रूरी है. ओर सौंदर्य आकर्षण का मुख्य भाव है. उसी के ऊपर लिखा गया मंत्र सौंदर्या का मूल मंत्र है. साथ ही साथ रतिप्रतीक चारो मुख्य स्थान पर रह कर कामप्रतीक को अपनी और आकर्षित किये हुए है. इसका अर्थ यह है की व्यक्ति का रति भाव जागृत हो जाता है जिससे सभी लोग उसके सौंदर्य से आकर्षित होते हुए खींचे चले आते है. यह तो इसका सामान्य विवरण हुआ लेकिन अगर गूढता मे जाए तो इस के हजारो और पक्ष सामने आ जाए.

इस यन्त्र को भोजपत्र पर बनाना योग्य रहता है, अगर यह संभव न हो तो सफ़ेद कागज़ पर भी इसका निर्माण हो सकता है

कुमकुम से पहले अधः त्रिकोण का निर्माण कर, अंदर के त्रिकोण का निर्माण करे. उसके बाद बाहरी रेखाओ का निर्माण कर बिज को लिखे. अंत मे मूल मंत्र को हल्दी से नियुक्त स्थान पर लिखे.

इसके लिए आप चांदी की सलाका या अनार की डाली का उपयोग कर सकते है.

यह कार्य रात्रि मे शुभ मुहूर्त मे बुधवार के दिन किया जाना चाहिए. इसके बाद यंत्र को अपने सामने रख कर धुप दीप देके सौंदर्या के मूल मंत्र का ११ माला स्फटिक माला से जाप करे

ॐ सौंदर्या सिद्धिम नमः

उसके बाद अगले ११ दिनों तक रोज रात को १० बजे के बाद निम्न मंत्र का ११ माला जाप करे

ॐ वामसौंदर्या सौंदर्य प्रदाय सिद्धिं देहि क्लूम

साधना के मध्य ही योग्य परिणाम प्राप्त होने शुरू हो जाते है. साधना पूर्ति पर यन्त्र को किसी तावीज़ मे भरकर धारण कर लेना चाहिए और १ महीने तक धारण करे रहना चाहिए.

****

परम दुर्लभ आत्म लिंग साधना

सम्पूर्ण जीवन का सौन्दर्य हैं यह साधना ...

योग तन्त्र का पूरा आधार एक गुढ़ रहश्य है जिसे जितना भी समजा जाये कम ही पड़ता है, सदियों से साधक ने इस आधार को समजने की कोशिश की है और अत्यधिक से अत्यधिक ज्ञान प्राप्त करने परभी उसके सभी पक्ष का अनावरण नही हो पाया है, वह आधार है कुण्डलिनी शक्ति. कुण्डलिनी के जितने भी पक्ष अब तक विविध सिद्धोने सामने रखे है वह मनुष्यों को उसकी शक्ति के परिचय के लिए पर्याप्त है. सामान्य रूप मे साधको के मध्य कुण्डलिनी का षट्चक्र जागरण ही प्रचलित है, लेकिन उच्चकोटि के योगियों का कथन है की सहस्त्रारजागरण तो कुण्डलिनी जागरण की शुरुआत मात्र है, उसके बाद ह्रदयचक्र, चित चक्र, मस्तिस्क चक्र, सूर्यचक्र जागरण जैसे कई चक्रों की अत्यधिक दुस्कर सिद्धिया है जिनके बारे मे हम सामान्य मनुष्यों को भले ही ज्ञान न हो लेकिन इन एक एक चक्रों के जागरण के लिए उच्चकोटि के योगीजन सेकडों साल तक साधना रत रहते है. इस प्रकार यह कभी न खत्म होने वाला एक अत्यधिक गुढ़ विषय है. इसी क्रम मे अलग अलग लाखो-करोडो विधान प्रचलित है.

योग तन्त्र के मध्य कायाकल्प के लिए एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विधान है. कायाकल्प और सौंदर्य का सही अर्थ क्या है, इसके बारे मे पहले ही चर्चा की जा चुकी है की यह मात्र काया को सुन्दर बनाने की कोई विधि मात्र नही है. यह आत्मा की निर्मलता से लेके पाष से मुक्त होके आनंद प्राप्ति की क्रिया है. अगर साधक आतंरिक चक्रों के दर्शन की प्रक्रिया कुण्डलिनी के वेगमार्ग से करता है तब उसे मूलाधार से आगे बढ़ते ही एक त्रिकोण द्रष्टिगोचर होता है, जो की आतंरिक योनी है, मनुष्यका ह्रदय पक्ष और स्त्री भाव इस त्रिकोण पर निर्भर करता है, और उसके ऊपर मणिपुर चक्र के पास एक लिंग ठीक उस त्रिकोण अर्थात योनी के ऊपर स्थिर रहता है, जो की व्यक्ति के मस्तिष्क पक्ष और पुरुष भाव से सबंधित है. यह त्रिकोण और लिंग से एक पूरा शिवलिंग का निर्माण होता है जिसे योग-तन्त्र मे आत्मलिंग कहा जाता है. इस लिंग के दर्शन करना अत्यधिक सौभाग्य सूचक और सिद्धि प्रदाता है. शिवलिंग के अभिषेक के महत्व के बारे मे हर व्यक्ति जनता ही है. यु इसी क्रम मे साधक इस लिंग का अभिषेक करे तो आत्मलिंग से जो उर्जा व्याप्त होती है वह पुरे शरीर मे फ़ैल कर आतंरिक शरीर का कायाकल्प कर देती है, उसके बाद साधक निर्मल रहता है, उसके चेहरे पर और वाणी मे एक विशेष प्रभाव आ जाता है. साधक एक हर्षोल्लास और आनंद मे मग्न रहता है और कई सिद्धिया उसे स्वतः प्राप्त होती है.

योगतन्त्र मे इस दुर्लभ विधान की प्रक्रिया इस प्रकार से है. यथासंभव इस अभ्यास को साधक ब्रम्ह मुहूर्त मे ही करे, लेकिन अगर यह संभव न हो तो कोई ऐसे समय का चयन करे जब शोरगुल न हो और अभ्यास के मध्य कोई विघ्न ना आये. साधक पहले अपनी योग्यता से सोऽहं बीज के साथ अनुलोम विलोम की प्रक्रिया करे. उसके बाद भस्त्रिका करे. अनुभव मे आया है की जब साधक २ मिनट मे १२० बार पूर्ण भस्त्रिका करे तब उसे कुछ समय आँखे बांध करने पर कुण्डलिनी का आतंरिक मार्ग कुछ क्षणों तक दिखता है. इस समय मे साधक को ॐ **आत्मलिंगाय हूं** का सतत जाप करते रहना चाहिए. नियमित रूप से अभ्यास करने पर वह लिंग धीरे धीरे साफ़ दिखाई देने लगता है. जब वह पूर्ण रूप से दिखाई देने लग जाए तब आत्मलिंग के ऊपर आप अपनी कल्पना के योग्य ॐ **आत्मलिंगाय सिद्धिं फट** मंत्र द्वारा अभिषेक करे. जिसे आँखों के मध्य हम बहार देखते है, चित के माध्यम से शरीर उसे अंदर देख सकता है, चित ,द्रष्टि के द्वारा पदार्थो का आतंरिक सर्जन करता है और उसे ही मस्तिक के माध्यम से हम बिम्ब समज कर हम उसे बहार देखकर महसूस करते है, तो इस प्रक्रिया मे चित का सूक्ष्म सर्जन ही मूल सर्जन की भाव भूमि का निर्माण करता है, इस लिए अभिषेक करते वक्त चित मे से निकली हुयी अभिषेक की कल्पना सूक्ष्मजगत मे मूल पदार्थ की रचना करती ही है, जिससे आप जो भी अभिषेक विधान की प्रक्रिया करते है वो आपके लिए भले ही कल्पना हो, सूक्ष्म जगत मे उसका बराबर अस्तित्व होता ही है. अभिषेक का अभ्यास शुरू होते ही साधक का कायाकल्प भी शुरू हो जाता है.

****

AATM LING SADHNA

The base of the Yoga-tantra is one big mystery, which is too wide to understand, from centuries Sadhakas of all ages have tried to understand this base and by generating more and more knowledge of the same, all aspect of the same have not been disclosed, that base is Kundalini Power.

SAMMOHAN SE SOUNDARY PRAPTI

एक अत्याधिक सरल विधि ....

हमारी साधना विधियों में सभी विधि अपने आप में श्रेष्ठ हैं सभी अपने आप में विशिस्ट हैं हर का अपना ही एक महत्त्व हैं , इस इसी श्रंखला में आप सम्मोहन विज्ञानं को रख सकतेहैं भले ही यह आज मान लिया जाता हो की यह पाश्चात्य देशो में पला बड़ा हुआ हैं पर वास्तव में इस विज्ञानं की नीव भी हमारी सनातन संस्कृति में हैं ही .पर इस के माध्यम से आप व्यक्ति की अन्तः मन की व्याधि या कमिया दूर करसकते हैं पर सौन्दर्य यह कैसे यह दे सकता हैं ...

सौन्दर्य के मूलभूत दोप्रकार हैं पहला तोजो बाह्यगत हैं दूसरा जो अंतर गत हैं और दोनों का जिसमे सही समन्वय हुआ हो वही सौन्दर्य किपरिभाषा में खड़े होने के लायक हैं , बौद्धिक के साथ मानसिक सौन्दर्य की अपना एक अलग महत्त्व हैं ..

हमसभी अधिकतर बाह्यगत सौन्दर्य की ही अधिक मान्यता रखते हैं , पर वह जो बाह्यगत प्रतिफलित हो रहा हो वह अंतर मन की खूबसूरती पर ही तो निर्भर होगा अन्यथा उसका आधार तो अंतर ही होगा न , पर अंतर मन अपने आप में इतनी विसंगतिया लिए हुआ हैं कि मानव को कहा जाये की वह पागलपन की आखिरी सीमा पर खड़े हुए दुसरे को पागल कह कर हस रहा हैं पर यह स्वयं भूल जाता हैं की यदि वह स्वयं जीवन का अर्थ का सही आकलन करे तो शयद कुछ लोग ही उसे मानसिक स्वास्थ्यकहेंगे या निकलेगे, पर इन विसंगतियों को कैसे दूर किया जाये . बस ठीक यही सम्मोहन काम में आता हैं , यहाँ सम्मोहन भी अनेक प्रकार का हो सकता हैं प्रथम तो जिसे हम चाहते हैं उसे सम्मोहित करेऔर अपने अनुकूल बनाये ,

वही दूसरी ओर यह विचार हैं की एक एक करके किस किस को सम्मोहित करते रहेंगे , क्या कोई ऐसी विधा हैं की जिसके माध्यम से जो कोई हमें देखे वह स्वयं ही सम्मोहित हो जाये .

अरे इसका उत्तर हैं हां "आत्म सम्मोहन" एक ऐसी विधा हैं जिसके माध्यम से यह संभव हैं.

पर यदिकोई आत्म सम्मोहन मे दक्ष नहीं हो पा रहा हो तो मंत्रात्मक विधान उपयोग करे,क्योंकि जब हमारा व्यक्तित्व स्वयं ही सम्मोहन के लिए लिए तैयार होगा तो हममें स्वयं ही वह गुण उत्त्पन्न होगा .

यहाँ मेरा तात्पर्य अपने व्यक्तित्व मे चुम्बकीयता उत्पन्न करना भी हैं , साथही साथ समग्र रूप से अपने में आकर्षण भी उत्पन्न करना हैं , यहाँ ....यह तो एक मिनिट में नहीं होसकता हैं की आपकी उचाई एक दम से बढजाये नहीं ...एकदमसे आपके चेहरे का रंग रूप बदल जाये पर पर इतना हैं की आप जहाँ होंगे वहा पर आपके चारो तरफ एक ऐसा वातावरण साथ होगा जो अपने आप में एक लावण्यता और आकर्षण स्वत ही उत्पन्न करता जायेगा ,

यहाँ एक बात अच्छी तरह से समझ जाये की चेहरे में सबसे पहले किसी भी व्यक्ति के नेत्र ही पहला बिंदु होता हैं जो आपको दृष्टी गत होते हैं तोक्योंना इसे ही चुम्बकीयता से जोड़ दिया जाये , आप यदि साधरण त्राटक करपाने से किसी भी तरह से असमर्थ पाते हो , इस विधि को भी अपनाये, किसी भी दर्पण के सामने बैठ कर स्वयं को भावना दे की आपमें आकर्षण हैं आप में सम्मोहन क्षमता हैं , आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली हैं , यह स्व सम्मोहन की विधि धीरे धीरे आपमें यह गुण उत्पन्न करती जाएगी .

थोडा सा अपनी चाल में संतुलित ता लाये , ध्यान दे किकिस तरह आपको जिन भी व्यक्ति की बाते या व्यक्तित्व आकर्षित करता हैं वह किस तरह से बोलते हैं आपको उनकी नक़ल नहीं करना हैं बल्कि आपको जो भी अच्छा हैं जहाँ भी अच्छा मिले उसे पूरे मन से स्वीकार करते जाना हैं धीरे धीरे आप पाएंगे आप में वह गुण स्वतः ही आते जा रहे हैं वस्तुतः कोई भी गुण बाहर से नहीं आता बल्कि सारे गुण तो हमारे अन्दर सुसुप्त अवस्था में रहते हैं बस जरुरत हैं की उन्हें पहचान कर उनका इस्तेमाल करना सीखे .

सदगुरुदेव जी द्वारा लिखित 'आधुनिक हिप्नोटिस्म के १०० स्वर्णिम सूत्र " में आपको ऐसे अनेको सूत्र मिलेंगे जिन्हें आप अपने जीवन में इस्तेमाल कर , यदि आपके पास समय नही हैं कि आप मेहनत करके एक अच्छे सम्मोहंविद बन पाए पर आप में सदगुरुदेव द्वारा लिखित सूत्र निश्चय ही आकर्षणता का अमृत घोल देंगे .

फिर भी आप चाहे तो "नेत्र चुम्कत्व दीक्षा " आत्म सम्मोहन दीक्षा " जैसी उच्च कोटि की दीक्षाओ के लिए सदगुरुदेव जी से प्रार्थना कर प्राप्त करे . फिर जब आपके बाह्य मन और अंतर मन में समन्वय होगा तो पूरा शरीर एक सांचे में ढलता जायेगा . फिर क्यों कोई न आकर्षित होगा , और क्या यहभी एक सौन्दर्य नहीं होगा

Attaining sundary through hypnotism

Each sadhana marg in our sadhan jagat is very special and unique and show a direction where everything what we want can be achieved , so no path is lesser in sadhan jagat and also having equal important one. In this series you can also include hypnotism science, through common believe that this science gain its modern importance/shape because of western world, but actually this science has also a root in our sanatan sanskriti. And through that all the inner hidden complexity/problem of any person can be removed. But how this can be helpful in gaining beauty..

मेरा अनुभव एक बेहद ऋणात्मक योग के साथ : केमद्रुम योग

MY EXPERIENCE WITH MOST HARMFUL YOG – KEMDRUM YOG

कैसे करे इसका सामना क्या कोई उपाय हैं

मानव जीवन में ग्रहोंका प्रभाव तोकेबल इस तरह न ही नकारा जा सकता की वह कोई व्यक्ति विशेष इसे नहीं मानता, केबल कोई यह मान ले की बिजली के तार से बिजली का प्रवाह नहीं हो रहा हैं और उसे वह छू ले जिस समय उसमे से विजली प्रवाहित हो रही होगी तो उसे भी बिजली का झटका लगेगा , और उसे भी जो इसे मानता हैं , मानव के विस्वास और अनुभव पर यह विश्व टिका नहीं हैं अन्यथा अभी तक सम्पूर्ण विश्व में हाहाकार मच गया होता , अभी अनेको पृष्ट के रहस्य सामने आना बाकि हैं हर विज्ञानं की अपनी सीमाए हैं उसका एक्महत्व हैं उसे नकारने से पहले उसके बारेमें खुद भी अध्ययन भी तो करे , तब स्वयं ही देख ले, एक सच्चे विज्ञानी कीतरह किसी भी विज्ञानं को सच्चाई परखने केलिए

एक वैज्ञानिक दृष्टी कोण अपनाये , फिर उसके धनात्मक ओर ऋ णा त्मक गुणों को देखें .

नाकि पहले से ही पूर्वाग्रह से ग्रसित हो कर एक ऐसी शोध में लगे जिसे की मानो आपको सिद्ध करना हैं की यह विज्ञानं अ प्रमाणिक हैं तो आप ऐसे अनेको उदहारण ढूढ लायेगे जो बता देगा की यह सही नहीं हैं वहीँ मानलो आपको सिद्ध करना हैं तो आप ऐसे अनेको उदाहरण ढूढ लायेगा जिससे यह सिद्ध होता हैं की यह बिलकुल सत्य हैं , तो इस तरह की तर्क /वितर्क में फसने से अच्छा हैं की कुछ बाते तथ्यात्मक देख ले .

१९९३/९४ मेंजब ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन कररहा था, तो मन मे सदगुरुदेव जी यही दिया सूत्र था की "केबल बाबा वाक्य प्रमाणं " न मानना, स्वयं भी हर योग को अपनी कसोटी पर कसना और जब संतुष्ट हो जाओ तो फिर आगे बढ़ते चलो ये सूत्र तुम्हे रास्ता दिखाए पर इन्हें पकड़ कर ही नहीं बैठ जाना और अपने आपको विख्यात ज्योतिष न मान लेना और अपनी दुकान न खोलने लग जाना बल्कि इसका अध्ययन यह मान कर कर करना प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रतिपादित यह भारतीय ज्योतिष विज्ञानं भी धीरे धीरे व्यक्ति केमन से उसका अहंकार मिटाता जाता हैं और उसे एक विश्व से जोड़ता जाता हैं. यह भी तो एक साधना हैं जो मानव समाज के काम की हैं न किकेबल उदर पूर्ति का एक साधना , जो जीवन से हार चुके हैं वे आजीविका के लिए नहीं बल्कि जो श्रेष्ठ हैं योग्य हैं वह भी तो इसे आजमाए , आगे आये ,इसे परखे , और समाज उपयोगी बने ..

कुंडली शास्त्र का अध्ययन करते समय एक योग ने मेरा ध्यान आकर्षित किया वह था "केमद्रुम योग ". जिसके बारे में सदगुरुदेव जी ने लिखा हैं " भारतीय योग चन्द्रिका" में ,की चाहे हजारों राज योग हो पर यह योग उनसभी योग को नष्ट कर देता हैं और व्यक्ति को बहुत की कठिन परेशानी और अपमानित जीवन के पक्ष से उसका बार बार सामना करता रहता हैं . व्यक्ति चाहे जितनी कोशिश करता हैंपर सफलता उसे बहुत मुश्किल हैं . निश्चय ही इसे भयकर योग को हर कोई व्यक्ति अपनी कुंडली में नहीं देखना कहेगा ,

पहले हम समझ ले की कुंडली में जब जिस भाव में चन्द्रमा हो उसके आगे पीछे भावो मेंकोई गृह न हो ,तब इस योग का निर्माण होता हैं .

मैंने तत्काल अपनी कुंडली में देखा यह योग नहीं पाया तो राहत की साँस ली ,मैंने अब मैंने जितने परिचित हैंसभी कुडली में यह योग ढूंढ ना प्रारंभ किया किया मेरे एकमित्र की कुंडली में यह यह योग मिल गया , वे अत्याधिक मेधावी थे और इंजीनियरिंग की शिक्षा की प्राप्त करने के बादभी एक अच्छा जॉब नहीं पा रहे थे .(उस काल में जॉब पाना इतना आसन भी नहीं था चारो और बेरोजगारी की बेहद बड़ी समस्या से देश जूझ रहा था) उन्होंने बहुत कोशिश की पर हर जगह यह योग अपना असर दिखा भी देता था .

की इसका निराकरण किया जाये हम नहीं जानते थे तो कुछ निराश होना स्वाभाविक भी था . की की क्या जाये

तभी एक दिन पत्रिका में सदगुरुदेव ने "राज्याभिषेक दीक्षा " के बारे में दिया , उस दीक्षा के बारे में क्या कहा जाये जितना लिखो मानो सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही हैं , सदगुरुदेव भगवान् ने भी लिखा था , इसको मत चूकना अन्यथा यह दीक्षा यह तो करोंडो जीवन के पुण्य फलो का उदय हैं , पिछले पांच हज़ार साल मे कुछ लोग ही यह दीक्षा ले पाए हैं ,क्योंकि कोई दे सके ऐसा व्यक्ति मिलना संभव कहा हैं,

मेरे मित्र को समझा दिल्ली जा कर कर हम दोनों ने यह दीक्षा प्राप्त की , (तीन या पांच भागोंमे यह शिविर देखना भी विडियो cd में भी सौभाग्य हैं)सदगुरुदेव कह रहे थे की आज से तुम्हारा भाग्य में लिखूंगा , अब कहे कोई ज्योतिषकी तुम्हारी कुंडली यह या वह बुरा योग हैं उससे कह देना की उसे अपने पास ही रखो ,अब सदगुरुदेव मेरे भाग्य विधाता हैं मेरी कुंडली में वह बैठे हैं .)

उस दीक्षा लेने के बाद कुछ समय के अंतराल के अन्दर मेरे मित्र एक जॉब पा गए हाँ उनकी मेहनत को कम कर के नहीं देख रहा हूँ , आज वे छतीस गढ़ राज्य में भारतीय रेलवे में एक उच्च पदाधिकारी हैं हाँ यह समय का फेर कहे अपना भाग्य की अब पद और धन , परिवार सम्पत्ति पाकर अब बे सदगुरुदेव और साधना से कोसों दूर हैं .

तो किसी भी ज्योतिष योग से घबराए नहीं ,सदगुरुदेव पर आस्था रखे और किसी स्थिति में अपनी साधना से विमुख न हो , जरा सोचिये जिसके भाग्य में उस काल में सामान्य से जॉब में समस्या आ रही थी अब वह कहाँ हैं, तो आप क्यों नहीं उन्नति कर सकते हैं

क्या मुझे कुछ ओर लिखना होगा ...

सदगुरुदेव की कृपा स्नेह के बारे में मेरी लेखनी भी असमर्थ हैं लिखने में

उसे आप स्वयं समझ सकते हैं ...

** ***[My experience with kemdrum yog – a highly negative Yog](#)***

One cannot denied the effect of planet s on human merely on the ground that he or some one special not believe on this . suppose someone does not believe that electricity is flowing in the wire and touch the open wire bare hand on the time when electrify is flowing what will happened ?, and same will be the result felt by who believe in that . the whole universe is not depend upon this limited human being knowledge and faith /belief , if so than whole universe will collapse in a sec. since many mystery still waiting for us.

KAYA KALP & SOUNDARY RAHSY
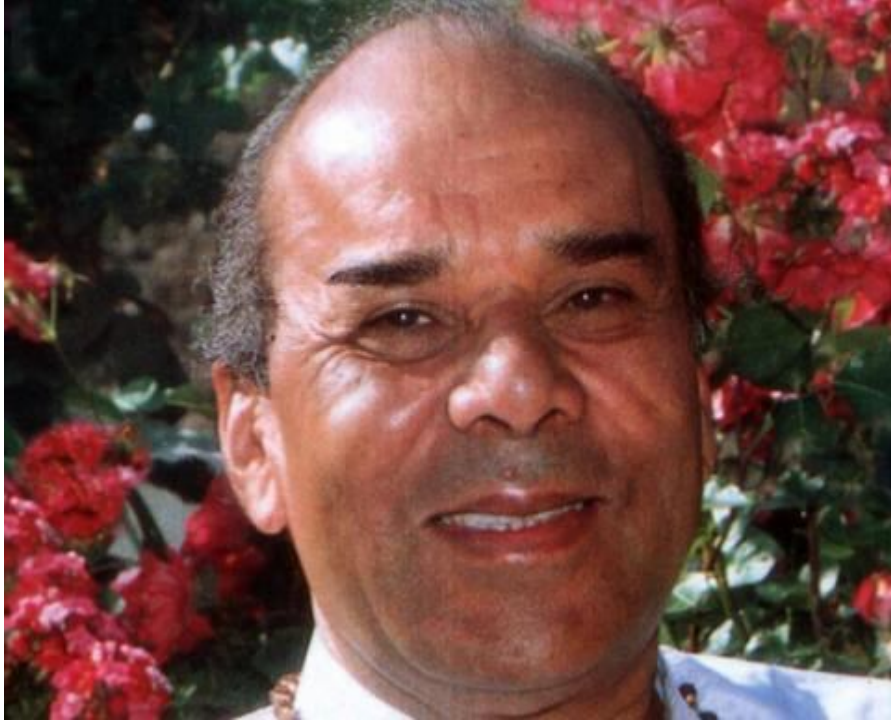
सौंदर्य के आधार हैं यह परम गोपनीय सूत्र केबल आपके लिए पहली बार

सदगुरुदेव की आज्ञानुसार जब मैं उनके संन्यासी शिष्य प्रज्ञानंद जी से मिला था और उनसे कायाकल्प का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा था(श्वेत बिंदु और रक्त बिंदु लेख माला में आपने इस विज्ञान से सम्बंधित रहस्यों को ब्लॉग पर अवश्य पढ़ा ही होगा) उन्ही के सान्निध्य में मैंने इस विषय से सम्बंधित जिज्ञासाओं का शमन प्राप्त किया था. वहाँ से वापिस २ महीने में हम पचमढ़ी पहुचे थे .

जहाँ उन्होंने मेरी मुलाकात सौंदर्या माँ से करवाई थी.यहाँ एक बात मैं आप सभी के बताना आवश्यक समझता हूँ की सदगुरुदेव के सान्निध्य में विभिन्न गृहस्थ और संन्यासी शिष्यों ने विभिन्न साधनाओं के क्षेत्रों में सफलता पायी हैं या ये कह लें की पात्रता या शोध कार्यों के अनुसार किसी खास साधनाओं के रहस्यों को सदगुरुदेव ने शिष्यों को प्रदान किया है,

और उन शिष्यों को उसी क्षेत्र विशेष में आगे बढ़ाया है.जिसके परिणाम स्वरुप आज वे शिष्य उन साधनाओं में विविध आयामों की प्राप्ति कर एक कीर्तिमान बना सके.

खैर माँ का निवास बड़ा महादेव की गुफा से पीछे की तरफ घने जंगलों में है जहाँ पर वे अपने आश्रम में आज भी साधनाओं के विभिन्न रहस्यों को जानने और उचित साधकों को ज्ञान प्रदान करने के कार्य में लगी हुयी हैं.सौंदर्य साधनाओं और अप्सरा यक्षिणी साधनाओं का ऐसा रहस्य शायद ही आज किसी और साधक के पास हो जैसा सदगुरुदेव ने उन्हें प्रदान किया है. और मेरा भाग्य तो उस समय हीरक कलम से लिखा गया था,तभी तो कायाकल्प तंत्र के ज्ञाता स्वामी प्रज्ञानंद जी और सौंदर्य साधनाओं में अग्रणी सौंदर्या माँ का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ था,और यही उचित अवसर था मेरी जिज्ञासा की भूख को शांत करने का तो बस फिर मानो मैंने तो प्रश्नों की झड़ी ही लगा दी थी और उतनी ही तीव्रता से मुझे उनके उत्तर भी प्राप्त होते चले गए.उस दिन मुझे यकीन हो गया की विज्ञान सही कहता है की 'क्रिया के सामानांतर उतने ही वेग से उसकी प्रतिक्रिया भी होती है.' है ना.

प्र० **कायाकल्प क्या है ?**

उ० इसके लिए सबसे पहले कायाकल्प शब्द का अर्थ समझना आवश्यक है. काय शब्द का अर्थ शरीर तो होता ही है ,परन्तु ये एक महत्वपूर्ण तत्व अग्नि को भी दर्शाता है.अर्थात ये अग्नि का भी पर्यायवाची है-

"जाठरः प्राणिनां अग्निः काय इत्यभिधीयते"

समस्त प्राणियों की की जठराग्नि को काय शब्द से उच्चारित किया जाता है,इसीलिए कहा गया है की अग्नि के ठीक रहने से मनुष्य भी स्वस्थ और निरोग रह सकता है.

इसी प्रकार इस उक्ति को भी यहाँ ध्यान में रखना अनिवार्य है कि-

"अग्नि मूलं बलं पुंसां रेतोमूलम च जीवनं‚तत्समात् सर्व प्रयत्नेन वह्निं शुक्रं च रक्ष्येत्"

यहाँ पर तंत्र,योग और आयुर्वेद एक ही बात कहते हैं कि मनुष्य के बल का मूल स्त्रोत अग्नि ही है और जीवन का मूल वीर्य ही है,अतः सभी प्रकार से अग्नि और वीर्य की रक्षा मानव को करना ही चाहिए. अग्नि से तात्पर्य ताप से भी है और हम सभी जानते हैं की मानव शरीर का ताप नष्ट हो जाने पर मनुष्य मृत समझा जाता है,मानव शरीर में कई प्रकार की अग्नि होती हैं ,जिनके विकृत होने पर मनुष्य रोगी समझा जाता है.तभी तो भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है की-

"अहम् वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रीतः

प्राणः अपान समायुक्तो पचाम्यनम् चतुर्विधं"

अर्थात मैं वैश्वानर (अग्निरूप) होकर प्राणियों के शरीर में वास करता हूँ और प्राण,अपान,समान वायु के द्वारा खाद्य,पेय,लेह्य और चव्य इन चारों प्रकार के अन्नों को पचाता हूँ.

और प्रत्येक प्राणी की चार अवस्था होती है, इसमें से किसी भी अवस्था में जठराग्नि और वीर्य के कमजोर और दूषित होने पर तीव्रता के साथ वृद्धावस्था की और अग्रसर होने लग जाता है. परन्तु जिस विद्या के द्वारा काय को प्रदीप्त कर शरीर को पुनर्योवन प्रदान किया जाता है ,उसे कायाकल्प कहा जाता है.

प्र० **आपने सिर्फ अग्नि और वीर्य को ही जीवन का मूल माना है,जबकि ये सृष्टि तो पंचभूतात्मक अर्थात पञ्च तत्वों यथा पृथ्वी,जल,अग्नि,आकाश और वायु से निर्मित है?**

उ० बेटे तुम्हारा कथन अपनी जगह सही है,परन्तु एक गूढ़ रहस्य भी है इसमें जिसकी जानकारी हमें होना ही चाहिए .और वो ये है की भले ही ये सृष्टि पंचभूतात्मक है परन्तु इसमें आकाश आच्छादन में,पृथ्वी धारण में और वायु सहयोगी मात्र रह जाता है. निर्माण मात्र जल और अग्नि के द्वारा ही होता है और विकृति भी इन्ही दोनों के कमजोर पड़ने और दूषित होने से होती है. वस्तुतः कायाकल्प अग्निकल्प ही है क्यूंकि जलीय विकृति आदि का व्यवधान को शस्त्र-कर्म से दूर किया जा सकता है,किन्तु किसी भी चिकित्सा पद्धति में अग्नि से उत्पन्न विकृति को शस्त्र कर्म से दूर नहीं किया जा सकता,इसीलिए कायाकल्प को अग्नि की चिकित्सा भी कहा जाता है.

प्र० **कायाकल्प और सौंदर्य में क्या भेद है ?**

उ० कायाकल्प का अर्थ होता है किसी भी पदार्थ में कालानुसार क्षरण की क्रियाओं के फलस्वरूप जो विकृति हुयी हो उसका रूपांतरण कर पुनः मूल रूप देना ठीक वैसा ही जैसा वो या तो क्षरण के पहले था या फिर जैसा हम चाहते हैं.वस्तुत इस क्रिया को संपन्न करने के विभिन्न चरण होते हैं और साथ ही विशिष्ट माध्यमों का प्रयोग कर ये क्रिया की जाती है. और मात्र कायाकल्प से ही तो कार्य संभव नहीं हो पाता है बल्कि उस पदार्थ ,तत्व,धातु या फिर प्राणी के भीतर उपस्थित वह ऊर्जाजिससे बाह्य जगत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हो,उस ऊर्जाका स्तर तथा मात्रा को सकारात्मक रूप से परिवर्तित कर उसका प्रवाह अन्तः शरीर के साथ बाह्य शरीर पर भी करना और उसे स्थायित्व प्रदान करना.**यही क्रिया सौंदर्य गुण की प्राप्ति कहलाती है. वस्तुतः कायाकल्प और सौंदर्य एक दुसरे के बगैर अधूरे ही हैंऔर इन दोनों का योग तंत्र के द्वारा ही हो सकता है.**

प्र० **आप ने कहा की इन क्रियाओं के संपादन हेतु किसी विशिष्ट माध्यम की आवश्यकता होती है,तो वे विशिष्ट माध्यम कौन कौन से हैं?**

उ० इसके लिए उन वनस्पतियों,मन्त्रों,धातु,तत्व या प्राणियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें धनात्मक ऊर्जा की प्रचुर मात्रा में प्रधानता होती है. इन के प्रयोग से ही कायाकल्प और सौंदर्य की क्रियाओं को पूर्णता दी जाती है.क्यूंकि दोनों ही क्रियाओं में उपादान में ऋणात्मक गुणों का परिवर्तन धनात्मक गुणों में किया जाता है या उपादान में धनात्मक ऊर्जा का विस्तार किया जाता है.

प्र० कायाकल्प करने के लिए आयुर्वेद का प्रचलन तो है ना,फिर इसमें तंत्र का क्या योगदान है ?

उ० आयुर्वेद मानव जीवन की स्वस्थ रहने की कामना पूर्ण करने में सहायक है, सदैव से मानव के मन में स्वयं अजर,अमर होने की तीव्र उत्कंठा रही है. और आयुर्वेद का समन्वय जब तंत्र से हो जाता है तो इस उक्ति को भी सिद्ध किया जा सकता है जो की यजुर्वेद मानव से कहता है कि –

"जीवेत शरदः शतम् .....भूयश्च शरदः शतात्'

अर्थात हम १०० वर्षों तक स्वस्थ रहने के पश्चात पुनः १०० वर्ष जियें. इसी आयुष्कामना के लिए आयुर्वेद को तीव्रता प्रदान करने के लिए तंत्र और आयुर्वेद का समन्वय किया जाता है. **तंत्र का अर्थ ही होता है एक निश्चित पद्धति के साथ किसी कार्य को गति देकर मनोवांछित परिणाम की प्राप्ति करना**. और तंत्र समस्त आंतरिक और बाह्य विकारों को नष्ट कर गुणों को परिष्कृत करता है ,सौंदर्य की प्राप्ति करवाता है और इसी कारण जब कायाकल्प के साथ सौंदर्य का समावेश हो जाता है तो यही सही अर्थों में कायाकल्प कहलाता है.और **जिस तंत्र के द्वारा ये अद्भुत क्रिया संपन्न की जाती है उसे कायाकल्प तंत्र कहा जाता है,सौंदर्य तंत्र कहा जाता है** क्यूंकि इसमें बाह्य उपादानों के साथ साथ तांत्रिक विधियों और दिव्य मन्त्रों का भी प्रयोग किया जाता है. तांत्रिक क्रम और मन्त्रों के योग से ये क्रिया तीव्र भी होती है और इससे प्राप्त परिणाम में स्थायित्व भी होता है

प्र० यूँ तो आयुर्वेद में विभिन्न वनस्पतियों या सामग्रियों का योग कर कल्प का निर्माण करने का विवरण प्राप्त होता है परन्तु वे कौन कौन सी दिव्य वनस्पतियां हैं जो मनुष्य को वीर्यवान कर मात्र उनके अपने प्रयोग से सौंदर्य प्रदान कर कायाकल्प कर देती हैं और पारद का इसमें क्या महत्वपूर्ण भाग है ?

उ० वैसे तो विभिन्न प्रकार की विकृतियों के लिए भिन्न भिन्न वनस्पतियों का कल्प रूप में सेवन करवाया जाता है परन्तु पूर्ण कायाकल्प के लिए जिन वनस्पतियों का प्रयोग किया जाता है वो हिमालय में अधिक मात्र में उत्पन्न होती हैं.हिमालय में उत्पन्न होने वाली सभी वनस्पतियां वीर्य और शक्ति से संपन्न होती हैं.परन्तु कायाकल्प और सौंदर्य के लिए – **ऐन्द्री,ब्राह्मी,क्षीरकाकोली,शंखपुष्पी,मुंडी,महामुंडी,शतावरी,विदारीकंद,जीवंती,पुनर्नवा,नागबला,शालपर्णी, वचा, छत्रा,अतिछत्रा,मेदा,महामेदा, जीवक,ऋषभक,मुद्गपर्णी,माष पर्णी और मधुयष्टी** इनके ६ माह के प्रयोग से पूर्ण कायाकल्प होकर दीर्घयोश्य की प्राप्ति होती ही है. इसी प्रकार हमें ये भी नहीं भूलना चाहिए की पारद के प्रयोग से अतिशीघ्रता से जरा और दरिद्रता दोनों का ही नाश किया जा सकता है,क्यूंकि इसकी वेध क्षमता अनंत है. यदि इसे बद्ध कर उससे कल्प,कल्प पात्र,विग्रह या गुटिका का निर्माण कर प्रयोग किया जाये तो जो परिणाम प्राप्त होते हैं वे अद्भुत होते हैं.संसार में आज तक ऐसी कोई भी औषधि नहीं बन पायी है ,जो की मानव की मानसिक दुर्बलताओं व बौद्धिक क्षीणता को नष्ट कर दे तथा भविष्य में ना होने दे परन्तु,पारद में यह क्षमता है की यदि उसके अष्टविध संस्कार संपन्न कर दिए जाये तो उसके प्रयोग से ये संभव है-

"हतो हन्ति जराव्याधि मूर्छितो व्याधि घातकः

बद्ध खेचरताम् धत्ते कोन्य सूतात् कृपाकरः"

तभी तो रससिद्ध नागार्जुन ने यही उक्ति और ध्यान मन्त्र हमें पारद की शक्ति को जानने के लिए दिया है की **"रसे सिद्धे करिष्यामि निर्जरामिदं जगत"**

और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष ये है की जब पारद के द्वारा तांत्रिक योग से कल्प माध्यम का निर्माण किया जाता है तो कुछ विशेष मंत्रो का एक विशेष क्रम से प्रयोग किया जाता है .और इस प्रकार निर्मित माध्यम तीव्र और अद्भुत प्रभावकारी होता है. यदि मात्र कल्प पात्र का ही निर्माण कर लिया जाये तो उसमे रखे जल का प्रयोग करने से धीरे धीरे कृशता और पलित दूर होकर पूर्ण यौवन की प्राप्ति होती है और देह का कालापन दूर होकर गौर वर्ण की प्राप्ति होती है

प्र० **आपने कहा है की अग्नि की सतत प्रदीप्ता ही कायाकल्प का मूल उद्देश्य है,तो इसके लिए आयुर्वेद में विभिन्न क्रियाएँ हैं परन्तु कायाकल्प तंत्र से इसका क्या सम्बन्ध हैं?**

उ० शरीर में उपस्थित सभी अग्नियों को नियंत्रित करने वाला स्थान नाभि है जहाँ पर मणिपुर चक्र होता है.हम सभी को ये पता है की रावण की नाभि में अमृत था,जिसके कारण उसकी मृत्यु नही हो सकती थी. परन्तु वो अमृत की प्राप्ति कैसे करता था,ये भी एक विचारणीय तथ्य है. रावण रचित **'लंकेश तंत्र पुष्पमाला'** में उसने इस क्रिया का पूर्ण विवरण दिया है.उसमे उसने बताया है की षोडश मातृकाओं और ५२ वर्णों का उद्गमस्थल मणिपूर ही है.इसी चक्र को उच्च कोटि के योगी **रत्न कूट चक्र** के नाम से भी जानते हैं.ये अग्नि तत्व से सम्बंधित चक्र है जिसका प्रतिक त्रिकोण होता है .इसी त्रिकोण में कल्पना शक्ति,विचार शक्ति और संकल्प शक्ति का वास होता है.

सम्पूर्ण तंत्र यही निवास करते हैं. उसने व्याख्या करते हुए बताया था की प्रत्येक मातृका की चार शक्तियां होती हैं जिन्हें की योगिनी कहा जाता है .इस प्रकार प्रत्येक मातृका चार योगिनियों की स्वामिनी होती है.और प्रत्येक योगिनी एक तंत्र की मूल शक्ति होती है,इस प्रकार १६ x ४=६४ योगिनियां ६४ तंत्रों को साकारता देती हुयी मणिपुर चक्र में स्थित होती हैं. और अग्नि की तीव्रता और मंदता से इनकी शक्ति पर भी अंतर पड़ता ही है.तांत्रिक कायाकल्प का अर्थ सामान्य कायाकल्प से कुछ अर्थों में भिन्न ही होता है. चिकित्सा शास्त्र के अनुसार जो कायाकल्प किया जाता है वो मंद गति से इन शक्तियों को प्राप्ति करवाता है.

उसमे शरीर का ही कायाकल्प किया जाता है परन्तु तांत्रिक क्रम से किया गया कायाकल्प दिव्य शक्तियों की प्राप्ति भी करवाता है,क्यूंकि वो शरीरस्थ अग्नि को मात्र प्रदीप्त या नियंत्रित ही नहीं करता है अपितु उस अग्नि में दिव्यता का योग कर उस अग्नि में विराजमान तांत्रिक दिव्य शक्तियों को भी साकार कर देता है. प्रत्येक मनुष्य में ब्रह्ममुहूर्त में(लगभग ३ बजे से सूर्योदय के पहले तक) सहस्त्रार दल से जीवन द्रव्य गिरता है (इसकी मात्रा व्यक्ति की दिनचर्या,चक्र का स्पंदन और भाव पर निर्भर करती है) और ये द्रव्य अन्तः शरीर में स्थित तीन महालिंगों को भेदता हुआ वीर्यपात के द्वारा शरीर से निकल जाता है.प्रकृति भी इस द्रव्य को शरीर में नहीं रहने देती है .वो स्वप्नदोष या तीव्र कामुक विचारों के माध्यम से कामोत्तेजना को तीव्र कर मनुष्य को इस द्रव्य मिश्रित वीर्य के साथ शरीर से बहार करने के लिए प्रेरित करती है.

उच्च कोटि के योगी तो अपनी जिव्हा को खेचरी मुद्रा में करके इस जीवन द्रव्य का पान कर लेते हैं और परिष्कृत वीर्य से इसका योग कर मणिपुर चक्र के माध्यम से इसे अग्नि रूप में परिवर्तित कर हमारे शरीर की अस्थियों में समाहित कर देते हैं.

जिसके कारण वो अग्नि तेजपुंज के रूप में हमारे शरीर के चतुर्दिक दृष्टिगोचर होती है जिसे की हम आभामंडल के नाम से जानते हैं.परन्तु ये सब सामान्य मनुष्य के लिए इतना सहज नहीं है.इसके लिए निरंतर सजग रहने की आवशयकता होती है जिससे की उस जीवन द्रव्य को हम व्यर्थ न जाने दे और उसे समेत कर सुरक्षित रख सके(क्यूंकि इस द्रव्य की प्राप्ति मात्र ब्रह्ममुहूर्त में ही होती है,

इसी कारण योगी और साधकों के लिए इस काल की उपयोगिता है) जिससे की हमें कोई बीमारी ना हो और ना ही कभी हमारा यौवन हमसे दूर हो पाए. और रावण इसी जीवन द्रव्य को निरंतर मणिपुर चक्र में संचयित करता रहा और इसमें स्ववीर्य को परिष्कृत कर योग करता रहा जिससे की वो निर्जरा और दिव्य जीवन जी सका.वैसे पृथक पृथक इन ६४ योगिनियों को सिद्ध करने की विधि **त्रोत्लोत्तर तंत्र** में वर्णित है जिसमे सहस्त्र यक्षिणियों को भी सिद्ध करने का सांगोपांग वर्णन है. इसी प्रकार **मतोत्तर तंत्र** में अन्तः और बाह्य रेतस् (जैसे मानव वीर्य और शिववीर्य) को परिष्कृत कर पूर्ण दिव्यता कैसे पायी जाये,इसका विषद वर्णन है.

प्र० **ये वीर्य को परिष्कृत करने की क्या आवशयकता है ,और इसका क्या अर्थ है ?**

उ० जैसा की मैंने ऊपर बताया है की मानव शरीर की सृष्टि बाले ही पञ्च तत्वों से होती है परन्तु मूल तत्व अग्नि और जल ही होते हैं.और मनुष्य शरीर में वीर्य अर्थात रेतस में यही दो तत्व प्रधान होते हैं.यही कारण है की वीर्य में मृदु ताप होता है.शुक्र बिंदु को गतिमान रहने के लिए इस ताप की आवशयकता होती है. यही वीर्य शरीर में शक्ति प्रदान करता है. तंत्र में कहा जाता है की "इस बिंदु का पतन होना मृत्यु है और इसको धारण कर लेना ही जीवन है." परन्तु जल तत्व की अधिकता के कारण अग्नि शक्ति प्रभावकारी नहीं हो पाती और ये वीर्य मात्र शुक्र रुपी काम ऊर्जा में ही रह पाता है. वंश वृद्धि तक तो इसका ऐसा होना उचित है.

परन्तु तंत्र ये भली बहती समझाता है की यदि आपको अपना यौवन स्थिर रखना है तो इस काम ऊर्जा का संचय होना अति आवश्यक है.इसका अर्थ ये कदापि नहीं होता है की मानव सहवास या सम्भोग ना करे. वो करे परन्तु तांत्रिक भाव से ऐसा करे. तंत्र शुक्र की काम ऊर्जा का रूपांतरण करने को कहता है,अब चूँकि वीर्य में जल तत्व भी है और अग्नि तत्व भी.इसलिए उसकी दो गति संभव होती है. अधो गति और उर्ध्व गति.अब ये हमारे ऊपर निर्भर है की हम इस ऊर्जा को कौन सी गति देते हैं.अधो गति प्रदान करने पर जीवन और यौवन का क्षय होना अवश्यम्भावी है.परन्तु यदि इसे उर्ध्वगति दी जाये तो ये ऊर्जा त्रिकूट शक्ति से योग कर लेती है जिससे पूर्ण कायाकल्प होकर, यौवन,शक्ति और सौंदर्य की प्राप्ति होगी ही.

हमें इसके लिए वीर्य में मात्र जल तत्व का रूपांतरण कर अग्नि तत्व की प्रधानता करनी होगी. क्यूंकि अग्नि का गुण उर्ध्वगति करना होता है. गति तो होगी ही परन्तु वो बाह्य न होकर अन्तः होगी.और इस गति में वीर्य का मूल सत्व ओजस गति करता है.जिससे उपरोक्त जीवन द्रव्य का योग होते ही वो अमृत में परिवर्तित हो जाता है. जो आपको सदैव सदैव के लिए यौवन और सौंदर्य प्रदान कर देता है. इसी जल तत्व का रूपांतरण अग्नि तत्व में करना वीर्य को परिष्कृत करना कहलाता है.तांत्रिक कायाकल्प में यही तथ्य प्रधान होता है.

प्र० और कौन कौन सी विधियां है कायाकल्प तंत्र के अंतर्गत जो कायाकल्प और सौंदर्य प्रदान करती हो ?

उ० वैसे तो हजारों विधियाँ है जिनके द्वारा ऐसा किया जा सकता है.परन्तु कुछ ऐसे विधान है जिनके द्वारा सामान्य व्यक्ति भी अपने व्यक्तित्व,गुण,धन आदि का कायाकल्प कर प्रकृति से शक्ति का अर्जन कर सकता है.

लवण स्नान विधि- शरीरस्थ समस्त नकारात्मक ऊर्जा को बाहर करने के लिए

पञ्च तत्व साधन- इस विधि में पञ्च भूतों के मूल गुणों को प्राप्त किया जा सकता है.

श्री कल्प साधना- धन का श्री में परिवर्तन करने वाला प्रयोग

आयुर्तंत्र विधान- तंत्र और आयुर्वेद के समन्वय से सौंदर्य की प्राप्ति

दिव्य गुरुकल्प साधना-गुरु साधना द्वारा कायाकल्प करने की गोपनीय विधि

KAYA KALP & SOUNDARY RAHSY

With the blessed order of Sadgurudev when I met his ascetic disciple Pragyananda ji and I had seen the existing power of the kayakalpa from him (you hopefully have read about this science and mysteries of the same in the series articles of Swet Bindu and Rakta Bindu on the blog) accompanying him, I was fortunate enough to have answers of my queries about this science. From there after 2 months we reached to panchmarhi where he let me introduced with Saundarya Maa. Here,

I would especially like to mention a point that under the guidance of sadgurudev various material and ascetic disciples have received success in sadhanas related to various factors or in other words based on eligibility and research work sadgurudev had blessed those with specific sadhana secrets and he made ahead those disciples in the same factor & direction. This turned in Result of various benchmarks created by those disciples in the particular sadhana field.

LAVAN SNAN SE SOUNDARY PRAPTI

विश्वास भी नहीं होता हैं , हैं न , एक बार करके तो देखें....

अक्सर ऐसा होता है हम कब नकारात्मकता से घिर जाते हैं,हमें पता ही नहीं चलता,तब चाहे हमारे आस पास कितने भी सुख के संसाधन हो,वे हमें खुशी नहीं दे पाते.एक अंजना सा भय और संकोच हमरे मन में ही भर जाता है.अजीब सी चिडचिडाहट मान लो हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा ही बन जाती है. हमारे व्यक्तित्व का प्रभाव लोगो पर पड़ना ही बंद हो जाता है. स्वयं के निर्णयों पर स्वयं को ही शंका होने लगती है.अनजान सी उदासी मान लो हमारा व्यक्तित्व ही बन जाती है,मन में लगातार नकारात्मक विचार आते रहते हैं. कायाकल्प तंत्र के एक छोटे से प्रयोग को आप सप्ताह के मात्र एक दिन अपनी दिनचर्या में अपनाकर उपरोक्त सभी परेशानियों और बाधाओं से मुक्ति पा सकते हैं.और इस प्रयोग की वजह से आप स्वयं अपने व्यवहार में आया सकारात्मक परिवर्तन और मित्रों की बढती संख्या को देखकर ताज्जुब में पड जायेंगे.

आप कोई भी एक दिन इसके लिए चयनित कर सकते हैं.अपने स्नान के जल में (मान लो १६ लीटर जल है)में डेढ़ चम्मच (टी स्पून) नमक मिला ले. पहले उस जल को २१ बार "वं" बीज मन्त्र से अभिमंत्रित कर लें. और पहले सामान्य जल से अपने चेहरे आँखों,और सर को धो ले.इसके बाद उस नमक मिश्रित जल से कंधे से लेकर पैरों को स्नान करवा ले. फिर पुनः स्वच्छ जल से स्नान कर लें.इसके बाद स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजन कक्ष में सदगुरुदेव के चित्र के समक्ष बैठ कर निम्न मंत्र की १ माला कर ले. इस विधान को आप प्रति सप्ताह दोहरा सकते हैं या जब भी आप में नकारात्मकता का वास होने लगे तब कर लीजिए. निश्चय ही एक अद्भुत ऊर्जा का समावेश आपमें होने लगेगा.इसी मंत्र का दीर्घ और विस्तृत विधान तांत्रिक कायाकल्प प्रक्रिया में किया जाता है.पर वो यहाँ हमारा अभीष्ट नहीं है.

मंत्र-**ॐऐं रोगः न शेषः कायाकल्पाय ऐंग ॐ**

मंत्र-**OM AING ROGAH NA SHESHAH KAAYAAKALPAAY AING OM.**

LAVAN SNAN SE SOUNDARY PRAPTI

Usually it happens when and where we filled up with negativity, we also don't get realize it. Though at that time we have enormous materialistic resources which give us happiness but they doesn't work. They are enabling to give us happiness. A strange fear and hesitant is always there in back of our mind. A strange irritating behavior becomes a permanent part of our nature. Isn't it?

So that in actual sense influence of our personality get down. We only suspect out our own decision. A strange dullness becomes our personality. In short we are always bogged up with negative waves. Well Well Well lemme tell you one thing-that you can easily get rid out from such negativity by following procedure of Kayakalp Tantra and after doing it you can notice a great difference. By this experiment you only can see yourself filled with positive vibes and increasing count of friends in your life. And I must tell you that will be sheer astonishing and enthusiastic for you.

PANCH-TATV SADHANA PRAYOG

एक दुर्लभ गोपनीय साधना केबल आपके लिए ही

सृष्टि का आधार है पञ्च तत्व जिनसे इसका निर्माण हुआ,और इन्ही तत्वों से मनुष्य भी निर्मित हुआ है.परन्तु जो भी विकृति हमारे देह में होती है या जीवन में होती है,उसका कारण क्या हमने जानने की कोशिश की है नहीं न.... हमें तो मात्र यही लगता है की लो बीमार हो गए तो अब चलो डाक्टर के पास,लेकिन ये कोई समाधान नहीं है.क्यूंकि वो उस तत्व की पूर्ती नहीं कर सकता है. यदि चेहरे पर धूमिलता छाई हो, आकर्षण क्षमता की कमी हो गयी हो, मोटापा या दुबलापन आ गया हो,ऑफिस में परिस्थितियां अनुकूल नहीं रह रही हो,पति या प्रेमी,प्रेमिका या पत्नी से सम्बन्ध ठीक नहीं रह पा रहे हो तो इसका सीधा अर्थ होता है की अग्नि तत्व न्यून हो गया है.

क्यूंकि समस्त आकर्षण का आधार है अग्नि तत्व.यदि घर में धन नहीं रुक रहा हो,काम बिगड रहे हो,खून पतला हो गया हो.स्वप्न दोष हो रहा हो,गर्भ नहीं ठहर रहा हो.वीर्य पतला हो गया हो,या शुक्राणुओं की संख्या कम हो गयी हो तो ,ये सभी विकृतियाँ जल तत्व से सम्बंधित होती हैं.इस प्रकार जीवन की सभी स्थिति के लिए इन तत्वों की विकृति ही उत्तरदायी है.यहाँ पर मैं इन दो तत्वों की ही जानकारी दे रहा हूँ,क्यूंकि ये एक वृहद विज्ञानं है जिसकी परते यहाँ उधेडना उचित नहीं है.

आपको क्या लगता है की इन तत्वों में विकृति क्यूँ होती है? क्या ये कोई शारीरिक दोष है? नहीं ऐसा बिलकुल नहीं है बल्कि हमारे सामान्य जीवन के कर्म और हमारा संचित कर्म इसके लिए उत्तरदायी है. जैसे यदि व्यक्ति व्यर्थ में जल का नाश करता हो या अपव्यय करता हो तो उसे जल से सम्बंधित विकृतियों का सामना करना ही पड़ेगा.इसी प्रकार जो व्यक्ति प्राणी मात्र को भोजन नहीं करवा सकता,ऊर्जा का अपव्यय करता रहता है ,हमेशा क्रोध मुद्रा में रहता हो ,उसे अग्नि तत्व की विकृति के दुष्परिणाम भुगतने ही पड़ते हैं. क्यूंकि हमारे शरीर में सर्वाधिक ऊर्जा आँख,कान और हमरे जननांगों से ही निसृत होती है.

इसलिए ध्यान का अभ्यास किया जाता है. और ध्यान की अवस्था में आँखे अर्धोन्मीलित रहती है,श्रवण शक्ति को शुन्य कर दिया जाता है ताकि ऊर्जा का अपव्यय ना हो,यहाँ मैं कोई कपोल कल्पना पर बात नहीं कर रहा हूँ.आप स्वतः ही निम्न साधना को करके देखिये.परिणाम आपके समक्ष ही होगा. हमें प्रकृति ने सभी तत्वों की निर्धारित मात्रा प्रदान की है,और वो भी संतुलन बनाये रखने के लिए ,अब जब हम उसका अपव्यय करेंगे तो वो बह्यागत ही अपव्यय नहीं होते हैं अपितु आंतरिक रूप से भी उनमे विकृति आना स्वाभाविक है.क्यूंकि हमारे जिन कर्मों से बाह्य जगत प्रभावित होता है उसका उतना ही प्रभाव हमारे आंतरिक जगत पर भी पड़ता है. जब भी आप उपरोक्त स्थितियों का सामना कर रहे हों तो एक बार जरुर चिंतन कीजियेगा की कब हमने अग्नि या जल का अपव्यय किया है बर्बादी की है. आपको खुद समझ में आ जायेगा की गलती कहाँ हुयी हैं.

और जो भी इन स्थितियों को अनुकूल करना चाहे वो.निम्न प्रयोगों को करके देख ले.पर इसका ये अर्थ भी नहीं है की परिस्थिति अनुकूल होते ही फिर हमने तत्वों का अपव्यय प्रारंभ कर दिया.क्यूंकि एक बात हमेशा याद रखिये, भूल की माफ़ी संभव है.अपराध की नहीं.नीचे मैं मात्र अग्नि और जल तत्व को संतुलित करने का विधान बता रहा हूँ. कायाकल्प तंत्र का ये बहुत महत्वपूर्ण भाग हैं.इन्हें नकारना बुद्धिमत्ता तो कदापि नहीं कहा जा सकता.

अग्नि तत्व के संतुलन को बनाये रखने के लिए प्रातःकाल स्वच्छ वस्त्र धारण कर तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित कर ,उस दीपक को इतनी ऊँचाई पर स्थापित कर ले की आपकी नजर उसकी लौ पर सीधी पड़े. अब उस लौ को स्थिर आसन और चित्त से देखते हुए निम्न मंत्र का जप करे ,ये क्रम नित्य २४ मिनट तक होना चाहिए और ११ दिनों का यह क्रम है.एक बात ध्यान रखियेगा की जब भी नेत्रों में जलन होने लग जाये तब आँखे बंद कर ले और जप के पश्चात अंको को गुलाब जल मिश्रित शीतल जल से अवश्य ही धो ले. ये प्रयोग दिखने और पढ़ने में आसान है परन्तु इसका प्रभाव अचूक है,ये हम सभी पर सदगुरुदेव की असीम कृपा है जो ऐसा ज्ञान हम सभी के सामने आया है.

मंत्र -**ॐरं पूर्ण तुष्ट्ये त्वं प्रतिकात्मकम पूर्ण आरोग्य सौभाग्य देहि दापय में नमः**

यदि जल तत्व से सम्बंधित विकृतियों के कारण समस्याओं का सामना करना पद रहा है.तो ऐसे शंख में जिसमे २५० मिली लीटर जल आ जाता हो को लेकर प्रातः काल उपरोक्त अनुसार ही स्नानादि कर के स्वच्छ वस्त्र धारण कर.सामने बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछाकर उस पर शंख स्थापित कर दे.कैसा भी शंख हो सकता है.और उस शंख को जल से भर दे और प्रतिदिन ३० मिनट तक नित्य १४ दिनों तक निम्न मंत्र को करे.जप के बाद उस जल को या तो उसी दिन बहते हुए साफ़ जल में प्रवाहित करदे या साधना समाप्त होने के ७ दिनों के भीतर.जप काल में उस शंख पर ही ध्यान केंद्रित करना ही. जप काल में दीपक प्रज्वलित नहीं करना है. जीवन की शारीरिक और भौतिक समस्याओं का समाधान आपके सामने होगा.

मंत्र- ॐवारिः वारिः परिमार्जय वज्र रूपेण पूर्ण स्थायित्व प्रदातुव्यम वरुणाय नमः

Panch TaTva Sadhan Prayog-

Five elements are the base of any creativity. And from this only human is created. But whatever defects happened in our body or in life, have we ever went to find out the reason behind it? I guess answer is 'NO'… We always felt that if we are ill then we must see the doctor. But this is not the solution. Because he can't fill up the gap of lack of that element. If our face goes dull, lack of attractiveness, fatness or over slim, office environment is against us, unsatisfactory relationship with companion then all this directly relates to lack of fire element. Because base of every type of attraction- fire element.

If unstable wealth, work failure, thinness in blood, nightfall, misconception, thin sperms, sperm count less, all these are related to water element. So for such type of defects in life only water element is responsible. Here I am giving only information related to these two elements only. As this is very broad science whose layers should be not open here. What do think as whats the reason behind such defectiveness in such elements? Are they any physical faults? No this is not at all like that… Rather our day today carry outs and work savings are responsible for it. Like individual waste water or misuses it then he will get defects related to water element.

Likewise anyone who even can't feed any one, wastes energy, always stays in angry mudra, so they suffers with fire element diseases. As form our body eyes, nose, ears and all genital organs releases energy. Therefore meditation is being practiced out. In such state eyes are half closed half opened. Hearing capacity becomes zero so that energy is not wasted. Here I am not talking just fake. You only experience the below sadhna and result will be infront of you. Nature has delegated required amount of all elements and that to be for balancing, now.

SHRI KALP SADHANA

इस अद्भुत साधना का नाम ही आपको बता रहा हैं

जीवन के चारों पुरुषार्थ में धन की अपनी महत्ता है. प्रज्ञानंद जी बताया था की लक्ष्मी के विविध रूप हैं और प्रत्येक रूप की अपनी महत्ता है ,परन्तु ये सभी रूप जीवन में आनंद का संचार तब तक नहीं कर सकते जब तक की आपकी लक्ष्मी का रूपांतरण श्री में ना कर दिया जाये.क्या आपने कभी सोचा है की,हम एक संपत्ति खरीदते हैं और उसका उपभोग करने के पहले ही हम या तो बीमार हो जाते हैं या हमारे स्वजनों पर आपदा आन पड़ती है.घर में प्रचुर धन आता है परन्तु उसके साथ ही विभिन्न रोगों और तकलीफों का भी आगमन हो जाता है. धन के साथ साथ परिवार की खुशियों पर आफतें क्यूँ टूट पड़ती है और कुछ नहीं तो खुद उपर्जनकर्ता ही व्यसन का शिकार हो जाता है. इसी कारण तंत्र में लक्ष्मी का भी कायाकल्प कर श्री में परिवतन करने का विधान है.फिर तो जो भी सही रास्ते से कमाया हुआ हमारा धन होता है वो आनंद और सुखों की निष्कंटक प्राप्ति करवाता है.इसलिए इस विधान को प्रत्येक ३ माह में एक बार अवश्य ही करना चाहिए.

इसके लिए शुक्ल पक्ष की पंचमी को प्रातः स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके पूजन स्थल पर पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठ जाये.सामने पारद श्री यन्त्र स्थापित हो और पूर्ण भव्यता के साथ सदगुरुदेव का चित्र भी. इन दोनों का पूर्ण विधान से पंचोपचार पूजन करे.खीर का भोग चढ़ाये.तत्पश्चात त्रिगंध से श्रीयंत्र पर तिलक लगाये.१ मंत्र बोले १ बार तिलक लगाये फिर दूसरा मंत्र उच्चारित करते हुए दूसरा तिलक लगाये. इस प्रकार ८ बिंदी लगाये.

ॐद्विभुजा लक्ष्म्ये नमः

ॐगजलक्ष्म्ये नमः

ॐमहालक्ष्म्ये नमः

ॐश्री देव्यै नमः

ॐवीरलक्ष्म्ये नमः

ॐद्विभुजा वीरलक्ष्म्ये नमः

ॐअष्टभुजा वीरलक्ष्म्ये नमः

ॐप्रसन्नलक्ष्म्ये नमः

तत्पश्चात १ अक्षत अर्पित करते हुए एक बार मंत्र का उच्चारण करे और इसी क्रम से १००८ बार अक्षत समर्पित करे.

मंत्र- **ॐयं वं रं ऐश्वर्य सिद्धिम् ॐनमः**

मंत्र जप के पश्चात उस अक्षत को २४ घंटो के बाद एकत्र कर पक्षियों को खिला दे और खीर का प्रसाद अपने स्व संबंधियों के साथ ग्रहण करें.आप स्वयं ही इस साधना को करे और नित्य नवीन आर्थिक ऊचाइयों को स्पर्श करे वो भी पूर्ण निश्चिन्तता के साथ.

SHRI KALP SADHANA

In life's 4 Purusharth money keeps different importance.. Pragyanand jee told us that there are various forms of goddess Lakshmi and each form keeps a different importance in it. But all these cannot give you happiness till the time you don't convert your Lakshmi form into Shree form. Have you ever thought, we buy any property and before start using it either we get ill or our relatives faces obstacle. Abundant money inflow comes in house but along with that it brings illness and problems abundantly. Or along with wealth either family faces great problem else the wealth earner get victim of bad habits. For that reason only in Kayakalp Tantra there is procedure called conversion of Lakshmi into Shree. Then whatever white money we earn remain ours only and it gives unlimited happiness in life. Therefore this experiment must be done in every 3 months

For this sadhna in Shukla Paksh, on any Panchmi take shower, wear white clean cloths and sit one white asana facing towards east direction. Establish Parad Shree Yantra and Sadgurudev's image also. Now worship both of them with panchopchar pujan completely. Then offer kheer (made up of sugar, milk and wheat flake) as sweets. Thereafter tilak the shree Yantra with trigandh. With every tilak chant a mantra then with second tilak second time mantra, consecutively do eight bindis.

DIVYA GURU KALP SADHANA
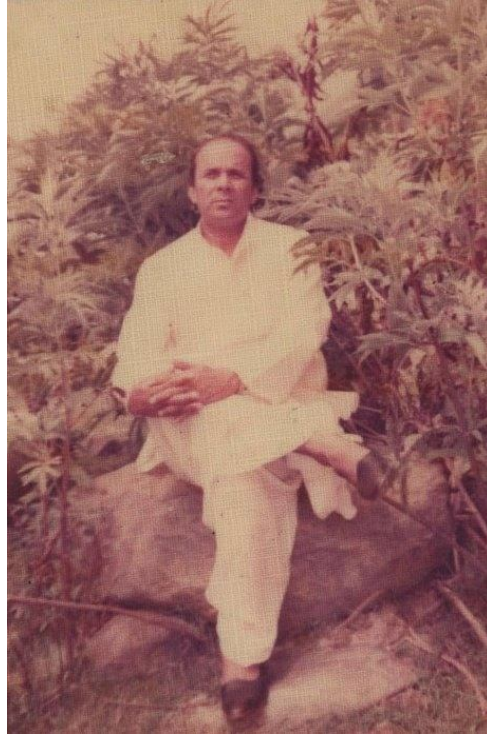
एक अत्यंत दुर्लभ साधना विधान केबल आपके लिए ही

सदगुरुदेव ने इस साधना के रहस्यों की विवेचना करते हुए कहा था की “यदि साधक अपने जीवन में पूर्णत्व प्राप्त करना चाहता है तो उसे इस साधना को अपने जीवन में संपन्न करना ही होगा.ये साधना सिद्धाश्रम के महायोगियों के मध्य प्रचलित है.

जब भी किसी साधक को सद्गुरु अपने निर्देशन में उस परमपावन भूमि पर स्थायित्व देना चाहते हैं तो ,उसके पहले वो साधक के शरीर को जरा और व्याधि से मुक्त करने की क्रिया करते हैं,साधक के शरीर को दिव्य बना देते हैं जिसके फलस्वरूप वो सभी आपदाओं से ना सिर्फ बचा रहता है बल्कि पूर्ण निर्मलता के साथ यौवन को अपने में समेटे हुए निरंतर साधनात्मक ऊचाइयों की और अग्रसर रहता है." जहा अन्य साधनाओं में बाह्य उपादान की भी आवशयकता होती है,वही इस साधना में जो निर्धारित क्रम है यदि साधक मात्र उसी को मर्यादित रूप से संपन्न कर ले तो.वो खुद अभूतपूर्व आश्चर्य में डूब जाता है. सभी प्रकार के रोगों से तो वो मुक्त होता ही है,साथ ही साथ पूर्ण कुण्डलिनी चक्रों के जागरण के साथ उसका कायाकल्प होता हुआ सिद्धाश्रम जाने का भी उसका मार्ग प्रशस्त हो जाता है.ये साधना पढ़ने मात्र के लिए नहीं अपितु प्रयोग करके देखने हेतु यहाँ दी गयी है.

इस साधना को किसी भी रविवार से प्रारंभ किया जा सकता है. ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान आदि संपन्न कर श्वेत वस्त्र धारण कर ले और साधना कक्ष में श्वेत आसन पर बैठ जाये.सामने बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछा दे और उस पर सदगुरुदेव का चित्र स्थापित कर दे. चित्र के सामने निम्न यंत्र बनाकर उस पर अक्षत की एक बड़ी ढेरी बना ले और उस पर घृत का दीपक स्थापित कर दे. शुद्धिकरण के पश्चात गुरु ध्यान करे –

५	५	५
५	५	५
५	५	५

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरूवै नमः

फिर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गुरु चित्र को गंगा जल से स्नान करवाएं –

ॐनिं निखिलेश्वराय स्नानं समर्पयामी

फिर उन्हें साफ़ वस्त्र से पोछ कर उन्हें आसन रूप में पुष्प समर्पित करे.

ॐनिं निखिलेश्वराय पुष्पं समर्पयामी

फिर सुगन्धित धूप जलाये.

ॐनिं निखिलेश्वराय धूपं आघ्रापयामि

तत्पश्चात गुरुचित्र के सामने ढेरी पर स्थापित गौघृत का दीप प्रज्वातिल करें .

ॐनिं निखिलेश्वराय दीपम् दर्शयामी

आखिर में खीर का नैवेद्य श्री सदगुरुदेव के चरणों में अर्पित करे.

ॐनिं निखिलेश्वराय नैवेद्यं निवेद्यामी

प्रयोग के लिए पूर्ण सिद्धासन या पद्मासन में बैठकर १२० माला १ दिन में अथवा २१-२१ माला ७ दिनों तक संपन्न करे. ये मंत्र जप स्फटिक माला से होना चाहिए और ये माला पहले कही प्रयोग न की हुयी हो. परन्तु यदि इसे अनुष्ठान रूप में संपन्न करना हो तो सवा लाख मंत्र जप होना चाहिए और मूल दीपक के बायीं और तिल के तेल का दीपक अखंड होना चाहिए. **दृष्टि** दीपक की लौ पर होनी चाहिए,बीच बीच में आप पलके झपका सकते हैं.मन्त्र के मध्य में ऐसा लगता है जैसे की आपकी रीढ़ की हड्डी में तीव्र जलन हो रही है.और ये दहकता लंबे समय तक होती है.आपकी नाभि और मूलाधार में स्पंदन प्रारंभ हो जाता है. और ये सब साधना काल में ही होता है.स्वप्न में आपको विचित्र से दृश्य दिखाई पड़ने लगते हैं,किसी गुफा,किसी वन,हिमालय आदि के दृश्य आपको दिखाई देते हैं.अष्टगंध की भीनी खुशबु आपके चंहु और आपको सुवासित करने लगती है. स्वतः ही ध्यान लगने लगता है और चेहरे के चारों और आभामंडल तीव्र होते जाता है.और पूर्ण अनुष्ठान के बाद तो जो प्राप्ति होती है उसे यहाँ नहीं लिखा जा सकता,वो तो स्वयं अनुभूत करने वाली उपलब्धि है.

मंत्र- **ॐऐं ह्रीं श्रीं कुल कुण्डलिनी जाग्रय स्फोटय श्रीं ह्रीं ऐं फट्.**

OM AING HREENG SHREENG KUL KUNDALINI JAAGRAY SFOTAY SHREENG HREENG AING PHAT

Divya Guru Kalp Sadhna

Sadgurudev told us while discernment of sadhna secrets "If sadhak wants to have completeness in life then he must do this sadhna…This sadhna is very much famous among Sidhhashram Mahayogis. Whenever Sadguru is intended to keep any sadhak under instruction at this ultimate holy place, so they first make his/her body free from the old age and diseases.

आयुर्वेद पर आधारित दुर्लभ साधना विधान

यूँ तो आयुर्वेद में सौंदर्य प्रदाता विविध प्रयोग पाए जाते हैं.जिनके प्रयोग से निश्चित ही पूर्ण सुंदरता की प्राप्ति होगी.परन्तु वे प्रयोग यदि निम्न मन्त्र के साथ प्रयोग किये जाये जो अद्भुत और तीव्र प्रभाव प्रदान करते हैं. आयुर्वेद में भी बिना अभिमंत्रित किये वनस्पति का सेवन नहीं किया जाता है,परन्तु कतिपय आलस के कारण लोगो ने इस प्रभाग का प्रयोग करना ही बंद कर दिया जिसके फलस्वरूप जो प्रभाव होना चाहिए ,वो नहीं मिल पता है.आप खुद ही एक काम करियेगा ,नीचे जो प्रयोग दिए गए हैं उन्हें किसी को बगैर मंत्र के प्रयोग करवाकर देखिये और दुसरे को मन्त्र के साथ.प्रभाव आपको खुद ही आश्चर्यचकित कर देगा. जब भी आपको सौंदर्य से सम्बंधित कोई प्रयोग करना हो,उस सामग्री या वनस्पति को आप निम्न मंत्र से ३२४ बार अभिमंत्रित कर दे फिर प्रयोग करे.ये वज्रयान साधना का मंत्र है जो स्वतः ही सिद्ध है,इसे पृथक रूप से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है.

ॐ क्लीं अनंग रत्यै पूर्ण सम्मोहन सौंदर्य सिद्धिम क्लीं नमः

1. जिनके मुख से दुर्गंध आती हो या दांत हिल रहे हो यदि वो नित्य पिसते को खूब चबाकर खाए तो मुख की दुगंध हमेशा हमेशा के लिए दूर हो जाती है और हिलते दांत भी स्थिर हो जाते है.

2. जिसे अपनी देह की कृशता यानि दुबलापन मिटाना हो तो पिश्ते के साथ शक्कर का सेवन २ मॉस तक करे,दुबलापन दूर हो जाता है.

3. लोग अक्सर गरम पानी के साथ शहद लेते हैं मोटापा दूर करने के लिए,यदि उपरोक्त मंत्र के साथ मात्र १ माह ही प्रयोग करके देखे, लाभ देखकर आप खुद आश्चर्यचकित हो जायेंगे.

4. ठीक इसी प्रकार तुलसी की ११ पत्तियों को यदि छाछ के साथ १ माह सेवन किया जाये तो भी व्यर्थ की चर्बी सरलता से गलकर बाहर हो जाती है.

5. यदि व्यक्ति अपना वजन कम करना चाहता हो तो नीम के फूलों को पीसकर और कपडे से छानकर शहद और पानी के साथ सेवन करे,निश्चय ही वजन कम हो जायेगा.

6. हरसिंगार या पारिजात के पुष्पों का लेप चेहरे पर करने से चेहरे पर निखार आता है और निश्चय ही गोरापन बढ़ता है.

7. यदि तुलसी की पत्तियों को शहद के साथ लिया जाये तो पथरी होने की कोई सम्भावना नहीं रहती.

8. नीम्बू का रस या गुडहल की पत्ती पीसकर सर पर उस स्थान पर लेप करे जहाँ बाल झड गए हो,ये क्रिया २ मॉस तक करने पर पुनः बाल आने लगते हैं और काले हो जाते हैं.

9. जिन लोगों को भी भोजन के तुरंत बाद मल त्याग करने की आदत होती है,यदि वो कचनार की कली का सेवन करे तो ये बीमारी दूर हो जाती है.

10. यदि मधुमेह की बीमारी हो तो मेथी के पत्तों का रस पीने से ये बीमारी दूर हो जाती है.

11. पुनर्नवा चूर्ण का नित्य २ ग्राम सेवन करने से कायाकल्प होता ही है और सौंदर्य की वृद्धि होती ही है.

12. यदि १ बूँद घृत को लगाकर धतूरे की पत्ती को तवे पर गरम कर स्त्री या लड़की अपने स्तन पर रख कर कस कर बाँध ले और रात भर रहने दे,दोनों तरफ १-१ पत्ती का ही प्रयोग करना है.निश्चय ही ७ दिन में पूर्ण उभार की प्राप्ति होती ही है,बड़ी बड़ी दवाइयां जो कार्य नही कर पाती,वो कार्य ये सामान्य सा दिखने वाला प्रयोग पूरा कर देता है और नारी के सौंदर्य को उभार देता है.

13. खीरे के रस में शहद मिलाकर पूरे शरीर और चेहरे पर लेप कर १५ मिनट रखे और बाद में कुनकुने पानी से स्नान कर ले,सारी झुर्रियाँ धीरे धीरे दूर हो जाती हैं.

SHRI MARITYUNJAY TANTROKT KALP VIDHAN
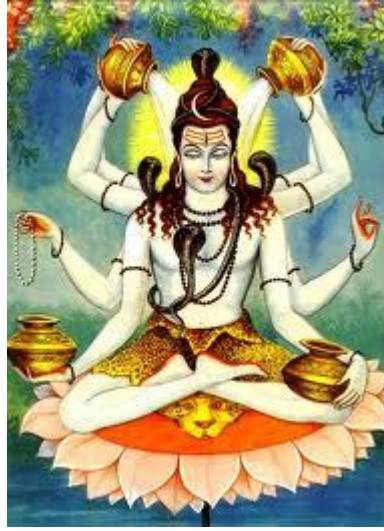
क्या कभी नाम सुना हैं आपने , इस परम गोपनीय विधान का ...

त्रिफला,त्रिकूट,ब्राह्मी,गिलोय,लाल चित्रक,नाग केसर,सोंठ,भांगरा,संभालू की जड़ , हल्दी, दारुहल्दी, भांग,चित्रक,दाल चीनी,छोटी इलायची,गंभीरी चाल,वायविडंग,वच- प्रत्येक ८०-८० ग्राम,आसाम का गुड़ २ किलो,इन सबको घोट कर ३६० वटी बनाये ,जब आप खरल कर रहे हो तो "**ॐ जूं सः**" मंत्र का जप करते रहे.शुभ मुहूर्त में भगवान सदगुरुदेव और धनवंतरी का पूजन संपन्न करे,पूजन करते समय ये सभी वटी आपके सामने होनी चाहिए.फिर प्रतिदिन खाने के बाद रात्री में १ वटी का सेवन करें.इसके सेवन के बाद शीतल जल का सेवन करें. नमक और कड़वे पदार्थों का कम से कम सेवन करें.

ये जठर अग्नि को प्रदीप्त करता है.शरीर में ओज की वृद्धि करता है.सफ़ेद बाल पुनः काले हो जाते हैं.दृष्टि तीव्र होती ही है.बुढ़ापा दूर होकर पुनः यौवन की प्राप्ति होती है.रोग और जरा दूर हो जाते हैं.व्यक्ति सूर्या के सामान तेजस्वी हो जाता है,अनंग और रति के सामने रूपवान,लंबी आयु वाला और मधुभाषी हो जाता है.शरीर से कमल पुष्प के सामान गंध निसृत होती हैं.नाख़ून,बाल आदि पुनः आने लगते हैं.काम ऊर्जा की वृद्धि होती है.

Shree Mrityunjoy TanTrokT Kalp

Take **Trifala,Trikut,Brahmi,Giloy,Lal Chitrak,Naag Kesar,Saunth,Bhangra,Sambhalu Root, Turmeric(Haldi),Daruhaldi,Bhaang,Chitrak,Daal Chini(Cinnamon),Small Cardamom(Chhoti Ilayachi),Gambhiri Chaal,Vyavindg,Vach each of these ingredients 80 gms.with 2 Kgs.of Assam Jaggery (**Gud) and make 360 vati of all the things…Do, remember one thing that when you are mixing and grinding all these things – enchant the mantra **"Om Joom Sah"** and in the Shubh Mahurat (Auspicious time),conduct the poojan of Sadgurudev and the Lord Dhanvantri and during the Poojan,these all vati should be in front of you….

Now, take one vati in night after the meal on daily basis and after this, take some cold WATER….Avoid the salty and bitter feeding stuff….

This helps in curing the Gastric and appetite problems and helps in enhancing energy in the body, the grey hairs becomes black again, the eyesight becomes strong, the feeling of youth ness comes again and the diseases gets cured…

The individual becomes energetic like the Sun and becomes beautiful and smart just as the famous love couple (Anang and Rati) with long life…Also, becomes soft spoken and the fragrance like lotus flower comes within the body and helps in gaining more energy…

SOUBHGY PRAD STROT

गुरु बहिनों के लिए एक अद्भुत स्त्रोत ...सौभाग्य की वर्षा के लिए ..

यदि निम्न प्रार्थना मन्त्र को स्त्रीवर्ग नित्य प्रति की साधना में मात्र ५ बार सम्मिलित कर ले तो अद्भुत सम्मोहन क्षमता उनके व्यक्तित्व में व्याप्त हो जाती है.और सौभाग्य की प्राप्ति होती है. सभी कार्यों में सफलता मिलने लगती है.

हरिस्त्वामाराध्यम प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।
स्मर:अपी त्वां नत्वा रति नयन लेहयोन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महतां ॥

SOUBHAGYA PRAD STOTRA

If the woman involves the below Mantra in her daily devotion only for the 5 times, her personality will become totally fascinating and hypnotic and will be blessed and becomes successful in each work….

HARISTVAMARADHYAM PRANATJANSOUBHAGYJANANIM

PURA NARI BHUTVA PURARIPUMPI KSHOBHMANYAT |

SAMARAHAPI TVAAM NATVA RATI NAYAN LEHYON VAPUSHA

MUNINAMPYANTAH PRABHTI HI MOHAY MAHTAM ||

Soot Rahsyam PaRt-6 Sadgurudev aur Surya vigyan

सदगुरुदेव और सूर्य विज्ञानं -प्रकृति के अज्ञात रहस्य

क्या कभी आपने सोचा है की क्यों एक गृहस्थ को देव पूजा मे सर्वप्रथम सूर्यपूजा करना क्यों अनिवार्य कहा जाता है? सृष्टि का आधार सूर्य है. सूर्य ही जीवन को ऊर्जा,तेजस्विता, और जीव-शक्ति का प्रवाह देता है...सोचिये की जब बरसात या शीतऋतु मे २-४ दिन सूर्य की रश्मिया बादलों की वजह से हम तक नहीं पहोच पाती तो कैसे हमारे चारों और दुर्गन्ध व् अवसाद का वातावरण सृजित हो जाता है, जो हमें भगवान भास्कर की उपयोगिता का भास् करा ही देता है. ये आयाम तो ठीक वैसे ही है जो की हमें दिखाई देते हैं, वस्तुतः बहुत कुछ ऐसा है जो हमारी बुद्धि से तब तक परे है जब तक ही हम सद्गुरु चरणों मे बैठ कर उन रहस्यों को जान नहीं लेते या आत्मसात नहीं कर लेते, सूर्य ही जीवन को उत्पन्न करता है और जीवन को परिवर्धित भी.यह बात लोगो के समर्थन के पक्ष मे ना हो लेकिन यही नितांत सत्य है. सिद्धाश्रम के योगियो ने इस प्रक्रिया का प्रत्यक्षीकरण भी किया और समाज को इस सत्य से अवगत भी करवाया है.

सदगुरुदेव ने इस रहस्य को समझाते हुए कहा था की "सभी वस्तुओ मे प्रकृति और पुरुष अंश विद्यमान होता है, जिस वस्तु मे प्रकृति (स्त्री) अंश अधिक और पुरुष भाग अल्प है, उसमे प्रकृति भाव ही प्रधान रूप मे दिखता है, तथा पुरुष भाव गुप्त दबा रहता है ठीक इसी प्रकार पुरुष अंश प्रधान रहने पर पुरुष भाव ही द्रष्टिगोचर रहता है. सम्पूर्ण सृष्टि पदार्थ मात्र इन्ही दो प्रतिकूल शक्तियों के संग्रह से ही उत्पन्न हुए है और ये नियम सर्वत्र विद्यमान है"

सूर्यविज्ञानं की परिभाषा बताते हुए उन्होंने कहा था की " सूर्य प्रकाश ७ किरणों मे होता है, इन्ही के विभिन्न संयोग और वियोग के फलस्वरूप विभिन्न पदार्थो का निर्माण होता है. किरण वस्तुतः इसकी अभिव्यक्ति करती है इस लिए सूर्य किरणों और उनके वर्णों को विभिन्न वर्णों की किरणों का परस्पर संयोग तथा वियोग इनका ज्ञान ही सूर्य विज्ञानं का रहस्य है .इसके माध्यम से सृजन , संहार, अविर्भाव और तिरोभाव सब कुछ संभव है , तथा इसी के द्वारा रूपांतरण भी होता है." अथर्ववेद के ४३ ऋचाओं मे विस्तार से इन किरणों का प्रयोग बताया गया है.

भले ही विज्ञानं अभी तक ११३ अणु को खोज चूका है पर सूर्य की ७ किरणों मे से प्रत्येक के पास २१-२१ किरण है. यदि एक विशेष लेंस के द्वारा विशेष कोण से सूर्य की किरण का वेधन किया जाये तो रूपांतरण या सृजन होता है. इसी विज्ञानं को स्वर्ण विज्ञानं भी कहा जाता है. सदगुरुदेव ने कई शिविरों मे और कई अवसरों पर इसका प्रत्यक्ष दिग्दर्शन कराया है और साथ ही साथ उन्होंने सूर्य-सिद्धांत पर एक शिविर भी लगाकर शिष्यों को यह ज्ञान प्रदान किया था और सबसे बड़ी बात है की उन्होंने सूर्य को आत्म एकाकार करने की मंत्रात्मक प्रक्रिया भी बताई है, जिसके द्वारा साधक उन रश्मियों को समझ कर उसका प्रयोग कर सकते है. साथ ही साथ सदगुरुदेव ने इसके लिए अलग अलग अवसरों पर कई मंत्र व प्रयोग बताये है. वस्तुतः यह हमारे जीवन का सौभाग्य ही है की ऐसे दुर्लभ ज्ञान को सदगुरुदेव से प्राप्त कर इस ज्ञान परंपरा के द्वारा अपने जीवन को समृद्ध बनाये.

Soot Rahsyam PaRt-6 Sadgurudev aur Surya Vigyan

Have you ever thought that why a Married person is asked to worship of the Lord Sun (Surya Poojan) in the beginning of any of the Dev Poojan????Because the base of the nature is – SUN…The Sun gives the Energy, Glow & the Life Power flow to the each organism on the planet…Just think, when there is a rainy season or in winters when the Sun Rays are not able to reach at the earth for 2 – 4 days, we feel very dizzy and depressed and the surroundings of us fills with the foul smell and the whole environment becomes very lifeless….which gives a feeling of to know the importance of the Lord Sun in each respect…

SWARN RAHSYAM -6 BEAUTY THROUGH KALP-PATRA

कल्प पात्र द्वारा सौन्दर्य प्राप्ति

संपूर्ण श्रृष्टि में सभी रोगों का नाश मात्र पारद के द्वारा ही संभव है ,और ये भी जगद्विख्यात है की यदि मनुष्य अपने शरीर का कायाकल्प कर सकता है तो मात्र पारद के प्रयोग द्वारा ही ये संभव है .

पारद के द्वारा कई विभिन्न तरीकों से कायाकल्प किया जाता है ,जैसे पारद के द्वारा कल्प का निर्माण किया जा सकता है जिससे शरीर को आरोग्यता तो दी ही जाती है साथ ही साथ सौंदर्य के मापदंड पर खरा उतरने के लिए जब कई अनिवार्य शर्तें होती हैं

उनमे भी इन कल्पो के द्वारा पूर्ण लाभ पाया जाता है जिस प्रकार दबे हुए या काली रंगत को गौरान्गना के द्वारा मात्र कुछ ही दिनों में गोरा रंग स्थाई रूप से दिया जा सकता है. उचा कद और सुगठित शरीर की प्राप्ति संदीपन कल्प के द्वारा की जा सकती है.

इन सभी कल्पों में पारद का और पारद जल का प्रयोग किया जाता है .जिसका विधान इतना सहज भी नहीं है, हाँ ये एक अलग बात है की सदगुरुदेव ने कई अवसरों पर अपने शिष्यों को इन कल्पों का विधान भी समझाया और इन कल्पों को बनाकर दिया भी .

ऐसे ही पारद के द्वारा कुछ विशेष वनस्पतियों के सहयोग से सीसे ,रंगे ,जस्ते से रहित कर और यौवन कर्त्री संस्कार सिद्ध कर एक विशेष पात्र का निर्माण किया जाता है जिसे ऐंग-पत्र या कायाकल्प पत्र कहा जाता है . इस पात्र का निर्माण पूर्ण रूपेण महा सरस्वती बीज मन्त्र ऐंग का विखंडन कर और कायाकल्प मंत्र से संपुटित कर किया जाता है .संपूर्ण श्रृष्टि में सरस्वती हैं जो व्यक्ति को रस युक्त कर सकती हैं या पूर्ण सौंदर्य दे सकती हैं. इस पात्र के द्वारा सौंदर्य के विभिन्न पक्षों को प्राप्त किया जा सकता है .

पारद को पूर्ण संस्कृत और वनस्पति की उर्जा का सहयोग कर रस को रसराज बनाया जाता है तभी इस पत्र का निर्माण सहज हो पता है . ये कटोरे के आकार का होता है . चाहे बालों से सम्बंधित विकार हो या कामशक्ति का प्रस्फोटन मतलब पूर्ण यौवन की प्राप्ति ,चाहे गर्भ से सम्बंधित विकार हो या फिर नए शरीर की प्राप्ति (वैसे ही जैसे सर्प जाती अपनी केंचुली को छोड़कर नयी देह को प्राप्त कर लेती है) .हमारे प्राचीनतम ज्ञान पाकर हमें गर्व होना चाहिए जहाँ असंभव कुछ भी नहीं है क्यूंकि असीम प्रज्ञा शक्ति का प्रयोग करने के बाद इन सूत्रों का उदय हुआ है. मैं इनमे से कुछ प्रयोग यहाँ पर दे रहा हूँ आशा करता हूँ की आपको इससे पूर्ण लाभ होगा.

सफ़ेद बालो को स्थाई रूप से काला करने का कल्प प्रयोग -

ताजे आंवले 2 किलो लेकर एक मिटटी की हांड़ी में दाल दे .और उसमे 3 किलो पानी दाल दे / हांड़ी इतनी बड़ी होनी चाहिए जिसमे लगभग 5 किलो सामग्री आ जाये , इसके बाद प्रत्येक सामग्री 250-250 ग्राम दाल दे , छुआरे ,वंश लोचन ,जरापीपर , कपूर काचरी , अध् लाई और अध्लंगा की गिरी .

प्रत्येक वस्तु सुद्ध और साफ़ हो इन सबको आंवले के साथ मिला कर रख दे और धाक दे 24 घंटो तक इस पर सूर्या की रौशनी नहीं पड़नी चाहिए .

दुसरे दिन हांड़ी में और पानी दाल दे यानि मुह तक भर दे और उसे धीमी -2 आंच पर पकाए ,3 घंटे तक पकाने के बाद उसे नीचे उतार कर ठंडा कर लें और ठंडा कर उन साड़ी सामग्री को एक रस कर लें . नित्य इसमें से पांच तोला सामग्री को कल्प पत्र में 12 घंटो के लिए रख दें और नित्य ऐसे ही 5-5 तोले का सेवन करें इस पात्र के प्रभाव से इस कल्प में एक विशेष शक्ति आजाती है जिसके सेवन से बालों का रंग स्थयी रूप से काला हो जाता है और बाल घने व लम्बे भी हो जाते हैं .

पूर्ण यौवन प्राप्ति के लिए तथा काम शक्ति की वृद्धि के लिए नित्य रात्रि में गुनगुना दूध 50 ग्राम इस पात्र में रख दे और निम्न मन्त्र का 5 मिनिट तक जप करे बाद में उस दूध को पी लें कुछ ही दिनों में आप स्वयं ही इसके प्रभाव को देख कर आश्चर्य चकित रह जायेंगे .जिस पारद से इस पात्र का निर्माण होता है वो यौवन कर्त्री संस्कार स्संपन्न और ये पात्र अनंग मन्त्रों से सिद्ध होता है . ये विधि देखने में तो तो बहुत ही आसन दिखाई देती है पर है बहुत ही प्रभावकारी .

मंत्र :

ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाये मनोभिलाषित स्तभंनम कुरु कुरु स्वाहा

इस मंत्र का प्रयोग मूंगा और शुकर दन्त पर भी किया जाता है पर वो विधि बहुत ही दीर्घ है .

संतान प्राप्ति तथा गर्भ से सम्बंधित विकार के शमन के लिए -इस पत्र में गाय के दूध को 50 ग्राम भर दे और उसमे एंग बीज के प्रतिक कुषा (दाब), पलाश और अकरकरा वनस्पतियों का अर्क मिला दे (इन तीनो वनस्पति के द्वारा ही सृष्टि की प्रक्रिया होती है).फिर इस मिश्रण को चलाते हुए एंग मंत्र का 3 घंटे तक जप करे और 3 घंटे के बाद उस दूध को दुसरे दूध में मिला कर पिला दें या यदि स्वयं के लिए कर रहे हैं तो स्वयं पी ले .ये 100% प्रमाणिक प्रयोग है .

संपूर्ण कायाकल्प प्रयोग आदि का वर्णन फिर कभी करने का प्रयास करूँगा . इस पात्र के द्वारा बहुत से कार्यों को संपन्न किया जा सकता है .जरुरत आलोचना की नहीं बल्कि कसौटी पर परखने की है .

एक प्रयोग :

त्रिधारा हरजोड़ी को जो पक़ कर पीले रंग की हो जाती हैं .इसे यदि , पिघले हुए हिरण खुरी रांगे में डाल दिया जाये तो वह तत्क्षण विशुद्ध रजत में बदल जाता हैं

KAYAKALP PATRA

In the whole universe, any incurable disease can be cured by the only divine metal PARAD / Mercury and it is very much famous saying in the world that a human complete makeover is also possible only through this metal

अद्भुत सरल धन दायक लक्ष्मी प्रयोग

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

अब इसे एक बार तो करके देखिये

साधना जगत मे लक्ष्मी प्राप्ति के कई ऐसे अनूठे प्रयोग है जो दिखने मे अत्यधिक सामान्य प्रतीत होते है लेकिन उनका प्रभाव अत्यधिक लाभप्रद होता है. कई व्यक्ति अत्यधिक व्यस्तता होने के कारण साधनाओ को परिपूर्ण नही कर सकते है और उनका लाभ नही उठा सकते है, लेकिन विधानों के साथ साथ कई एसी प्रक्रियाए भी है जो की निरंतर करने पर साधक लाभ उठा सकते है. लक्ष्मी से सबंधित ऐसा ही एक प्रयोग दिया जा रहा है. रविवार की शाम साधक धतूरे की जड़ को निकाले. जड़ को निकालते वक़्त "ॐ वं सर्व वनस्पति साफल्यम वनदुर्गे नमः " का ९ बार जाप करे. जड़ को पूजा स्थान मे स्थापित कर दे.

इसके बाद उस जड़ के सामने एक सिक्का रखे जिसे देवी का स्वरुप मानते हुए उसके सामने १०८ बार क्रीम श्रीं क्रीम का जाप करे अरे वो सिक्का अपनी जेब मे संभल के रखदे. अगले दिन उस सिक्के को वही जड़ के सामने रख कर १०८ बार क्रीम श्रिम क्रीम मंत्र का जाप करे. और सिक्के को संभल कर अपनी जेब मे रखले. रोज जाप करने से पहले जड़ को लोहबान धुप जरुर दे. इस प्रकार १ महीना जाप करते रहना है. इसमे सिक्का बदलना नही है, एक ही सिक्के पर यह पूरी प्रक्रिया होनी चाहिए. जेसे जेसे दिन दिन बढ़ते जाएँगे आर्थिक लाभ होता जाएगा. एक महीने भर यह प्रक्रिया करने पर साधक को अर्थ की प्राप्ति के नए नए स्त्रोत मिलते जाते है और धन सबंधी समश्यो का समाधान होता है.

MOST EFFECTIVE AND EASY LAKSHMI PRAYOG

In the sadhana world, there are lots of such prayog exists which seems very short and normal but the effect o the same is very lucrative. So many people holing short of time could not accomplish sadhanas and becomes unable to have benefit of the same. But with sadhana, there are some special processes which if sadhak does on the regular basis can have a big benefit. One of such prayog related to lakshmi is this way.

On Sunday evening, take the root of Dhatoora plant. While taking the root out one should chant " Aum Vam Vanaspati Saafalyam Vanadurge Namah" 9 times. Place that root in your worship place. After that place a coin near the root and worshiping the root as goddess in mind, chant 108 time " Kreem shreem Kreem" in front of it; then take the coin and place it carefully in your pocket. Next day the same coin should be again placed in front of the root and chant the mantra 108 times "Kreem Shreem Kreem" after that place the coin in your pocket. One should offer lohbaan Dhoop before mantra chanting to the root. Repeat the process for 1 whole month. The coin should not be changed, on the single same coin the whole process should be done.

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

यह छोटे छोटे सरल प्रयोग आपके जीवन में एक नयी आशा का संचार कर सकते हैं यदि इन्हें पूर्ण विस्वास के साथ किया जाये जो की आपके लिए सफलता के रास्ते खोल सकते हैं .

1. यदि नीबू को सात बार सिर पर से घुमाकर जो नज़र दोष से पीड़ित व्यक्ति हैं उतारा किया जाये फिर इन नीबू कोदो भागो में काट करके , किसी भी चौराहे पर फ़ेंक दे. नज़र दोष दूर होगा.
2. यदि कुआरी कन्याओ को खाना खिलाया जाये तो मंगल दोष से मुक्ति मिलती हैं
3. घर में जितने सदस्य हो उतने नारियल किसी भी नदी में प्रवाहित करने से पति पत्नी को रोगों यदि कोई हैं तो उसमें आराम मिलता हैं .
4. कभी भी शाम के समय झाड़ू न लगाये ठीक इसी तरह कभी भी रात के खाने के बाद घर में झूठे बर्तन रखे, ऐसा करना आपके घर के धन धान्य के लिए बहुत अच्छा होगा,
5. किसी भी परीक्षा में जाते समय घर के बड़े व्यक्तियों के चरण स्पर्श करें ओर साथ ही अपने पूजा घर में एक घी का दीपक लगाये.

6. घर से बाहर जाते समय ११ बार " ॐ नमः शिवाय " मंत्र का जप आपको दिन भर दुर्घटनाओ से बचाता हैं .
7. यदि आप पर यदि आपके पितरों की कृपा दृष्टी हो जाये साथ ही साथ कुल देवी / देवता की भी कृपा वरस उठे तो आप के जीवनमें आने वाली शारीरिक ,मानसिक आर्थिक समस्याओं से आपको छुटकारा मिलता हैं ही .
8. यदिप्रतिदिन पूजा काल में आप १२ नाम लक्ष्मी का उच्चारण करते हैं तब कुछ दिनके अन्दर ही आप लक्ष्मी की कृपा से अभिभूत होंगे ही,
9. जब भी आप घर से बाहर जाये तीन इलायची के दाने हाँथ में ले कर " "का उच्चारण करे, आपके धन संबंधित समस्या का आपको समाधान मिलेगा ही,
10. यदि तुलसी के पोधे घर के में दरवाजे के दोनों ओर लगाये तो धन सम्बंधित समस्याओं में सफलता मिलती हैं .

Totka vigyan

Theses small prayog may induce a little change in your life if apply with faith , and slowly a big road of success waits for you.

1. just circles 7 times the neebu on a person (nazar dosh effected) and than cut the neebu in two pieces and through on any square.
2. Offer food to unmarried girls helps you to reduce mars dosh problem.
3. Offer the coconut as the total number of family person in any river, help to reduces dieses of husband and wife.
4. Never do jhadu at home after evening and never leave un clean pots (utensiuls) in the night, this will bring happiness and wealth in your home.
5. While going for exam touch the feet of elders in your home and light a earthen lamp with ghee at pooja room.
6. Chant 11 times " om nah shivay " you will get protection from any accident.
7. When blessing of pitra happens upon you and same things blessing of kuldevi or devta upon you, all the problem of personal life /professional life and physical if related get solved or reduces to much extent.
8. If one use 12 names of lakshmi while in pooja kaal and doing any good work , and became daily routine than automatically after some times he will get blessing of lakshmi.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

इसकी उपयोगिता से कोई भी वंचित नहीं रहना चाहेगा हमें जीवन की शैली में कुछ सुधार तो करना ही चाहिए साथ ही साथ कुछ आयुर्वेदिक उपचार को भी समझना चाहिए और इनमे से कुछ आपके काम यदि आते हैं तो इससे हमा री नहीं बल्कि आयुर्वेद की सार्थकता ही सिद्ध होती हैं

- नारियल पानी लू लगने के उपचार में लाभदायक होता हैं ,
- नारियल पानी पीने से व्यक्ति का पेट भी साफ़ रहता हैं
- नारियल पानी से मालिश यदि चेहरे की की जाये तो भी यह कान्ति वर्धक हैं
- वारिश के इस समय दही का प्रयोग न करे
- सर्दी या खांसी के समय गर्म पानी की भाप लेना भी लाभदायक होती हैं .

- नियमित दिनमे दो बार ठन्डे पानी से स्नान करना भी एनीमिया रोग से प्रभावित व्यक्ति के लिए लाभदायक होता हैं .
- प्रातः काल टहलना भी याददाश्त बढ़ने के लिए और स्वास्थ्य रहने के लिए भी लाभदायक रहता हैं
- नाखुनो को यदि १०/१५ मिनिट नमक मिले पानी में डुबोये रख जाये तो यह उनकी खूबसूरती के लिए लाभदायक होगा.
- थकने पर यदि नमक और नीबू मिले पानी में अपने पैर डुबोकर कुछ देर बैठे तो थकान दूर होगी.
- दांत के दर्द होने पर यदि हल्दी सर्सोंका तेल और नमक का मिश्रण लगाया जाये तो लाभदायक होगा .

Ayurveda

Every one want to be take the benefit of this ayurved, but we have to change our life style so that we can fit more and more and healthy. and if anyone of theses advices helps you so its not us but the importance of ayurved proved.

- Coconut water is useful in case person get heat stroke.
- Coconut water is also useful in stomach related problem.
- If face massage is done with coconut water that also be very helpful getting more radiance .
- In theses rainy season one should not use/eat dahi.
- Take bath two times in day with normal cold water is also helpful in anemia case patient .morning walk always be very helpful in improving memory and maintaining better health
- When khansi or cold affect you at that time taking vapors of water is also helpful.
- If nails are dip in salt mix water for 10/15 minute that proved to be very benefited for their beauty.
- If you get tired than dip your feet in salt and nibu mix water for some time that help you to regain energy.

In toothache time apply haldi and little bit sarso oil and very little salt that it help to reducePain..
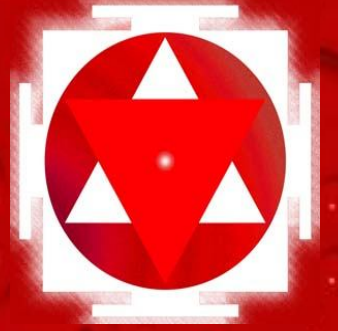
तंत्र कौमुदी
NFRU
तीक्ष्ण शक्ति साधना और इतर योनी साधना महाविशेषांक
SEVENTH Issue – SEPTEMBER 2011
Tantra kaumudi

Name of the Articles

- *Totaka vigyan*
- *Ayurveda*

- *In The End*

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

SADGURUDEV - PRASANG

अगली नस्ले याद करेंगी की तुमने निखिलेश्वरानंद को देखा था -किंकर स्वामी

परमहस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी को अत्यंत निकट से जानता हूँ सदियोंमे एक आध व्यक्तित्व ही ऐसा होता हैं जिसके बारे में कुछ कहा जा सकता हैं जिसके बारे में लिखने में आनंद की अनुभूति हो सक ती हैं . जिसके पास बैठने से ऐसा कुछ अहसास होता हैं की हम इस व्यक्तित्व से कुछ प्राप्त कर रहे हैं और ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी हैं परमहस स्वामी निखिलेश्वरानंद

परन्तु इनकी न्यूनता यह हैंकि इन्होने अपने को प्रचार प्रसार से बहुत दूर रखा हैं अपने आपको विज्ञापित करना या प्रचार पाने की कोशिश करना इनके स्वाभाव में ही नहीं हैं . उच्च कोटि के सन्यासी सम्मेलनों में जब भी इन्हें अध्यक्ष पद के लिए आमंत्रित किया जा ता हैं तो ये विनम्रता पूर्वक मना कर एक और हट जाते हैं अगर इनकी जगह कोई दूसरा व्यक्तित्व होता और जो ज्ञान इनके पास हैं जितनी शक्ति सामर्थ्य इनके पास हैं उसका सौवा हिस्सा भी , किसी के पास होता तो वह चीख चीख कर अपने बारे में बताता रहता, पूरी दुनिया उसके चारो और डेरा डाले रहती पर इस व्यक्तित्व में ऐसा कुछ नहीं हैं यदि मैं यह कहूँ की यह व्यक्तित्व प्रचार भीरु हैं तो ज्यादा सही होगा

जो दर्प जो प्रखरता जो विशालता जो प्रचंडता इनके सन्यासी जीवन में मैंने देखी हैं . जो त्याग वृति जो निश्प्रहता इनके सन्यास जीवन मैंने इनके प्रति अनुभव की हैं वह अपने आप में इक मिसाल हैं . सैकड़ो सैकड़ो सन्यासी शिष्य आतुर रहे हैं इनका शिष्यत्व प्राप्त करने के लिए , हजारो योगी और सन्यासी व्यग्र रहे हैं इनके पास कुछ क्षणों को बैठने के लिए , इनसे कुछ सिखने के लिए और इनसे बहुत कुछ प्राप्त करने के लिए, और इन्होने सभी को बहुत कुछ देने का प्रयास किया हैं ,इनके द्वार हमेशा सब के लिए खुले रहे हैं ,न किसी प्रकार की व्यस्त ता का भाव रखा न व्यर्थ का अहंकार , इसलिए आज हिमालय के हजारो हजारों सन्यासी स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का नाम सुनते ही श्रद्धा से झुक जाते हैं,फिर भले ही उन्होंने इस विराट व्यक्तित्व को देखा हो या नहीं ,पर हिमालय के कण कण में इनका व्यक्तित्व गुंजरित हैं और इन्होने हिमालय को पूरे भारत वर्ष से परिचित कराने में जो योग दान दिया हैं साधना की पूर्णता के लिए जो प्रयत्न किया हैं उसकी अपने आप में कोई मिसाल नहीं हैं

इन पंक्तियों के माध्यमसे मैं उनकी आत्मश्लाघा नहीं कर रहा हूँ, मैं उनकी कोई प्रशंशा या विज्ञापन भी नहीं कर रहा हूँ ,उस व्यक्तित्व को इसकी जरुरत भी नहीं हैं . यदि आकाश में सूर्य अपने प्रखर तेज पुंज से चमक रहा हो और उल्लू अपनी आखें बंद कर ले या सूर्य कोदेखें नहीं और वह कहे की सूर्य हैं ही नहीं तो इसमे सूर्य का क्या दोष ? यदि वर्षा ऋतू में अत्यंत मधुर वर्षा की बुँदे सम्पूर्ण पृथ्वी को आप्लावित कर रही हो अगर कोई चातक अपनों चोंच खोल कर उस मधुर जल को प्राप्त नहीं कर पाए तो इसमें वर्षा का क्या दोष ?? और कहीं पर विराट व्यक्तित्व और ज्ञान का पुंज साकार हो औरकोई उसे प्राप्त ही न करना चाहे और अपनी आखें बंद किये अपने ही अन्धकार में चूर अपनी ही अज्ञानता से व्यक्तित्व की आलोचना करता रहे तो उसमे उस व्यक्तित्व का क्या दोष

सिद्धाश्रम का आधार पुंज

आप अपने घर में बैठे इस बात को अनु भव नहीकर सकेंगे की एक व्यक्तित्व के होने से और न होने से कितना बड़ा अंतर आ जाता हैं , फिलहाल आप इस बात को अनुभव नहीं कर सकेंगे की किसी विराट व्यक्तित्व के होने या न होने से उस संस्था में कितना अधिक अंतर आ जाता हैं ,

यह हमने अनुभव किया हैं , इसमें दो राय नहीं हैं की सिद्धाश्रम समस्त ब्रम्हांड का आध्यत्मिक चेतना का पुंज हैं और वहां निरंतर उच्च कोटि की साधनाए संपन्न की जा रही हैं ,, परन्तु निखिलेश्वरानंद जी के सदेह होने और न होने से एक बहुत बड़ा अंतर हम अनुभव कररहे हैं ,उनके वहां रहने से एक चेतना का एक ऐसा वातावरण बना रहता हैं जिसमे एक एक कण गुंजरित रहता हैं स्वामी जी ने पहली बार हमें अहसास दिलाया की साधना रुखी सुखी और निर्जीव बे रस नहीं हैं अपितु इसमें भी आनंद और मधुरता का सामंजस्य हैं उन्होंने ही पहली बार सिद्धाश्रम को भारतीय और कलात्मक नृत्य से संयोजित किया पहली बार देवताओ को भी सिद्धाश्रम में साक्षात् उपस्थित करने का प्रयास किया,पहली बार आखें बंद किये योगियों को भी मुस्कराहट और हंसी प्रदान की पहली बार शांत और निर्जन वातावरण में खिलखिलाहट और हास्य और आनंद का उद्वेग किया और आज जो सिद्धाश्रम में जो चहल पहल हैं जो आनंद का सागर लहराता हैं वह्सब उनकी देन हैं

आज भी वह सूक्ष्म प्राणी से नित्य या लगभग नित्य का कर सबको संभाल लेते हैं ,सभीके हाल चाल पूंछ लेते हैं , सभीकी बात सुन लेते हैं , और सभी को बहुत कुछ बता देते हैं, यह एक आश्चर्य इस रूप में , अ त्याधिक व्यस्त रहता हुआ यह आदमी इतना समय कैसे निकल लेता हैं पर हमने अपनी इन आखों से देखा हैं पिछली शिवरात्रि को उन्हें स स्वर गृहस्थ शिष्यों के मध्य रुद्राभिषेक कराते हुए और शिव पूजन कराते हुए देखा हैं . तो ठीक उसी क्षण उन्हें सन्यासी शिष्यों भी भगवान् पारदेश्वर का पूजन संपन्न कराते हुए अपनी इन आखों से उन्हें देखा हैं ,मैंने उसमे भाग लिया हैं औरआनंद की असीमता उसमे अनुभव की हैं , एक हिसमय में दो विभिन्न स्थानों में दो रूपी में दो साधना संपन्न कराना एक विराट व्यक्तित्व का ही रूप हो सकता हैं और इस बात के लिए हमसब को गौरव और गर्व हैं .

जिन्होंने कदमो से नापा हैं ब्रम्हांड को

और यह कह कर में कोई अनहोनी बात नहीं कह रहा हूँ , मैं इन पंक्तियों के माध्यम से वही सब कह रहा हूँ , जोमैने उसके साथ रह कर अनुभव किया है , और जो में उनके साथ रह कर सिखा हैं समझा हैं अहसास किया है ,मै उनका शिष्य भी नहीं हूँ , पर आज में यह अहसास करता हूँ की यदि मैं उनका शिष्य होता तो अपने आप को ज्यादा गौरवान्वित अनुभव करता उनकी साधनात्मक गतिके सामने यह भू मंडल तोबहुत छोटा सा हैं ,जिस किसी दिन उन्होंने ब्रम्हाड के रहस्यों को उजागर किया उस दिन तो पूरी पृथ्वी पर तहलका सा मच जायेगा क्योंकि उन्होंने उन ग्रह नक्षत्र पर भी विचरण किया हैं जहाँ आज भी मानव विदमान हैं जहाँ पर विज्ञानं की उचाई या हैं जहाँ पर साधना की प्रतिभूति हैं और मुझे विस्वास हैं की वह दिन जल्द ही आने वाला हैं जब वे विस्तार से इस विषय पर प्रकाश डालेंगे ,

पर जब मैं उन्हें गृहस्थ जीवन में देखता हूँ तो में आपने आप में दंग रह जाता हुं मेरा मन मेरा मष्तिस्क और मेरी साधना विस्वास ही नहीं कर पाती की हिमालय का उच्च कोटि का योगी निखिलेश्वरानंद और जोध पुर में कार्य करने वाला व्यक्तित्व एक ही हैं. एक सामान्य मनुष्य के रूप में जीवन संचालित करने वाला हर क्षण सक्रिय रह कर कार्य करने वाला व्यक्तित्व एक ही हैं, यह समयोजन करना बहुत ही कठिन हो रहा हैं, पर जोकुछ भी में देख रहा हुं वह भी सत्य ही हैं जो कुछ देखा हैं वहभी पूर्ण सत्य हैं, उच्च कोटि का व्यक्तित्व ही इस प्रकार से नम्र और विनीत हो सकता हैं हरी भरी डाली ही बार बार लचक सकती हैं झुक सकती हैं. झूम सकती है सुखा ठुठ न तो झुक सकता हैं और न किसी को छ्या और आनंद देसकता हैं,

यहाँ पर मुझे वेद व्यास का वह श्लोक का स्मरण हो आता हैं, की भगवान् श्री कृष्ण पूर्ण सोलह कला युक्त होते हुए भी जीवन भर अत्यंत नम्र बने रहे उन्होंने सामान्य मनुष्य के रूप में जन्म लिया, अवतरित नहीं हुए, सामान्य बालको की तरह आचरण किया, ठीक उसी प्रकार खेले कूदे और,कार्य किया और ठीक उसी प्रकार से हसना रोना, प्रेम करना, मुस्कुराना और शिक्षा प्राप्त करना उन्होंने किया, इसलिए की वह यदि मानव को कुछ देना चाहते थे तो आवश्यक था की वे भी सामान्य मनुष्य कीतरह बने रहे ,ठीक उसी प्रकार से दुःख सुख अनुभव करे, सामान्य मनुष्य की तरह ही उदास हो परेशान हो चिंतित हो मुस्कुराये हँसे खिल खिलाये और कहीं से भी किसी को ऐसा न अहसा स न होने दे की अर्जुन के रथ पर बैठा यह सामान्य सारथि अपने आप में विराट तेज पुंज लिए हुए हैं. सब लोगों ने उसे सामान्य और साधारण मनुष्य समझा, द्रोपदी ने उलाहना दिया, अर्जुन ने भला बुरा कहा ,दुर्योधन ने उसे अपना प्रबल शत्रु समझा पर इतना होने पर भी वे सामान्य मानव बने रहे पर इसी सामने मानव ने गीता जैसा विराट ग्रन्थ अगली पीढ़ियों को सौपा, सामान्य से दिखने वाले व्यक्ति ने महाभारत जैसा युद्ध जीत कर दिखा दिया की विराट ता प्रदर्शन करने की वस्तु नहीं हैं

और इस श्लोक के अंत में वेद व्यास ने बहुत ही सुन्दर बात कही हैं की यह द्वापर युग का सौभाग्य था की इस युग में श्री कृष्ण जैसे व्यक्ति ने जन्म लिया विचरण किया कार्य किया, पर यह द्वापर युग के लोगोंका दुर्भाग्य भी था की उस समय के लोगोंने उनका महत्त्व न समझा न ही लाभ उठाया. उनके जाने के बाद आने वाली पीढ़ी ने उनकी विराट ता का अहसास किया उनके ज्ञान और चिंतन को समझने का प्रयास किया. वह एक ऐसा व्यक्तित्व था जो लौकिक रूप से प्रेम करता हुआ दिखाई देता था राधा के पीछे मंडराता हुआ और बांसुरी बजाता हुआ दिखाई देता था. और उसी सामान्य मनुष्य ने गीता जैसा अद्वितीय ग्रन्थ भी लिखा.

जो सारथि बना हुआ सामान्य व्यक्तित्व लग रहा था , उसने महाभारत जैसे युद्ध में पांडवो को विजयी दिला कर बता दिया विराट ता अपने आप में आत्म तत्व हैं काश द्वापर युग के लोग उस विराट व्यक्तित्व को पहचान पाते,उससे जुड़ पाते तो निश्चय ही वह लोग पूर्णता प्राप्त कर पाते, परन्तु यह सब तो बाद में ही होना था उनकी महानता और विराट ता की आने वाली पीढ़ियों ने ही अनुभव किया , उसी युग में किसी की विराट ता और महानता को अनुभव नहीं किया जा ता वे तो केबल आलोचना कर सकते हैं और यह तो समाज का नियम हैं मैं समझता हुं की उसीसमय चक्र की पुनरावृति हो रही हैं .

अगली नस्ले याद रखेंगी

जिस रूप में यह उच्च कोटि का व्यक्तित्व सामान्य मनुष्य की तरह हर्ष शोक , सुख दुःख में जी रहा हैं आलोचनाओ के झंझावात में आगे बढ़ रहा हैं, उस रूप में आज का एक सामान्य मनुष्य उन्हें पहिचान नहीं सके तो कोई आश्चर्य की बात नहीं,जिस प्रकार से यह व्यक्तित्व अपने सामान्य गृहस्थ शिष्योंको समझा रहा हैं उनके संदेह और आलोचनाओ के मध्य में अपने आपको एक निष्ठ कर रहा हैं . वह वास्तव में बहुत ही कठिन हैं इस प्रकार का जहर पीते रहना एक सामान्य मनुष्य के वश की बात नहीं हैं , जिस प्रकार से ये गृहस्थ शिष्य अपने आप को शिष्य कहने का दंभ रखते हैं उ स हिसाब से तो शिष्य शब्द किपरिभाषा ही बदल जाएगी फिर तो हम सन्यासी शिष्योंको यह शब्द न लगा कर कुछ ओर ही शब्द ही लगाना चाहिए ,

होना तो यह चाहिए था की इस सामान्य मनुष्य के आवरण के भीतर जो महानता और विराट ता छिपी हैं उसे हम पहिचान ने का प्रयत्न करे ,उनसे आत्म सम्बन्ध स्थपित करे उनके कार्योंमे योग दान दे और कुछ ऐसा करे की जिससे की हम सही अर्थो में उनके शिष्य कहलाने का गौरव प्राप्त कर सके एक बार फिर उनके होठो पर मधुरता के साथ "शिष्य "शब्द उच्चारित हो काश ऐसा हो पाता.

आज इस जन्म दिनके अवसर मैं समस्त योगियों और सन्यासियों और हिमालय के कण कण की तरफ से सिद्धाश्रम के प्रत्येक व्यक्तित्व की तरफ से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हुं और हम सब यही कामना करते हैं की हमारा जीवन और हमारी आयु उन्हें प्राप्त हो और वे ज्यादा वर्षो तक जीवित रह कर अद्वितीय कार्य संपन्न कर ते रहे . .

और यह बात भी दो टूक सत्य हैं किआप सब गृहस्थ शिष्योंका सौभाग्य हैं की हमारी अपेक्षा आप लोगों को इस व्यक्तित्व ने ज्यादा समय दिया , ज्यादा अवसर और ज्यादा सुविधा दी हैं . आज भले ही आप इनपर या अपने आप पर गर्व का अहसास न कर सके पर यह निश्चित हैं की आने वाली पीढ़िय आप पर गर्व करेंगी की कभी आप इस विराट व्यक्तित्व के संपर्क में रहे हैं

आने वाली पीढ़िया सहसा आप पर या आपके कथन पर यह विस्वास नहीं कर पाएंगी की आपने इस विराट व्यक्तित्व के साथ कुछ क्षण बिताये हैं इनके साहचर्य में रहे हैं और इनके मुख से अपने लिए शिष्य शब्द का उच्चारण सुना हैं परन्तु हम सब लोगों को आप सब गृहस्थ शिष्यों पर इर्षा हैंकि आप हम लोगों की अपेक्षा ज्यादा समय प्राप्त करसके हैं .और आपके सौभग्य पर गर्व हैं की आप इनके साथ हैं आने वाली पीढ़िया आप पर गर्व करेंगी

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका १०० वे अंक से

****

Coming generation will remember that you had seen nikhileshwaranand –kinkar swami

I knew very closely paramhans swami nikhileshwaranand ji, in many century there may one person would have possible and on writing about gives a feeling of anand and joy, and sitting nearer to him gives us feeling that we are really getting something , such is the personality of paramhans swami Nikhileshwaranand ji .

Only weakness in his personality that he is very far away from himself to advertisement a, and he has no desire for that advertisement and neither he ever tried. when he has offered the post of presiding over vary high level sanyasi sammelan, he even turndown the proposal, if any other person have the same opportunity than and have the 100 th part of the gyan and shakti what he has, he will definitely shouted to whole world about himself and whole world sitting just nearer to him. But swami has no such a things in it. if I say he is afraid of such an advertisement that may be true.

सर्व बाधा निवारक श्री गणपति प्रयोग

SHRI GANESH PRAYOG

समस्त बाधा निर्मूलन कर सकने में समर्थ तीव्र प्रयोग

इस तीक्ष्ण शक्ति साधना महा विशेषांक में भगवान् गणपति से सम्बंधित एक तीव्र प्रयोग यहाँ पर दिया जा रहा हैं, ऐसे तो अनेको प्रयोग हैं जो भगवान् गणपति के वरदायक प्रभाव दायक से सम्बन्ध रखते हैं पर उनके सम्बन्ध रखने वाली तीक्ष्ण स्वरूप की साधना का भी तो अपना एक सौन्दर्य हैं हैं क्योंकि मानव जीवन तो अनेको दोषों और अनेको कमी , न्यूनताओ से ग्रसित हैं कभी यह वाधा तो कभी वह वाधा ,, तो इनसब का निर्मूलन भगवान् गणेश के जिस स्वरुप की साधना से संभव हैं वह आपके लिए ..

तीन दिवसीय यह रात्रि कालीन प्रयोग हैं , जब भगवान् गणेश की बात होगी तो उनके लिए दिन बुध वार निर्धारित हैं ही साथ ही साथ यदि शुक्ल पक्ष से प्रारंभ करे तो अति उत्तम, तीव्र प्रयोग हैं उन्हें लाल वस्त्र भी अधिक प्रिय हैं तो

पहिनने वाले वस्त्र और आसन और जिस वस्त्र पर गणेश जी का विग्रह या यन्त्र या प्रतीक या कुछ भी संभव न हो तो मौली से बंधी सुपारी को ही गणेश मान कर रखना हैं वह लाल रंग का ही होना चाहिए .

आप संकल्प ले और अपनी किन किन समस्या के निर्मूलन के लिए कर रहे हैं उसे उल्लेख करे. फिर प्रार्थना का उच्चारण करे

प्रार्थना : विघ्न नाशिने शिव सुताय वरद मूर्तये नमः

फिर फिर भगवान् गणेश का पूजन सामान्य पंचोपचार से करें

निम्न मंत्र की ११ माला प्रति रात्रि जप तीन दिन तक करना हैं

मंत्र : ॐ गं ग्लौम गं गणपतये विघ्नविनाशिने स्वाहा ||

जप आपको लाल रंग की मूंगा माला से करना हैं, अनेको साधनाओ में साधना समप्तिके बाद कुछ हवन सामग्री से आहुति देनी होती हैं चूँकि यहाँ पर बाधा ओं से छुटकारा पाने का प्रयोग हैं तो हवन सामग्री के स्थान पर काली मिर्च का उपयोग करना होगा .और मात्र १०८ बार ही आपको आहुति देनी हैं . फिर सद्गुरु देव जी का पूर्ण पूजन या सामान्य जैसी ही परिस्थिति हो जैसा आपको ज्ञात हैं की हर साधना के शुरुआत में करना ही चाहिये वैसे ही आप इस साधना के प्रारंभ और अंत में करे .

यह प्रयोग तीव्र हैं अतः थोड़ी घबराहट और शरीर में ताप का अहसास हो तो परेशान न हो यह तो विकारो के बाहर जाने की क्रिया हैं

****

Teekhsn ganpaTi sadhana

Here in this Mahavisheshank related to teekshn shakti sadhana , one very very effective sri ganesh prayog Is for you. There are many prayog that are very much related to blessing of

itar- yoni who are they ?

क्या हैं ये ,और क्यों हैं इनकी साधना जरुरी

यह पूरा विश्व अनेको आयाम लिए हुए हैं यदि बस इतना ही माना जाये की जो केबल और केबल हमें ही दिख रहा हैं वही ही सत्य हैं यह तो बिना वजह वाद विवाद की स्थिति हैं ,अनेको सूक्ष्म जीव और अनेको ऐसे जीवाणु का भी अस्तित्व हैं जिन्हें सामान्य रूप से हमारी आखों से भी देखना संभव नहीं हैं , तब क्या उनका अस्तित्व नकार दिया जाये ,

केबल पानी को गर्मकरने से क्या सारे जीवाणु समाप्त हो जाते हैं , आप कहेंगे की हाँ यही तो पढ़ा हैं

पर अभी हाल की वैज्ञानिक शोध में यह तथ्य आया हैं की खौलते हुए लावे में भी ऐसे जीवाणु या सूक्ष्म जीव का अस्तित्व पाया गया हैं जो समझसे परे हैं , तो..

ठीक इसी तरह हमरे शास्त्रों में अनेको ऐसी बाते बताई गयी हैं जो सामान्य विद्या बुद्धि से परे हैं . अनेको ऐसे दिव्य आश्रमों का वर्णन हैं जो शायद आप माने नहीं वह आज भी हैं बस समय के चतुर्थ आयाम में हैं ,यदि आप जा कर देखे तो आप स्वयं ही समझ जायेगे की सत्य क्या हैं ,पर बिना जाने या जानने कीकोशिश किये बिना देखे ही कह देना तो उचित नहीं हैं , अनेक लोगो ने उन दिव्य स्थानो की यात्रा की भी हैं, आधुनिक काल के अनेक व्यक्तियों ने इस बात की पुष्टी कीभी हैं

ठीक इसी तरह मानव जीवन के अलावा भी अनेक योनिया इस विश्व में विदमान हैं जिन्हें आप पितृ , भुत ,प्रेत पिशाच , यक्षिणी .डाकिनी,गन्धर्व और अनेको नाम दे सकते हैं पिशाच , और अन्य के नाम से बिलकुल भी घबराने की जरुरत नहीं हैं क्योंकि यह भी एक वर्ग हैं बस नाम अलग हैं .पर इससे क्या फर्क पड़ता हैं .

सदगुरुदेव जीने अनेको बार कहा की इन मानव के इतर योनी यो को भी एक स्वस्थ दृष्टी से देखने की आवश्यकता हैं , और इनको भय की दृष्टी से नहीं देखना चाहिए ,उन्होंने अनेक साधको के माध्यम से भी हमारे सामने बात राखी की यह योनिया तो अपनी मुक्ति के लिए स्वयं छट पटा ती रहती हैं कभी उनके वर्ग की पीड़ा भी तो हम समझे , यह बात तो भुत प्रेत पिशाच, वर्ग की हो गयी, पर जो हमारे पितृ हैं उनका के वे तो हमारे पूर्वज हैं मेरा मतलब हमारे कि परिवार के सदस्य रहे हैं उनके बारे में उचित सोचा जाय, पर इतने से तो काम नहीं चलता क्या हम जानते हैं की वास्तव में पितृ का मतलब क्या होता हैं .. इस वर्ग में केबल हमारे परिवार के ही नही बल्कि अनेक ऋषि मुनि भी आते हैं, और आते हैं भीष्म पितामह जैसे महान तपस्वी ,, तो इनको एक बहुत बड़े दृष्टी कोण से देखना चाहिए .

क्योंजरुरी हैं ये सबके बारे में जानना , तो यह जान लीजिये कितने परिवार ऐसेहै जिनके यहाँ एक भी संतान नहीं हैं कितना इलाज कराया हैं पर कुछ नहीं हुआ पर जब किसी उच्च कोटि के साधक या तपस्वी के कहने पर जब जाकर विधि विधान से श्राद्ध कर्म कराया गया तो परिवार में सुख शांति और प्रसन्नता का माहौल बना और जो कमी थी जीवन की वह दूर हुए ,

वहीँ जीवन में किसे एक विश्वस्त मित्र की तलाश नहीं रहती हैं आज के जीवन की विडम्बना तो आप जानते हैं की सब कुछ तो हैं पर कोई अपना नहीं जिससे आप अपना कुछ बात सको , कोई तो ऐसा हो .. भले ही आप पति पत्नी हो , कितने भी अंतरंगता का दंभ भरते हो पर वास्तविकता तो आप जानते हैं , आधुनिकता ने हमारे चेहरे पर इतना मुखौटा लगा दिया हैं की हम अपना असली रूप भूल गए हैं , जब चारो ओर सभी ढोंग कर रहे हो तो हमें भी तो वही करना पड़ेगा ..न

जीवन की इन्ही विसंगतियों को भाप कर सदगुरुदेव जी ने अनेको ऐसी साधनाए दी हैं और इन इतर योनियों के बारे में कहा भी हैं की एक बार आपका सांसारिक मित्र धोखा दे दे पर जब यह एक बार आपकी मित्र हो जाये तो कभी भी विस्वात घात नहीं करते हैं, मैं अन्य विद्वानों के कथन का खंडन नहीं कर रहा हूँ , पर में यहाँ पर सिर्फ और सिर्फ अपने सदगुरुदेव जी के द्वारा दी गयी साधनाओ के बारे में ही बात कर रहा हूँ.

आपके यह सहयोगी बने , आपका दृष्टी कोण इनके प्रति निर्मल बने आप भी माने की इनमे और हममे कोई विशेष अंतरनहीं हैं बल्कि आयाम का अंतर हैं , तब आप एक साधक बनाने की दिशा में एक कदम बढ़ाते हैं .

अप्सरा यक्षिणी भी किन्ही अर्थो में इतर योनी के कहे जा सकते हैं ,

पूज्य सद्गुरु देव जी का एक स्वपन यहभी हैं की हम सभी इन वर्गों के प्रति स्वस्थ चिंतन रखे और इनके सहयोग से अपना जीवन ओर खास कर सधानात्मक जीवन को संभारे .

यहाँ एक प्रश्न उठता हैं की क्या इन योनियों की सधना शास्त्र सम्मत हैं ,क्योंकि गीता में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं की जो इन योनियों की साधना करता हैं भुत प्रेत और अन्य भी वह मृत्यु उपरान्त इन्हों कोप्राप्त होता हैं , इस हिसाब से तो यही कहना चाहिए की इनकी साधना नहीं करना चाहिए ,

पर हम ये भूल जातेहैं जो भी क्रिया गुरु नहीं बल्कि सदगुरुदेव के निर्देशन में होंगी जो उनके आशीर्वाद से होगी और जो उनके द्वारा प्रदत्त साधनाओ से से होगी उसमे ऐसा कुछ नहीं हैं आप निश्चिंत रह कर साधना करे .हजारो साधक इस बात के स्वयं गवाह हैं .

****

ROSARY- ENERGIZE PROCESS

कुछ सरल विधिया जो आपने चाही थी

यंत्रो की सामान्य प्राण प्रतिष्ठा विधि तो हमने तन्त्र कौमुदी के विगत के अंक में दे हो चुके ही हैं , पर आपके सन्दर्भ में अनेको पत्र और इ मेल हमें मिले जिसमे हमसे पूछ गया था की क्या सामान्य से सामान्य से प्रयोग में संस्कारित माला की जरुरत होती हैं ??तो उत्तर यह हैं की हाँ बिना संस्कार की माला का प्रयोग करने से सम्बंधित देवता क्रुद्ध हो जाते हैं तो हर प्रयोग के लिए यह माला कहां से लाये तो आप सभी के लाभार्थ यह माला को संस्कारित करने की विधिया इस लेख में आप सभी के लिए

आप जानते हैं की विभिन्न प्रयोग के लिए विभिन्न मनको की माला का उपयोग होता हैं , कभी 51 तो कभी 31 पर अधिकांश प्रयोग और साधना में 108मनको से युक्त माला का प्रयोग होता हैं.

पर १०८ ही क्यों यूं तो सभी का एक विशेष अर्थ हैं हैं पर सदगुरुदेव भगवान् ने कहा हैं की मानव शरीर में 7चक्र नहीं बल्कि 108 चक्र होते हैं , और उन्होंने इस संदर्भ में विभिन्न उदाहरण भी दिए हैं साथ ही साथ इस हेतु एक बार एक विशिष्ट दीक्षा १०८ चक्र जागरण दीक्षा भी उन्होंने प्रदान की थी, तो जब भी हम 108 मनको की माला से मंत्र जप करते हैं तब हर मनके के माध्यम से एक विशेष चक्र पर स्पंदन होता ही हैं फिर उसे हम महसूस चाहे या न चाहे करे .यही एक गोपनीय तथ्य हैं इन मनको का 108 होने का तभी तो 108 मनको वाली माला सर्वार्थ सिद्धि प्रदायक कही जाती हैं

और यह माला ही तो इस साधना की एक विशेष उपकरण हैं , सदगुरुदेव भगवान् कहते हैं की की क्यों एक छोटी छोटी से बात पर अपने सदगुरुदेव पर भी निर्भर रहना , उन्होंने ही तो अनेक बार माला और यंत्रो को प्राण प्रतिष्ठित करने की विधिया बताई , उ ससमय के अनेक साधक इस बात के प्रमाण हैं ,

और जब हम आगे बढ़ कर सिद्धाश्रम तक जाने की बात करते हैं और हम खुद एक सामान्य सी माला प्राण प्रतिष्ठित न कर पाए तो आप ही सोच सकते हैं हम हैं कहाँ , अतः इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रक्रिया को आपके सामने रहा जा रहा हैं .

यह लेख आरिफ खान जी के द्वारा अनेको वर्ष पहले भी एक पत्रिका में प्रकाशित हो चूका हैं उसी का संक्षिप्त रूप आपके सामने हैं .

ध्यान रहे यहाँ हम माला निर्माण की प्रक्रिया नहीं बता रहे हैं वह एक और ही अलग विषय हैं .

प्रथम तरीका :सर्वाधिक सरल तरीका तो यह हैं की आप किसी भी माला /मालाओं को किसी भी ज्योतिर्लिंग या शक्ति पीठ में मुख्य विग्रह से स्पर्श करा ले, उनकी प्राण उर्जा से माला स्वतः हो प्राण प्रतिष्ठित हो जाती हैं .

द्वितीय तरीका : यह हैं की यदि आप से रुद्राभिषेक करते बनता हैं या आप के घर में किसी से या कोई पंडित द्वारा आपके घर में रुद्राभिषेक किया जा रहा हो उस समय काल में किसी भी पात्र में यह माला जिसे प्राण प्रतिष्ठित किया जाना हैं उसे रख दे , यह स्वत ही परं प्रतिष्ठित हो जाती हैं , रुद्राभिषेक की विधि आप गीता प्रेस की किताबों मेंपा सकते हैं .

तृतीय तरीका :आप के जो भी गुरु हो उनके हाथो के स्पर्श मात्र से भी यह प्रक्रिया सुगमता पूर्वक संपन्न हो जाती हैं .

चतुर्थ तरीका :माला को गंगा जल से स्नान कराये और निम्न मन्त्र उसी माला से १०८ बार जप कर ले , यह भी एक सुगम तरीका हैं .

माले माले महामाले सर्व तत्त्व स्वरूपिणी |

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्त स्तस्मंमे सिद्धिदा भव ||

पंचम तरीका :

शास्त्रीय प्रक्रिया :

पीपल के नौ पत्ते को इस तरह से रखे की एक पत्ता बीच में और और अन्य पत्ते उसे केंद्र मानते हुए इस प्रकार रखे मानो एक अष्ट दल कमल सा बन जाये , बीच के पत्ते पर आप अपनी माला रख दे और हिंदी वर्ण माला से वर्ण ॐ अं से लेकर क्षं तक सभी का उच्चारण करते हुए उस माला को पंचगव्य से स्नान कराये. फिर सद्योजात मंत्र का उच्चारण करते हुए

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः |

भवे भवे नाति भवे भवस्य माँ भवो द्वावाय नमः ||

निम्न वामदेव मन्त्र से चन्दन माला पर लगा यें

बलाय नमो बल प्रमथ नाय नमः सर्व भूतदहनाय नमो मनो न्मथाय नमः ||

धुप बत्ती अघोरमंत्र से दिखाए

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्य: सर्वेभ्य : सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य :

फिर तत्पुरुष मंत्र से लेपन करे

ॐ तत्पुरुषाय विद्म्ह्ये महादेवी धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात |

फिर इसके एक एक दाने पर एक बार या सौ सौ बार इशान मंत्र का जप करे

ॐ ईशान: सर्व विद्यानामिश्वर : सर्व भूतानां ब्रह्मा धिपति र ब्रह्मणो ऽ धिपतिर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवो ऽ म |

अब बात आती हैं कि कैसे देवता की स्थापना की जाए तो यदि आप इस माला को शक्ति कार्यों में उपयोग करना चाहते हैं तो **"ह्रीं "** इस मंत्र के पहले लगा कर और लाल रंग के पुष्पों से इसका पूजन करें.

और वैष्णवों को निम्न मन्त्र का उपयोग करें

ॐ ऐं श्रीं अक्षमाला यै नमः ||

फिर हर वर्ण मतलब अं से लेकर क्षं तक लेकर इनसे संपुटित करके १०८ /१०८ बार अपने इष्ट मन्त्र का उच्चारण करे .

फिर यह प्रार्थना करे

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्व सिद्धिप्रदा मता |

तें सत्येन में सिद्धिं देहि मातर्नामो ऽ स्तू ते ||

अब इस माला को हर के सामने दिखाए नहीं , आपको जो भी विधि उचित लगे उसका उपयोग करके एक प्राण प्रतिष्ठित माला का निर्माण आप कर सकते हैं उसे साधना में प्रयोग करसकते हैं .

पर यह तो प्रकिया मणि माला को संस्कारित करने की हैं पर विशेष शक्ति युक्त तांत्रिक माला का निर्माण कैसे किया जाए , यह विधान पहली बार ही सामने आ रहा हैं , तो इसमें आपको

ॐ सर्व माला मणि माला सिद्धि प्रदात्रयि शक्ति रुपिंयै नमः

ॐ sarv mala mani mala siddhi pradatrayi shakti rupinyai namah

१०८ बार उच्चारण करना हैं इस दौरान माला हाथ में घुमती यां उसे घुमाते रहे गी /रहे

ज्योतिष : क्यों परिणाम सही नहीं होते

ASTROLOGY - DISCUSSION

कुछ विचारणीय बाते

ज्योतिष तो सारे जीवन का दर्पण हैं और हमारे भारतीय ज्योतिष की जड़े तो बहुत ही गहरी हैं इसका एक नाम तो ज्योतिर विज्ञानं हैं जिसका मतलब वह विज्ञानं जो हमें और हमारे जीवन को ज्योति याने प्रकाश दिखाए ,हमसभी के मन में ज्योतिष के प्रति सम्मान तो रह ता हैं बीच के युग का कुछसमय ऐसा था जब इसका बेहद माखौल उड़ाया जाने लगा था , इस विपरीत परिस्थिति में कुछ विद्वान खड़े हुए जिन्होंने अपना पूरा जीवन इस विधा के पुनर स्थापित करने में लगा दिया , इनमे सर्व श्री सद्गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी, दक्षिण के डॉ बी ,व् . रमण और कृष्णमूर्ति पद्धति के विकासक प्रोफ कृष्णामूर्ति सर्वोपरि कहे जा सकतेहैं .

जैसे ही कंप्यूटर युग का प्रारम्भ हुए आशंका जताई गयी की अब ज्योतिष विद्या का भविष्य खतरे में हैं क्यों यदि यह विज्ञानसम्मत नहीं होगी इसके गणतीय पक्ष कोकैसे कंप्यूटर कर पायेगा ,

पर पर आज तो हर ज्योतिष इस का उपयोग कर रह हैं, और आज बाज़ार में सैकड़ो पत्रिका इस विधा के बारे में जानकारी और नए नए तथ्य रख रही हैं

पर कभी कभी इसके परिणाम सही से नहीं कहे जा सकतेहैं , यह बात भी सत्य हैं की कीहर बार हमारी भविष्य वाणी सही हो तो मानव जीवन की रहस्यमयता का क्या होगा और क्या मानव इश्वर हो जायेगा यह तो विवाद का प्रशन हैं ,

.

सदगुरुदेव भगवान ने भी हमें आत्याधुनिक टेबल्स का उपयोग करने कि सलाह दी हैं जिससे ग्रहों की गणना में गलती कमसे कम हो , अब अयंनाश की समस्या हैं कुछ लाहिड़ी तो कृष्णमूर्ति के पक्ष धर हैं यह भी अपने अपने अनुभव पर हैं कि कौन कौन किस का उपयोग करना चाहता हैं .

हमारे ज्योतिष में अभी भी हम 360 का दिन का एक वर्ष अपनी गणतीय गणना के लिए लेते रहे हैं , और विस्शोतरी दशा पद्धति को सभी इस क्षेत्र के लोग उपयोग करते हैं और बेहद सम्मान से भी देखते हैं पर हम तो एकसाल तो 365 1/4 दिनका मानते हैं इस हिसाब से हरसाल में लगभग 5दिनका अंतर तोदशा महादशा में आ ही जाता हैं तो यह तो समस्या हो गयी , क्यों जिसका जन्म अभी हुआ ही तो उसके लिए तो कोई समस्या नहीं हैं पर जिनका मानलो जन्म आज से 40 वर्ष पहले हुआ हैं तो 40*5=200 दिन मतलब लगभग 6/7 महीने का अंतर आगया तो शयद हम जिस दशा की मानकर चल रहे हैं वह होगी नहीं उस समय तो कैसे करे इस समस्या का सामना , अब उस आधार के साथ खिलवाड़ तो नहीं करसकते हैं.

पर अबक्या करे ,जब आजका व्यक्ति एक ज्योतिष के परामर्श को इतना सस्ता समझता हैं ओर उसे भी उतना याने एक मजदुर के दैनिक परिस्मिरिक नहीं देना चाहता तो कैसे उम्मीद करे की वह आपके लिए इतनी मेहनत करेगा अब आज से ७०/८० साल पहले के दिन तो हैं नहीं ,,आजके इस अर्थ प्रधान युग में सबकी कुछ मुलभुत आवश्यताए हैं ही

सदगुरुदेव भगवानने ज्योतिष कीन्ही कुछ विसंगतियों के ध्यानमे रखते हुए एक पूर्ण software बनबाया था , उनके विचार में यह बिलकुल स्पस्ट था की जब एक मानव जीवन एक प्रमाण के रूप में आपके सामने हैं तब आप विभिन्न दशाये चाहे वह विन्शोत्त्री या अष्टो तरी या योगिनी या मंडूक या अन्य से जो भी फलादेश निकला जाता हैं वह अलग अलग क्यों आता हैं

जब कि सभी को एक ही बात बताना चाहिए इस कारण उन्होंने विभिन्न इन दशाओ के परिणाम में कैसे सामजस्य किया जाये और एक ही परिणाम प्राप्त हो एक सॉफ्टवेर का निर्माणकराया था ,और उस समय की मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका जो बाज़ार में उपलब्ध नहीं थी इसका पूरा एक विज्ञापन उन्होंने दिया था और अनेक लोगोंने उससे फायदा उठाया भी था, पर बाद में काम में व्यस्तता के चलते हुए इस योजना को बंद कर दिया गया ,

आज यह कहा पर हैं हमें नहीं पता .

.पर इस समस्या को हम कैसे सुलझाये , पहले जो भी ज्योतिष विज्ञानं सीख रहे है उनको भी चाहिए की वह अपने साधना पक्ष को भी प्रबल करे उसके साथ यह अपनी साधना का बल से आप काम करे तो कोई समस्या नहीं होगी .

या अपनी मास्टरी प्रश्न ज्योतिष में करे तो आप अपनी बात को cross check कर सकते हैं .

या आप विंशोत्तरी दशा के साथ योगिनी दशा और मंडूक दशा से भी जन्म पत्रिका को देखें औरजब इन तीनो से भी एक ही परिणाम प्राप्त हो तो आप निश्चय ही कहीं ज्यादा बेहतर तरीके से अपना भविष्य कथन कर सकते हैं.

****

Dasha anD mahDasha : why jyotish preDiction sometimes fails

Astrology is the mirror of our human life , and the root of our Indian vaidik astrology has a very deep, one of its name is jyotir vigyan, that means the science which not only us but can guide our life and show the light on that. We all have a very high faith in this science., but times had such a come (some 60/70 years) in that this science had been consider as very disrespect way , in that very difficult period some great scholar stand up and devote their whole life to up bring the respect of this science in that firstly our Sadgurudev Dr, Narayan Dutt Shrimali ji, Dr B,v Raman from south and prof krishnamurt of krisnmurti paddhati .

When computer era has been started this indication gave us that may be astrology has a very bad day ahead since if astrology maths base is not fully justifiable than how can computer can accommodate that ,

आत्मा आवाहन साधना

MritatMa - aavahan process

कैसे आवाहन किया जाये एक सरल साधना विधि

आत्मा तथा उनके अस्तित्व पर वर्षों से शोधकार्य होता आया है और आज के इस विज्ञानयुग मे भी कई लोग इस दिशा मे बराबर गतिशील है की क्या मृतात्मा का अस्तित्व होता है और अगर होता है तो इनसे संपर्क कैसे स्थापित किया जा सकता है. यहाँ तक की भारत से भी ज्यादा पश्चिमी देशो मे इस पर कार्य हो रहा है और इसके कई परिणाम भी प्राप्त हुए है जो की अभौतिक अस्तित्वो की पुष्टि करता है. लेकिन इस दिशा मे तो यह मात्र पहला कदम है उनका. हमारे देश के ऋषि मुनियों ने इस विषय पर कई महत्वपूर्ण शोध कार्यों को किया था और आत्माओ के आवाहन की कई विशिष्ट प्रक्रियाओ का निर्माण किया था. अफ़सोस की बात है की आज के युग मे हमारे महान पूर्वजो के शोध कार्यों को ढोंग का नाम दे कर हे द्रष्टि से देखा जाता है लेकिन फिर भी इस विषय पर सामान्य जन मनुष्य का आकर्षण बराबर रहा है.

मृत्यु को अंत मानना एक बहोत बड़ी भूल है, यह तो मात्र पड़ाव होता है अगली यात्रा का. भगवान खुद गीता मे कहते है की शरीर नाशवंत है लेकिन आत्मा अमर ही है. इसी क्रम मे मृत्यु के बाद शरीर से बहार निकलकर आत्मा सूक्ष्मजगत मे चली जाती है और जब तक की आत्मा वापस जन्म ना ले तब तक सूक्ष्म जगत ही उनका पड़ाव होता है, यह काल कितने समय के लिए होता है यह कहना मुश्किल है. कई मृतात्माए जन्म लेने के लालायित रहती है और कई इससे ठीक विपरीत जन्म ना लेने के लिए. कई योग्य गर्भ के लिए राह देखती है तो कई ऐसे कोई बंधन मे खुद को नहीं रखता. हो सकता है मृत्यु के बाद कुछ ही समय मे वह आत्मा दूसरे गर्भ का चयन कर अत्यंत ही सूक्ष्म काल मे वापस जन्म ले ले या कई बार यु होता है की कोई आत्मा कई सदियों तक भी जन्म ना ले. इस विषय के कई पक्ष है जो की अपने आप मे बहोत ही वृहद है.

ये जानते हुए भी की जिसने जन्म लिया हे उसकी मृत्यु अवश्यम्भी है कई बार स्नेहीजन के मृत्यु मन पर एक बड़ा आघात छोड़ते है, सच है की माया से प्रेरित हो कर मन इन सबंधो को सास्वत स्वीकार कर लेता है लेकिन व्यक्ति के शुक्ष्मजगत गमन के बाद उन्हें देखने की या मिलाने की इच्छा बराबर बल्वर्ती बनी ही रहती है. और इन्ही उलजनो मे मन बोजिल होने लगता है. उनकी क्या गति होगी या क्या उनकी कोई इच्छापूर्ति हम कर सकते है या नहीं ऐसे कई सवाल मन मे उठाते रहते है. लेकिन क्या कोई एसी प्रक्रिया है?

हाँ, तन्त्र इसका समाधान करता है. तन्त्र के आवाहन पक्ष मे इससे सबंधित कई प्रक्रियाए है. लेकिन ज्यादातर प्रक्रियाए उग्र व् स्मशानिक प्रक्रियाए है जो की एक सामान्य मनुष्य के लिए संभव नहीं है. सायद हमारे पूर्वजो का भी यही चिंतन रहा होगा इस लिए उन्होंने कई ऐसे लघु प्रयोग भी खोज निकले है जिन्हें करने पर आपकी इस इच्छा की पूर्ति स्वप्न के माध्यम से संभव हो सकती है. अगर मृतात्माने पुनर्जन्म नहीं लिया है तो सबंधित प्रक्रिया करने पर स्वप्न के माध्यम से स्नेहीजन से मुलाकात संभव है. इसके द्वारा स्नेहीजन की मृतात्मा की इच्छा होगी तो वार्तालाप भी संभव है अगर उनकी कोई एसी इच्छा है जिसका समाधान वो आपसे चाहते है तो वो भी आपको स्वप्न के माध्यम से पता चल जाएगा. इस द्रस्टी से यह प्रक्रिया एक अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है

बुधवार रात्रि मे ११ बजे के बाद यह प्रयोग करे, यह ११ दिन का प्रयोग है

वस्त्र और आसान लाल या कला रहे, दिशा दक्षिण.

अपने सामने महाकाली का विग्रह या तस्वीर स्थापित करे जिस पर सामान्य पूजन करे. तेल का दीपक और लोहबान धुप देवी को अर्पित करे.

इसके बाद व्यक्ति उस आत्मा को याद करे जिसका आवाहन किया जाना है और उसे स्वप्न के माध्यम से प्रकट होने को प्रार्थना करे.

फिर साधक निम्न मंत्र की ११ माला काली हकीक माला से जाप करे

ॐ हिलि हिलि खिचि खिचि फट

मंत्र जाप से पहले और बाद मे गुरु मंत्र की एक माला ज़रूर करे. मंत्र जाप के बाद साधक सद्गुरु, महाकाली से साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना कर के सो जाए.

निश्चित ही साधना काल या फिर साधना के आखिरी दिन स्वप्न के मध्य मृतात्मा के दर्शन हो जाते है. तब उनकी तरफ से ही वार्तालाप शुरू होगा. यह मंत्र करते समय कई प्रकार की आवाजे सुनाई दे सकती है लेकिन इसमे भयभीत होने वाली कोई बात नहीं है, इस साधना मे किसीभी प्रकार का कोई नुकशान नही है, साधना खंडित होने पर भी साधक की कोई हानि नही होती.

****

Atama aavahan sadhana

Research is going on since long on spirits and Existence of spirits and in this scientific era so many people have remained progressive in this field of spirits and their existence and how to establish contact with those. Western countries are more concerned in this research field and there are so many results came up proving existence of immaterial existences. But this is just a first step of them in this field. Sages of our country made so many inventive researches on this subject and prepared many special methods to develop contact with spirits. Sadly, today, in our country research work of our great sages are termed as pretenses and counted as cheap stuff of non belief but then too common people's attraction to this subject has continued.

It is big mistake to understand death as end; it is just a halt for the next journey. Yet god himself tells in holy Gita that body is subject to deceasing but soul is infinite. This way, after death soul be out of the body and move to sukshma jagat and till the time it does not take re birth it stays in sukshma jagata, it is difficult to make exact summery of this time period. Many spirits stay curious to have their re birth and many of them think exact opposite of the same; not to take re birth. Few wait for desirable womb, few do not found them self in such conditions. It is also possible that after death in very short time spirit selects their womb and take second birth instantly or it is even possible that some spirit may don't have rebirth for centuries. This subject has many aspects which are really very deep in nature.

tarini- sadhana

अब आपको एक उच्च स्तरीय कवि बनने से कोई नहीं रोक सकता

जीवन के चार महत्वपूर्ण पुरुषार्थोमे काम का स्थान भी है लेकिन काम का अर्थ हमने अत्यधिक संकीर्ण कर दिया है. काम ही जन्म देता है सौंदर्य और आकर्षण को. काम का अर्थ सिर्फ शारीरिक धरातल पर ना रखते हुए उसे जब आत्मिक धरातल पर उतर कर अर्थघटन किया जाये तो ये समजा जा सकता है की सृष्टि की गतिशीलता इस पर ही निर्भर है. उस काम उर्जा से ही जन्म होता है कला का. वह कला जो की सौंदर्य और आकर्षण से युक्त होती है. काम के इसी पक्ष को समजने के लिए ही और विविधता युक्त उन कलाओ को आत्मसार करने के लिए भी तन्त्र मे विभिन्न साधनाओ का उल्लेख मिलता है.

चाहे वह नृत्य हो, संगीत हो, चित्रकला हो या कोई और हो. उदहारण के लिए नृत्य कला के लिए हमारी संकृति मे नटराज का उल्लेख बराबर होता आया है, उसी प्रकार सगीत के लिए वीणावादिनी और चित्रकला के लिए कार्तिकेय की उपासना भी प्रचलित है.विविध कलाओ के लिए विशिष्ट देवी देवताओ के सबंध मे कई प्रकार की साधनाओ का तांत्रिक ग्रंथो मे उल्लेख मिलता है.

इसी क्रम मे काव्यरचना भी एक महत्वपूर्ण कला है. अंदर के भावो को जागृत कर उनका विशेष वर्णात्मक शैली मे प्रस्फुटन करना हर व्यक्ति के लिए सहज बात नहीं है. काम भव के इस पक्ष को समजने के लिए भी तन्त्र मे कई प्रकार के वर्णन मिलते है. इसदिशा मे पूर्णनीलातन्त्र एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसमे एक पटल सिर्फ काव्यरचनाओ से सबंधित साधनाओ पर दिया गया है, मुख्यतः इसमे तारा देवी के २ स्वरुप का वर्णन मिलता है, नीलसरस्वती और तारिणी.

देवी का तारिणी स्वरुप अत्यधिक मोहक है जो की ज्यादा प्रकाश मे नहीं आया है, यह देवी काव्यरचना कला की मुख्य शक्ति है, प्राचीन काल मे देवी के इस स्वरुपकी साधना कविओ के मध्य प्रचलित रहती थि. लेकिन धीरे धीरे इसका प्रचलन कम होता गया क्यूँ की कामको और सौंदर्य को देखने का लोगो का नज़रिया ही बदल गया. तारिणी एक प्रचंड शक्ति है जो की सीधे मूलाधार पर घात कर के उसे स्पंदित करती है. जिससे साधक का नज़रिया ही बदल जाता है सभी चीजे देखने का. और देवी के आशीर्वाद से वह अपने इन भावो को काव्य के माध्यम से सहज ही मनोहर रूप मे सब के मध्य रख सकता है. इस प्रकार काम भाव के एक विशिष्ट अंग को समजने के लिए यह एक महत्वपूर्ण साधना है.

इस साधना को साधक किसी भी वार से शुरू कर सकते है. मंत्र जाप स्फटिक माला से हो. समय रात्रिकाल मे १० बजे के बाद का रहे. इसमे आसान व् वस्त्र सफ़ेद रहे. साधक को सर्व प्रथम गुरु मंत्र की एक माला कर के सद्गुरु से साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए

उसके बाद तारिणी देवी की मन ही मन सहस्त्रदल पर विराजमान अग्नि रूप कुण्डलिनी रूप मे ध्यान करना चाहिए

उसके बाद २१ माला तारिणी मंत्र की करे

ॐ ह्रीं स्त्रीं तारिणी फट्

जप के बाद देवी को ही मंत्रजाप समर्पित कर दे. यह क्रम आगे के २० दिन तक जारी रखने से यह साधना सिद्ध हो जाती है और साधक को काम का एक नया ही रूप देखने को मिलता है.

****

Bhagvati Tarini sadhana

Equal place stays for kama in four main aspects of the life but the meaning of kama what we take today has became very narrow from its original meaning. Kama is responsible for the birth of beauty and attraction.

Pitr aavahan sadhana

अपने किसी भी पितृ का आव्हान ऐसे करे

हमारे ग्रंथो मे और विशेष कर वेद और पुराण मे पितृ सबंधित विवेचना अत्यधिक मात्रा मे पाई जाती है. पितृ के देहावसान के बाद उनके मोक्ष के लिए कई प्रकार के विधान पाए जाते है. मोक्ष का अर्थ यहाँ है की वह अपनी इच्छा और वासना जो की माया को जन्म देती है उससे परे हट कर सृष्टि की संरचना को समजे और मुक्तभाव से अपनी गति परमात्मा की तरफ आगे बढ़ाये. लेकिन यह मनुष्य का अपने पितृओ की तरफ यह कर्तव्य आखिर क्यों होता है? सृष्टि मे मनुष्य की गतिशीलता वीर्य है और मैथुन उसको गतिशीलता देता है. हमारा स्थूल शरीर भी उसी बीज से बनता है. उसी बीज से मानव के विभिन्न सबंधो का निर्माण होता है. पूर्वजो के मुख्य बिज से गतिशीलता आगे बढ़के वही बीज दूसरे शरीर का निर्माण करते हुए हमारा निर्माण करती है. वह मुख्यबिज और उनसहयोगी बीजो के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना इसी लिए हमारा कर्तव्य है.

इतरयोनी को प्राप्त होने के बाद भी उनका बीज गतिशील रहता ही है, इस प्रकार हमारे सभी पूर्वजो के प्रति हमारा समर्पण सामान रूप से हो. और सृष्टि की इसी संरचना के लिए व्यक्ति के लिए यह ज़रुरी होता है की वह अपने पितृ के प्रति आदर भव स्थापित करते हुए उनके मोक्ष के लिए प्रार्थना करे. इस के लिए बहोत ही विधान वेदों मे तथा तन्त्र मे बताए गए है. लेकिन जटिल विधि विधानों मे ना पड़ते हुए, सरल विधान को यहाँ दिया जा रहा है जिससे की सर्व इतरयोनी गत पितृ है उनको मोक्ष की प्राप्ति हो और उनकी कृपा सदैव बनी रहे. यह विधान को खुद ही किया जाता है इस द्रष्टि मे इसका महत्व और बढ़ जाता है और पितृ प्रसन्न रहते है. यह विधान पितृ पक्ष के दिनों मे करना उत्तम रहता है, पितृ पक्ष मे जितने दिन हो सके उतने दिन यह विधान करना चाहिए. यु साधक इसे किसी रविवार को भी कर सकता है.

साधक सभी आवश्यक सामग्री को पहले ही अपने पास रखले बिच मे उठाना नहीं चाहिए. साधक को सुबह स्नान कर के अपने सामने बाजोट पर एक चावल की ढेरी बनानी चाहिए जिस पर शुद्ध घी का दीपक रखे और प्रज्वल्लित करे. इसके बाद अपने सामने गणेश की किसी भी प्रकार की मूर्ति रखे, संभव हो तो साथ ही साथ शालिग्राम को भी रखे. उन दोनों का सामान्य पूजन करे और आशीर्वाद ले.

इसके बाद साधक अपने इतरयोनी गत सर्व पितृ का आवाहन निम्न मंत्र से करे इस बिच घंटी या थाली को बजाते रहना चाहिए.

ॐ पीठपितृ गौत्रपितृ सर्वपितृ आवाहयामि नमः

इस मंत्र को ११ बार जपे

इसके बाद सर्व पितृ को नमस्कार कर गणेश की प्रतिमा पर एक बार फिरसे पितृओ का पूजन करे. खीर का भोग लगाये साथ ही साथ जल भी रखे.

इसके बाद एक बड़े से पात्र मे जल ले, निम्न मंत्र को बोलते हुए उसमे अबिल और गुलाल को मिलाये

ॐ सर्वपितृ मोक्ष प्रदाता विध्न विनाशक नमो नमः

अब अपने हाथ मे दुर्वा को ले. पानी की अंजुली भरते हुए उसे गणपति पर निम्न मंत्र बोलते हुए चड़ाये

ॐ सर्वपितृ प्रेत मोक्षं प्रदोमभवः

इस प्रकार १०८ बार मंत्र बोलते हुए जल का अभिषेक करे.

इसके बाद सर्व पितृ से आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करे और क्षमा याचना करते हुए गणेश की आरती कर विसर्जन करे. भोग की खीर को किसी गाय को खिला दे. पानी को भी तुलसी मे विसर्जित कर दे. इस विधान से पितृ प्रसन्न होते है और जीवन मे पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है.

Krodh - bhairav

जिस एक साधना से सभी इतर योनी स्वयं ही सहयोग देती हैं

जिव की अवस्था २ प्रकार से गतिशील रहती है, एक योनिज और दूसरा अयोनिज. उसका सामान्य अर्थ यह लगाया जाता है की जिसका जन्म योनी से हुआ हो वह योनिज है और जो अजर है वह अयोनिज लेकिन इनके गुढ़ अर्थ है. अयोनिज का अर्थ है स्थायी, जो की परिवर्तन के नियमों से बंधा नही है, काल खंड का उसपर कोई असर नहीं है. योनिज का अर्थ है रूपांतरणशील जो की सृष्टि के नियमों से आबद्ध है. इसी लिए आत्मा अयोनिज है और अमर है, लेकिन शरीर नाशवंत है, इसी क्रम मे मनुष्य योनी के अलावा कई प्रकार की इतरयोनी होती है.

तांत्रिक साधनाओ मे इतरयोनी का विशेष स्थान है और इतरयोनीओ से साधनाओ के माध्यम से सहयोग प्राप्त किया जा सकता है, मनुष्य शरीर और उनके शरीर मे पंचतत्व के प्रमाण मे बदलाव के कारण उनमे और मनुष्य मे भेद होते है, और यह भेद शारीरिक अवस्था के साथ ही साथ शक्ति संचार के नियंत्रण पर भी असर करता है. यूँ, इतरयोनी के क्रम मे भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस इत्यादि मनुष्य से ज्यादा समर्थ एवं जागृत शक्ति के धनि होते है.

तन्त्र मे इन इतरयोनी की साधनाओ के द्वारा उन्हें सिद्ध कर सहयोगी रूप मे कार्य करवाने के लिए कई प्रकार के विधान है, इसमें स्मशानिक क्रियाओ से लेके उग्र विधान भी शामिल है. हिम्मत एवं साहस के धनि व्यक्ति इस प्रकार की साधनाए करते है लेकिन सभी साधको के लिए इस प्रकार के विधान संभव नही है. सामान्य गृहस्थ साधको के लिए भी यह असंभव ना सही लेकिन कठिन तो है. सदगुरुदेव ने इन साधनाओ के सरल विधान कई बार साधको के मध्य रखे है सिद्ध किए गए इतरयोनीसे कई प्रकार के कार्य करवाया जा सकता है. साथ ही साथ वह अद्रश्य रूप मे भी सहयोग देता रहता है.

भैरव के बारे मे क्या कहा जाए, इनका नाम सुनते ही सब इतरयोनी काँप जाती है. भैरव के कई भेद है जिनमे से एक है क्रोध भैरव. क्रोध भैरव भूत, प्रेत पिशाच सब के आराध्य है, और सब भैरव के साधको से दूर ही रहते है. भैरव साधना के भी प्रकार है जिसमे मुख्य रूप से उग्र साधनाओ का ही प्रचालन रहा है. लेकिन इनकी कुछ साधनाए एसी है जिसे साधक अपने नित्य विधि विधान मे कर सकता है, इसके लिए कोई विशेष क्रम अपनाने की ज़रूरत नहीं है और वे साधनाए घर मे भी सम्प्पन की जा सकती है कोई ज़रूरत नहीं की उसे स्मशान मे जा कर ही सम्प्पन किया जाए

क्रोध भैरव की यह साधना मे साधक को यह लाभ प्राप्त होता है की इतरयोनी का प्रभाव साधक पर नहीं पड़ता, वरन होता तो यूँ है की आसपास की सभी इतरयोनी साधक को अद्रश्य रूप मे ही, जितना हो सके सहयोग प्रदान करती रहती है और साधक को स्वतः ही अपनी समस्याओ से मुक्ति के लिए रस्ते मिलते जाते है. जो साधक विशेष इतरयोनी से सबंधित साधनाए ना कर सके उनके लिए यह साधना अत्यधिक महत्वपूर्ण है.

इस साधना को मंगलवार रात्रि के ११ बजे बाद शुरू करे

वस्त्र और आसान लाल रहे दिशा दक्षिण.

अपने सामने गुग्गल का धुप जलाये और तेल का दीपक लगा कर भैरव को प्रसाद के रूप मे कुछ मीठी चीज़ चड़ाये

इसके बाद साधक इस मंत्र की २१ माला मूंगा माला से जाप सम्पान करे

ॐ क्रोध भैरवे भ्रं सर्व इतरयोनिर् वश्यमे नमः

इसके बाद साधक प्रसाद को खुद ग्रहण करे और सो जाए. यह क्रम अगले २० दिनों तक चलता रहे. २१ दिन की साधना काल मे अगर कोई आवाज़ सुनाई दे या कोई द्रश्य दिखाई दे तो विचलित न हो के मंत्र जाप चालू रखना चाहिए, यह साधना मे सफलता के ही लक्षण है.

Shakti - rahsyam

अद्भुत रहस्य जो कभी प्रकाश में नहीं आये , सिर्फ आपके लिए अब

साधना जगत की अद्भुत शक्तियों की खोज में ना जाने किन किन साधकों से मेरी मुलाकात हुयी....पर ये भी एक सबसे बड़ा सत्य रहा है की,जिस दिन से सदगुरुदेव ने मेरा हाथ अपने हाथों में पकड़ा था.... बस प्रति क्षण अभय और निश्चिन्तता ही अनुभव होती थी..... हर पर अनोखा सुकून मानों आत्मा को महसूस होता रहता था. जिस भी जिज्ञासा की मन के जल में उत्पत्ति होती...उसी क्षण जैसे वो हौले से उसे शांत कर के ये अहसास दे देते कि "अरे तू तो मेरा ही है,इतना व्यथित क्यूँ होता है.... याद रख जब भी तेरे मन को कोई प्रश्न अपनी चुभन से व्यथित करेगी....तब तब मैं उसका समाधान उसी मन से निचोड़ कर निकाल कर तुझे दे दूँगा....

उसी मन से जहाँ मैं चिरकाल से सदा सदा के लिए अपने प्रत्येक शिष्य के ह्रदय में विराजमान हूँ.और ऐसा आजन्म होगा और प्रत्येक शिष्य के लिए होगा...यह निखिल वाणी है"

बस तबसे कोई चिंता ही नहीं रही मन में .

जब भी मेरे मन के सरोवर में कही से जिज्ञासा का पत्थर गिरता और उसमे लहरे उत्पन्न होती या मन कि शांति भंग होती...तब तब सदगुरुदेव अपनी अमृतवाणी से या तो स्वयं या फिर उनका कोई ज्ञानांश सन्यासी या गृहस्थ शिष्य आगे बढ़ कर उन तरंगित लहरों को अपने उत्तरों से शांत कर देता .और एक बात मैं आपको जरुर बता देना चाहता हूँ कि जब भी किसी ज्ञान कि चाह में मैं कही गया तो उस साधक का व्यव्हार मेरे लिए पूर्ण अनुकूल रहा है और उसने ये अवश्य कर स्वीकार कि उसे पहले ही बता दिया गया था कि यहाँ तुम्हारा आना सदगुरुदेव ने पूर्वनियोजित किया हुआ था .और ऐसा प्रत्येक शिष्य के लिए उन्होंने निर्धारित किया हुआ है...किसे कब देना है ,क्या देना है....ये पहले से उन्होंने तय कर दिया है .

यात्रा के उसी काल में मेरी मुलाकात सदगुरुदेव के **पूर्ण शाक्त शिष्य कौल मणि शिवयोगत्रयांनद** से मुलाकात हुयी . सदगुरुदेव कि आज्ञा से उन्होंने विंध्यवासिनी के परम पावन पीठ को अपनी साधनाओं के लिए चुना था . वो उसी पर्वत कि एक अत्यधिक गुप्त गुफा में आज भी साधनारत हैं . और उसी गुफा में मेरी उनसे मुलाकात हुयी और दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ .

थोड़े ही समय बाद मैंने मानो प्रश्नों कि बौछार कर दी थी उन पर ,और वो उतने ही शांत भाव से मंद स्मित होकर मुझे उत्तर देते रहे और रहस्यों कि नवीन परतों को उधेड़ते रहे .(उन्होंने सैकडो प्रश्नों के उत्तर दिए थे,परन्तु इस विशेषांक में विषय वस्तु पर आधारित जो प्रश्न हैं ,मैं मात्र उनमे से कुछ को ही यहाँ दे रहा हूँ...जिससे विषय को समझना अपेक्षाकृत आसान रहेगा)

शक्ति क्या है,इसके कितने रूप होते हैं ???

सरल शब्दों में यही कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण ब्रम्हांड मात्र जिसकी कल्पना से साकार हो गया हो और जिसके प्रभाव से प्रकृति सृजन, पालन और संहार कर्म में जुटी हुयी हो ,उसी चिन्मयी परात्पर ज्योति को शक्ति कहा जाता है . ये किसी भी रूप में हो सकती है. इसका प्रभाव सभी पर होता है फिर चाहे वो चेतन हो या अचेतन.प्रकट रूप में हम जिन्हें शक्ति देने का उर्जा देने का या फिर बल देने का स्रोत मानते हो,वे सभी भी इसी परा शक्ति से ही शक्ति प्राप्त करते हैं .ये परा शक्ति स्थूल, सूक्ष्म या किसी भी रूप में हो सकती है .

ये सभी प्राणियों में विद्यमान है , इसी के कारण हम सृजन तथा अन्य कर्म सम्पादित कर पाते हैं. और विचारों की उत्पत्ति का मूल भी यही शक्ति है .

इसके कितने प्रकार होते हैं ?

भावगत्ता के आधार पर गुणों की तीन ही स्थितियां होती हैं-

सत्

रज

तम

ठीक इन्ही गुणों के आधार पर तीन क्रियाएँ सृजन ,पोषण और विध्वंश होती है . और इन क्रियाओं को शक्ति के तीन आधारभूत शक्तिमान(जिनके द्वारा शक्ति अपने कार्यों को सम्पादित करती हैं) संपन्न करते हैं . याद रखने योग्य तथ्य ये है की जिस प्रकार गुणों के तीन प्रकार होते हैं, ठीक उसी प्रकार इन गुणों की अधिष्ठात्री तीन मूल अधिष्ठात्री शक्तियां होती हैं.

महाकाली – तम

महालक्ष्मी – रज

महासरस्वती – सत्

ऊपर जब बात मैंने शक्तिमानों की कही तो उसका अर्थ यही होता है की शक्ति तथा शक्तिमानों में कोई भेद नहीं होता है , ये एक दुसरे से प्रथक नहीं किये जा सकते है, शक्तिमान इन्ही शक्तियों की प्रेरणा से अपने अपने कार्यों का सञ्चालन करते हैं. जैसे महाकाल शिव संहार का, विष्णु पालन का और ब्रम्हा सृष्टि के सृजन का. एक प्रकार से ये समझ लो की सृष्टि का कोई भी कार्य या कण निरर्थक नहीं है. प्रत्येक क्रिया या व्याप्त प्रत्येक कण पूर्ण शक्ति युक्त होता है.

शक्ति की व्याख्या के क्रम में ये भी समझना अत्यधिक उपयोगी होगा की मानव अपना विकास कर देव स्तर तक पहुच सकता है और अपने अभीष्ट को प्राप्त करता हुआ अपने अस्तित्व को सार्थक कर सकता है. और ये स्थितियां तभी साध्य हो पाती है जब आप परिष्कृत रूप से निम्न सात शक्तियों को सदा सर्वदा के लिए पूर्ण संकल्पित होकर अपना व्यक्तित्व बना लेते हो. और यदि पूर्णता के साथ निम्न सात शक्तियां आपको परिष्कृत अवस्था में प्राप्त हो गयी तो कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता है .

प्रज्ञा शक्ति

चेतना शक्ति

वाक् शक्ति

क्रिया शक्ति

विचार शक्ति

इच्छा शक्ति

संकल्प शक्ति

ये उपरोक्त तीनों मूल शक्तियों के ही परिवर्तित रूप है.

क्या इनके अतिरिक्त कोई और शक्ति नहीं है जिसकी अनिवार्यता मानव जीवन में प्रकृति द्वारा नियोजित की गयी हो ????

है क्यों नहीं.... काम शक्ति की अनिवार्यता सर्वोपरि है . जीवन में परिपूर्णता काम भाव से ही आती है. सृजन के मूल में यही भाव विद्यमान है तभी तो वेद भी काम को देवता कहते हैं . काम का मूल गुण आकर्षण है ... जो विद्वान होते हैं वे काम को इच्छा शक्ति का ही पर्याय मानते हैं . तंत्र तो यहाँ तक कहता है की सृष्टि में जितने भी प्रकार की ऐषणायें हैं,उनके मूल में यही काम शक्ति ही है. इस लिए ये सम्पूर्ण विश्व उसी परमशक्ति की इच्छा या काम भाव का ही विस्तार कहलाती है.

जीवन के सारे चैत ,सामाजिक और वैषयिक नियमों के मूल में काम भाव ही होता है.

परमात्मा से लेकर आत्मा तक के जितने भी सम्बन्ध होते हैं वे सब आकर्षण,काम और मैथुन(योग) से ही युक्त होते हैं. किसी भी प्रकार की परिस्थिति में किसी भी प्रकार के सम्भोग में फिर वो चाहे आत्मिक हो या बाह्यगत, वो आदिशक्ति ही काम शक्ति के रूप में परिणत होती है कार्य करती है.

भला ये कैसे माना जाये की सभी कार्यों के पीछे यही कामशक्ति कार्य करती है... सृजन तो समझ में आता है की इसी काम भाव से उत्प्रेरित है,परन्तु भला संहार से इस काम भाव का क्या लेना देना???

इसे ऐसा समझा जा सकता है की यदि आप किसी के आकर्षण में बांध जाते हैं और आगे जाकर प्रेम करने लगते हैं तब भी तो आप एक समय बाद उसकी अपने से प्रथकता सहन नहीं कर पाते हैं तब आप क्या करते हैं... उसे आत्म एकाकार करने की कोशिश करते हैं . ऐसे में या तो आप उसमे विलीन होने की चेष्टा करते हैं या उसे अपने में मिलाने की. भूख समाप्त करने की आपकी लालसा या इच्छा भोजन के प्रति आपको आकर्षित करती है... अब ऐसे में उस भोजन का जो थोड़ी देर पहले तक अपना अलग अस्तित्व था...

आपके भोजन के प्रति आकर्षण के कारण,उस भोजन की सत्ता का ही अंत कर देता है. ये नियम प्रत्येक प्राणी पर समानान्तर रूप से कार्य करता है. परमात्मा से ही अंश प्राप्त कर आत्मा मनुष्य शरीर धारण करती है इस क्रम में मनुष्य जन्म लेता है, जीवन के सुखों का उपभोग करता है और आखिर में एक समय बाद मृत्यु उसका वरण कर उस आत्मा को पुनः परमात्मा की तरफ गतिशील कर देती है तो क्या इसके मूल में परमात्मा की काम शक्ति कार्य नहीं करती है जो की वो अपने अंश का विलीनीकरण अपने में कर के संपन्न करता है. क्या यहाँ पर सृजन हुआ ..... नहीं ना..... लेकिन लौकिक दृष्टि से ये संहार भी सृजन की तरफ एक कदम ही तो है.

आप किसी से जब प्रेम करने लगते हैं तो तीव्र आकर्षण के कारण उससे सम्भोग करने की तीव्र लालसा को आप क्या कहेंगे ..... क्या वो मात्र इन्द्रिय लोलुपता है ,नहीं... उसके मूल में भी आपकी अपने प्रेम या अभीष्ट से प्रथक ना रह पाने की चरम लालसा ही तो है जो की उसके अस्तित्व का योग अपने अस्तित्व से करवाने के लिए उत्पन्न होती है. तब वह दो हो ही नहीं सकते ..... रह जाते हैं तो मात्र एक ही. ये अलग बात है की एक साधक ,एक शिष्य ,एक योगी इस भेद को आत्म एकाकार क्रम अपना कर दूर करता है और सामान्य अवस्था में सामान्य मनुष्य शरीर का योग कराकर. परन्तु तंत्र शरीर से ऊपर उठ कर आत्म योग की बात करता है इसी काम शक्ति का सहयोग लेकर. इस प्रकार ये काम शक्ति उसी आदिशक्ति का ही तो रूप होती है जिसके वशीभूत होकर वो तम,रज और सत् गुणों का पालन भिन्न भिन्न रूप में करती है.

तांत्रिक दृष्टि से तम,रज और सत् गुणों की अधिष्ठात्री शक्ति महाकाली,महालक्ष्मी और महा सरस्वती को ही क्यूँ माना जाता है,क्या ऐसा नहीं हो सकता है की महालक्ष्मी रज के बजाय तम गुणों का प्रतिनिधित्व करे ???

नहीं ऐसा नहीं हो सकता है... सृष्टि के आरंभ में जब सृजन भी नहीं होता है,पालन भी नहीं होता है.तब ऐसे में मात्र पूर्ण अन्धकार ही होता है ...जब मात्र महानिद्रा की उपस्थिति ही अपने पूर्ण साकार या निराकार रूप में होती है.और ये तम तत्व ही महाकाल है...जिसके अधीनस्थ काल भी सदा भयभीत रहता है . एक बात उल्लेखनीय है की शरीर का विसर्जन काल के द्वारा सम्पादित होता है और आत्मा पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, आत्मा सदैव काल से परे रहकर मात्र महाकाल द्वारा ही तिरोहित होती है.

उसी महाकाल की शक्ति है महाकाली, जो संहार भाव की प्रणेता है . ये शक्ति प्रलयनिशा के मध्य काल से सम्बन्ध रखती है ,इसी की उपस्थिति से ये संसार शिववत बनकर साकार है , जैसे ही इनका लोप होता है ,शिव को शव बनने में एक क्षण नहीं लगता है,चूँकि ये प्रलयनिशा अर्थात रात्रि से सम्बंधित हैं और है इनका सम्बन्ध मध्य काल से तब ऐसे में ये जहा तम को दर्शाती हैं वही ये संक्रांत रूप में अपने अंदर रज अर्थात पालन-पोषण और सत् अर्थात सृजन के गुणों को भी रखती हैं. परन्तु महालक्ष्मी तम भाव से प्रेरित नहीं है और न ही महा सरस्वती ही रज से सम्बंधित हैं. इसलिए संहार का गुण तो कदापि इनमे नहीं हो सकता है. हाँ ये अलग बात है की महाविद्या रूप में ये जब अपना योग तम से कर लेती हैं तो ये संहार भी कर सकती हैं.

आपने महाविद्याओं की बात कही है ,तो क्या सारी महाविद्याएं इन्ही तीन मूल शक्तियों का रूप होती हैं,क्या पंचमहाभूत तत्वों से इनका कोई लेना देना नहीं होता है ????

नहीं ऐसा नहीं है ,जब हम आदि शक्ति की बात करते हैं तो उसका अर्थ बहुत विराट होता है,आदि शक्ति से मेरा मतलब **राजराजेश्वरी षोडशी त्रिपुर सुंदरी** से है, उन्ही के तीन गुणों की अधिष्ठात्री वे तीनों महा शक्ति हैं. वैसे श्रीकुल की मूल महा विद्या षोडशी त्रिपुर सुन्दरी को माना जाता है. परन्तु उनका मंत्र और यन्त्र महाविद्या रूप में भिन्न ही होता है ,और जब वे आदि पराशक्ति राज राजेश्वरी होती हैं तो उनका मूल **यन्त्र श्री चक्र या श्री यंत्र** ही होता है जो की इस ब्रम्हांडीय रूप का ज्यामितीय रूप प्रदर्शित करता है,ऐसा रूप जो अकल्पनीय शक्तियों को प्रदर्शित करता हो.

रही बात पंचमहाभूतों की तो प्रत्येक तत्व २ महाविद्याओं का प्रतिनिधि है ,और इस प्रकार ५x २=१० होते हैं, इसमें भी ध्यान रखने वाली बात ये है की प्रत्येक तत्व के दो गुण होते हैं .

उष्ण

शीत

इसी प्रकार प्रत्येक तत्व की दो महाविद्याओं में से एक महाविद्या उग्र भाव से युक्त होती हैं और दूसरी शांत प्रकृति से युक्त होंगी. जिस प्रकार उस पराशक्ति की शक्ति से ही सूर्य और चन्द्र दोनों प्रकाशित होते हैं, और सूर्य जहा उष्णता देता है वहीं चंद्रमा शीतलता देता है.लेकिन कितने आश्चर्य की बात है की **सूर्य की उष्णता जहाँ मानव में ताप,तेज और तीव्रता लाती है, आत्मकेंद्रित होने के लिए हमें प्रेरित करती है,वही, चंद्रमा की शीतलता और प्रकाश हमारे मन को आह्लादित और काम भाव की तीव्रता से युक्त** कर देती है.

जीवन के प्रत्येक कर्म की अधिष्ठात्री कोई ना कोई विशेष शक्ति होती है.तंत्र में जितनी भी क्रियाएँ होती हैं वे सभी किसी खास शक्ति के अंतर्गत ही आती हैं,यही कारण है की बहुधा लोगो को जब इन कर्मों की अधिष्ठात्री शक्ति का ही ज्ञान नहीं होता है तो भला उनके द्वारा किये गए तांत्रिक कर्म कैसे सफल हो सकते हैं . अज्ञानतावश किया गया कैसा भी सरल से सरल प्रयोग इसी कारण सफल नहीं हो पाता है . इसलिए यदि क्रिया से सम्बंधित शक्ति का ज्ञान हो जाये तो ज्यादा उचित होता है.... जैसे –

वशीकरण – वाणी

स्तम्भन – रमा

विद्वेषण – ज्येष्ठा

उच्चाटन – दुर्गा

मारण – चंडी या काली

के अंतर्गत आते हैं . इसी प्रकार तंत्र और उससे जुडी प्रत्येक क्रिया का यदि विधिवत प्रयोग किया जाये तो क्रिया से सम्बन्धी शक्ति पूर्ण सिद्धि देती ही है.

भला वो कैसे संभव है ?? क्यूंकि महाविद्या इत्यादि क्रम तो अत्यंत जटिल कहे गए हैं कोई बिरला ही इसमें सफलता पा सकता है, ठीक इसी प्रकार मैंने ये भी सुना है की दुर्गा सप्तशती एक तांत्रिक ग्रन्थ है, और मैंने ये भी सुना है की यदि सही तरीके से इसका पथ या प्रयोग किया जाये तो शक्ति के प्रत्यक्ष दर्शन संभव होते ही हैं, और वह कौन सी मूल क्रिया है जो सरल और सहज भाव से जीवन के चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति करवाती ही है??

देखो ये तो सही है की महाविद्या को पूर्णता के साथ सिद्ध कर लेना एक अलग बात है परन्तु , बहुत बार साधक अपने जीवन की सामान्य से परेशानियों या कार्यों के लिए सीधे ही इन महाविद्याओं का प्रयोग करने लगता है , जो की उचित नहीं कहा जा सकता है ,क्यूंकि ऐसी स्थिति के लिए तो आप जिस महाविद्या का मन्त्र जप करते हैं हैं या जिसे वर्षों से कर रहे हैं , यदि मात्र उनके मन्त्र का विखंडन रहस्य समझ कर मन्त्र के उस भाग का ही प्रयोग किया जाये तब भी आप को समबन्धित समस्या का निश्चित समाधान मिलेगा ही. जैसे मान लीजिए कोई साधक भगवती तारा की उपासना कर रहा है और उसके परिवार के किसी सदस्य को स्वास्थ्य सम्बन्धी जटिल बीमारी हो गयी हो .... तब इसके लिए मूल मंत्र की दीर्घ साधना के बजाय उस मन्त्र या स्तुति के एक विशेष भाग का प्रयोग भी अनुकूलता दिला देता है .... **'तारां तार-परां देवीं तारकेश्वर-पूजितां, तारिणीं भव पाथोधेरुग्रतारां भजाम्यहम् . स्त्रीं ह्रीं हूं फट्'** - मन्त्र से जल को अभिमंत्रित कर उससे नित्य रोगी का अभिषेक करे, तो उसके रोगों की समाप्ति होती है.

' **'** मन्त्र से १००८ बार अभिमंत्रित कर अक्षत फेकने से रूठी हुयी प्रेमिका या पत्नी वापिस आती है .

'हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हंसः' मन्त्र से अभिमंत्रित काजल का तिलक लगाने से कार्यालय,व्यवसाय और अन्य लोगो को साधक मोहित करता ही है.

वस्तुतः मूल साधना से सिद्धि पाने में बहुत सी बातों का ध्यान रखना पड़ता है . जिनके सहयोग से ही उस महाविद्या साधना में सिद्धि मिलती है. यथा **शरीर स्थापन** इत्यादि. और एक निश्चित जीवन चर्या को भी अपनाना पड़ता है .तभी सफलता प्राप्ति होती है ,अन्यथा ये साधनाए तो साधक का तेल निचोड़ देती हैं ,इतनी विपरीतता बन जाती है साधक के जीवन में की वो इन साधनाओं को सिद्ध करने का संकल्प ही मध्य में छोड़ देता है .

रही बात दुर्गा सप्तशती की तो हाँ ,निश्चय ही ये सांगोपांग तंत्र का बेजोड ग्रन्थ है और इसके माध्यम से देवी के समन्वित और भिन्न भिन्न तीनों रूप के दर्शन किये जा सकते हैं,बस उनके लिए निश्चित विधि का प्रयोग करना पड़ता है . यदि इसके लिए **भगवती राज राजेश्वरी** की साधना कर ली जाये तो **सोने पर सुहागे** वाली बात हो जाती है . एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिए की मन्त्र ,उस मन्त्र की इष्ट शक्ति और साधक ये तीनों साधना काल में एकात्म ही होते हैं ,यदि साधक इसमें अंतर लाता है तो उसे सफलता नहीं मिल सकती है . प्रत्येक साधना में **सद्गुरु की प्रसन्नता आपको सफलता दिलाती है , इसलिए हमें सदा सर्वदा ऐसे कृत्य ही करना चाहिए , जिससे उन्हें प्रसन्नता का अनुभव हो. जब एक सामान्य व्यक्ति भी प्रसन्न होकर हमरे कार्यों को सरल कर देता है तब ऐसे में ब्रम्हांडीय विराटता लिए हुए सदगुरुदेव के प्रसन्नता हमें क्या कुछ प्रदान नहीं कर सकती है.**

शक्ति प्राप्ति की मूल साधनाएं कौन कौन सी हैं ,जिन्हें संपन्न कर साधक सक्षमता को प्राप्त कर अभीष्ट को पा लेता है ???

शक्ति की किसी भी रूप में साधना की जा सकती है, फिर वो चाहे पुरुष रूप में हो या स्त्री रूप में ,उससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्यूंकि लिंग बदल जाने से शक्ति का मूल स्रोत नहीं बदल जाता है.इसलिए मन में ये भाव कभी नहीं रखना चाहिए की ये पुरुष देव की साधना है तो इससे शक्ति की प्राप्ति नहीं होगी या ये स्त्री देवता की साधना है तो इससे ज्यादा शक्ति की प्राप्ति होगी. चाहे वो पुरुष देवता हो या स्त्री देवता, ऐसा नहीं है बहुत कम लोग होंगे जिन्हें ये पता होगा की **शुक्र अर्थात काम शक्ति की बिंदु साधना की मूल शक्ति काल भैरव होते हैंजिनके तांत्रिक क्रम को अपनाकर कोई भी अद्भुत यौवन को प्राप्त कर सकता है और पा सकता है पूर्ण स्त्रीत्व या पूर्ण पौरूषत्व**. और काल भैरव की शक्ति की प्राप्ति का उनका मूल स्रोत वो आदि शक्ति ही तो होगी,जिसे निखिल शक्ति या राज राजेश्वरी कहा जाता है. सैकडो साधनाओं में से कुछ सरल मगर तीक्ष्ण प्रभाव से युक्त साधनाएं निम्न अनुसार हैं ,जो की साधक के जीवन को अपनी जगमगाहट से भर देती हैं और उसकी अपूर्णता को पूर्णता में परिवर्तित कर देती हैं.

धूमावती कल्प साधना- ज्ञात,अज्ञात शत्रुओं पर विजय प्राप्ति की अद्भुत व सरल साधना

सप्त ऋषि पूंजीभूत तत्व शक्ति साधना- सूर्य विज्ञानं और काल दर्शन की अद्भुत साधना

माया शक्ति साधना – अद्भुत आकर्षण क्षमता प्राप्त कर मनोरथ पूर्ण करने का रहस्य

तीव्र कामेश्वरी चन्द्र शक्ति साधना – सौंदर्य पाने का अनूठा प्रयोग

बगलामुखी शरीर स्थापन तीव्र प्रयोग- इस प्रयोग के बाद संभव हो जाते है माँ के प्रत्यक्ष दर्शन

प्रत्यक्ष प्रेत शक्ति साधना- प्रेत शक्ति द्वारा मनोकामना पूर्ती का सरल प्रयोग

त्रयी नवार्ण साधना- तीन अलग अलग शक्तियों के नवार्ण मंत्र ,उन्हें प्रत्यक्ष करने हेतु

Shakti rahaShyam (Secret of power) –

In the search of amaizing powers of sadhana world, I met with so many sadhaka…but this is the biggest fact that the day when sadgurudev hold my hand in his hand… at the very same moment I started feeling no worries and state of Insouciance at every moment… every moment it was a peace which my soul was feeling. Any doubt arise in the mind…at the very next moment he used to vanish it by this way “ you are mine, why are you so much of Distressed…remember, whenever any of the question will trouble you, at that time I will give you by extracting your same mind, from the mind which is the source of my place in the heart of the disciples for and from infinite time duration, this will continue for whole life and will happen for every disciple this are my words.”

बगलामुखी शरीर स्थापन साधना

Bagulamukhi sharer sthapan sadhana

दुर्लभ विधान जो आपके सामने पहली बार आ रहा हैं

मनुष्य के शरीर से एक प्राणसूत्र निकलता है,जिसे हम **अथर्व** के नाम से जानते हैं ,चूँकि ये प्राणसूत्र प्राण रूप में होता है,इसलिए लौकिक रूप से इसे देख पाने में हमारी स्थूल दृष्टि असमर्थ रहती है जिस परोक्ष शक्ति की वजह से हमारा मन हमारे किसी आत्मीय के दुःख से दूर रहकर भी परिचित हो जाता है, उसी शक्ति को हम अथर्वा सूत्र के नाम से जानते हैं. इस शक्ति सूत्र में आकर्षण का प्रबलतम गुण होता है,ये हजारों मील दूर से भी किसी को तत्क्षण आकर्षित कर लेता है.

प्रत्येक प्राणी के शरीर का अथर्वा सूत्र भिन्न ही होता है. जिसमे उसकी अपनी प्राण शक्ति होती है, यथा किसी भी व्यक्ति विशेष के नाखून,बाल,वस्त्र आदि में उसकी प्राण शक्ति सदैव प्रतिष्ठित रहती है. और योग्य साधक इसके माध्यम से

अपना अभीष्ट साध लेते हैं. इसी कारण कहा जाता है की अपने कपडे, नाख़ून और केश इधर उधर नहीं फेकना चाहिए. इनका कोई भी दुरूपयोग कर सकता है.

यही अथर्व शक्ति 'बगलामुखी' के नाम से साधक समाज में प्रचलित है. और इनकी साधना दुसाध्य भी होती है. और सत्य भी है, जिस प्राण शक्ति के कारण सम्पूर्ण विश्व ब्रम्हांड में टिका हुआ है ,वो इतनी आसानी से तो कभी सिद्ध नहीं हो सकती है. बहुतेरे साधक जन्म जन्मांतर तक इनकी साधना करते रहते हैं ,परन्तु इनके रहस्यों का उचित ज्ञान न होने के कारण वो इनकी शक्तियों की उचित प्राप्ति नहीं कर पाते हैं. इनकी साधना में **"ॐ एकवक्त्र महारुद्राय नमः"** मंत्र का महत्वपूर्ण योगदान होता है. एकवक्त्र महारुद्र शिव इनके भैरव हैं ,और ये तो सभी महाविद्याओं का सिद्ध करने का आधारभूत नियम है की, महाविद्या की सिद्धि उनके भैरव को सिद्ध करे बगैर हो ही नहीं सकती.

तत्पश्चात बगलामुखी का शरीर में स्थापन अनिवार्य होता है, बिना देह स्थापन के इनकी सिद्धि हो ही नहीं सकती.

इस साधना के लिए कोई भी दो विकल्प आप चयनित कर सकते हैं .पहला आप चने की दाल से बगलामुखी यन्त्र का निर्माण कर के उस पर स्वर्णमयी बगलामुखी की प्रतिमा का स्थापन कर ले या फिर बाजोट पर **"पीताम्बरा शक्ति चालन पारद गुटिका"** का स्थापन कर ले , ये विशुद्ध पारद से बनी हुयी अग्नि स्थायी हलके लाल रंग की होती है और इसकी चमक साधना के साथ साथ बढते ही चली जाती है जो की इस बात का प्रमाण होती है की आपका अथर्वा सूत्र तीव्रता से जाग्रत और चैतन्य हो रहा है. आप अपनी सुविधानुसार कोई भी विकल्प का चयन कर सकते हैं.

शनिवार की मध्यरात्रि को अपने सामने कोई भी विकल्प का बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर स्थापन करके, पीले वस्त्र धारण करके,तथा दीपक में भी केसर डाल दे तथा बत्ती को भी हल्दी से रंग कर सुखा ले.आसन पीला होना चाहिए. सदगुरुदेव तथा गणपति का पूजन संपन्न कर ले.

तत्पश्चात **"ह्लीं"** बीज मंत्र से निम्न स्थानों पर माँ का स्थापन करे.

यथा –

ह्लीं मूल आत्म-तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – मूलाधारे

ह्लीं विद्या -तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – हृदये

ह्लीं शिव -तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – शिरसि

ह्लीं सर्व-तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – सर्वांगे

तत्पश्चात निम्न मंत्र से उनका विशेष ध्यान करें,ये ध्यान मंत्र ३६ बार बोलना है –

विराटस्वरूपिणीम् देवी विविधानंददायिनिम्।

भजेऽहं बगलाम् देवीं भक्त चिंतामणिम् शुभां ll

तत्पश्चात हल्दी, बेसन के लड्डू,पीले रंगे हुए अक्षत तथा पीत पुष्पों से देवी का या गुटिका का पूजन करे.

इसके बाद हल्दी की प्राण प्रतिष्ठित माला से निम्न मंत्र की ३६ माला जप करे.और ये क्रम ३ दिनों तक करना है.

ओम ह्लीं बगलामुख्यै शरीर सिद्ध्यै नमः

इसके बाद फिर से ३६ बार ध्यान करना है और विशेष न्यास करना है, यही क्रम नित्य प्रति रहेगा.

ये बगलामुखी साधना का अनूठा गोपनीय विधान है,जिसके द्वारा उनकी साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और आगे की साधना का मार्ग प्रशस्त होता ही है.

****

Bagulamukhi sharer sthapan sadhana -

In the human body there is a pransutre, which is known as atharva, as this pransutra is in the form of prana, ability of our eyes is not at the extent to watch it. With the one indirect power our mind automatically gets to know about the pain or sorrow of cognate though staying at far distance, the same power is termed as atharvaa sutra. This shakti sutra have potent property of attraction, this can certainly attract any one from thousands of miles far.

Every human have a different atharvaa sutra. Which has its own prana shakti, as there remains presence of pran shakti in individual's nails, hairs, clothes etc. and capable sadhaka will fulfill his desire from this. This is the reason that cloths, nails or hair of the self should not be thrown anywhere. Anyone can do misuse of the same.

This atharva shakti is known as 'bagulamukhi' in the sadhak's world. And her sadhana is extreme difficult too. And it is a fact too that the pran shakti because of which the world stays in bramhand, she cannot be accomplished so easily. So many sadhaka keep on doing her sadhana for many lives, but being unaware of the secret knowledge related to subject, they does not become able to have powers from her,

Maya shakti sadhana

परम दुर्लभ , इस साधना के बारेमे सर्वथा अप्रकाशित साधना रहस्य

वर्तमान युग में पग पग पर प्रतिस्पर्धा है ,और हर कोई जीतने का इच्छुक है, हर कोई अपना प्रभाव डाल कर अपने कार्य को साधना चाहता है ,पर क्या इतना सहज है...... नहीं ना..... हम कितना भी परिश्रम कर ले जब तक इष्ट बल साथ न हो , या भाग्य आपके परिश्रम को अनुकूलता न दे तब तक सफलता तो कोसो दूर ही रहती है.नीचे जो प्रयोग आप सभी के सामने रख रहा हूँ उसका अपने व्यवसाय और नौकरी में मैंने कई बार लाभ उठाया है , आखिर इतना महत्वपूर्ण ज्ञान होता ही इसलिए है की हम उसका उचित लाभ उठा सके.

हालाँकि इसका मूल विधान इतना प्रभावकारी है की यदि मात्र व्यक्ति परिश्रम से उसे सिद्ध कर ले तब उसकी फूक मात्र व्यक्ति और समूह को निद्रा में डाल सकती है सम्मोहित कर सकती है. परन्तु उस का दुरूपयोग भी हो सकता है, इसलिए जितना सामान्य व्यक्ति को लाभ दे सके उतना ही विधान मैं यहाँ रख रहा हूँ. ये प्रयोग भगवती काम कला काली से सम्बंधित है,और इसके प्रभाव से साधक का व्यक्तित्व माया शक्ति से परिपूर्ण हो जाता है,कोई भी ऐसा नहीं रहता है जो उसके प्रभाव से बच जाये.

नौकरी में प्रमोशन का विषय हो

घर का विवाद सुलझाना हो

पत्नी या पति को अनुकूल बनाना हो

घर का कोई सदस्य गलत मार्ग पर जा रहा हो, और उसे सही मार्ग पर लाना हो

व्यवसाय का कोई महत्वपूर्ण सहमती पत्र चाहिए

नौकरी के लिए साक्षात्कार में सफलता पाना हो

पड़ोसियों को अपने अनुकूल बनाना हो

समाज और खेल में प्रतिष्ठा अर्जित करनी हो

उपरोक्त सभी स्थिति में ये प्रयोग अचूक वरदान साबित होता है. कृष्ण पक्ष के किसी भी शुक्रवार से इस साधना को प्रारंभ करके अगले शुक्रवार तक करना है. समय रात्रि का मध्यकाल होगा. लाल वस्त्र, और लाल आसन प्रयोग करना है .पश्चिम दिशा की और मुख करके मंत्र जप होगा.सिद्धासन या वज्रासन का प्रयोग किया जाता है. जमीन को पानी से धोकर साफ़ कर लीजिए और उस पर एक त्रिकोण जो अधोमुखी होगा कुमकुम से उसका निर्माण कर लीजिए. यन्त्र नीचे दी गयी आकृति के समान ही बनेगा. मध्य में एक मिटटी का ऐसा पात्र स्थापित होगा, जिसमे अग्नि प्रज्वलित हो रही होगी. यन्त्र निर्माण के बाद सद्गुरुदेव तथा भगवान गणपति का पूजन होगा. पूजन के पश्चात हाथ में जल लेकर माया शक्ति की प्राप्ति का संकल्प तथा विनियोग करना है और निम्न ध्यान मंत्र का ७ बार उच्चारण करना है .

विनियोग-

अस्य माया मन्त्रस्य परब्रम्ह ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः पराशक्ति देवता पुष्कर बीजं माया कीलकं पूर्ण माया प्रयोग सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ll

ध्यान मंत्र-

तापिच्छ-नीलां शर-चाप-हस्तां सर्वाधिकाम् श्याम-रथाधिरुढाम् l

नमामि रुद्रावसनेन लोकां सर्वान् सलोकामपि मोहयंतिम् ll

ध्यान मंत्र के बाद देवी का पूजन कुमकुम से रंगे अक्षतों और लाल जवा पुष्पों से करना है,गूगल की धुप और तेल का दीपक प्रज्वलित करना है. नैवेद्य में खीर अर्पित कर दे . और त्रिकोण के प्रत्येक कोनों पर एक-एक धतूरे का फल स्थापित कर दे. "ह्रीं" बीज से २१ बार प्राणायाम करे ,और इसके बाद गूगल,लोहबान मिलाकर मूल मन्त्र बोलते हुए यन्त्र के मध्य में स्थापित अग्निपात्र में सूकरी मुद्रा से आहुति दे. इस प्रकार २१६ मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति दें. और जप के बाद ध्यान मंत्र का पुनः ७ बार उच्चारण करें. खीर को कही एकांत स्थान पर पत्तल में डाल कर रख दें.

मूल मंत्र-ओं ह्रीं भू: ह्रीं भुवः ह्रीं स्वः ह्रीं शिवान्घ्री युग्मे विनिविष्टचित्तं सर्वेषां दृष्टयो हृदयस्य बालम् रिपुणाम् निद्रां विवशम् करोति महामाये मां परिरक्ष नित्यं ह्रींस्वः ह्रीं भुवः ह्रीं भू: ओं स्वाहा ll

यही क्रम आपको आगामी शुक्रवार तक नित्य करना है. इसके बाद जब भी आपको किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए जाना हो , मन्त्र को ७ बार बोलकर हाथो पर फूक मार ले और हाथ को पूरे शरीर पर फेर ले. आप खुद ही प्रभाव देखकर आश्चर्यचकित हो जायेगे. तो फिर देर कैसी, यदि ऐसी साधना पाकर भी हम ना कर सके और असफल होते रहे जीवन में , तो इसमें किसका दोष रहेगा.

****

Maya shakti sadhana-

In current time there is competition at every step and everyone wish to win, few want to use their impact to accomplish task, but is it that easy…no…whatever amount of efforts we put, till the time power of isht is not with us, or fortune do not grant for your efforts; success stays far. The process mentioned below is the one which I used and became benefited many times in business and job; perhaps such important knowledge is there just because we can have benefit of the same. However, the main process of this is so much powerful that if one accomplishes it with hard work, with single puff one may make individual or group sleep or hypnotized. But it can even lead for misusing;

TRAI NAVAARN SAADHNA

अब देर कहाँ सफलता में जब माँ की साधना करना हैं

शक्ति की साधना वस्तुतः त्रिकोण की ही साधना कहलाती है ,अधोमुखी त्रिकोण शक्ति का ही प्रतीक होता है. दुर्गासप्तशती तीन चरितों में विभक्त है – प्रथम , मध्यम और उत्तम चरित . और ये तीनों चरित आपस में मिलकर एक त्रिकोण का ही निर्माण करते हैं. प्रथम चरित काली कुल के अंतर्गत आता है, मध्यम चरित श्री कुल के अंतर्गत आता है और उत्तम चरित सारस्वत कुल के अंतर्गत आता है. हम सभी जानते हैं की साधना जगत में इस त्रिशक्ति का बीज मन्त्र '**ह्रीं क्लीं**' है.

बहुत कम साधकों को पता होगा की दुर्गासप्तशती के प्रत्येक अध्याय के पूर्व ९-९ माला नवार्ण मन्त्र का जप कर लेने से कितनी सहजता प्राप्त हो जाती है. परन्तु दुर्गासप्तशती के पथ के पूर्व बटुक भैरव मंत्र और स्तोत्र का पाठ आपकी साधना में पूर्ण अनुकूलता ला देता है.

और यदि हमारे मन में त्रयी शक्तियों में से किसी विशेष शक्ति के प्रत्यक्षीकरण का भाव हो तब ऐसे में इसके लिए इन शक्तियों से सम्बंधित नवार्ण मंत्र का ही विशेष विधि से जप किया जाना चाहिए. प्रत्येक शक्ति का अपना अपना नवार्ण मंत्र है जो विशेष बीजों से युक्त है. और इन शक्तियों का समन्वित नवार्ण मन्त्र तो हम सभी जानते ही हैं.

'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' ये मूल नवार्ण मंत्र है .

'ॐक्रीं ऐं महाकाल्यै विच्चे' - काली कुल या प्रथम चरित का नवार्ण मन्त्र है .

'ॐश्रीं ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे' - श्री कुल या माध्यम चरित का नवार्ण मन्त्र है .

'ॐऐं क्लीं सरस्वत्यै विच्चे' – सारस्वत कुल या उत्तम चरित का नवार्ण मन्त्र है.

और यहाँ प्रश्न ये उठता है की इन नवार्ण मन्त्रों के पहले ॐका प्रयोग क्यूँ किया गया है जबकि सामान्यतः नवार्ण मन्त्र के पहले ॐलगाने का विधान नहीं है,तो वो मात्र इसी कारण की कुल विशेष के नवार्ण मंत्र ॐलगाने के बाद ही ९ वर्ण के हो पाते हैं. इनके माध्यम से ना सिर्फ साधक अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकता है अपितु इन मूल शक्तियों का भी दर्शन कर सकता है.

साधना विधि-

मंगलवार की मध्य रात्रि में

काली साधना और सिद्धि हेतु –नीम के वृक्ष के नीचे काले वस्त्र धारण करके

महालक्ष्मी की सिद्धि के लिए विल्व वृक्ष के नीचे लाल वस्त्र धारण करके

भगवती सरस्वती के लिए अशोक वृक्ष के नीचे श्वेत वस्त्र धारण करके बैठकर साधना करना चाहिए .

साधना के पूर्व सम्बंधित वस्त्र धारण कर सम्बंधित रंग के आसन पर बैठ कर सदगुरुदेव और बटुक भैरव का पूजन संपन्न करना अनिवार्य है, उडद के बड़े और दही का भोग लगाना चाहिए. और **'भं भैरवाय नमः'** मन्त्र की ३ माला संपन्न करना चाहिए.

तत्पश्चात मूलाधार चक्र के स्वामी भगवान गणपति का पूजन अर्चन करना चाहिए और **'गं गणपतये नमः'** मन्त्र की ४ माला जप करनी चाहिए. इसके साथ ही **'ॐडाकिन्यै नमः'** मंत्र का २१ बार उच्चारण कर भूमि पर बायीं तरफ एक सुपारी स्थापित कर दे.ऐसा करना अनिवार्य होता है. इसके बाद सामने बाजोट पर सम्बंधित रंग का वस्त्र बिछा कर एक अधो मुखी त्रिकोण का निर्माण करे, ये त्रिकोण त्रिगंध से निर्मित होना चाहिए. त्रिकोण निर्माण करते समय सम्बंधित देवी का नवार्ण मन्त्र जप करते रहना चाहिए. उसके बाद देवी का मूल ध्यान मन्त्र ११ बार उच्चारित करना चाहिए-

'नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मृताम॥'

त्रिकोण के मध्य में जहाँ बिंदु अंकित है वहाँ काले तिलों की ढेरी बनाकर उस पर गौघृत का दीपक प्रज्वलित कर दे. उस दीपक का तथा त्रिकोण की तीनों भुजाओं का पूजन मूल नवार्ण मन्त्र से करे, अर्थात पुष्प,अक्षत,तिलक,धुप,दीप और नैविद्य समर्पित करते समय **'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अक्षत समर्पयामी' धूपं समर्पयामी** आदि उच्चारित करे.

तत्पश्चात मूंगा माला से सम्बंधित देवी का नवार्ण मंत्र २७ माला जप करके **'ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं ऐं'** मन्त्र की ५१ माला जप करे फिर पुनः से सम्बंधित देवी का नवार्ण मंत्र २७ माला जप करे. इस प्रकार तीन दिनों तक करना है. जप के समय दृष्टि दीपक की लौ पर केंद्रित होनी चाहिए.

अंतिम दिवस आपको सम्बंधित देवी के जाज्वल्यमान दर्शन होते ही हैं तथा अन्य कार्यों में आ रही बाधा भी समाप्त हो जाती है. ये हमारेजीवन का सौभाग्य है की सदगुरुदेव के आशीर्वाद से ऐसी गोपनीय साधना प्रकाश में आई है. मैंने स्वयं इस साधना के द्वारा उस स्थिति को देखा और समझा है परखा है ,तभी इतनी निश्चितता से आप लोगो के सम्मुख इसे रखने का साहस कर रहा हूँ.

TRAI NAVAARN SAADHNA

Sadhna of Shakti is considered as Tricone (triangle) sadhna in its true sense as Adhomukhi Tricone is the symbol of Shakti. Durgasapatshatii is divided into three parts (charit) – first, middle and the finest one which we named as pratham, madhyam and uttam and collectively these three parts create nothing but a Tricone itself. First part falls under the category of Kaali Kula, middle one is categorized under Shri Kula and the finest one which is regarded as Uttam Chrit comes in the category of Sarasvatt Kula.

We all well aware about this fact that in sadhna field "Aing Hreeng Kleeng "is the basic Beej mantra of this Tri Shakti sadhna but there must be very few sadhaks who know that before the each chapter of Durgasapatshatii

Poorna Kaameshvari Som Shakti Prayog
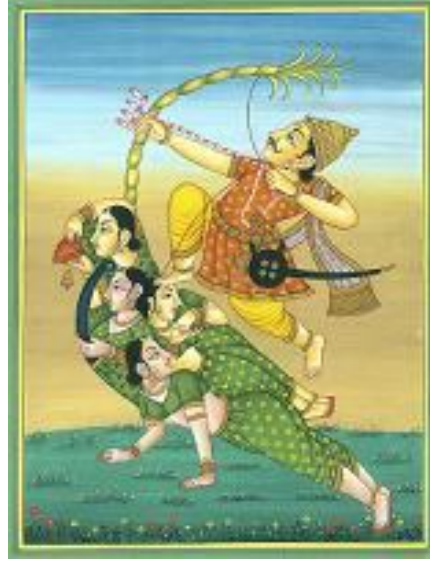
अद्भुत रूप सौन्दर्य दिला सकने में समर्थ, सर्वथा गोपनीय साधना

तांत्रिक साधना का लक्ष्य भोग और मोक्ष दोनों की ही प्राप्ति करना होता है . जीवन के प्रत्येक उद्देश्य की प्राप्ति तंत्र से संभव है, मुझे याद है की जब मैं १५-१६ साल का था तब मैं जामुन के पेड़ से लगभग २७-२८ फिट ऊँचाई से पीठ के बल नीचे पत्थरों पर गिरपड़ा था ,तब ना ही मैं चलने की हालत में था और ना ही उठने –बैठने की हालत में. क्रिकेट के सलेक्सन होने वाले थे.और उसके पहले ये हालत थी की मैं बहुत ही धीमी गति से स्पिन गेंद डाला करता था, और बल्लेबाजी भी बहुत ही धीमी गति से किया करता था, तब भी मेरे कंधे और पीठ कमजोर ही थे, और गिरने के बाद तो हालत ये हो गयी थी की जो प्रकृति वश शारीरिक उत्तेजना होती थी, वो भी समाप्त ही हो गयी थी.

मेरी माँ बहुत ही घबरा गयी थी, मेरी ये हालत ४-५ महीने तक रही और यथा संभव जितने भी डॉक्टरों को दिखाया जा सकता था. सभी को दिखाया गया ,और वे सभी ये कहते रहे की शायद अब मैं ठीक तरीके से चल भी नहीं पाउँगा, विवाह इत्यादि कार्य के लिए तो मेरे परिवार को भूल ही जाना चाहिए.

मैं उदास बिस्तर पर पड़ा रहता, माँ रोज पीठ की मालिश करती जो की बुरी तरह नीली हो गयी थी. तभी मैंने सदगुरुदेव से मानसिक रूप से लगातार प्रार्थना की ,और अचानक सदगुरुदेव का पत्र घर पर डाकिया दे गया. पत्र में शीघ्र अतिशीघ्र दिल्ली गुरुधाम पहुँचने के लिए कहा गया था, और लिखा था की ये मेरा आदेश है.

जहाँ तक मुझे ध्यान था की उस समय कोई साधना शिविर भी नहीं था, तब भी अत्यधिक प्रयास करके कष्ट को पीते हुए जैसे तैसे मैं दिल्ली पहुच गया. और जाते ही ढेर हो गया , सदगुरुदेव ने मुझे उठाकर अंदर बुलवाया . और मुझे अपनी तरफ देखने को कहा, मैं जब उनकी तरफ देख रहा था, शरीर में मजबूती का अनुभव होने लगा था, उसके बाद सदगुरुदेव ने मुझे **पूर्ण काम बीज युक्त कामेश्वरी सोम शक्ति साधना** विधि समझाई ,और घर जाने के लिए आज्ञा दी. घर आकर , पूर्णिमा से ३ रात्रि तक नित्य ४ घंटे मैंने नदी में सीने तक जल के भीतर खड़े होकर इस साधना को संपन्न किया. मुझे मात्र २०-२२ दिन के भीतर ही अत्यधिक परिवर्तन अनुभव हुआ, और ४ महीने बाद जब सलेक्सन हुए ,तब तक तो इतने हालात परिवर्तित हो गए थे की,आक्रामक बल्लेबाज और तेज गेदबाज की हैसियत से मैं आगे के तीन साल तक नेशनल लेबल पर चयनित होता रहा और उसके बाद यूनिवर्सिटी की और से भी २ साल तक खेलता रहा.और जिस टीम की तरफ से मैंने खेला ,मेरा प्रदर्शन बेहतर से बेहतर रहा. साधना जगत में उसी साधना के बाद मैंने **"श्यामा साधना "** जैसी साधना को भी सफलता के साथ संपन्न की. और एक उच्च कोटि का साधक इस साधना की विशेषता और महत्व से कदापि अनभिज्ञ नहीं होगा. इस साधना में पौरुषता की चरम परख होती ही है.

बाद के वर्षों में जब मैंने सदगुरुदेव से उस साधना का महत्व पूछ ,तब उन्होंने बताया था की मात्र पुरुष ही नहीं अपितु इस साधना के माध्यम से स्त्री भी अपने सम्पूर्ण सौंदर्य और नारीत्व की प्राप्ति कर सकती हैं. मैंने सौंदर्या माँ से भी यही सुना था की उन्होंने इसी साधना के माध्यम से अपूर्व सौंदर्य पाया था और कई अप्सराओं और योगिनियों को सिद्ध किया था.

इस साधना में कोई विनियोग या न्यास नहीं होता है, मात्र मंत्र जप और समय का महत्त्व है,मात्र ३ दिन की ये साधना है, जल में निवस्त्र या एक वस्त्र पहन कर गले तक पानी में खड़ा होकर, पञ्च मुखी रुद्राक्ष को हाथ में लेकर रात्रि में ११ बजे के बाद चंद्रमा की और देखकर मंत्र का ३ घंटे तक जप किया जाता है. पूर्णिमा के बाद के दो दिन आकाश की ओर मुह करना चाहिए. अंतिम दिवस जप के बाद रुद्राक्ष को जल में ही प्रवाहित कर देना चाहिए. आपको स्वतः ही एक विलक्षण प्रकाश आपमें प्रविष्ट होता हुआ लगेगा,और निकट भविष्य में सौंदर्य पक्ष सम्बंधित सभी समस्याओं का समाधान तो होता ही है.

मन्त्र-

ॐक्लीं क्लीं क्लीं कामेश्वरी सह सोम शक्ति पूर्णमदः पूर्णमिदं क्लीं क्लीं क्लीं कामदेवाय नमः

Pratyaksh Pret shakti ManokaaMna Poorti saadhana

इतर योनियों से सहयोग प्राप्त करने की गोपनीय साधना

ये प्रयोग सदगुरुदेव ने संपन्न करवाया था, और मैंने खुद इसका लाभ उठाया था, बाद के वर्षों में मैं इसका अभ्यास लगातार नहीं रख पाया ,इसलिए ये सिद्धि धीरे धीरे लोप होती गयी. और उन्होंने ये स्पष्ट बताया था की भूत-प्रेत साधना जीवन का सौभाग्य ही होती है, ये हानिकारक नहीं होती है, अपितु अपनी मुक्ति के लिए बैचेन आत्माएं हैं ,जो साधक या मनुष्य की सहायता कर शीघ्र अतिशीघ्र मुक्त होना चाहती हैं.ये मनुष्यों की भांति विश्वास घात नहीं करते हैं. अपितु पूर्ण वफ़ादारी निभाते हैं.

उन्होंने **वातालू नामक प्रेत शक्ति** की साधना का विधान समझाया था. जिसे कई गुरु भाइयों समेत मैंने भी किया था. उसी साधना के गूढ़ रहस्यों को मैं आप सभी के सामने रख रहा हूँ,जिससे आप भी इस प्रयोग की विश्वसनीयता को परख सकते हैं.

ये साधना अमावस्या की अर्धरात्रि से प्रारंभ होकर आगे के ३ दिनों तक होती है. दक्षिण दिशा की ओर मुह करके वीरासन में बैठना होता है, वस्त्र व आसन काला होता है.सामने एक पान के पत्ते पर काजल से वातालू लिख कर उस पर काजल की डब्बी और कपूर का टुकड़ा रख कर काली हकीक माला से १०१ माला नित्य करना होता है . घर के एकांत कक्ष में ये साधना की जा सकती है,

जहा साधना के ३ दिवसों तक किसी का भी प्रवेश निषेध रहता है.दूध का भोग चढ़ाया जाता है. मंत्र जप के बाद दो दिन तक खुद उस दूध को पीना है और तीसरे दिन खुद वातालू उस दूधको ग्रहण कर लेता है.३ दिन वो प्रत्यक्ष होता है. मंत्र जप के पहले तीन बार उसका नाम लेना होता है और मन्त्र जप प्रारंभ करना होता है.मन्त्र जप के मध्य चाहे जैसी स्थिति बने आप को नहीं बोलना है,क्यूंकि वो शक्ति किसी भी रूप में आपकी साधना खंडित करने की कोशिश करती ही है. जब भी भविष्य में उसे बुलाना हो मात्र ११ बार मंत्र का उच्चारण कर के उसका नाम लें ,वो हाजिर हो जायेगा और आपका कार्य सम्पादित कर देगा.

मंत्र-

क्रीं क्रीं क्रीं वातालू भूतेभ्यो आगच्छ वश्य आज्ञा पाले फट्॥

इतर योनी साधना के जिज्ञासु साधक इस साधना को अवश्य करके देखे. निश्चय ही अनूकुल परिणाम प्राप्त होंगे.

Pratyaksh Pret shakti ManokaaMna Poorti saadhna

This experiment was done under Sadgurudev's guidence and i myself experienced the benifits of this sadhna. But in later years i couldn't practiced it continously. Thats the reason this siddhi dissapeared slowly. He told us that Bhut-Pret are boons for sadhna life. These are not harmful. Rather they are curious spirits roaming for their freedom who really wants to help haman being or sadhak for their upliftment. Hmmm but they dont ditch as humand do so. Rather they are very loyal to us.

He explained us a sadhna called **"Vaataalu Namak Pret Shakti Sadhna "** Which is performed by various gurubrothers of us along with me. The secrets of those sadhna i am going to open here infront you via which you can also inspect the authenticity of this sadhna.

Dhoomavati kalpa saDhana

शत्रु बाधा निवारक अद्भुत प्रभाव दायक साधना

माँ धूमावती के बारे मे जितना भी कहा जाए कम ही है, सृष्टि के विपरीत क्रम की वे देवी है. ब्रम्हांड का मुख्य नियम ये रहता है की शिव बाह्य और शक्ति आतंरिक होती है. शरीर मे प्रकृति निहित है, मतलब की शिव मे शक्ति स्थापित रहती है लेकिन धूमावती ने अपने अंदर शिव को धारण किया हुआ है, जिससे सृष्टि का एक पूरा क्रम ही विपरीत है. इसी क्रम मे वे अलक्ष्मी है, अविद्या है तथा दुर्भाग्य की देवी है. स्वेत वस्त्र धारण करने पर भी उनका मुख्य रूप तम से उत्प्रेरित है जिसका अर्थ भी यही विपरीत क्रम ही है. प्रकाश शुभ्र होता है जिसका विशुद्ध रूप अपने आप मे अंधकार मे समां जाता है.

काले रंग मे सफ़ेद रंग मिला दिया जाये तो भी वह अपनी प्रकृति नहीं छोड़े गा, लेकिन शुभ्र मे ज़रा सा भी काला रंग मिलाने पर उसमे दाग लग ही जाता है प्रसारण की गति तीव्र होती है, लेकिन धूमावती के सन्दर्भ मे ये तथ्य भी विपरीत है, इसी लिए वे स्वेत वस्त्र को धारीत किए हुए है. यु ये भी कहा जा सकता है की जो भी विपरीत है वही धूमावती है.

इसी लिए जीवन के सारे अभाव दुःख कष्ट पीड़ा विषाद सब पर इनका ही प्रभाव रहता है. लेकिन मूलतः यह माँ का ही स्वरुप है इस लिए अपने तम गुण को अंदर रखते हुए बाह्य रूप से यह सत् और रज से साधक का कल्याण करती है. शत्रु का अर्थ है की वो जो जीवन मे बाधक हो, हमारी सभी बाधा और परेशानी चाहे वह मनुष्य रूप मे हो या किसी और रूप मे वे सभी प्रायः शत्रु ही है. माँ इनकी अधिष्ठात्री होने के कारण इसका निराकरण अत्यंत तीव्रता से हो जाता है, और वो विपरती क्रम हरण कर, मूल क्रम को स्थापित कर देती है.

यह साधना साधक बुधवार की मध्यरात्रि से शुरू करे.

दिशा दक्षिण, वस्त्र व् आसान काले रंग का रहे, काले हकीक की माला का उपयोग करे.

अपने सामने देवी का चित्र स्थापित कर तेल का दीप प्रज्वल्लित करे. और मानस पूजन सम्प्पन करे

इसके बाद साधक अपने हाथ मे जल लेके सामान्य संकल्प ले की अपने सर्व बाधा एवं ज्ञात अज्ञात शत्रु से विजय प्राप्त करने के लिए साधना मे प्रवृत हो रहा हू, माँ मुझे कृपा प्रदान करे

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ३१ माला का जाप करे

धूं बाधा निवारिणी धुम्रेश्वरी फट्

उसके बाद जाप देवी को समर्पित करे

यह क्रम तिन दिन का है, साधक अपने आप मे ही, साधना करने के बाद अगले ही दिन से योग्य परिणामों का अनुभव करने लग जाता है.

****

Dhoomavati kalp saDhana

It is always less however we describe about mother dhoomavati, she is goddess of universe’s reverse order. The main rule of universe is that shiva is outer form and shakti is inner power. Nature stays inside the body, means shakti stays inside shiva but dhoomavati have established shiva inside her, this way, there is a reverse order of the universe. In this way only she is Alakshmi, Avidhya and goddess of unfortunate nature. While covering her with white cloth she is completely based on tam nature which itself means the reverse order.

Goutra purush manokamana siddhi

अब तो मनोकामना भी आसान हैं इस प्रयोग से

जीवन मे पितृओ की महत्ता के बारे मे उल्लेख कर दिया गया है की किस प्रकार एक बीज जो की मूल होता हे उससे लगातार सर्जन की क्रिया आगे बढती जाती है और वह मूल बीज धारक की कृपा किस प्रकार सदैव बनी रहती है. इसी क्रम मे गौत्र के विषय मे भी यही कहा जाता सकता है की मुख्य ऋषियो के बीज से हमारा निर्माण हुआ है या उनका योगदान हमारे सर्जन मे रहा है इसी लिए वे हमारे मुख्य आदि पूर्वज भी कहे जाते है. इस स्थिति मे उन महापुरुषों की विशेष कृपा को प्राप्त किया जा सकता है और उनके आशीर्वाद से हमारी मनोकामनाओ की पूर्ति भी संभव है.

व्यक्ति के गौत्र आदि पुरुष के पूजन को हमारे वैदिक शास्त्रों मे कर्मकांड का आवश्यक अंग माना है इसके पीछे यही चिंतन था की हम उन सिद्ध पुरुषों की उपासना करे और उनके आशीर्वादतले अपने जीवन के अभावो को दूर कर सके और अपनी मनोकामनाओ की पूर्ति कर सके.

यहाँ पे एक बात को समजना आवश्यक है की वे महान आत्माए आज भी उतनी ही गतिशील है जितनी वे पहले हुआ करती थि. वे निरंतर कृपा को अनुकम्पा को प्रवाहित करते रहते है लेकिन हम अपने आप मे इतने उलज चुके है की अब हम अपनी परंपराओ पर ध्यान तो नही देते हे लेकिन साथ ही साथ उससे विमुख होकर खुद अपने ही जीवन को व्यर्थ मे समस्याओ से ग्रस्त रख रहे है

गौत्र के आदिपुरुषों के लिए भी तन्त्र मे विभिभन मंत्र और प्रक्रियाए प्राप्त होती है. लेकिन हर एक गौत्र के लिए अलग अलग प्रक्रियाए देना संभव नहीं है. यहाँ पर जो प्रयोग दिया जा रहा है वह प्रयोग कोई भी व्यक्ति सम्प्पन कर सकता है और गौत्र महात्माओ की कृपा प्राप्त कर सकता है.

इस साधना को किसीभी वार से शुरू किया जा सकता है, साधना के लिए ब्रम्ह मुहूर्त का समय उत्तम है

दिशा उत्तर या पूर्व रहे, माला स्फटिक की हो. वस्त्र आसान सफ़ेद रहे

अपने गौत्र के आदि पुरुष को याद कर उसका मानसिक पूजन करे. धुप व् शुद्ध घी के दीपक को प्रज्वल्लित करे. उसके बाद निम्न मंत्र की २५ माला का जाप करे.

ॐ अमुकं गौत्र पुरुषाय सर्वार्थ साफल्यम प्रणम्यामी

इसमें अमुक की जगह गौत्र का नाम लेना चाहिए. जिन्हें अपने गौत्र के बारे मे पता न हो वो वहा पर आदिपुरुषाय शब्द का उपायोग करे.इस प्रयोग को ८ दिन करना चाहिए. जिससे पितृ एवं गौत्र प्रस्सन होते है और मनोवांछित इच्छाओ की पूर्ति करते है.

****

manokamana prayog through - Goutr purusha sadhana

The importance of pitrus have already been discussed that how from one bija which is the main base from that process of the creation keeps on running and how the blessing of that main bija holder stays and affects. This way about gautra even it could be said that from the bija of those main sages we are created or there is a contribution of them in our creation that's why they are called as our main dawn ancestor and with blessings of them our wishes could be fulfilled.

Poojan of gautra's sage is belived to be very essential part of vaidik karmakanda body. The reason behind it was that we worship our ancient sages and can remove our deficiencies for haapy life under their bliss and can fulfill our wishes and desires. Here it is require understanding that those great souls are still same dynamic as they used to be.

Soot Rahsyam PaRt-7

सप्त ऋषि पूंजीभूत तत्व शक्ति साधना

बाह्य जगत की प्रतिकृति ये मानव शरीर भी एक ब्रम्हांड ही है और तदनुसार मानव शरीर में भी उत्तर और दक्षिण दो ध्रुव विराजमान हैं.जिनमे विद्युत चुम्बकत्व की धनात्मक और ऋणात्मक शक्ति प्रवाहित रहती है, मष्तिष्क को उत्तरी ध्रुव और मूलाधार को दक्षिण ध्रुव माना गया है. इन्ही के मध्य मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध ,आज्ञा और सहस्रार चक्र हैं. अर्थात मूलाधार यदि एक छोर पर स्थित है तो सहस्रार दूसरे छोर पर स्थित है. और उस दिव्य शक्ति का आदान प्रदान मेरु दंड में स्थित सुषुम्ना सूत्र के द्वारा होता है.

सुषुम्ना पथ ही इन शक्तियों को परिष्कृत कर दोनों छोरो पर शक्ति का परस्पर आदान प्रदान करता है. जिन चक्रों की हमने बात की है .वे ७ चक्र वस्तुतः सप्त ऋषियों के प्रतिनिधि हैं.

अर्थात इन चक्रों में इन ऋषियों का ही तव प्रकाशित होता है, बाह्य दृष्टि से जो ऋषि हैं, वास्तव में वो सात शक्तियां और सात तत्व भाव हैं, जो जीवन के विभिन्न क्रिया कलापों को सुचारू रूप से संपन्न करने की क्षमता प्रदान करते हैं. और ये भाव ,ये तत्व सूर्या से ही प्राण को ग्रहण करते हैं ,तभी उनमे जीवन की उपस्थिति हो पाती है.

अब ये साधक के ऊपर निर्भर करता है की वो उपरोक्त सप्त शक्तियों का (जो की सूर्य से ही प्राणों का शोषण करते हैं और तदनुरूप साधक को दैदिप्यता और तेजस प्रदान करते) कितना तीव्र प्रयोग कर पाता है. सबसे पहले ये समझ लेते हैं की वास्तव में ये सप्तर्षि हैं कौन कौन से और ये किन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं.

वशिष्ट - अग्नि तत्व – विवेक शक्ति

विश्वामित्र - आकाश तत्व – इच्छा शक्ति

भारद्वाज - चेतन तत्व – संकल्प शक्ति

गौतम - वायु तत्व – विचार शक्ति

जमदग्नि - तेज तत्व – क्रिया शक्ति

अत्री – जल तत्व – वाणी शक्ति

कश्यप - पृथ्वी तत्व – उत्थान शक्ति

वास्तव में ये सप्तर्षि ही मानव के वे सात शरीर या ब्रम्हांड के वे सात लोक हैं, जिन्हें भू,भुवः, स्वः मनः, जनः,तपः और सत्य लोक कहा गया है . ये मानव शरीर में उपस्थित वो सात सम्भावनाये हैं की यदि इन्हें कोई चैतन्य कर ले ,फिर उसके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं रह जाता है. वस्तुतः मानव शरीर में उपस्थित चेतना की ये सात परते ही हैं. जो किसी भी असाध्य को साध्य कर देती हैं. और एक बात हृदयंगम करने योग्य है की यदि तंत्र का आश्रय लिया जाये तो निश्चित ही ,चेतना के इन सातो स्तर की प्राप्ति सहज हो जाती है. वस्तुतः सूर्य विज्ञानं के जिज्ञासुओं को या साधकों को इस रहस्य को आत्मसात कर सिद्ध हस्त प्राप्त करने के लिए तो पूरा एक साधना क्रम ही संपन्न करना पड़ता है. परन्तु सामान्य क्रम अपनाकर भी हम कुंडलिनी के चक्रों को ना ही सिर्फ स्पंदित कर सकते हैं, अपितु सप्त ऋषियों की चेतना का ये स्पंदन आप अपने जीवन में उतार कर अपना भाग्य स्वतः ही लिख सकते हैं, और दुर्भाग्य को पूरी तरह मिटाकर एक सौम्यता और तेजोमयता की प्राप्ति कर सकते हैं.

किसी भी रविवार से इस साधना को आप प्रारंभ कर सकते हैं और प्रातः काल स्नान कर सूर्य को जब जल समर्पित करे तो उसके पहले जल पात्र की और दृष्टि रख कर निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चारण करे, इसके बाद ही सूर्य को **"ॐ तेजस्विताय नमः"** कहकर जल अर्पित करे या अर्घ्य चढ़ाये –

मूल मन्त्र-**ॐ सूर्य सूर्याय सूर्य सप्तर्षिभ्यो सह चैतन्य प्राप्तुम पूर्ण तेजस्विताय नमः॥**

वस्तुतः ये मन्त्र इस रूप में गुंथा हुआ है की यदि इसका उपरोक्त विधान से नित्य प्रति प्रयोग किया जाये तो निश्चित ही इसका प्रवाह आपके दुर्भाग्य को पूर्ण रूपेण दूर कर सकता है

- --

Sapt Hrishi Punjibhut tatva Shakti sadhna

Our body is facsimile of outer world and it is sort of universe in inbuilt. In accordance human body is also consists of north and south poles which are fixed.By which two type of energies flows i.e. positive and negative energy. Brain is known as northern pole and Muladhar is know as southern pole. In mid of these poles the various chakras - Mooladhar, Swadishthan, Manipur, Anaahat, Vishudhh, Aagya and Sahastrar are located.And that divine energy transits through backbone by Sushumna Sutra.

The ends of Sushumna path only examines this energies and disperse equally at both the sides. The Chakras which we have talked above, actually the 7 chakras represents seven Hrishis. It means the facts which is presents in these chakras are exactly the same which 7 Hrishi represents.In actual sense they represents seven types of power and seven special facts which gives the capacity to pursue day today task easily and efficiently. And these Bhavs and facts absorbs energy from Sun. Then only it gets liveliness.Now this completely depends upon the sadhak that how he(who absorbs the energy from sun and in accordance gives charm and glow to sadhak) uses such divine energy in hard experiment. Now lets understand Who are these Saptrishi and what they represents?

Vishisht - Agni Tatv - Power of Subconcious Mind

Vishvamitra - Aakash Tatva - Power of Willingness

Bharadwaj - Chetan Tatva - Power of Resolution

Goutam - Vayu Tatva - Power of Thinking

Jamadagni - Tej Tatva - Active Energy

Atri - Jal Tatva - Power of Speech

Kashyap - Prithvi Tatva - Power of Progressiveness

SWARN RAHSYAM -7

Rare but satik experniment form gold making

दुर्लभ परन्तु अचूक स्वर्ण निर्माण प्रयोग

तंत्र शास्त्र के रस तंत्र शाखा में **स्वर्ण लक्ष्मी** की साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है और यदि इस मंत्र का पूर्ण विधान से निर्मित **विशुद्ध संस्कारित पारद शिवलिंग** के सामने २१ दिनों में ५४ हजार मन्त्र जप कर लिया जाये तो स्वर्ण निर्माण की क्रिया में शीघ्र सफलता मिल जाती है, ऐसा मुझे सदगुरुदेव के सन्यासी शिष्य राघव दास बाबा जी ने बताया था.समृद्ध होना हमारा अधिकार है और रस शास्त्र के माध्यम से ऐश्वर्य प्राप्त किया जा सकता है.इसमें मन्त्र योग तथा क्रिया विशेष का योग करना पड़ता है. प्रत्येक क्रिया की सफलता के पीछे मन्त्र विशेष की शक्ति कार्य करती है. ऐसा नहीं है की किसी भी रसायन सिद्धि मन्त्र से कोई भी रस कार्य को सफल कर दिया जाये, हाँ ये अलग बात है की सद्गुरु प्रसन्न होकर मास्टर चाबी ही आपको दे दे, परन्तु वो उनकी प्रसन्नता का विषय है. नीचे जो २ प्रयोग दिए गए हैं वे स्वर्ण लक्ष्मी मन्त्र से सम्बंधित ही हैं, यदि इन कीमिया के प्रयोगों को न करे तब भी नित्य प्रति इस मन्त्र की एक माला आर्थिक अनुकूलता और धन की प्राप्ति साधक को करवाती ही है.

मन्त्र कमलगट्टे की माला या पारद माला से जप होना चाहिए.

मन्त्र-

ॐ ह्रीं महालक्ष्मी आबद्ध आबद्ध मम गृहे स्थापय स्थापय स्वर्ण सिद्धिम् देहि देहि नमः II

मन्त्र जप के बाद साधक या रस शास्त्र के जिज्ञासुओं को निम्न प्रयोग करके अवश्य देखना चाहिए, इन प्रयोगों को मैंने राघवदास बाबा जी को सफलता पूर्वक करते देखा है, और एक बात मैंने ध्यान दी थी की वे ,पदार्थ का रूपांतरण करते समय इस मंत्र का स्फुट स्वर में उच्चारण किया करते थे और स्वच्छ वस्त्र धारण करके ही ये प्रयोग ,साफ़ जगह पर किये जाते हैं.

१. २५ ग्राम शुद्ध नीले थोथे को श्वेत आक के आधा पाँव दूध से खरल करके उस कज्जली में शुद्ध सीसा १० ग्राम मिला कर सम्पुट बनाकर २० किलो कंडों की अग्नि देने से भस्म तैयार हो जाती है. १० ग्राम रजत को गलाकर उसमे १ रत्ती भस्म डालने पर स्वर्ण की प्राप्ति होती है. स्वर्ण लक्ष्मी मन्त्र के माध्यम से भस्म स्वर्ण बीज से यौगित हो कर चाँदी में स्वर्ण की उत्पत्ति कर देती है.

२. शुद्ध जस्ता का बुरादा और शुद्ध पारद १-१ तोले को लेकर मंत्र जप करते हुए जंगली गोभी के रस में २४ घंटे तक घोंटे,उसके बाद उसे सम्पुट बनाकर ८ तोले सूत से लपेटकर ३ किलो बकरी की मेंगनी में रखकर आग लगा दे .आग बंद वायु में लगाना है, ना की खुले स्थान पर, स्वांग शीतल होने पर जो भस्म मिलेगी , वो चांदी और शुद्ध ताम्बा , दोनों का रूपांतरण स्वर्ण में कर देती है.

---

rare but satik experniment form gold making

In Tantra Shastra, in the branch of Ras Shastra the Swarna Lakshmi Sadhna keeps unique significance in it. and if this mantra is done with whole procedure of before Vishudhh Sanskarit Paaradh Shivling in 21 days completes the 54 thousands mantra jap then you get success in gold making process very soon. As this was being told me by Sadgurudevji's sanyasi disciple Shree Raghav Das babaji. Becoming wealthy is our birth right.And by Ras Shastra we can achieve it. See, in this the balance of mantra yog and kriga yog is needed.

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

अब इसे एक बार तो करके देखिये

लक्ष्मी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं , सारे जीवन का प्रमुख आधार स्तम्भ हैं आज के जीवन में धन लक्ष्मी का , भले ही जीवन में लक्ष्मी के अनेको रूप हो , पर ठीक इसी तरह अनेको साधनाए हैं एक से एक उच्च कोटि की , जिनको पाने के लिए उच्च योगी ही नहीं बल्कि ब्रह्म ऋषियों ने भी खोज की , ऐसी अनेको साधनाए फिर वह चाहे "लक्ष्मी आबद्ध साधना" हो या "स्वर्ण प्रिया लक्ष्मी साधना" हो या "स्वर्ण खप्पर साधना" या फिर "हीरक खप्पर साधना" हो , सभी तो एक से एक हैं , पर इस स्तम्भ के अंतर गत हम वही साधना देते हैं जो आपके लिए बहुत ही आसान तो हो पर हो वह बहुत ही प्रभाव दायक .

एक ऐसी ही सरल प्रयोग हैं जिसको अनेको उच्च कोटि के तांत्रिको ने विद्वानों ने बहुत ही प्रशंशा की हैं वह हैं एक छोटा सा स्त्रोत जिसे आपको जितना भी संभव हो सुबह शाम तो करना ही हैं कोई भी नियम ऐसे बिशेष नहीं हैं पर यदि स्त्रोत पाठ के नियम आप पालन करते हैं तो आप को ज्यादा लाभ होने ही सम्भावना होगी,यह सही हैं की यह स्त्रोत आसानी से उपलब्ध हैं पर यदि आप इसको करते हैं तो यह आपके जीवन की दरिद्रता हटा कर सुख संवृद्धि का एक ने अध्याय खोलने में समर्थ हैं ,आशा हैंकि आप इस स्त्रोत का महत्त्व जिसे अनेको उच्च कोटि के योगियों ने भी बताया हैं समझेंगे

त्रैलोक्य पूजिते देवी कमले विष्णु वल्लभे ।

यथा त्वमचला कृष्णे तथा भावमयि स्थिरा ॥ 1 ॥

कमला चंचला लक्ष्मी श्चला भूतिर्हरिप्रिया ।

पद्मा पद्मालया सम्प्युच्चैः श्री पद्मधारिणी ॥ 2 ॥

द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मी संपूज्य यः पठेत ।

स्थिरा लक्ष्मी र्भवेत्तस्य पुत्रदाराभिः सः ॥ 3 ॥

॥ इति श्री दक्षिण लक्ष्मी स्तोत्रं सम्पूर्णं ॥

****

MOST EFFECTIVE AND EASY LAKSHMI PRAYOG

Without lakshmi means financial happiness , thinking of life is useless, to days whole life is depends upon that financial aspect of goddess lakshmi though has many faces, there are more than 1008 type of lakshmi possible so as much as or more than that lakshmi sadhana are also possible,

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

1. पितृ दोष की निवृति के लिए जब भी आप भोजन करते हैं तो एक ग्रास पहले ही निकाल कर अलग रख दीं
2. जब विवाहिक जीवन में अशांति हो और मन मुटाव बढ़ता जा रहा हो तब गुरूवार को पीपल के पेड़ के नीचे दीप जलाये .
3. जब भी आप अपने व्यवसाय में जातेहैं या अन्य भी यदि अपने पर थोडा सा इत्र लगा ले तो बहुत अच्छा हैं क्योंकि ये सब तो शुक्र से सम्बंधित हैं और उसकी अनुकूलता से आपकी इच्छा पूर्ति होती हैं.
4. हनुमान जी को अनेक लोग राम राम लिखे पीपल के पत्ते चढाते तो आपने देखा होगा पर यदि इसे लाल चन्दन से लिखे और मंगलवार से खास कर शुक्ल पक्ष से प्राम्भ करे और ११ मंगल वार कम से कम करे तो अनेको मुसीबतों से आप को निजात मिल जाती हैं.
5. जीवन में अनेको परेशानी आने पर आपको शिव उपासना और पीपल के वृक्ष में जल अर्पित करना चाहिए पर रविवार को जल न पीपल में जल न अर्पित करे

6. काले घोड़े की नाल आपको किसी भी घोड़े वाले के यहा आसानी से मिल जा ती हैं तो उसे अपने घर के प्रवेश द्वार में लगा दे यह भी विपत्ति नाशक प्रयोग हैं.
7. मंगलऔर शनि वार के दिन यथा संभव दाढ़ी या केश कर्तन से बचना चाहिए . क्योनी ये दोनों दिन क्रूर ग्रह से सम्बंधित दिन हैं .
8. ज्योतिष ग्रन्थ तो यहाँ तक कहते हैं की आपको अपने केश तब कटवाना चाहिए जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में हो मतलब (चन्द्रमा बढ़ता जा रहे हो), और नाख़ून तब कटवाना चाहिए जब चंद्रमा कृष्ण पक्ष में चल रहे हो .
9. हनुमान जी ओर सिंदूर का नाता तो सभी जानते हैं ही पर यदि आप सिंदूर गणेश जी को किसी भी शुभ महूर्त खासकर गुरु पुष्प में करे तो आपको परीक्षा में अधिक लाभ मिलेगा .
10. वही आप जानते वाहन रक्षा कर यंत्र तो हनुमान जी का ही होता हैं तो यदि आप हनुमान जीको भी सिंदूर अर्पित करते हैं तो वाहन से दुर्घटना से बचाव होता हैं

****

Totka vigyan

1. For to removal of pritr dosh one should offer first grass of his food to them, and keep it one side
2. When trouble and tension increases in married life between life partner then light up earthen lamp(Deepak) to nearer of papal tree,
3. When going for your workplace/shop just have some "itr " on your cloths this will prove to beneficial since ail theses things are related to planet Venus and its favor help you a lot.
4. Many people offer papal tree leaves written with "Ram ram" if you do that but write with red chandan and start with Tuesday of any shukl paksh (moon waxing period), for at least 11 Tuesday , many of your suffering will minimize.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

जीवन में कुछ बहुत सी सरल उपचार उपयोग मे लाये जा सकते हैं क्योंकि बहुत बड़ी समस्या के लिए तो उचित अयुर्वेदग्य से ही संपर्क ज्यादा अछछा रहता हैं पर यह सरल उपाय भी आपका विश्वास इस विधा पर लाने में लाभदायक होंगे इसी आशा के साथ.

1. किसी भी प्रकार का यदि पुराना ज्वर होतो उसमे 5/10 ग्राम तुलसी का रस पीने से लाभ होता हैं .
2. यदि बिलकुल सुबह तुलसी के पत्ते का रस 5/10 ग्राम निकल कर पिया जाये तो यह पेट सम्बंधित बीमारियों के लिए लाभ दायक होता हैं .
3. यदि तुलसी के पत्ते के रस को गंगा जल में मिला कर लगाया जाये तो सफ़ेद दाग भी दूर हो जाते हैं .
4. यदि प्रातः काल तीनचार पत्ते तुलसी के खा लिए जाये तो दिमाग की क्षमता में वृद्धि होती हैं .
5. बेल के छिलके का धुँआ करने से मछछर भी भाग जाते हैं .

6. रोज़ सुबह यदि ताजे बेल के पत्ते का रस 5/10 ग्राम लेकर पी लिया जाये तो धीरे धीरे सुगर कम हो जाती हैं .
7. जो भी acidity रोग से पीड़ित हो उन्हें प्रातः काल उठ कर एक गिलास हल्का कुनकुना पानी पीना चाहिए इससे अधिक लाभ मिलता हैं .
8. बादाम के तेल से मालिश सोते समय करे यह चेहरे की झुर्र रिया दूर करता हैं .
9. बादाम के तेल से मालिश नाख़ून , भौए की जा सकती हैं इस से यह और सुन्दर से हो जाते हैं.
10. झड़ते बालों को रोकने के लिए तुलसी का तेल बहुत लाभ दायक पाया गया हैं

****

Ayurveda

In life curing for any disease many simple but easy remedy l process can be applied ,since for any serious health related one should contact some well competent Ayurveda doctor , but all theses very simple process can build your faith on this science .

1. If you are having any fever that is from long duration than taking tulsi leaves juice of 5 /10 gram would be helpful.

2. If any one suffering from problem to his stomach, than if he take fresh juice of tulsi leaves in the morning about 5/10 gram , proves to very beneficial.

3. If juice tulsi leaves and ganga jal mix it and applied on “white daag “ that will be cure early.

4. And if any one eat 4/5 leaves of tulsi in the morning this will increase his mental capability .

तंत्र कौमुदी
NTKU
निखिल तत्व सायुज्य श्री साधना महाविशेषांक
Eight Issue – OCTOBER 2011
Tantra kaumudi

Name of the Articles

SHRI lakshmi vinayak PRAYOG

भगवान गणपति के वरदायक स्वरुप को घर में स्थापन करा सकने में समर्थ तीव्र प्रयोग

बुद्धि के पक्ष को कभी भी हम अनदेखा नहीं कर सकते हैं, क्योंकि जो भी हमें जीवन में उच्चता मिली हैं या मिलती ही उसमे इसका भीएक बहुत बड़ा हिस्सा होता ही हैं उदाहरण के लिए मानलीजिये आपके पास से कहीं से एकसाथ रुका हुआ स्वर्जित घन या बिं अर्जित धन लाटरी जैसे माध्यम से आ भी गे तो और अब आप उसे सही और व्यवस्थित ढंगसे अपने जीवन में उपयोग नहीं कर पाए तो पुनः अपनी प्रारंभिक स्थति में जाने में कितना समय लगता हैं इस लिए प्राचीन आचार्यों ने तंत्रज्ञों ने कहा की यदि लक्ष्मी तत्व जरुरी हैं तो उससे भी कहीं ज्यादा जरुरी हैं की भगवान गणपति का वरदायक स्वरुप का घर में स्थापन .

एक बात हमें भी याद रखना चहिये कि साधनाओ को अलग अलग करके नहीं देख जाना चहिये क्योंकि जीवन के सारे पक्ष एक दुसरे से जुड़े हैं और इसी तरह साधनाए भी एक दुसरे से जुडी ही रहती हैं क्यों की जीवन को एक सम्पूर्णता की दृष्टी से ही देखना पड़ता हैं और चाहिए भी और उसमे हर पक्ष का अपना एक अलग ही अर्थ हैं.

ध्यान :

दंता भये चक्र दरौ दधानं कराग्रगस्वर्णघटं त्रिनेत्रं |

घृताब्जया लिन्गितमब्द्धीपुत्र्या लक्ष्मीगणेशं कनकाभमीडे ||

मंत्र :

ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्व जन में वशमानय स्वाहा ||

यदि आपके पास कोई भी लक्ष्मी गणेश प्रतिमा हो या लक्ष्मी गणेश यन्त्र हो तो उसको सामने रख कर यह सारी प्रक्रिया करे और बाद में उसे अपने पूजा स्थान में रख कर प्रतिदिन 108 बार उच्चारण करते चले ,और निश्चय की आपके जीवन में इन दोनो महा शक्तियों कि कृपा से और भी जीवन अनुकूल होगा ही .

****

Shri lakShmi vinayak prayog

We cannot over shadow the importance of intelligence /buddhi what we achieved till date or what we are going to achieve one of the major role in that our intelligence played. For example any how you got some your earned money that are due to some reason blocked , or got some unearned money through any reason and you are not able to use that wisely than soon you will find yourself on the previous position .

that's why our ancient masters tantra field says a that if lakshmi tatv is necessary than the ganesh tatv also have much more importance .

One should keep in mind that sadhana's should not be considered separated from each other as the many face of life are joined though a single person like a the same way all the sadhana are related to each other, since we have to see the life as its complet form, and it should be.. and each face has its own value or importance.

Dhyan :

Danta bhaye darou ddhanam karagrgswarnghatm trinetram |

Ghritabjya lingitambuddhputrayaa lakshmiganesham kanakamide||

Nikhil tatv –related amazing sadhanye

पहली बार गृहस्थ साधको /शिष्यों के लिए

निखिल शब्द कितना महत्वपूर्ण है यह तो वह व्यक्ति ही समझ सकता है जो उस प्रेम मे अभिभूत हुआ हो. जो उस विराटता का अंकन कर सका हो. जिसने जाना हो कि वह एक व्यक्ति न हो के एक सत्ता ही है जो ब्रम्हांड की गति है. जिनके सामने महान से महान तांत्रिक मांत्रिक योगी सभी नतमस्तक हो. जिनके इशारे पर देवी देवता कार्य करते है. उसी महान विराट सत्ता का एक अत्यधिक पावन नाम "निखिल" है. इस पीढ़ी का सौभाग्य है की निखिल ने अंशावतार लेकर हम सब के बीच मे रह कर हमें धन्य किया है. उन्हें देखने समझने जानने का सौभाग्य दिया है, और उनके शिष्य बनाकर एक महानतम कार्य करने के लिए अपने शिष्यों को कृतग्य किया.

लेकिन आज जो भी परिद्रश्य हमारे आसपास देखा जाता है तो पता चलता हैं की इस पवित्र नाम से राजनीति करने तक लोग नहीं चूके तो आश्चर्य होता है की लोग आखिर कब समझेगे की निखिल तत्व का अर्थ क्या है.?? क्या अर्थ है सदगुरुदेव शब्द का. यहाँ कई व्यक्ति इस "सदगुरुदेव " शब्द को अपने नाम के आगे लगाना चाहते है. इन व्यक्तियो को तो छोडो उनके शिष्यों ने तक उन्हें नहीं समझा.

किसी को स्वप्न के माध्यम से दर्शन हुए तो दुखी है की प्रत्यक्ष नहीं आए. किसी को अन्तश्चेतना मे दीक्षा प्राप्त करने की विधि दी जा रही है तो कहते पाया गया की नहीं वो प्रत्यक्ष हो के ही दीक्षा दे. कोई कहता है की मुझे उनके साथ घूमने जाना है? सौभाग्य की चरम सीमा होती है जब उनकी अमीद्रष्टि किसी पर पड़ती है. लेकिन एक बार भी अपने अंदर झांक के ये नहीं देखता है की हम ने आखिर ऐसा किया ही क्या है की उनके चेहरे पर एक स्मित मुस्कान आए, आखिर उनकी कृपाद्रष्टि को स्वीकार न कर के अपने नियम उन पर लादना और बाद मे उसे सदगुरुदेव के तरफ का प्रेम का नाम देना !

हकीकत तो ये है की ज्यादातर अंधीदौड मे लग गए है की उसको ऐसा मिला तो मुझे भी चाहिए, वो श्रेष्ठ है तो मुझे भी बनना है उसने ये किया है तो मुझे भी करना है; उनको सदगुरुदेव ने ऐसे दिया तो मुझे भी वैसे ही चाहिए और यह सब क्या है...प्रेम? एक बार खुद से ही यह प्रश्न ज़रूर पूछिएगा.

खेर, जैसे की पहले भी कई बार कहा जा चूका है इष्ट का अर्थ होता है की वह सत्ता की तरफ समर्पण जिसे हम ब्रम्हांडीय सत्ता कहते है या मानते है. वह कोई भी हो सकता है देवी देवता या गुरु भी. इसी क्रम मे निखिल को इष्ट स्वीकार कर कई प्रकार की नयी साधना पद्धतियो का प्रचलन हुआ, जो की मुख्य रूप से श्री निखिलेश्वरानंद से सबंधित रही है. यह साधनाए ज्यादातर सन्यासी शिष्यों के मध्य प्रचलित रही है. श्री की प्राप्ति तथा श्री तत्व की प्राप्ति के लिए भी कई साधनाए प्रचलित रही है.

जो की सदगुरुदेव से कई बार प्रार्थना करने पर उन्होंने प्रार्थना को स्वीकार कर अपने सन्यासी शिष्यों के माध्यम से प्रदान की. उन्ही अत्यधिक महत्वपूर्ण साधनाओ मे से श्री सायुज्ज साधनाओ के क्रम मे कुछ साधनाए मे आपके सामने रख रहा हू जो सभी साधना के लिए सामान्य नियम कुछ इस प्रकार है

- साधना रात्री काल मे १० बजे के बाद करे
- जप स्फटिक माला से हो. वस्त्र व् आसान सफ़ेद रहे. दिशा उत्तर हो.
- रोज मंत्र जप की संख्या व् समय एक ही रहे
- यथासंभव एक समय हल्का आहार, कम वार्तालाप, भूमि शयन तथा ब्रम्हचर्य का पालन करे.
- साधना के बाद माला को एक महीने तक धारण करे और उसके बाद माला विसर्जित करे.

आप इन साधनाओ मे से कोई भी साधना कर सकते हैं पर जिस क्रम से दिए गयी हैं उसी क्रम से करने पर ज्यादा लाभ , ज्यादा सफलता की प्राप्ति होती हैं .

NIKHIL TATV –ADBHUT SADHANAYE

The importance of the word Nikhil could only be understood by those who have gone through the love of the same, those who have been able to understand wideness of this word. Those who knew that he is not just a person but a controlling power with which this universe is running. In front of whom the biggest tantric and mantrik all are bowed, on whose order god and goddesses works.

That supreme power's holy and sacred name is Nikhil. This era have a boon that Nikhil took anshavatar and staying with us he obliged us, he gave us fortune to see understand and know him and by blessing us with a title of his disciple he spread love in the form of noble task. But today it is very sad and surprising to see people using this holy name for their politics around us will a time came when they get to know what does Nikhil tatva means? What does the term SadGurudev means?

Nikhil beej shreem beej sadhana

जीवन में श्री तत्व को पूर्णता से प्राप्त करने के लिए

श्री का स्थान जीवन मे अत्यधिक महत्वपूर्ण है. इस विद्या को भी महाविद्या का स्तर प्राप्त है. जीवन के चार मुख्य पक्षों मे अर्थ से सबंधित श्री अर्थात भौतिक सन्दर्भ मे धन की प्राप्ति के लिए यह साधना अपने आप मे एक विलक्षण साधना कही जा सकती है. तीन मुख्य शक्ति बीज मे "श्रीं " बीज का स्थान तो अपने आप मे साधको के मध्य ,पूर्ण ख्याति प्राप्त है इस महान मंत्र मे निखिल बीज को श्रीं बीज से सम्पुटित किया गया है. इस मंत्र का श्री पाप्ति के लिए अपना एक विशेष स्थान है.

इस साधना से साधक को श्री तत्व की प्राप्ति होती है. त्रिअक्षरी मंत्र की जितनी प्रशंशा की जाए उतनी कम है. साधक की धन सबंधी समस्याओ का निराकरण होता है.

साथ ही साथ सब से महत्वपूर्ण ये है की साधक की धनप्राप्ति के लिए उसे विद्या प्राप्ति भी होती है जिससे उसे धन वृद्धि मे भी कभी सहज ही कोई समस्या आने की संभावना नहीं रहती.

मंत्र :

श्रीं निं श्रीं

इस मंत्र का सवा लाख जाप का अनुष्ठान करना चाहिए इसके बाद इस मंत्र से शुद्ध धृत की 108 या 1008 आहुति अग्नि मे देनी चाहिए. इस मंत्र के अनुष्ठान को अधिकतम 21 दिनों मे कर लेना चाहिए

जिसके लिए पूर्ण अनुष्ठान संभव न हो उन व्यक्तिओ को इस मंत्र की रोज एक माला जाप करना चाहिए. ऐसा नियमित रूप से करने पर व्यक्ति को उपरोक्त लाभ प्राप्त होते है.

Nikhil BEEJ Shreem Beej Sadhana:

Nikhil aishvary sadhaNa

ऐश्वर्य को सम्पूर्णता से प्राप्त करने की साधना

ऐश्वर्य का अर्थ है सभी दिशाओ मे सफलता तथा नित्य उन्नति. जीवन से जुड़े सभी पक्षों मे आप निरंतर गतिशील रहे तथा गति एक समान मात्र न रहकर उसमे नित्य प्रगति करते ही रहे इस हेतु ऐश्वर्य साधना करना नितांत आवश्यक है. सदगुरुदेव ने समय समय पर साधको को ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए अनेको विधान प्रदान किये है. लेकिन एक साधना ऐसी भी है जिसमे पालक देव विष्णु को सदगुरुदेव मे स्थापित मान कर सदगुरुदेव को ऐश्वर्य तत्व के प्राधान्य मान कर की जाती है. परिणाम स्वरुप सदगुरुदेव अपने शिष्यों को प्रेम भाव से ऐश्वर्य की प्राप्ति का आशीर्वचन देते है

इस साधना को करने के बाद प्रकृति एसी घटनाओ का सर्जन साधक के आस पास कर देती है की समाज मे उसका स्थान बढ़ जाता है, पारवारिक समस्याओ का निराकरण हो जाता है और एक सद्गृहस्थ व्यक्ति की श्रेष्ठ स्थिति की प्राप्ति सहज ही संभव हो जाती है.

इस साधना को करने से पूर्व साधक सदगुरुदेव से मन ही मन अनुमति ले. और साधना शुरू करे. साधना शुरू करने से पूर्व साधक को सदगुरुदेव के अंदर स्थापित विष्णु देव का मन ही मन ध्यान करे.

इस साधना मे साधक को निम्न मंत्र के 21000 जाप करने है जो की 11 दिनों मे हो जाने चाहिए. साधना के अंतिम दिन 108 आहुति इसी मंत्र से शुद्ध घी से प्रदान करे

मंत्र : ॐ निं ऐश्वर्याधिपतये नमः

यह महत्वपूर्ण साधना को संपन्न करने के बाद साधक को सदगुरुदेव की तरफ से ऐश्वर्य प्राप्ति का आशीर्वचन मिलता है.

****

Nikhil AishwAry sAdhANA

The meaning of aishwarya is daily progress and success. In the every aspects of the life one may remains active & progressive and the progress should no remain constant but keeps on growing more for that purpose one should do aishwary sadhana.

Nikhil bhagyodaya sadhana

दुर्भाग्य को हटा सकने मैं समर्थ एक साधना

कर्म के बंधनों से इस पृथ्वी लोक मे हमारी गति वर्तमान के रूप मे आकार लेती है. इसी क्रम मे भाग्य है जिस प्रकार से हमने हमारे कार्य इस जन्म या पूर्व जन्म मे किए है उसका उचित अनुचित परिणाम ही भाग्य का लेखा जोखा है. कई बार यु होता है की विभिन्न परिस्थिति सामने आ जाती है जिसमे कई लाभ हो सकते है लेकिन आखरी वक्त मे वह किन्ही कारणों से हम उस लाभ से वंचित रह जाते है. या फिर एक खुश हाल जिंदगी मे कई प्रकार की समस्याए अचानक ही आ जाती है. तब उद्गार निकलते है की हमारे भाग्य मे ही दोष है. तो आखिर इस भाग्य को कैसे बदला जाए?

भाग्योदय के लिए भी कई विधान दिए जा चुके है लेकिन एक शिष्य के लिए निखिल से सबंधित भाग्योदय साधना का स्थान तो दूसरे विधानों से ऊपर ही रहेगा.

इस साधना के लिए साधक को एक अखंड दीप जलना चाहिए जो की जितने दिन तक साधना चले उतने दिन तक निरंतर प्रज्वलित रहना चाहिए. अगर बीच मे दीपक खंडित हो जाए तो साधक को साधना खंडित मान कर उसे फिर से करना चाहिए

साधक को चाहिए की वह निम्न मंत्र के 60,000 जाप 21 दिन मे पूरे कर ले.

मंत्र :

ॐ निं पूर्ण गुरूवै नमः

साधना को कर लेने पर साधक के चेहरे पर एक नया तेज छा जाता है, जिस परिस्थिति की कामना की जाती है वह परिपूर्ण होती है और साथ ही साथ आगे की साधनाओ के लिए भी सफलता की संभावना को यह साधना बढ़ा देती है. साधक को मन्त्र जप काल मे सदगुरुदेव की उपस्थिति का भान होता ही है. यह साधना से भाग्य कितने भी रूठे हो, भाग्योदय होता ही है.

****

Nikhil Bhagyoday SadhaNa:

Nikhil vaibhav sadhaNa

वैभवशाली जीवन दिलाने में समर्थ एक अद्वितीय साधना साधना

वैभव का अर्थ है की जो कुछ भी हमारी न्यूनता हो उसे हम दूर करे और साथ ही साथ जो भी ऐश्वर्य हमारे पास है उसका हम पूर्ण रूप से लाभ उठा सके. वैभव साधनाओ के बारे मे सदगुरुदेव ने कहा है की अगर हमारे सामने ५० विभिन्न मिठाई हो लेकिन पेट मे दर्द है, मधुमेह है तो क्या फायदा. सुख और ऐश्वर्य की प्राप्ति मात्र से क्या होगा जब तक हमारे पास उसके उपभोग के लिए बल न हो.

भोग , भौतिक जीवन का एक अंग है. भोग है इसी लिए मोक्ष है. इस पक्ष को भी भली भांति समझना चाहिए और उसके लिए ऐश्वर्य के साथ ही साथ वैभव चाहिए. आप एक रेशमी कपडा लाए उसे सिलवाया लेकिन वो जब तक आप धारण ही न कर सके तब तक वह किसी काम का नहीं, अगर आप उसे धारण कर लेते है तो ही आपके उस ऐश्वर्य की सार्थकता है

वैभव से सबंधित इस निखिल साधना को समपन्न करने के लिए साधक को निम्न मंत्र के 11000 जाप 11 दिनों मे करना चाहिए. ताज़ी मिठाई का भोग लगाये तथा साधना के बाद उसे प्रसाद मे ग्रहण करे. साधना के दिनों मे गुरु चिंतन मे लीन रहे

ॐ निं कोषाधिपतये पूर्ण वैभव प्रदायमे नमः

इस साधना से साधक सभी प्रसस्त मार्ग मे विजय प्राप्त कर लेता है और भौतिक जीवन का पूर्ण रूप से उपभोग करता है.

Nikhil VaibhaV sadhaNa:

The true meaning of vaibhava is to remove all the deficiency and with that what so ever amount of the prosperity is there with us, we becomes able to have complete benefit of it. About vaibhav sadhana sadgurudev had told that if we have 50 different sweets infront of us and we have stomach pain, or diabetes then what is the use. What will happen with just gaining prosperity unless you don't have capacity to use that. Bhoga is an important aspect of material life. Moksha is there because bhoga is there. One should understand this side even and for that one needs vaibhava with aishwary. You took a fabric cloth, made a cloth out of it but if you cannot wear there is no use of it, if you can wear it then only your prosperity has a meaning

Nikhil tatv shrisaayujy sadhaNa

निखिल की तत्वशक्ति श्री विद्या साधना

निखिल तत्व के बारे मे लिखने की इस ब्रम्हांड मे सामर्थ्य नहीं है. जिस तत्व से निखिल गति का सञ्चालन करते है, अस्तित्व का बोध करते है वही तत्व शक्ति निखिल तत्व है. उस तत्व को समझने के बाद क्या कुछ बाकी भी रहता है? चाहे वह सदगुरुदेव से सन्देश प्राप्त करना हो या उन्ही के निदर्शन मे साधना करना या फिर सतत निखिलमय बन के जीवन को स्वर्णिम बना देना. फिर कुछ भी तो बाकी नहीं रहता.

हालाकि यह पूर्ण रूप से सन्यस्त साधना है और इसका पूर्ण विधान भी अत्याधिक श्रम साध्य और दुस्कर ही है. निखिल की तत्वशक्ति श्री विद्या है. निखिल तत्व अपने आप मे पूर्ण शिव का परिचारक है जब वह तत्व , शक्ति से गतिशील होता है तो वह शक्ति श्री विद्या के रूप मे सामने आती है. इस देव दुर्लभ साधना का एक लघु विधान सभी भाई बहिनों के मध्य रखना चाहूँगा

इस साधना के लिए साधक का पूर्ण ध्यान व् समर्पण सिर्फ और सिर्फ मात्र सदगुरुदेव निखिल की तरफ होना चाहिए. यह साधना 30 दिनों की है जिसमे हर रोज 11माला मंत्र जाप करना चाहिए, अगर साधक चाहे तो 21 माला मंत्र जाप कर सकता है.

निं पूर्ण सिद्धिं निं श्रीं निखिलेश्वराय नमः

इस साधना का महत्व शब्दों मे नहीं आँका जा सकता सिर्फ इसे महसूस ही किया जा सकता है ठीक कोई मिठास, सुगंध या मनोहर द्रश्य की तरह.

(साधक इन साधनाओ मे से किसी भी साधना को कर सकता है लेकिन इसे क्रम मे करने पर ज्यादा उचित है)

****

Nikhil tatv shree saayujj sadhana:

There is no one capable in the universe to write about Nikhil tatva. The tatva with which Nikhil controls the powers, can form a realization, that tatva power is Nikhil tatva. Is there anything left after understanding that tatva?

अंक विज्ञानं

ज्योंतिष के कितने अधिक आयाम हैं या कितनी अधिक उचाई संभव हो सकती हैं हम कभी समझ ही नहीं पाए , हाँ यह जरुर कर लिया की कुछ किताबे पढ़ कर अपने आपको ही सब कुछ मान कर बैठ गए , सदगुरुदेव ने भी कभी कहा था की वे सोचते थे कि कोई तो इन प्रारंभिक ज्ञान की बाते पढ़ कर उच्चस्तरीय बाते के लिए सामने तो आता और कहता कि हमें उस उच्चता पर जाना हैं पर ,,,,,

साथ ही साथ यदि आप परम गुरुदेव का पत्र जो उन्होंने सदगुरुदेव को लिखा था इसे आप " तांत्रिक सिद्धिया " में पढ़ सकते तब आप समझ पाएंगे की ज्योंतिष विज्ञानं के लिए उनके मन भी कितनी उच्चता रही हैं,

हम इन लेख माला में कुछ ऐसे ही विषयों की ओर आपका ध्यान करवाते रहे हैं, हाँ यह जरुर हैं कि इसे मात्र एक उच्चस्तरीय पाठक और विद्वानों के लिए ही नहीं लिखा जाये बल्कि सामान्य भाई बहिन भी कुछ तो समझ सके ... जान सके , ,,फिर धीरे धीरे इन विषय से सम्बंधित उच्च स्तरीय बाते भी सामने आती ही जाएगी क्योंकि इस पथ पर अभी तो हम प्रारंभिक कदम ही उठा रहे हैं.

और इस विज्ञानं में कदाचित सरल सा लगने वाला विज्ञानं हैं अंक विज्ञानं,,

जो भी बाते मैं लिख रहा हूँ उनको और अच्छे से समझने के लिए आप सदगुरुदेव द्वारा लिखित "अंक दीपिका" और " अंक ज्योतिष" किताबे पढ़ कर अच्छी तरह से आत्मसात कर सकते हैं .

इस विज्ञानं के लिए आपको कोइ ज्यादा उच्चस्तरीय गुणा भाग नहीं करना पड़ता हैं सिर्फ साधारण जोड़ करते बनता हो बस इतना ही अधिक हैं,,,

सदगुरुदेव कि ये किताबे मेरे घर में , मेरे को बाल्य काल में ही मिल गई थी , तब से मेरा शौक हो गया की किसी भी नंबर को देखूं और लग जाता उसे जोड़ने में की यह किसी तरह कि क्या यह अंक किसी त्तरह से मेरे जन्मांक से मिल जाये अब यह जन्मांक क्या हैं? यदि आपकी जन्म तारीख 21 हैं तो 2+1 =3 , या 25 हैं तो 2+5=7 हुयी और 10हैं तो 1+0=1 हुयी या 28 हैं तो 2+8=10=1+0=1 मतलब आपको अपने जन्म तारीख के अंक को तब तक आपस में जोड़ना हैं

जब तक की सिर्फ एक अंक न आये और यही आपका जन्मांक हैं.

और फिर इसे सदगुरुदेव द्वारा लिखित किताब में देखे उसमे सदगुरुदेव कमांक से इस अंक की विशेषताए बताई हैं, पर जब मैं अपने जन्माक की विशेषताए देखी तो लगा की मेरे को दृष्टी गत रख कर ही सारा उस अंक के बारे लिखा गया हैं मुझे बहुत ही आश्चर्जनक लगा ,

अब तो हर दिन मेरे लिए आने नए आश्चर्य जनक चीजे सामने लाता .. मैंने ध्यान से देखा तो पता चला की मुझे जो भी अंक वार्षिक परिक्षा में मिले या जो भी रोल नंबर मिले इन सभी में यह अंक इतनी बार आने लगा की मेरा विस्वास और आकर्षण बढ़ने लगा फिर तो मुझे ट्रेन में बिर्थ नंबर से लेकर जहाँ भी देखों यह अंक में या तो शुभ या अशुभ जो भी होता उसमे वह होता ही था . अब मैंने अब थोडा और गंभीरता से अध्ययन करना चालू किया .

तब पाया की न केबल इन जन्माक का बल्कि जो भी हमारा प्रचलित नाम हैं उसके अंको के वर्णों कुल योग भी बहुत अर्थ रखता हैं वह योग को हमारे जन्माक से मित्रता या फिर मैच करना ही चाहिए ही , पर यह कैसे पता लगाये , इसके लिए उस किताब में एक तालिका .टेबल दी हुयी हैं .

इस टेबल में अंग्रेजी वर्णमाला के हर अक्षर के लिए एक अंक निर्धारित हैं पर अपने नाम के हिसाब से उस से एक एक वर्ण के लिए नंबर चुनते जाए और फिर देखें की क्या उसका टोटल/कुल योग क्या बनता हैं, उस को सदगुरुदेव ने अच्छी तरह से समझाया हैं . और इसे उन्होंने अनेक उदा ह रण दे कर समझाया हैं .और आप यदि उसके हिसाब से अपने नाम कि spelling में परिवर्तन कर अपने जीवन को उच्चता कि तरफ ले जा सकते हैं .

पर इतना होने के बाद भी कई लोगों के मन में यह बात उठेगा की चलिए मेरा जन्मांक का असर तो दिख गया पर क्या यह सब पर यही नियम लागु होगा नही नही कई बार यह नहीं भी संभव होता हैं तब,

तब अंक शस्त्रियों ने एक नयी व्यवस्था दी जिसे संयुक्तांक कहते हैं इसका मतलब आपनी जन्म तारीख + महिना+ वर्ष जोड़ को एक अंक तक ले आये अब देखे कि क्या यह अंक का कुछ अर्थ हैं ...

जैसे 3 nov 1990 = 3+1+1+1+9+9+0=24=2+4=6

या फिर आप केबल अपने जन्म वर्ष का योग करके देखे, अनेको उदाहारण में यह भी पाया गया हैं,

जैसे 1968 =1+9+6+8 =24 = 2+4= 6

और इस तरह से आप वह संयुक्तांक सकते हैं जिसकी भूमिका आपके जीवन में रही हैं , और उस अंक को पाने जिस भी शुभ कार्य में उपयोग करेंगे तो और भी सफलता आपको पास होगी ही . पूज्य सदगुरुदेव की किताबे इस विषय में पढ़े आपको और भी ज्यादा विस्तृत ज्ञान प्राप्त होगा ही .

****

Some point about numerology

There many dimension of astrology and one can get such a height of gyan/divine knowledge can be possible but we can not understand that , yes that what we did that merely reading some books and consider or proclaimed about us that we knew every thing, even once Sadgurudev ji has said that they thought that some one would approach to him for advanced stages gyan of this science and say to him that I want to have perfection but…

In addition to that if you read a letter written by param Gurudev ji to Sadgurudev ji , than you can understand what is the place of this science in his heart ., in this series we will introduce to you some of such a aspect but it Is sure that this will not be always for only scholar and well expert one but also to our common brother /sister who do not have basic knowledge about this science too. than slowly slowly moved to the higher aspect and advanced aspect too.

And in this dimension , may be very simple looking dimension is numerology.

Whatever I am writing here to get more understanding and more aspect you can also read “ank deepika” and “ank jyotish” these two book of Sadgurudev ji

In this numerology , in the beginning you do not need to expert in astrology or in maths , but having knowledge of basic maths like addition will be satisfactory.

Nikhil tatv & shri tatv Most hidden secret revealed first time

इन्हें तो आत्मसात हर शिष्य को करना ही हैं

अपनी जिज्ञासाओं के शमन हेतु बहुदा मैं सदगुरुदेव जी से प्रश्न किया करता था और उनके निर्देशानुसार भिन्न भिन्न सन्यासियों या साधकों के समक्ष अपनी जिज्ञासा के समाधान हेतु प्रश्न रखा करता था। इसी क्रम में जब बात गुरु तत्व या **निखिल तत्व** को आत्मसात करने की आई तो इस हेतु मुझे सदगुरुदेव ने मुझे **सोऽहं स्वामी** जी के पास भेजा,स्वामी जी ने सम्पूर्ण सिद्धियाँ मात्र गुरु साधना के द्वारा ही प्राप्त की हैं और उन्होंने किसी भी साधक के जीवन का चरम लक्ष्य **सिद्धाश्रम** प्रवेश गुरु साधना के द्वारा ही प्राप्त किया है।क्योंकि निखिल तत्व अपने में वृहद अर्थो का समावेश किये हुए है, अतः यहाँ ज्यादा विस्तार में ना जाकर मात्र उतना ही लिखा गया है ,जो की हमारे लिए आवश्यक है,विषय को बिलकुल भी खीचने की कोई कोशिश नहीं की गयी है।

प्र० **निखिल तत्व क्या है,और उसका हमारे लिए क्या महत्त्व है** ?

उ० सृष्टि का सम्पूर्ण विस्तार अर्थात वस्तु,ज्ञान,ब्रम्हांड,तत्व और तेज जिस तत्व में समाहित हो जाये उसे अखिल कहा जाता है और उसी अखिल को अपने में समाहित कर लेने का तत्व या भाव **निखिल** कहलाता है। इस तत्व की प्राप्ति के बाद अज्ञान का पर्दा हटकर ज्ञान का प्रकाश फैल जाता है। और सभी दुखों की निवृत्ति होकर केवल और केवल आनंद का साम्राज्य प्रसारित होता है। अधोगति की समस्त संभावनाएं तिरोहित हो जाती है और रह जाती है तो मात्र उर्ध्व गति। इसे अत्यधिक जटिल शब्दों में भी परिभाषित किया जा सकता है, परन्तु यदि सरल शब्दों में उसे समझना हो तो इससे सरल कुछ और नहीं कहा जा सकता है। क्यूंकि इस तत्व की विवेचना करने में तो समस्त शास्त्र और वेद भी नेति नेति कह उठते है। कहा भी गया है की

"असित गिरी समं स्यात कज्जलं सिंधु पात्रे ----------

---------------------------------- पारं न याति"

इसलिए अर्थ वे ही महत्वपूर्ण होते हैं जिन्हें ह्रदय सहर्ष स्वीकार कर ले।तब भी समझने के लिए एक उदाहरण से इसे समझा जा सकता है :-

द्वापर युग में महाभारत के युद्ध काल में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अपना ब्रम्हांडीय स्वरुप दिखाया था ,पर उसके पहले वे लगातार गीता का उपदेश देकर उसे प्रेरित करते रहे की तुम युद्ध करो और यही तुम्हारी नियति है इसी नियति को लेकर तुम जन्मे हो। परन्तु अर्जुन कदापि तत्पर नहीं हो पा रहे थे उस मनोभाव को एकाकार करने के लिए ,आखिरकार जब उपदेश से उसका हल नहीं निकल पाया क्यूंकि कई बार शिष्य के मनोमष्तिष्क पर अज्ञान की इतनी धुंध चढ़ी होती है की वो सद्गुरु द्वारा की गयी विवेचना को स्वीकार नहीं कर पाता है

उस अखिल सत्य को अंगीकार नहीं कर पाता है और ऐसी स्थिति में उसका पराजित होना अवश्यम्भावी होता है तो ऐसे में सद्गुरु को अपने निखिल तत्व का समावेश शिष्य में करने के लिए उस पर दिव्य नेत्र जागरण की अद्भुत क्रिया करनी ही पड़ती है ,ठीक वैसा ही जैसा की भगवान श्री कृष्ण के समझाने पर भी जब अर्जुन उनकी गूढ़ बातो को नहीं समझ पा रहा था तो भगवान को अपना विराट रूप दिखाना ही पड़ा।विशेषता इस बात में नहीं थी की अर्जुन ने उस विराट स्वरुप को देखा

अपितु विशेषता ये थी उस युद्ध क्षेत्र में बीच रणभूमि में उसे स्वयं जगद्गुरु से **निखिल-तत्व दर्शन दीक्षा** प्राप्त हुयी ,जिसके बाद उसके मनो मष्तिष्क से संशय-असंशय का भाव ही समाप्त हो गया और वो युद्ध के लिए पूरी तरह तत्पर हो पाया। महाभारत प्रतीक है ये समझाने के लिए की जीवन में बहुत बार जब हम आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ रहे होते हैं या ये कहा जाये की अपने अस्तित्व को समझने के लिए हम जूझ रहे होते हैं तब ऐसे में सद्गुरु निरंतर उस युद्ध को जीतने के लिए हमें अपने दिव्य वाक्यों से,विचारों से प्रेरित करते रहते हैं,परन्तु हमारी सामान्य मानव बुद्धि उस विचार को आत्म एकाकार कर ही नहीं पाती और तब ऐसे में पराजय निश्चित ही रहती है।

परन्तु यदि मनुष्य सद्गुरु से निखिल तत्व का ज्ञान प्राप्त कर ले तो इस पराजय को न सिर्फ टाला जा सकता है अपितु जीवन समर में पग पग पर सफलता प्राप्त होती ही है।

प्र० **निखिल तत्व की प्राप्ति कैसे संभव है** ?

उ० सबसे पहले ये समझना आवश्यक है की निखिल तत्व सद्गुरु प्रदत्त दिव्यता की पराकाष्ठा है ,इसके बाद कुछ भी शेष नहीं रह जाता है ,और ये सद्गुरु द्वारा करुणा के वशीभूत प्रदान किया गया वो प्रज्ञा तत्व होता है जो शिष्य को सम्पूर्ण भावों के मध्य ,सभी परिस्थितियों में स्थिरप्रज्ञता प्रदान कर देती है,तब ऐसे में उस शिष्य के ना सिर्फ दिव्य नेत्र ही जाग्रत हो जाते हैं ,अपितु भाव नेत्र,ज्ञान नेत्र और प्रेम नेत्र भी पूरी तरह खुल जाते हैं,तब प्रकृति का कोई रहस्य उससे छुपा हुआ नहीं रह सकता।

क्योंकि प्रत्येक नेत्र की अपनी एक विशेषता होती है,जैसे सामान्य भौतिक नेत्रों से हम प्रकृति की दिव्यता का अवलोकन नहीं कर सकते हैं ठीक वैसे ही दिव्य नेत्रों से हम भौतिक जगत और भाव जगत को नहीं देख सकते हैं। भाव नेत्र की अपनी विशेषता होती है ,ज्ञान नेत्र की अपनी और प्रेम नेत्र की अपनी। पर ये भी सत्य है की मात्र सद्गुरु के चरणों का आश्रय लेकर ही इन साधनाओं, विधियों और क्रियाओं की प्राप्ति की जा सकती है।

क्यूंकि इस तत्व को कोई आडम्बरी या स्वयं भ्रमित रहने वाला पाखंडी प्रदान कर ही नहीं सकता, और ये सत्य है की जिसके खुद के आत्मा रुपी दीपक में ज्ञान का तेल नहीं है वो भला कैसे किसी और को प्रकाशित कर सकता है। जिसे सत्य को देखने और सुनने के लिए किसी और की जरुरत होती है वो भला कैसे आपको सत्य से परिचित करवा सकता है, जो खुद भ्रमित हो, राग द्वेष से भरा हुआ हो भला वो औरों को कैसे मार्ग पर ला सकता है, जिसके खुद के पास निखिल प्रज्ञा नहीं हो वो किसी और को निखिल तत्व दे ही नहीं सकता।

नवचक्र तंत्र में कहा गया है की "**जो पिंड,पद,रूप और रूपातीत को सम्यक रूप से जानता है,वही गुरु हो सकता है**"। अर्थात पूर्ण और शुद्धतम ज्ञान ही गुरु का लक्षण है। **मालिनी तंत्र** में भी कहा गया है की मुमुक्ष के लिए स्वभ्यस्त गुरु ही श्रेष्ट है अर्थात जिसने खुद अभ्यास न किया हो वो आपको कैसे कुछ प्रदान कर सकता है। **तांत्रिक मतानुसार सद्गुरु मात्र ही परमशिव होते हैं अन्य नहीं।** अतः निखिल तत्व रुपीये प्रज्ञा शिष्य को स्वयं वो परब्रह्म ,वो प्रकृति पुरुष ही दे सकता है ,शिष्य के जीवन का सौभाग्य ही होता है की उसे सद्गुरु की प्राप्ति होती है और उनके चरणों का सहारा लेकर वो उस परम तत्व निखिल तत्व को आत्म एकाकार कर सकता है।

केवल वे सद्गुरु ही अनुग्रह कर सकते हैं। किसी भी स्थिति में ये सामान्य घटना नहीं हो सकती है। शिष्य की विशेषता मात्र ये होनी चाहिए की वो पूर्ण आत्म-अनुसन्धान के मार्ग पर चलने के लिए तत्पर हो फिर स्वयं वो निखिल ही अपने तत्व को उसे प्रदान करते ही हैं। योग भाष्य में कहा भी गया है की –

"तस्य आत्मानुग्रहाभावे: अपि भुतानुग्रहः प्रयोजनं।

ज्ञान धर्मोपदेशेन कल्पप्रलय महाप्रलयेषु संसरिणः पुरुषां उद्धरिष्यामीति॥"

अर्थात उस परब्रह्म का अपना कोई प्रयोजन न होने पर भी कल्प प्रलय और महाप्रलय में अनुग्रह योग्य जीवों को अपने उपदेशों एवं क्रिया द्वारा ज्ञान एवं धर्म तत्व प्रदान कर उस परम सत्य की प्राप्ति करवाना ही उसका उद्देश्य है। ये परब्रह्म ही निखिल है अनादि गुरुतत्व है और सृष्टि के प्रारंभ से निखिलेश्वर रूप में शिष्यों और साधकों को निरंतर आनंद प्रदान कर श्री **निखिलेश्वरानंद** कहलाते हैं। जो स्वयं ही निखिल हो वही निखिल तत्व की प्राप्ति करवा सकता है।

निखिल तत्व प्राप्त साधक के लिए तंत्र के तीनों भावों और सातों आचारों की साधना पद्धति का रहस्य स्पष्ट हो जाता है।

आज बहुतेरे को तो ये भी पता नहीं होता है की आखिर ये भाव क्या होते हैं ,परन्तु साधक के लिए ये भाव ज्ञान होना अति आवश्यक है। क्यूंकि तभी सृष्टि की आदि शक्ति और परम सौभाग्य की दात्री **श्री साधना** के लिए आपकी योग्यता अनुसार भाव आपको सद्गुरु प्रदान करते हैं।

वस्तुतः निखिल तत्व और श्री को विभक्त किया ही नहीं जा सकता ये परस्पर एक दुसरे से गुंथे हुए हैं।निखिल तत्व प्राप्त किये बगैर श्री विद्या के रहस्य को साधक आत्म सात कर ही नहीं सकता।

जीवन में यदि पूर्णता पानी है तो ये दोनों ही सूत्र आत्मसात होने ही चाहिए। खैर वे भावत्रय हैं

दिव्य भाव

वीर भाव

पशु भाव

और सात आचार हैं:-

वेदाचार

वैष्णवाचार

शैवाचार

दक्षिणाचार

वामाचार

सिद्धान्ताचार

कौलाचार

इन्ही भाव और आचारों पर तंत्र व साधना की सभी पद्धतियाँ निर्धारित होती हैं, सभी पंथ और संप्रदाय इन्ही पर आधारित होते हैं।

प्र० यहाँ श्री से क्या तात्पर्य है?

उ० इसके लिए सबसे पहले श्री का अर्थ समझना होगा ,समग्र संसार माया से ही उद्भव होता है मलिन संसार अशुद्ध माया से उत्पन्न है और उसका प्रधान गुण आसक्ति ,दु:ख, निराशा,अविद्या और विनाश है।इन्ही दुर्गुणों का जब विनाश जिस ज्ञान से होता है उसे श्री कहा जाता है।अर्थात मलिन माया का विनाश करने पर जिस शक्ति की साकरता चंहु और दिखती है उसे ही जगत पालनकर्ता श्रीमन नारायण की शक्ति महामाया कहा जाता है।

श्री साधना की शक्ति से ही साधक इन महामाया के प्रभाव से मुक्त होकर अपना अभीष्ट लक्ष्य पा सकता है। तब कुछ भी दुर्भग्य नहीं होता है ,सब कुछ सौभाग्य में परिवर्तित हो जाता है। तब लक्ष्मी भी मात्र चंचला लक्ष्मी नहीं होती है अपितु श्री युक्त होने के कारण वो कल्याणकारी व स्थिर भी हो जाती हैं। और इसी श्री विद्या का सायुज्यीकरण निखिल तत्व से करने पर ब्रम्हांडीय रहस्यों पर छाया अशुद्ध माया का तिमिर अंधकार पर्दा हट जाता है और सब कुछ स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है।

प्र० **निखिल तत्व प्राप्ति का क्या क्रम होता है** ?

उ० वस्तुतः निखिल तत्व प्राप्ति की ये एक ही साधना होती है जो की **सिद्धाश्रम प्रणीत** हैं और उच्च कोटि के साधक,सिद्ध इसे संपन्न करते ही हैं ताकि वे निखिल तत्व को पूरी तरह से आत्मसात कर सके और उन प्रकृति रहस्यों से परिचित हो सके जो की आगामी हैं दुर्लभ और अप्राप्य हैं। और इस निखिल तत्व प्राप्ति साधना के ३ चरण होते हैं।

कभी सदगुरुदेव ने स्वयं ही इसके समस्त चरणों को अलग अलग समय पर समझाया था ।इन साधनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही है की इसमें किसी भी प्रकार का आडम्बर नहीं होता है और न ही ये मंत्र कीलित ही होते हैं, प्रकृति स्वयं ही इनका उत्कीलन कर देती है। और यदि साधक पूर्ण स्थिरचित्त होकर इन मन्त्रों का जप करता है तो उसे मनोवांछित सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

१-**पूर्ण निखिलेश्वरानन्द प्रत्यक्ष तत्व सिद्धि साधना**- इस साधना के द्वारा साधक सीधे ही सदगुरुदेव द्वारा अभीष्ट दीक्षा की प्राप्ति करता है। उसकी एकाग्रता की गहनता उसे ध्यानावस्था में या स्वप्न में अभीष्ट दीक्षा सदगुरुदेव द्वारा प्राप्त करवाती ही है , और वो निखिल तत्व युक्त होता ही है ।जो किसी भी काल की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

२- **पूर्ण शक्तिपात सिद्धि साधना** - इस साधना के द्वारा साधक ने पूर्व जीवन,पूर्व काल में जो भी दीक्षा ली हो उन शक्ति को तो पूर्ण रूपें प्राप्त करता ही है साथ ही साथ वर्तमान में भी दिव्य सिद्धों के द्वारा जो शक्तिपात उस पर परोक्ष या अपरोक्ष रूप से होते हैं ,उन्हें भी वो संगृहीत कर प्रयोग कर पाने में समर्थ हो पाता है।

३-**अद्वितीय ब्रम्हत्व गुरु साधना** – सदगुरुदेव के पूर्ण विराट रूप के दर्शन और उनका आत्म एकाकार करने के लिए तृतीय और अंतिम चरण जिसके बाद कुछ और एक शिष्य के लिए बाकि नहीं रह जाता है।

ठीक इसी प्रकार **श्री साधना** की सम्पूर्णता दो चरणों से होती है :-

१- **निखिल तत्व सायुज्य भगवती राज राजेश्वरी साधना**- जीवन की आधारभूत साधना ,जिसके द्वारा अभीष्ट सफलता पाता हुआ साधक पूर्ण श्रीयुक्त जीवन प्राप्त कर पाता है।

२- **श्री प्राप्ति हेतु महानिशा साधना के ५ प्रयोग** – दीपावली की इतनी महत्ता क्यूँ है और इसके पांचो दिन कौन से विधान किये जाते हैं की जिससे एक पूर्ण क्रम होता है,आयु,आरोग्य,रक्षा,धन और अभीष्ट प्राप्ति का।

===

Q.**What is Nikhil Tatva, and whats its importance to us?**

A.The Creation's enlargement i.e. substance, knowledge, universe, real state and energy or spiritcomprised in the state called Akhil (Whole). And the same Akhil when comprises in the essence or notion is Known as **"Nikhil"**... After realizing such type of state the layer of lack of knowledge gets clear and light of knowledge is blowout everywhere.. And then after getting relieved with all pains and grieves only happiness remains in life….

All possibilities of degradation gets concealed and if something remains is only and only advancement personal growth. Well this can be defined in difficult words, but if it would have been fathom properly then besides such easy word no other words can be expressed more. And whatever had been explained above is in the simplest form. Because whenever explanations regarding this topic have been taken, even all Shastras and Vedas found helpless to put in easy words. Even this has been said, -

" Asit giri samam syaat kajjal sindhu paatre……..

……………………………………Paaram na Yaati"

Therefore only such Connotation is important which is easily acceptable by heart. Still this can be explained by one example:-

In Dwapar Yug Mahabharata, while the time of war, God Krishna had shown the (Bhrahmaandiya) universal form to Arjun, but before showing such form he always insisted him to do war by indicating Bhagvad Gita's divine thoughts and that's your fortune. And you are born with this destiny only. But Arjun was reluctant to imbibe this truth.

Ultimately after all such indication he failed to understood what Krishna wants to tell him because sometimes it happens when Sadguru himself tells truth but still shishya is not ready to imbibe it because of blurredness. In resultant he dont even noticed that the fact which he had been denied is told by his own Sadguru. In such situation he is bound to face defeat and So in such circumstances Sadguru penetrate his Nikhil tatva in Shishya.

For doing such tedious procedure Sadguru does the Divya Netra Jaagran wonderful activity exactly as Arjun when he found incapable to grasp the secret knowledge told by Lord Krishna so Lord Krishna had to express his Viraat swarup (Universal form) for him.

Purn nikhileshwaranand Prtyksh tatv siddhi sadhana

अब हमारे प्राणाधार पूज्य सदगुरुदेव दूर कहाँ ...

जीवन में कई बार मन बैचेन हो जाता है ये सोच कर की काश हमने सदगुरुदेव को देखा होता ,उनका साक्षात् किया होता ,उनसे शक्तिपात और दीक्षा पाई होती ,पर आज ये कहाँ संभव है ??

पर सत्य इससे बिलकुल विपरीत है। मुझे याद है की जब सदगुरुदेव ने ये उद्घोष दिया था की "**आने वाली पीढियाँ याद करेंगी की तुमने निखिलेश्वरानंद को देखा है**" और ये कोई सामान्य उद्घोष नहीं था, अपितु इसके पीछे उनके मन की पीढा भी थी, वे कालदृष्टा थे जिनके लिए भूत,वर्तमान,भविष्य कुछ भी अगोचर या छिपा हुआ नहीं था ,और इससे भी बड़ी बात ये थी की वे दूरदृष्टा थे जिन्होंने अपनी सभी योजनाये अपने जीवन में ही क्रियान्वित कर दी थी ,जिस के कारण सभी शिष्यों को उनका साहचर्य निरंतर प्राप्त होता रहे।

कितनी विचित्र बात है ना की हम तब ये विश्वास करते थे की सदगुरुदेव नित्य प्रति शिष्यों को दिशा निर्देश दिया करते हैं। परन्तु आज स्थिति बदल गयी है ,आज हमारी श्रृद्धा की डोर इतनी कमजोर हो गयी है की हमारा कुतर्की मन कदापि ये मानने के लिए तैयार नहीं होता है की सदगुरुदेव हमसे संपर्क करेंगे, या हमें साधना या जीवन सम्बन्धी दिशा निर्देश देंगे। इतने कमजोर विश्वास पर तो हमारा साधना जीवन टिका हुआ है।मैं यहाँ किसी तत्व विवेचना की बात ही नहीं कर रहा हूँ।

कोई गूढ़ ज्ञान की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। यदि यहाँ कुछ बता रहा हूँ तो वो मात्र उन शिष्यों की पीड़ाएँ हैं जिन्होंने उस परमगुरु ,उस परम सिद्ध योगेश्वर के साहचर्य लाभ की अभिलाषा में ना जाने कितनी रात तकिये में मुँह छिपाए रोते हुए बिताए हैं, असंख्य रात्रि तकिये के कपड़ो पर आंसुओं से सदगुरुदेव की आकृति उकेरते रहे ।पर क्या किसी ने उनकी पीड़ा समझी ,नहीं ना।

क्या ये सब असंभव है ??

कदापि नहीं बहुतेरे साधक इस बात के गवाह हैं की सदगुरुदेव ने भावावस्था, ध्यानावस्था या स्वप्नावस्था में आकार उन्हें उनकी जिज्ञासाओं का समाधान दिया या उनकी इप्सित दीक्षा प्रदान कर उन पर अपने अनुग्रह की अजस्र वर्षा की। तंत्र की सम्भावना असीम है ,जहाँ से मानवीय सोच की सीमा समाप्त होती है वहाँ से तंत्र का आरंभ होता है।

सदगुरुदेव ने अपने गृहस्थ जीवन में ही इन सूत्रों को अपने शिष्यों को प्रदान कर दिया था और वे सदैव कहते थे की मेरे शिष्य मेरे ज्ञान की पूँजी को सदैव संभाले रहेंगे।

मेरा ज्ञान वास्तविक तौर पर सदैव इनके साथ रहेगा ,क्योंकि इनका मेरी भौतिक संपत्ति से कोई लेना देना नहीं है अपितु इन्हें मेरे ज्ञान की प्यास है, और मैं इन्हें दीपक नहीं अपितु हीरक खंड और सूर्य बनाने के लिए ही सिद्धाश्रम से आया हूँ। बहुत बार जब वे किसी दीक्षा का विवरण देते थे तो साथ ही ये भी कह देते थे की मेरे अतिरिक्त इस पूरे ब्रह्माण्ड में ये ज्ञान तुम्हे कोई और नहीं दे सकता है और इसके आगे का क्रम तो कदापि कदापि किसी और को ज्ञात होगा ही नहीं।

राजयोग,राज्याभिषेक, सम्राटाभिषेक , पट्टाभिषेक के बाद कहाँ गया इसका अगला क्रम जिसे सिद्ध योगी "**ब्रम्हांड पार्श्विकरण दीक्षा**" के नाम से जानते हैं। कहाँ गयी "**पूर्णाभिषेक दीक्षा**" प्रदान करने का वो विधान जिसे पाने के लिए प्रत्येक साधक लालायित रहता है।

आज तो रसेश्वरी दीक्षा के लिए भी यही सुनने को मिलता है की "**सब सोना बनाना चाहते हैं**" अरे सोना बनेगा तो तब जब उस साधक को उसका विधान ज्ञात हो। क्या रसेश्वरी दीक्षा का इतना ही महत्त्व है जबकि **रसेश्वरी दीक्षा** जीवन और भाग्य को हीरक कलम से लिखने की क्रिया है जिसके विविध आयाम हैं।

"**पंचमहाभूत दीक्षा**" को कपोल कल्पना करार दे दिया गया है जबकि और भी कई **दुर्लभ दीक्षाओं का विधान सदगुरुदेव की ओजस्वी और दिव्य वाणी में आज भी मेरे और कई वरिष्ट गुरु भाइयों के पास सुरक्षित है**। और जो जब कहे मैं तब सुना सकता हूँ , **रिकार्डिंग तब भी होती थी** , अरे दीक्षा आप ही देंगे , क्योंकि आप को ही नियुक्त किया है , हमें नहीं।

पर जब इसके बाद भी शिष्य को मात्र भजन और नृत्य मिले तो साधक का जीवन कैसे प्रगति करेगा। कोई साधनात्मक उन्नति नहीं , तब मात्र सदगुरुदेव का आश्रय लेना ही श्रेष्ट होता है। और आज भी सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त "**गुरु आहूत मन्त्र**" उतना ही प्रभावी है जितना तब।

जो परमहंस होते हैं वे रिश्तों में नहीं अपितु अपने शिष्यों के कल्याण चिंतन में सदैव व्यस्त रहते हैं। इसके लिए उन्हें मात्र पूर्ण आग्रह युक्त हृदय चाहिए होता है और कुछ की आवशयकता कदापि नहीं होती। तंत्र के कई ऐसे विधान उन्होंने अपने शिष्यों को प्रदान किये हैं जिनका प्रयोग कर शिष्य आज भी सीधे उन्ही से मनोवांछित दीक्षा पूर्ण आग्रह के साथ प्राप्त कर सकता है।

सामान्य अवस्था में स्वप्नावस्था या ध्यानावस्था में ये दीक्षाएं या समाधान प्राप्त होते हैं ,जो की सामान्य घटना कभी नहीं कही जा सकती है क्यूंकि आप लाख किसी भी इष्ट की उपासना करे तब भी वो देवी देवता या शक्ति आपके स्वप्न में नहीं आएगी क्यूंकि **अचेतन मन परा तत्व को पकड़ ही नहीं सकता , ये तभी हो सकता है जब आप का मन पूर्ण चैतन्य हो आर आपकी प्रज्ञा का योग आपके इष्ट की या सद्गुरु की प्रज्ञा से हो गया हो।**

परन्तु स्वप्न मात्र में नहीं अपितु अति उच्च अवस्था में यदि सतत मन्त्र का प्रयोग किया जाये तो निश्चित ही सूक्ष्म शरीर के द्वारा या प्रत्यक्ष भी शक्तिपात रुपी असीम अनुग्रह प्राप्त हो जाता है।

साबर महाविशेषांक में सदगुरुदेव आवाहन और दर्शन मंत्र का विवरण दिया गया है, जिसका लाभ बहुत से साधकों ने उसे प्रायोगिक रूप से करके उठाया है। हम जो भी प्रयोग तंत्र-कौमुदी में देते हैं वे अनुभूत या सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त होते हैं। जिन्हें निसंकोच आप प्रयोग करके लाभ उठा सकते हैं। आलोचना का दृष्टिकोण अपनी जगह सही है परन्तु वो तभी ठीक है जब पहले विषय वस्तु को परख लिया गया हो, अन्यथा कुतर्क का कोई जवाब नहीं है। आज अपने कलेजे में छिपाए हुए उसी प्रयोग को मैं आप सभी के सामने दे रहा हूँ, जिसका लाभ मेरे समेत बहुत से वरिष्ट गृहस्थ और सन्यासी भाइयों और बहनों ने लिया है।

ये साधना २१ दिनों की है और पूर्ण पवित्रता के साथ इस साधना को संपन्न किया जाता है, सामग्री के नाम पर सदगुरुदेव का तेजस्वी चित्र ही अनिवार्य है और एक स्फटिक माला तथा ५ पंचमुखी रुद्राक्ष की आवशयकता होती है। साधना के पहले गुरु मंत्र का सवालाख जप अवश्य कर ले तत्पश्चात ही इस दिव्य साधना में अग्रसर हो। पवित्रता अनिवार्य है।

नित्य ब्रह्ममुहूर्त में इस साधना को संपन्न किया जाता है इसमें दो दिव्य मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। हाँ ध्यान रखने योग्य बात है की साधक एक समय शुद्ध सात्विक भोजन करे और पूर्ण मानसिक शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करे, ये कभी ना भूले की ये कोई सामान्य साधना नहीं है अपितु जीवन परिवर्तित करने वाली उस परम पुरुष की जगद्गुरु की साधना है ,उन्हें रोम रोम में आत्म-एकाकार करने की साधना है।

श्वेत वस्त्र धारण कर शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरूवार को ब्रह्ममुहूर्त में उत्तराभिमुख अपने सामने बाजोट पर सदगुरुदेव का चित्र स्थापित कर ले ,इसके सामने अष्टगंध से एक वृत्त बना ले और उस वृत्त की रेखाओं पर पञ्च अक्षत की छोटी छोटी ढेरियाँ बना दें,और उस वृत्त के मध्य में ॐलिख दें ,उन ढेरियों पर एक एक रुद्राक्ष स्थापित कर दें। जहाँ ॐलिखा है वहाँ गुरु पादुका या गुरु यन्त्र स्थापित कर दें। इस गोले के और गुरु चित्र के मध्य घी का दीपक स्थापित कर दें। और पूर्ण विधान से सदगुरुदेव के चित्र और यन्त्र का पूजन करे।तथा उन रुद्राक्षों पर एक एक करके –

ॐगुरुभ्यो नमः

ॐनिखिलेश्वरानंद गुरुभ्यो नमः

ॐपरम गुरुभ्यो नमः

ॐपरात्पर गुरुभ्यो नमः

ॐपारमेष्टि गुरुभ्यो नमः

मंत्र का उच्चारण करके अक्षत,पुष्प,धुप ,दीप तथा नैवेद्य समर्पित करे I ये ५ ढेरियाँ और रुद्राक्ष पञ्च परम गुरु शक्ति की प्रतीक हैं I इसके बाद निम्न दिव्य मन्त्र की १६ माला पारद माला या स्फटिक माला से जप करे –

निखिलेश्वरानंद सिद्धि मन्त्र-

ॐ निं निखिलेश्वराय सिद्धिम् देहि देहि निं ॐ

तत्पश्चात निखिल प्राणश्चेतना मंत्र का १ माला जप करे-

निखिल प्राणश्चेतना मंत्र-

ॐ पूर्वाह सतां सः श्रिये दीर्घो येताः वदाम्यै स रुद्रः स ब्रम्ह स रुद्रये स चैतन्य आदित्याय रुद्राः वृषभो पूर्णाह समस्ते: मूलाधारे तु सहस्त्रारे, सहस्त्रारे तु मूलाधारे समस्त रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ प्राणतः दीर्घतः एत्तन्य दीर्घाम भू: लोक,भुवः लोक,स्वः लोक,मह लोक,जन लोक,तप लोक,सत्यम लोक ,मम शरीरे सप्त लोक जाग्रय उत्तिष्ठ चैतन्य कुण्डलिनी सहस्त्रार जाग्रय ब्रम्ह स्वरुप दर्शय दर्शय जाग्रय जाग्रय चैतन्य चैतन्य त्वं ज्ञान दृष्टिः दिव्य दृष्टिः चैतन्य दृष्टिः पूर्ण दृष्टिः ब्रह्मांड दृष्टिः लोक दृष्टिः अभिर्विहृदये दृष्टिः त्वं पूर्ण ब्रम्ह दृष्टिः प्राप्त्यर्थम,सर्वलोक गमनार्थे,सर्व लोक दर्शय ,सर्व ज्ञान स्थापय, सर्व चैतन्य स्थापय,सर्वप्राण,अपान,उत्थान,स्वपान,देहपान,जठराग्नि,दावाग्नि,वडवाग्नि,सत्याग्नि,प्रणवाग्नि ,ब्रह्माग्नि,इन्द्राग्नि,अकस्माताग्नि,समस्तअग्निः,मम शरीरे,सर्व पाप रोग दुःख दारिद्रय कष्ट पीड़ा नाशय - नाशय सर्व सुख सौभाग्य चैतन्य जाग्रय,ब्रम्ह स्वरुप स्वामी परमहंस निखिलेश्वरानंद शिष्यत्व,स-गौरव,स-प्राण,स-चैतन्य,स–व्याघ्रतः,स-दीप्यत,स-चंद्रोम,स-आदित्याय,समस्त ब्रम्हांड विचरणे जाग्रय,समस्त ब्रम्हांडे दर्शय जाग्रय, त्वं गुरुत्वं ,त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णु,त्वं शिवोहं,त्वं सूर्य,त्वं इन्द्र, त्वं वरुण, त्वं यक्ष,त्वं यमः,त्वं ब्रह्मांडो, ब्रह्मांडो त्वं मम शरीरे पूर्णत्व चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्व जाग्रयामि ||

इसके बाद पुनः निखिलेश्वरानंद सिद्धि मन्त्र की १६ माला जप करे तब जाकर ये क्रम पूर्ण होता है I यही क्रम सम्पूर्ण साधना काल में रहेगा और रही बात इस दिव्य साधना की तो आप जिस भी समाधान या दीक्षा की अभिलाषा रखते हैं , उसकी प्राप्ति स्वतः ही आपको प्रभाव दर्शा देगी I ये साधना एक अचूक सजगता और समर्पण का भाव साधक में व्याप्त कर देती है ,जिसके प्रभाव से साधक के चारो प्राण जाग्रत हो जाते हैं और वो सरलता से अपने प्राणाधार सदगुरुदेव के दर्शन कर सकता है और उनसे सीधे ही समाधान प्राप्त कर लेता है I

Purn shaktiPaat siddhi sadhana

कैसे संचित रखे यह जीवन की सबसे अनमोल सदगुरुदेव कृपा

जब शिष्य जिज्ञासु बनकर अपने अज्ञान की निवृत्ति हेतु श्री सद्गुरु के चरणों में निवेदन ज्ञापित करता है , तब उसके निवेदन को स्वीकार कर अज्ञान रुपी अन्धकार का नाश करने के लिए सद्गुरु उसे ज्ञान का उपदेश देते हैं। वस्तुतः ये ज्ञान कभी सामान्य होता ही नहीं है ,क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति के बाद ही मनुष्य अपने कर्म फलों को नष्ट करने का भाव और पराक्रम प्राप्त कर पाता है ,ज्ञानाग्नि ही प्रदीप्त होकर शिष्य के लिए शक्तिपात की भूमि तैयार करती है।

इसे यो समझा जा सकता है की किसान को बीजारोपण के पूर्व भूमि की उर्वरा क्षमता बढ़ाने के लिए भूमि को जोतना पड़ता है ।तत्पश्चात ही बीज का अंकुरण हो पाता है। ठीक वैसे ही बीज में छुपा हुआ ज्ञान का वृक्ष जो आचार विचार में पूर्ण प्रभाव के साथ हमारे व्यक्तित्व में ही आ जाये। सद्गुरु अपने तपः उर्जा के द्वारा अपने संचयित ब्रम्हांडीय ज्ञान को शिष्य में अपनी करुणा के वशीभूत होकर उड़ेल देते हैं, अर्थात बीज रोपण कर देते हैं,जिसके बाद शिष्य मात्र मन्त्र जप का आश्रय लेता है और उसे निर्दिष्ट या अभीष्ट ज्ञान की प्राप्ति होते जाती है।

शक्तिपात के तीन प्रकार होते हैं-

मंद

मध्यम

तीव्र

इनके नाम पर जाने की कदापि आवशयकता नहीं है (क्यूंकि इन भेदों के भी ३-३ उपभेद हैं, और जिनकी चर्चा करना यहाँ हमारा वर्तमानिक उद्देश्य तो कदापि नहीं है, वो गूढ़ चर्चा फिर कभी और करेंगे),अपितु ये समझना कही ज्यादा महत्वपूर्ण होगा की शक्तिपात कर्मफल रुपी मल को हटाकर ज्ञान का बीजारोपण करने की क्रिया है। अर्थात हमारे कर्मों का जितना गहरा प्रभाव आवरण बनकर हमारे चित्त या आत्मा पर होता है सद्गुरु को उतनी ही तीव्रता का प्रयोग करना पड़ता है ,दोष निवारण हेतु उतना अधिक अपना तप प्रयोग करना पड़ता है।

और ये क्रिया तब तो अवश्यम्भावी हो ही जाती है ,जब शिष्य गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञानवाणी के भावार्थ को नहीं समझ पा रहा हो और उसका मन संशय से मुक्त नहीं हो रहा हो I तब ऐसे में समर्थ गुरु अपने ज्ञान को सीधे ही अपनी दृष्टि,वाणी या स्पर्श द्वारा शिष्य के भीतर उतर देते हैं जिससे कर्म फल के परिणाम स्वरुप बाह्य नेत्रो और बहिर्मन के ऊपर पड़ी अज्ञान की पट्टी भस्मीभूत हो जाती है ,और उसका साक्षात्कार उस सत्य से हो जाता है,

जो सत्य सद्गुरु द्वारा दिग्दर्शन कराया जा रहा हो। आज हम श्री मद भागवद गीता को कर्म की और प्रेरित करने वाला ग्रन्थ मानते हैं, परन्तु उसे पूरा सुनने के बाद भी क्या अर्जुन उसका भावार्थ समझ पाया ? क्या वो युद्ध के लिए तत्पर हो पाया? नहीं क्योंकि उसे तब ये ज्ञान नहीं था की जो सामने रथ पर खड़े हैं वो सामान्य सारथि या मित्र ही नहीं हैं अपितु ऐसे जगद्गुरु हैं जिनकी वंदना सम्पूर्ण ब्रम्हांड करता है। उसे गीता के उन दिव्य वाक्यों में छुपे अर्थ समझ ही नहीं आ रहे थे I वस्तुतः जितने भी शास्त्र या तंत्र ग्रन्थ रचे गए हैं वे तीन ही प्रकार के श्लोकों में रचे जाते हैं।

अभिधा

लक्षणा

व्यंजना

और सामान्य साधक या शिष्य के लिए इन श्लोकों के मर्म को समझना अत्यधिक दुष्कर है I तब अर्जुन भी इस मर्म को नहीं समझ पा रहे थे और तब कोई और चारा न देख कर कृष्ण जी को शक्तिपात की क्रिया करनी ही पड़ी और जो बाते लगातार समझाने के बाद ह्रदय में नहीं उतर पा रही थी वो शक्तिपात से सहज ही संपन्न हो गयी। उसके बाद जो हुआ वो हम सभी जानते ही हैं I

पर क्या मात्र शक्तिपात होने से ही साधक का अभीष्ट प्राप्त हो जाता है , नहीं वस्तुतः शक्तिपात की प्राप्ति के बाद भी साधक का जीवन पवित्रता युक्त नहीं होता है और वो नित्य प्रति की जिंदगी में मिथ्याचार, अशुद्ध भोजन और मलिन भाव से युक्त होता ही है और तब ऐसे में सद्गुरु ने जो शक्तिपात आपको प्रदान किया है वो आपके कर्मों के कारण क्षीण होते जाता है ,जैसे मिटटी के मटके में असंख्य महीन छिद्र होते हैं और जब हम उसे जल से पूरित कर देते हैं तो थोड़े समय बाद वो मटका धीरे धीरे रिक्त होते जाता है I

अर्थात उसमे जल लगातार नहीं पड़ेगा तो एक समय बाद वो पूरी तरह सूख ही जायेगा I साधक को भी शक्तिपात की प्राप्ति के बाद संयमित जीवन और साधना का नित्य प्रति सहारा लेना पड़ता है यदि वो ऐसा नहीं करता है तो ऐसे में उसे प्राप्त शक्तिपात भी धीरे धीरे सुप्त हो जाता है I और ये भी सत्य है की हम पर शक्तिपात की प्रक्रिया ब्रम्हांडीय शक्तियों द्वारा सृष्टि के आरंभ से ही हो रही है और आज भी होती है परन्तु ये इतनी मंद और सूक्ष्म होती है की हमें इसका अनुभव किंचित मात्र भी नहीं हो पाता है।

इसलिए यदि शक्तिपात के प्रभाव को निरंतर शरीर और आत्मा में संजो कर रखना है तो सदगुरुदेव प्रदत्त **शक्तिपात सिद्धि साधना** संपन्न करनी ही पड़ेगी ।इसके बाद आप उन सभी शक्तिपात के प्रभाव को आत्मस्थित कर पाएंगे जो पूर्व में आप पर हुए हैं या नित्य प्रति सिद्धाश्रम के महायोगियों द्वारा हम पर सूक्ष्म रूप से किये जाते हैं। ये एक अद्भुत और गोपनीय विधान है , जो सहज प्राप्य नहीं है।

किसी भी सोमवार से इस साधना को ब्रह्म मुहूर्त में प्रारंभ किया जा सकता है ।वस्त्र व आसन श्वेत होंगे ,पूर्ण शुद्ध होकर आसन पर बैठ जाये और सामने बाजोट रखकर उस पर रेशमी सफ़ेद वस्त्र बिछाकर उस पर अष्टगंध से निम्नांकित यंत्र उत्कीर्ण करके उस यंत्र के मध्य में अक्षत की ढेरी बनाकर उस पर घृत का दीपक स्थापित करे, तथा यन्त्र के पीछे गुरु चित्र तथा यन्त्र के सामने गुरु पादुका या गुरु यन्त्र स्थापित करे।

तत्पश्चातहाथ में जल लेकर सदगुरुदेव से प्रार्थना करे की “**हे सदगुरुदेव पूर्व जीवन से वर्तमान तक जिस भी दीक्षा शक्ति का आपने मुझमे संचार किया हैवे सदैव सदैव के लिए मुझमे अक्षुण हो सके इस निमित्त मैं ये दुर्लभ साधना कर रहा हूँ,आप अपनी अनुमति और आशीर्वाद प्रदान करें**” तथा **गुरु चित्र** और यदि **गुरु पादुका या गुरु यन्त्र** हो तो उन का दैनिक साधना विधि में दिए गए विधान अनुसार (या पंचोपचार विधि से) गुरु पूजन करे ।पंचोपचार पूजन के विषय में पूर्व अंकों में बताया जा चूका है। इसके बाद **नवीन स्फटिक माला** से **१६ माला गुरु मंत्र** की तथा **२४ माला पूर्ण शक्तिपात सिद्धि** मंत्र की जप करे।

पूर्ण शक्तिपात सिद्धि मंत्र–

ॐऐं ह्रीं क्लीं क्रीं क्रीं हुं जाग्रय स्फोटय स्फोटय फट्॥

ये क्रम सात दिन का है,दीपक मात्र साधना काल में ही जले ,अखंड रखने की अनिवार्यता नहीं है, साधना के सभी सामान्य नियमों को अवश्य अपनाएं ।अंतिम दिन जप के पश्चात उस माला को ४० दिनों तक पूजा के समय धारण करे और बाद में उसे पूजन स्थल पर ही रख दे ।साधना काल के मध्य शरीर में तीव्र दाह उत्पन्न हो जाता है, गर्मी बढते जाती है अतः दुग्ध पान अधिक मात्र में करे, शरीर टूटता रहता है क्यूंकि आत्म रूप से व्याप्त शक्तिपात की तीव्र ऊर्जा रोम रोम में प्रसारित होते जाती है,चेहरे पर लालिमा और नेत्रों में आकर्षण व्याप्त हो जाता है। आप स्वयं ही इस अद्भुत मन्त्र के प्रभाव को देख पाएंगे, जरुरत है मात्र पूर्ण श्रृद्धा के साथ मन्त्र को अपने जीवन में स्थान देने की बाकि का काम तो स्वतः होते जायेगा।

==

Poorna Shaktipaat Siddhi sadhna

when Disciple became curious to release his lack of knowledge state and requests to sadgurudev, then his requests is been listen and Sadguru proceed some thought processing to vanish his lack of knowledge.

Adwitiy brAmhAtv guru sAdhAnA

कैसे संभव हो ,पूज्य सदगुरुदेव के ब्रम्ह स्वरुप के दर्शन ....

साधक के जीवन का सौभाग्य चरम पर होता है जब वो अपने सद्गुरु की विराटता को अपने दिव्य नेत्रों से देख सके ,उनके ब्रह्म रूप को देख सके अपनी आत्मा,अपने जीवन में उतार सके l ब्रह्म का तात्पर्य है अपने आत्मस्वरूप को समझना ,उससे परिचित होनाlउस ज्ञान के द्वारा जीवन के उन रहस्यों को समझना जिसके द्वारा साधक अपनी कुंडलिनी जाग्रत करता हुआ आज्ञा चक्र तक पहुचता है और उस आज्ञा चक्र का भेदन करता हुआ शरीर के सर्वोच्च शिखर सहस्रार को जाग्रत करता हुआ उससे झरते हुए आनंद और अमृत का पान करने की क्रिया संपन्न करता हैl मगर ये आनंद दो ही तरीकों से प्राप्त हो सकता है –

कुंडलिनी जागरण कर कुंडलिनी को आज्ञा चक्र से भेदित कर सहस्रार तक पहुँचाना l

या सद्गुरु के चरणों का आश्रय लेकर उनसे अत्यधि गोपनीय **ब्रह्मत्व गुरु मन्त्र** प्राप्त कर ,उसकी जप शक्ति से ही इस गृहस्थ जीवन में रहते हुए सहस्रार भेदन कर पाना l

पहला तरीका अत्यधिक दुष्कर है और उसमे सतत अभ्यास व निर्देशन की आवशयकता होती ही हैl कई बार मात्र एक चक्र को स्पंदित करने में ही पूरा जीवन चला जाता है सम्पूर्ण कुंडलिनी की बात कौन कहे l परन्तु जो दूसरा तरीका है वो कही ज्यादा प्रभावकारी और सफल है ,जिसमे सद्गुरु की शक्ति का ही आश्रय लेकर कही सुगमता से शिष्य सहस्रार को जाग्रत कर सकता है और आज्ञा चक्र का पूर्ण भेदन हो जाने के कारण उसे वह ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिसे वेद "**ब्रह्म रहस्य**" के नाम से जानते हैं l और तब उसे अपने सद्गुरु की विराटता प्रति क्षण दृष्टिगोचर होती रहती हैl इसके बाद साधक के जीवन में याचकवृत्ति का कोई स्थान नहीं रहता है ,अपितु वो प्रकृति का साथ तटस्थ होकर सहचर भाव से ही देता है ,साधक के लिए ऐसे में कुछ भी ,कोई भी ज्ञान अगम्य नहीं रहता है l

इस साधना का प्रारंभ सदगुरुदेव के सन्यास दिवस या किसी भी गुरूवार को महेंद्र काल से प्रारंभ करते हैंl

इस साधना में ध्यान रखने योग्य बात मात्र इतनी है की मूल मन्त्र के पहले और बाद में **११-११ माला गुरु मंत्र** की करना है और बीच में निम्न मंत्र की ५१ माला करनी है ,साथ ही साथ ये भी ध्यान रखना है की शुक्रवार से इस साधना को ब्रह्म मुहूर्त में ही संपन्न किया जाता है

और ये कुल १४ दिनों की साधना है सभी सामान्य नियमों का पालन करते हुए नित्य गुरु पूजन करना है और सदगुरुदेव हमें अपने विराट स्वरुप के दर्शन करवाए और ब्रह्म रहस्य से अवगत कराये, इसी भावना से स्फटिक माला से जप करना है ।वस्त्र व आसन श्वेत ही रहेंगे। बाजोट पर गुरु चित्र ,गुरु पादुका और शक्तिपात साधना में जो यन्त्र बना है ठीक उसी यन्त्र का निर्माण कर बाकि साडी प्रक्रिया वैसी ही करनी है ।

ब्रह्मत्व गुरु सिद्धि मन्त्र-

ॐपरात्पर ब्रह्म स्वरूपं निर्विकल्पं आज्ञाचक्र दयैति गुरुवर्यै नमः।।

साधना के मध्य में ही साधक का ध्यान लगने लग जाता है और उसे विविध दृश्य दिखाई देने लगते हैं।वे सभी दृश्य भविष्य या भूत काल से सम्बंधित होते हैं,जिनका हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध होता है ।धीरे धीरे आप उस दृश्य के अर्थ को समझने लग जाते हैं और एक समय बाद आप जिस किसी का भी चिंतन कर मात्र १०८ बार मंत्र का जप कर नेत्र मूँद कर ध्यानस्थ होते हैं, आपके नेत्रों के समक्ष उस व्यक्ति की सभी गतिविधि स्पष्ट होते जाती हैं।

==

Advitiya Bramhatva Guru Sadhna-

The good fortune is any sadhak is on peak when he himself see the Viraat Swarup of his Saadguru by his own eyes, our soul could see his brahma rup, imbibe it in our life. That's the only wish. Here Bramha means – to understand our own internal form, to get introduce. And with that knowledge fathom the secrets of life. Via which activating the energy of Kundalini reached upto Agya Chakra and passing it reached at the highest peak of body i.e. sahastrar and feels and equally realize the state and he ends up the process. But this happiness can be discover only by two ways –

Activation of Kundalini and taking Kundalini to agya chaktra crossing all other chakras and reaching upto the Sahastraar.

Or requesting into the holy feets of Sadguru and earning very secretive **Brhmatva Guru Mantra** from him, only with that Shakti one can reach to its highest in this marital life also.

First way is very difficult and it continuously needs practice and guidance. Most of the times whole life can go for activating only one chakra so don't ask for whole kundalini activation approx. time. But the second way is most effective and successful way, in which Sadguru's power is taken as support and shishya easily reached upto the sahastrar level. After crossing Agya chakra he gets the knowledge which is known as "**Universal Secrets (Brahma Rahasya)".** And then he is able to see all the time viraat swarup of his sadguru. Then after there is no place of requesting mode in sadhak's life, rather he accompanies the nature with same level. In that way for Sadhak nothing remains impossible.

You can start this sadhna on Sadguru Sanyas Day or any Thursday of Mahendra Kaal.

Nikhil tatv saayujy bhagvati raj rajeshwari sadhaNa

यह साधना रहस्य मिल जाना ही सदगुरुदेव की पूर्ण कृपा ही तो हैं ...

"राज राजेश्वरी दुर्लभं जायते नरः॥

पूर्णत्वं श्रेष्ट सिद्धित्वं न अन्यत्र वदेत् क्वचित॥

पूर्व जन्म कृत दोष इह जन्मनि यद् भवेत् ।

सर्व पाप विमुच्यन्ते चैतन्य शुद्ध साधनवै ॥

राज राजेश्वरी कुण्डल्योत्थान एव च ।

देह प्राण स चैतन्य शुद्ध ब्रह्म समो नरः ॥

अनंगोसम सौन्दर्य यौवनं तेजस वदेत्।

सम्मोहनम् कामत्वं प्राप्यते राज दीक्षतं॥

सहस्रार त्व जाग्रत्वं अमृतो पान त्वं सदः।

सर्व रोग विमुच्यन्ते दीर्घजीवी भवेत् नरः" ॥

जीवन को संवारने के लिए यूँ तो विविध साधनाएं प्रचलित हैं ,परन्तु मात्र राज राजेश्वरी साधना का योग यदि निखिल तत्व से हो जाये तो जीवन में कुछ भी असंभव नहीं रह जाता है ,और ये सिद्धाश्रम का और समस्त देवों का कहना है ,सभी ऋषि मुनि और सिद्ध योगियों ने इस साधना को जीवन में सर्वोपरि माना है।

श्वेत बिंदु रक्त बिंदु रहस्य के अन्वेंशन काल में जब मैं स्वामी प्रज्ञानंद जी के पास पंहुचा था तो उन्होंने मुझे बताया था "की पारद विज्ञानं के समस्त दिव्य रहस्यों का ज्ञान और कुंडलिनी को एक ही झटके में मूलाधार से सहस्रार तक पंहुचा देने वाली एक मात्र साधना राज राजेश्वरी साधना है और चूँकि ये भगवतपाद सदगुरुदेव परमहंस निखिलेश्वरानंद प्रणीत है, अतः मात्र मन्त्र जप से ही जीवन के वो सभी अभीष्ट साधक को प्रदान कर देती हैं जो की अप्राप्य ही हैं, आज मेरे जीवन में मुझे जो भी प्राप्त हुआ है उसका आधार यही साधना है"।

उपरोक्त श्लोक ब्रह्मऋषि विश्वामित्र जी के हैं,जो उन श्लोको में स्पष्ट कहते हैं की जीवन का उत्थान कुंडलिनी जागरण के द्वारा ही होता है ,और सामान्य साधक के वश में कुंडलिनी जागरण की क्रिया संभव नहीं है।परन्तु यदि राज राजेश्वरी साधना संपन्न कर ली जाये तो यही परिस्थिति पूर्णतया अनुकूल हो जाती है, जो भी पुरुष जीवन में अनंग के सामान सुन्दर ,यौवन शक्ति से परिपूर्ण होना चाहते हैं और स्त्री रति के सामान कोमल,तेजस्विता युक्त अपार सौन्दर्य की स्वामिनी बनना चाहती हैं उसके लिए इस साधना से श्रेष्ट उपाय कोई और नहीं हो सकता।

जिस प्रकार जंगल की सूखी हुयी घास और पत्तियों को प्रचंड अग्नि एक क्षण में जला देती है ठीक उसी प्रकार ये साधना पूर्व जीवन और इस जीवन के सभी पापों को एक ही क्षण में समाप्त कर भस्मीभूत कर देती है।

मैंने विगत तीव्र साधना विशेषांक में भी यही कहा था की ये साधना तंत्र का आधार है ,और इसके बाद कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता है। इस साधना के प्रभाव से साधक सहस्रार से टपकते अमृत को धारण करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है ,और वही अमृत उसके बिंदु के साथ मिलकर ओजस में परिवर्तित हो जाता है तथा निर्जरा देह और पूर्ण ऐश्वर्य की प्राप्ति कराता है।

किसी भी शुक्ल पक्ष की पंचमी को इस साधना का प्रारंभ किया जाता है , साधना के लिए गुरु यन्त्र,चित्र और श्री यन्त्र की आवशयकता होती है, श्वेत वस्त्र पहनकर मध्य रात्रि में इस साधना का प्रारम्भ करे, **पूर्ण भगवती राज राजेश्वरी की साधना में सफलता हेतु ये साधना की जा रही है और अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ गुरु तत्व युक्त होकर वे मेरे जीवन में उतरेयही आशीर्वाद आप सदगुरुदेव से मांगे** श्वेत वस्त्र, आसन, श्वेत पुष्प और खीर से भगवती और सदगुरुदेव का पूजन करे ।इन दोनों यंत्रों का पूर्ण पूजन शास्त्रोक्त पद्धति से पंचोपचार करने के बाद स्फटिक माला से सबसे पहले निम्न गुरु तत्व मंत्र की ११ माला जप करें और उसके बाद राज राजेश्वरी मन्त्र की १०८ माला करे,फिर पुनः उपरोक्त गुरु तत्व मन्त्र की ११ माला जप करे।

गुरु तत्व मन्त्र-

ॐ गुरु शिवायै शिव गुरुवर्यै नमः

दिव्य भगवती राजराजेश्वरी मंत्र-

AING HREENG SHREENG

दीपक शुद्ध घी का होना चाहिए और इस साधना क्रम को ७ दिनों तक संपन्न करना है।इस साधना के प्रभाव से स्फटिक माला विजय माला में परिवर्तित हो जाती है ।इस माला को पूरे जीवन भर धारण करना है।राज राजेश्वरी मंत्र में **ग** की ध्वनि आयेगी। ये एक अद्विय्तीय साधना है ,जिसके द्वारा सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट से भरा जा सकता है।

==

Nikhil Tatva Sayujya Bhagvati Raaj Raajeshvari Sadhna –

"Raaj Raajeshvari durlabham jaayte narah..

Poornatva shreshtham siddhitvam na anyatra vadet kvachit

Purva janma krut dosh ih janmani yad bhavet

Sarva Paap vimuchhyante chaitanya shuddha sadhnave

Raaj Raajeshvari kundalyoutthaan eiva cha

Deh praan sa chaitanya shuddha brahma samo narah

Sammohanam kaamatvam prapyte raaj deekshitam

Sahastraar tva jaagratvam amruto paan tva sadah

Sarva rog vimucchyante deerghjeevi bhavet narah.

To make life beautiful many sadhnas are famous, but mere by Raaj Raajeshvari Saadhna yog if merges with Nikhil tatva then nothing would remain impossible in life. And this has not only said by all gods but also by Siddhashram yogis too that this is the ultimate saadhna in life. In discovery time of Shvet bindu Rakta Bindu secrets, I reached near Swaami Pragyaanand ji.

He told me, " that secrets of paarad Vigyan and taking kundalini from down to top in seconds can only be done by this sadhna only and this is given by Bhagvaadpaad Sadgurudev Paramhans Nikhileshvaranand." Therefore sheer by mantra chanting this fulfills the wishes of sadhak. And today whatever I got in my life is just because of this sadhna.

Mahanisha shri sadhana purn vidhan

इस पूर्ण क्रम को करके तो देखें फिर देखे कैसे सदगुरुदेव और श्री कृपा आप पर बरसने लगती हैं

जीवन की आपाधापी में बहुधा हम मूल उद्देश्य से ही वंचित रह जाते हैं ,किसी पर्व विशेष की सार्थकता कैसे हो सकती है,इसका कदाचित भान ही आज लोगो को होगा। आज पर्व मात्र बाह्य आडम्बरों में ही घिरा रह गया है ,पर्व का मूल चिंतन तो लुप्त प्रायः ही हो गया है, फिर वो चाहे गुरु पूर्णिमा हो,होली हो,रक्षा बंधन हो या फिर दीपान्विता या दीपावली का ये पावन पर्व।

वस्तुतः प्रामाणिक विधान का ही आश्रय लेने पर जीवन में उन्नति संभव है ।और जीवन में सदगुरुदेव की कृपा के बगैर तो विधान की प्राप्ति कदापि संभव नहीं है। हमारे लिए दीवाली का अर्थ मात्र दीवाली और इसका पूजन ही है , परन्तु हम ये नहीं जानते हैं की धन त्रयोदशी से भाई दूज तक के पांच दिवसों की क्या महत्ता है

और इन पांचो दिवसों का विधिवत तांत्रिक क्रम से पूजन करने पर ही महानिशा साधना का ये पर्व पूर्ण सर्वांगीण उन्नति देता है और वर्षभर के लिए पूर्ण अभय और उन्नति का वरदान भी ।दीवाली की रात्रि बीतने के साथ ही उत्साह मंद हो जाता है और साधना कक्ष में प्रवेश की इच्छा ही समाप्त प्रायः हो जाती है ,क्यूंकि दीवाली पर मंत्र कर लिया तो अब क्या जरुरत है ,और इसके पीछे अज्ञान हो मूल कारण होता है। काश की इन 5 दिवसों का गूढ़ अर्थ हम समझ सके और तदानुसार हम उसका उचित प्रयोग कर सके, खैर दीर्घ विवेचन प्रस्तुत करने का ये सही अवसर नहीं है इसलिए संक्षेप में उस विधान को यहाँ स्पष्ट कर रहे हैं जो सदगुरुदेव ने अपनी प्रसन्नता के क्षणों में वर्णित किया था। यदि हम इस विधान का प्रयोग करते हैं तो सपरिवार अभय,पापों से मुक्ति, धन-शक्ति,प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति और पूर्ण सुरक्षा की प्राप्ति होती है।

- कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हम सभी धनतेरस के रूप में जानते हैं। परंपरा अनुसार स्नान करने के बाद संध्याकाळ में मृत्यु और रोगों से मुक्ति के लिए ३ दीपकों को घर के बाहर रखना चाहिए,ये दीपदान परिवार की तरफ से **यमराज** के लिए होता है जो वर्षभर के लिए अकालमृत्यु के भय को क्षीण कर देता है। दीपक प्रज्वलित करते समय निम्न प्रार्थना करनी चाहिए-

"मृत्युना पाश-हस्तेन कालेन भार्यया सह।

त्रयोदश्यां दीप-दानात् सूर्यजः प्रीयतां " ॥

ततपश्चात रात्रि के प्रथम प्रहर में **आरोग्यधिपति भगवान धनवंतरी** का ध्यान और पूजन करना चाहिये ,याद रखियेगा की पंचोपचार पूजन वगैरह क्रियाएँ पहले भी कई अंको में स्पष्ट की जा चुकी है और सदगुरुदेव **"मन्त्र तंत्र यंत्र विज्ञान"**पत्रिका में सैकडो बार पूजन विधान दे चुके हैंIअतः पूजन विधान वह से देख लेIयहाँ मात्र मैं गुह्य विधान स्पष्ट कर रहा हूँ I पूजन स्थल में भगवती लक्ष्मी और गणपति जी का पूर्ण चित्र स्थापित होना चाहिये और सदगुरुदेव और भगवान गणपति के पूजन के बाद निम्न ध्यान करेIमहत्वपूर्ण तथ्य ये है की परिवार में जितने सदस्य हों लाल वस्त्र बिछाकर उतनी ही सुपारी स्थापित की जानी चाहिये बाजोट परIमुख पूर्व की तरफ होना चाहियेI

ध्यान-

"चतुर्भुजं पीत-वस्त्रं सर्वालन्कार-शोभितं I

ध्याये धन्वंतरिम् देवं सुरासुरनमस्कृतं" II

तत्पश्चात दीर्घायु प्राप्ति हेतु सम्पूर्ण परिवार की तरफ से संकल्प लेकर दीर्घायु लक्ष्मी का पंचोपचार पूजन कर दीर्घायुष्य लक्ष्मी मन्त्र की ११ माला जप संपन्न करे ,ये जप लाल हकीक या मूंगे की माला से करे ,माला प्राण प्रतिष्ठित होनी आवश्यक है I

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौं अमृत्यु लक्ष्म्यै नमःI

प्रातः काल समस्त सुपारियों को दक्षिण दिशा में निर्जन स्थान पर फेक देंI

- **रूप चतुर्दशी या नरक चतुर्दशी विधान**- सौंदर्य प्राप्ति और पूर्ण पाप मुक्ति के लिए इस दिन साधना की जाती हैI

स्नान करते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए **अपामार्ग** को अपने मस्तक पर घुमाना चाहिये –

सीता लोष्ट सहा युक्तः सकन्तक-दलान्वितः I

हर पापमपामार्ग ! भ्राम्यमाण: पुनः पुनः II

स्नान के बाद निम्न मन्त्र में से प्रत्येक का तीन तीन बार उच्चारण कर जलदान करना चाहिये अर्थात जल अर्पित करना चाहिये और "श्री भीष्म" को भी तीन अंजुली जल अर्पित करना चाहिये I

यमाय नमः

धर्मराजाय नमः

मृत्यवे नमः

अन्त्काय नमः

वैवस्वताय नमः

कालाय नमः

सर्व भूत क्षयाय नमः

औदुम्बराय नमः

दध्नाय नमः

नीलाय नमः

परमेर्ष्ठिनी नमः

वृकोदराय नमः

चित्राय नमः

चित्र गुप्ताय नमः

और सांयकाल घर के बाहर धर्म-अर्थ काम मोक्ष रुपी चार बत्तियों का दीपक प्रज्वलित करना चाहिये,इसके बाद ही अन्य स्थानों पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिये

तत्पश्चात तिल के तेल का दीपक जलाकर उसका विधिवत पूजन कर ११ माला मन्त्र सौभाग्य लक्ष्मी मन्त्र का जप करना चाहिये –

ॐ श्रीं ह्रीं सौभाग्य लक्ष्म्यै श्रीं अखंड सौभाग्य देहि देहि ह्रीं श्रीं नमः ॥

- **महानिशा श्री विधान** – धन ऐश्वर्य की अतुलनीय प्राप्ति के लिए आज दीपावली की रात्रि मे साधना की जाती है,आज की रात्रि को किसी भी प्रकार के मन्त्र को स्वयं के लिए जाग्रत किया जा सकता है, आज की रात्रि काली काल जाग्रत होता है जिस समय किसी भी मन्त्र का जप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। और एक और पद्दति है जिसमे पूजन तो लक्ष्मी का ही होता है किन्तु वो अष्ट सिद्धि संयुक्त हो जाता है अतः भविष्य मे जब भी अष्ट सिद्धि साधना करना हो तो साधक इसी श्रीयंत्र पर कर सकता है जिस पर उसने निम्न विधान किया हो।

पूजन स्थल पर पूर्व की तरफ मुह करके बैठना चाहिये और सामने लक्ष्मी गणेश की मूर्ती और श्रीयंत्र की स्थापना करना चाहिये,हाँ एक बात ध्यान अवश्य रखे की ये विधान मिथुन लग्न मे होना चाहिये जो की प्रचुर संपत्ति और ऐश्वर्य के साथ साथ सिद्धियों और संतान सुख की भी प्राप्ति होती है और याद रखिये की यदि हम सीधे ही स्थिर लग्न यथा वृषभ और सिंह मे हम सीधे पूजन करते हैं तो जो संपत्ति हमारे पास है ,

अनजाने मे हम उसी को स्थायित्व दे देते हैं,फलस्वरूप जो प्रगति और उच्चता जीवन मे वर्ष भर आणि चाहिये, वो कदापि नहीं आती है,जब आप नवीन ऐश्वर्य का प्रयत्न करेंगे और उस ऐश्वर्य को स्थायित्व देंगे तभी तो आपको वर्ष भर मनोवांछित लाभ होगा|

रात्रि मे सर्वप्रथम सदगुरुदेव,गणपति और भगवती लक्ष्मी का ध्यान कर मनोयोग पूर्वक षोडशोपचार पूजन करना चाहिये तत्पश्चात-

गं श्रीं गं

मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करते हुए कुमकुम और केसर से रंजित अक्षत को बाये हाथ मे लेकर दाहिने हाथ से श्रीयंत्र पर अर्पित करना चाहिये, इसके बाद पुष्प व अक्षत को निम्न मन्त्र बोलते हुए श्रीयंत्र पर अर्पित करें।

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि

ॐ चंचलायै नमः जानुनी पूजयामि

ॐ कमलायै नमः कटिं पूजयामि

ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि

ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि

ॐ विश्व वल्लभायै नमः वक्ष-स्थलं पूजयामि

ॐ कमल वासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि

ॐ कमल पत्राक्षयै नमः नेत्र त्रयं पूजयामि

ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि

पुनः निम्न मन्त्र बोलते हुए पुष्प व अक्षत अर्पित करे –

ॐ अणिम्ने नमः

ॐ महिम्ने नमः

ॐ गरिम्णे नमः

ॐ लघिम्ने नमः

ॐ प्राप्तयै नमः

ॐ प्राकाम्यै नमः

ॐ ईशितायै नमः

ॐ वशितायै नमः

तत्पश्चात निम्न मन्त्र पढते हुए पुनः अक्षत और चन्दन अर्पित करे

ॐ आद्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ विद्या लक्ष्म्यै नमः

ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ अमृत लक्ष्म्यै नमः

ॐ कमलाक्ष्यै नमः

ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ भोग लक्ष्म्यै नमः

ॐ योग लक्ष्म्यै नमः

तत्पश्चात निम्न कुबेर मंत्र की १ माला जप करे –

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिम् देहि दापय नमः

इसके बाद ११ माला निम्न ***अभीष्ट सिद्धि लक्ष्मी*** मन्त्र की करे

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं हुं ॥

मन्त्र जप संपन्न होने के बाद घर और बाहर रखने के लिए दीप को थाली या सूपे मे सजा ले और निम्न मन्त्र पढते हुए उनका पूजन अक्षत छिडकते हुए करें और उसके बाद दीपकों को जहाँ रखना हो रख दे-

अग्नि ज्योति सूर्य ज्योतिः चन्द्र ज्योतिस्तथैव च।

उत्तमः सर्व ज्योतिनां दीपः अयं प्रति-गृह्यतां॥

दीपक अखंड रूप से पूरी रात्री तक प्रज्वलित रहे यह साधना का एक महत्वपूर्ण नियम है.

- धान्य लक्ष्मी अन्नपूर्णत्व प्रयोग- पूरे वर्ष भर प्रचुर धान्य सुख पाने हेतु ये प्रयोग दीवाली के दूसरे दिन किया जाता है और इस लघु प्रयोग से अन्न भण्डार भरे रहता है रसोई मे।

दीवाली के दूसरे दिन सूर्योदय के पूर्व ही एक ताम्बे के कटोरे मे ५ प्रकार के धान्य भर कर उसके सामने निम्न मंत्र की ५ माला मन्त्र जप कमाल गत्ते की माला से करे और उसके बाद उस धान्य या अनाज को सूर्योदय के साथ ही छत पर या बाहर पक्षियों के लिए बिखेर दे ,और प्रभाव तो आप देखेंगे ही।

मन्त्र-

श्रीं अन्नपूर्णे प्रियन्ताम् सह श्रियै नमः

- रक्षा कवच दूज विधान- भाई दूज के दिन बहन जिस सूत्र को भाई की कलाई पर बांधती है उसे निम्न मन्त्र से ३२४ बार अभिमंत्रित करने के बाद ही भाई की कलाई पर बांधा जाना चाहिये,ये क्रिया परिवार का वरिष्ट सदस्य या कोई भी संपन्न कर रक्षा सूत्र को बहन को दे दे ताकि उन सूत्रों को बहन भाई को तिलक लगा कर उनकी कलाई पर बाँध सके और वर्ष भर की रक्षा भाइयों को प्राप्त हो सके।ये क्रिया मध्यान्ह काल के पहले संपन्न हो जानी आवश्यक है। जितने लोगों को सूत्र बांधना है,उतनी संख्या मे सूत्र लेकर लाल रंग की धोती पहन कर पूर्व दिशा की और मुँह कर मंत्र करना है।

ॐ रक्ष रक्षिणी रक्षात पूर्ण रक्षेश्वराय नमः।

इस प्रकार ये महानिशा श्री प्राप्ति विधान पूर्ण होता है, आप इस विधान के साथ अन्य मन्त्रों का जप भी दीपावली की मध्यरात्रि मे कर सकते हैं यथा,अघोर,शैव,शाक्त मन्त्रों का ,वो आपके ऊपर निर्भर है। जो मूल विधान है वो आपके लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत कर दिया है।

===

Mahanisha Shri sadhana complete procedure

In the race of the life many times we miss our prime goal, how the ultimate significance of the special days to be receive least people might be aware of that. In current time the festival days have become outer fake pomp only, the main objective related to the special feast are lost, rather it is guru purnima, Holi, Raksha bandhan or it is about sacred festival of Diwali or Dipaanvita in other words.

In fact, the progress of the life is only possible with authentic procedures. And in the life it is impossible to get such processes without blessings of Sadgurudev. For us, the meaning of diwali remains poojan of diwali only but we are actually not aware about the significance of the five important days from Dhan Chaturdashi to Bhai Dooj and by completing five days tantric ritualistic procedures of poojan this festival of mahanisha grants complete progress and blessings of completeness for one whole year.

Soot RAHSYAM -8 Surya vigyan aur kaal chakra

सूर्य विज्ञानं और काल चक्र

त्रिनाभिमती पञ्चारे षण्नेमिन्यक्षयात्मके l

संवत्सरमये कृत्स्नम् कालचक्रम् प्रतिष्ठितं ll

तीन नाभियों से युक्त है सूर्य के रथ का चक्र,अर्थात भूत भविष्य और वर्तमान ये तीनो काल ही सूर्य रथ चक्र की तीन नाभि है,नाभि अर्थात जहाँ स्पंदन होता हो प्राणों का lवेदों मे काल को प्राण ही तो कहा गया है l और सूर्य इन प्राणों का अधिपति है,अर्थात जहाँ कालमयी दृष्टि की बात आती हो या अपनी दृष्टि को काल के परे ले जाकर व्यापकता प्रदान करनी हो तो सूर्य की साधना करनी ही पड़ेगी और उनके रहस्यों को आत्मसात करना ही पड़ेगा l

बहुधा साधकों के मन मे सूक्ष्म शरीर सिद्धि का सरलतम विधान जानने की बात आती है ,परन्तु शास्त्रों मे ऐसी कोई क्रिया स्पष्ट नहीं है ,जिसके माध्यम से सरलतापूर्वक स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को प्रथक कर उन गुह्य और अनबुझे स्थानों की यात्रा की जा सके,जहाँ आज भी प्राच्य आध्यात्मिक उर्जा बिखरी पड़ी है और जहाँ जन सामान्य के कदम पड ही नहीं सकते,इसलिए ये स्थान अबूझ ही रह गए हैं और अबूझ रह गयी है

यहाँ पर दिव्य उर्जाओं की उत्पत्ति का रहस्य भी lजब सिद्ध मंडल से साधनात्मक ज्ञान प्राप्ति की बात आती है तो हमारे चेहरे मात्र लटक ही सकते हैं क्यूंकि हमने कभी सदगुरुदेव की व्यापकता को समझा ही नहीं,अन्यथा उनसे सूर्य विज्ञानं के ऐसे ऐसे रहस्य प्राप्त किये जा सकते थे जो की कल्पनातीत ही कहे जा सकते हैंl

हमने मात्र पदार्थ परिवर्तन को ही सूर विज्ञानं की प्रमुख उपलब्धि माना है और समझा है परन्तु हम ये नहीं जानते हैं की प्राण रहस्य को समझ लेने के बाद किसी भी लोक मे गमन,ग्रहों पर नियंत्रण और कुंडलिनी भेदन इत्यादि की प्राप्ति अत्यधिक सरल हो जाती है l सूर्य की सप्त किरणों और उनके रंगों मे कुंडलिनी जागरण, काल-दृष्टि की प्राप्ति और ब्रह्माण्ड के अबूझे रहस्य हस्तामलकवत दृष्टि गोचर होने लगते हैं l सप्त रंगों मे बिखरी सूर्य की किरणों का सम्मिलित रूप श्वेत है जो की व्यापकता का परिचायक है और परिचायक है पूर्णता का भीl

भला कैसे ???

क्या आप जानते हैं की सूर्य के सप्त रंगों से लोकानुलोक गमन का गहरा सम्बन्ध है, सविता मंत्र का मूल ध्वनि मे किया गया उच्चारण आपके शरीर को अणुओं के रूप मे विखंडित कर देता है और ये विखंडन मनोवांछित लोक मे पहुचकर वापिस अपना मूल स्वरुप पा लेता है, अक्सर ऐसे मे इन अणुओं के बिखर जाने का भय होता है परन्तु सूर्य विज्ञानं का अध्येता ये भलीभांति जानता है की सूर्य प्राणों का परिचायक है ,अर्थात प्राणशक्ति की सघनता और उससे प्राप्त बल,विखंडित अवस्था मे भी हमारे शरीर के अणुओं को बिखरने से बचाए रखती है ,और अणुओं के चारो और एक आवरण बना देती है जिसके कारण ब्रह्मांडीय यात्रा के मध्य शरीर के अणु किसी भी बाह्य आघात से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं ,

और उनकी मनोवांछित लोकों मे जाकर साकार होने की कामना मे कोई बाधा नहीं आती है ,और एक बार जब कोई मनोवांछित लोक मे पहुच जाता है तो वह देह वहाँ के वातावरण के अनुकूल बन जाती है और तब वहाँ के रहस्य और विज्ञानं को समझना सहज हो जाता है । वस्तुतः सूर्य की किरणों के सात रंग यथा बैगनी,जामुनी,नीला,हरा ,पीला,नारंगी और लाल का सप्त लोको से गहरा सम्बन्ध है –

भू,भुवः ,स्वः ,मह :,जनः,तपः और सत्यम, और इस सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए हमें श्वेत की अर्थात आदित्य के रहस्य को समझना पड़ेगा , क्यूंकि ये सभी रंग सम्मिलित होकर श्वेत का ही विस्तार करते हैं ।तभी कालचक्र का सहयोग लेकर आप कालभेदी दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और ये कोई जटिल कार्य नहीं है ।यदि साधक **सूर्योदय के पहले पूर्व की तरफ मुख करके ओम का गुंजरन ७ मिनट तक नित्य करे और फिर सूर्योदय के साथ ही ७० मिनट तक गायत्री मंत्र का जप और फिर पुनः ७ मिनट तक ओम का गुंजरन**।

यदि इस क्रिया को ३ रविवार तक नित्य दोहराया जाये तो सूर्य के मध्य मे होने वाले विस्फोटों का मूल अंतर्गत कारण हम भली भांति समझ सकते हैं और उर्जा की उत्पत्ति का रहस्य भी ज्ञात हो जायेगा,क्यूंकि ये ओम की ही ध्वनि है जो की इस क्रम से प्रयोग करने पर बाह्य सूर्य का अन्तः सूर्य से तारतम्य बिठाकर रहस्यों के आदान-प्रदान की क्रिया सरल कर देती है ।और इस प्रकार सविता मन्त्र का सहयोग आपको कालचक्र की विविध शक्तियों का स्वामी बना देता है तब कालातीत दृष्टि पाना भला कहाँ असंभव रह जाता है।

==

SOOT RAHASAYAM- SURYA VIGYAAN AND KAAL CHAKRA

Trinabhimati panchaare Shanneminyashayatmake!

Sanvatsarmaye Kritsram Kaalchakram Pratishthitam!!

SWARN RAHSYAM -8

अद्भुत रहस्य आपके लिए ही

रस-तन्त्र के अन्वेंषण काल मे सदगुरुदेव की कृपा से मेरा साक्षात्कार उन अद्भुत सूत्रों से हुआ जिन्हे की रस सिद्धों के मध्य अभी तक गुप्त ही रखा गया था और मात्र गुरुमुखी परंपरा से ही शिष्यों को प्रदान किया जाता था, साथ ही मैं ये बात भी बता दूं की ये सूत्र अनेकानेक बरसों से इन सूत्रों को कोई प्राप्त भी नही कर पाया......... क्यूंकी जो मापदंड इन सूत्रों की जानकारी के लिए साधकों मे होने चाहिए थे वी भी अप्राप्य ही थे....... परंतु सदगुरुदेव की असीम कृपा से पुनः ये सूत्र हम सभी साधकों और शिष्यों के मध्य उपलब्ध हुए हैं.

क्यूंकी सदगुरुदेव की सोच अन्या विद्वजनो से भिन्न ही रही है.....अन्य विद्वांो का मत जहाँ पर ये रहा है की पहले सुपात्र या कुपात्र को देखो वही सदगुरुदेव का मत रहा है की ज्ञान को बिखेरते चलो ,जिसमे ज़रा सी भी उर्वरा शक्ति होगी वहाँ ये परिष्कृत बीज स्वयं ही अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित हो जाएगा. अतः पात्रता को साधक के लिए छोडो. लाभ तो बस वही उठा पाएगा जो इस ज्ञान को प्रयोगात्मक रूप से आत्मसात कर पाएगा..

सामान्यतः साधकों का खेचरत्व या आकाश गमन के प्रति जिज्ञासा स्वाभाविक है,और वे ये भी जानते हैं की आकाश गमन या खेचरत्व के लिए कुम्भक का कितना महत्व है कुम्भक के द्वारा ही शरीरस्थ वायु को रोक कर अपने शरीर को शून्य मे उठाया जा सकता है और वायु गमन किया जा सकता है .... पर क्या आपको ये पता है की सामान्य कुम्भक से तो ये संभव ही नही है क्यूंकि कुम्भक के द्वारा शून्य मे उठा तो जा सकता है,किंतु उत्थित अवस्था मे आप बात चीत नही कर सकते,यहा तक की कोई कोई साधक तो बाह्य-ज्ञान भी खो बैठते हैं,इसके अलावा उर्ध्व वायुमंडल मे चलते हुए समय समय पर प्रतिकूल प्रवाहशील वायु का आघात लगने से पतन का भय भी उत्पन्न हो जाता है.परंतु................किरात कुम्भक कर लेने पर देह शून्यमय हो जाता है. सामग्रा देह को संकुचित और प्रसारित करने की क्षमता का विकास होता है.

देह को शुद्ध कर उसके किसी अंग मे वायु पूर्णा कर रखने का नाम ही किरात कुम्भक है.इसी कुम्भक के वारा विशुद्ध वायु को देह मे भर लिया जाता है. ऐसे मे जब शून्यस्थ होते हैं, तो बाह्य ज्ञान भी बना रहता है और प्रतिकूल वायु का प्रभाव भी नही होता और बात चीत भी की जा सकती है..ऐसे मे अति-प्रबल और शक्तिशाली तेज़रशि के दर्शन और संस्पर्शन से भी ज्ञान नष्ट नही होता. लेकिन क्या ये इतना सहज है ????

नही ना...... पर रस-तन्त्र मे पारद के द्वारा (जो रस से रसेंद्र की यात्रा पूर्ण कर चुका हो- मतलब जिस पर दिव्यौषधियों का संस्कार हो चुका हो, रत्नो और स्वर्ण का जारण हो चुका हो) गुटिका का निर्माण किया जाता है और इस दौरान नवार्ण मंत्र का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है . सिद्धा कुंजिका स्तोत्रा जिसका प्रयोग सभी मंत्रों के उत्किलन और सिद्धिकरण के लिए किया जाता है उसमे ये पंक्तिया ज़रूर याद रखिए की खाँ खीं खूं खेचरी तथा.. मतलब हे देवी खाँ खीं... के रूप मे आप खेचरत्व शक्ति प्रदान करने वाली हो . और ये खाँ बेज ही क्षम अर्थात आकाश बीज बन जाता है और शरीर का गुरुत्वाकर्षण आपके नियंत्रण मे कर के आपको खेचरत्व दे देता है और ऐसा होता है अवश्य होता है नवार्ण मंत्र के द्वारा ही. बस वर्णो का क्रम गुरु निर्देशानुसार परिवर्तित करना पड़ता है.

ब. सूर्योदय का पहला मंडल ऋक-मंडल कहलाता है. इस मंडल की 16 किरणों की अधिष्ठात्री शक्तियों को हम षोडश मात्रकाओं के नाम से जानते हैं और इन मात्रकाओं का समन्वित रूप ही राज राजेश्वरी षोड़शी त्रिपुर सुंदरी हैं. इनका उत्किलन कर जब हम अभिषिनचितिकरण की क्रिया करते हैं

तो हमे सहज ही सूर्य विज्ञान का ज्ञान प्राप्त हो जाता है .ये क्रिया बाह्य उपादान जैसे की लेंस के साथ भी हो सकती है या बगैर किसी बाह्य उपादान के भी संभव होती है. इस प्रक्रिया के लिए आप जिस गुटिका का निर्माण करते हैं वो संपूर्ण वर्णों के मंत्रों से सिद्ध होती है . जितने भी वर्ण हैं उनकी अपनी अपनी एक शक्ति होती हैं

और उनका विशेष ध्यान भी तथा उनका एक मंत्र भी , इन मंत्रों को पूर्ण रूपेण जागृत कर जब उस वरणात्मक मंत्र के द्वारा जब हम गुटिका या विग्रह का निर्माण करते हैं तो ये गुटिका शून्य सिद्धि या पदार्थ परिवर्तन हेतु सूर्य सिद्धि से हमे युक्त कर देती है . अब ये वरणात्मक मंत्र क्या है???? तो इसके विषय मे संक्षिप्त मे इतना कहना ही पर्याप्त है की जैसे का वर्ण का कोई अर्थ नही होता है ,लेकिन उस का के साथ प+उ+र का संयोग कराया जाए तो कपूर बनता है

जिसका अर्थ भी है और आकृति भी . इसी तरह वरणात्मक मंत्रों से जब वो गुटिका युक्त होगी तो आप शून्य मंत्र को उसके सामने सिद्ध कर जिस भी वस्तु या पदार्थ का चिंतन करेंगे वो शून्य से आप के लिए सृजित हो ही जाएगी. क्यूंकी वो मंत्र उस गुटिका से क्रिया कर आपके चिंतन मे आए हुए पदार्थ के वर्णों को संगठित कर एकरूपता प्रदान कर अस्तित्वा मे ला देगा.

अगले लेख मे आंतरिक ,आत्मिक कीमिया और रक्त-बिंदु, श्वेत बिंदु क्रियाओं का वो रहस्य आपके सामने उद्घाटित होगा जो निश्चय ही रस-तन्त्र के गूढ और गोपनिय आयामो से आपको अवश्य ही परिचित करवाएगा.शायद तब आप समझ पाए की सदगुरुदेव के कई ऐसे पक्षा हैं जो की हम समझ ही नही पाए या कभी हमने जानने की कोशिश ही नही की.

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

अब इसे एक बार तो करके देखिये

जीवन में लक्ष्मी की अपनी ही महत्ता हैं और इस लिए हमारे मनीषियों ने बहुत सोच विचार कर एक पूरा मॉस का नाम ही लक्ष्मी मास या कार्तिक मास रख दिया जिसका हर दिन ही दीपावली के सामान ही महत्वपूर्ण हैं , और सदगुरुदेव जी ने भी यह लिखा हैं जो चतुर होते हैं और जिन्हें जीवन में आगे जाना हैं वह इन 30 दिन का उपयोग साधनात्मक रूप से कर के मतलब पूरे 30 प्रयोग संपन्न अपने पूरे भाग्य को ही बदल लेते हैं, क्योंकि वह यह अच्छी तरह से जानते हैं की जीवन को यूँ ही रो झिंक कर नहीं काटा जा सकता हैं उसके लिए तो पौरुष वांन रुख कर साधना मय तो होना ही पड़ेगा ही .

और इसी लक्ष्मी मय बनने की श्रंखला में एक सरल सा प्रयोग ..

मंत्र : **ॐ सरस्वती इश्वरी भगवती माता क्रां श्रीं श्रीं श्रीं मम धन देहि फट स्वाहा ||**

इसे आपको प्रतिदिन करना हैं रोज़ 108 बार कमसे कम 40 दिन तक .और यदि आप सामान्य साधनात्मक नियमो का पालन करते हुए करते हैं तो निश्चय ही आपके जीवन में लक्ष्मी तत्व अनुकूल होता ही हैं., जिस तरह महाविद्या साधना में तेल का दीपक लगाया जाता हैं उसी तरह लक्ष्मी साधन में घी का दीपक लगाया जाता हैं कुछ मिठाई भी भगवती लक्ष्मी को अर्पित करे.. सुबह या शाम कभी भी किया जा सकता हैं वस्त्र आसन माला आदि का कोई प्रतिबन्ध नही हैं पर यदि आप पीले रंग के वस्त्र का प्रयोग करे तो ज्यादा उचित रहेगा यदि रात्रि काल में जप करते हैं तो पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके करे .

****

Ek saral lakshmi prayog

TOTKA - VIGYAN

. १.पीपल के वृक्ष की जितनी भी प्रशंशा की जाये कम हैं यह आपके भाग्य तक को बदलने समर्थ हैं यदि आप पीपल के निचे एक तेल का दिया लगा कर बिना पीछे मुड़े वापिस आ जाये तो कुछ ही दिनों में धन लाभ की अवसर बनने लगते हैं.

२, जिस तरफ का स्वर चल रहा हैं उस तरफ का ही पैर सबसे पहले निकाल कर घर से बाहर निकले तो वह दिन भी अच्छा होगा ,

३, अनेको विद्वानों का कथन हैंकि यदि लक्ष्मी जी के सामने 9 बत्तीया वाला दीपक लगाया जाये तो यह आर्थिक दृष्टी से बहुत ही अच्छा रहता हैं ,

4जीवन में जब कभी भी किसी कन्या की शादी हो रही हो उसमे अपना योग दान करे या निराश्रित कन्याओ की शादी में योग दान करे यह भी अनेक अशुभो को दूर कर आपको शुभता दें में समर्थ हैं ,

5.नारियल को राहू का प्रतीक माना गया हैं , यही शनिवार को नारियल को बहते हुए पानी में बहाया जाये तो राहू गत समस्या से अनुकूलता होती हैं.

6. जीवन में अधिकतर समस्या किसी भी कार्य में अत्यधिक देरी से ही सामने आती हैं और इसका कारण शनि ही होता हैं और इसकी शांति के कुछ उपाय में से एक शनि वार को भगवान शंकर में काले तिल को चढ़ाना भी हैं.

7.शनी की शन्ति का उपाय जो बहुतायत से प्रचलित हैं वह हैं की काले घोड़े की नाल की एक छल्ला जिसे बना कर अगुली में पहिना जाये .

8 वहीँ विवाह में अनावश्यक यदि विलम्ब हो र हा हैं तो ऐसे तो इसके अनेक करण हो सकते हैं पर एक सरल का उपाय यह हैं की किसी भी केले के पेड़ के नीचे गुरूवार के दिन अगरबत्ती लगाये .

९. इशान दिशा को काफी पवित्र माना जाता हैं और इस दिशा में पूजा स्थान को रखने को कहा जाता हैं , पर आज यह कहाँ संभव हैं पर इसके कारण बहुत सी समस्या का सामना हमें करना ही पड़ता ही हैं, तो इस दोष की निवृति के लिए " ॐ नमः शिवाय" मन हा आधिकाधिक जप करना ही चाहिए .

१० घर पर जो जो भी सोफा सेट लगाया जाये उसकी दिशा इस तरह से रखी जाय की यदि उस पर घर का मालिक बैठता हैं तो उसे के ठीक सामने दक्षिण दिशा नहीं होना चाहिए .

****

1, the pipal tree is very much importance in our way of life this Is able to change your fortune ,if light a earthen lamp filled with oil nearer to it s roots and come back without looking than with in short of span of time you will find the opportunity to get financial benefit.

2, if you coming out from your house than takeout that feet first ,that direction is nostril air is running means swar.

3.many scholar suggest that if earthen lamp with 9 battiya light up in front up of goddess lakshmi, it will be good for financial gain.

4.when ever you find marriage of any girl happening give whatever you can gives in term of help in financial matter or other desired things, or for those girls marriage who have not have unfortunately any shelter , this will change your luck .

5, naraiyal (coconut) is resentative of Rahu and if you throw the nariyal in running water than it will help you if any problem that comes because of Rahu planet

6. whenever delay occurs in our life any work , many times this happens because of Saturn planet so you offer black till on Bhagvaan Shankar this help to reduce the problem.

7.if you are having problem with some dosha because of Saturn planet why not try to wear a ring made of nall of black hoarse.

8 there may be many reason for delay in marriage but light up a agarbatti below the a bananas tree ,specially on Thursday this help you.

AYURVEDA : SOME TIPS

.

जीवन का पहला सुख तो सभी अब जान ही गए हैं "निरोगी काया " पर इस सुख को लगातार स्थायी कैसे रख जाये इस हेतु कुछ सरल से उपाय आपके सामने हैं

1, नीम की सदियों से एक तेज antiseptic माना गया हैं और हल्दी का भी लगभग यही गुण हैं तो यदि कोई घाव ठीक नहीं हो रहा हो तो पहले नीम की पत्तियोंको तवे पर गर्म कर से और फिर इसमें हल्दी मिला कर एक पट्टी में रख कर घाव पर बांधे आराम होगा, याद रखे सीधे नहीं बल्कि पट्टी में बाध कर लगाना हैं .

2,जब कभी भी कोई भी मास पेशियों की चोट लग जाये तो सीधे ही गर्म सिकाई न करे बल्कि पहले दो दिन तो कम से कम बर्फ से ही सिकाई करे हाँ इसके बाद आप हलकी गर्म सिकाई कर सकते हैं पर फिर भी आराम न दिखे तो डॉक्टर की सलाह अवश्य ले

3. मोच आ जाने यदि किसी कारण वश तो बेल की पत्तिया ले उसे गुड के साथ पका ले और इसका लेप उस मोच वाली जगह पर लगाये दिन मे कई बार यह करे ३/४ दिनमे ही आशातीत लाभ होगा ,

4. जिनके भी पेट में कीड़े हैं वे सभी यदि प्रातः काल दो तीन लाल टमाटर कच्चे चवा चवा करखाते हैं तो यह बहुत ही लाभदायक पाया गया हैं हैं .

5. कब्ज से आज कौन नहीं परेशां होगा , अनियत्रित जीवन शैली का यह अभिशाप हैं ही रात को जब आप सोने जा रहे हो आप एक चम्मच सौफ अच्छी तरह से चवा चवा कर खा ले और इसके बाद एक गिलास हल्का कुनकुना पानी पी ले आपको लाभ होगा

6. यूँ तो प्याज को त्याज ही कहा गया हैं पर यह भी एक गुणकारी वस्तु हैं यदि आप कच्ची प्याज खाते हैं तो आपके मुख के कीड़े नष्ट होजाएंगे,

7. ठीक इसी तरह लहसुन का भी गुण हैं कम से कम एकं कली तो कच्ची खाना ही चाहिए यह भी अनेक रोगोंमे के लिए एक बहुत लाभदायक सिद्ध हुयी हैं, जैसे पेट सम्बंधित

8, एक लहसुन को बिना तले चवा कर खा जाएँ आपको स्वास सम्बंधित रोगों में लाभ पहुंचेगा .

9. प्याज का नियमित सेवन से रक्त जनित रोग भी दूर होते हैं

1० .दमे से प्रभावित व्यक्ति तो को नमी वाली जगह से दूर रहना चाहिये , और उसे संभव हो तो सरसों के तेल से मालिश अपनी करना चाहिये .

****

Every body knew about the very first happiness ,"Nirogi kaya"means to have healthy body but to keep this such /happiness so for this here are some upay..

1/ the neem leaves are considered antiseptic and turmeric also has the same effect , so if any wounds are not getting healed so neem leaves mild heated on any tava and mix turmeric and this paste should be covered in a cloth and applied on that wounds , it helps.

2, when ever you are feeling any muscular pain do not apply very first on that any hot massage , actually very first two days you have to massage that area with ice already covered in cloth and after two day than can apply little bit hot massage , if still situation is not seems to good, than , must consult ant doctor.

3. if having "moch" than apply twice or thrice paste prepared with leaves of bel tree and gud. Within 3 or 4 days you will feel much recovery.

4.those who are having some "keede" in his smooch must eat two three lal tamatar (red tomato) every morning . this helps a lot.

तंत्र कौमुदी
शक्ति सायुज्य अघोर साधना महाविशेषांक
Ninth Issue – FEBRUARY 2012
PART -I
Tantra kaumudi

Name of the Articles

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

SADGURUDEV - PRASANG

एक अद्भुत वृतांत

स्वामी जी कभी कभी अपने मुड में आ जाते थे , तो शिष्यों को अत्यधिक आनंद आ जाता था ,एक बार हम पंद्रह बीस शिष्य शिष्या उनके साथ थे और गो मुख से आगे काक भुशुण्डी आश्रम जा रहे थे यद्दपि गर्मियों के दिन थे पर गंगोत्री से आगे का रास्ता हिमाच्छादित रहता था और कभी कभी तो बर्फीली आंधिया आ जाती थी , शिष्यों की परीक्षा के लिए भी स्वामी जी हम लोगो को कभी कभी ऐसे भी ले जाते थे .

आज कल तो गोमुख तक एक छोटी सी पगडण्डी से बन गयी हैं परन्तु उस समय तो चिड्वासा तक बर्फ रहता था गर्मियों में भी चारो तरफ बर्फ का साम्राज्य रहता था ऐसी स्तिथि में पगडण्डी की कल्पंना क्या की जा सकती हैं .

जब हम गौमुख से आगे की और बढे तो धीरे धीरे सर्दी का वेग बहुत अधिक बढ़ गया था स्वामी जी ने कहा सन्यासी को प्रकृति की प्रत्येक स्तिथि में स्थिर बना रहना चाहिए उन्हें सर्दी गर्मी में भी सम भाव से रहना चाहिए शरीर को जिस प्रकार से भी चाहे वह ढाल सकता हैं

यदि उसे बहुत अधिक आराम दिया जाए तो वह कमजोर हो जाता हैं , और आलसी बन कर विखर जाता हैं अतः समय समय पर उसे कसौटी पर कसते रहना चाहिए जिस प्रकार वीणा के तार कसे रहने पर मधुर ध्वनि गुंजरित होती रहती हैं . उसी प्रकार से साधक का शरीर भी कसौटी पर कसा रहने की वजह से साधना में आनंद प्रतीत होता रहता हैं

साँझ घिर आई थी और हमने बर्फ की एक बड़ी प्राकर्तिक गुफा देख कर वहीँ पर रात्रि बिताने का निश्चय किया, हमरे साथ दिव्या बहिन सहदेवी चेतैन्य माता और निश्च ला बहिन भी थी हमसे ज्यादा वे सक्रिय थी और बराबर हम लोगों से आगे चल रही थी पर आज वे भी थकी सी अनुभव कर रही थी .

गुरुदेव ने उसी गुफा में रुकने का निश्चय कर लिया , उन्होंने बताया की एक बार वे उसी गुफा में 5 दिन तक रुके थे क्योंकि उन दिनों बर्फ का तूफ़ान आ गया था और पांच दिनों तक तूफ़ान बना रहा था .

हम सब ने गुफा में ही डेरा डंडा लगाया थोड़ी सी देर की बातचीत के बाद हम सभी स्वस्थ से होने लगे विषय गृहस्थ व्यक्तियों की ओर मुड गया निर्विकल्प बाबा ने कहा गृहस्थ व्यक्तियों के मज़े ही मज़े हैं उनको किसी भी प्रकार घूमना नहीं पड़ता हैं ,

स्वामी जी ने एक क्षण के लिए बाबा की ओर देखा पर बोले कुछ नहीं हम सभी शिष्य शायद विनोद के मुड में थे , गुरुदेव की दृष्टी का अर्थ नहीं समझ पाए चैतन्य माँ ने कहा - उत्तर काशी में कहीं होते तो कहीं से भी व्यवस्था करती आप सब लोगों को आज हलुआ बना कर खिलाती , आज मेरा जन्म दिन भी तो हैं .

स्वामी जी ने एक दम से उनके शब्दों पर ध्यान दिया , बोले अच्छा आज तेरा जन्म दिन हैं तब तो हलुआ जरुर सबको खिलना ही हैं तुम्हारा जन्मदिन तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही मनाएंगे .

हम सभी गुरु भाई बहिनों को गुरुदेव जी ने एक पंक्ति में बैठा दिया और शून्य में से चांदी की थालिया मंगा मंगा कर अपने हांथो से से सबके सामने रखते रहे उस गुफा में अपना हाथ उठाते और उनके हांथो में तीन चार थलिया एक साथ आ जाती और थालियों के बाद एक एक के सामने छः छः कटोरियाँ एक लोटा और एक गिलास भी रखा ,

फिर उन्होंने अपने हांथो से बादाम का हलवा सबको परोसा , हलवे के साथ गर्म चावलों का पुलाव , गरमा गरम फूली हुयी पुडिया दाल और पञ्च प्रकार के साग भी प्रत्येक के सामने रखते गए यही नहीं अपितु वे मिरचो का आचार और पापड भी रखना नहीं भूले .

हम सभी आश्चर्यचकित से गुरुदेव के चेहरे की ओर देख रहे थे , वे आज कुछ विशेष मुड में थे बोले - जो भी चाहिए मांग लेना .....हमारे साथ सुरेन्द्र बाबु भी थे जो सन्यास लेकर गुरुदेव के शिष्य भी बन गए थे मूलतः वे बंगाली थे बोले - रोसगुल्ला होय तो भालो "

स्वामी जी ने कहा - रोसगुल्ला ही परोसेंगे और उन्होंने हवा में से कलकत्ता के ही रसगुल्ले मंगाकर सबको परोस दिए

सन्यास जीवन में हम लोगों ने ऐसा स्वाद भी भुला दिया था कितना आश्चर्य हो रहा था गौमुख से आगे एक ऐसे स्थान पर जहाँ चारो और बर्फ ही बर्फ हैं वृक्ष या पेडो का नमो निशान तक नहीं वहां पर चांदी की थालियों और कटोरियों में भारत के श्रेष्ठ व्यंजनों का आनंद हम ले रहे थे और प्रत्येक व्यंजन गर्म गर्म परोसा जा रहा था जैसे की अभी ही कढाई से निकाला गया हो ,

उस दिन हम लोगों ने जरुरत से ज्यादा भोजन कर लिया भोजन करने के बाद गर्म पानी से हाथ धोये और वे सभी थाली और भोजन पदार्थ जिस प्रकार से गुफा में आया था शेष बचा हुआ पदार्थ उसी प्रकार से हवा में विलीन हो गया .

इससे भी ज्यादा आश्चर्य जनक बात तो तब हुयी जब गुरुदेव ने कहा की मैं विशेष कार्य से बाहर जा रहा हूँ प्रातः काल लौटूंगा तुम्हारे सोने की व्यवस्था कर दी गयी हैं हम सभी गुफा के बाहर खड़े गुरुदेव की बाते सुन रहे थे वहीँ से वे उत्तर की और बढ़ गए हम गुफा के अन्दर पहुंचे तो देखा की चौबीस गद्दे बिछे हुए हैं और प्रत्येक गद्दे पर दो दो रजाईयां एक एक तकिया रखा हुआ हैं स्वच्छ शुभ्र गद्दे तकिया और कम्बल ..

हम सब आश्चर्य चकित थे इस बात पर नहीं की यह सारी सामग्री इस वियाबान में बर्फीले स्थान पर पर कैसे आ गयी अपितु इस पर की आज गुरुदेव को क्या सुझा की हमें पूरी तरह से गृहस्थ ही बना दिया.

जरुरत से ज्यादा भोजन तो कर ही चुके थे गद्दों पर लेट गए ….. लेटते ही हमें नीद आ गयी और सुबह आखं तभी खुली जब गुफा के बाहर गुरुदेव की हुंकार सुनाई दी .

जंगल में भी मंगल हम लोगों के जीवन में भी कई बार व्याप्त हो जाता था जब भी गुरुदेव प्रसन्नता के मुड में होते ऐसा ही हास्य हम लोगों के साथ प्रस्तुत कर देते परन्तु यह सब होता शालीनता और मर्यादा के साथ

मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं से साभार

****
****

Sadgurudev prasang

When swamiji comes in his mood than that moments became joy for disciples , one upon a time , we were about fifteen / twenties shishy and shishyaa were with him, and moving kakbhushundi ashram through gomukh. Though the time was summer season but the way after gangotri was fully covered with snow. And sometimes cold blizzard also came , to testify our strength and shishyta , swamiji sometimes took these type of way.

Now a days there is a small way(pagdandi) that leads to gomukh but on that time, snow was up to the chidwasa and even in summer time too , so who can imagined about any small road or pagdandi there .

When we moved from gomukh the effect of cold getting increased up to much level. Swamiji told us that a sanyasi must be unshaken in all the circumstances imposed by nature and also bear the cold and heat in even mindness.

सर्व सिद्धि प्रदायक श्री गणेश प्रयोग

Sarv Siddhi pradayak Shri GaneSh PRAYOG

भगवान गणपति के वरदायक स्वरुप को घर में स्थापन करा सकने में समर्थ तीव्र प्रयोग

जो गणाधिपति हैं मतलब एक अर्थ में सारे गणों के अधिपति हैं तो एक अन्य अर्थ गण मतलब हमारी इन्द्रियों के भी अधिपति हैं इसी से ही भगवान के इस स्वरुप की महत्ता अपने आप में सिद्ध हो जाती हैं

वही विघ्न हर्ता हैं तो वही विघ्न कर्ता भी हैं , भगवान गणेश के स्वरूपों की विविधता तो सारे तन्त्र जगत में हैं पर उनके वरदायक स्वरुप की बात ही और हैं, कोइ भी शुभ कार्य हो कोई भी मंगल दायक कार्यक्रम हो यहाँ तक कोई भी साधना क्रम हो उनकी प्रसन्नता सबसे पहले एक साधक को चाहिए और उस से ही साधक के समस्त कार्य निर्विघ्न संपन्न होते ही हैं,

इस स्तम्भ में हम उनके ऐसी ही किसी सरल स्वरुप की साधना आपके सामने रखते हैं जो आप के लिए आसान के साथ ही साथ वरदायक भी हो और प्रत्येक साधक को कोई न कोई उनके स्वरुप की उपासना तो करना ही चहिये जो न केबल उसके उस कार्य को जिसके लिए वह साधना कर रहा हैं बल्कि आने वाले दिन को भी मंगलमय बना ही देते हैं ..

इस मन्त्र का विन्यास आपको यह बताता हैं की इस एक मंत्र में जो देखने में भले ही छोटा सा हैं पर असीम सामर्थ्य लिए हुए हैं और आप इस मंत्र को अपने दैनिक पूजन में शामिल कर के और भी अधिक लाभों से लाभान्वित हो सकते हैं.

मन्त्र : **श्रीं ॐ गं ||**

भगवती महालक्ष्मी और भगवान् गणेश के बीज मंत्रो से सुसज्जित यह मंत्र आपके लिए सौभाग्य के नए दरवाजे खोल सकने में समर्थ हैं यदि इसे आप पूर्ण आस्था और विस्वास के साथ इस प्रयोग को अपने जीवनमे स्थान देते हैं , कोई विशेष नियम नहीं हैं बस यदि पीला आसन और पीले वस्त्र धारण करके प्रातः काल किया जाये तो आप स्वयं ही इसके लाभ अनुभव कर पाएंगे .

****
****

Sarv siddhi pradayak ganpati prayog

Who is ganadhipati who is the lord of all the gan and in one other meaning he is the lord of all our senses , this is enough to understand the importance of this form of Bhagvaan.

He who is the problem solver , is also the problem creator . in tantra field , various forms of Bhagvaan ganesh worshipped , either any good work , auspicious work and religious work started , having his blessing is the first work or essential task.

What is aghor tatv?

एक विवेचना युक्त लेख आपके लिए ही तो ....

१. आखिर इस सम्प्रदाय की आवश्यकता ही क्यों .?

उत्तर :मानव जीवन अत्यंत विलक्षणता से युक्त हैं किसी भी दो का एक जैसा नही हैं , स्वभावगत ,संस्कारगत ,देश काल जाति गत भिन्नता का होना एक सामान्य सी बात हैं.हर व्यक्ति के लिए एक ही मार्ग का निर्धारण नही किया जा सकता हैं क्योंकि हर व्यक्ति की भाव गत अवस्था किसी दूसरे से अलग हैं .भगवान शंकर के पंचम मुख से निकला हुआ यह मार्ग एक साधक को (स्त्री या पुरुष) पशु भाव से उठाकार दिव्य भाव तक ले जाने में समर्थ हैं .

और इतनी तीव्रता से की जो की अन्य किसी भी मार्ग में संभव ही नही हैं . इस कारण इस मार्ग विशेष का प्रादुर्भाव हुआ , योग्य आधिकारि यो के लिए हुआ हैं .क्योंकि

जीवः शिवः शिवो जीवः , स जीव : केबल: शिव |

पाश –बद्ध :स्मृतो जीवः ,पाश मुक्त स्स्दाशिवः ||

अर्थात जीव शिव हैं और शिव ही जीव हैं ,वह जीव केबल शिव हैं ,भिन्न नही ,एक वही जब पाश बद्ध रहता हैं तो जीव कहलाता हैं ,और पाश मुक्त होने पर सदा शिव ....तो जीव को कैसे उसकी शिव अवस्था तक शीघ्रतम ले जाया जाय . इस हेतु इस मार्ग का प्रकटीकरण हुआ .क्योंकि तंत्र बलपूर्वक इच्छाओ का दमन का विरोध करता हैं बल्कि वह उन्ही को दिव्यतम बना कर तीव्रता से साधक को अपने लक्ष्य तक लेजाता हैं . और इसी कारण से इस राज मार्ग ,दिव्य मार्ग भगवान शिव के द्वारा सामने आया .

२. दक्षिण और वाम मार्ग में क्या अंतर हैं .?

उत्तर –दोनों ही मार्ग दिव्यता की ओर ले जाते हैं एक में स्व नियत्रण अलग ढंग से हैं दूसरे में बिलकुल अलग तरीके से . पर मनमाना व्यापार किसी में नही..... दोनों ही सदगुरुदेव की दिव्य द्रस्टी से बंधे हुए हैं . चूँकि कलयुग में तंत्र से ही सफलता कहीं आसानी से मिल सकती हैं क्योंकि संयम , जप तप , और अन्य आवश्यक क्रियाओं हेतू जैसी मानसिक निर्मलता स्वच्छता होनी चहिये वह आज संभव नही हैं.अतः भगवान शकर ने ही यह कहा हैं की तंत्र मार्ग ही इस कलयुग में राज मार्ग जैसा हैं इसको छोड़ कर या इसकी निंदा करके अन्य मार्ग को अपनाने वाला साधक मुर्ख हैं क्योंकि अब न उतनी आयु हैं और न वैसा समय..पर तंत्र मार्ग भी व्यक्ति की अंतश चेतना के माध्यम से अगलग अलग मार्ग रखता हैं .जो अधिकारी हैं तीव्रता के ...

जो योग्य हैं पात्रता रखते हैं उनके लिए ...यह दिव्य मार्ग हैं .

वाम मार्ग के बारे में कहा गया हैं ,

बीनाऽऽगम कलौ देवी ! नैव सिद्धयन्ति देवता : ||

वाम एव भवेत पन्थ: कलौ सिदि्ध्य्भलाषीणाम

कौलो मार्ग : परम गहनों , योगिनामप्यगम्य :

साधारण अर्थ यह हैं की वाम मार्ग के बिना कोई भी देवता सिद्ध नही होते . इस कलि युग में सिद्धि चाहने वालो के लिए यही एक मार्ग हैं .पर यह मार्ग इन्द्रिय लोलुप के लिए वर्जित हैं ,यहाँ भी सदगुरुदेव सत्ता सर्वोपरि हैं .

अतः किसी भी मार्ग को सिर्फ सुनी सुनाई बात के आधार पर हेय नही ठहराना चाहिए .

अघोर मार्ग वाम के अंतर्गत आता हैं अतः समस्त तंत्र शास्त्रों ने सर्व सम्मानित हैं .

३. अघोर और घोर हैं क्या .?

उत्तर .

घृणा शंका भयं लज्जा ,जुगुप्सा चेती पंचमी |

कुल शीलं तथा जातिरष्टो पाशा : प्रकीर्तिता ||

पाश –बद्ध स्मृतो जीवः ,पाश –मुक्त : सदा शिव ||(कुलार्णव)

साधारण मानव जीवन आठ प्रकार के बंधनों से बंधा हुआ हैं जिसे शास्त्र अष्ट पाश की संज्ञा देते हैं यह एक प्रकार से आत्मा के मूल स्वरुप को छुपा देते हैं . जो इन अष्ट पाशो से या घोर (यहभी एक संज्ञा हैं) से बंधे हैं वह घोर हैं या संसारी जीव हैं , और जो इन अष्ट पाशो से मुक्त हैं वह अघोर हैं .जो एक दिव्यतम अवस्था हैं .

४. वास्तव में अघोर या अघोर साधक हैं क्या ...?.

उत्तर –घोर मतलब संसार के नियमों में बंधा हुआ .तो अघोर वह हैं जो नियमों से मुक्त हैं वह राग द्वेष से परे हैं , अष्ट पाश से मुक्त हैं , अब वह सर्वथा निर्लिप्त हैं . मोह माया के चंगुल से परे , अपने स्व अस्तित्व जो की सदा आनंदमय हैं, में डूबा हुआ एक ऐसा साधक जो जाति धर्म , छुआछूत ,उंच नीच , शुद्ध अशुद्ध , मान अपमान से परे दिव्यतम अवस्था में होता हैं जिसने यह जान लिया खुद अनुभव कर लिया की सारा संसार .... सारी वस्तुए दिव्य हैं तो अब उसे क्या अंतर .वह अब सभी में उसी दिव्यता का अनुभव करता हैं

भावस्तु त्रिविधो देव ! दिव्य वीर पशु क्रमात |

आद्य भावो महादेव !श्रेयान सर्व –सम्रद्धि द ||

द्वितीयो मध्यम् श्चेव , तृतीय स्सर्व –निन्दित ||(भाव चूडामणि)

यह स्पस्ट करता हैं की तीनो भाव दिव्य , वीर,पशु में दिव्य भाव सर्व श्रेष्ठ हैं और

चूँकि एक साधक जब इस मार्ग की सहायता से दिव्य भाव में कहीं आसानी से पहुँच जाता हैं तो इस मार्ग ही उच्चता स्वतः ही सामने आ जाती हैं .

और इस परम विजयी साधक को समाज भले ही न पहचाने पर वह होता हैं सर्वथा आनंदमयी अवस्था में .और उसे ही अघोर या अघोरी या अवधूत या औघड की संज्ञा से संबोधित किया जाता हैं

५. शक्ति का इन दोनों से क्या सम्बन्ध हैं .?

उत्तर –शिव और शक्ति के संयोग के बिना कुछ भी संभव नही हैं , शक्ति को भी एक आधार तो चहिये ही . शिव भी शक्ति के कुछ नही कर सकते हैं तो शक्ति को भी कुछ करने के लिए उनकी आवश्यकता हैं ही मतलब एक आधार तो चाहिए . जब अघोर मार्ग इतना दिव्यतम हैं तो इन दोनों का सम्मिलन अवश्य ही होगा क्योंकि इसके बिना कैसे कोई मार्ग अपनी उच्चता तक पहुँच सकता हैं . साधक जो भी साधनाए करता हैं वह बाह्यगत रूप से भगवान शंकर के स्वरुप भले ही दृष्टिगत करायेगए रूप से संबंधित दिखे .... पर होती हैं वह सब शक्ति सायुज्ज , क्योंकि बिना शक्ति के कुछ भी सर्जनात्मक या विधान्वात्मक संभव ही नही हैं,जो भी साधनाए इस मार्ग में हैं वह सभी की सभी कहीं न कहीं शक्ति सायुज्ज ही हैं .

६. अघोर साधानाए इतनी उच्च क्यों मानी जाती हैं .?

उत्तर –हर साधनाए अपने आप में उच्च हैं पर जब अघोर साधनाओ की बात आती हैं तब बात ही अलग हैं , इस मार्ग की साधनाओ को समस्त साधना क्षेत्र का सिरमौर कहा जा सकता हैं . क्योंकि साधक एक तो उस स्थान पर यह साधना करता हैं जहाँ पर प्राण ऊर्जा सबसे जयादा होती हैं. और निश्चय ही यह साधनाए अपने आप में कोई महीनो या साल नही मागती बल्कि कुछ दिन में ही सीधे सफलता का साधक को वरण करा देती हैं. तीक्ष्ण होती हैं . और कोई हलके में लेने वाली नही हैं क्योंकि न केवल यह दुस्कर होती हैं बल्कि यदि त्वरित परिणाम देने वाली होती हैं तो अत्यधिक सावधानी भी साधक की ओर से चाहती हैं . और जो इस मार्ग पर चला चाहता व् ह स्त्री या पुरुष कोई भी हो वह जानता हैं की यह सीधे सीधे सिद्धियो या प्रकृति के रहस्यों पर झपट्टा मार कर छीन लेने का मार्ग हैं रोते या गिडगिडाने वालो का नही .अत्यधिक प्राण उर्जा से भरी साधनाए जो आर या पार की अवस्था रखती हैं इस मार्ग की विशेषता हैं .

७. अघोर सम्प्रदाय के मुलभुत सिद्धांत क्या हैं.?

उत्तर –सामान्यतः सभी मार्ग का एक मूल सिद्धांत तो यही हैं की सभी उस परम सत्ता जिसे सदगुरुदेव कहा जाता हैं तक पहुंचना ..उस में विलीन चाहता हैं और वही लक्ष्य भी हैं . पर इस मार्ग में कुछ सामान्य से नियम हैं पर जो आज देश काल और सामाजिक नियमों को ध्यान में रख कर कुछ परिवर्तित भी इन मार्ग के आचार्यों द्वारा कर दिए गए .. इस बारे में आप अग्रिम लेखो में विस्तार से ....लेख में इसी अंक में पढ़ ही सकते हैं

फिर भी .कुछ सामान्य नियम

- साधक की साधना स्थली शमशान ही होती हैं .
- वह उच्च नीच या भेदभाव किसी भी जाति या धर्म से नही करता हैं
- वह समभाव में रहता हैं .
- गुरु आज्ञा /इष्ट आज्ञा सर्वोपरि हैं .
- अष्ट पाशो से मुक्त होकर अपने इष्ट में लीं रहना .

८. क्या अघोर साधक एक सामने गृहस्थ जीवन निर्वाह कर सकता हैं .?

उत्तर –गृहस्थ जीवन कहीं भी किसी भी साधना पथ पर वाधक नही हैं अगर साधक सही में साधना पथ पर चलना चाहता हैं तो . हाँ किसी काल विशेष में यह माना गया था की यह गृहस्थों के लिए नही हैं, सदगुरुदेव ने जीवन भर अनथक परिश्रम करके यह बताया की बस इतना ध्यान रखना हैं की जब साधना की जा रही हो तब अपनी मानसिक अवस्था एक सन्याशी जैसी रखनी हैं और कुछ विशेष नही ..

.तो आज भी सदगुरुदेव के अनेको शिष्य जो की इस अघोर साधना की उच्च भाव भूमि पर हैं गृहस्थ रूप मे हैं अतः यह कोई समस्या या बंधन नही हैं .

९. अघोर साधक के लिए भी क्या दीक्षा विधान हैं .?

उत्तर –दीक्षा से ही पात्रता दी जाती हैं इस मार्ग में चलने के लिए के लिए..और यह तो व्यक्ति का सौभाग्य हैं की उसे इस मार्ग की दीक्षा प्राप्त हुयी हो , साधारणतः सबसे पहले श्री सदगुरुदेव के द्वारा समान्य दीक्षा व अन्य क्रमानुसार दीक्षा फिर साधक की रूचि या संस्कार किस मार्ग केलिए हैं यह देख कर अघोर दीक्षा , का प्रावधान हैं , फिर विशिष्ट अघोर दीक्षा और फिर साधक की उन्नति के अनुसार अन्य अन्य दीक्षाओ का क्रम यह तो सदगुरुदेव के हाथ में हैं .इस तरह हर मार्ग की तरह इस मार्ग में भी उच्चतम दीक्षाओ का विधान हैं पर वह अभी तक जन मानस के सामने नही आया हैं .

१०. आज के समय में अघोर साधक या साधनाओ की क्या उपयोगिता हैं .?

उत्तर - आज के समय में तो इसलिए भी इन साधनाओ की उपयोगिता ज्यादा हैं की आज व्यक्ति के पास न तो समय हैं और न ही वह स्वस्थ या सामर्थ्य की वह लंबी लंबी साधनाओ में बैठ सके . और उन साधनाओ में सफलता के लिए वर्षों इंतज़ार भी कर सके . अघोर साधनाओ में भी हर तरह की साधनाए हैं जो किसी अन्य मार्ग में हैं . फिर वह चाहे आरोग्य से सम्बंधित हो या लक्ष्मी से सबंधित .....तो जो साधनाओ त्वरित परिणाम दे ने में समर्थ हैं वह तो आज के लिए बहुत जरुरी हैं .. क्योंकि जब कम समय में अपने जीवन के लक्ष्य को स्पर्श करना हो तब .....यही राज मार्ग हैं ...हाँ सावधानी यह मार्ग चाहता हैं और साधक की सजगता भी ...

११. इस मार्ग में स्त्री और पुरुष का क्या कोई भेद हैं .?

उत्तर – तंत्र ही वह पहला मार्ग हैं जी जातिगत वर्णगत और लिंगगत भेद नही मानता हैं वह केबल साधक शब्द से परिचित हैं जिसमे स्त्री या पुरुष दोनों ही आ जाते हैं . जिस किसी की भी रूचि हैं वह इस मार्ग में चल सकता हैं . यहाँ किसी भी प्रकार की न्युन्ताये नही हैं .यह मार्ग भी शक्ति तत्व पर हैं अतः स्त्री भी किसी भी अन्य मार्ग की अपेक्षा इस मार्ग पर जयादा सफलता प्राप्त कर सकती हैं.क्योंकि शक्ति तत्व शक्ति में कहीं ज्यादा आसानी से युक्त हो सकता हैं .

१२. आज जब शमशान हैं ही नही या न के बराबर तब कैसे की जाए अघोर साधनाए ?

उत्तर –ऐसी कुछ स्तिथि तो अब सामने हैं पर अब शमशान हैं ही नही यह तो बात नही हैं....हाँ ... यह जरुर हैं की परिस्थिति के कारण , देश काल की स्थिति के कारण अब उतने बड़े नही हैं पर शास्त्रों में अनेको और शमशान बताये हैं जैसे की जिस बिस्तर पर आप सोते हैं वह भी शमशान हैं .पद दलित महिलाये (वैश्या) के घर को भी शमशान मन गया हैं और अगर एक उच्चस्तरीय दीक्षा "तीव्र महाकाल दीक्षा " ले ली जाए तो सदगुरुदेव साधक के ह्रदय में ही शमशान का निर्माण कर देते हैं ...हाँ यह जरुर हैं की पहले पहले कुछ बार किसी अनुभवी के साथ जाना पड़ता हैं पर बाद में जब समझ आ जाता हैं और साधक योग्य और चतुर हो जाता हैं तब यह समस्या सामने नही आती हैं.

.

१३. अघोर साधना और आज के समाज में इनका महत्त्व .?

उत्तर –हमारे समाज का यह दुर्भाग्य रहा और कतिपय अनधिकारियो द्वरा इस मार्ग में जा कर मनमाना व्यवहार कारण ....यह समाज से और समाज इससे दोनों एक दूसरे से कट गए .और समाज इस मार्ग को एक भय मिश्रित श्रद्धा से देखने लगा .

पर अब आधुनिक काल में सदगुरुदेव जी ने अपने सन्याशी और गृहस्थ शिष्यों के द्वारा बहुत कोशिश करके भ्रान्तिया इस मार्ग की दूर की ..और अब समाज में थोडा सा दृष्टी कोण परिवर्तित हुआ हैं , शमशान साधना के प्रति जिस तरह से रूचि और एक स्वास्थ्य दृष्टी कोण का निर्माण हुआ हैं वह बहुत ही प्रशंशनीय हैं .

****

Aghor tatv and shakti tatav nirupan :

1. why this sect is needed?

Answer : there many many specialties in human life. No two person are alike. There may be some difference based on time place , due to caste , belief ,area a very normal phenomena. Than its not good and possible too that only one way is advice to each and every person, since each person bhav avastha is quite different to other. This marg is originated from the fifth mouth of Bhagvaan Shankar that has the ability to lift a man/woman consciousness from lower pashu bhav to higher divya bhav very easy , and so fast , that is unmatchable to any other way. and this marg is came in light only for the person who has ability to go for this . since ..

जीवः शिवः शिवो जीवः , स जीव : केबल: शिव |

पाश –बद्ध :स्मृतो जीवः ,पाश मुक्त स्स्दाशिवः ||

This means every living being is a shiv and the shiv is every living being. And every living being is a shiv and nothing else . the same one when covered with pash than called shiv and when that is free from that than becomes sada shiv.. so how this can be possible to reach a level that has been called shiv .. this made easy by coming of this marg . since tantra does not advocate to suppress of feeling but try to convert that into the divinity and that is the reason behind the origination of this great marg.

शक्ति और अघोर तत्व निरूपण एक सामान्य परिचय

shakti & aghor tatv- general introduction?

एक विवेचना युक्त लेख आपके लिए ही तो ....

चाहे किसी भी धर्म की साधना हो या कोई भी पूजा पद्धिति बिना शक्ति के कुछ भी संभव नहीं .. तो एक सामान्य सा प्रश्न मन में उठता हैं की यह तत्व हैं क्या .... इस लेख में इन दोनों बातो का सरलतम विवरण दिया जा रहा हैं और गूढार्थ और विशिष्ट अर्थ क्रमशः इस महाविशेषांक में अगले लेखो में आपके सामने होंगे

भारतीय साधना विज्ञानं की इस अवधारणा से सभी परिचित होंगे की एक पक्ष यदि शिव हैं तो दूसरा अनिवार्य पक्ष शक्ति हैं और इन दोनों के आपस में एक्य होने से ही विश्व गतिमान हैं यदि शिव शक्ति के बिना शव सामान हैं तो शक्ति भी शिव के बिना कुछ नहीं कर सकती हैं क्योंकि शक्ति को भी एक आधार चाहिए ही .

जैसा की एक कवि ने लिखा हैं कि नर से बड़ी नारी जा में दो दो मात्रा भारी, और जीवन में जो कुछ भी सौन्दर्य हैं, गतिमयता हैं ,प्रवाहमयता हैं , जो कुछ भी श्रेष्ठता हैं जो कुछ भी निर्माण या पालन या विध्वंस की बात आये या इनका अपना ही एक विशिस्ट सौन्दर्य हो सभी के मूल में वही एक शक्ति तत्व ही हैं ,

जैसा की सप्तसती में वर्णित हैं माँ भगवती जगदम्बा कहती हैं की " वे ही शुभ की शक्ति हैं और वे ही अशुभ की भी शक्ति हैं " इस विश्व में जहाँ कहीं भी शक्ति तत्व की बात हो वह चाहे जो कुछ भी प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष हो सभी के मूल में एक वही हैं "द्वितीयो न अस्ति ..."

इस तत्व की गरिमा और गहनता और सम्पूर्ण विश्व में व्याप्तता को तो आदि शंकराचार्य को भी मानना पड़ा , वाराणसी /काशी में वर्णित उस विख्यात घटना से आप सभी परिचित हैं ही जिसमे माँ भगवती जगदम्बा ने आदि शंकराचार्य के ये कहने पर की माँ मुझमे शक्ति नहीं हैं , माँ ने उत्तर दिया की "बिना शक्ति के यह महत काम कैसे पूरा होगा ."

सम्पूर्ण विश्व को गतिमान रखने वाली एक वही शक्ति हैं जिसको की महा योगियों ने "नित्य लीला विहारिणी माँ भगवती जगदम्बा " के नाम से संबोधित किया हैं , और सारा विश्व की उनकी लीला स्थली हैं वही दुर्गा सप्तसती में " आदि शक्ति महालक्ष्मी " के रूप में वर्णित हैं और उन्होंने अपने आप को तीन रूप में विभक्त किया यह महाकाली , महालक्ष्मी , महा सरस्वती के रूप में सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त त्रयी शक्ति हैं और ये त्रि शक्ति पुनः विभक्त हो कर दस महाविद्या और अन्य अनेको रूपों में हमारे सामने विभिन्न साधनाओ की आधिस्ठार्थी के रूप में आई ,

और इनके माध्यम से ही मतलब इन शक्ति तत्व के माध्यम से ही एक सामान्य सा व्यक्ति साधना पथ पर चलता हुआ नर से पुरुष और फिर पुरुष से पुरोषोत्तम बनने की तक की यात्रा कर ले ता हैं या इसे इसे देखा जाये की शक्ति हीन सामान्य से दीन हीन जीवन से लेकर शक्ति युक्त और फिर शक्ति युक्त से स्वयं शक्तिमान बनने तक की यात्रा केबल और केबल साधना के माध्यम से ही संभव हैं .

अतः न केबल सामान्य भौतिक जीवन में बल्कि आध्यात्मिक जीवन में और यहाँ तक की अत्याधुनिक विज्ञानं मय जीवन में भी कोई मूल भुत तत्व हैं तो हमें शक्ति तत्व को न केबल स्वीकार करना ही पड़ेगा बल्कि यदि जीवन को उच्चता पर ले जाना हैं तो इस तत्व साधना के माद्यम से संभव हो सकेगा .

पर शक्ति तत्व को अपने आप में समाहित करके इस दिव्य यात्रा में अनेको मार्ग हैं , और हर मार्ग का अपना एक अ लग ही अर्थ हैं , और इन मार्ग में सर्वोपरी कोई हैं तो उसे "अघोर मार्ग " के नाम से संबोधित किया जाता हैं . तो आखिर यह अघोर तत्व क्या हैं ??... यु तो देवता भी इस तत्व की व्याख्या नहीं कर सकते हैं , अभी प्रारंभिक भाव भूमि समझने के लिए ,, ऐसा समझे की मानव जीवन अष्ट पाशों से बंधा हुआ हैं जो दिखाई ही नहीं देते हैं .....पर हैं ... जिनको महसूस किया और इन अदृश्य बंधन से सारा मानव जीवन बंधा हुआ हैं जैसे भय ,काम , जुगुप्सा आदि आदि ...

और इन अष्ट पाशों को "घोर " कहा जाता हैं और जो इन अष्ट पाशों से मुक्त हो गया हो उसे अघोर या अघोरी कहते हैं , यह बात अलग हैं की सामन्य परिभाषा में अघोरी का मतलब गंदे ढंग से रहने वाला या बात बात में गलियाँ देने वाला एक असभ्य व्यक्ति की ही छबि आती हैं पर वास्तविकता इस से बिलकुल विपरीत हैं , यह तो परम दिव्य मार्ग हैं , और इस मार्ग में जिस किसी ने सदगुरुदेव जी से " अघोर दीक्षा " ली हैं उसके सौभाग्य से तो देवता भी इर्षा करते हैं, और जिसने "विशिस्ट अघोर दीक्षा" ली हो तब कहना ही क्या हैं.

पर क्या अघोर मार्ग का अनुसरण करने के बाद भी सामान्य जीवन में जी या जा सकता हैं ??मतलब एक सामान्य गृहस्थ का जीवन व्यक्ति जी सकता हैं , पूज्य भगवद पाद सदगुरुदेव जी ने गृहस्थ सन्यास की अवधारणा अगर सामने रखी हैं तो उन्होंने अघोर तत्वों को समझाते हुए गृहस्थों को भी इस देव दुर्लभ पथ पर अग्रसर किया..और उन्होंने यह स्पष्ट किया की यह तो भाव भूमि हैं न की कोई प्रदर्शन की वस्तु ..

और उन्होंने अनेको बार मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं पत्रिका के लेखो के माध्यम से इस और लोगों को बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया , तवरित और सटीक अचूक साधनाए इस मार्ग की पहली विशेषता हैं ,

जैसा की नाम ही स्पष्ट कर रहा हैं की शमशान में साधना इस मार्ग की एक विशेषता हैं , वह भी इसलिए की वहां पर प्राण उर्जा का एक अति विशिस्ट घनत्व रहता हैं और मानव जीवन के अनेको अवगुणों से स्वत ही व्यक्ति का उचाट हो जाता हैं .

अभी कुछ काल पहले वनारसी के अघोर आचार्य भगवान् राम ने पुरे जीवन अनथक मेहनत की इस मार्ग को समाज से जोड़ा जाए , और पूज्य भगवद पाद सदगुरुदेव जी ने भी अनेको देव दुर्लभ साधनाए हमारे सामने इस मार्ग की बताई और अनेको उनके उच्चस्तरीय सन्यासी शिष्य जो की सिद्धाश्रम संस्पर्षित हैं इन अघोर साधनाओ के परम आचार्य हैं , और हम सब का यह सौभाग्य हैं की उनके विशिस्ट ज्ञान अनुभव से यह अंक अलंकृत हैं ,

बस अब इतनी ही देर हैं की हम इस महान पथ के प्रति अपना पूर्वाग्रह एक तरफ रखे और मुक्त ह्रदय से अपने जीवन को अष्ट पाशों से मुक्त करके अपने आत्म तत्व मतलब पूज्य सदगुरुदेव के वास्तविक परिचय पाने के लिए इस मार्ग की दिव्यतम साधनाए को आत्मसात कर सदगुरुदेव के गौरव को और प्रवर्धित करें.

****

****

Initial introduction of shakti and Aghor tatv

The Shakti tatv is a essential part of any sadhana or poojan paddhati ,whether they belongs to any religion or sect. than one very simple and essential question rises in our mind that after all what is this shakti tatv ?? in this article very simple introduction is being dealt and many of the mysteries and deeper meaning will be revealed in coming many articles of this e mag ‘s Mahavisheshank .

Every one knew this facts that whole universe is running through shiv and shakti tatv , and both tatv depend upon each other , if without shakti tatv , shiv becomes shav (corpse) than without shiv , shakti can not do any thing since shakti also need a base or aadhar .

What is shamshan ???

शमशान के बारेमे कुछ बाते ...

जब बात अघोर मार्ग की हो और वह भी शक्ति तत्व के सायुज्ज के साथ तो निश्चय ही बात कहीं न कहीं साधना की ही हो रही हैं , और अघोर मार्ग में तो एक एक पल जीवन का साधना मय हैं ही ,और साधनाए भी अति दुष्कर.. सामान्य से भी कहीं ज्यादा कठिन .. जितनी कठिनाईया सोची न जा सकती हो वह सब इस दिव्य पथ पर हैं ही .

क्योंकि बस शमशान में साधना कर ली और हो गए आप अघोरी तो ऐसा नहीं हैं .....यह तो वस पथ की शुरुआत हैं न ... पर जब मार्ग इतना उच्च कोटि का हैं तो निश्चय ही साधना स्थली भी इतनी ही उच्च कोटि की होगी, और वह हैं शमशान ... भले ही साधारण लोग इस शब्द के नाम से भय भीत हो जाए एक पूर्वाग्रह युक्त धारणा रखे .....

पर जो बुद्धिमान हैं वह यह भले भांति जानते हैं की यह तो विश्व का एक परम पवित्र स्थल हैं.

और जहाँ पर अपने पूरे जीवन काल की आप धापी से परेशां हो कर व्यक्ति आराम की अंतिम साँस लेता हैं जहाँ पर पञ्च महा भुत का पुनः अपने स्व स्वरुप में आना संभव हो रहा हैं, जहाँ की मिटटी वास्तव में पवित्र हैं क्योंकि यहं न कोई काम का वास हैं न ही कोई अन्य मानव के स्वाभाव या चरित्र की कमिया जहाँ पर आ कर स्वयं ही मनुष्य का चित्त संसार की आसरता को देख लेता हैं, और यह सत्य भी हैं की अगर कोई हर दिन कुछ समय अपना वहां पर गुजारे तो स्वतः ही वैराग्य की भावना उसके मन में आने ही लगती हैं. .

पर क्या श्मशान का मतलब केबल एक वही जगह हैं जहाँ पर दाह संस्कार हो रहा हो ,,नहीं नहीं ऐसा नहीं हैं बल्कि शास्त्रों में कई ओर शमशान बताये हैं जैसे की किसी पद दलित महिला का घर (वैश्याका घर), हमारी स्वयं सोने का पलंग पर विस्तर और ऐसे कई हैं और जब सब कुछ जो इस ब्रम्हांड में हैं तो क्या वह इ स शरीर में नहीं होगा.... ??

यह कैसे नहीं होगा मतलब इस मानव देह के अंतर्गत भी एक शमशान हैं पर उसे तो जाग्रत करना पड़ता हैं .. और यह सिर्फ सदगुरुदेव की कृपा से ही संभव हैं और " तीव्र महाकाल दीक्षा " इसी मानव देह के अन्दर के शमशान को जाग्रत कर देती हैं .. जहाँ उसके राग द्वेष जल रहे होते हैं और वहां पर साक्षात् महाकाली का नृत्य संभव हो रहा होता हैं.

हर वह स्थान जहाँ पर शव का अतिम संस्कार हो रहा हो उसे शमशान नहीं कहते हैं ,, क्योंकि जिसका क्षेत्र फल; कम हो उसे मरघट कहतेहैं और इस मरघट के अधिपति देव को मरघ टेश्वर कहते हैं और इनका स्वरुप भी बहुत विचित्र रहता हैं कुछ अंधे रहते हैं...... तो कुछ के हाथ नहीं..... तो कुछ सुन नहीं सकते हैं तो कुछ अन्य विभिषिकाओ से युक्त.... बस इतना ही ....नहीं नहीं ,,

क्योंकि यदि इनका स्वरुप नहीं मालूम हैं और किस दिन कैसा स्वरुप.... मरघट के किस दिशा पर हैं तो साधक की मृत्यु तो निश्चित ही समझये .. यह बहुत ही सावधानी का विषय हैं ..मतलब साधक को किस दिशा की तरफ से उस स्थान पर प्रवेश करना हैं ...

और दुसरे बड़े क्षेत्र जिन्हें शमशान कहते हैं उसके अधिपति को शम्शानेश्वर कहते हैं. और किस दिन किस प्रकार का स्वरुप होता हैं और यह दिन के वार और तिथि पर निर्भर करता हैं .. के अनुसार ही चला जाता हैं तो तीसरे स्तर पर ऐतिहासिक शमशान आते हैं जिनका अपना एक अलग ही महत्व हैं, यहाँ की उर्जा और चैतन्यता का क्या कहना .. इसमें जैसे काशी के मणि कर्णिका ... हरिश्चंद्र घाट .. उज्जैन का महाकालेश्वर .... कामख्या महा पीठ का शमशान ....के स्तर के शमशान और यहाँ हर कोई साधना ऐसे नहीं कर सकता हैं कई जगह तो बाकायदा आपका रजिस्ट्रीकरण भी होता हैं .

और आप शमशान की पवित्रता देखिये की अगर आपको साधना करने जाना हैं तो भी आप को शमशान में प्रवेश के पहले स्नान करना होगा , भले ही आप घर से स्नान करके चले हो .. और जैसे ही उस दिन की साधना समाप्त होगी ,आपको फिर स्नान करके ही बाहर आना हैं..

शमशान की अपनी एक मर्यादा हैं .. अपनी एक गरिमा हैं यहाँ एक अलग वातावरण हैं . यह कोई मजाक में लेने ही वस्तु नहीं हैं ....यहाँ सामाजिक नियमो का पालन करना जरुरी नहीं हैं खासकर कर साधना काल में .. जब भी आप साधना रत हो या शमशान में हो ,, कोई भी व्यक्ति कुछभी कर रहा हो ,, उससे आपको मतलब नहीं होना चहिये ..आप देख सकते हैं .....

कौतुहल ज्यादा ठीक नहीं ... पर कुछ पूंछा पाछी नहीं करे.. कोई सोया पड़ा हैं .....कोई लड़ रहा हैं ..... कहीं और भी कुछ चुपचाप देखें .... यहाँ का व्यापार बहुत ही विचित्र हैं ,, शमशान में पड़ी कोई भी चीज आप उठाकर घर न लाये ,, पता नहीं किस मुसीबत को आप आमंत्रित कर रहे हैं

यह आवश्यक नहीं हैं की कोई इतर योनी अ दृश्य रूप से कुछ करे बल्कि कतिपय उच्च स्तर की शक्तिया तो मानव रूप धारण कर के भी ..... अतः न तो किसी का दिया यहाँ खाए ,, और कोई भी अनजाना यदि स्त्री हैं रात्रि के समय हैं आपसे बात करती हैं तो बहुत सोच समझ कर ही उत्तर दे .. क्योंकि प्रारंभ में साधक यदि अपने मन मानी ढंग से चलेगा तो किसी भी विपत्ति में फस सकता हैं उसे तो अपने मार्ग दर्शक और सदगुरुदेव के ही केबल और केबल आसरे होना चाहिए .

पर इतना भय भी ठीक नहीं हैं . सदगुरुदेव जी ने अपने लेख में एक ऐसे शमशान का हमें परिचय कराया था जहाँ की उच्चता इतनी ज्यादा थी की क्योंकि वहां वह अत्यंत उच्च कोटि के साधको द्वारा लगातार उच्च कोटि के प्रयोग किये गए रहे हैं,,,साधनाए की जाती रही हैं

और एक ऐसा साधको के लिए वातावरण का निर्माण वहां पर हो गया था की वहां की सारी शक्तियां साधको का पूरा ध्यान रखती थी की उनकी साधनाओ में कोई विघ्न न आये .. उन्हें कोई खाने पीने की समस्या न हो और तो और साधक के शरीर अस्वस्थता में उन शक्तिया द्वारा उस साधक की कितनी देख भाल की गयी थी वह तो अविस्मर णीय हैं.....

अगर साधक शमशान में सिर्फ अपनी साधना और साधना के लिए ही गया हैं और वह वहां पर कोई व्यवधान नहीं करना चाहता हैं किसी को वश में करना या गुलाम नहीं बनाना चाहता हैं तो ऐसी उच्च कोटि की मानसिकता वाले साधक का तो फिर सदगुरुदेव की परम कृपा से सभी शक्तिया या इतर योनिया सहयोग करेंगे ही . और वेसे भी जो सदगुरुदेव का शिष्य हैं वह कोई निम्न मानसिकता वाला तो होगा ही नहीं .. और यह कैसे सम्भव हैं , और उनके आतामंशो की साधना में भला किस्मे इतना सामर्थ्य हैंकि कोई व्यवधान कर दे ,,जबकि सदगुरुदेव स्वयं सदैव सूक्ष्म रूप से उनके साथ रहते हो ....

कुछ बाते समझ लेना भी जरुरी हैं यह कोई आवश्यक नहीं हैं की साधक को यदि उसे शमशान साधना करनी ही हो तो हर बार उसे किसी न किसी शमशान में जाना ही पड़ेगा ,, हाँ कुछ प्रांरभ की साधनाए के बाद तो साधक को सामान्यतः ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं होती हैं जब तक की गुरु जनों द्वारा उसे विशिष्ट रूप से निर्देशित न किया गया हो ....

और यह भी की ये कोई मात्र पुरुष साधक केलिए ही बल्कि स्त्रियों के लिए भी साधना की जगह हैं बल्कि यह तो तंत्र का क्षेत्र हैं जहाँ विश्व में पहली बार स्त्री पुरुष को उनके शरीर के आकार से ,, लिंग भेद से देखा नहीं जाता हैं बल्कि यहाँ सभी साधक हैं फिर वह स्त्री हो या पुरुष कोई भेद नहीं ,, और यहाँ तक की जाति गत धर्मगत भेद भी नहीं माना जाता हैं या हटा दिए गए हैं और तो और कतिपय क्रियाओं में तो शायद समाज के निचले स्तर से आई हुयी महिला साधक को या महिलाओ को जयादा उच्चता दी जाती हैं

यहाँ सभी केबल भैरव और भैरवी ही हैं .....

इसका यह मतलब नहीं की स्वेछचार हो रहा हो , वास्तव में भैरवी तो साक्षात शक्ति स्वरूपा होती हैं और उन्हें उसी दृष्टी से देखा भी जाता हैं.. जो समझते हैंकि वहां पर कोई वासना पूर्ति की की मन मानी क्रियाये हो रही होंगी तो वह स्वयं ही अपना संहार करवाने के लिए प्रस्तुत हैं ..

इस स्थान पर क्षमा नहीं होती हैं,,,साधक की कोई भी गलती क्षमा के लिए नहीं हैं जब मानो आप साक्षात् १०,००० बोल्ट की बिजली की धारा से बह रहे तार से खेल करेंगे तो आप को परिणाम मालूम होना ही चाहिए , और ठीक यही स्थिति कुछ यहाँ पर भी हैं.

और ऐसा नहीं की बस आप ने अपने आप को घोषित कर दिया भैरव और किसी महिला साधक को भैरवी ..ऐसा नहीं हैं यह मार्ग और इ स साधना स्थली में तो सदगुरुदेव तत्व का कितना न प्राधान्य रहता हैं और कितनी न देव दुर्लभ क्रियाये की जाती हैं और उससे निकल कर की एक साधक अगर भैरव बन पाता हैं तो महिला साधिका भी भैरवी से महा भैरवी और फिर दिव्य भैरवी की संज्ञा से युक्त हो जाती हैं

और हर स्तर पर अति उच्च कोटि के साधनात्मक विधान और क्रियाये हैं जो की दिव्यतम दीक्षाओ के माध्यम से सदगुरुदेव द्वारा निर्देशित होते हैं .. फिर आपको एक पल के अंश के भाग में ही कोई मन मानी या क्रियाओ के नाम पर कोई भी स्वेच्छाचार की कोई भी छुट नहीं हैं ,

हाँ बाह्य गत आपको यह जरुर ;लग सकता हैं की कोई देख नहीं रहा हैं अपनी मन मानी कर ले पर एक क्रिया के साथ भी की गयी मन मानी आपको कहाँ ले जा सकती हैं इसका कोई ठिकाना नहीं , इसलिए अगर इ स मार्ग दीक्षा ली हैं ,, यह बहुत उच्च बात हैं शमशान साधना कर रहे हैं यह भी उत्तम हैं पर सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त उस शिष्यता की गरिमा का पालन हर पल कर रहे हैं यह ही अति उच्चतम हैं ....

यह सत्य हैं की एक बार कोई स्त्री या महिला साधक इस तंत्र क्षेत्र के लिए मन बना ले ,, तो वह निश्चय की उच्च स्तर पर जाएगी ही इसमें कोई दो राय नहीं हैं सदुरुदेव जी ने ऐसी ही कुछ महा साधिकाओ से हमर परिचय भी करवाया हैं मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं के लेखो के माध्यम से जिनमे ..विंध्यवासिनी की वह रहस्यमय साधिका .. अल्हड भैरवी ,,, मृगाक्षी .... और तंत्रिका हीनू ... जो उस काल में सर्वाधिक चर्चा के विषय वाले लेख रहे हैं साधक समाज इनकी साधनात्मक उच्चता को लेकर विस्मय से भर गया था .

****
****

Aghori ki mAhAkAli sadhana

भविष्य काल दर्शन में सहायक

" आज इस अष्टमी की रात्री को तुम्हारे सामने अपने गुरु महाराज को प्रणाम करते हुए मे तुम्हे भोलेनाथ की कसम खा कर ये राज़ कहता हू की मे अघोरी हू" इसके साथ ही एक हलकी सी मुस्कराहट फ़ैल गई उस अघोरी के चेहरे पर. मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ, मे उसके कारनामो से परिचित था. सायद उसने कसम इस लिए खाई थि की उसने सोचा होगा की "अघोरी" शब्द पर मे विश्वास नहीं करूँगा. भला कौन विश्वास करेगा भी की कोई व्यक्ति सूट बूट मे सज्ज अघोरी भी होगा.

क्या बात है? तुम्हे आश्चर्य नहीं हुआ?

मेने कहा किस बात का?

होहोहो...खोखली सी हसी के साथ उसने चिल्लम से धुँआ उड़ाते हुए कहा की मुझे लगा सायद तुम 'अघोरी' सुन कर डर जाओगे....

उसके इन शब्दों को सुन कर उसकी हसी मे मेरी हसी भी शामिल हो गई....मेने कहा की जैसे की आपको पता ही है, मे श्रीमाली जी का शिष्य हू (उस अघोरी के और मेरे सबंध इस बात के बाद ही बढे थे, वे बहोत ही श्रद्धा से सदगुरुदेव का नाम स्मरण करते थे. हलाकि उसने स्वीकार किया की यह दुर्भाग्य ही है उसके लिए की वो सदगुरुदेव से दीक्षा नहीं ले पाए) और मेरे कई गृहस्थ गुरुभाई है जो की अघोर साधना मे महारत हासिल किये हुए है इस लिए मुझे इसमें कोई आश्चर्य नहीं हुआ.

उनकी आँखों मे फिर से एक बार सदगुरुदेव का नाम सुन के श्रद्धा ज़लक उठी. उसने कहा की मेने अपने बारे मे जहा भी परिचितों को कहा है की मे अघोरी हू, वह आदमी कभी मुझे फिर से दिखा ही नहीं....हाहहाहा....बड़ा मज़ा आता है...लोग तो ऐसे ही डरते है लेकिन अपना काम हो जाता है...महाराज ये करदो महाराज वो करदो...एक बार कह दो की मे अघोरी हू, फिर महाराज कही मिल भी जाए तो दूर से देख के ही भाग जाते है...हमारा एकांत भी मिल जाता है और लोगो से पिंड भी छूट जाता है.

मुझे भी थोड़ी हसी आई, और सोचने लगा की बात कितनी सही है! मेरे साथ जो परिचित आए थे उनके कुछ प्रश्न थे. मेने कहा की ये कुछ प्रश्न पूछना चाहता है?

उन्होंने कहा की इसमें क्या है...इसका प्रश्न भी बता देता हू और उत्तर भी..

मेरे परिचित के चहरे पर आश्चर्य और शंका के मिले जुले भाव उभर रहे थे.

अघोरी ने कहा की यह भाई पूछना चाहते है की इनका जिस लड़की के साथ प्रेम सबंध है और शादी करना चाहते है वह इनके प्रति कितनी वफादार है?

मेरे साथ के परिचित ने मुझे देखा और थोडा हर्ष मिश्रित आश्चर्य खेद विस्मय वगेरा अलग अलग भाव उभर रहे थे...उसने मुझे अपने सवाल के बारे मे मुझे नहीं बताया था वर्ना उसे शंका हो सकती थि की सायद अघोरी को मेने बताया है प्रश्न के बारे मे...

अघोरी की आँखे बंद हो गई. फिर उसने एकाएक कहा की उसके शरीर मे यहाँ यहाँ पर निशान है, इस जगह रहती है और कुछ एसी गोपनीय बाते बताई जो सिर्फ उन दोनों के अलावा और कोई नहीं जनता था.

परिचित ने ये सब सुन कर अघोरी महोदय को बड़ी श्रद्धा से प्रणाम किया. अघोरी के चेहरे पर भी थोडा गर्व ज़लक उठा, उसने कहा की अब इसका जवाब मे तुम्हे बाद मे बताऊंगा. वे परिचीत के जाने के बाद उसने मुझे बताया की तुम मेरा एक काम करना, मे जो जवाब दे रहा हू वो उसको योग्य समय देख कर बता देना. मे उसका इस वक्त दिल नहीं तोडना चाहता लेकिन ३ महीनो मे उन दोनों का सबंध हमेशा के लिए खतम हो जाएगा, वैसे भी वह लड़की इसके उपयुक्त नहीं है तथा इसके धन के मोह से इसके पीछे पड़ी हुई है.

मेरे लिए यह आश्चर्य की बात थि, (एक दिन मेने सही समय देख कर उन परिचित को ये सब बात बता दी लेकिन उसने ज़रा भी विश्वास करना योग्य नहीं समजा और कहा की ये सब बकवास है और ऐसा कभी नहीं हो सकता. लेकिन तिन महीने बीतने ही आए थे की जैसी भविष्यवाणी की गई थि, ठीक वेसा ही परिणाम हुआ. साथ ही साथ हर प्रकार के सबुत भी मिल गए की वह लड़की इनके धन के लिए ही प्रेम जाल का निर्माण किये हुए थि) व्यक्ति के जाते के साथ ही हमारे बिच कई प्रकार की साधनाओ की चर्चा होने लगी. मुस्लिम तंत्र के बारे मे भी उसने कई गोपनीय तथ्यों को उजागर किया. झापडी साधन जैसी गुढ साधनाओ के बारे मे भी उससे चर्चा हुई.

यु बात आई कर्णपिशाचिनी साधना पर. मेने पूछा की क्या आपने आज जो मेरे परिचित को बताया था वह कर्णपिशाचिनी साधना से संभव हुआ क्या?

उसने कहा की नहीं. कर्णपिशाचिनी साधना के माध्यम से व्यक्ति भुत तथा वर्तमान को जाना जा सकता है, लेकिन मेने तो उसको भविष्य के बारे मे भी बोला है और समय आने पर तुम देखना वह कितनी सार्थक है या नहीं.

मेने कहा फिर यह किस साधना से संभव है?

उन्होंने कहा की महाकाली साधना से.

मेने कहा क्या आप काल को देख सकते है.

बोले नहीं. माँ खुद ही कान मे बता देती है.

अब मुझे आश्चर्य हुआ क्यों की इस प्रकार की साधना के बारे मे मेने नहीं सुना था. बात आगे बढ़ाते हुए अघोरी ने कहा की अघोर मार्ग मे एक विशेष साधना होती है जिसके माध्यम से माँ को कान पर आसान दिया जाता है. उसके बाद साधक उसे जो भी प्रश्न करता है माँ उसका उत्तर उसे कान मे देती रहती है. कर्णपिशाचिनी को भी कान मे आसान दिया जाता ही लेकिन वो भविष्य के बारे मे नहीं बता सकती. लेकिन माँ तो खुद ही काल स्वरूप है, उनके लिए भविष्य बताना क्या मुश्किल है.

मेने विधि जानने के बारे मे जिज्ञासा प्रकट की तो उन्होंने मुझे विधि के बारे मे बताया. इस साधना को स्मशान मे ही किया जाता है. यह ११ दिन की साधना है जिसे किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुरू करना चाहिए. साधक को रात्रि काल मे स्मशान मे स्नान कर के जाना चाहिए. इस मे वस्त्र काले रहे तथा आसान स्मशान भस्म का हो. साधक प्रारंभिक वंदन भोग दिग्बन्धन कीलन जैसी स्मशानिक रक्षण प्रक्रियाओ को करे. उसके बाद साधक को अपने सामने महाकाली का विग्रह या फोटो लगा कर पूजन करे और ध्यान के बाद निम्न मंत्र की ५१ माला जाप करे

मंत्र: **क्रीं महाकालिके कालस्वरुपिणी स्थापय स्थापय नमः**

हर माला के बाद अपने दाहिने हाथ से दाहिने कान का स्पर्श करे. ५१ माला के बाद साधक घर लौट जाए तथा स्नान कर के सो जाए. निश्चित रूप से ११ रात्रो मे महाकाली स्वप्न मे या बिम्बात्मक रूप मे दर्शन देती है तब उन्हें प्राथना करनी चाहिए की मेरे कान पर आप अपना आसान लगाये तथा मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दे. तब देवी तथात्सू कह कर अंतर्ध्यान हो जाती है. उसके बाद साधक जब भी अपने कान पर हाथ रख कर कोई प्रश्न पूछता है तो देवी कान मे उसका उत्तर दे देती है.

Mahakaali sadhana of Aghori:

"Today in this ashtami night bowing down to my guru maharaj, with swear of Bholenath I am disclosing this secret to you that I am Aghori" with these words a smile spread on the face of that aghori. There was nothing to be surprised of, I was aware about his works and deeds. I think the reason behind swear he might have thought that I will hardly believe on term 'Aghori'. How one may even think that a person sitting in pent shirt and shoes will be Aghori!

What is that? Didn't you felt strange?

I said what about?

Hohoho...with loud laughter puffing off the smoke from chillam he said I thought you might get scare by listening the term 'Aghori'.

By hearing these words my laughter also adjoined his laughter... I said, as you know, I am disciple of Shrimali ji (my relation with that aghori increased after that talk, he used to speak name of sadgurudev with big devotion. Perhaps he accepted that it was his misfortune that he had not been able to take initiation from him) and my many material gurubrothers are accomplished in aghor sadhana so there is nothing to be fill strange about.

Once again his eyes filled with faith and devotion by hearing name of sadgurudev. He said, wherever I told my known people that I am aghori, I have not seen those person again...hahahaha...I enjoy it...people get scare but our work gets done...maharaj please do this for me maharaj do that for me...once you tell them that you are aghori, wherever they see maharaj after that they will change their way...we may have our privacy and freedom from people is also received.

How to judge a Horoscope is made correct ?
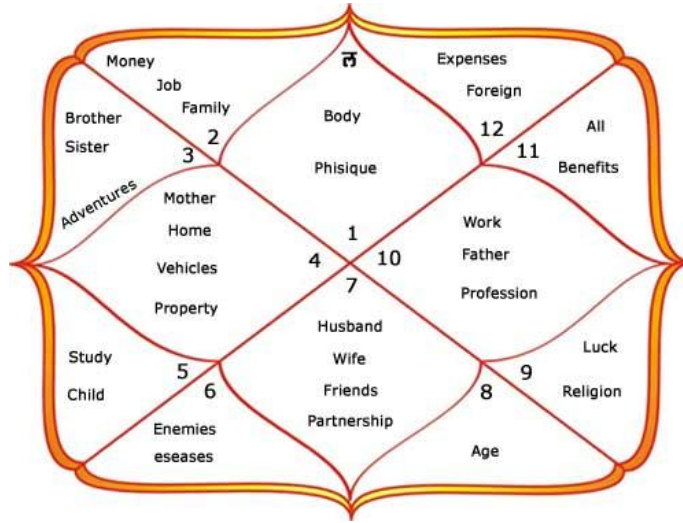
कुडली की सत्यता बताने वाला एक लेख

भारतीय ज्योतिष में कुंडली का बहुत महत्त्व हैं , और इस कुंडली में स्थित १२ भाव , व्यक्ति के जीवन के समस्त भाग को प्रदर्शित करते हैं सुख दुःख हानि लाभ जीवन और मरण सभी कुछ तो हैं इसमें यहाँ तक की अगला जीवन कैसे होगा से लेकर या विगत कैसा रहा होगा, बस कुंडली को सही तरीके से विश्लेषण करने वाला ज्योतिष होना चाहिए ,

यह भारत की पुरातन विधि रही हैं और आज भी हमारे मध्य भगवान् श्री राम और भगवान् श्रीकृष्ण की कुंडली के साथ और भी अनेक महापुरुषों की कुंडली सहज प्राप्त हैं ,

हालाकि प्रारंभ में इन महा पुरुषो की कुंडली को सही ढंग से देखना और समझना ज्योतिष के प्रारंभिक विद्यार्थी के लिए कठिन रहता हैं, फिर इन उच्चस्थ महापुरुषों की दिव्य अवतारों की कुंडली देख पाना और सही ढंग से समझना तो ज्योतिष के पारंगत व्यक्ति के लिए भी चुनौती होती हैं,

क्योंकि इस दिव्य व्यक्तियों की कुंडली में भी आखिर यही भाव होंगे और यही ग्रह पर ....उनके , मतलब ग्रहों के . अंतर सम्बन्ध और कुछ विशेष विन्यास से कुछ ऐसा अद्भुत योग बनता हैं जो की सहज ही संभव हैं निगाह से छुट जाना .

साथ ही साथ जब कोई भी घटना क्रम हो चूका हो तो यह बहुत ही आसान हैं की उसे कतिपय योग और किन्ही किन्ही बातो के आधार पर बता देना की यह तो इसलिए हैं पर जब घटना कर्म हुआ ही न हो .... न ही कोई सम्भावना .... तब आप पहले से बता दे एक दम सटीकता से तब हैं आपके ज्योतिष कौशल की परख ..

इतना विशद साहित्य और अनेको विद्वानों के होते हुए भी कतिपय व्यक्ति को इसके सही होने का या एक यह भी विज्ञानं हैं को मानने में हमेशा पूर्वाग्रह रहता ही हैं, किसी भी विज्ञानं में हमेशा हर बात १००% सच हो यह हमेशा संभव नहीं ...सामान्यतः परिणाम यदि ६० % से ऊपर हो तो भी वह विज्ञानं सच मान लिया जाता हैं , पर जहाँ बात ज्योतिष की आएगी हमें तो १००% सच और सत्य होना ही चाहिए ,,

जब जब पुनः ज्योतिष का उत्थान हो रहा हैं हजारो की संख्या में इन विज्ञानं के माध्यम से आजीविका के रूप में काम करने के लिए लोग आ गए हैं जो उच्च वर्ग से सम्बंधित हैं साथ ही साथ उच्च शैक्षिक डिग्री धारी भी हैं हैं तो कतिपय ऐसे भी हैं जो इनके गहन गहन सूत्रों खोज खोज कर अपने अनुभव से इसका खोया वैभव पुनः लौटा रहे हैं,

अब यहाँ पर व्यक्ति की मानसिकता आड़े भी आ जाती हैं की मैं तो मानुगा ही नहीं या फिर केबल हमारा या मैं जो कह रहा हूँ वह ही केबल सत्य हैं और इससे भी बड़ी चीज हैं की बस कुछ लोग जिन्हें कुछ सूत्र हासिल हो गए तो लोग चले हैं अब अन्य ज्योतिष को नीचा दिखाने. ...अगर आप में सामर्थ्य हैं तो आप अपना योगदान बताये की क्या ऐसा आपने अद्भुत दिया हैं या जोड़ा हैं और तो फिर उस पर आपके व्यक्तिव्य की चर्चा हो.

पर फिर भी अनेक वर्ग के लोग जो इस शास्त्र से अनिभिग्य हैं या थोडा बहुत जानते हैं वह आज भी .... भले की कितनी न ज्योतिष की दुकाने खुल गयी हैं ... यह मान कर चलते हैं अरे पता नहीं कैसे कैसे किसी भी खाने में कोई भी ग्रह रख दो और बना दो कुंडली या कुंडली में रखे जाने वाले ग्रहों के बारे में उनकी स्थिति के बारे में अभी भी संशय ग्रस्त हैं

साधरणतः आप यदि किसी की हाथ से बनी कुंडली देते हो और आपने यदि वह गलत बनायीं हैं तो एक ज्योतिष का अच्छा विद्यार्थी जो रहा हो वह एक सरसरी नज़र कुंडली पर डाल कर ही बता देगा की यह गलत हैं .. पर यह हो कैसे ?? तो इस सम्बन्ध में अनेको आचार्यो ने अनेको योग और ज्योतिषयो ने कुछ बाते सामने रखी हैं..

जैसे. की जिस महीने आपका जन्म हुआ हैं उस महीने हमेशा हर साल सूर्य एक ही राशी में होता हैं तो कुंडली में भी उसी महीने की प्रतीक राशी में सूर्य को होना ही कहिये. उदा. किसी का जन्म ३० ओक्टुबर हैं तो इस महीने सूर्य तुला राशी में होंगे और कुंडली में नंबर ७ जहाँ लिखा होगा वहां पर सूर्य लिखे होंगे ही.

जहाँ सूर्य लिख गया हैं तो आप जानते हैं की बुध तो सूर्य के सबसे पास ग्रह हैं तो या तो उसी खाने में जहाँ सूर्य लिखा हैं या उससे एक खाने आगे या एक खाने पीछे बुध ग्रह लिखा ही जायेगा. जैसा की गणतीय रूप से आयेगा,

ठीक इसी तरह शुक्र ग्रह का हैं की उसे या तो सूर्य जिस खाने में हैं उस खाने में या सूर्य वाले खाने से दो खाने आगे तक या दो खाने पीछे तक में तो होना ही चाहिए .

शनि ग्रह २ १/२ साल में अपनी राशी बदलते हैं मतलब उन ढाई साल में उनकी राशी का अंक नहीं बदलेगा ,, तो इसे भी आसानी से आप जाँच सकते हैं और इसी तरह गुरु ग्रह हैं जो लगभग १ साल मे राशी बदले गे,

चलिए मान भी लिया जाए की सभी ग्रह ठीक रखे हैं तो क्या तब भी तो कुंडली गलत हो सकती हैं?? ,, इसका उत्तर हैं हाँ यह तब भी संभव हैं क्योंकि ठीक आपके जन्म दिन वाले दिन भी १२ कुंडली अलग अलग का निर्माण हो सकता हैं. अब प्रश्न हैं की अब कैसे पता चलेगा.??.

तो जैसा की अभी लिखा गया हैं की जिस महीने सूर्य जिस राशी में होगे इसे तो किसी भी कैलेंडर से आसानी से ज्ञात किया जा सकता हैं और सुबह लगभग ६:३० से ७ बजे तक लग्न उसी राशी की होती हैं मतलब सूर्य जिस राशी में उस महीने में होगे.

और इसके बाद हर दो दो घंटे में क्रमश बदलती जाती हैं तो आप यहाँ पर आसानी से पता चला सकते हैं की यदि सुबह १० बजे जन्म हुआ हैं तो मानलो सुबह ६:३० तक कन्या लग्न थी तो दो घटे और जोड़ दे

मतलब लगभग ८:३० बजे तक कन्या से एक आगे मतलब तुला लग्न होगी फिर अगले दो घंटे तक मतलब १०:३० तक वृश्चिक लग्न होगी , तो उस व्यक्ति की वृश्चिक लग्न हो ही यह बिलकुल एक सामन्य सा गेस हैं पर किसी ने मानलो मेष लग्न लिखी हैं तो यह तो आसानी से ही पता चल जायेगा की गलत हैं,

अब जब प्रारंभिक ज्योतिष व्यक्ति जानता हैं तो थोडा सा सामान्य नियम भी ध्यान करे और उसे लागु करे लग्न पर तो आप व्यक्ति के रूप रंग क्या कुंडली से मिल रही हैं..

जैसा बिलकुल साधारण नियम हैं की लग्न में या पंचम में या सप्तम में या नवम भाव में गुरु ग्रह होंगे या लग्न के अधिपति या मालिक के साथ होगे तो व्यक्ति के शारीर में मोटापा होसकता हैं, हाँ यह ध्यान रखे की शनि ग्रह की दृष्टी लगन या लग्नेश पर न हो, यदि शुक्र लग्न में होगा और शनि अदि की दृष्टी नहीं तो व्यक्ति गोरा रंग का होगा ,

इस तरह कुछ सामन्य से नियमो की सहायता से आप ज्ञात कर सकते हैंकि दी गयी कुंडली सही हैं या गलत और आप यह भी समझ गए की यदि आपने गलत कुंडली दी हैं और एक उच्च ज्योतिष के पास गए हैं तो उसे बिलकुल समय नहीं लगेगा यह जानने में की यह तो गलत हैं , और इससे आप यह भी समझ गए होंगे की आसान नहीं हैं एक गलत कुंडली तो प्रचलित कर देना अगर आपके सामने एक अच्छा ज्योतिष हैं तो वह सत्य क्या हैं बता ही देगा,,,..

****

****

If this horoscope is correct ho w to judge ??? some simple rules: in one view.

Horoscope reading is having a very high place in Vedic astrology. All the 12 bhav represent each and every aspect of a human life, not only this , what our past life was and what our next life will be , can be easily traceable.

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG
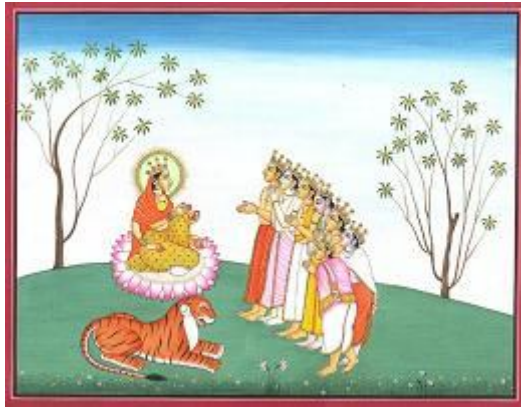
अब इसे एक बार तो करके देखिये

बिना लक्ष्मी तत्व के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं , और हर साधक को तो लक्ष्मी तत्व की साधना को अपने जीवन में एक आधार देना ही चाहिए , क्योंकि जब दैनिक आवस्यक्तताये कि पूर्ति होती जाएगी तभी तो व्यक्ति पूरे मनो योग से प्रसन्न चित्त हो कर साधना में बैठ पायेगा क्योंकि साधना भी तो एक उच्चस्तरीय कर्म हैं और उसके लिए साधक का पूर्ण निश्चिंत होना एक आवश्यक तत्व हैं ,

अब लक्ष्मी तत्व के १००८ स्वरुप माने गए हैं तो जीवन की हर स्थिति का उसमे समावेश होता ही हैं फिर वह चाहे ऐश्वर्य लक्ष्मी हो या फिर संतान लक्ष्मी हो या आयु लक्ष्मी या फिर स्वास्थ्य लक्ष्मी ही क्यों न हो ,

पर साधक सामान्य तः एक तथ्य की उपेक्षा कर जाते हैं और वह तथ्य हैंकि जब तक आपके जीवन से दरिद्रता नहीं जाएगी तब तक लक्ष्मी तत्व का कैसे आगमन संभव होगा क्योंकि जीवन की ये दो स्थिति एक साथ तो संभव नहीं हैं अतः सबसे पहले आप इस प्रयोग को करे जिससे की दरिद्रता का अभिशाप आपके जीवन से हटे और फिर आप जिस भी लक्ष्मी साधना को करेंगे आप को और अधिक अनुकूलता होगी. ही .

मन्त्र :

कुबेरत्वं धनाधीश गृहे वे कमला स्थिता |

त्वं देवीं प्रेषयाशु त्वं मदगृहे ते नमो नमः ||

इस मन्त्र की एक माला मन्त्र जप कम से कम २१ दिन तक तो प्रातः काल करना ही चाहिए ही .. और फिर जब भी आप यह प्रयोग समाप्त करते हैं २१ दिन के उपरान्त आप हवन करेंगे ही और उस हवन में आप सामग्री लेंगे गाय का घी ,कमल पुष्प जो लक्ष्मी को सर्वाधिक प्रिय हैं और गूगल इन साम्रगी से हवन करे . आप के जीवन से दरिद्रता सदगुरुदेव के आशीर्वाद से दूर होगी ही और आप एक श्रेष्ठ साधक के रूप में आरामसे अपने जीवन को इच्छित दिशा में गतिशीलता दे सकने में समर्थ होगे ही.

****

****

Daridrata nashak lakshmi prayog

Life can not be imagined Without lakshmi element and every sadhak had to provide a must place lakshmi tatv sadhana in his life. Since when daily need are fulfilled without any difficulty than its natural a person can sit in sadhana with more devotion and with more ease, sadhana karam is also considered a higher class of karam/act. and for that a sadhak must be having without worry .

तंत्र कौमुदी
शक्ति सायुज्य अघोर साधना महाविशेषांक
Ninth Issue – FEBRUARY 2012
PART -II
Tantra kaumudi

Dedicated

To

The Divine Holy Lotus Feet of
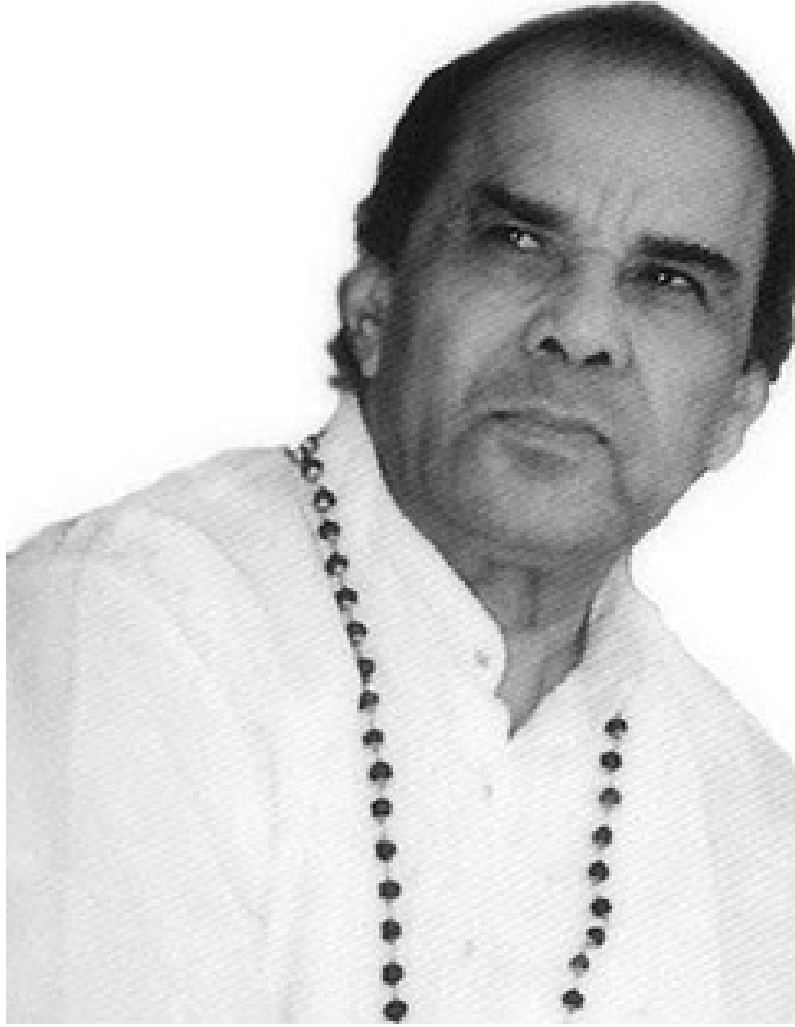
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI

(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)

Publisher

Tantra kaumudi e-magazine

Nikhil Para Science Research Unit

Can be contacted through

http://nikhil-alchemy2.com

www.Nikhil-alchemy2.blogspot.com & Nikhil_alchemy yahoo group

Editor *Associates editor s And Creative Designer*

nikhilarif@gmail.com raghunath.nikhil@yahoo.in anuwithsmile@rediffmail.com

Name of the Articles

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

Nikhil isht darshan sadhana

दुर्भाग्य को हटा सकने में समर्थ एक साधना

स्मशान अपने आप मे एक बहोत ही पवित्र शब्द है. हालाकि लोगो ने अपने हिसाब से इसके साथ कई प्रकार की कहानीयो को जोड कर इसे भय का पर्याय ही बना दिया है. संभवत इसके पीछे कई प्रकार के कारण हो सकते है लेकिन आश्चर्य तो यह भी है की कई विद्वानों ने इसे अपवित्र और घृणित जगह घोषित कर दिया. जो मनुष्य के लिए मुक्ति का द्वार होता है, जहा से व्यक्ति मुक्ति की और तथा अपने इष्ट की और कदम रखता हो इस प्रकार के स्थान को अपवित्र कि संज्ञा दे कर उसे अपमानित करना सायद आज कल एक अत्यधिक सामान्य बात है. लेकिन साधक का चिंतन साधना होता है, किसी भी तथ्य को यु ही किसी के कहने पर वह स्वीकार नहीं कर सकता.

अगर भगवान शिव जैसे मुख्य देव का निवास स्थान को घृणा की द्रष्टि से देखा जाए तो वह साधक के लिए किसी भी रूप से योग्य नहीं हो सकता. बल्कि साधक के लिए तो स्मशान एक वरदान स्वरुप ही है. इस लिए क्यों की वह स्थान निरंतर रूप से उर्जामय तथा चैतन्य रहता है, और इस प्रकार के स्थान मे साधना करने पर व्यक्ति की चेतना का तुरंत विकास हो कर सफलता प्राप्ति की संभावना को बढ़ा देता है.

पंचमहाभूत मे विलीनीकरण तथा रूपांतरण की प्रक्रिया निरंतर रूप से किसी स्थान मे होती रहती है तो वह स्मशान ही होता है और इसी लिए उस स्थान विशेष मे उर्जा का विशेष संचार नियमित रूप से गतिशील रहता है. सदगुरुदेव ने अपने काल मे विशेष शिष्यों को स्मशान साधनाओ का ज्ञान दिया था. ये एक नितांत सत्य है की उर्जा के प्रवाह को सहने के लिए साधक मे यथायोग्य हिम्मत तथा हौसले की ज़रूरत होनी चाहिए. लेकिन साधक के लिए तो ये प्रारंभिक गुण है.

श्री निखिलेश्वरानंदजी को कई व्यक्तियो ने अलग अलग रूप मे जाना है, साधना की है तथा उनकी कृपा प्राप्त बने है. स्मशान साधको तथा अघोरियो के लिए भी उनका एक अलग ही रूप रहा है. इसी क्रम मे उनसे सबंधित कई साधनाओ का प्रचलन भी रहा है. ऐसे कई गुप्त प्रयोग है जिन के मुख्य देवता खुद सदगुरुदेव को माना गया है तथा जिससे असंभव से असंभव साधना भी निश्चित रूप से हो जाती है.

कुछ ऐसा ही एक गुप्त प्रयोग है इष्ट दर्शन हेतु. इस प्रयोग करने पर मात्र ३ दिन मे ही साधक को अपने इष्ट के दर्शन हो जाते है. आप समज सकते है की कहा वह लाखो मंत्र जाप और कई अनुष्ठान जिसके बाद भी इष्ट के दर्शन संभव नहीं हो पाते वही इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति मात्र ३ ही दिन मे इष्ट के दर्शन करने मे सक्षम हो जाता है. इस विशेष तथा देव दुर्लभ प्रयोग को भी मे आप सब के सामने सदगुरुदेवश्री निखिलेश्वरानंदजी के चरणों मे प्रार्थना सह रखना चाहूँगा.

साधक को चाहिए की वह ३ दिन के लिए किसी भी प्रकार का कोई इतर कार्य न करे तथा इष्ट चिंतन तथा गुरु चिंतन मे ही लिन रहे.

इस साधना काल मे साधना के सम्पूर्ण नियमों का पालन करे

वस्त्र काले हो, माला काले हकीक या रुद्राक्ष की रहे, साधक को उत्तर दिशा की तरफ मुख कर साधना मे बैठना चाहिए

स्मशान मे जाने से पूर्व आसान, पूजन, दिग्बन्धन, कीलन वगेरा पूर्ण प्रक्रियाओ को सम्प्पन करने के बाद ही साधना मे बैठे.

साधक सदगुरुदेव के सन्यास रूप की फोटो के सामने ये मंत्र जाप करे

मंत्र : ॐ निखिलेश्वराय स्मशानाधिपतये इष्ट दर्शय दर्शय अघोरेश्वराय हूं हूं

इस मंत्र की ५१ माला जाप करे. स्मशान का चुनाव इस प्रकार करे की साधक के अलावा स्मशान मे कोई और व्यक्ति उपस्थित ना हो. तीसरे दिन मंत्र जाप समाप्त होते होते साधक को इष्ट के दर्शन हो जाते है.

साधना के दौरान साधक को अगर कोई आवाज़ सुनी दे या विशेष द्रश्य दिखाई दे तो विचलित ना हो कर साधना करते रहना चाहिए. ये तीक्ष्ण प्रयोग है अतः कमजोर ह्रदय वाले व्यक्ति को इस प्रकार का प्रयोग नहीं करना चाहिए.

Nikhil Isht Darshan Prayog:

Smashan is very holy word in itself. However people have merged various stories with this and have made this word synonym of fear. Possibly there may be various reasons behind this, but it is also strange that many scholars have also declared this place as foul and disgust. The one which is door of salvation, the place from people proceed towards Isht and salvation it has become fashion and normal day routine for people to term such divine place disgust and to abase it.

But mentality of sadhak is about sadhana, anything said by anyone could not be accepted that way. It is not good for sadhak to see place of lord shiva with disgust way of looking. Rather smashan is boon for any sadhak. As because that place continuously remains full of energy and awaken, doing sadhana on such place do increases possibilities of having success by developing consciousness of the person.

It is the only place where five metals gets dissolve and transformed continuously and thus in that particular place flow of energy remains going. In the time era, sadgurudev had given knowledge regarding smashan sadhana to particular disciples. This is absolutely true that to digest such energy flow sadhak needs to have courage and endurance. But for sadhak these are basic keys.

Shri Nikhileswaranand has been understood, accomplished with sadhana and blesses various sadhaka in various form. For smashan sadhaka and aghori there is completely different form of him. This way many sadhana is also remained famous about his that form. There are many sadhana in which the main god has been believed to be sadgurudev himself and almost impossible sadhanas could also be accomplished.

There is such secret sadhana prayog related to isht darshan in this category. By doing this process of just 3 days one may have glimpses of isht. One may understand that on one side lacs of mantra chantings and many anusthan after which too there remains possibilities of failure in isht darshan and on other hand this prayog will let person have isht darshan siddhi iin just 3 days. By putting my prayers in the holy feet of sadgurudev nikhileshwaranand ji, I would like to place this very rare and special process in front of you.

Sadhak is requires not to do any other works for 3 days one must remain in contemplation of Isht and sadgurudev.

One should follow all the rules of sadhana in sadhana duration

Cloth should be black in color, rosary could be black hakeek or rudraksha, sadhak should sit facing north direction.

Before sitting in smashan, sadhak should do process of aasan, poojan, digbandhan, kilan etc.

Sadhak should do mantra chanting in front of the sadgurudev's ascetic form picture.

Mantra: Aum nikhileshwaraay smashaanaadhipataye isht darshay darshay aghoreshwaraay hum hum

51 rosary of the mantra should be done. Smashan should be selected where no other person during sadhana should be available.

On the third day before mantra chanting is completed one will have glimpses of isht. In sadhana duration if one hears any unusual noise or visualization, one should continue sadhana without fear. This is tikshna prayoga and those who have fear in heart should not attempt such prayoga.

Aghor mantra ......

इस मार्ग की दिव्यता से आपको परिचित कराते हुए

भारतीय साधना क्षेत्र में जो भी उच्च कोटि के महा योगी हुए हैं यह तो सर्व मान्य तथ्य की उनका कुछ न कुछ इस मार्ग से सबंध रहा हैं , और ध्यान से देख जाये तो तो साधक और इष्ट के बीच दो स्थितिया बनती हैं पहली भक्ति प्रधान हैं जहाँ साधक अपना सब कुछ अपने इष्ट को सौप देता हैं और दूसरा मार्ग यह हो सकता हैं जहाँ साधक अपनी स्व शक्ति के बल पर सब करता हैं.

हालाकि यह स्व शक्ति भी उसके सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त रहती हैं और इस दुसरे मार्ग की संज्ञा अघोर मार्ग से की जा सकती हैं, जहाँ साधक केबल और केबल अपनी आत्म पर ही आश्रित रहता हैं .

इस मार्ग में अनेको मंत्र हैं जो तत्क्षण परिणाम देने में समर्थ हैं पर अगर कोई मंत्र हैं जिसको की इस मार्ग का अन्यतम मन्त्र कहा जा सकता हैं तो वह हैं " अघोर मंत्र " और इस मंत्र की विशेषता और प्रभावकता के बारे में यही कहा जा सकता हैं की भगवान शंकर के सर्वश्रेष्ठ शिष्य आचार्य पुष्प दन्त कहते हैं की इस जैसा मंत्र तो संभव ही नहीं हैं जो की जीवन में सब कुछ देने में समर्थ हैं इस लिए उन्होंने कहा "अघोरानाम परो मन्त्र" मतलब इससे श्रेठ कोई ओर मंत्र नहीं हैं .

और इस महा मंत्र की उपयोगिता का तो कुछ वर्णन ही नहीं किया जा सकता हैं . यहाँ तक की पारद संस्कार में भी इसका उपयोग हैं , क्योंकि यदि पारद अंतिम तंत्र हैं तो निश्चय ही इस मार्ग के योगियों ने भी इस और ध्यान न दिया हो या रखा हो यह माना नहीं जा सकता हैं . पर वे प्रक्रिया इतनी तीक्ष्ण और सटीक और इतने कम उपकरणों और जड़ी बूटिया ले कर संपन्न हैं की क्या कहे ...कभी कभी तो व्यक्ति को प्रक्रिया पर ही विस्वास नहीं हो पाता हैं की उसने क्या किया हैं केबल जल मात्र से संस्कार और इन सबके पीछे कहीं न कहीं उस अघोर मन्त्र की क्षमता और शक्ति हैं .

यह बहुत ही ध्यान रखने की बात हैं की मानव शरीर में आत्मा और प्राण दो अलग अलग चीजे हैं जिसे भूल वश एक ही माना जाता हैं. मानव शरीर में १० प्राण माने गए हैं. जैसे ही व्यक्ति की आत्मा शरीर छोडती हैं जाते हैं मतलब वह मृत्यु प्राप्त करता हैं ९ प्रकार के प्राण तत्काल उसके शरीर को छोड़ कर निकल जाते हैं, १० वा धनजय उसके कपाल में उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद तक रहता हैं .उसकी मुक्ति के लिए हीमृत मानव देह के दाह संस्कार में एक प्रक्रिया कपाल क्रिया भी हैं , पर आप जानते हैं की औघड़ संप्रदाय में कपाल क्रिया नहीं होती हैं .

और औघड़ संप्रदाय पुनर्जन्म और मुक्ति के बारे में चिंता नहीं करते हैं क्योंकि यह मार्ग आत्मा बुद्धि का मार्ग हैं और यह दोनों चीजे तो उसके लिए हैं जो देह बुद्धि रखता हैं .

बार बार सभी महा योगियों ने कहा हैं की जीवन में सम भाव रखा जाए , और विचलित नहीं हुआ जाए . पर मन तो कभी मध्य में रहता ही नहीं वह तो हमेशा से अति पर रहता हैं तो इसे कैसे मध्य में लाया जाए हर मार्ग की एक अपनी की प्रणाली हैं और निश्चय ही अघोर मार्ग प्रणाली में इसको नियंत्रित करने की या सम भाव में रखने की एक अलग ही व्यवस्था हैं .

मानव जीवन पञ्च ज्ञानेन्द्रियो पर निर्भर करता हैं ये शब्द , रस , गंध , स्पर्श , रूप निश्चय ही इन को नियंत्रण में करने के लिए जैसे रस को नियंत्रण में लाने के लिए कडवे और घृणित पदार्थ भी सम भाव से खाते हैं और यही बात लागु होती हैं उनके द्वारा अपशब्दों की वारिश करने में .

इस मार्ग की विशेषता बताते हुए वाराणसी के अघोर आचार्य भगवान् राम ने कहा था की " अघोरेश्वर लोग आत्म बुद्धि के होते हैं, वे देह बुद्धि के नहीं होते हैं , देह संज्ञा उनको दीखता हैं या आत्म संज्ञा में वे प्रविष्ट रहते हैं इस लिए इस काया के पात हो जाने पर भी आकाश खप्पर या कपाल खप्पर में वे निवास करते हैं ,इन्द्रिय निग्रिहित , चित्त निग्रिहित , मन निग्रिहित साधको को, उपासको को , अधिकारीयों को , वे सदैव मिलते रहते हैं उनकी रक्षा करते हैं , उनको हर सिद्धिया देने वाले होते हैं . हर कामनाओ और इच्छाओ को पूर्ण करने वाले होते हैं "अघोरानाम परो मन्त्र" में रमण करने वाले अघोरेश्वर होते हैं . "

****

Aghor mantra Marg

In Indian sadhana field , who so ever the great mahayogi comes , more or less they also have some connection to this Aghor marg . if observing very keenly than two stages has come to our consideration the first one in that a sadhak offers his complete or complete surrender to his /her isht deity .

and second way is possible where a sadhak would achieve everything through his self inner power. Yes it is true that this self inner power also Is the manifestation of saddgurudev jis given power. And this second marg can be known as Aghor marg .

Here in this way or marg's sadhak is totally depended on his self . there are many mantra practiced in this holy path and are able to produce quick result but one mantra is supreme and that can be said crown of this marg, and known as ""Aghor mantra " what can be said about the power and effectiveness of this mantra even the disciples of Bhagvaan Shankar's pushpdantachry says that like this mantra no other mantra is possible. And he said "Aghoranaam paro mantra "

And no one can describe the effect of this Aghor maha mantra even in parad Sanskar , this maha mantra is used (in Kapalik way of Sanskar) since if parad tantra is considered the last and supreme among all branch of tantra , than ho w this can be possible that the yogies belongs to this marg dopes not pay attention to this area .

but the process a re so quick and accurate and with least used of apparatus and herbs , sometimes even the person is doing the Sanskar get amazed how only through water thses Sanskar can be done . and behind in all that the power of this mantra works,

And this point is most important to understand that in human body aatma (soul) and praan (life energy) are two different things . but we all mistakenly consider that two things as one . when soul left the body , 9 types of life energy / praan on that point leaves the body and only one praan still available in that dead body, and is known as dhanjay praan .

that's why after the death when human body be burnt one special process has to be done known as kapaal kriya . but in this Aghor sect no kapaal kriya happened.

And Aughad are least concerned with reincarnation or final libration since they always in the state of attam budhhi and mentioned two things belongs to deh buddhi .

This has been said by various maha yogies repeatedly that evenmindness is the key to success in the life but the mind always wandering here and there and like to go to extreme. So how that is be possible , every marg has some specific method to achieve that so also is the case in Aghor marg.

Human life depended upon five gyannedriya means 5 sense of relate d to gyan, that are word, taste, aroma, touch , beauty and thses should be in control but how that are going to be possible for example to control taste, Aghor sadhak taste with the same way to bitter and uneatable things and same things is applicable in regards using abusive word, inner meaning remains the same means to be outside of thses 5 senses boundary.

To describe the speciliaties of this Aghor marg Aghor achary Bhagvaan Ram of Varanasi said " Aghoreshar are having aatmt budhhi (inner self inteelgence) , they are not belongs to body. Though they can see body but always immersed in self. That's why even when there body destroy they lives in Aaksh khappar or in Kapaal khappar .

they are always meet , protect and help ful to those sadhak who are indriy nigrhit , chitt nigrhit , man nigrhit (complet jitendridy I,e who have total control of his all senses). They provide siddhita to them and are able to fulfil every wish to them, they are immerse in Aghoranaam paro mantr ".

Shiv lok Sadhna rahSy

एक अद्भुत साधना जो सुनी ही नहीं गयी

हमारे पुराणोंमें कई प्रकार के लोक लोकान्तरो का उल्लेख मिलता है. देव लोक, यक्ष लोक, गन्धर्व लोक, ब्रम्ह लोक, शिर लोक, इंद्र लोक. वस्तुतः मुझे लगता था की हमारे पुराणमे जो भी लिखा है वह सत्य है लेकिन संकेतात्मक रूप मे विविध उल्लेख मिलता है. कहानियो के पीछे कई प्रकार के हार्द तथा लक्ष्य हो सकते है, जिन्हें मात्र उस विषय मे गहरी शोध के बाद समजा जा सकता है. जैसे की मार्कंडेय पुराण मे स्थित दुर्गासप्तसती पूर्ण तंत्रोक्त विधानों का संग्रह है. सामान्य व्यक्ति को वह सिर्फ एक कहानी ही प्रतीत हो सकती है. और लोक लोकान्तरो के विषय मे भी लोगो की यही धारणा बनी की यह मात्र कहानिया ही है. लेकिन ऐसा नहीं है. हमारे तंत्र ग्रंथो मे बराबर कई एसी साधनाओ के विधान दिये है जिसके माध्यम से कुछ दिनों मे व्यक्ति सूक्ष्म रूप से लोक लोकान्तरो की यात्रा कर सकता है.

जीवन का यह दिव्य सौभाग्य ही है की हम उन लोक मे जाए वहा के निवासियों को देखे तथा उनके साथ वार्तालाप करे. वहा की दिव्यता का आनंद उठाये. वहा के सौंदर्य को आत्मसार करे. देवताओ के जिन लोको का उल्लेख है वहा वे देवता सशरीर निवास करते है, उनके दर्शन कर, आशीष पा कर जीवन को दिव्य बनाए. कुछ ऐसा ही चिंतन ले कर मे भी जुट गया इस दिशा मे. और साधना के अंतिम दिन जो भी अनुभूतिया हुई वह दिव्य अनुभूतियो को कोई भी लेखनी लिख नहीं सकती. सामान्य व्यक्तियो के लिए यह भी एक कहानी ही हो सकती है .

लेकिन जिन्होंने अपने सदगुरुदेव के साथ समय बीताया है तथा उन के चरण कमलों मे साधना ज्ञान को प्राप्त किया है वह भलीभांति समज सकता है की साधना के माध्यम से कुछ भी असंभव नहीं है. शिव लोक भी ऐसा ही एक लोक है जिसका विवरण कई बार प्राप्त होता है. यहाँ तक की यह लोक मे भगवान सदाशिव् का स्थायी निवास भी बताया गया है. इसकी भौतिक स्थिति पर कई प्रकार के वाद विवाद हो सकते है. किसी कल्पना की तरह ही यह लोक अत्यधिक दिव्यता युक्त है. बर्फीले वातावरण मे प्रकृति अपने पूर्ण श्रृंगार के साथ इस लोक मे स्थायी रहती है. साथ ही साथ कई श्रेष्ठ योगी जिन्होंने अपने साधना बल से इसमें प्रवेश किया है वह इधर उधर विचरण करते हुए नज़र आते है. तो किसी तरफ शिव के सहायक गण की भी यातायात रहती है,

जिसमे वीरभद्र तथा भैरव भी सामिल होते है. आगे के स्थान मे जहा पर अपने आप ही औम नाद का गुंजरन होता रहता है वहा पर एक अत्यधिक मनोहर स्थान पर उच्च वेदी पर भगवान सदाशिव अपने पूर्ण रूप मे हमेशा विद्यमान रहते है. सामने कई योगी महायोगी तथा अन्य सेवक गण तथा लोक लोकांतर से आये शिव भक्त शिव अर्चना मे भव विभोर हो के मग्न ही रहते है.

क्या होगा इससे बड़ा सौभाग्य की देवताओ की प्रत्यक्ष पूजा की जाए. योगी जन समाधी मग्न होते है. सौभाग्य शाली भी होते है कुछ एक जिन्हें सदाशिव अपने श्रीमुख से खुद ही आशीर्वाद देते है. कल्पना से भी परे अगर कोई मधुर अनुभव होगा तो वह यही होगा. इस शिवलोक मे प्रवेश साधना के माध्यम से मिल सकता है. इस अत्यधिक दुर्लभ विधान को प्राप्त करने के लिए क्या क्या करना पड़ा था यह तो पूरी एक अलग ही कहानी है लेकिन मेरे सभी भाई बहेनो के मध्य मे इस विधान को भी रखना चाहूँगा ताकि सब अपना जीवन दिव्यता की और अग्रसर कर सके तथा देख सके की साधना मे आज भी कितनी शक्ति है.

इस विधान को सोमवार रात्रिकाल मे १० बजे के बाद करना चाहिए. साधक को अपने सामने विशुद्ध प्राण प्रतिष्ठित पारदेश्वर की स्थापना करनी चाहिए. तथा उसका पूर्ण पूजन करे. धतूरे के फुल अर्पित करे. साधक का मुख उत्तर की तरफ होना चाहिए तथा कमरे मे दूसरा कोई व्यक्ति ना हो. पूजन के बाद साधक मंत्र का पूर्ण श्रद्धा के साथ जाप करे. इसके लिए रुद्राक्ष माला का जाप हो. साधक के वस्त्र काले या फिर सफ़ेद रंग के हो. वस्त्रों के रंग का आसान हो. साधक को पहले एक माला लघु अघोर मंत्र की करनी चाहिए.

ॐ **अघोरेभ्यो घोरेभ्यो नमः**

इसके बाद साधक दिव्य शिवलोक मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप करे

ॐ शिवै त्वंलोकप्रसीद अघोरेश्वर्ये दिव्यदर्शय आत्मद्रष्टि जाग्रयामि फट्

मंत्र जाप समाप्ति पर शिव को ही मंत्र समर्पण करे. इसके बाद साधक वही पर सो जाए. यह क्रम अगले सोमवार (कुल ८ दिन) चालू रखे. अंतिम रात्री को सोने के बाद साधक अपने सूक्ष्म शरीर से शिवलोक मे निश्चित रूप से प्रवेश करता है तथा भगवन सदाशिव के दर्शन को कर लेता है. माला को प्रवाहित ना करे. उसे पूजा स्थान मे स्थापित कर दे.

Secret of shiv loka sadhna:

in our purana literature we find mention of various lokas (worlds). Devalok, yakshloka, gandhravaloka, bramha loka, shir loka, indra loka. Actually, I used to feel that whatever have been written in purana is true but it is mentioned in indicative way. Behind every story there may be various type of moral and thinking, which could only be understood after deep research in the subject. For example durga-saptashati from Markandeya Purana is set of various tantra processes. For a normal human being it is just another story of goddess.

And the same thinking stays in the mind of the people about various worlds that those are just stories. But it is not that. In tantra field there are so many processes given with which human can travel in various world in some days with astral body. It is divine fortune to visit those worlds to see livening there and to speak with them.

To have joy of the divineness of that place. To establish that beauty within. With glimpses of the gods, who recites in their particular worlds to move toward divine life. Wondering the same, I too started putting my efforts in this direction. And on the last day of the sadhana whatever the experience been had, No words can write about that divineness.

This also may be story for general people but those who had spent time with sadgurudev and those who had received knowledge of sadhana under his lotus feet guidance they can very well understand that nothing is impossible with sadhana. Shiva Loka is also such world about which many time mentioning of the same if found.

It is also said to be permanent residence of lord Shiva. Physical location of this place may create various controversies. Like any imagination this world is also filled with complete divineness. In the snow atmosphere, nature stays at its best in this world. Various yogis of the higher stage who have entered with their sadhana accomplishment in this place could be seen wandering here there.

On other side there remains walking of various shiva service crew including veerbhadra and bhairava. Furthermore the best place ahead where Aum naad keeps on sounding at one most beautiful place there remains lord Shiva in his complete form always on a heighted aasana.

In front of the same there remains yogis mahayogis and other one and people from various loka being completely lost in shiva worship. What could be more fortune then worshiping the gods in their real form. Yogis also could be fined in Samadhi state. Fortunate are also found who receives blessing from holy mouth of the lord himself.

If there is any experience the divineness of the same could not be expressed in the words would be this. In this shiva loka, one may have entry through sadhana. to get such divine and rare process what things I was went through is completely different story but for my all brothers and sisters I would like to share the process so that everyone can make their life move toward divineness and can see that how much power sadhana have today even.

This process should be done in night time after 10 on Monday. Sadhak should establish pure paarad shivalinga (pran pratisthit) and should do the poojan. Flowers of Dhatoora should be offered. Face of the sadhak should be facing north and any other person should not be in the room.

After poojan, sadhak should start mantra chanting with faith. Rudraksh rosary should be brought in use. Cloth should be black or red. Aasan should be of the same color of cloths. Sadhak should first do one round of Laghu Aghor Mantra

Aum Aghorebhyo Ghorebhyo Namah

After that sadhak should chant 51 rosary of Divya Shivaloka Mantra

Aum shivei tvamlokpraseed aghoreshwarye divyadarshay aatmadrashti jaagrayaami phat

After mantra jaap is completed, offer the same to shiva. After that sadhak should sleep at tha same place. This process should be continuing till next Monday (total 8 days). On the last night after sleeping sadhak will for sure enters in the shiva loka with astral body and can have glimps of lord shiva. Rosary should not be dropped in water. It should be placed in worship place.

Aghor marg - a incident
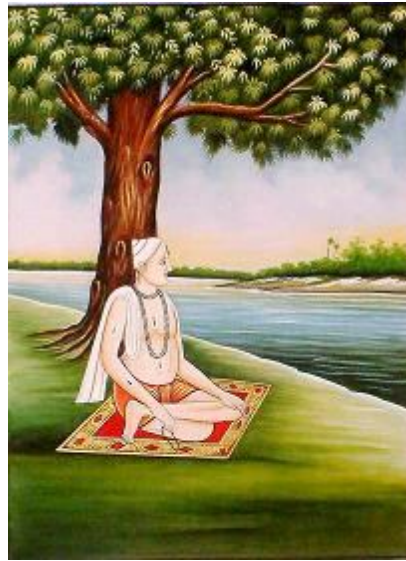
एक अद्भुत घटना जो इस मार्ग की क्षमता बता सकने में समर्थ

यह तो भारतीय जन मानस में विख्यात हैं की एक अघोरी कुछ भी कर सकता हैं उसके वरदान देने या श्राप देने की घटनाये तो हम सभी ने सुनी हैं ही , ऐसी ही एक घटना आपके सामने उपस्थित हैं.

गोस्वामी तुलसी दास जी के पास एक गरीब ब्राह्मण आया और उसने कहा की आपकी ख्याति प्रभु हनुमान के भक्त के रूप में सभी जानते हैं .

कृपया यह बताये की मेरी कोई संतान नहीं हैं तो कब तक होगी, गोस्वामी जी ने देखा तो पाया कि उसे कोई संतान योग हैं ही नहीं , उन्होंने उसे यह बता दिया पर संतावना देते हुए बोले की रात्रि में हनुमान जी से मैं बात करूँगा ,

भगवान् हनुमान जी ने भी वही उत्तर दे दिया की अगले सात जन्म तक संतान योग नहीं हैं. वह ब्राहमण निराश हो कर चला गया . गंगा नदी के तट पर बैठा हुआ था तभी एक अघोरी उनके सामने से गुजरा उसके पूछने पर उन्होंने सारी बात बता दी उसने बात सुनकर कहा घर में जितनी खाने की रोटी हैं ले कर आ जा , चार रोटी ही वह ब्राहमण ले कर आ पाया तो उस अघोरी ने कहा जा चार संतान तेरे यहाँ होंगे , और जब उस ब्राहमण की स्त्री गर्भवती हुयी तो उस ब्राहमण ने जा कर गोस्वामी तुलसी दास जी को जी भर के सुनाया .

गोस्वामी जी इस घटना से व्यथित होकर भगवान् हनुमान जी से पूंछा की आपका कथन कैसे गलत हुआ??? ,

हनुमान जी ने भी परेशां हो कर इस प्रशन का उत्तर अपने इष्ट भगवान् राम से पूंछा , भगवान् राम ने कहा मेरी सृष्टि में तो यह संभव नहीं हैं पर एक सदगुरुदेव निर्माण कर सकता हैं .

और वह अघोरी कोई और नहीं वाराणसी के प्रसिद्द अघोरी संत बाबा किना राम जी थे . यह घटना आपको बता सकती हैं की सदगुरुदेव तत्व और अघोरी मार्ग का साधक क्या क्या कर सकता हैं

****
****

. **Aghor marg One incident**

This have been much popularized in Indian mentality that a Aghori can do anything or everything and we have listen many such true stories regarding their boon and curse.

One very penniless Brahman reached near to Goswami Tulsidaas ji and told him that your fame was all around as true devotee of Bhagvaan ram , so plz tell me when could I have a child since still so many years has been passed am still childless .

Goswami ji took analysis and found that he had no yog for child, and informed him and sympathetically told him that he would talk to Bhagvaan hanuman ji in this regards at night .

Bhagvaan hanuman also replied the same and said even in next seven life he will have no chance to have issue. the Brahmin was very very much disappointed, while sitting on the bank of ganga river , Aghori passed in front of him, on his asking the Brahmin told the whole story.

The Aghori after listening the story, told him go to your home and come with as much as chapatti you had ., the Brahman was able to came there with only four chapatti, on seeing this the Aghori replied ok now I bless you , that you would have four children. When the Brahmin wife got pregnant than the Brahmin went to tulsi daas ji and spoke him with so much anger about his failed prediction.

Goswami tulsi daas ji also became very frustrated and told Bhagvaan hanuman ji why his prediction got failed.

Listening all this even Bhagvaan hanuman ji asked the reason to Bhagvaan ram, Bhagvaan ram replied , this is not possible in my creation but a Sadgurudev can do that easily.

And that Aghori is none other than the famous Aghor achary baba kina ram ji.

This incident can open our eyes that what a Aghor sadhak and sadgurudev tatv can do.

What is asht pash??

क्या हैं ये पाश - इनके बारे में एक विषद व्याख्या

अभी हमने यह समझा की शक्ति और अघोर तत्व क्या हैं अब इस लेख मे कुछ और महत्वपूर्ण बाते अघोर तत्व या घोर तत्व से सबंधित कुछ तथ्यों पर आपके सामने हैं...

भगवान् शकर के षड्मुख में से छह आम्नाय का प्रस्फुटन हुआ और इन आम्नाय को हम दिशाओ के नाम से जानते हैं और हर आम्नाय किसी एक विशेष या प्रधानता से जुड़ा हैं जैसे पूर्व आम्नाय कर्म काण्ड से तो दक्षिण आम्नाय में भक्ति तो उत्तर आम्नाय में कर्म ,,,,उर्ध्व आम्नाय में योग प्रधानता हैं जो अधर आमनाय हैं उससे अघोर पथ प्रधानता हुआ .

इस मार्ग के सिद्ध हस्त साधक को संसार की कोई भी भयानक से भयानक परिस्तिथि डिगा नहीं सकती हैं न तो कोई भय न कोई विपरीतता उसके मार्ग में आड़े आ सकती हैं और वह वह पशु भाव से कहीं आगे बढ़कर वीर भाव का साधक होता हुआ आगे बढ़ता जाता हैं, हर मार्ग में कोई न कोई तत्व कई प्रधानता रहती हैं तो अघोर मार्ग भी रज और तम दो तत्वों की सहायता या इन तत्वों का आधार लेता हैं.

तंत्र साधना में पांच पीठो का अपना एक महत्त्व हैं और ये हैं अरण्य पीठ, शून्य पीठ, शमशान पीठ, शव पीठ, श्यामा पीठ और इन पांच पीठो को सफलता पूर्वक जो संपन्न कर लेता हैं वह ही वास्तव में तंत्र की साधना के योग्य होता हैं, इसका मतलब हम जो अभी तक साधना करते हैं वह वास्तव में एक आधार बनाना मात्र हैं जबकि तंत्र तो कहीं और उचाई पर स्थित हैं, इनमे से एक एक पीठ का अपना महत्त्व हैं और भले ही इन्हें प्रारंभिक कहा जाए पर ये इतनी आसान नहीं हैं ..

पर अघोर मार्ग की उच्चता कहे की वह साधक को सीधे ही तीसरे पीठ में बैठने की योग्यता दे देता हैं और व्यक्ति को अष्ट पाश से मुक्ति का और साधना नियमो से मुक्ति का एक राज मार्ग दे देता हैं .

बार बार यह उल्लेख किया जाता हैं हैं की अष्ट पाश तो आखिर ये हैं क्या ???

और इन अष्ट पाश को समझने के लिए हमें सबसे पहले यह जानना चाहिए की साधना में भाव क्या हैं इन भाव की सहायता से ही साधक का वर्गीकरण होता हैं और ये हैं पशु भाव, वीर भाव, दिव्य भाव .

सारे सामान्य साधक पशु भाव याने जो बंधा हुआ हो उसके अंतर्गत आते हैं और इन बन्धनों से बंधे रहने के बाद व्यक्ति की यात्रा प्रारंभ होती हैं और उसे पाने एक एक पाश काट फेकने पड़ते हैं और फिर अगली सीढ़ी हैं ...... वीरता के साथ उनका सामना करते हुए वीर भाव का साधक बनना और फिर अंतिम सर्वोच्च स्तर मतलब दिव्य भाव मतलब सभी में दिव्यता का मानना नहीं बल्कि साक्षात् दर्शन करना, महसूस नहीं प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए उपयोग करते जाना

और ये अष्ट पाश हैं **भय, लज्जा, घृणा, कुल, शील, शंका, जाति, जुगुप्सा**

घृणा - हमारे शरीर के अभिमान को बताती हैं और यह वस्तु हमारी इच्छा या रूचि के अनुसार मन भावन नहीं हैं तो ..इसका उदय होता हैं जब तक किसी भी साधक को यह रहेगा वह पशु ही हैं और यह तो सदगुरुदेव की कृपा से ही छुट सकती हैं

लज्जा - व्यक्ति कभी अपनी शारीरिक या मानसिक या सामाजिक परिस्तिथियों के कारण हमेशा या किन्ही विपरीत परिस्थिति में शर्माता हैं या कुछ कह पाने में या सामने आने में घबराता हैं यह सब इस पाशके अंतर गत हैं

कुल - साधक को यह अभिमान रहना की वह उच्च कुल का हैं या अन्य निम्न कुल के हैं और उसके अनुसार आचरण करना यह सब भी झूटे शरीर के अभिमान को बढ़ाने में सहायक हैं

जाति- साधक को यह अभिमान रहना की वह उच्च जाति का हैं यह भी एक प्रकार से शरीर से संबंधित हैं क्योंकि आत्मा एक वही परम आत्मा का अंश होने से जाति से संबंधित नहीं होगी यह तो शरीर हैं जो इस पाश से जुड़ा हैं और शरीर के अंतर्गत आत्मा होने से वह भी अपने मूल भुत स्वरूपों को भूली पड़ी रहती हैं

शील - व्यक्ति को कतिपय सामाजिक नियमो बंध कर कार्य करना जैसे की मन चाह रहा की यह आपको पसंद नहीं हैं फिर भी सामने वाले से न कह पाना भी इसके अंतर्गत आता हैं .

शंका -किसी भी वस्तु के सत्य स्वरुप को न जानने के कारण यह उत्पन्न होती हैं और इसका स्वरुप बड़ा ही भयंकर हैं , और यह पाश व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति को नष्ट कर डालता हैं हर बात पर शंका

जुगुप्सा - यह व्यक्ति के दोष बढ़ाने में सहायक हैं वह दुसरे के दोष देखता हैं पर उसे स्वयं के दोष नहीं देखते हैं , और वह दुसरो पर भी दिन रात दोषारोपण करने में व्यस्त हो जाता हैं

भय - किसी भी परिस्थिति में अज्ञात से भय फिर वह चाहे सूक्ष्मवासना शरीर धारी भुत प्रेत आदि इतर योनिया हो या मानव के द्वारा बनायीं गयी या परालौकिक विपत्ति का आ जाना की आशंका इसके अन्तरगत आता हैं .

इस तरह से इन पाशो को समझा जा सकता हैं , पर इनसे मुक्त कैसे हुआ जाए यही एक सबसे बड़ा प्रश्न हैं और जब तक जीवात्मा इन अद्रिस्य बन्धनों से बंधी हैं तब तक वह अपने मूल स्वरुप में कैसे आ सकती हैं , और इसके लिए केबल दो ही रास्ते हैं पहला तो लगातार साधना मय बने रहना और दूसरा सदगुरुदेव की अहेतुक कृपा इसके अलावा और कुछ नहीं , और जब यह आठों प्रकार के पाश से व्यक्ति मुक्त हो जाता हैं .

तब वह सही अर्थो में संसार में बिखरा सौन्दर्य और उस एक तत्व की विशालता और महत्ता सर्व मयता से अभि भुत हो जाता हैं और इन आठो घोर तत्वों से मुक्त वह आत्मा ही वास्तव में एक अघोरी कहलाने में गौरव कहलाती हैं और जो भी इन बन्धनों से मुक्त हो गया वही हैं इस पथ का गौरव अन्यथा मानव जीवन तो इतना इन पाशों से बंधा हैं की वह हमेशा इन बन्धनों को ही अपना लेता हैं

****

****

Asht pash : general introduction

Till now we have understand what is shakti and Aghor tatv now here in this articles some of the points regarding Aghor or ghor tatv .

This is very well known facts that through six face/mouth of Bhagvaan shiv , six ammnay appeared . And these are named on the six direction .and every ammnay related to any one specialties . like purv ammnay related to karm kaand , Dakshin ammnay related to bhakti , uttar ammnay related to karm , and urdwa ammnay related to yog but adhar ammnay related to Aghor path .

The siddha sadhak of this Aghor path can not be shacked through danger to dangerous condition of this world , neither any fearsome condition nor any adversity can shake him and he is a sadhak belongs veer bhav nor pashu bhav . in each marg , there may be some element / tatv has more reflection . and Aghor marg has more reflection from sat and raj tatv.

Five peeth has a much significance in tantra field and thses are arany peeth, shoony peeth, shamshan peeth, shav peeth, shayama peeth and those who can cross thses five peeth successfully , only than he can only be eligible for the tantra sadhana .

that simply means till than what we do sadhana is only for making base or foundation stone, but in reality, the tantra is much much above to that. Each peeth has its own importance. may be thses are called preliminary but are not so easy to cross.

But this can be considered that the importance of Aghor sadhana path that he give access to sadhak directly to third peeth and provide a way for a sadhak to free form asht pash and free from sadhana's rules regulation.

Many times we talk about asht pash , but what are they ???

Before understanding thses , first we have to understand what is the bhav in tantra , and sadhaka's classification are done bases by thses bhav. Thses are pashu bhav , veer bhav, divy bhav. All the general sadhak or you can say sadhak who traded on this sadhana path are belongs to pashu bhav only .

And while covered through thses asht bhav , a sadhak journey starts and he has to remove one by one his all pash. And than next stage arrive that fighting with thses pash and became a veer bhav sadhak . and than in last watching /feeling/experiencing divinity in all objects of this world.than a sadhak can be considered a Divya Bhav Sadhak.

And thses asht pash are **bhay** (fear), **lajja**(shame), **ghrinaa** (hate), **kul** (family order), **sheel**(following society rules), **shanka** (doubt), **jati** (caste), **jugupsa** (critising to other)

Hate - this also related to body feeling and if any object is not as per our like than this arises. Until this feeling removes sadhak belongs to pashu bhav, this pash can be removed through Sadgurudev blessing.

Lajja –due to some personal . physical and financial reason many people has fear to come forward, or express himself aal thses comes under this pash.

Kul - this also creates a ego that sadhak belongs to higher section of society or family order, and behave accordingly ,and pay to attention to other kul person.

Caste- this also creates a feeling that sadhak belongs to higher caste this also related to physical since soul

Sheel - this pash also creates a feeling always in sadhak mind that he ha s to do what the society think right or always worried what the society thinks if he do this or that.

Shanka- this perhaps the most dangerous pash meaning doubting anything or every one and this should be removed at all cast.

Caste- this creates a feeling that I a belongs to higher caste so I am a superior ore belong to lower caste a sign of inferiority comes , that never accept that a sadhak is a soul who has to caste.

Jugupsa- perhaps most loving pash , who are not taking joy criticizing other on the bases of known or unknown facts /reason .

Like that thses asht pash can be understand , but how we can get rid of them is the major question and til a soul is not free from these , how can she realize its true nature. There are only two ways possible one is always be sadhana may and second is the blessing of a Sadgurudev no other path is for this.

And when get free from all thses asht pasht only than he can understand the beauty of life and this whole creation , and those who are completely free from thses asht pash can be called a true Aghori, he became the self other wise we all accept thses pash as they always belongs to us ..a part of us.

Aghor sAdhAk' types, whAt Are they ??

क्या अघोर साधकों में भी स्तर होते हैं

अघोर पथ की महानता और उच्चता और भाव मायता तो सर्व विदित हैं पर जैसा की प्रकृति की हर वस्तु के साथ होता हैं की इस मार्ग में अनाधिकरियो के प्रवेश से , जिन का कोई भी स्व नियंत्रण नहीं था उसके प्रवेश से यह मार्ग जन सामान्य के बीच जैसा आदर युक्त होना चाहिए वह हुआ नहीं .

और अघोर तत्व और अघोरी हैं के नाम पर जो कुछ भी होता या वह सर्व विदित हैं पर वास्तव में वह सौभाग्शाली हैं जो इस मार्ग का पथिक हैं.. उसके कुल परिवार का गौरव हैं उसके पितृ आनंद मानते हैं जो इस मार्ग पर चला हो या चलने की तैयारी कर रहा हो .

और अघोर शब्द का अपभ्रंश हैं औघड़ .. जिसका सीधा सदा सा मतलब हम के लेते हैं वह आप से और आज की समाज से छुपा नहीं हैं. पर इसकी अ एक रूप जो अत्यंत ही गरिमामय हैं उसे हम अबधुत कहते हैं हलाकि तीनो शब्दों का अर्थ एक हैं पर अबधुत कहे जाने पर एक गरिमा का अहसास होता हैं .

और यह वास्तव में मानसिक अवस्था हैं जब किसी एक साधक की मनः अवस्था इतनी उच्च हो जाती हैं की वह साक्षात् माँ भगवती का अपने आपको एक बालक समझने लगता हैं वह जानने लगता हैं की उसकी शक्ति वास्तव में सदगुरुदेव प्रदत्त हैं वह मनमाने आचरण नहीं बल्कि हर तरफ वही दिव्यता का भाव ले कर चलता हैं . और जिसे हर तरफ एक वही दिख रहा हो उसे क्या खाद्य या काया आखाद्य का बोध . अब सभी कुछ ब्रम्ह्मय हैं पर क्या यह इतना आसन हैं की एक दीक्षा ले ली और आप .....

ऐसा नहीं हैं सारा जीवन अपना इस कसौटी पर लगाना पड़ जाता हैं तब कहीं कुछ उच्चता हाथ में आती हैं अन्यथा वेश भूषा तोकोई भी धारण कर सकता हैं पर वह परमोच्च स्थिति इतनी आसान हैं क्या ..... यह भी तलवार की धार पर चलने जैसा कठिन हैं और मानव जीवन की कठिनाईया सर्व विदित हैं .

महा निर्माण तंत्र इन अघोर साधको का भी वर्गीकरण करता हैं हलाकि सामान्य वर्ग के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं हैं क्योंकि उनकी दृष्टी में सभी एक जैसा हैं पर फिर भी तंत्र कहता हैं ही

- ब्रम्हाबधुत
- शिवाबधुत
- वीराबधुत
- कुलाबधुत

और इनमे से जो साधक अपने सदगुरुदेव की आज्ञा नुसार एक एक क्रम को कुशलता पूर्वक पार करते हुए आगे बढ़ता जा ता हैं और उनके निर्देशन में साधना भी करता हैं और अपनी दैनिक जिम्मेवारियो से भी मुंह नहीं मोड़ता हैं वही श्रेठ साधक हैं और फिर उसकी उच्चता , शिष्यता की पराकास्ठा को देख कर वह स्वयं उसका अभिषेक कर उसे सर्वोच्च अवस्था याने कुलाब्धुत से विभूषित करते हैं और ऐसे साधक का दर्शन होना भी भाग्य हैं.

****

****

Types of Aghor sadhak

The greatness and supremacy and bhavmayta we all now know about the Aghor path. But what that happened to each and every things in this world that due to entrance of un authorized person, those who have not any self control.. so because of their so called activity this path blemished a lot .and Aghor tatv and Aghor path suffered lot…but this is very well known facts that those who are really treading on this path … he is the person of his family ..his forefather became joyful… on seeing this , that he is on the way of this great path.

The Aghor shabd now can be used as aughad . what that means we normally take .. that is not hidden from you or society par one more a highly prestigious and garimamay form also be here and that is known as abdhut ,, as all the three words carries the same meaning but we said abdhut …. One very strange but comfortable feeling arises.

And this is the basically a mental state , when any has the higher mental status a nd that became so high that he is considering himself a divine child of mother divine and also feels that his power are actually Sadgurudev pradatt, than he not doing as he likes but always guided by his inner tatv, and not only feels divinity but sees too. So now when everywhere the same divinity than what is difference between eatable or not eatable….. but can this be so easy that you have taken a Diksha and become a true Aghori in a minit……???

No it is not like that you have to put your life in hardest test only than you can be blessed with a real Aghori other wise any one take the outward appearance .. but that which highest stage is so early … this path is like to walk on sword on bare foot and we all knew that obstruction and difficulties of this world.

Maha nirvana tantra , classified the Aghor sadhak , ye s its true for a common sadhak this is not much to importance for them all are same. But still tantra said that

- **Bramhavbhut**
- **Shivavdhut**
- **Veeravdhut**
- **Kulavdhut**

And if any sadhak after taking Diksha from Sadgurudev crosses thses level one by one by so a state he reached when Sadgurudev himself does abhishek of that sadhak and seeing his complete surrender , true shishyta blessed him with kulavdhut . and even have a darshan or seeing such a sadhak is a great luck.

Saral but effective aghor prayog

आप के लिए उपयोगी कुछ विधान ......

1.**किसी भी व्यक्ति को आकर्षित करने के लिए अघोर आकर्षण मंत्र** : किसी व्यापार में या जीवन के किसी भी क्षेत्र में जब आप किसी से मिलना चाहते हैं और वह आपको समय नहीं दे रहा हो तब आप इस मन्त्र का प्रयोग करे , सरल प्रयोग हैं कोई सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं हैं

मंत्र ::: **ॐ नमो काल संहाराय ह्रीं हूँ फट "अमुक" आकर्षण स्वाहा ||**

इस मंत्र का रोज़ १०८ बार जप करे ..... दिन संख्या निर्धारित नहीं हैं . अमुक की जगह आप व्यक्ति का नाम ले ..निश्चय ही वह व्यक्ति आपसे मिलने आएगा ही .

****

2.**किसी भी प्रकार के ज्वर को दूर करने में अघोर ज्वर नाशक मंत्र** : शरीर में ज्वर प्रकोप होने के कई कारण हो सकते हैं पर वह कारण समझ में ही नहीं आ रहा हैं तो पूर्ण विस्वास के साथ आप इस प्रयोग को करें . निश्चय ही आपको लाभ मिलेगा .

मंत्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो ज्योति पतंगाय नमो नम : सिद्ध रूद्र आज्ञा पयती स्वाहा ||

इस स्वयं सिद्ध मंत्र को सिद्ध करें की जरुरत नहीं हैं बल्कि इसे सात बार पढ़ कर सात बार रोगी के शारीर में मारे

****

3.**अघोर बिष निवारक प्रयोग** :: जरुरी नहीं की सर्प या नाग काटे तो विष का प्रभाव शरीर पर दिखे बल्कि आस पास सैकड़ो प्रकार के ऐसे विषैले जीव जंतु हैं तो हमें काट सकते हैं तो उनके विष यदि असर करक दिख रहा हो तो परिस्थिति के अनु सार समस्या गंभीर दिख रही हैं तो पहले मेडिकल हेल्प देखे और और ऐसा नही दिख हैं तो आप इस प्रयोग का उपयोग करके देखें .यह भी एक स्वयं सिद्ध मंत्र हैं इसको भी सात बार पढ़ कर जहाँ पर विषैले जीव ने कटा हैं वहां पर हाथ फेर दे विष उतरने लगेगा .

मंत्र :

जे संदेह लेह आवे ,तेहि पानी परोयी पियाई देव ,कायो पाय सर मानिक रामुप मोड़ो , मरी जासी अन बाधनो पानी पीवै बाँधी उतरी जासि |

****

4.**अघोर नज़र उतरने का प्रयोग** : अनेक छोटे बच्चो को सुन्दर स्त्री पुरुषो को इस समस्या से दो चार होना पड़ता हैं यह मुख्यता एक प्रकार से ऋ णा त्मक उर्जा का नेत्रों के द्वारा प्रभाव हैं पर इसका असर होता हैं और जब समस्या समझ में नहीं आ रही होती हैं तब घर के बड़े बुजुर्गो द्वारा इस और कहने को कहा जाता हैं , एक ऐसा सरल मंत्र जो को स्वयं सिद्ध हैं आप उपयोग कर सकते हैं बस मार्केट में कहीं से मोर पंख अगर कहीं मिले तो ले आये और जिस पर नज़र लगी हैं उसो इस से झाड़ा दे दे मतलब झाड दे तो वह समस्या से मुक्त हो जाता हैं और मनो बांछित लाभ प्राप्त कर सकते हैं .

मन्त्र :

ॐ ह्रीं नज़र उतर जा , कुरु कुरु स्वाहा ||

****

5.**बबासीर दूर का अघोर प्रयोग** : यह रोग बहुत ही दुःखदाई हैं , पीड़ित न तो किसी के सामने खुल कर कुछ कह सकता हैं न ही इस रोग के कारण उसका प्रभाव सहन कर पाता हैं.बाजार से कोई भी लाल रंग का धागा ले ले , उसमे तीन बार गाँठ लगाये . फिर २१ बार इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके उस लाल धागे को रोगी के दाहिने पैर के अगुन्ठे से बाँध दे .इस रोग ठीक होने लगेगा .

मंत्र : **उमति उमति चल स्वाहा** ||

****

6.**शत्रु परास्त का अघोर प्रयोग** :शत्रु तो जीवन में होते ही हैं जिनके लिए कभी तो कोई कारण होता हैं कई बार तो अकारण भी . पर इन से निजात कैसे पाई जाए क्योंकि एक बहुत बड़ा हिस्सा इनसे निपटने में लग जाता हैं ,

एक मिटटी का कटोरा ले ले औसमे आक का दूध भर ले और केबल मात्र १०८ बार इस मंत्र का जप करके कसी भी चौराहे पर रख दे ..शत्रु स्वयम ही परेशानी ग्रस्त हो जायेंगे .

मंत्र : **ॐ वैरी नाशक दोस दुरय हुं फट स्वाहा** ||

****

8.**शत्रु के घर में लडाई का अघोर प्रयोग** : वैसे किसी के लिए भी इस प्रकार का प्रयोग नहीं करना चाहिए , क्योंकि अकारण ऐसे प्रयोगों का इस्तेमाल या प्रयोग बाद में बहुत परेशानी करक होता हैं पर जब सामने वाले ने ऐसी परिस्थितिया का निर्माण कर दिया हो तो तब करें... कौवे का पंख ले कर शत्रु के घर में या जहाँ उसके घर की सीमा हो . गडा दे , यह स्वयं सिद्ध मंत्र हैं अतः १०८ बार निम्न मन्त्र का जप करे वहाँ पर एक बार फूंक दे

मंत्र :: **ॐ नमो महा अमृत पंखी कुरु कुरु स्वाहा** ||

9.पेट की समस्याओ के लिए अघोर प्रयोग कौन हैं जो आज पेट की समस्या से न पीड़ित हो ...... हाँ कम या ज्यादा वह एक अलग बात हैं . इस स्वयम सिद्ध मन्त्र का मात्र रोज़ ११ बार उच्चारण करे , पेट की समस्याए से आपको लाभ मिलेगा .

मंत्र ::: ॐ यो यो हनुमंत फल धगीत धग धगीत आयु राश : वारूदाह ,

****

१० शरीर की कांति बढ़ाने का प्रयोग. जब चहरे में कांति युक्तता आ जाए तो क्या कहना हैं पर साथ ही साथ सारे शरीर में ऐसा हो जाये तब तो तो बात ही क्या ..यह भी एक स्वयं सिद्ध मंत्र हैं इसके प्रयोग में भी कोई ताम झाम नहीं हैं . बस जिस जल से आपको स्नान करना हैं उसको इस मन्त्र से १०८ बार बार पढ़ते हुए अभि आमंत्रित कर दे और उस जन से स्नान कर ले ,, आप अपने शरीर में होने वाले परिवर्तन से स्वयं ही परिवहित होने लगेंगे ...

मंत्र ::

ॐ ह्रीं कलीं श्रीं कंकाली काली मधुमत्ता मातंगी मद विव्हली मन मोहिनी मकर धवजे स्वाहा ||

****

११.आधा शीशी का मन्त्र: सर दर्द वह भी इस प्रकार का अपने आप में ही बहुत दुखदायी हैं , और इ स पीड़ा को तो भुक्त भोगी ही जान सकता हैं . और जब कोईभी इलाज काम याब नहीं दिख रहा हो तो इस प्रयोग की बिस्वास के साथ करें इस मन्त्र को किसी भी ग्रहण काल या शुभ समय में सिद्ध कर ले साथ ही साथ भगवान् हनुमान जी की कोई भी मूर्ति का श्रंगार करे और उन्हें चोला अर्पित करे फिर इस मन्त्र से अभि मंत्रित विभूति ले ले , सूर्योदय में यह क्रिया जो आगे बताई जा रही हैं वह करना हैं और रोगी का मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए ...रोगी को सामने बैठाए उसके माथे पर बाए से दाए सात बार यह मंत्र पढ़ते हुए एक रेखा खींचे और यह रेखा खीचने की प्रक्रिया सात बार करना हैं

मंत्र ::

एक चिरैया पहाड़ पर कारों कंकर खाय हांक पड़े हनुमान की आंदाशिशी जाए ||

१२. **शरीर रक्षा मंत्र** यात्रा काल में स्वाभाविक हैं की कुछ अज्ञता का भय तो सदैव मन में रहता ही हैं , इसको दूर करने में यह मंत्र बहुत ही असर कारक हैं , बस इसको कोई सिद्ध करने की जरुरत नहीं हैं बस यात्रा शुरू करते समय तीन बार इस मंत्र का उच्चारण कर ले

मन्त्र : **ॐ नमो कामरू कामख्या देवी कहाँ जाने को हुआ मेरा मंत्र ? आत्म रक्षा बंदी होऊ सावधान सर हाथ दहन्त हो बंधन गर्दन पेट पीठ बंधन और बंधन चरण अष्टांग बांधूं मनसा के वरदान करा सके तो उमा के बान | कामख्या वह होऊं अमर आदेश | हाडी दासी चंडी की दुहाई ||**

सर्प संकट या मृत्यु भय नहीं रहेगा

****
****

Saral but effective Aghor prayog

1. **To attract other .. Aakarshan mantra** : if you want to meet some one and if he is not giving you the time and specially in the case of any business and others things than you can use this mantra , very simple and no need to get siddhita first.

Mantra: **om namo kaal sanhaaray hreem hun fat “amuk” aakarshan swaha**||

Just chant every day 108 times this mantra …. Days are not fixed , you have to replace the word amuk to the person name who you want to attract.

****

2. **To cure any fever** : there may be many reason to have fever and if not able to understand properly than do this prayog with full faith , surely you will get result.

Mantra : **om namo bhagvate rudraay namah krodheswaraay namo jyoti patangaay namo namh siddh rudra aagyapayti swaha**|

This is also swyam siddh mantra means , no need to do any thing else, just you can use. And you have recite seven times and sprinkle water over the patient body .

****

3.**Aghor vish nivarak prayog** : its not always necessary that when only any poisonous snake or other thing bites you and the result of that can be easily seen on your body, but any poisonous insects also create problem for you and if you are seeing that their bite showing serious harmful result than take medical ad first but where this is not the case than you can use this mantra and this also a swyam siddh mantra , just chant seven times this mantra and simply rub your palm on the place where that insect bite, this helps to cure.

Mantra**: je sandeh leh aawe ,tehi paani proyi dev ,kayo pay sar manic raamup modo .mari jaasi an baandhno pani pivai bandhi utri jaasi**.||

****

4. **Cure for nazar.** Many beautiful ladies and small children used to face this problem many times ,this is the result of negative energy that is emitting from eyes, and when the reason Is not to understand properly than often older one in our home advised us to do something for this since this may be the reason of nazar. This is also a swayam siddh mantra that you can use take “more pankh” means peacock feather from market and from that do jahada from this mantra and you will get the result.

Mantra: **om hreem nazar utar ja , kuru kuru swaha** ||

****

5. **To get cure from piles** : this is very troublesome dieses, the patient neither able to say properly in front of others nor able to bears the pain , take red string from any market and apply three knot in that and chant 21 times this mantra over that string, and after that tie this string to the right side feet’s thumb. And he will start getting relief .

Mantra : **om umti umti chal swaha** ||

****

6.**To get victory over enemy** : enemy are the part of any person life some time with reason and sometimes without that . but how to get rid of that since most of our valuable times unnecessarily utilized in facing that .

Take any earthen lamp and fill it with milk of aak tree, and chant only 108 times this mantra and place this earthen lamp on nay square. You enemy will start getting trouble himself.

Mantra**: om vairi nashak dos duray hun fat swaha** ||

7.**To start creating problem in enemy home::** one must not do this type of prayog to any body, since if done without any concrete reason this will create problem in sadhak life too. But if the circumstance created by that fellow is too bad than you can use this prayog,

Take any crows feather and just dig a small hole and place in that (within the periphery of your enemy house) , and chant 108 time s this mantra and blow air once from your mouth .

Mantra : **on namo maha amrit pamkhi kuru kuru swaha** ||

****

9 **to get cure from stomach problem** :now a days every body is suffering from some more or less problem related to stomach , you can chant 11 times this mantra everyday , you will get relief.

Mantra :: **om yo yo hanumant fal dhageet dhag dhageet aayu raashy vaarudaah**

****

10. to increase glow in your body : when your face is glowing one than what a beauty it has …. and if it Is possible to have glowing all your body skin than ..imagine . very simple prayog no need to do any thing extra, only you have to take bath from that water after chanting 108 times this mantra. You can feel the change .

Mantra :: **om hreem kleem shreem kankali kali madhumatta matangi mad vibhli man mohini maker dwaje swaha** ||

****

11.**To get cure from migraine**:: this type of headache is very hard to bear and only the patient know , how much suffering he is undergoing, when no other medical treatment bring you the satisfactory result than you can use this prayog with faith at first do get siddhitta of this mantra by chanting in any grahaun period(means minimum 1 1 mala) and do full poojan of Bhagvaan hanuman ji and offer chola to him. And you have to do this prayog application in the morning hours and that too patient facing east direction. ask patient to sit in front of you and make line from vibhuti from left to right on hi s fore head and do this process of line making seven times .

Mantra: **ek chiraiya pahad par kaaro kankar khaay hank pde hanuman ki aandshishi jaaye** ||

****

12.**to protect your body** : in travelling time it s vary natural that there may be some fear regarding unforeseen and this is good mantra to remove that , also a swayam siddh mantra so no need to get sidhitta first. Only you have to chant thrice this mantra.

Mantra: **om namo kaamru kamakhya devi ,kahan jaane ko hua mera mantra?? Aatm raksha bandi houn saaavdhan sir haath dahant ho bandhan garden pet peeth bandahan aur bandhan charan ashtaang bandhu mansa ke vardaan kara sake to uma ke baan |kamakhya wah houn maar aadesh | hasi dasi chandi ki duhayi** ||

You will be free from snake bit or life threat.

****

TanTra, avdhut and avdhut gita

इस रहस्य से आपको परिचित कराने के लिए ही तो

मंत्र और तंत्र आखिर हैं क्या??...अनेको परिभाषाये हमारे सामने हैं निश्चय ही वह सभी अपने अपने स्थान पर सही हैं क्योंकि एक ही वस्तु को देखने वाले चाहे कई हो पर उसके बारे में विचार हर की अलग अलग होगी ही और सभी अपने अपने स्थान पर अपनी अपनी अनुभूतियो और दृष्टी से सही भी होंगे .. क्योंकि अपनी अपनी अनुभूतिया अपने अपने आज तक के ज्ञान पर ही तो बताई जा सकती हैं .....

मंत्र का सीधा सादा अर्थ तो यह हैं मन + त्रा शाब्दिक अर्थ तो यह हुआ की जो मनन करने से त्राण दे, और तंत्र का साधारण अर्थ तो फैलाब हैं ..... अर्थ किन्ही अर्थोंमे आप इसे मतलब मंत्र को टेस्ट करने की प्रयोग शाला भी कह सकते हैं, तंत्र का मतलब एक सु विचरित व्यवस्था हैं. मतलब सिस्टम ... वेद और तंत्र दो प्रमुख धारा हैं सनातन धर्म की ..वेद को निगम मार्ग कहते हैं ...और तंत्र कहलाता हैं आगम मार्ग. .

मुख्य प्रकार से ४ भागों में हमारी संस्कृत की चीजो को बाटा जा सकता हैं ये हैं श्रुति , स्मृति , पुराण और तंत्र कुलार णव तंत्र कहता हैं की सत योग में श्रुति की प्रधानता रही हैं, त्रेता युग में स्मृति की द्वापर में पुराण की प्रधानता रही हैं , और कलि युग में तंत्र की प्रधानता रहेगी. इस का यही मतलब हुआ की तंत्र मार्ग ही सर्वोच्च फल कारी हैं इस कल युग में .

पर शास्त्र कहते हैं की "**तन्यते विस्तार्यते ज्ञानं अनेन इति तन्त्रं** " अर्थात ज्ञान का विस्तार हो और जो उसकी रक्षा करे वह तंत्र के नाम से अभिहित हो ..

और एक सरल परिभाषा यह हैं की **तंत्र शब्द तन धातु से बना हैं जिसका अर्थ हैं विस्तार** ...

और जिन्होंने तंत्र की साधनाए की ही नहीं हैं बल्कि जी हैं या ऐसे कहे की अब वह तंत्र मय हो गए हैं जिनके लिए अब तंत्र का अर्थ कुछ मंत्र जप या क्रियाये नहीं हैं ऐसे ही सही अर्थो में तंत्र को अपने जीवन दर्शन से दिखलाने वाले व्यक्ति कहीं न कहीं अबधुत शब्द की परिभाषा में आते ही हैं ,, क्योंकी यदि तंत्र का अर्थ विस्तार हैं तो यह विस्तार कितना होता जायेगा .... कोई नहीं जानता और एक दिन "बूंद समानी समुद में " चरितार्थ हो जायेगा .

और जब क्रिया करने वाला और क्रिया दोनों एक हो जाये तब ही तंत्र का सत्यम शिवम् सुदरम स्वरुप हमारे सामने आता हैं .. और इसकी जीती जागती मिसाल होते हैं इस अवधूत जीवन दर्शन को साक्षात जी कर दिखने वाले अद्भुतता रखने वाले अति सामान्य पर..... परम योगी .. जो कभी इस नाम से तो कभी उस नाम से आये हैं पर हमारे जीवन पथ को आलोकित कर जाते हैं अपने जीवन रूपी तेल हमारे बुझते हुए टिमटिमाते हुए दिए में ..डालते जाते हैं ...

और हम कभी कभी सोच ही नहीं पाते की क्या ऐसा हो सकता हैं ....की क्या कोई ऐसा भी हो सकता

अवधूत शब्द की गरिमा से कौन नहीं परिचित हैं पर बिरले ही इस शब्द का सही अर्थ जानते हैं समझते हैं , पर यह शब्द अपने आप में सारा ब्रम्हांड समाये हुए हैं

और बहुत ही कम दिव्य व्यक्तित्व रहे हैं जो इससे सम्मानित हुए हैं तब निश्चित ही यह अपने आप में दिव्यता लिए होगा पहले इस शब्द का विन्यास ही समझे

पर क्या यह शब्द इतना सरल हैं की किसी के लिए भी उपयोगित हो जाये , अबधुता चार्य भगवान् दत्तात्रेय से कौन नहीं परिचित होगा जो आज भी मानव देह में हैं अनेको लोगों को आज भी सदेह दर्शन देते हैं जिनका निवास स्थान गिरनार माना जाता हैं . आखिर इस शब्द का इतना अर्थ हैं ही क्यों .... तो

- **अ का अर्थ हैं आशा से परे , आदि से निर्मल और आनंद में डूबा हुआ.**
- **व् का अर्थ हैं वासना से रहित , वर्तमान में रहने वाला ,**
- **धू से अर्थ हैं धुल और भस्म से शोभित शरीर वाला , निर्मल मन वाला ...**
- **त का अर्थ हैं तत्व की चिंता करने वाला . मतलब वह जो भी करेगा उसमे केबल इश्वर की प्रेरणा होती हैं .**

भगवान् दत्तात्रेय का समय तो काला तीत ही माना गया हैं , जिन्होंने भगवान् परुशुराम को श्री विद्या की दीक्षा दी हैं और भगवान् परुशुराम का समय तो भगवान् राम से भी पहले का हैं , इस परम योगी के ज्ञान ऐश्वर्य की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं, इन्होने कहीं नागार्जुन को रस विद्या सिखाई तो ..इस तरह यह श्रंखला कितनी लम्बी हैं कोई नहीं बता सकता हैं.

परम योगी भगवान् दत्तात्रेय जो एक अव्धुताचार्य भी हैं के द्वारा दो महत्वपूर्ण ग्रथ भी लिखे गए हैं एक का नाम "**अबधुत गीता**" हैं और दुसरे का "**जीवन मुक्त गीता** ".दोनों ही अद्वितीय ग्रन्थ हैं . जैसा की नाम ही स्पस्ट करता हैं की यह अबधुत मार्ग की विशेषताओ बारे में बताता हैं अवधूत गीता तो इतना उच्च कोटि का ग्रन्थ हैं की उसका प्रभाव तो अनेको उच्च कोटि के योगियों के ग्रंथो पर भी स्पस्ट देख गया हैं.

इस मार्ग में अवधूत गीता का एक अलग ही अर्थ हैं उसमे प्रकृति और पुरुष को एक ही माना गया हैं उन्हें अलग अलग नहीं माना गया हैं. अबधूत का मन पवित्र या अपवित्र नहीं बल्कि सभी में दिव्यता देखता हैं उसके मन के विचार शांत हो चुके होते हैं वह हर क्षण ब्रम्हानंद में डूबा रहता हैं पर यह अवस्था आसान तो नहीं .... क्योंकि जो की अहंकार से परे हो ..हर समय ब्रह्मय हो ,, अपने जीवन हो तुच्छता से उठा कर जिसने "सारा ब्रम्हांड ही अपना घर हैं साकार कर दिखाया हो .. और तभी तो साधक इस अवस्था में आ कर कह देता हैं की गगन मंडल घर मेरो ....

अवधूत गीता में अवधूता चार्य भगवान् दत्तात्रेय कहते हैं की . इस विश्व में सबसे भयानक और डरावनी चीज जो हैं उसे म्रत्यु कहते हैं हर मनुष्य हर प्राणी इससे बचना चाहता हैं मुक्त होना चाहता हैं पर यह कैसे संभव हैं... कोई उपाय हैं तो भगवान् स्वयं ही कहते हैं यह संभव हैं केबल अद्वेत भावना का विकास करके .. और अवधूत पथ या अघोर पथ इसी सत्य को आत्मसात करने का मार्ग दिखाता हैं और बताता हैं की कैसे यह सत्य को कैसे जिया जा सकता हैं ..

अवधूत गीता हमें हमारे समाज के बने बनाये सड़े गले नियम नहीं मानने को कहती वह कहती हैं की आपका कर्म और आपके द्वारा किये जा रहे कार्य और आपके संस्कार आपकी जाति तय करेंगे न की जन्म से बनी हुयी जाति को ही सर्वोपरि माना जाय क्योंकि यह मार्ग तो जीवन की अनेको विद्रूपता को समाप्त कर स्वयं ब्रह्मय होना हैं और जो इस पथ पर एक उच्चता पा चुके हो जो साक्षात् ब्रह्मय होगये हो वहीँ तो ब्राह्मण हैं ..

अन्यथा यह तो सभी जानते हैं की **जन्मनो जायते शुद्र संस्कारो द्विज उच्च्यते** कि जन्म से तो सभी शुद्र हैं क्योंकि एक शिशु को अपनी शुद्धता या अशुद्धता का कोई पता नहीं होता

सदगुरुदेव सारी दीक्षाए आसानी से दे देते हैं पर जब कोई उनसे अबधूत दीक्षा की प्रार्थना करता तो वह भी सोच में पड़ जाते इस दीक्षा के लाभ की कोई सीमा ही नहीं हैं और सारा भार सदगुरुदेव के ऊपर आ जाता हैं की वे स्वयं साधक को उस निर्मलता तक ले आये अद्भुत विधान हैं

और वे साधक भी अद्भुत रहे हैं जिन्होंने सदगुरुदेव जी के कर कमलो से यह दीक्षा प्राप्त की हैं , सदगुरुदेव जी द्वारा लिखित मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं में इस पर एक अद्भुत लेख रहा हैं की "**साधो यही घडी यही बेला**" जिसमे उन्होंने इस अबधूत पद की प्रमुखता भाव मयता को विस्तार से समझाया हैं . जो भी इस शब्द से समानित हुआ वही हैं वास्तव में अपने जीवन को एक राजा की तरह जीने वाला ,जीवन का अर्थ समझने वाला .... और तभी ऐसे अवधूत पद पर विराजमान दिव्य व्यक्ति हम सबके लिए एक मार्ग दिखाते हैं की हम भी जीवन को तुच्छता से उठाकर इस मार्ग पर चले ....

****

****

Tantra , abdhut aur abdhut gita

What is mantra and tantra ??? there are many definition available to us and naturally all are true on their respected place since even a single object , if seen by many person but their opinion about that are very much different to each other and that are true too since each one has raise with a different environment and circumstances. Since we can express his anubhav/experience on the bases of our knowledge acquired .

the simple meaning of mantra is man + tra that very roughly means that which frees you by manan means continuous positive thinking, and tantra stands for expansion or you can say this I s the lab , to test mantra .tantra a slo means a w ell defined system.. there are two main ways in our sanatan dhram one is ved and other is tantra . ved can be called nigam and tantra can be called aagam ,

and all our literature can be divided in 4 parts shruti , smriti , puraan and tantra , as kullarnav tantra states that in saty yug shriti has the most effective things so in treata the smriti and in dwaparyug puraan has a role to play but in kali yug only tantra is the most effective things.

Shastra's says that about tantra - knowledge expands and that who protect that is known as tantra .

One more easy definition is possible this tantra word is originated from tan dhatu that means expansion…

Those who not only did the tantra sadhanaye but also live the tantra and can be said became tantramy, for them now tantra is not a bundle of some action or mantra jap and those person who shows us through their life more or less can be called abdhut since if tantra means expansion than for much…. And a stage is reached when this became true " **bund samani samud me** " means a small drop of water completely mix in sea and became sea.

When the action and the person who are doing action became one only than the tantra original form that is called satyam shivam sundaram comes . and this has been proved by such a giant to whom we called abdhut. Though they live very simply but having a real stage of param yogi. Those who came in front us with different different name but the provide light to our path and not only this but they continuously ignite our life using their life as a oil for us. So that our lamp continuously lighted.

And w e never thought that ,, this is possible or this can be possible,

Who is not able to the respect of this word abdhut but very few really knew the meaning of this w ord. this world contains in it self the whole universe and very few divine one are named for that /suitable for this w ord. than this must be something different so lets try to understand what this word means.

Is this word is so easy that any one can use for this to any one. Who is not aware of avdhutaachary Bhagvaan Dattatrey who is still in his mortal form and still give the darshan to real truth seeker , still believed reside the mountain girnaar. So why this word are so important.

- A means one who is complete detached from hope , and fully absorbed in ever joy condition.
- B stand s for one who is totally free from all senses attraction and live in present
- Dhu stands for whose body covered with dust and chita ash , and with pure heart
- T stands for one who continuously absorbs in the tatva, means whatever he do , only through god's prerna .

Bhagvaan Dattatrey is age less yogi no body knew when were he born , this can be easily understood from a fact that he had given shri vidya Diksha to Bhagvaan parushuraam who is much older to Bhagvaan ram , so no body can understand the spiritual height of this great giant, he has also consider a great abdhutaacharaay and ha had written two most important granth , first is "**Abdhut Gita** " and second is " **jivan mukt Gita** ", both granth are the unique one, as the name states that abdhut gita dscribes the important philosophy of abdhut marg, and this grantha has proved to be a very effective the effect of that can be easily seen in other mahayogi literary work.

In this marg abdhut gita stands a very special place in that prakriti and purush are consider one they are not consider a separate identity, a heart or mind of a avdhut always see everything with the same divine out look. He is ever absorbed in bramhaanand but this stage is not so easy…. Since who totally dropped his ego, always immersed in bramh , raise his life from no where to a stage that is known as " whole universe is my home" onlythan he can says gagan mandal ghaer mero.

In the avdhut gita Bhagvaan dattatrey said that one of the most furious things is in this world is death, every human being and living being try to protect himself from that but that is possible is there any way… is possible , he replied yes that can be possible only through raise the feeling of adwit. and this avdhut or Aghor marg preaches the same ho w to do that. And provide a w ay to understand how this saty can be live.

Avdhut gita does not advocate so called the outdated rules made by society but it advocates that your work your mental thought your Sanskar will decide that which caste you belongs. That never depends upon the caste get by birth alone. Since this marg set a soide various vidrupta of the life one side and try to achieve a level where a person become brammay and that person can be called a Brahmin.

Otherwise this we all know that "janmnoi jayte shudra sanskara dwij uchchyte " means from birth every one belongs to shudra caste and after the Sanskar from a guru one can became a dwij means a new birth or Brahmin. since a small child does not know what is good or what is dirty.

Sadgurudev ji used to give every Diksha with ease without any hesitation but when some one ask for this , than he also had to think,, since this is not a easy one,, those who are being initiated in this diksha a whose life total depended upon Sadgurudev ji, and now Sadgurudev has to purify him . so this is not a easy task.

And sadhak are also fortunate who has initiated by Sadgurudev ji on this path and Diksha , one of the most valuable articles on this subject from Sadgurudev is appeared with a titlke " **sadho yahi ghadi yahi bela"** in that he describe in length regarding the bhav paksha /aspect of this marg. Whose who has been blessed by this word is a person who live like a king and able to understand the real meaning of life. and the person who are fully blessed by this word shows us a way so that we can also raise our life from dust to ….

Sadhanatmak time and dayS

आने वाले कुछ साधनात्मक समय और दिवस जो आपकेलिये सफलता के द्वार खोलने में सहायक हैं ही।

पूज्य सदगुरुदेव ने मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं के एक लेख में लिखा हैं की शुभ महूर्त का अपन एक विशिस्ट अर्थ हैं और इस निर्धारित समय साधना करने पर, अन्य किसी दिवस पर की अपेक्षा पूरी प्रकृति उस दिवस या दिन की विशेषता के आधार पर आपको सहयोग करती हैं ही ,, और कम प्रयास में ही आपको साधना में सफलता मिल जाती हैं .

पर उन्होंने यह भी व्यवस्था दी हैं कि जिस समय भी आपके मन में किसी भी साधना को प्रारंभ करने का भाव और मन में उत्साह आ जाये वही क्षण सर्वश्रेष्ठ हैं .

****

****

Poojy Sadgurudev wrote in mantra tantra yantra vigyan magazine that every shubh mahurt / auspicious time has its own beneficial effect and if thses period are to be utilized for sadhana than with the least effort we make , can gain much positive result. since nature help you to achieve success according to the day's nature .

And he also stated that /instructed too, whenever you have strong desire to start any sadhana , than that moment is itself a very positive period. And one can start his sadhana on that ,moment .

For all of us, The most divine day in any month are

- आप किसी भी साधना को हर महीने आने वाले , इस हम सब के लिए इस पवित्र दिवस पर कर सकते हैं , क्योंकि इस दिन का अंक हमारे प्राणाधार सद्गुरुदेव जी के जन्म दिवस से मिलता हैं .

  (you can start any sadhana on this day that comes every month since this day number matches with our Sadgurudev birth day .)

  मासिक सदगुरुदेव जन्म दिवस- 21 Feb ,21 March

कुम्भ संक्रांति (kumbh sankranti)	13 th feb
मीन संक्रांति (Meen sankaranti)	14 th march
माघी पूर्णिमा (maghi purnima)	7 feb
भाई दूज (Bhai duj)	10 th march
महाशिवरात्रि (Mahashivratri)	20 th feb
अष्टमी (the eight day of moon)	Feb -15th March-1st ,15th ,31st (दुर्गा अष्टमी)
नवमी (The Ninth day of moon)	Feb - 16th March-2nd,16th ,
एकादशी (the 1 1 th day of moon)	Feb- 17th March-4th ,18 th (पाप मोचनी एकादशी)
पुष्य नक्षत्र (pushu star day)	• 6 feb- 1.18 PM to 7 feb 1:36 PM • Ravi pushp 4 th march 8.55 pm night to 5th march 9.18 pm
पूर्णिमा (full moon day)-	7 feb 7 th march (holika dahan.)
होलिका अष्टक (Holika ashtak)	1 st march to 8 th march
होलिका दहन(Holika dahan)	7th march
अमावस्या (dark moon day)-	21 feb 22 march
श्री पंचमी Shri panchmi	27 th march
चैत्र नवरात्री प्रारम्भ Chitr Navratri start	23 march –baithhki and gudi padwa

12 feb	अमृत सिद्धि योग Amrit siddhi yog	सूर्योदय से 9.11 am तक Sunrise to 9.11 am
15 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	सूर्योदय से 2..45 am तक Sunrise to 2,45 AM night
15 feb	अमृत सिद्धि योग Amrit siddhi yog	सूर्योदय से 2.45 am रात्रि तक Sunrise to 2.45 am night
19 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	सूर्योदय से 11.o9pm रात्रि तक Sunrise to 11.o9 pM night
20 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	सूर्योदय से 11.15pm रात्रि तक Sunrise to 11.15 pM night
24 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	4.23 AM रात्रि से रात के अंत तक 4.23 AM night to end of Night
24 Feb	अमृत सिद्धि योग Amrit siddhi yog	4.23 AM रात्रि से रात के अंत तक 4.23 AM night to end of Night
28 Feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	11.56 Am से २९ feb २.३३ तक 11.56 am to 29 th eb 2.33pm

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक - शक्ति सायुज्य अघोर साधना महाविशेषांक –PART 3 & 4

होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be Shakti SAayujy Aghor sadhana Maha Visheshank PART 3 AND 4 for details of that plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com , yahoo group Nikhil alchemy

&

Facebook nikhil-alchemy group

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI SADGURUDEV

तंत्र कौमुदी
NPRU
भैरव सायुज्ज्य महाविद्या महाविशेषांक
Tenth Issue – APRIL 2012
Tantra kaumudi

Name of the Articles

SADGURUDEV - PRASANG

भैरव : पूर्ण रूपों हि

मनाली से ४० किलोमीटर दूर अव्यय पहाड़ प्रसिद्ध हैं, एक बार हमसभी उसी की चोटी पर बैठे हुए थे ,स्वामीजी दैनिक पूजा संपन्न कर बाहर निकले ही थे. हम सबको देख कर उन्होंने आशीर्वचन कहा . तभी उनकी दृष्टी एक कापालिक पर पड़ी जो हम सब शिष्यों के पीछे एक कोने में बैठा था . ललाट पर सिंदूर का एक बड़ा सा तिलक , बलिष्ठ शरीर , ताम्बे जैसा रंग , लंबी और रक्तिम आखें और सुद्रढ़ स्कंध .

पूंछा स्वामी जी ने " यह कौन हैं "? फिर उसकी तरफ मुखा तिब होकर बोले कापालिक हो ?

उसने खड़े होकर हाथ जोड़े और बोला " कापालिक ही नही साक्षात् भैरव "

स्वामीजी हस दिए ,बोले ,"भैरव तो कुछ ओर होता हैं . तू तो भीख मांगने वाला और नरमुंड खाने वाला कापालिक ही हो सकता हैं ."

इतना सुनते ही उसकी त्योरिया चढ गयी . यह पहला मौका होगा जब उसके सामने किसी ने इतनी कठोर बात कही . वह उठ खड़ा हुआ और उसकी आखें से रक्त की बुँदे टप टप टपक पड़ी .

स्वामीजी ने कहा उत्तेजित होने की जरुरत नही हैं तू जो कुछ कर रहा हैं ,मै समझ रहा हूँ, और मैंने वर्षों पूर्व यह सब कुछ करके छोड़ दिया हैं ,अपने आप में दर्प करना ठीक नही . कापालिक को तो सीखना चाहिए और अपने जीवन में भगवान रूद्र के अवतार भैरव को ह्रदयस्थ करना चाहिए .

हमने अनुभव किया कापालिक कुछ वामाचारी क्रियाए संपन्न कर रहा हैं .इसलिए अपने नेत्रो से रक्त की बुँदे प्रवाहित कर रहा हैं .पर इससे स्वामीजी बिलकुल विचलित नही हुए लगभग १० मिनिट बीत गए उस पहाड़ी पर बिलकुल निस्तब्ध थी सुइ भी गिरती तो आवाज सुनायी दे सकती थी. तभी स्वामी जी ने मौन भंग किया बोले कापालिक ऐसी छोटी और मामूली मारण क्रियाए मेरे ऊपर लागु नही होंगी बेकार अपना समय बर्वाद कर रहा हैं .तू कहे तो तेरे आराध्य को यही पर प्रकट कर सकता हूँ.

कापालिक ने एक क्षण के लिए स्वामीजी की ओर देखा और अनुभव किया कि उसकि मारण क्रियाओं का कोई भी असर स्वामीजी पर नही हो रहा हैं. यही नही ,अपितु उसके सामने खड़ा व्यक्ति तो यह कह रहा हैं कि यदि कहो तो आराध्य काल भैरव को प्रकट किया जाए .

कापालिक ने कहा आप मेरे इष्ट काल भैरव के दर्शन करा देंगे ?

अवश्य यदि तू चाहेगा तो अवश्य दर्शन होंगे

कापालिक घुटनों के बल झुक गया जैसे उसने पूज्य गुरुदेव कि अभ्यर्थना की हो , तभी स्वामी जी के मुख से भैरव ध्यान स्वत उच्चरित हो गया :

"फुं फुं फुंल्ल्लर शब्दों वसति फणी पतिर्जाय्ते यस्य कंठे

डि डि डिन्नति डिनं कलयति डमरू यस्य पाणौ प्रकाम्पः ||

तक तक तन्दाती तन्दान घिगिति घिगिति गिर्गिय्ते व्याम्वाग्मी ,

कल्पान्ते तांडी व् सकलभय हरो भैरवो नः स पायत || "

और् तभी एक भीम काय पुंज पुरुषाकृति साकार हो गयी . ऐसा लग रहा था जैसे स्वयं ही काल ही पुरुष के रूप में साकार हो गया हो . सारे शरीर से तेजस्वी किरणे निकल रही थी एसा लग रहा था कि जैसे उस जंगल में उनचास पवन प्रवाहित हो रहे हो . पहाड स्वयं थरथराने लगा और प्रचंड वेग से आंधी बहने लगी ,हमारे देखते देखते उस पहाड से कई पेड़ जड़ से उखड कर गिरने लगे सूर्य का ताप जरुरत से जयादा बढ़ गया हम सब उस व्यक्ति के तेजस ताप से झुलसने लगे .

यह स्थिति लगभग एक या डेढ़ मिनिट रही होगी . परन्तु यह एक मिनिट ही अपने आप में एक वर्ष के समान लगा , हम सब काल भैरव को साक्षात् अपने सामने देख रहे थे इतना भयकर और तेजस्वी स्वरुप पहली बार ही हमारे सामने उपस्थित था . वास्तव में यह पुरुषाकृति भयंकर दिव्य और अद्वितीय थी .

कुछ ही क्षणों के बाद वह पुरुषाकृति शून्य में विलीन हो गयी पर्वत का थरथरा ना स्वतः ही रुक गया और वायु स्वतः धीरे धीरे बहने लगी ,वह कापालिक स्वामीजी के श्री चरण में साष्टांग गिर गया , फिर स्वामीजी का शिष्यत्व प्राप्त कर आगे चल यही कापालिक क्षेत्र में उच्चस्थ साधक बने .

-मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं से साभार सहित

****
****

Bhairav purn rupoh hi

Famous Avayay mountain situated 40 km from manali. once upon a time we were sitting at the peak of that mountain., swamij just came out after completing his daily poojan . on seeing all of us ,gave blessing. Than he saw a kaapalaik sitting at a corner behind all of us .having vermilion on his forehead, well built body, color like copper, and big and reddish eys, and strong shoulder.

Swamiji asked who is he ?? and than moved to his side and asked .are you a kapalik??

He stand up and with folded hand replied “ not only but a real form of bhairav “

Swamiji smiled and said “bhairav is something else , you seems to be a beggar and eater of human skull.”

On listening this his anger reaches its heights, this might be the first turn when some one told him such a word. And blood drop start coming out of his eyes .

Swamiji had said no need to show such a excitement ,what you are doing ,I am understanding that , and leave all that from so many years before, such a proud is not good for an kapalik. Kapalik must be a person who has to learn how to fully absorbed the true form of bhagvaan rudra..i.e. bhairav.”

श्री सिद्धिदायक गणपति प्रयोग

SHRI siddhi dayak ganpati PRAYOG

भगवान गणपति के सिद्धि दायक स्वरुप सम्बंधित एक सरल साधना

भगवान गणेश के वरदायक स्वरुप से भला कौन नही परिचित हैं . हर कार्य हर पूजन और यहाँ तक कि साधना में भी भगवान गणपति प्रथम पूज्य हैं ही . यही विघ्नों को टालने वाले भी हैं और विघ्न कर्ता भी हैं .

भगवान का स्वरूप अत्यंत प्रसन्नता दायक हैं इसलिए घर घर में इनका पूजन होते रहता हैं .साधक को न केबल साधना कार्य में बल्कि दिन प्रतिदिन में भी अनेको काम पड़ते रहते हैं और इन कामो का सही समय पर जो हम चाहते हैं वैसा परिणाम न आना ,अनेको समस्याये हमारे जीवनमे ला देता हैं .

यहाँ पर जो प्रयोग दिया जा रहा हैं उसकी प्रतिदिन कम से कम एक माला मंत्र जप जरुर करें .

और निश्चय ही गणपति भगवान के आशीर्वाद से आपको आपके समस्त शुभ कार्यों में सफलता कहीं ज्यादा मिलने लगेगी .

मंत्र :

ॐ नमो सिद्ध विनायकाय सर्व कार्य कर्त्रे सर्वविघ्न प्रशमनाय सर्व राज्य वश्य करणाय सर्व जन सर्व स्त्री पुरुष आकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ||

नियम

- किसी भी माला का उपयोग जप कार्य के लिए कर ले
- वस्त्र और आसन का रंग पीला हो तो बहुत अच्छा हैं .
- प्रातः काल उठ कर जप करे .
- इसमें कोई दिन निर्धारित नही हैं ,,
- आप चाहे तो दनिक पूजन में भी इस मंत्र को शामिल करसकते हैं .

जिस तरह से आपको उचित लगता हैं भगवान गणेश का पूजन करके इस मंत्र का जप करें. जब भी किसी कार्य के लिए निकले तो मन ही मन इस मन्त्र का जप आपको आपके कार्य पूरे होने में अत्यधिक लाभ देगा . यह भगवान का सर्व सिद्धि प्रदायक स्वरुप का अत्यंत ही लाभ का री प्रयोग हैं .

****
****
*

Shri Siddhi Dayak Ganpati Prayog

Who is not very well aware of the blissful form of bhagvaan ganesh , in every sadhana and in each good work bhagvaan ganesh is the first one to whom we pray or do poojan . since he is the problem solver and problem creator too.

Bhagvaan ganesh form is very blissful and in every home , his poojan happens. And sadhak has to various type of work , not only in sadhana , but in social life too and when the expected result does not comes on time than various complexities arises.

What is mahavidya tatv ??

कुछ ज्ञात अज्ञात तथ्य

विद्या तत्व और अविद्या तत्व तो सभी जानते हैं ही पर महा विद्या तत्व क्या हैं ???यह ज्ञान अपनी पूर्णता से आज तक सिर्फ उच्च कोटि के साधको के मध्य ही रहा हैं . और जन सामान्य से इन तत्वों को इतनी सरलता और स्पष्टता से परिचय कराने का महत कार्य तो सदगुरुदेव ने ही किया हैं आज सामान्य साधक भी इतनी बातें ...इन महा विद्या के बारे में जानता हैं जो कि उच्च कोटि के लोगों के पास अभी कुछ समय तक छुपी रही हैं. जिन साधनाओ को देख कर सामा न्य साधक भय खाता था, डरता था उसे अब सामान्य साधक भी आराम से करता हैं . अगर पूर्ण साधना इन महाविद्या से सम्बंधित कर नही कर पाए तो उनके किसी न किसी वरदायक स्वरुप के साथ तो सम्पन्न कर ही रहा हैं.

सती के यज्ञ में आत्म दहन कि घटना तो सभी जानते हैं और उस यज्ञ में उठती प्रचन्ड ज्वाला में जब उनके द्वारा आत्म दहन कर लिया गया तब उनके उस क्रोधित स्वरुप को देख कर भगवान शंकर भागने लगे तब उनको दसो दिशाओं में रोकने हेतु माँ पार्वती के यह दस स्वरुप प्रगट हुए . और

यहाँ सदगुरुदेव कहते हैंकि कि अगर किसी साधक ने इन दस महाविद्या कि साधना परिपूर्णता से कर ली तो उसे भविष्य में कोई और साधना करने कि आवश्यकता ही नही रह जाती हैं. पर यहाँ समझना होगा कि दस महाविद्या कि साधना कोई मजाक नही हैं .अगर बात परिपूर्णता कि हो तो एक महाविद्या कि साधना में कितने न जन्म लग जाए तब भी उसका एक अंश भी हस्तगत हो पाए यह संभव नही हैं ...

हर महाविद्या परिपूर्ण हैं और हर में शेष अन्य 9 का भी पूर्ण समावेश हैं , इस तथ्य को भी ध्यान में रखना हैं अगर एक में ही पूर्ण सफलता मिल गयी तो भी सभी में..

पर यह तात्विक दृष्टी से हैं क्योंकि यह सही हैं कि हर महाविद्या कोई न कोई एक तत्व प्रधान होती हैं पर अन्य तत्व किसी दूसरे में होंगे ..पर यह मान लिया जाए कि उस एक स्वरुप में अन्यतत्व न होंगे तो यह सही नही होगा .

नही तो फिर अन्य कि आवश्यकता ही क्यों ..

यह विद्या ही नही महा विद्या हैं यह मूल त्रि शक्ति महाकाली महासरस्वती और महा लक्ष्मी के विभक्त होने से बनी हैं अतः हर महाविद्या में मूल शक्तियों का वास तो होगा ही .

और साधक का यह भाग्य हैं कि उसे इन कर्मो में प्रवेश करने का सौभाग्य मिलता हैं , हर महाविद्या के जितने नाम हैं उतने कम से कम रूप भी हैं, इस का अर्थ तो यह हुआ कि सहत्र नामावली हैं तो कम से कम इतने स्वरुप होंगे ही ..

इन महाविद्या को सिद्ध करने से एक एक करके.....से सिद्धाश्रम में प्रवेश करने कि आवश्यक शर्ते भी पूरी हो ती जाती हैं

सम्पूर्ण विश्व उसी एक मा पराम्बा मा कि ही लीलास्थली हैं .क्या देव ..क्या दानव.. क्या गन्धर्व सभी तो सभी हैं .

एकोःम द्वितीयोनास्ति ...

का बारम्बार घोष और क्या हैं .उन्ही नित्य लीला विहारिणी के की सर्व व्यापकता बताता हुआ .

देवी भागवत स्पस्ट करती हैं कि सम्पूर्ण विश्व में एक निर्गुण शक्ति हैं और दूसरी सगुण शक्ति..

सगुणा निर्गुणा चेति द्विधा प्रोक्ता मनीषिभि

सगुणा रागिभिः सेव्या निर्गुणा तु विरागिभी : ||

शक्ति के बिना इश्वर तत्व को पाया ही नही जा सकता हैं .इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं ,इस लिए भले ही लोग शाक्त मत की भले ही अलोचना करे .पर सभी मत में इसी का प्रभाव देखा ही जा सकता हैं .

सर्व देवमयी देवी सर्व देवी म यं जगत

अतोऽहम विस्वरु पां त्वां नमामि परमेश्व रीं ||

अर्थात सब देवो में देवी ही हैं और् समस्त संसार देवी की शक्ति एवं कृपा से ही व्याप्त हैं.

शाक्त मत इन्ही माँ पराम्बा के त्रिगुणमयी स्वरुप को दस भागों में विभक्त कर ..उन्हें दस महाविद्या के नाम से जानता हैं .

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी |

भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ||

बगला सिद्ध विद्याश्च मातंगी कमलात्मिका |

एता विद्या महेशानि महा विद्या प्रकीर्तिता ||

काली : ये प्रथमा हैं ये ही आद्या हैं .ये काल तत्व की अधिस्ठार्थी भी हैं लगातार जगत के ऋणा त्मक तत्वों और तमस से युद्धरत रहने के कारण इनका चित्रण काले रंग में किया जा ता हैं , महायोगियों का कथन हैं कि माँ का वर्ण स्वर्ण के सामान हैं . वाक् तत्व और विद्या तत्व का अधिकार माँ के इस स्वरुप में ही हैं .

तारा : जीवन की जब भी विपत्तियो ,न्यूनताओ से कमियों से मुक्ति पाना हो तब तारने वाली माँ पराम्बा का यह एक मात्र स्वरुप हैं .चाहे किसी भी महाविद्या की साधना की जा रही हो पर जब मुक्ति या तारने की बात आएगी तब इन्ही का कोई न कोई स्वरुप सामने आएगा ही .ज्ञान तत्व की अधिस्ठार्थी माँ ,अज्ञान तत्व का विनाश करने वाली हैं .

षोडशी :यह विद्या उस परम चैत्यन्य परम ब्रह्म परमात्मा का प्रतीक हैं .मंत्र और मंत्राधिना होकर सर्व मंत्रेस्वरी सर्व यंत्रेश्वरी , सर्व तंत्रेश्वरी भी यही हैं .सौम्य रूपा माँ की साधना अपने आप में सर्व उपलब्धि हैं . और श्री यंत्र की अधिस्ठार्थी भी यही हैं .

भुवनेश्वरी :ब्रह्म विद्या तक देने में समर्थ यह महाविद्या अत्यंत सौम्य स्वरूपा हैं .गृहस्थ लाभ के लिए ,समस्त जीवन के दोषों का नाश करने में यह महाविद्या समर्थ हैं .

छिन्नमस्ता :यह उग्र महाविद्या हैं और अनेको अलौकिक रहस्यों को अपने में समाये हुए अत्यंत रहस्यमय स्वरुप ..जीवन में कभी भी जब अहंकार का समूल नष्ट करना हो तो इसी महाविद्या का सहारा लिया जाता हैं .

त्रिपुर भैरवी :यह ज्ञान स्वरूपा हैं, और महा भैरव की आधार भूत शक्ति और शमशान में निवास रतसमस्त अदृश्य शक्तियों कि स्वामिनी और अत्यंत आकर्षण शक्ति से युक्त हैं .

धूमावती : उच्चाटन तत्व की अधिस्ठार्थी यह अत्यंत उग्र स्वरूप हैं , जीवन की प्रबल से प्रबल कठिनाई को पल में दूर करने में समर्थ ..

बगलामुखी : स्तम्भनं शक्ति की आधिस्ठार्थी यह स्वरुप ,बाह्य ही नही बल्कि आंतरिक शत्रुओं को भी स्तंभित करने में समर्थ .ज्ञान प्रदायक और दरिद्रता नाशक और सत्व गुण का प्रतीक यह स्वरुप हैं .

मातंगी : वशीकरण और संगीत के साथ गृहस्थ सुख प्रदान करने में समर्थ यह स्वरुप एक ओर सौम्य हैं तो दूसरी ओर शमशान कि आधिस्ठार्थी के रूप में उच्छिस्ट चंडालिनी स्वरुप में साधको के समक्ष होती हैं .

कमला : यह लक्ष्मी तत्व की सर्व श्रेष्ठ उपलब्धि हैं ..समस्त वैभव और जीवन कि समस्त शक्तिया इनके आधीन ही हैं .

भारतीय साधना पक्ष एक तथ्य पर विशेष रूप से जोर देते हैं वह हैं प्रकृति और पुरुष या शिव शक्ति का सम्मिलित स्वरुप ....तो जहां भी शक्ति तत्व आएगा वहां स्वाभाविक हैं कि शिव तत्व का होना ..क्योंकि दोनों एक दूसरे पर आधारित हैं एक के बिना दूसरे का क्या अर्थ हैं तो जब बात महाविद्या तत्व की हैं तो स्वाभाविक हैं कि भैरव स्वरुप इसके साथ भी संयुक्त होंगे .. हर महाविद्या के एक भैरव होंगे पूर्णता के लिए यह आवश्यक भी हैं, तंत्र मानव को अधूरा नही बल्कि पूर्णता तक ले जाना चाहता हैं. इस लिए हर महाविद्या की साधना करने से पहले उसके भैरव तत्व मतलब शिव तत्व की साधना भि अनिवार्य हैं. आगे के लेखो में हमने हर महाविद्या के सबंधित कौन कौन से भैरव हैं उल्लेख किया हैं.

इस तरह से .तंत्र दोनों पक्षों को एक ओर भैरव हैं तो दूसरी ओर महाविद्या हैं सभी पक्षों का सम्मिलन करता हैं . तंत्र जीवन के हर पक्ष फिर वह चाहे छोटा हो या बड़ा हो उसकी परवाह नही क्योंकि तंत्र तो हर चीज में वही दिव्यता देखता हैं .और प्रस्तुत महाविशेषांक इसी बृहद ज्ञान जो सदगुरुदेव द्वारा आज हमें सुलभ हैं की कड़ी में प्रस्तुत हैं...

****

Why Bhairav sadhana are so important ?

भैरव साधना के महत्व के कुछ तथ्य

भगवान भैरव तो साधना के एक अनिवार्य अंग हैं जहाँ भगवान गणेश यदि विघन कर्ता और हर्ता के स्वरुप में हैं वहीँ भगवान भैरव का महत्त्व भी कम नही हैं वे आपत्ति उद्धारक के रूप में सर्व विख्यात हैं हालाकि जिसे भी कोई समस्या आती हैं वह सीधे ही भगवान महावीर की शरण में जाता हैं. क्योंकि वे तो जग विख्यात हैं.. पर यह भी सु विख्यात पर गोपनीय तथ्य हैं कि जब तक भगवान भैरव की पूर्ण कृपा न प्राप्त हो व्यक्ति को हनुमान जी की कृपा भी प्राप्त नही हो पाती और जिसे भगवान भैरव कि कृपा प्राप्त हो वह हनुमान साधना में सफलता पा ही लेता हैं यह तथ्य सदगुरुदेव ने अपनी दिव्य मधुर आवाज में समझाया हैं .

वेसे भी आप देखें कि हर मंदिर में भगवान भैरव कि स्थापना होती ही हैं क्योंकि उनकी सामर्थ्य सीमा कि कोई थाह नही हैं भैरब 108 नामावली स्त्रोत में एक पंक्ति आती हैं कि "शंकर प्रिय बांधव .".मतलब इन्हें भगवान शंकर का ही भाई माना गया हैं हलाकि भगवान शंकर और भैरव में कोई अंतर नही हैं. सारे तंत्र जगत में जो भी वार्तालाप हैं आधिकांश जगह आप भगवान शंकर के नाम की जगह भैरव और माँ पार्वती की जगह भैरवी पायेंगे .

यु तो भगवान भैरव के 51 स्वरुप माने गए हैं . और ऐसे गोपनीय ढंग से देखें तो अनेको .... शायद गिनती ही नही .. पर एक विचारणीय हैं कि क्या सच में इतने स्वरुप हैं?? तंत्रग्य कहते हैं ऐसा नही हैं भैरव तो एक ही हैं ..तब फिर उनके इतने स्वरुप क्यों?? माने गए हैं तो आगे यह ..उत्तर आता हैं कि वास्तव में भैरव तत्व एक ही हैं जिस प्रकार से ध्यान किया जाए ..या जिस प्रकार से उनकी शक्तियों का आवाहन किया जाये वह उसी स्वरुप में सामने आ जाते हैं. भगवान भैरव को तमस का प्रतीक साधारण तौर पर माना जाता हैं पर यह अवस्था सही नही हैं ..क्योंकि हैं तो वे भी देव वर्ग से हैं पर तमस या अन्धकार से लगातार संघर्ष रत के कारण उनकी कलपना यह कर ली गयी हैं और सभी देव वर्ग कि भांति इनके भी तीन ध्यान प्रचलित हैं ..सात्विक ,राजसी और तामसिक .. निश्चय ही तमस वर्ग कि विशालता को देख कर इनका स्वरुप भी अत्यधिक भयावह हो जाता हैं पर यदि सात्विक या राजसी ध्यान का आश्रय लिया जाए तो ऐसी अवस्था नही आती हैं..

भगवान भैरव के यदि प्रौढ़ स्वरुप हैं तो उनका बाल स्वरुप भी हैं जिसे बटुक भैरव के नाम से संबोधित किया गया हैं और इस स्वरुप कि साधना तो विख्यात रही हैं. वही एक ओर स्वरुप ऐसा हैं जिसे साधक कम जानते हैं पर वह प्रचुरता से भौतिक धन धान्य और लाभ प्राप्त करा सकने में समर्थ हैं और उस स्वरुप को स्वर्णा कर्षण भैरव के नाम से कहा जता हैं और यह स्वरुप का ज्ञान साधको को बहुत ही कम रहा हैं . अतः इस स्वरुप के बारे में हमने तंत्र कौमुदी के कुछ अंको में स्पस्ट किया गया हैं . साधारणतः साधक को यदि भैरव साधना यदि वह तमस भाव को ले कर करता हैं . अब यहाँ एक बात कि आखिर तमस भाव कि ही क्यों क्योंकि तमस भाव की शक्तिया और विशालता शेष अन्य दोनों भावो से कहीं जयादा हैं और सीमा तीत हैं. इसलिए साधक गण का रुझान उनके इस तमस भाव कि साधना में आधिक हो तो आश्चर्य क्या .पर यह भी जान ले कि इस भाव में जो भी फिर चाहे मांस या शराब या सु रा का अर्पण किया जाता हैं उसे एक निश्चित प्रक्रिया से शोधित किया जाता हैं उसके बिना यह भोग स्वीकार योग्य नही होता हैं . हमने विगत अंक में ऐसी ही कुछ बातों के मर्म को जानने कि कोशिश कि कि वास्तव में जो सामने दिख रहा होता हैं वह भले ही डरावना सा हो पर विभत्स सा भी देखे पर वस्तु स्थिति ऐसा ही हो यह सम्भव नही हैं जब क्रिया के मूल में जा कर समझा जाय . तब बात अलग हो जाती हैं .

सदगुरुदेव जी ने एक पूरी भैरव साधना का अनुभव सहित उदाहरण दिया था जो उनके शिष्य के साथ हुयी थी जिसमे उन्होंने (उस शिष्य ने) यह उनसे पूँछ लिया कि उसकी तो रूचि नही हैं फिर भी क्यों... तो सदगुरुदेव कहते हैं कि .. एक स्तर के बाद अन्य भाग कि साधना को भी देखना और समझना पड़ता हैं और सात्विक क्रम के बाद इस क्रम में उसे जाना ही पड़ेगा .

इसका यह तात्पर्य नही हैं कि हरके लिए यही भाव भूमि हो ..कुछ साधक सीधे ही इस क्रम में चले जाते हैं जो कि पूर्व जन्मगत संस्कार और सदगुरुदेव कृपा के अतिरिक्त और क्या कहा जाए .. या क्या कहा जा सकता हैं .और भैरव साधना तो अति उच्चतम कोटि की हैं हम भले ही अपनी मानसिकता के कारण उसे नकार दे पर या उसे तमस भाव की ही मानते रहे पर हैं यह एक उच्च भाव कि साधना , और जिस साधक ने इस भाव कि साधना को साध लिया तो अब जब भगवान भैरव कि कृपा प्राप्त हो गयी तो और क्या शेष रहा ...

फिर उसे जब चाहे जैसे चाहे शमशान कि साधनाओ में सफलता स्वयं ही मिलती रहती हैं और भगवान कि कृपा के कारण उसे वहाँ पर कोई भी विपरीत परिस्थिति का सामना भी नही करना पड़ता हैं ..

****
****

Why bhairav sadhana ?

Bhagvaan bhairav blessing or his sadhana is an essential part in sadhana jagat . like bhagvaan ganesh, if considered as problem remover and creator the same way bhagvaan bhairav consider as a coming any problem destroyer. And helping dev to the sadhak .this is very well known fact that when any problems comes before any body , that fellow move directly to the surrender to bhagvaan mahaveer , but to get blessing completely from him, bhagvaan bhairav blessing is also a part. And those who has got the blessing of bhagvaan bhairav can easily get success in hanuman sadhana .this very important facts has been fully described by sadgurudev himself in his divine voice.

In general every temple has bhagvaan bhairav place. Since there is no limitation of his divine power. There is a line comes in bhairav 108 namavali strot that he is the brother of bhagvaan Shankar. Actually there is no difference between these two forms. In tantra field you will on maximum places bhagvaan Shankar addresses as bhairav and ma parvati as a bhairvi.As there are 51 forms of bhagvaan bhairav considered, and if sees from very deeply than ..may be there are no limit of that , here one question arises that actually there are so many bhairav?? Than why so much forms description and some of sadhanaye available to them..?? the answer is that actually bhairav tatv or element is only one, as the dhyan mantra a..as the sadhana process used..as his power calls by the sadhak ..

Important days of bhalrav sadhana and offerIng?

भैरव साधना के सबंध में आवश्यक सूत्र

भगवान भैरव के प्रकट होने कि अद्भुत कथा सभी जानते हैं अतः उसे फिर से यहाँ लिखने का कोई विशेष प्रयोजन नही हैं . पर यह आश्चर्य जनक हैं कि इन्होने अपने बाए हाथ के नाख़ून से ब्रह्मा जी का पंचम मुख जो लगतार भगवान शिव की अव्हेहलना करता जा रहा था उस मुख को काट दिया और उस पंचम मुख को अपने हाथ में लेकर काशी भगवान शिव की आज्ञा से गए और वहां पर अब कोतवाल या रक्षा कारी देव के रूप में प्रसिद्ध हैं. यह भगवान शंकर के ही अवतार माने जाते हैं.इनका उस पौराणिक घटना के अनुसार मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को हुआ हैं.इसलिए हर महीने की अष्टमी तिथि का तो महत्त्व हैं ही पर वह कृष्ण पक्ष कि हो तो विशेष रूप से साधको के लिए महत्त्व हैं ही साथ ही साथ १४ वे तिथि को भी हर महीने कि इनका पूजन साधना किया जा सकता हैं.

पर जिन्हें पूजन से ही आधिकतर तात्पर्य हैं वह रविवार और मंगलवार को इनका पूजन कर सकते हैं. चूँकि मगल वार भगवान महावीर से कहीं ज्यादा जुड़ा हैं अतः कई स्थान पर मंगल वार और शनिवार को ही आधिकाश लोग इनका दर्शन और पूजन करने के लिए जाते हैं.

रात्रिकाल पूजन या साधना विधान बहुत ज्यादा प्रभावशाली हैं.

मुख्यतः अष्ट भैरव माने जाते हैं .

ये हैं

- **आसितांग भैरव**
- **रुरु भैरव**
- **चंड भैरव**
- **क्रोध भैरव**
- **उन्मत्त भैरव**
- **कपाल भैरव**
- **भीषण भैरव**
- **संहार भैरव**

ऐसे तो शास्त्रों में 51 और 108 भैरव के नामो का उल्लेख मिलता हैं और उस सबंधित साधना विधान . हैं

भैरव भोग सामग्री:

जिस तरह से भैरव ध्यान किया जाए उस तरह से भोग सामग्री में परिवर्तन हो सकता हैं और ठीक उसी तरह जिस मार्ग से उनकी उपासना या साधना की जाती हैं उस तरह से भोग अर्पण में परिवर्तन होना स्वाभा विक हैं . फिर भी एक सामान्य भोग सामग्री हैं .उडद की दाल के तेल में तले हुए बड़े पकोडे , दही और गुड उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं .अन्य मार्ग में मछली और मदिरा का प्रयोग होता हैं पर वह सब के सब शोधित किये जाने चा हिये . कुछ जगह बिना शोधित भी उपयोगित होता हैं पर तंत्र के उच्च मार्ग में बिना शोधन के कुछ भी स्वीकार नही हैं . कई जगह लाल पुष्पों की माला और लड्डू का भी प्रयोग किया जाता हैं .कहने का तात्पर्य हैं जैसा साधना विधान हो ठीक वैसा ही करें बिना किसी हिचक के ..सामाजिक मर्यादा और नैतिक कानून का पालन करते हुए .

और जिन्हें वह न मालूम हो तो सामान्य भोग सामग्री का सिर्फ पूजन के लिए उपयोग कर सकते हैं .

सदगुरुदेव ने अपनी कृति में स्पस्ट किया हैं ...

पर यह भी एक आश्चर्य जनक तथ्य हैं कि वार या दिन के हिसाब से भी उनको अर्पण किये जाने वाले नैवैद्य या भोग में परिवर्तन होते हैं .

- सोमवार को मोदक अर्पण
- मंगल वार को गुड और घी से बनी लस्सी
- बुध वार को दही शक्कर
- गुरु वार को बेसन के लड्डू
- शुक्र वार को भुने हुए चने
- शनिवार को उडद के बने पकोडे
- रविवार को दूध से बनी खीर

साथ ही साथ जलेबी , सेव और तले हुए पापड़ भी अर्पण किये जाते हैं

Important days for bhairav sadhana and bhog (offering) details

Every body already aware of that the miraculous story or incident related to appearance of bhagvaan bhairav .so again mentioning here serve no purpose .but this is really amazing fact that he was able to cut the fifth head of bhagvaan bramha that was not giving due respect to bhagvaan Shankar , through the nails of his left hand. And moved to kashi as per the instruction of bhagvaan Shankar and he is consider their as a kotwaal or the protector dev ,and consider as a form of bhagvaan Shankar. As per the pouranik incident tthat was happened to ashtmi tithi of maarg shirsh shukl paksh. That's why ashtmi tithi of every month has its own importance, and if that comes in krishan paksh , that will be more usuful for sadhak and the 14 th tithi also can be used for sadhana or poojan of bhagvaan bhairav.

अमृतेश्वरभैरव साधना

Amriteshwar bhairav sadhana
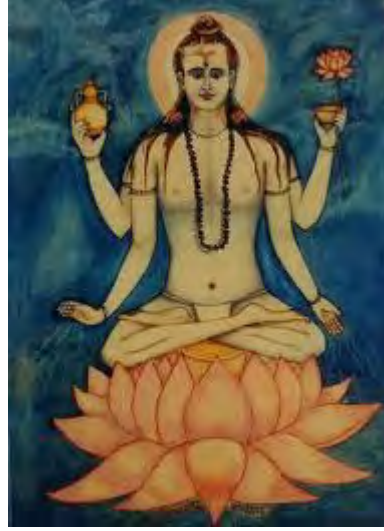
कुण्डलिनी जागरण में पूर्णता प्राप्त करने के लिए

पुरातन समय मे कश्मीर का नाम एक तंत्र गढ़ के रूप मे विख्यात था. कश्मीर की शैव परंपरा ने कश्मीर क्षेत्र मे एक से एक महासिद्धो को आमंत्रित किया. जिस प्रकार से शाक्त मत के साधक जो के देवी साधना की लक्ष्य पूर्ती करना चाहते हो उनके लिए सब से उपयुक्त स्थान बंगाल या आसाम हुआ करता था ठीक उसी प्रकार से शिव साधनाओ के लिए साधको की प्रिय स्थली कश्मीर तथा दक्षिण भारत मे श्रीशैल क्षेत्र हुआ करता था.

जनमानस के मध्य भगवान शिव के अनेको रूप प्रचलित है और सभी रूप एक दूसरे से भिन्न और कल्याणमय है. लेकिन साधको के मध्य इनके कई ऐसे रूप भी प्रचलित है जिनके बारे मे सामान्य जन समुदाय को बहोत ही कम जानकारी है. ऐसे ही उनके कई भैरव स्वरुप है जेसे की चित्त भैरव, आनंदेश्वर भैरव, कृपालभैरव इत्यादि. भगवान शिव के यह सभी रूप कश्मीरी शैव परंपरा की गुढ साधना प्रणाली मे निहित है. भगवान शिव का ऐसा ही एक निराला स्वरुप है अमृतेश्वरभैरव.

भगवान अमृतेश्वर देवी अमृतेश्वरी के भैरव है. यह देवी अमृतेश्वरी का प्रचलित रूप अम्बिका है. अमृतेश्वरी के रूप मे यह कुण्डलिनी की क्रिया है और अमृत को प्रदान करने वाली है. अमृत का यहाँ पर अर्थ सहस्त्रार भेदन से निकले अमृत से है जो की पूर्ण आनंद को प्रदान करता है. भगवान अमृतेश्वर का अर्थ यहाँ पर उसी अमृत के मुख्य तत्व के रूप मे है जिनसे सभी अमृत बने है.

भगवान अमृतेश्वरभैरव का रूप निराला है. उनका आसन कमलदल है जो की प्रतीक है आंतरिक चक्रों मे निहित अमृत तत्व मे उनकी उपस्थिति का. वे चतुर्भुज है. उनके दो हाथ अपने घुटनों पर स्थित है जो की योग और स्थिरता को दर्शाते है. उनके एक हाथ मे अमृत कुम्भ है, जिसमे अमृत भरा हुआ है. इसका अर्थ यह है की वह साधको को अमृत प्रदान करते है तथा ज़रा मृत्यु के बंधन से मुक्त करते है. उनके एक हाथ मे कमलपुष्प है जिसे कमलनाल से उन्होंने पकड़ा हुआ है. यह सूचक है कुण्डलिनी मार्ग पर उनकी सत्ता का. यह गौर वर्ण शुभ्र प्रकाश युक्त तथा त्रिनेत्र करुणाधारी स्वरुप के स्वामी है.

मूलतः यह साधना चक्रों की चैतन्यता विकास तथा कुण्डलिनी के जागरण के लिए है साधना सोमवार से शुरू करे. साधक के वस्त्र आसान वगेरा सफ़ेद रहे तथा दिशा उत्तर रहे. यह साधना सुबह ब्रम्ह मुहूर्त मे या फिर रात्रि काल मे १० बजे के बाद की जा सकती है. इनके उपरोक्त वर्णित स्वरुप का मानसिक रूप से ध्यान करे. अगर संभव हो तो अपने सामने भगवान शिव के इस रूप की या किसी भी रूप की तस्वीर लगा कर उनका पूजन करे. कमलपुष्प अर्पित करे. उसके बाद साधक देवी अम्बिका का भी ध्यान कर साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना करे. इसके बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे.

ॐ जुं सः अमृतेश्वरभैरवाय चक्र सिद्धिं अमृतं कुरु कुरु नमः

साधक यह क्रम अगले सोमवार तक जारी रखे. इस बिच साधक को कई बार चक्रों मे स्पंदन शरीर मे हल्कापन तथा विभिन्न साधनात्मक अनुभव होते रहते है. साधना समाप्ति पर साधक के कुण्डलिनी मे चेतना व्याप्त हो जाती है तथा उसका जीवन अपने आप उर्ध्वगामी हो जाता है.

****

Amruteshvar Sadhna – Kundalini Activation

Since archaic times the place ‘Kashmir’ remained famous in Tantra base. Kashmir’s Shaiv tradition invited many best to best Mahasiddh in Kashmir area. Bengal and Assam were mostly known for those Shakt sadhaks who aimed for Devi Sadhna, exactly the way Kashmir and Southern India and place called Shreeshail had been famous for Shiv Sadhnas.

Bhagvaan bhairav and mahavidya s ……

भैरव तत्व और दस महाविद्या

भैरव सायुज्य महाविद्या महाविशेषांक …. .इस अंक का होना ही इस बात का परिचायक हैं कि भगवान भैरव या भैरव तत्व का कितना न गहरा सम्बन्ध महाविद्याओ से हैं . साधक वर्ग सीधे ही इन महाविद्या की साधना में प्रवृत हो जाता हैं और जब लगातार उसे असफलता उसे मिलने लगती हैं , तब वह असंजस कि स्थिति में अपने को पाता हैं कि उससे कहाँ गलती हो रही हैं.जबकि यह आवश्यक हैं कि पहले भगवान भैरव की कृपा प्राप्त कि जाए .

हाँ इस नियम का केबल एक ही अवस्था मे अपवाद हो सकता हैं अगर सदगुरुदेव ने आपको निर्देशित सीधे ही महाविद्या साधना में किया हो क्योंकि सद्गुरु तत्व ही सर्वोपरि हैं .

यह परम रहस्यमय भैरव तत्व आखिर हैं क्या ..??

शिव महापुराण में बताया गया हैं .

भैरव : पूर्ण रूपों : हि शंकर परात्मन ,

मुद्वास्ते वै न जानति मोहित शिव मायया ||

कि भगवान भैरव तो स्वयं ही भगवान शकर के स्वरुप हैं .

तब दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह हैं कि भैरव शब्द ही क्यों..इस रहस्यमय महाशक्ति को दिया हुआ हैं ??

सदगुरुदेव जी ने हमें बताया हैं कि

तंत्रावलोक नाम का उच्च कोटि का ग्रन्थ यह स्पस्ट करता हैं कि भैरव शब्द कि उत्पत्ति ..

" भैभीमादि भि: अबतिती भैरव "

.सदगुरुदेव जी यह व्याख्या हमें कई कई बार समझाई हैं कि शक्ति की आधारभूता महाविद्या तत्व का महत्त्व कितना हैं . पर हम इस भूल भूत तत्व को न जान कर .बिना भैरव तत्व कि पूर्ण कृपा से बिना उनकी साधना में सफलता पाए बिना जो उस महाविद्या से सम्बंधित हैं

कैसे हम सीधे महाविद्या में सफल हो सकते हैं .

रुद्रायामल तंत्र हमारे सामने स्पस्ट करता हैं कि

दस महाविद्याए और उनसे सबंधित भैरव इस प्रकार

1. **महाकाली --- महाकाल भैरव**
2. **त्रिपुर सुंदरी --- ललितेश्वर भैरव**
3. **तारा – अक्षोभ्य भैरव**
4. **छिन्नमस्ता – विकराल भैरव**
5. **भुवनेश्वरी –महादेव भैरव**
6. **धूमावती – काल भैरव**
7. **कमला– नारायण भैरव**

8. भैरवी – बटुक भैरव

9. मातंगी – मतंग भैरव

10. बगलामुखी – मत्युं जय भैरव

कुछ सामान्य नियम जिनसे अब आप भली भांति परिचित हैं ही .

भैरव साधना रात्रि में ही की जाती हैं . दिन में भैरव साधना करना निषेध हैं .

भैरव को सुरा पान कराना आवश्यक हैं

सबसे महत्वपूर्ण बात यह हैं कि भैरव साधना हमेशा कामना के साथ ही की जाती हैं .

साधरणतः भैरव साधना के नाम से लोगों को भय लगता हैं .पर स्वरुप भले ही विकराल हो पर यह अत्यंत ही दयालु और साधक के लिए हमेशा वरदायक होते हैं .

****
****

Bhagvaan bhairav and mahavidyaye

The name of this issue "bhairav sayujjy mahavidya mahavisheshank " itself speaks that how in depth relation exists between mahavidya and bhagvaan bhairav or bhairav tatv .in general sadhak varg directly start mahavidya sadhana and when he start continuously unsucess he will find himself on the cross road .now what to do now . but this is a must fact that one must get bhagvaan bhairav blessing first.Only this rules have an exception when sadgurudev ji directly instructed some one to enter mahavidya sadhana .since is the param purush .Now question arises what is this most mysterious bhairav tatv ??

Shiv mahapuraan state that

Bhairavah purn rupoah Shankar paratman ,

Nudhaste vai n janti mohitaa shiv maayya||

Dhoomr varahi prayog

मनोकामना पूर्ती हेतु अद्भुत रहस्य आपके लिए

भगवती वाराही मात्रिका देवीओ मे से एक है. यह मात्रिका समूह देवीओ के कई विभिन और विलक्षण स्वरूपों का समूह है जिनकी साधना तंत्र के शाक्तमार्ग मे निहित है तथा इनकी साधना को बहोत ही उच्चकोटि का महत्व दिया गया है. सेकडो सालो से मात्रिका शक्तियो की गुप्त साधनाए साधना जगत मे होती आई है. देवी वाराही भगवान विष्णु के वराह अवतार की शक्ति है. देवी की उत्पति के बारे मे देवीभागवतपुराण, मत्स्यपुराण तथा वराहपुराण मे विस्तार से बताया गया है. वैसे मातृकाओ की उत्पति के बारे मे विभिन्न मत है, लेकिन सर्वमान्य मत यह है की वाराही तथा दूसरी मात्रिका देवियो की उत्पति मुख्यरूप से असुरों का संहार करने मे तथा देवी अम्बिका को सहयोग प्रदान करने के लिए हुआ था. देवी की तंत्र साधना दक्षिण तथा वाम दोनों मार्ग से होती है. भारत के अलावा, नेपाल मे भी देवी की साधना उपासना प्रचुर मात्र मे होती आई है. इसके अलावा तिब्बती बौद्ध धर्म मे भी देवी की साधना का प्रचलन है. वज्रयान मे देवी वज्रावारही को इनका ही रूप माना जाता है, इसके अलावा देवी मरीची को भी देवी वाराही के रूप से ही प्रेरित माना जाता है. शाक्त मार्ग मे यह देवी का अपना विशेष स्थान है. शाक्त मार्ग मे इस देवी को, वास्तव मे देवी के ध्यान के जो सत् रज तथा तम गुणों से युक्त जो स्वरुप है, उन्हें अलग अलग महाविद्याओ से सबंधित माना गया है..

देवी के सात्विक स्वरुप को त्रिपुरसुंदरी से जोड़ा गया जिसे पराविद्या कहा जाता है, जब की राजसिक स्वरुप को छिन्नमस्ता के साथ जोड़ने पर उसे वज्रवाराही कहा गया है. इनके उग्र या तमस युक्त स्वरुप को धूमावती के साथ जोड़ा गया है. इस लिए जब इनके उग्र स्वरुप मे साधना की जाती है तब देवी को धूमावती का ही स्वरुप माना जाता है. देवी के इस स्वरुप को धूम्रवाराही भी कहा जाता है.एक ही देवी के इस प्रकार अलग अलग ध्यान से उनके स्वरुप का मूल अलग अलग महाविद्या होने के कारण वाराही देवी की साधना अत्यधिक गुढ़ तथा गोपनीय रही है. देवी की अलग अलग रूप मे उनके मूल महाविद्या का ध्यान कर के साधना करने पर यह देवी अलग अलग फल प्रदान करती है. सौम्य भाव के साथ भगवती त्रिपुरसुंदरी के रूप मे वह साधक को विविध ज्ञान प्रदान कर कल्याण करती है, जब की रजस् भाव मे छिन्नमस्ता महाविद्या के स्वरुप मे वह साधक को धन यश मान सन्मान तथा भौतिक सुखो की उपलब्धि कराती है. भगवती का सब से तीव्र तमस भाव का स्वरुप देवी धूमावती से प्रेरित है, यह देवी साधक को तंत्र क्षेत्र मे विभिन्न सिद्धिया तीव्र गति से प्रदान करती है.

भगवान आदिशंकराचार्य साधना जगत मे अपने आप मे एक महान विभूति रहे है. सौंदर्यलहरी, प्रपंच, तथा चिदाम्बरा रहस्य जेसे शाक्त तंत्र के उच्चकोटि के ग्रंथो की उन्होंने रचना कर उनके शाक्त साधनाओ पर अपने विचार प्रकट किये थे. साथ ही साथ उनके द्वारा प्रणित कई साधनाए अप्रकाशित ही रही लेकिन गुप्त रूप से प्रचलन मे रही. एसी ही उनके द्वारा प्रणित एक साधना प्रयोग है धूम्रवाराही प्रयोग जिसे सम्प्पन करने के बाद साधक की मनोकामना की पूर्ति अत्यधिक तीव्र गति से होती है. देवी से सबंधित साधनाए तो गुप्त ही रही है और उसमे भी अगर देवी के तीव्र रूप के सबंध मे कोई साधना मिल भी जाए तो भी वह इतना कष्टप्रद हो सकता है, साधक इसका अनुमान लगा सकते है. लेकिन यह लघुप्रयोग अपने आप मे अद्भुत है. जिसकी प्रक्रिया पद्धति दक्षिणमार्गीय है. यु एक प्रकार से यह साधना अन्यतम है. साधक इस प्रयोग से अपने किसी भी क्षेत्र से सबंधित कोई भी मनोकामना पूरी कर सकता है.

साधक यह साधना कृष्णपक्ष की अष्टमी को रात्रि काल मे १० बजे के बाद शुरू करनी चाहिए. साधक को अपने सामने वाराही देवी का चित्र स्थापित कर उनका सामन्य पूजन करना चाहिए. साधक को मिठाई का भोग भी लगाना चाहिए. साधक को इस साधना मे तेल का दीपक लगाना चाहिए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ रहे. साधक के वस्त्र तथा आसान लाल रंग के रहे.पूजन के बाद साधक देवी को धूमावती से प्रेरित स्वरुप मान कर अपनी मनोकामना को व्यक्त करे तथा देवी से मनोकामना पूर्ति के लिए प्रार्थना करे.

इसके बाद साधक मूल 'धूं' बीज से प्राणायाम करे. इस प्रक्रिया मे साधक मन ही मन 'धूं' बीज का मन ही मन जाप करते हुए साँस धीरे धीरे अंदर खींचे तथा बाहर निकाले. यह प्रक्रिया को ११ बार करे. इसी प्रकार 'ब्लूं' बीज से भी ११ बार प्राणायाम करे.

इसके बाद साधक शंकराचार्य प्रणित विशेष धूम्रवाराही मंत्र का ११ माला जाप करे.

ॐ धूं ब्लूं वराहमुखी धूम्ररूपिणी नमः

यह प्रक्रिया साधक ११ दिन तक करे. साधक ने जो भोग लगाया है उसे साधक खुद ही ग्रहण करे. इस प्रकार ११ दिन पुरे होने पर साधक १२ वे दिन माला को किसी देवी मंदिर मे दक्षिणा के साथ चडा दे. किसी कुमारिका को भोजन कराये तथा वस्त्र दक्षिणा आदि प्रदान कर संतुष्ट करने पर देवी साधक पर प्रसन्न हो कर शीघ्र ही मनोकामना की पूर्ती करती है.

Shulini durgaa sadhana ....

पूर्ण ग्रह बाधा मुक्ति हेतु

शाक्त मार्ग मे जिन आदि देवियो का विशेषरूप से महत्व तथा साधना प्रचलन रहा है उनमे से एक है देवी दुर्गा देवी दुर्गा को आदिशक्ति कहा गया है. इन्हें आदिमाया के नाम से भी जाना जाता है क्यों की इन्हें मूल शक्ति या शक्ति का मूल स्तोत्र भी माना जाता है. अनंत दुर्गा का अपना एक रूप कुमारिका भी है जिसे ही स्थूल रूप मे उच्चतम आध्यात्मिक अनुभूति 'ब्रम्हज्ञान' कहा गया है. देवी दुर्गा का स्वरुप अपने आप मे कई शक्तियो का सम्मिलित रूप भी है. इस प्रकार किसी भी शक्ति स्वरुप से देवी के इस स्वरुप मे शक्ति संचार विशेष रूप से ज्यादा माना गया है. देवी के कई रूप है, जेसे की त्वरिता, महिषमर्दिनी, कुमारिका, वनदुर्गा इत्यादि. देवी को कई बार महासरस्वती तथा महालक्ष्मी के मातृ रूप मे पूजा जाता है. तो कई बार इन्हें देवी पार्वती का पूर्ण रूप तथा गणेश को इनका पुत्र मान कर पूजन किया जाता है. देवी का स्वरुप अपने आप मे निराला है.

देवी सिंह या बाघ पर आरूढ़ हो कर विश्वकल्याण अर्थ भ्रमण पर है, जिनके हाथ मे विविध अस्त्र तथा शस्त्र है जो की उन्हें विभिन्न देवताओ से प्राप्त है. इस प्रकार उनके हाथो की चतुर्भुज से ले कर अष्टादश तक विविध रूप है. साधना की द्रष्टि से देवी के सभी रूप भेद की उच्चकोटि की साधनाऐ अपने आप मे परिपूर्ण है. इस प्रकार देवी का हर रूप साधक को अलग अलग प्रकार का फल तथा सिद्धिया देने मे समर्थ है. कई तंत्र शास्त्रों मे देवी को ही महाविद्या का आधार माना है इस लिए देवी के सभी रूपों को महायोगिनी रूप मे पूजा जाता है. देवी का एक ऐसा ही रूप है शूलिनी दुर्गा. देवी का यह स्वरुप तीव्र रूप से अपने साधक का कल्याण करती है. इनकी साधना शत्रु स्तम्भन के लिए मुख्यतः होती आई है. लेकिन देवी की साधना ग्रह पीड़ा को नाश करने के लिए भी प्रचुर मात्र मे की जाती थि. वस्तुतः भाग्य का लेखा जोखा ग्रहों के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता. अगर ग्रह विपरीत चल रहे है तो भाग्य तो रूठ जाता ही है साथ ही साथ कई प्रकार के कष्ट पीड़ा तथा अनेको परेशानी से व्यक्ति को ग्रस्त रहना पड़ता है. शूलिनी साधना इस प्रकार के कष्ट निवारण के लिए एक अस्त्र है. देवी को कई तांत्रिक ग्रंथो मे महाविद्या कहा गया है तो वही कई ग्रंथो मे देवी के इस तीव्र स्वरुप शूलिनी को महाडाकिनीयो मे से एक माना गया है जो की अपने साधक को कुछ भी देने मे संभव है. फिर देवी तो साक्षात विश्वकल्याणमयी है, अतः इनका साधक तो अपने सारे कष्ट और दुख एक ही क्षण मे दूर कर सकता है बस ज़रूरत है देवी की तरफ श्रद्धा तथा विश्वास की.

साधक यह साधना किसी भी रविवार की रात्री को १० बजे के बाद शुरू कर सकता है. साधक के वस्त्र आसान आदि लाल रहे. साधक इस साधना मे मंत्र जाप स्फटिक माला से या मूंगा माला से कर सकता है. साधक को अपने सामने एक बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछा कर देवी दुर्गा का चित्र स्थापित करना चाहिए. साधक का मुख पूर्व की तरफ हो. साधक देवी का सामान्य पूजन कर हाथ मे जल ले कर संकल्प करे की "मे अपनी समस्त ग्रहबाधा से मुक्ति के लिए यह प्रयोग कर रहा हू, देवी शूलिनी मुझे आशीर्वाद प्रदान करे." इसके बाद जल को भूमि पर छोड़ दे.

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे. साधना काल मे ब्रम्हचर्य का पालन करे, सात्विक भोजन ही ग्रहण करे. भूमिशयन यन का भी पालन हो.

ॐ शूलिनि ग्रहबाधा नाशय महायोगिनि हूं फट्

साधक को यह क्रम कुल ८ दिन तक करना है. इसके बाद साधक अगले दिन किसी कुमारी कन्या को भोजन दक्षिणा वस्त्र आदि भेंट दे. तथा माला को किसी देवी मंदिर मे रख दे या नदी मे प्रवाहित कर दे. ऐसा करने पर देवी शीघ्र ही सर्व प्रकार के ग्रह दोष तथा बाधा दूर कर साधक को पीड़ा से मुक्त कर देती है. साधक को सुख सम्प्पनता तथा समृद्धता प्रदान कर कल्याण करती है.

****

****

Shtru nivark unmt bhirav mantra prayog sadhana

समस्त शत्रु बाधाओं को हटा सकने में समर्थ एक अद्भुत साधना

भगवान भैरव के सभी रूप अपने आप मे अत्यधिक निराले है. कुछ रूप प्रचलन मे ज़रूर है लेकिन उनके कुछ रूप जन सामान्य की द्रष्टि से बचे हुए है. ऐसा ही उनका एक अजब निराला रूप है उन्मत भैरव. यह स्वरुप तंत्र क्षेत्र मे प्रचलित ज़रूर है. यह ज्वाला शक्ति के भैरव है तथा अत्यधिक उग्र है. प्राचीन काल मे उच्च तंत्र साधक उन्मत भैरव की साधना डाकिनी के मारक शक्ति के रूप मे सिद्ध करते थे. इस से ही अंदाज़ा लगाया जा सकता है की इनकी साधना कितनी उच्च कोटि की रही होगी. भारत मे काशी तथा नेपाल मे उन्मत भैरव के सिद्धपीठ है. भगवान के इस रूप को निःस्वभाव कहा गया है. मतलब की जिनका कोई स्वभाव ही नहीं है, अर्थात यह सभी भावो से मुक्त है तथा इनको जिस रूप मे साधक ध्यान करता है उस रूप मे वह प्रकट हो जाते है. निःस्वाभाव होने के कारण भगवान भैरव का यह पक्ष को संहार क्रम से ज्यादा जोड़ दिया गया लेकिन भगवान इष्ट के रूप मे अपने भक्तो का कल्याण सभी प्रकार से करते ही है. इस रूप को कई जगह लज्जा हीन भी कहा गया है.

भगवान का यह रूप कई जगह कामातुर दिखाया गया है, इसके पीछे का चिंतन यह है की जब जीव काम भाव की विशुद्ध अवस्था से परिपूर्ण हो जाता है तब वह स्वभाव वृति के बंधन से मुक्त हो जाता है. उसका जीवन वर्तमान आधारित हो जाता है. इसके अलावा क्षोभ लज्जा या इस प्रकार के बंधन करता भाव से भी मुक्ति मिलती है.

भगवान उन्मत भैरव की साधना कई द्रष्टि से महत्वपूर्ण है. आज के युग मे ज्ञात और अज्ञात शत्रु एक बहुत बड़ी समस्या हो गई है. पग पग पर इर्षा और छल कपट के कारण कई प्रकार शत्रुओ के षड्यंत्रो का भोग हमें बनना पड़ता है. उन्मत भैरव् के साधक को शत्रुओ का किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता, शत्रु उत्पीडित हो कर साधक से हार मान लेते है. अगर कोई व्यक्ति बेवजह परेशान कर रहा हो तो साधक को सर्वप्रकार से मुक्ति मिलती है. साथ ही साथ अध्यात्मिक क्षेत्र मे प्रगति के लिए साधक अपनी आतंरिक चेतना का विशेष विकास इस साधना के माध्यम से कर सकता है, जिससे की निर्लिप्तता या आतंरिक बंधन मुक्ति की प्राप्ति संभव होती है. व्यक्ति मे आध्यात्म के उच्चकोटि के गुणों का विकास होता है. जीवन के दोनों पक्षों के लिए यह साधना बहुत ही महत्वपूर्ण है.

साधक को यह साधना कृष्णपक्ष की अष्टमी से करनी चाहिए. साधक को रात्रि मे १० बजे के बाद काले वस्त्र धारण कर काले आसन पर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए. इसके बाद साधक अपने सामने उन्मत भैरव का चित्र स्थापित कर पूजन करे. अगर चित्र संभव नहीं है तो प्रतीक रूप मे एक सुपारी रख ले और उसका पूजन करे. साधक इसके बाद साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना करे तथा उन्मत भैरव के गायत्री मंत्र की १ माला जाप रुद्राक्ष माला से करे. मंत्र जाप के समय साधक को गुग्गल धुप ज़रूर लगाना चाहिए.

ॐ उन्मतभैरवाय विद्महे स्वभावरहिताय धीमहि भवानरुद्रः प्रचोदयात

इसके बाद साधक उन्मत भैरव के यह विशेष मन्त्र कि ९ माला जाप करे.

ॐ ह्रीं श्रीं सर्व शत्रु बाधा नाशय उन्मतभैरवाय हूं फट

९ माला के बाद साधक फिर से एक माला उन्मत भैरव गायत्री मंत्र की करे.

ॐ उन्मतभैरवाय विद्महे स्वभावरहिताय धीमहि भवानरुद्रः प्रचोदयात

यह साधना ११ दिन की है. साधक को यही क्रम ११ दिन तक करना चाहिए. साधना पूर्ण होने के बाद माला को एक महीने तक पहिने रहे, और उसके बाद विसर्जित कर दे. साधना समाप्त होने पर शीघ्र ही शत्रु बाधा से मुक्ति मिलने लग जाती है, तथा रोज सुबह घर से बाहर निकलने से पहले पूजा स्थान पर या मन ही मन ७ बार मंत्र का उच्चारण कर के निकलने पर भगवान उन्मत भैरव सर्व प्रकार से रक्षा करते है.

Vajresharimaha Vidya sadhana

परम दुर्लभ साधना रहस्य केवल आपके लिए ही तो

भारतवर्ष की संस्कृति मे विभिन धर्मो का समय समय पर योगदान रहा है. जब गौतमबुद्ध ने भारतवर्ष मे बौद्ध धर्म का प्रचार किया ठीक उसी वक्त तंत्र भी अपने उच्चतम शिखर पर था, कापालिक सम्प्रदाय के विभिन्न मत देश मे फ़ैल चुके थे. उसी वक्त साधना की कई नूतन पद्धतिया अस्तित्व मे आई. वज्रयान पद्धति का अवलोकन करे तो मूलतः यह भारतीय वाम मार्गी साधनाओ से प्रेरित ही है. शुरुआत मे यह पद्धति का मुख्य केंद्र बंगाल तथा उडीसा हुआ करता था. भगवान श्री आदिशंकराचार्य ने सनातन धर्म की पुनःस्थापना के समय जब बौद्ध धर्म का प्रक्षेपण अस्वीकृत कर उन्हें भारतवर्ष छोड़ने पर मजबूर किया था तब वज्रयानी साधना लामाओ के माध्यम से तिब्बत तथा आस पास के प्रदेश मे पहुंची . और आगे इन साधनाओ मे शोधकार्य लगातार होता ही रहा. वज्रयानी साधनाओ मे जिन देवी देवताओं की साधना मुख्य रूप से होती है जेसे की वज्रभैरव, महाकाल, तारा और वज्रयोगिनी ये सब भारतीय तंत्र पद्धति के देवी देवताओ के ही रूप से प्रेरित है

. जिस प्रकार इस साधना पद्धति मे देवी तारा के कई रूप प्रचलित है उस प्रकार से देवी छिन्नमस्ता के भी दो रूप मुख्यतः प्रचलित है. वज्रयोगिनी और वज्रवाराही. 'वज्रयोगिनी' नाम संस्कृत बौद्ध भाषा पर आधारित होगा जो की संभवतः नेपाल या तिब्बत मे ही परिणीत हुआ होगा. देवी के इस रूप की उपासना भारत मे भी होती थी , अतः भारतीय वज्रयान मूल पद्धति मे देवी को भारतीय संस्कृत नाम 'वज्रेश्वरी' से जाना जाता है. इस प्रकार देवी वज्रेश्वरी, महाविद्या छिन्नमस्ता का ही है और अपने आप मे ही पूर्ण महाविद्या है. यह देवी की साधना उपासना भारतवर्ष मे लंबे समय से होती आई है तथा देवी के कई स्थान भारतवर्ष मे है. देवी की उपासना मुख्य रूप से शत्रुओ से मुक्ति तथा पूर्ण सुरक्षा की प्राप्ति के लिए की जाती है. सुरक्षा का अर्थ यहाँ पर सभी प्रकार की सुरक्षा से है, रोग, भय, दरिद्रता, अकालमृत्यु वगेरा जो सभी तत्व हमारे जीवन को हर पल असुरक्षित बनाते है उन सब अनिच्छित तत्वों के रक्षा के लिए देवी का आशीर्वाद लिया जाता है. प्रस्तुत साधना देवी की एसी ही साधना है जिसे सम्पन्न करने के बाद साधक अपने चारो तरफ एक सुरक्षा कवच अनुभव करेगा तथा किसी भी प्रकार की कोई भी बाधा उसके सामने आने से पूर्व ही उसे आभाष भी हो जाता है. या फिर किसी भी असुरक्षा के समय साधक को पूर्ण रक्षण प्राप्त होता है. इस प्रकार महाविद्या वज्रेश्वरी साधक तथा साधक के परिवार का कल्याण करती है. इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्प्पन करने की विधि इस प्रकार है.

इस प्रयोग को किसी भी शुभ दिन शुरू किया जा सकता है. और यह साधना ८ दिन की है. साधक रात्री काल मे १० बजे के बाद इसे प्रारंभ करे. अपने सामने महाविद्या वज्रेश्वरी या छिन्नमस्ता की कोई तस्वीर स्थापित कर दे. साधक के वस्त्र, आसान लाल रंग के रहे तथा साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए. साधक देवी का सामान्य पूजन करे और उसके बाद साधक को महाविद्या वज्रेश्वरी तथा सदगुरुदेव से साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए. प्रार्थना के बाद साधक निम्न मंत्र का २१ माला जाप मूंगा माला से करे

ॐ वं वज्रेश्वरी अभयं देहि सर्व रक्ष वज्रयोगिनि नमः

मंत्र जाप के बाद साधक साधना कक्ष मे ही भूमि श यन करे तो उत्तम है. जब ८ दिन यह साधना सम्प्पन हो जाए तो उसके बाद माला को धारण कर लेना चाहिए. माला को १ महीने धारण करने के बाद किसी देवी मंदिर मे भेंट के साथ चढा देना चाहिए.

****

Complete defence procurement – vajreshwari mahavidya

In the Indian culture of civilisation contribution of the various religions stayed at various time durations. At the time when Gautam Buddha started spreading Buddha religion in India, at the same time duration tantra was at its best height, several branches of the kapalika sect were spread in the country. At the same time many new processes of the sadhana came to existence. If we observe Vajrayana processes then these processes are seems to be basically derived from Indian Vaam Margi processes. In the beginning, the base of these processes used to be Bengol and Udisa.

Gem astroloGy

भारतीय ज्योतिष के अनेको आयाम हैं और हर आयाम कि अपनी एक अलग उपयोगिता.और सभीका आपस में एक गहरा अन्तः सम्बन्ध भी . किसी भी एक आयाम को अच्छे से जानने समझने के लिए अन्य ज्योतिष भागों की जानकारी भी उतनी ही महतवपूर्ण हैं इसे आप अलग अलग करके नही देख सकते हैं . इन्ही भागों में से एक हैं रत्न विज्ञानं .जिसकी उपयोगिता आज हजारों वर्षों से हमारे आचार्यों और परम तपस्वियों ने न केवल समझी बल्कि उसका कैसे उपयोग मानव जीवन के हर पक्ष को उत्तरोतर उन्नति के लिए अग्रसर करने में किया जा ये इस पर गहन चिंतन भी किया .अनेको सूत्र भी इस सबंध में हमें प्रदान भी करें .साधारणतः किसी भी समस्या आने पर और उसके सबंधित ज्योतिष सलाह जब भी ली जाती हैं तो साधारतः व्यक्ति किसी न किसी रत्न कि अ पेक्षा करता ही हैं .और सलाह पा कर वह काफी तनाब मुक्ता का अनुभव करता ही हैं . इस विज्ञानं से सबंध में सदगुरुदेव जी ने एक किताब बहुत वर्षों पहले " रत्न ज्योतिष" लिखी हैं जिसमे इस विज्ञानं के अनेक सूत्रों को उन्होंने विस्तार से समझाया हैं .

साधारणतः ज्योतिष विज्ञानं में अच्छी सिद्ध हस्तता न रखने वालों से आज बाजार भरे पड़े हैं . और बिना उचित अनुभव के किसीभी रत्न को अपने से सलाह मागने आये को टिका देना बहुत आसान सा हैं .पर हम किसी भी विज्ञानं को बिना अच्छे से समझे बिना अगर उपयोग करते हैं तो यहभी ध्यान में रखे कि यदि धनात्मक असर हैं तो ऋणात्मक असर भी उतना हो सकता हैं .सही और उचित रत्न किसी को बता देना इतना सहज नही हैं . हालाकि लगता जरूर हैं .एक नियम यह हैंकि लग्न से सबंधित रत्न को पूछने आये व्यक्ति को बता देना चाहिए .क्योंकि लग्न तो व्यक्ति के सम्पूर्ण यक्तित्व के सभी पक्ष से जुड़ा रहता हैं.यह सच होते हुयी भी कई बार परेशानी भी खड़ी कर देता हैं सामान्य ज्योतिषी तो इस नियम कि आदम उचित रत्न दे देगा पर हमेशा यह नियम लागू हो यह सही नही हैं सदगुरुदेव जी का स्पस्ट कहना रहा हैं कि बाबा वाक्य प्रमाणम न माना जाए कि जो बड़े लोग कह गए हैं वह हमेशा ही सही हो आवश्यक नही हैं अपने अनुभव से भी देखना चाहिए .

यहाँ पर यह तथ्य समझना चहिये कि अगर लग्न कमजोर हैं तो उससे सबंधित रत्न पहिन ने में तो उसके ऋणात्मक गुणों में और भी बढोत्तरी ही होगी .इस अवस्था में यह चुनाव तो सही नही माना जा सकता हैं .ठीक इसी तरह हर व्यक्ति के लिए किसी भी वजन का रत्न बता देना भी उचित नही हैं क्योंकि जिस ग्रह के लिए बताया जा रहा हैं वह किस राशि में हैं इस बात का बहुत संबद्ध हैं .और उचित वजन से कम या ज्यादा होना रत्न का व्यक्ति के लिए लाभ कम देगा या हानिकारक भी ज्यादा हो सकता हैं ,सदगुरुदेव ने हर राशि के हिसाब से कितना वजन होना चहिये यह समझाया हैं .हर बार शनि कि साढे साती होने पर सीधे ही नीलम पहिनने को बता देना कहाँ तक उचित हैं . क्योंकि यहाँ पर भी दशा महादशा और अन्य बातों का जानना बहुत जरुरी हैं .यहाँ एक ओर तथ्य अपने आपमें महत्वता लिए हैं कि हर रत्न पूरे जीवन भर न हो कर एक निश्चित समय तक के लिए ही व्यक्ति के लिए सफलता दायक होता हैं उसके बाद उस रत्न कि पुनः प्राण प्रतिष्ठा कर वाने से वह अ गले उतने ही बरसों के लिए पुनः लाभदायक हो जाता है .

एक योग्य ज्योतिषी जो न केबल ज्योतिष शास्त्र में प्रवीण हो बल्कि उसे कि दक्षता उतनी ही रत्न विज्ञानं में भी हो और अगर साथ ही साथ वह कर्म कांड भी जानता हैं तब वह न केबल एक सही रत्न आपके लिए चुन सकता हैं बल्कि उसे पूरी तरह से प्राण प्रतिष्ठा युक्त कर आपके लिए अनेको लाभ के द्वार खोल सकता हैं .

सदगुरुदेव ने एक ओर महत्वपूर्ण बात पर ध्यान आकर्षित किया कि अगर की प्लनेट से सबंधित रत्न व्यक्ति को पहिना दिया जाए तो यह सर्व क्षेत्र में सफलता दायक होगा .क्योंकि यह ग्रह कुंडली के समस्त ग्रहो से या भावो से जुड़ा होगा तो निश्चय ही इसका कहीं ज्यादा असर होगा .पर जिनके पास जन्म कुंडली नही हैं वह अपने लिए उचित रत्न किस महीने उसका जन्म हुआ हैं उस आधार पर पहिन कर देख सकते हैं . साथ ही साथ ज्योतिषी हस्त रेखा शास्त्र में कुछ अनुभव रखता हैं तो वह उसके आधार पर भी संभावनाओ के द्वार खोल देता हैं .और अगर यह भी संभव न हो तो आपके प्रचलित नाम कि पहले अक्षर कि सहायता से भी आपके लिए उचितरत्न का निर्धारण किया जा सकता हैं .

पूर्ण आकर्षण प्राप्ति – रक्तपद्मावती महाविद्या प्रयोग

Rakt padmavati mahavidya prayog

Most hidden secret revealed first time

पहली बार गोपनीय रहस्य इस अत्यंत दुर्लभ साधना का आपके लिए

भारतवर्ष के विभिन्न धर्मो पर आर्य संस्कृति का किसी न किसी रूप मे योगदान रहा ही है. और इस प्रकार सभी धर्मोमे साधना और रहस्यवाद किसी न किसी रूप मे निहित है. क्यों की मुख्यतः हमारी संस्कृति साधनात्मक रही है. तंत्र एक व्यवस्था है, एक पद्धति है. गुढ रहस्यों से युक्त तंत्र पथ की साधना किसी धर्म से नहीं जुडी बल्कि संस्कृति से जुडी हुई है. कालानुसार विभिन्न धर्म संस्कृतिमे इसका प्रचार होता गया. और कई धर्मो मे तांत्रिक गूढवाद का प्रचलन हुआ. जैन धर्म की तंत्र साधनाए अपने आप मे अद्भुत कही जाती है. यह साधनाए ज्यादातर गुप्त रूप से होती आई है. मंत्र साधनाओ के सात्विक पक्ष के साथ साथ, जैन संस्कृति की साधना मे तीपद्धतित्र साधनाए भी शामिल है. वैसे तो इनकी नित्यप्रार्थना तथा मंत्रजाप ही इतना तीव्र फलीभूत होता है की जीवन मे किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता. लेकिन आध्यात्मक्षेत्र के लिएभी अपने आपमें एक से एक अद्भुत साधना रत्न जैन तंत्र मे निहित है.

पुरातन जैन तांत्रिक ग्रंथो मे जिन देवी देवताओ की साधनाओ के बारे मे बताया गया है उनमे देवी पद्मावती को एक बहोत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है. देवी पद्मावती को नागलोग की देवी भी माना जाता है. देवी को अम्बिका तथा लक्ष्मी दोनों का समन्वित रुप मे माना जाता है. पद्मावती देवी की उपासना मूल रूप से ऐश्वर्य धन-धान्य सुख और सौभाग्य की प्राप्ति के लिए की जाती है. देवी पद्मावती के विभिन्न स्वरुप है, जिनमे से एक तीव्र स्वरुप है रक्तपद्मावती. देवी रक्तपद्मावती महाविद्या कमला का ही स्वरुप है. देवी के इस स्वरुप की साधना गुप्त है. इस साधना करने पर साधक को ऐश्वर्य की प्राप्ति होती ही है लेकिन इसके साथ साधक को पूर्ण आकर्षण शक्ति की प्राप्ति होती है. साधक का पूर्ण शरीर तथा विशेष कर आँखों मे एक आकर्षण छा जाता है. जो भी साधक के संपर्क मे आता है वह बार बार साधक से मिलने की आशा रखता है. इसी आकर्षण से साधक को जीवन के सभी क्षेत्रो मे विशेष अनुकूलता मिलती है. साधक के संपर्क मे आने वाले सभी व्यक्ति साधक के अनुकूल ही रहते है तथा साधक धन यश और कीर्ति की प्राप्ति कर लेता है.

इस साधना को साधक किसी भी सोमवार की रात्रि मे १० बजे के बाद शुरू करे. साधक अपने सामने देवी पद्मावती का चित्र स्थापित करे. दिशा उत्तर रहे. साधक का आसान तथा वस्त्र लाल रंग के हो. साधक देवी के चित्र का सामान्य पूजन सम्प्पन करने के बाद देवी का ध्यान करे. पद्मावती देवी रक्त कमल पर लाल वस्त्रों मे बेठी है तथा जिन्होंने सर्प का मुकुट धारण किया हुआ है ऐसा ध्यान करना चाहिए. इसके बाद साधक मूंगामाला से निम्न रक्त पद्मावती के विशेष मंत्र का जाप करे. यह मन्त्र अपने आप मे कई विशेषताओं को धारण किये हुए है और जैन तंत्र के पुरातन ग्रन्थ रक्तपद्मावतीकल्प मे यह मंत्र निहित है. साधनाकाल मे साधक ब्रम्हचर्य का पालन करे. सात्विकआहार ही ग्रहण करे. अगर संभव हो तो भूमि श यन करे.

ॐ ऐं क्लीँ ह्स्क्लीँ ह्रीं ह्सौं देवि पद्मावति नमः

(Aum Aeing Kleeng Hskleeng Hreeng hsauh Devi Padmaavati Namah)

साधक को इस साधना मे १०००० जाप ७ दिन मे पुरे करने है. रोज १४ माला करने पर यह मंत्र जाप हो जाता है. साधना समाप्ति पर साधक माला को विसर्जित कर दे.

****

Complete attraction gaining – raktapadmaavati Mahavidya Prayoga

There is contribution in one or another way by Aryan civilisation on various religions of India. And this way, various religions contains sadhana and mysticism in any form. Because basically our civilisation has remained sadhana involved. Tantra is a method, system. Sadhana filled with various mysteries of tantra path are not incorporated with religion but are attached with culture and civilisation. Time while, circulation of tantra came in various religions. And thus, in various religions tantric mysticism took place. Sadhana of Jain religion are known are wonderful.

RADHA MAHAVIDYA PRAYOG siddhi sadhana

पूर्ण माधुर्य प्राप्ति हेतु एक परम दुर्लभ साधना

भगवान बिष्णु के सभी अवतार कोई न कोई विशेष उद्देश्य और लीला के साथ इस पृथ्वी पर अवतरित हुए. इन अवतारों मे भगवान कृष्ण का अवतार अपने आप मे एक ऐसा लीला सम्पन्न अवतार था की शब्दों से जिसकी अभिव्यक्ति संभव ही नहीं है. अपने जीवन काल मे श्रीकृष्ण ने न जाने किन किन रूप मे कोटि कोटि शिक्षाए मनुष्य लोक मे अर्पित की है. श्री कृष्ण का तंत्र से एक अत्यधिक निकट सम्बन्ध रहा है. यु तो मूल रूप विष्णु के आधार पर ही पूरा वैष्णव तंत्र है. यहाँ चर्चा कृष्ण के सबंध मे तंत्र पक्ष के ऊपर हो रही है. लेकिन जिस प्रकार से लोक कथा तथा कहानियों मे राधा का स्थान कृष्ण से अलग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार ठीक तंत्र शास्त्र मे भी राधा को बराबर कृष्ण जितना ही स्थान मिला है.

तथा नारद पंचरात्र के अनेक ग्रन्थ और संहिता मे कृष्ण से सबंधित तांत्रिक साधनाओ का बराबर विवरण रहा है उतना ही राधा की तांत्रिक साधना के बारे मे भी विवरण मिलता ही. राधा कृष्ण के सबंध मे विवेचन भागवत पुराण, वैष्णव गीत गोविन्द, ब्रम्ह विवर्त पुराण,गौतामीय तंत्र, गर्गसंहिता इत्यादि मे मिलता है. तथा राधा से सबंधित पुरातन कई ग्रन्थ है जो की लुप्त या लुप्तप्राय हो गए है जेसे की चमत्कारचन्द्रिका, राधा ह्रदय, राधाअष्टकम, रूपचिंतामणि, राधास्तव, राधातन्त्रं इत्यादि. सबंधित ग्रन्थ मे राधा के विभिन्न रूप तथा तंत्र साधनाओ के बारे मे विधि विधान प्राप्त होते है. लेकिन आखिर राधा को इतना महत्व क्यों दिया गया और भले ही आज नहीं लेकिन किसी वक्त मे राधा से सबंधित साधनाए इतनी प्रचलन मे क्यों रही? इसका उत्तर मंथन करने पर स्वयं मिल जाता है की ब्रम्हांड के त्रिदेव के रूप मे ब्रम्हा, विष्णु तथा महेश है. अब इन मुख्य देव का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अवतार पृथ्वी पर कृष्ण के रूप मे कार्यवंतित हो, तब उनकी शक्ति ऐसे ही कोई सामान्य शक्ति नहीं हो सकती. जब की राधा तो उनकी सब से निकट थी , सबसे प्रिय. फिर राधा का सामान्य होना या देवी राधा को सामान्य द्रष्टि से देखना हमारे अज्ञान को ही प्रकाशित करता है. जब की भगवान शिव पार्वती से राधातन्त्रं मे कहते है की राधा अपने आपमे ब्रम्हांडीय मुख्य शक्ति ही है. और वैसे भी प्रेम के इतने उच्च गुण को धारण कर भगवान श्री कृष्ण के ह्रदय पर निवास करने वाली शक्ति कोई सामान्य शक्ति हो ही नहीं सकती. इस प्रकार पुरातन युग मे तंत्र क्षेत्र मे और खास कर के वैष्णव तंत्र मे राधा को एक महाशक्ति के रूप मे पूजा गया है.

लेकिन शाक्त मत के सात्विक और राजसिक साधको ने इस महाशक्ति को और भी विशेष रूप से स्थानांतरित किया. इस राधामहाशक्ति को महाविद्या का स्थान दिया गया. क्यों की शाक्त मत की धारणा मे सभी इष्ट शक्ति अपने आप मे पूर्ण आदि शक्ति ही होती है. इस लिए अगर राधा की साधना होती है तो राधा भी अपने आप मे मूल आदि शक्ति है जो की शिव के द्वारा प्रमाणित है. इसके अलावा तंत्र साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रन्थ गुह्यातिगुह्य तंत्र मे वर्णन दिया गया है की महाविद्याए विष्णु के सभी अवतारों को मुख्य शक्तिया रही है. अतः इस प्रकार कृष्ण की मुख्य शक्ति के रूप मे राधा तथा उसी को महाविद्या रूप मे तंत्र मे स्वीकार किया गया तो इसमें आश्चर्य ही क्या. साधना जगत मे राधा महाविद्या से सबंधित कई साधनाए प्रचलित रही है. लेकिन इस महाविद्या के सबंध मे गुप्त प्रयोग भी तांत्रिक पंथो मे गुरु मुखी परंपरा से चले आए है. यह प्रयोग अपने आप मे ही पूर्ण तिव प्रभाव युक्त प्रयोग होते है. क्यों की जब देवी राधा को महाविद्या रूप मे स्वीकार किया गया है और श्री कुल की यह महाविद्या जब इष्ट रूप मे हो तो कार्यसिद्धि होती ही है.

राधा महाविद्या के सबंध मे जो प्रयोग प्रस्तुत किया जा रहा है यह प्रयोग पूर्ण माधुर्य प्राप्ति के लिए है. इसका अर्थ है की साधक अपने अंदर उन तत्वों को उतारे जिससे की व्यक्ति के अंदर की मधुरता बहार आ पाए. महाविद्या राधा तो पूर्ण प्रेम तत्व को अपने अंदर धारण किए हुए है. यह बिलकुल ही सत्य है की प्रेम और मधुरता एक दूसरे के पूरक है. या यु कहा जाए के दोनों को अलग नहीं किया जा सकता. मधुरता का अर्थ यहाँ पर है उस आधार तत्व की प्राप्ति की जिस पर प्रेम अपना आकार ले सके. यहाँ पर प्रेम का अर्थ लौकिक द्रष्टि से नहीं है, यहाँ पर प्रेम का अर्थ है आतंरिक प्रेम, खुद से, इष्ट से, प्रकृति से, विशुद्ध प्रेम जहा पर वासना नहीं है. जहा से व्यक्ति शुद्ध चित्त हो कर साधना जगत के अत्यधिक गुढ़ रहस्यों को भी समज लेता है. इस प्रकार के माधुर्य को प्राप्त करने के लिए राधा महाविद्या का यह प्रयोग है, जिसे करने के बाद साधक के चित मे एक एक आनंद और सौंदर्य का प्रस्फुटन होता है, आँखों मे सम्मोहन तथा चहरे पर आकर्षण छा जाता है. उसके संपर्क मे आने वाले सभी व्यक्तियो के लिए उसका व्यवहार अत्यधिक रोचक और आकर्षण युक्त हो जाता है. और सभी व्यक्ति उसके माधुर्य से सम्मोहित से हो कर उसके अनुकूल ही रहते है. यु भौतिक तथा आध्यातिम दोनों पक्षों के सबंध मे यह प्रयोग अत्यधिक उत्तम है.

इस प्रयोग को शुक्रवार की रात्री १० बजे के बाद से करना चाहिए. साधक को सफ़ेद वस्त्र पहेन कर सफ़ेद आसान पर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिऐ. अपने सामने सफ़ेद वस्त्र बिछा कर उस पर राधा देवी का कोई चित्र स्थापित करे. उसके बाद उसका सामान्य पूजन करे. धुप व् घी का दीपक समर्पित करे. इसके बाद देवी को महाविद्या रूप मे साधना मे सफलता तथा माधुर्य प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे. उसके बाद साधक स्फटिक माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जा करे.

ॐ कृष्णप्रिये महाशक्तिं नमः

साधक मन्त्र जाप के बाद राधामहाविद्या को मन्त्र जाप समर्पित कर दे. साधक यह क्रम एक हफ्ते तक करे. इस प्रकार एक हफ्ते के बाद साधक जाप माला को किसी कृष्ण या राधाकृष्ण मंदिर मे चढा दे तथा आशीर्वाद प्राप्त करे. साधना समा होने पर साधक उपयुक्त लाभों की प्राप्ति कर लेता है.

****

RADHA MAHAVIDYA SADHANA

Every Incarnation of Lord Vishnu on earth keeps a special purpose and pageant in itself. In these reincarnations the incarnation of Krishna was the most pageant full one which is really speechless. In his lifetime its countless how many teachings and learnings he offered to people. The relation of tantra with Shree Krishna was so close. Basically the whole Vaishnav Tantra is based on Lord Vishnu only. Here I am talking about the Tantra part of Shree Krishna. But the way it can't be denied the detachment of Radha from Krishna in many stories exactly in tantra Radha is equally treated on same level as Krishna has been treated yet. And in Narad Panchratra granthas and in many more sanhitaas it has been mentioned about the tantric sadhnaas releted to Shree Krishna and same goes with Radha also.

The description regarding Radha Krishna has been mentioned in Bhagvat Puran, Vaishnav Geet Govind, Brahma Vivart Puran, Goutmeeya Tantra, Gargsanhitaa etc.. And the data related to Radha in many arch effects are just disappeared like Chamatkarchandrika, Radha Hriday, Radhaashtam, Rupchintamani, Radhastav, Radhatantra etc. in such related granthas we can find her various forms and processes of sadhnas related to her. Actually the question is why such sadhana are in light and why such importance has been given to Radha ? Now after introspecting u will get the answer that the three Gods of Universe are Brahma,Vishnu and Mahesh. Now out of these one of the main one is incarnated then his Shakti would not be any normal one.

एक सत्य अनुभव भैरव साधना ..तंत्र के परिपेक्ष में ..

A true incedent about tantra sadhana
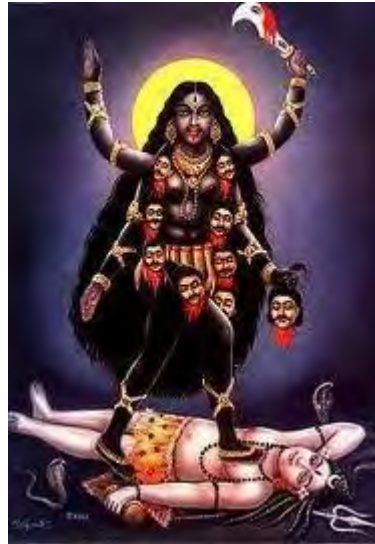
तंत्र मार्ग की गंभीरता को इंगित करता हुआ

तंत्र क्षेत्र के कुछ ऐसे अज्ञात अज्ञात नियम हैं जिनके बारे में लोग कुछ तो जानते हैं और कुछ नही भी . यह सब ने सुन रखा हैं कि यदि कुछ प्रयोग किया और कुछ गलत हो गया तो .. पर कभी सोचा हैं कि क्या गलत हो जायेगा..एक उदाहरण से समझे कि आपको किसी ने बोल दिया कि एक लौंग खा लो आपका काम सिद्ध हो जायेगा तो इतनी सी बात में क्या गलत होने कि सम्भावना हैं.. कुछ भी नही . पर इतना भय क्यों.. और ..पर चाहे वह तंत्र प्रयोग हो या कोई और प्रयोग सार्वभौमिक नियम हैं कर्मगत सिद्धांत या नियामकों का जो किसी भी हाल में किसी के लिए भी नही बदल सकता .. हाँ अगर वह किसी कारण वश इन नियम के ऊपर हो गया हो तो.. पर वहां भी कुछ और सूक्ष्म नियम कार्य करते हैं जिनका पता केवल उसी स्तर के लोगों को ही हो सकता हैं इन बातों को समझना सामान्य क्या उच्चस्तर के योगियों के लिए भी कठिन हैं .

एक कारण तो यह हैं की योगी कभी भी किसी भी प्राकृतिक नियम में वाधा नही बनते ..उनकी सामान्यतः धारणा यही रहती हैंकि जो हो रहा हीं वह हो जाने दो ..जब तक कि कोई अति विशेष प्रयोजन न हो . कक्योंकि कोई कर्म का प्रभाव कम होगा उससे अभी नही तो आगे के जीवनों में उच्चता के अवसर कहीं और जयादा.. पर जब जीवन आज हैं तब भविष्य गत कल्पना कहाँ तक उचित हैं. दो नियम है तंत्र गत .बहुत सरल से पर अपने आप में अत्यंत गहनता लिए हुए

कि जो क्रोध रहित हैं . या हो उस पर तंत्र प्रयोग कामयाब नही हो पता हैं . जिस पर किया जाना हैं अगर नुक्सान पहुचने वाले प्रयोग तो उसका आपके प्रति कुछ वैमनस्य तो हो.

दूसरा यह कि अकारण किसी पर किया गया प्रयोग..जिससे आपको कोई भी शत्रुता ना रही हो ..कामयाब भले ही हो जाए पर विपरीत प्रभाव आपको भी झेलने पड़ेंगे .

अब प्रश्न यह हैं कि कितना ???

इस हेतु आपके सामने एक सत्य घटना ..

मेरे एक मित्र को चाहे समय का कुप्रभाव या विधि का विधान या व्यक्तियों का अपना स्वाभाव अच्छी खासा उनका गृहस्थ जीवन गतिमान हो रहा था. तभी अचानक एक दम से सब कुछ उल्टा पुल्टा हो गया और उनकी पत्नी अपने बच्चो को लेकर अलग हो गयी और अनेको प्रकार के अनर्गल आरोप मेरे मित्र और उनके वृद्ध माता पिता पर उन्होंने लगाये . आज के समय के विधि नियम इस सन्दर्भ में इतने कठोर हैं कि ..वहुधा अनेको बार सामान्य व्यक्ति अगर उसकी चपेट में आ गया तो उसका तो सारे कर्म गति यही पर हो जाती हैं.

मेरे मित्र ने बहुत कोशिश कि पर .... उस पक्ष ने अपनी बेतुकी जिद छोड़ने को तैयार ही नही. खास कर यह कि अपने वृद्ध माता पिता का त्याग कर दो.उसी समयांतराल में एक बार बातों बातोंमे मैंने कुछ ऐसे प्रयोग के बारे में चर्चा कर रहा था. कुछ भैरव प्रयोग जिनसे व्यक्ति तो क्या सारा आस पास का क्षेत्र ही नष्ट होजाता हैं उन्होंने मुझसे वहप्रयोग माँगा. पता नही क्यों . किसी अज्ञात आशंका से मैं वह प्र योग किसी को भी देने से डरता था. तो . उस के लिए मैं तैयार नही हुआ पर यह जरुर कहा कि सदगुरुदेव जी कि किताब हैं भैरव साधना उसमे एक से एक प्रयोग दिए गए हैं जो व्यक्ति कि मनोकामना पूरी कर देते हैं .

और इस कलि काल में भैरव प्रयोग से बढकर और जल्दी सफलता देने वाले प्रयोग हैं कहाँ . या भैरव प्रयोग या हनुमान प्रयोग ही कहीं सफलता तेजी से देने में समर्थ हैं. पर हनुमान साधना के शुद्धिगत नियम इतने जयादा होते हैं कि समान्य व्यक्ति उनकी पूजा करने को तो हमेशा तैयार रहता हैं पर साधना करने के नाम से दस बार सोचता हैं. खासकर यदि साधना अवधि जयादा हो तो. वह किताब मैंने सहर्ष उन्हें दे दी और जब...और कई दिन उपरात मेरेमित्र ने मुझे बताया कि उन्होंने जो साधना कि उसका फल भी उनको प्राप्त हो गया और बहुत अच्छा रहा .

मैंने उस समय तो कोई ज्यदा ध्यान नही दिया क्योंकि हर व्यक्ति कि अपनी इच्छा हैं अगर वह बताना चाहे तो उसका स्वागत हैं और न तो भी. और इस तरह से कुछ दिन और निकल गए . किसी कार्यवश मैं अपने गृह नगर क्षेत्र से बा हर गया लौट कर आया तो मेरे मित्र और उनके माता पिता को बहुत कि त्रासदायक परेशानी से जू झ रहे थे.मेरे लौट कर आते आते तक उनके स्वयम के प्रयास से वह उस तत्कालीन समस्या से तो बाहर गए पर अब जो कोर्ट कच हरी का अंतहीन श्रंखला चल पड़ी उसका तो कोई अंत ही न था. और वे आज भी ..सब कुछ सही होते हुए ..भी.. पर एक दिन मैंने उनसे पूंछा कि कौन सा प्र योग क्योंकि उन्होंने कोई साधना सामग्री तो मगवायी नही थी. उन्होंने भैरव साधना पुस्तक के अंत में दिए एक प्रयोग को बिना किसी साधना सामग्री के संपन्न किया . और . और जब मैंने उन्हें एक बार वह पुस्तक भी दी जिसमे भैरव जी का वह प्रयोग भी था तो पाया कि उस पेज पर सिंदूर के निशान हैं . बड़ा आश्चर्य सा लगा. बाद में मेरे मित्र ने मुझे बताया कि उन्होंने वह प्रयोग किया था. और जो संकल्प ले कर किया था उससे विरोधी पक्ष के वकील का एक दुर्घटना में हाथ पैर टूट गए .

हलाकि मेरे मित्र भी दीक्षित हैं. और ..पर इतने दिनों से लगातार परेशां होने के कारण उन्होंने स्वयं ही यह निर्णय ले लिया था. मेरे मित्र ने कहा कि यह बहुत आश्चर्य कि बात हैंकि यह प्रयोग मैं और मेरी माताजी ही कर रही थी. तो जब वह ततकालीन परिस्थिति उनके सामने आई तो केबल उन्हें और उनकी माताजी को ही वह शरीरिक रूप से झेलना पड़ी ...निश्चय ही पिताजी को मानसिक तो बहुत परेशानी हुयी ..पर उन्हें वह..शारीरिक .. त्रासदा से नही जाना पड़ा.अकारण ही किया गया प्रयोग जो किसी भी अनजाने को जो केबल अपना कार्य कर रहा हो .उस पर कितना प्रभाव डाल सकत हैं . यह मैंने तब जाना .

यहाँ तक कि वाराणसी के प्रख्यात तांत्रिक और योगी स्व. श्री अरुण कुमार शर्मा जी ने भी एक जगह उल्लेखित किया हैं कि किसी कारण वश उन्हें एक प्रयोग किसी पर ऐसा ही करना था. पर उस प्रयोग के परिणाम वेसे नही आ रहे थे जैसा उन्होंने सोच रखा था. एक क्योंकि वह व्यक्ति से सीधे उनका कोई परिचय था ही नही. वह अपने मित्र के लिए कर रहे थे. एक दिन वे सीधे उस व्यक्ति के घर पर पहुंचे जिस पर प्रयोग किया जाना था. उस व्यक्ति ने इनका परिचय जान कर जी भर कर अपमान किया. और श्री शर्मा जी बोले मेरा कार्य हो गया .अब मैंने जब प्रयोग किया तो वह पूर्ण सफल रहा .

सदगुरुदेव के द्वारा दिए गए कितने भी उच्च कोटि के अगर संहारक प्रयोग हो तो भी कभी भी किसी पर भी करने कि गलती न करे क्योंकि ये सभी प्रयोग सदगुरुदेव जी कि पार्मेश्वरी शक्ति से कीलित हैं..किसी भी निर्दोष पर जिसका उस घटना से आपका कोई लेना देना न हो अगर होगा तो वह प्रयोग कभी सफल न होगा.

तंत्र तो सीधे सादे हज़ारो वोल्ट के नगे बिजली के तार कि तरह हैं कि अगर आपने नियम तोडा तो परिणाम भी झेलने के लिए तैयार हो जाए.

****

mahavidya Vimla bhairvi sadhana

पूर्ण भौतिक सुखो की प्राप्ति हेतु अद्भुत साधना विधान

शाक्तमत की विशेष साधना पद्धतियों का जहा पर विकास हुआ ऐसे प्रमुख स्थानों मे उडीसा भी एक स्थान था. उड़ियानपीठ शाक्त साधनाओ का गढ़ था और तन्त्र के क्षेत्र मे इस स्थान की अपने आप मे एक अत्यधिक विशेष महत्ता हुआ करती थि. विभिन्न शक्तियो के सबंध मे उडीसा तथा आसपास के क्षेत्र मे जो कुछ भी साधनाए होती थि वह अपने आप मे विलक्षण थि. देवी के कई रूप तो सिर्फ साधको के मध्य ही प्रचलन मे रहे है. पूरी स्थित भगवान जगन्नाथ का स्थान तो अत्यधिक प्रसिद्द है. इसी स्थान को तांत्रिक ग्रंथो मे पुरुषोत्तम स्थान या पुरुषोत्तम क्षेत्र कहा गया है. कालिका पुराण जो की तंत्रदर्शन की द्रष्टि से एक उत्तम ग्रन्थ है उसमे भगवान जगन्नाथ को तंत्र देव कहा गया है. इसी प्रकार आसपास का पूरा क्षेत्र योगिनी साधनाओ के लिए भी किसी समय अत्यधिक प्रख्यात रहा है. कहा तो ये जाता है की भगवान जगन्नाथ की पूजा भी पहले पूर्ण तांत्रिक प्रक्रियाओ तथा विधानों से ही होती थी .

इस स्थान को महाविद्या त्रिपुरसुंदरी की श्रीसाधना से भी जोड़ा गया है, तांत्रिक मान्यताओ के अनुसार इस स्थान पर काली, भुवनेश्वरी, तथा त्रिपुरसुंदरी बीज मंत्रो से व्यापक पूजन रोज होता था जिस वजह से यहाँ पर साधना करने वाले व्यक्ति को आध्यात्मिक उपलब्धिया तो होती ही थि, लेकिन भौतिक द्रष्टि से भी वह अत्यधिक सम्प्पन बन जाता है. भगवान जगन्नाथ को तंत्र क्षेत्र मे महाभैरव का ही स्वरुप माना जाता है. इनसे सबंधित कई प्रकार की साधना यामलतंत्र ग्रंथो मे उपलब्ध है. मगर भगवान जगन्नाथ की शक्ति के बारे मे अत्यधिक कम विवरण मिलता है. भगवान की शक्ति देवी विमला है. देवी विमला महाविद्या भैरवी का ही रूप मानी जाती है. एक मत के अनुसार देवी मात्रिका देवी समूह मे से एक है. देवी से सबंधित विवरण प्राणतोषीणी तथा रुद्रयामल जेसे आदि ग्रंथो मे मिलता है तथा इन्हें इस महान तांत्रिक क्षेत्र की देवी माना जाता है. पूरी स्थित देवी के स्थान को शक्तिपीठ भी माना जाता है जहा पर सती के चरणखंड का विच्छेद गिरा था. देवी की साधना प्राचीन काल मे उच्चकोटि के शाक्त साधको के मध्य प्रचलित थि. देवी के बारे मे प्रचलित है इनकी उपासना अगर सौम्य रूप से की जाए तो वह साधक के जीवन मे किसी भी प्रकार का आभाव नहीं रहने देती, धन यश ऐश्वर्य मान उत्तम परिवार के साथ सभी प्रकार के सुखो का साधक उपभोग करता है. वही देवी के उग्रस्वरुप की उपासना साधक को षट्कर्म की सिद्धि प्रदान करती है.

प्रस्तुत साधना प्रयोग देवी के सौम्य पक्ष से सबंधित है, जहा साधक देवी विमला भैरवी महाविद्या की साधना को सम्प्पन कर पूर्ण धन, यश, तथा भौतिक सुखो की प्राप्ति कर सकता है. साधक के जीवन मे चाहे कोई भी समस्या हो, चाहे वह धन का अभाव, परिवार मे क्लेश, या फिर सन्मान से सबंधित हो देवी साधक के सभी पक्षों मे पूर्णता प्रदान करती है तथा साधक के भौतिक जीवन को एक उत्तम जीवन बना देती है.

इस महत्वपूर्ण साधना को घर के एकांत कक्ष मे करे जहा पर मंत्रजाप के समय किसी और व्यक्ति का प्रवेश न हो. साधक किसी भी शुभ दिन से यह साधना शुरू कर सकता है. समय रात्री काल मे १० बजे के बाद का रहे. साधक को इस साधना मे सफ़ेद वस्त्र तथा आसान का उपयोग करना चाहिए तथा साधक का मुख पूर्व दिशा की और हो. अपने सामने साधक एक घी का दीपक लगा ले और मन ही मन देवी को साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना करे. इसके बाद साधक स्फटिक माला से मंत्रजाप प्रारंभ कर दे. साधक को निम्न मंत्र की २१ माला करनी है.

ॐ श्रीं कलिं ह्रीं विमला क्षेत्रेश्वरी नमः

मंत्रजाप पूर्ण होने तक घी का दीपक जलते रहना चाहिए. इस प्रकार यह साधना ११ दिन तक करने पर साधक को सभी प्रकार के भौतिक सुखो की प्राप्ति शीघ्रातीशीघ्र होती है. साधक को माला का विसर्जन नहीं करना है. साधक आगे जब भी यह मंत्र करना चाहे तब इस माला का उपयोग कर सकता है.

****

****

bhairav saayujjy das mahavidya sadhana

पहली बार इस परम गोपनीय साधना का रहस्य

सम्पूर्ण तंत्र का मुख्य आधार शिव और शक्ति ही है. दूसरे शब्दों मे इसे ही प्रकृति तथा पुरूष की संज्ञा दी जाती है. शिव और शक्ति का विखंडन ही मुख्य रूप से समस्त जड़ चेतन की गतिशीलता का आधार है. क्यों की गतिशीलता के लिए जिन क्रियाओ से गुजरना पड़ता है, वह क्रियाओ के लिए शक्ति के विविध रूपों की आवश्यकता होती है. जेसे की खनिज तेल तो एक ही होता है लेकिन विविध आवश्यकताओ के अनुसार उसको विखंडित कर के पेट्रोल, गेस, केरोसिन आदि को अलग अलग कर दिया जाता है. मूल रूप से तो वह पृथ्वी का ही एक भाग है. ठीक इसी प्रकार शक्ति के विविध रूप पृथ्वी की गतिशीलता के लिए अनिवार्य है. शक्ति के मुख्य विखंडन को भाव रूप तिन भागो मे विभाजित किया गया. ज्ञान शक्ति, इच्छाशक्ति तथा क्रिया शक्ति. यही शक्तिया क्रमशः सत्, राजस, तथा तमस भाव को धारण किये हुए है.

इन्ही शक्तियो के आपसी संयोग से जो मुख्य १० शक्तिओ का निर्माण हुआ वह दस महाविद्या है. इस प्रकार यह महाविद्या उच्चतम शक्तिया कही जाती है. इन शक्तियो के शिव स्वरुप को भैरव कहा जाता है. अतः महाविद्याओ के माद्यम से यह महाभैरव इन शक्तियो का अपने साथ संचार कर ब्रम्हांड की गति को नियंत्रित करते रहते है.

तंत्र क्षेत्र मे तो इनकी साधना अत्यधिक विलक्षण कही जाती है. कई साधक अपने जीवन को दांव पर लगा कर के भी एक महाविद्या की कृपा प्राप्त करने के लिए तैयार होते है. इसी प्रकार तंत्र साधको मे से ज्यादातर का यह स्वप्न होता है की वह जीवन मे कम से कम किसी एक महाविद्या की कृपा प्राप्त कर ले तथा अपने जीवन को धन्य करे. क्यों की जो ब्रम्हांड को नियंत्रित करने वाली मुख्य १० शक्तियो मे से एक शक्ति हो उनकी कृपा प्राप्त कर ले तो फिर जीवन मे क्या अभाव रह जाएगा. लेकिन यह साधनाए इतनी अधिक कठिन तथा श्रमसाध्य है की साधक को चरम कष्ट तथा वेदना का अनुभव होता है. इस प्रकार साधक महाविद्याओ की साधना करने से कतराते भी है. कई बार तो जीवन भी जोखिम मे पड़ जाता है. इसके अलावा अगर हिम्मतवान साधक यह कसोटी पर खरा उतर भी जाए तो भी लाखो मंत्र जाप कुछ ही दिनों मे सम्प्पन कर देना भी आसान नहीं है. साधना समय मे आने वाली बाधाए तो अलग ही है. लेकिन जब इन सब के बाद जब कोई महाविद्या की कृपा द्रष्टि हो जाती है तब उसके जीवन मे कुछ अभाव नहीं रहेगा. धन, यश, मान-संम्मान, ऐश्वय, पुत्र-पौत्र जेसे सभी भौतिक सुखो तथा उपभोग की प्राप्ति कर लेता है तथा आध्यात्म के क्षेत्र मे वह कई प्रकार की विभिन्न सिद्धियो की भी प्राप्ति कर लेता है.

तंत्र जगत के नियमानुसार कुछ साधनाए करने पर उनसे जुडी हुई दूसरी साधनाए करने मे अनुकूलता तथा शीघ्र सिद्धि की प्राप्ति संभव होती है. जेसे की हनुमान साधना करने के लिए अगर पहले राम साधना कर ली जाए तो हनुमान साधना मे ज्यादा सफलता मिलती है. गौरी साधना से पहले शिव साधना करने पर देवी गौरी त्वरित फलीभूत होती है, ठीक इसी प्रकार अगर साधक किसी महाविद्या की साधना कर रहा है तो उसे उससे सबंधित भैरव की साधना करने पर त्वरित सफलता प्राप्त होती है. जेसे की महाकाली साधना करने के पूर्व महाकाल साधना कर ली जाए तो महाकाली प्रसन्न हो कर तुरंत दर्शन देती है. क्यों की भैरव तथा भैरवी जुड़े हुए है तथा दोनों एक हो कर ही कार्य को संपादित करते है. लेकिन तंत्र मे कई महासिद्धो ने अपने तपोबल से इस क्षेत्र मे खोज कर के और भी उत्तम साधनाए प्रदान की. कई महाविद्या मंत्रो मे उनसे सबंधित भैरव के सम्पुट दिये गए ताकि दोनों की कृपा एक साथ प्राप्त हो जिससे की आतंरिक तथा बाह्य दोनों रूप मे साधक का पूर्ण भौतिक तथा आध्यात्मिक विकास हो सके. इस प्रकार की उच्चतम साधनाऐ गुरु मुखी प्रणाली से गतिशील रही. गुरु अपने जीवन काल मे सिर्फ चुनिन्दा शिष्यों को ही इस प्रकार की साधना विधि का ज्ञान करते थे. जिससे की त्वरित ही वह एक महाविद्या तथा उनसे सबंधित भैरव की कृपा प्राप्त कर के अपने जीवन को उर्ध्वगामी बना सके. दसो महाविद्याओ के सबंध मे निम्न लाभ त्वरित रूप से मिलते है यह देखा गया है

- महाकाली के प्रभाव से उसकी वाणी मे सौंदर्य तथा मधुरता आ जाती है, लोग उसकी वाणी को सुनने के लिए हमेशा लालायित रहते है तथा सभी व्यक्ति मन ही मन उस व्यक्ति को बार बार सुनाने की इच्छा रखते है
- महाविद्या तारा साधक की ज्ञान शक्ति तथा स्मरण शक्ति को तीव्र बना कर कृपा प्रदान करती है तथा साधक को धन का आभाव नहीं रहता

- महाविद्या कमला पूर्ण गृहस्थ सुख तथा भौतिक क्षेत्र मे सफलता की प्राप्ति का आशीर्वचन देती है.
- महाविद्या छिन्नमस्ता साधक को अपने कार्य क्षेत्र मे पूर्ण विजयश्री तक पहोचा देती है
- महाविद्या बगला साधक के सभी शत्रुओ का स्तम्भन कर उसे शत्रु बाधा से बचाती है
- महाविद्या त्रिपुरसुंदरी साधक के सभी कष्ट तथा अभाव को दूर कर पूर्ण स्वास्थ्य अर्पित करती है,
- महाविद्या धूमावती साधक के जीवन मे आने वाली समस्त बाधाओ तथा दुर्भाग्य को हटा देती है
- महाविद्या भैरवी साधक को आतंरिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण सौंदर्यवान होने का आशीवाद देती है.
- महाविद्या भुवनेश्वरी की कृपा से साधक के सभी आध्यात्मिक गुणों का विकास पूर्ण रूप से हो जाता है
- महाविद्या मातंगी की कृपा से साधक के अंदर विविध प्रकार की कलाओ का उदय होता है तथा वह विशेष कलाओमे पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करता है जेसे की संगीत, चित्र इत्यादि.

अगर सबंधित भैरव से सम्पुटित महाविद्या का मंत्रजाप अगर व्यक्ति कुछ ही दिन करे तो भी उसे उस महाविद्या से त्वरित लाभ की प्राप्ति हो सकती है.

लेकिन प्रस्तुत साधना तो अपने आप मे ही अजूबा है. क्यों की यह किसी एक महाविद्या से नहीं वरन दसो महाविद्याओ के सबंध मे है. प्रस्तुत साधना मे सभी महाविद्याओ का प्रभाव रहता है. और साधक अगर इसे पूर्ण श्रद्धा और समर्पण के साथ सम्प्पन कर ले तो उसे ऊपरवर्णित सभी लाभों की प्राप्ति होती है. अगर साधक इस साधना को करे तो उसे उपरोक्त सभी लाभ मिलते है लेकिन इसके अलावा भी इस मंत्र का एक और अद्भूत रहस्य यह है की यह मंत्र दसवक्त्र महाभैरव से सबंधित है. यह महाभैरव को दसो महाविद्याओ के भैरव माना जाता है या यु कहा जाए की दसो महाविद्याओ के सम्मिलित स्वरुप के यह भैरव है. इस लिए यह साधना कम समय मे ही सभी लाभों की प्राप्ति करा देती है. इस प्रकार की साधना बहोत ही गुप्त रही है तथा साधना के क्षेत्र मे हर व्यक्ति इस प्रकार की साधना का महत्व स्वयं ही समज सकता है.

इस महत्वपूर्ण साधना का विधान इस प्रकार है

- इस साधना को साधक किसी भी शुभदिन शुरू कर सकता है. समय रात्री मे १०:३० के बाद का रहे.
- यह ११ दिवसीय प्रयोग है. साधक को इस साधना मे मूंगामाला का उपयोग करना चाहिए. अगर मूंगामाला उपलब्ध नहीं है तो साधक विद्युतमाला, शक्तिमाला या रुद्राक्षमाला का भी प्रयोग कर सकता है.
- साधक लाल रंग के वस्त्र तथा आसान का उपयोग करे. साधक का मुख पूर्व की तरफ हो
- साधक अपने सामने लाल वस्त्र पर प्रतीक रूप मे एक सुपारी रख ले. इस सुपारी का पंचोपचार पूजन कुंकुम, गंध(चन्दन/अश्गंध), पुष्प, धुप-दीप, नैवेद्य से करे. साधक चावल का भी प्रयोग करे. नैवेद्य मे किसी मिठाई का उपयोग किया जा सकता है जिसे मन्त्र जाप के बाद साधक खुद ग्रहण करे.

- पूजन के बाद साधक साधना मे सफलता की प्रार्थना कर २१ बार निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण करे

ध्यान:
नमामि भक्त वत्सला दसवक्त्रा गीताम् ||

इसके बाद साधक मूल मन्त्र का ११ माला जाप करे

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं दसवक्त्रमहाभैरवाय ऐं ह्रीं क्लीं फट

११ माला पूर्ण हो जाने पर साधक फिर से ध्यान मंत्र का २१ बार जाप कर श्रद्धा से प्रणाम करे.

साधना पूर्ण होने पर साधक इसका प्रभाव खुद ही अनुभव करने लगेगा. साधक को माला का विसर्जन नहीं करना चाहिए तथा भविष्य मे यह मंत्रजाप के लिए साधक उस माला का उपयोग कर सकता है.

Bhairav saayujjay dash mahavidya paayoag

Main base for the complete tantra system is Shiva and Shakti. In other word they are also called as Prakriti and Purusha. The fragmentation process of Shiva and Shakti is the base of the continuity of the all inert and conscious. Because, the processes which are need to be under passed for the continuity, for those processes various forms of the different powers are primary requisition. For example rock oil or mineral oil is one but according to need, the base compound is separated though fragmentation and various products are separated like petrol, gas and kerosene etc. In the base, it is part of the earth only. This way, various forms of the powers too also requires for the continuity of the earth. Main fragmentation is devided into three ways based on their nature. Gyanashakti (knowledge power) Ichchha shakti (will power) and kriya shakti (process power). These powers are natured with Sat,Rajas and Tamas respectively.

SWARN RAHSYAM -9

अद्भुत रहस्य आपके लिए

उच्चकोटि के साधक इसी पारद शिवलिंग के प्रयोग से भूमि तत्व पर नियन्त्रण कर लेते हैं ,और की जब चाहे अपने शरीर मे भूमि तत्व का लोप कर शरीर को शून्य मे स्थित कर लेते हैं या वायुगमन कर लेते हैं .

पर एक सामान्य साधक अपने जीवन मे शुन्यस्थ होने से कही ज्यादा महत्त्व भौतिक सम्पन्नता को देता है , और देना भी चाहिए आखिरकार जीवन के विविध सुखों की प्राप्ति धन से ही तो हो पाती है ना........

ये सम्पन्नता भी ऐसे ही रसेश्वर की साधना से प्राप्त होती है , नित्य विल्वपत्र या कुमकुम से रंजित अक्षतों को भी १०८ मन्त्रों के द्वारा इन्हें अर्पित करने पर भौतिक पूर्णता साधक के जीवन मे आती ही है.

क्या ये इतना सहज है ??? मैंने पूछा.....

क्या भौतिक सम्पन्नता !!!!!!

नहीं नहीं .... ये तो मैं भी भली भांति जानता हूँ की रसेश्वर की साधना करने वाले साधक की अभ्यर्थना तो स्वयं शक्ति स्वरूप लक्ष्मी भी करती हैं और ये प्रभाव मैं खुद भी अपने जीवन मे अनुभव कर सका था ... इसीलिए मैं भौतिकता की नहीं दिव्यता की बात कर रहा हूँ . क्या मात्र त्राटक के साथ कोई अन्य रहस्य नहीं जुदा हुआ है शरीर को शुन्य भार करने मे ?????????

है बिलकुल है .... और क्यूँ नहीं होगी , क्या आपको लगता है की ये सब इतना सरल है ..... नहीं बिलकुल नहीं ..... जब शरीरस्थ तत्वों को आप अपने नियन्त्रण मे ला लेते हैं तो भला क्या है इस ब्रह्माण्ड मे जो साधक प्राप्त नहीं कर पाता वो भी मात्र संकल्प बल से...

अणिमा, महिमा ,लघिमा, वशित्व,प्राकाम्य, आदि परा और अपरा जगत की विविध शक्तियों का साधक भली भांति प्रयोग कर सकता है क्योंकि साधक सामान्य साधक न होकर सिद्ध की अवस्था को प्राप्त कर लेता है . और ऐसा तभी हो पाता है जब साधक उस रहस्य से परिचित हो जो न सिर्फ गुप्त रखा गया है सिद्ध समाज मे, बल्कि जिसकी भनक भी नहीं पड़ने दी जाती है सामान्य मनुष्यों को ....

सबसे पहले तो ये समझो की शरीर मे स्थित दो लक्ष्य –बाह्य और आभ्यांतरिक हैं . जो साधक अपने शरीर को ही नहीं जानता वो कैसे सफलता पा सकता है ..

शरीर सिद्धि के लिए छह चक्रों,षोडश आधारों, त्रिलक्ष्य ,व्योम पंचक ,नव द्वार, पंचाधिदैवत का ज्ञान पाना अनिवार्य है . जब साधक पारदेश्वर को सामने रख कर उस पर त्राटक करता हुआ त्रिनेत्र मंत्र का जप करता है . तो शनै शनै साधक को काल ज्ञान की क्षमता प्राप्त होने लगती है . अब साधक के ऊपर है की ये क्रिया वो बाह्य रूप से संपन्न कर वो मात्र काल ज्ञाता बनता है या इस दुर्लभ विश्व विजयी रसेश्वर का सम्बन्ध आत्मस्थ महालिंग से कर महासिद्ध और परम सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर लेता है . जिसके बाद कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता .

भला ये कैसे होता है ???? मैंने पूछा ...

थोडा सब्र करो बताता हूँ........ मूलाधार और स्वाधिष्ठान के मध्य मे त्रिकोणाकार स्थान है जिसे योनि कहा जाता है इस योनि को कामरूप कहा जाता है ...

यही तंत्र व योग सिद्धों के द्वारा वंदित कामाख्या शक्तिपीठ है और इसी पीठ के मध्य मे पश्चिम मुख महा लिंग स्थित है ,जिनके शीर्ष पर मणि अवस्थित है.जो स्वर्ण वर्णीय अग्निमयी ज्योति से आलोकित है . अनंत विश्वतोमुख इस महाज्योति से जब बाह्य स्थित रसेश्वर का पूर्ण मानसिक एकाकार होता है तो वो परम ज्योति साधक के सातों शरीर को ही न सिर्फ जाग्रत कर देती है बल्कि उनकी शक्तियों के स्त्रोत भी खोल देती है .इसके लिए बहुत धैर्य की आवशयकता होती है . त्राटक के मध्य जब पारदेश्वर का बिम्ब त्रिकुट या भ्रूमध्य मे बनता है तो अंदर जाती श्वास के साथ ही उस बिम्ब को अपने मूलाधार तक लाया जाता है . देखने मे ये क्रिया कठिन है पर ऐसा है नहीं . अभ्यास से ये क्रिया सहज सिद्ध हो ही जाती है . और एक बार जब वो रसेश्वर पूर्ण रूपेण आंतरिक महालिंग मे स्थित हो जाता है और वो परम ज्योति बहुगुणित हो जाती है . तब साधक को बाह्य आलंबन की कभी भी आवश्यकता नही रहती बल्कि वो जब चाहे एकाग्र मन से उस आंतरिक रक्त बिंदु, स्थित महालिंग मे बाह्य श्वेत बिंदु द्वारा निर्मित रसेश्वर का पूर्ण दर्शन कर जो भी चाहे पा लेता है. और ऐसा होने के बाद वो उस परम ज्योति को अलग अलग चक्रों पर पर भी स्थापित कर सकता है जिससे उन चक्रों और उनके स्वामित्व वाले शरीर व लोकों मे उसका गमन भी सहज हो जाता है और उसे बाह्य ब्रह्मांडीय यात्रा की आवश्यकता ही नहीं रहती , वो शरीर मे स्थित ब्रह्माण्ड की यात्रा जब चाहे कर लेता है .

क्योंकि कहा गया है की " यत पिंडे तत् ब्रह्मांडे" .... और ये उक्ति तभी तो चरितार्थ होगी. जब हम उपरोक्त प्रक्रिया संपन्न कर लेते हैं.

और आप सभी जानते ही हैं की हमारे आंतरिक चक्रों की शक्तियां अनंत है ... इस लिए भला क्या अप्राप्य रह जायेगा साधक के लिए.

ये क्रिया श्रेष्ठ साधकों के मध्य व्योम क्रिया के नाम से जानी जाती है. इसीलिए तो कहा जाता है की यदि पूर्ण संस्कृत , मन्त्रों से अभिसिंचित पारदेश्वर साधक के पास हो तो ऐसा साधक कुछ भी कर सकता है , शर्त यही है की उसकी जिज्ञासा का अंत न हो , जिज्ञासा होगी तभी तो नवीन रहस्यों का अनावरण होगा.....है ना...........

****

****

Swaran rahasyam

With the help of the Parad shivling so many high level of sadhaks got command over the the Bhumi Tatva (Earth essence). And from this they get the power of disappearing themselves into Shunya and would be able to fly in air.

Well but simple sadhaks will give more significance to existence in world rather the extinction from outer space. And I think it should be like that only as existence can lead you towards the happiness which can brought by money only.

Hmmm so I must tell you this feeling of completeness also gets from the Raseshwar sadhna. Daily worshipping by the Belpatra, Kum kum and reddish (the rice colored with red kum kum) delivered for 108 times with mantra chanting also can enjoy the materialistic affluence...

Do you think is it that easy? I asked

What… Materialistic Prosperity!

Hmmm...Ohh no no…that I also know the follower of Raseshwar sadhna could never be entreaty by own accord form of power i.e. Goddess Laxmi and this influence is eyewitness by me and experienced in my own life.Therefore I am not talking materialistic rather its about the divinity.Dont you think so that another secret is separated from this?

अद्भुत सरल धन दायक लक्ष्मी प्रयोग

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

धन धान्य प्रदाता लक्ष्मी प्रयोग अब इसे एक बार तो करके देखिये

दैनिक जीवन में लक्ष्मी तत्व कि अनिवार्यता से कोई भी इनकार नही कर सकता हैं . सुचारू रूप से न केबल दैनिक जीवन बल्कि आध्यात्मिक जीवन कि आधार शिला में भी कहीं न कहीं लक्ष्मी तत्व का योगदान रहता ही हैं .सदगुरुदेव जी ने इस तत्व की महत्त्वता अपने कई लेखो और रचनाओ में समझाई हैं .अतः हर व्यक्ति को पहले इस बात कि गहराई समझना ही चहिये क्योंकि आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति न केबल सामाजिक जीवन में बल्कि आध्यात्मिक जीवन में भी ठोस उन्नति कर पाए इसकी सम्भावना बहुत ही कम हैं .

इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस स्तंभ के अंतर्गत हमेशा एक सरल सा लक्ष्मी विधान दिया जाता हैं . जो कि आसान ही न हो .... बल्कि प्रभावशाली भी हो .तो आज आपके सामने यह एक प्रयोग हैं . इस प्रयोग में आवश्यक नियम इस तरह से हैं .

दिशा पूर्व या उत्तर कोई भी .

माला अगर लेना चाहे तो हकीक की या बिना माला के भी जप कर सकते हैं

वस्त्र और आसान पीला हो तो अच्छा हैं .

प्रातः काल सामान्य पूजन कर इस मंत्र कि सिर्फ एक माला मंत्र जप करते जाए निश्चय ही इसका असर आप आने वाले समय में महसूस करेंगे

मन्त्र ::

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरामगच्छागच्छामम मंदिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ||

****
****

Dhan Dhany Pradata Lakshmi Prayog

In day to day life , no one can deny the importance of financial element in our life . not only day to day life but to have solid foundation in spiritual life , this element again comes in our way .sadgurudev many time put a lot of empahysis on the importance of this tatv in our life .he clearly mentioned that to have a good spiritual growth one must also have to grow financially .

In this series we simple gave you the sadhana that becomes very easy and see your self. since financially weak person , there is very little chance to grow in both field .

Here are the some general rules .

Face east or north sitting

Do simple poojan and chant one round of rosary with mantra .

Rosary can be taken of any type or hakeek rosary would be fine or without rosary you can chant .

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

.

1. काले धतुरा के तंत्र में अनेको प्रयोग मिलते हैं और यह वनस्पति तो भगवान् शकर को अत्याधिक प्रिय हैं तो यदि रविवार को काले धतूरे की जड़ को बाह में बांधा जाए तो यदि कोई प्रेत बाधा हैं तो वह भी दूर होती हैं.
2. मोटापे से तो कौन नहीं परेशां होगा फिर जिस पर यह आया हुआ हैं वह तो ..... तो एक उपाय हैं इसे भी आप कर के देख सकते हैं की रांगे की अगुन्ठी को मध्यमा अंगुली में पहिनने से मोटापा दूर हो ता हैं.
3. शनि देव की अनुकूलता किसे नहीं भाएगी और उनकी प्रतिकूलता से तो सभी कार्यों में देरी की सभावना कहीं ज्यादा होती हैं काले कुत्ते को शनिवार को कडवे तेल से लगी रोटी खिलाये आपको धन लाभ के अवसर होंगे.

4. पीपल के पेड़ की विशेषताए तो इतनी हैं की क्या कहे प्राण उर्जा से भरपूर यह पेड़ आपके लिए न केबल उर्जा बल्कि जीवन की अनेक विपदाए दूर करने में हमारा सहयोगी रहता हैं और अगर आप प्रातः काल पीपल के वृक्ष की जड़ में काले तिल और जल चढ़ाये धनलाभ के अवसर कहीं अधिक प्राप्त होंगे .
5. सोते समय पैर दरवाजे या दक्षिण दिशा की तरफ नहीं करे यह स्वास्थ्य के लिए अनु कुल नहीं होता हैं
6. यदि कुंडली में शनि अनिष्ट करक हो तो काले शिवलिंग की पूजा अर्चना से आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा
7. राहू गढ़ तो हमारे जीवन में आकिस्मिकता लता हैं और यदि गृह यह अनुकूल रहे तो अनेको वाधाये से हम सुरक्षित रहते हैं और इसको अपने अनुकूल करने के लिए बहते हुए पानी में कोयले को बहाए .
8. रात को सोते समय एक सिक्का सिरहाने रखे और दुसरे दिन उस सिक्के को शमशान में फेक आये , आप यदि कोई बीमारी से परेशान हैं तो निश्चय ही आपको लाभ होगा.
9. ईस्ट देवता की उपासना के समय नित्य लौंग चढ़ाये निश्चय ही लाभ प्राप्त होगा और आप के यहाँ धन संपदा बढेगी ही .
10. हम में से अनेक जब कोई कार्य विशेष के लिए घर से बाहर जाते हैं तो स्वाभाविक हैं की उसकार्य विशेष की सफलता के लिए परेशां होना घर से निकलते समय घर का कोई भी व्यक्ति एक मुठ्ठी राइ उस व्यक्ति के ऊपर से उतार कर बाहर कहीं जमीं पर छोड़ दे उससे उस व्यक्ति के कार्य में सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं .

****

1. There are many prayog available in tantra with black dhatura, and this herb is very much likable by Bhagvaan shaker. And on Sunday if the root of this black dhatura tie on your arm this will remove any prêt vadha .

2. Who is not afraid of fatness and think about who is suffering from this, here is one simple totaka fore that if you have ring made of rangaa and wear in middle figure this helps you a lot.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

1. लहसुन की एक कली रोज़ सुबह खाली पेट खाए यह कोल्स्त्रल कम करने में मदद करता हैं
2. सरसों के तेल से शरीर की मालिश करना इस शीत ऋतू में बहुत ही लाभ प्रद हैं .
3. यदि रोज़ दो से तीन लीटर पानी पिया जाये तो पथरी के रोग होने की सम्भावना बहुत ही कम हो जाती हैं
4. पीसी हल्दी आधा चम्मच गुनगुने पानीके हाथ ली जा ना चाहिए यह सर्दी रोग से निजात पाने में बहुत लाभदायक हैं ,
5. सर्दी रोग में या जुकाम में कपूर की कपडे में बांध कर सूघने से भी आराम हो जाता हैं.

6. नमक का सेवन कम से कम करना चाहिए एक तो यह ज्यादा खाने से रक्तचाप बढ़ता हैं और हड्डिया भी कमजोर करता हैं

7. जब पाचन शक्ति बिगड़ जाये तब काले नमक की बहुत थोड़ी सी मात्रा हलके गुनगुने जल में मिलकर पीने से लाभ होता हैं.

8. अगर नमक का प्रयोग करना हैं तो साधारण नमक की तुलना में सेंधा नमक कहीं ज्यादा उपयोगी सिद्ध होता हैं.

9. ऐसी डीटी होने के अवस्था में रोज़ सुबह खाली पेट थोडा सा आवले का चूर्ण एक गिलास पानी के साथ ले .

10. त्रिफला चूर्ण का सेवन भी प्रातकाल करना बहुत ही लाभदायक होता हैं

****

Ayurved for you

1. One should eat one kali of lahsun /garlic in empty stomach early morning , this help to reduces cholesterol

2. In this cold season if having massage with mustard / sarson oil this helps a lot to maintain good health.

3. If any person drinks two to three liter of water everyday than this help to reduce the chance of stone /pathari to him.

4. If half spoon turmeric taken with mild hot water this help to care in cold .

5. While if you havae catch cold than taken fragrance of the kapur

6. One should not increase the quantity of salt taken every day since high quantity will increase blood pressure that is not good.

7. When your stomach gets upset than taken small quantity of black salt with mild hot water, this helps a lot.

तंत्र कौमुदी
अनुभूत तंत्र और पराविज्ञान रहस्य महाविशेषांक
Eleventh Issue – June 2012
Tantra kaumudi

Name of the Articles

SADGURUDEV - PRASANG

नख दर्पण

यमुनोत्री तक लोग तो जाते हैं , परन्तु बहुत कम लोगों को पता हैं की इसके आगे लगभग ६ किलोमीटर पर एक अत्यंत ही सुन्दर रमणीय अद्भुत प्राकृतिक झील हैं जिसे "वासुकी झील " कहते हैं इस झील का पानी अत्यंत ही मधुर शीतल और स्वच्छ हैं . यमुना नदी के आसपास से प्रवाहित होती हैं .

हम साधको की कई दिनों से इच्छा थी की वासुकी झील के दर्शन किये जाए 'परन्तु उसका रास्ता स्पस्ट नही था .क्योंकि यमुनोत्री के बाद आगे किसी प्रकार की न तो कोई पगडण्डी हैं न ही कोई रास्ता ही .

जब हम वासुकी झील के निकट पहुंचे तो वहां की प्राकृतिक शोभा देख कर दंग रह गए,यह भी अनुमान नही लगाया जा सकता था की प्रकृति इतने विविध पुष्पों का श्रृंगार कर इस बर्फीले प्रदेश मे बैठी होगी .

असंख्य तरह के पुष्प यहाँ विकसित हैं .मैंने फूलो की घाटी के बारे मे तो सुना और देखा अवश्य था परन्तु प्राकृतिक सुषमा की दृष्टी से यह स्थान भी विश्व का अन्यतम स्थान हैं मैंने यहाँ पर खिले हुए एक मीटर लंबे चौड़े ब्रम्ह कमल भी देखें . कई कई रंग के पुष्पों से आच्छादित यह धरती अपने आप मे अद्वितीय हैं

वासुकी झील लगभग तीन मील लंबी और डेढ़ मील चौड़ी हैं . इसका स्वच्छ जल अपने आप मे पवित्रता का बोध कराता हैं . हम सब ने जी भर कर इस झील मे स्नान किया और संध्यावंदन आदि से निवृत हुए .

दोपहर का समय हो गया था पूज्य गुरुदेव वहाँ पर वनस्पतियों के बारे मे समझा रहे थे.तभी बातचीत नख दर्पण पर आ गयी . गुरुदेव ने कहा "यह एक विशिष्ट सिद्धि हैं जिसके माध्यम एक साधक अपने दाहिने हाथ के अंगूठे के नख मे विश्व की किसी भी घटना को बखूबी देख सकता हैं . ठीक उसी प्रकार से जैसे की वह कोई चल चित्र देख रहा हो ".

मैंने पूंछा "क्या संसार मे कहीं भी घटित घटना को तत्क्षण देखा जा सकता हैं "

गुरुदेव ने उत्तर दिया "वर्तमान घटनाओ को ही नही यदि वह चाहे तो बीती हुयी घटनाओ को भी पुनः देख सकता हैं और भविष्य कालीन घटनाओ को भी नख दर्पण के माध्यम से पहचान सकता हैं "

अपनी बात की व्याख्या करते हुए गुरुदेव ने बताया "काल का प्रवाह निरंतर हैं .काल अपने आपमें अविभाज्य और अखंड हैं ,जिस प्रकार बिजली के सिरे को हम पकड ले और उसका दूसरा हिस्सा कई हजार मील दूर स्थित स्त्रोत से जुड़ा हो तोभी बिजली का अनुभव उतनी दुरी पर हो जाता हैं ठिक इसी प्रकार से आज से दस हज़ार वर्ष पूर्व ,वर्तमान ,और दस हज़ार बादकी घटनाओ भी एक ही काल सूत्र मे आबद्ध हैं .यदि इसके एक सिरे को हम देख लेते हैं तो दूसरे सिरे को भी देख सकते हैं और इस प्रकार से इन दोनों सिरे के बीच जितनी भी घटनाये घटित हुयी हैं उन सबको देखा जा सकता हैं भविष्य मे उस काल सूत्र मे जो घटनाये घटित होंगी उनको भी पहिचाना जा सकता हैं

योगी अपने अन्तर्ध्यान मे इन सबको देख सकता हैं और विशिष्ट सिद्धि प्राप्त कर अपने हाथ के नाख़ून मे उन घटनाओं को घटित होते हुए अनुभव भी कर सकता हैं ."

हमारी जिज्ञासा होने पर उन्होंने उस विशिष्ट पद्धिति की जो की नख दर्पण विभूति से सबंधित हैं स्पस्ट किया .गुरुदेव जी ने मुझे अपने पास बुलाया और मेरे दाहिने हाथ के नाख़ून को अपनी उंगुली और अंगूठे के बीच मे लेकर मसल कर छोड़ दिया ,फिर मुझे अपना अंगूठा देखने केलिए कहा .

मैं देख रहा था की आज से सात जन्म पूर्व मे मैं क्या था और जीवन यापन कर किस प्रकार मृत्यु को प्राप्त किया . फिर छठवा जीवन ,पाचवा जीवन और इस प्रकार अपने वर्तमान जीवन को भी मै साफ़ देख रहा था .

कुछ क्षणों के बाद वह भी दृश्य आया जब मैं अपने गुरु भाई बहिनों के साथ वासुकी झील पर गुरुदेव के सामने बैठा हूँ और यह सब कुछ देख रहा हूँ . दृश्य परिवर्तित होते हैं मैं आगे के जीवन की आने वाली घटनाओ को भी बराबर देखता जा रहा हूँ .मैंने यह भी अनुभव किया की मेरी मृत्यु कहाँ और किस प्रकार से हैं फिर मैंने अगला जीवन देखा उस जीवन का पूरा क्रम देखा और इस प्रकार आगे के सभी दृश्य बराबर उस नख मे मुझे दिखायी दे रहे थे

जो कुछ मैंने देखा था वह आश्चर्य चकित करदेने वाला था ,पहली बार मैंने अनुभव किया की काल का प्रवाह अनंत हैं और हमारा जीवन निश्चित हैं .योगी लोग उस निश्चित जीवन मे हस्तक्षेप कर उस मनचाहा बना सकते हैं और अपने जीवन को सवार सकते हैं .

मेरी इस धारणा की पुष्टि बाद मे गुरुदेव जी ने भी की . उन्होंने भी बताया की सामान्य जन तो वेसे ही पैदा होकर मर जाते हैं .जैसा की उनके जीवन मे निश्चित होता हैं पर जो की गुरु की दीक्षा प्राप्त साधक हैं जो साधनाओ के क्षेत्रमे निरंतर अग्रसर हैं वे साधनाओ के माध्यम से विपरीत घटनाओ को मोड कर अनुकूल बना सकते हैं .और् यदि चाहे तो इसी जीवन मे मुक्ति पा सकते हैं . या मृत्यु की जीत कर इसी जीवन मे अमृत्युवान बन सकते हैं सैकडो हज़ारो वर्ष की आयु प्राप्त कर परमहंस की अवस्था मे पहुँच सकते हैं .

गुरुदेव ने कहा “ इतना ही नही अपितु योगी या ऐसी साधना से सबंधित साधक किसी अन्य के जीवन प्रवाह मे भी पर्तिवर्तन ला सकता हैं .उसके जीवन की अशुभ घटनाओ को समाप्त कर सकता हैं और अनुकूल घटनो मे वृद्धि कर सकता हैं .”

“ऐसा योगी किसी के भी भाग्य निर्माण करसकता हैं और यदि उसके भाग्य मे कुछ घटनाये नही लिखी हो तो उसे भी बना सकता हैं. “

-मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं से साभार सहित

****
****

People used to visit yamunotri ,but very few people knew that after just 6 kilometer away from that a very beautiful and natural lake situated ..that which is known as Vasuki jheel or Vasuki lake .the water of this lake is cold ,pure and very good to drink .yamuna river also start from here .

many sadhak like us ,had a strong desire to visit this lake but the road /a way to approach was not clear since after the yamunotri there is no road neither any pre defined path exists .

when we reached near the yamunotri ,we were amazed to see the natural beauty scattered over there ,one could not imagine that there , in such a glacial area ,such a magnitude of natural beauty of mother nature is available all around .

मनोकामना पूर्ति कारक गणपति प्रयोग...

manokamna purti kaarak SHRI ganpati PRAYOG

भगवान गणपति के मनोकामना पूर्ति कारक दायक स्वरुप सम्बंधित एक सरल साधना

मनोकामना पूर्ति कारक गणपति प्रयोग ...

भगवान गणपति न केबल देवताओ मे भी प्रथम पूज्य हैं बल्कि हर् शुभ कार्यों मे हर साधना मे भी उनकी प्रथम वंदना होना आवश्यक हैं ही और ऐसा तो हर सम्प्रदाय मे होता हैं यह जरुर हैं की सम्प्रदाय विशेष मे परंपरा विशेष के कारण भगवान के विशेष स्वरुप मे परिवर्तन आ जाता हैं ,जब जीबन की बात आये तो निश्चय ही मनोकामनाओ की बात भी आएगी , और सभी अपनी समस्त शुभ मनोकामना की पूर्ति कम से कम चाहते हैं ही .यह तो मानव स्वाभाव हैं और इच्छा पूर्ति करने मे कोई असामान्य बात भी नही हैं .

पर यदि भगवान गणेश की साधना मे मनोकामना पूर्ति का भी विधान शामिल हो तो वह अपने आप मे एक अद्भुत तत्व होगा .क्योंकि यह तो हमारी न्यूनता हैंकि हमने मात्र उन्हें सिर्फ साधना प्रारंभ करते समय सिर्फ स्मरण करने का प्रतीक मान लिया हैं बल्कि वस्तु स्थिति ऐसी हैं की वे समस्त देवताओ मे प्रथम पूज्य हैं इस एक अर्थ मे उन्हें सभी देवताओ का सामूहिक प्रतिनिधि माना जा सकता हैं .और भले यह जरुर हैं की वे पार्वती पुत्र माने जाये पर भगवान का यह स्वरुप तो ब्रह्मस्वरूप हैं जिसके जन्म का कोई समय हैं ही नही .यहाँ तक की शिव पार्वती विवाह मे उनका स्मरण किया गया हैं मतलब भगवान गणेश एक अनादी तत्व हैं औरशाक्त धर्म की या शक्ति को पूजन या साधना मय स्वीकार करने वाले सम्प्रदाय की माने तो इनका बहुत उच्च स्थान हैं पर सामान्य वर्ग इस तथ्य को जानता नही हीहैं की उनके गणेश स्वरुप का आबिर्भाव मा भगवती के द्वारा सीधे हुआ मतलब एक अर्थ मे कहा जाए तो वे शक्ति से उत्पन्न हीं उनके जन्म मे भगवान शिव की सीधे कोई भूमिका नही हैं . इस कारण शक्ति पूजा करने वाले को उनका महत्त्व समझना चाहिए ...

श्वेतार्क का पौधा या पेड़ की जड़ तो सभी साधक जानते हैंकि सीधे भगवान गणेश का ही स्वरुप मानी गयी हैं . कुछ सात या आठ साल बाद कहते हैंकि जो मूल जड़ होती हैं उसका स्वरुप ठीक भगवान गणेश के स्वरुप से पूर्ण साम्य सा कर जाता हैं .तो उसजड़ को प्राप्त कर ले, दिन रविवार का होना चाहिए .और इस जद से बहुत छोटी एक अंगूठे के सामान मूर्ति का निर्माण कर ले . और निम्न मंत्र द्वारा उनका पहले पूजन करें .

श्रीं महा गण पतये नम :

इसके बाद जिस मंत्र का जप साधक को कम से कम एक दो महीने या या जब तक इच्छा पूर्ति का समाचार ना मिल जाए तब तक करना हैं ...

ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा ||

- भगवान को प्रतिदिन लाल कनेर और लाल रंग के पुष्प यदि संभव हो तो अर्पण करते जाए क्योंकि देवताओं को पुष्प बहुत प्रिय होते हैं ,
- इस प्रयोग मे माला सामान्य रूप से हकीक की ली जा सकती हैं रंग कोई भी हो .भगवान गणेश को दूर्वादल बहुत प्रिय हैं वह भी उन पर अर्पित किया जा सकता हैं .
- आसन और वस्त्र पीले हो तो श्रेष्ठ होता हैं .दिशा पूर्व या उत्तर और मंत्र जप प्रातःकाल हो तो उचित रहता हैं .
- साथ ही साथ उन्हें बेसन के लड्डू या मोदक भी प्रिय हैं तो इनका उन्हें नैवेद्य भी अर्पित किया जा सकता हैं .

सामान्य रूप से यदि संभव हो तो हवन आदि प्रतिदिन इस मंत्र से करते जाए तो परिणाम और भी अनुकूल प्राप्त होते हैं .

Para Vigyan............Preliminary Introduction??

 ज्ञात अज्ञात तथ्य

साधना क्षेत्र की कोई सीमा ही नही ..जितने गहराई मे हम जाते हैं उतनी ही बहुमूल्य मोतियों से हमारी झोली भरती जाती हैं . जिन खोजा तिन पाईयां ... हर जगह चरितार्थ होती हैं ..और एक से एक नए आयाम हमारी मानसिक चेतना के सामने आने लगते हैं ये कुछ ऐसे आयाम हैं जिन पर सामान्य लोग या सामान्य साधक विश्वास ही नही कर पाता ही यह भी संभव हो सकता हैं ....इन सभी तथ्यों को..जो की एक सामान्य साधक या आज के उच्च शिक्षित वर्ग के लिए या तो असंभव या कपोल कल्पना हैं ..जिस श्रेणी मे आते हैं उसे ही मनस्वियों ने परा विज्ञानं के नाम से संबोधित किया .

यह शब्द अपने आप मे कितना गहरा अर्थ रखता हैं ??? अपने आप मे किस विश्व व्यापी..ब्रम्हांड मयी चेतना को स्पर्श करता हैं?? . किस किस दिव्य ज्ञान के आयाम या आयामों को अपने अन्तरगत रखता हैं यह तो आप इस विषय पर जो साधनात्मक लेख इसी अंक मे दिए हैं उन्हें पढकर स्वयं ही जान सकते हैं ..

एक अन्य अर्थ मे परा विज्ञानं क्या हैं ??

उसी एक महा शक्ति जिसे परा शक्ति कहा गया हैं उसकी बिभिन्न लीला ओ को जानने समझने का विज्ञानं ...

पर बहुत ही गौर से देखा जाए तो "परा" कहा किसको गया हैं ??

वास्तव मे परा और परा परा ..शक्ति को कहा गया हैं ..

सारत सारां परापराम - (नित्योषोडशिकारणव)

- **वास्तव मे परा शक्ति से मतलब हमेशा महा त्रिपुर सुंदरी देवी से होता हैं, उन्हें ही तंत्र शास्त्र " परा " के नाम से संबोधित करते हैं.**
- **वे परा इसलिए कहलाती हैं की वे सृष्टि और प्रकृति से परे भी हैं.वे सर्वोच्च शक्ति हैं और सबको अतिक्रांत करके स्थित हैं ,**
- **उन्हें परा इसलिए भी कहा जाता हैं क्योंकि श्रुतियों मे उन्हें सृष्टि का सर्वोच्च तत्व,चिति ,इच्छा , ज्ञान ,और क्रिया शक्ति कहा गया हैं .**
- **परा इसलिए भी कहा जाता हैं की न उनसे कोई पर हैं न परे हैं.**
- **वह परा इसलिए भी हैं क्योंकि उनकी सहायता के बिना शिव भी सृष्टि नही कर सकते हैं.**

आगे की पंक्तियों मे हम यह समझने का प्रयत्न करते हैं की अनेको उच्चस्थ तंत्रग्यो ने..तंत्र शास्त्र के ग्रंथो ने ..तंत्र मर्मज्ञों ने इस परा शक्ति के बारे मे अपने क्या विचार रखे हैं ..

योगिनी हृदय ग्रथ उन्हें परमा शक्ति के नाम से सबोधित करता हैं .

यदा सा परमा शक्ति: स्वेछ्या विस्व् रूपिणी ||

तंत्र आचर्य सोमानंद पाद ने "" **शिवदृष्टी** " मे सामान्य शक्ति दशा से भी परे की दशा को " परा" कहा हैं .

अथ शक्ते : परावस्था येक्त्यां परिगीय् ते|

युकत्या प्रकाशितो देव स्तत् शक्ति दशा यत : ||

इसलिए एक तरफ विद्या और वेद्य(शक्ति) मे कोई भेद नही हैं और दूसरी ओर शक्तिमान और शक्ति मे भी कोई भेद नही हैं . क्योंकि जिस जिस पदार्थ की जो जो शक्ति हैं वह एक ही आदि शक्ति हैं और वही सर्वेश्वर महेश्वर हैं.

यस्य यस्य पदार्थ स्य या या शक्ति रु दाहृता |

सा सा सर्वेश्वरी देवी स् सर्वोऽपि महेश्वर ||

वास्तव मे पराशक्ति शिव और शक्ति का सामरस्य हैं ,जिस तरह बीज से अंकुर और अंकुर से बीज का जन्म होता हैं इस तरह शक्ति ही सृष्टि स्थिति संहार तीनो की विधयिका हैं , शिव को शिवत्व प्रदानं करने वाली सत्ता ..शक्ति हैं . शक्ति विश्व रूप हैं और विश्वातीत भी ..

अतः कोई भी खोज या अनुसन्धान या दिव्य ज्ञान ...या विज्ञानं एकांगी नही हो सकता हैं उसमे अगर शक्ति तत्व हैं तो शिव तत्व भी होगा ही .इस तरह परा विज्ञानं को तंत्र की दृष्टी से एक उसी परम महाशक्ति की अनन्त लीला विलास को समझने का एक विज्ञानं भी कहा जा सकता हैं तो ....

सरल शब्द मे कहे तो जो भी सामन्यतः हमारी सोच शक्ति से आज परे हैं ...वह सब इस परा शब्द के अंदर समाया हुआ हैं ....जिसकी कोई सीमा नही हैं जो सीमातीत हैं .. सामान्य मानव की ज्ञान ग्रहण की शक्ति या सोच विचार शक्ति की एक सीमा हैं पर इस "परा " शब्द की तो कोई सीमा नही हैं .जो कल तक संभव था .पर काल की क्रूर दृष्टी के कारण .. आज सामने नही हैं पर उर्जा को कोई नष्ट नही कर सकता हैं और इस दृश्य श्रव्य ऊर्जा को पुनः उसी रूप मे देखना ..जानना और ज्ञान के नित नित नूतन आयामों को पुनः अपने सामने एक बार प्रत्यक्षीकरण करा देना ..इतना सरल तो नही हैं . पर हैं भी ...इस परा विज्ञानं के अंतर्गत आने वाले विविध आयामों के अंतर्गत आने वाली दुर्लभ ज्ञान और असीम शक्तिशाली साधनाओ के माध्यम से ......और भी सरल शब्दों मे कहा जाए तो जो भी अलौकिक हैं आज जिसे हम नही समझ सकते हैं सभी कुछ तो इस परा शब्द के अंतगत हैं .

पर यह क्रियाए कैसे संभव हैं आज जरुर प्राचीन काल मे घटित घटनाये ऊर्जा रूप मे होने के कारण जरुर वे सुरक्षित हैं हैं पर उन्हें देखना कैसे या समझना कैसे जाए .सदगुरुदेव जी ने परा विज्ञानं केसेट्स मे इसी क्रिया का एक पहलु /एक चरण उन्होंने समझाया था की किस तरह व्यक्ति ..एक साधक व्यक्ति अपने प्राणों को विखंडन करके उस प्राण को सारे ब्रम्हांड मे फैला देता हैं और इस तरह से वह कुछ अर्थो मे ब्रम्हांड मय सा हो जाता हैं ...कहाँ क्या हो रहा हैं से लेकर वह भूतकाल से लेकर भविष्य काल तक की घटनाओ को न केबल जानने समझने लगता हैं बल्कि अगले चरणों मे वह इतनी योग्यता पा लेता हैं की किस एक घटना विशेष पर केंद्रित या उसमे हस्तक्षेप भी कर सकता हैं और यह सब परा विज्ञानके माध्यम से ही संभव हैं .सदगुरुदेव जी ने पूर्ण विस्तार से यह क्रम समझाया हैं .

यह तो उच्चस्तरीय एक क्रम हो गया पर सामन्य जीवन मे .आत्मा का आव्हान करना ..उसने वार्तालाप करना और अदृश्य जगत मे स्थित लोको के बारे मे अनुसन्धान करना या जानकारी प्राप्त करने भी इस परा शब्द के अंतर्गत आते हैं .इस तरह से देखा जाए तो यह शब्द अपने आप मे गहन अर्थ छुपाये हुए हैं .और जितना जानते जाए उतने नय नए आयाम से भरा हुआ है .

सारी सिद्धिया ..सारे आलौकिक व्यापार फिर चाहे वह अन्य लोक की यात्रा हो या सूक्ष्म शरीर या सशरीर ही क्यों न हो . यह सब इस परा शब्द के अंतर्गत ही आता हैं .

इस तरह से हम देखे तो कह सकते हैं की

- भूत प्रेत और अन्य इतर योनियों से संपर्क करने और उनके बारे मे जानने के लिए
- यक्ष किन्नर योगिनी और अन्य उच्च लोक को जानने और संपर्क के लिए
- समस्त अलौकिक घटनाओ के बारेमे सत्यता और विश्लेषण के लिए
- समस्त दृश्य और अदृश्य जगत की घटनाओ को समझने के लिए
- प्राचीन काल मे घटित किसी भी घटनाओ को आज भी देखने और समझने के लिए
- मनुष्य की सोच और उसकी बुद्धि की सीमा से परे किसी भी घटनाओ को जानने के लिए
- मानव देह की अभी तक अदृश्य क्षमताओ को जानने के लिए ...

सामान्यत: जिस विज्ञानं के सहायता ली जाती हैं वह सारी की सारी परा विज्ञानं के अंतर्गत आती हैं . इस तरह से यह विज्ञानं मानव की क्षमता बढ़ाने और उसकी निश्चित बंधी बंधाई सोच को अनेक गुणा विस्तृत करने वाला विज्ञानं हैं .और विज्ञानं इस लिए हैं की नित नूतन नवीनतम खोजे इसमें की जा सकती हैं . अभी भी की जा रही हैं .

****

****

* **Para Vigyan…………Preliminary Introduction**

Field of sadhna has no limits……………….the more we dive deep in to it, more we come up with the precious pearls of knowledge.Jin Khoja Tin Paaiyan(Whosoever searches, he gets it)……….is valid everywhere…..so many novel dimensions starts coming in front of our mental consciousness. These are such dimensions that common man or normal sadhak found it hard to believe that whether it can be possible…..All these facts……which are an impossible thing or mere imagination for normal sadhak or today's highly educated category……these have been addressed to as Para Vigyan by strong-willed intellectuals.

How much deep meaning this word carries???Which worldwide universal consciousness it touches in itself??Which divine knowledge's dimensions or dimensions are contained within it, all this can be known by you after reading the sadhna-centric articles written on this subject in this edition.

पराजगत और योग तंत्र

What is para jagat and yog tantra ?

इस रहस्यमयता से सबंधित कुछ अनूठे गोपनीय तथ्य

‘शरीर को माध्यम स्वीकार कर उस माध्यम से अपने मूल आत्म तत्व का विकास योग है जो की आतंरिक प्रक्रिया है जिसमे व्यक्ति अपने अंदर की असीम शक्तियों को जान कर उसका निरंतर विकास करता हैवहीँ तंत्र इसी शारीर को . माध्यम बना कर ब्रम्हांड की अनंत शक्तियों को जान कर उसका सिंचन अपने अंदर करता हैवस्तुतः यही दोनों प्रकार . .की उपासना को ही आतंरिक और बाह्य उपासना कहा गया है‘परा’ शक्ति की उपासना के बारे में यही कहा गया है की यह आतंरिक तथा बाह्य दोनों रूप से होनी चाहिए, इन्ही दोनों उपासना पद्धति का संयोजन ही पराशक्ति की उपासना है, इन्ही दोनों उपासना का सामाज्य का सिद्धांत ही पराविज्ञान है

योगतंत्र एक ऐसा पड़ाव है जो की आतंरिक तथा बाह्य .और जब ये दोनों पद्धतिया मिलती है तो वह बनता है योगतंत्र . यह वह पद्धति है जो मनुष्य को अपने आतंरिक तथा बाह्य ब्रम्हांड .ब्रम्हांड के बिच में हैके बारे में परिचय देती है और उसके दोनों छोर को गाँठ लगा कर उसका संयोग कराती हैऔर दोनों ब्रम्हांड अनंत है इस लिए इस पद्दति की सीमाए . उसका बाह्य .साधना क्षेत्र वस्तुतः अनंत इसी लिए है क्यों की मनुष्य अपने आप में अनंत है .और संभावनाये भी अनंत है रूप अनंत हैतथा उसका आतंरिक रूप अनंत है.' योग्यतंत्र के बारे में सदगुरुदेव जब ज्ञान प्रदान कर रहे थे तब ये जान और समज पाया में की क्या है वास्तविक रूप योगतंत्र का और क्या है इसका सबंध पराजगत सेयु तो जो सूक्ष्म है ., जो समज से परे है, जो दुर्लभ है वही परा हैइसी लिए प .राजगत कोइ एक विशेष जगत नहीं है, बल्कि जो जगत हमारी द्रष्टि से ओजल है वह है पराजगत चाहे वह सूक्ष्मजगत हो या मायाजगतयोगतंत्र जगत से सबंधित साधनाओ के सबंध . में जब सदगुरुदेव समजा रहे थे तब कई एस दुर्लभ विधानों की प्राप्ति हुई जो की सहज है और कोई भी व्यक्ति उससे लाभ प्राप्त कर सकता हैसाधक अगर परा जगत से सबंधित साधनाओ को करने से पूर्व पराशक्ति की साधना कर ले तो वह . साधना आगे की साधनाओ के लिए एक निश्चित आधार बन जाती है जिसके बाद व्यक्ति को आगे की साधनाए सहज हो जाती है और साधक के चेतना स्तर विकसित हो जाने के कारण कार्य सफलता की संभावनाए और भी बढ़ जाती है .

पराजगत की ये लुप्तप्राय प्रक्रियाए

एक साधक को किस मार्ग का चुनाव करना है यह व्यक्तिगत बात है लेकिन किसी भी मार्ग की अवलेहना या उपेक्षा वस्तुतः उस ज्ञान की अवलेहना है जो की साधक को प्राप्त हो सकता था; साधक सभी मार्ग तथा सभी साधन से ज्ञान ही तो प्राप्त करता हैऔर उनके अद्भूत .पराजगत तथा उसके सबंध में पश्चिमी देशो में लगातार शोध कार्य हो रहा है . है तथा हमारे ही देश में जो परिणाम भी उनको प्राप्त हुवे है और हम उस शोध कार्य तथा विज्ञान को ही सर्वोपरि मानते शोध कार्य हमारे ऋषि मुनियों ने किया था उसे ढोंग या अंधविश्वाश का नाम दे दिया जाता हैलेकिन अगर कोई व्यक्ति . जिज्ञासा पूर्वक पुरातन ग्रंथो का अध्ययन करे तो उसे निश्चित रूप से समज में आ जाएगा की आज से कई सो वर्ष पूर्व इस विज्ञान आज के युग के शोध तथा परिणामों से प्रकार का हज़ारो गुना ज्यादा विकसित थालेकिन काल क्रम में यह . क्यों की इन पध्धातियो को बिना जाने और अपनाए ही उपेक्षा कर दी गई इसके पीछे कुछ स्वार्थ .विद्याए लोप होती गई बित करने के लिए मूल सत्य ज्ञान को लुप्त कपरस्तो का भी विशेष योगदान रहा जिन्होंने खुद को ज्ञानी सार देना ही योग्य समजासाथ ही साथ जिन लोगो को इस प्रकार के विधानों .इस प्रकार समाज से यह विद्याये लोप होती चली गई . लेकिन अगर यह विद्याओको इन विज्ञानों को इन विषयो को .का ज्ञान था उन्होंने समाज से दूर रहना ही पसंद किया हमारे पूर्वजो की शोध तथा सेकडो सालो की महेनत का परिणाम था इसे अपनाया नहीं गया उसे अनुभूत कर सुरक्षित नहीं किया गया तो यह लुप्तप्राय की जगह लुप्त होने में ज्यादा समय नहीं लगेगाएस ही दुर्लभ विधानों सदगुरुदेव ने . प्रक्रियाओं के तीव्र प्रभाव को देख कर चमत समजाया था जिसका अभ्यास करने पर पराजगत की इन्कृत हो उठा में .

****

****

*

sadhana to contact souls of para jagat

परालौकिक जगत मे प्रवेश करने के लिए अद्भुत गोपनीय साधना

इस प्रयोग को करने पर साधक अपनी अवचेतन अवस्था या स्वप्न अवस्था में निश्चित रूप से किसी मृतात्मा को मिलता है . .यह मात्र एक दिवसीय प्रयोग है

ये साधना कई प्रकार से अपने आप में खास हैधक मक्यों की इस साधना में सा .ें साधना सामग्री के रूप में सिर्फ दो चीजों की आवश्यकता रहती हैऔर ये माला तथा दीपक इस साधना को जितने .जाप के लिए रुद्राक्ष माला तथा तेल का दीपक . .भी बार करना हो उसे उपयोग में लिया जा सकता है

साधक यह साधना किसी भी वार को कर सकता है लेकिन समय रात्री काल में १ बजे से ले कर ३बजे तक के बिच का ३०: रहे, मंत्र जाप इसी काल में हो जाना चाहिए .माला मंत्रजाप करना है २१ इस दरमियान साधक को निम्न मंत्र की .

ये साधना करते समय कोई बल्ब आदि चालु ना हो, कमरे में मात्र तेल की दीपक की रोशनी होनी चाहिए .

साधक को इस प्रयोग को निर्वस्त्र हो कर या काले वस्त्र को धारण कर के करना चाहिए .

यह साधना अत्यंत ही उच्चकोटि की साधना है जो की व्यक्ति के अवचेतन मन के मानस द्वार को खोल देता है जिससे की उस अवचेतन अवस्था में किसी भी मृतआत्माओ से संपर्क हो सके और वह आसानी से व्यक्ति के अवचेतन मन में प्रवेश कर उससे मिल सकेइस साधना को व्यक्ति अकेले ही सम्प्पन करे ., किसी की भी उपस्थिति में यह साधना नहीं की जाती.

मन्त्र : ॐ ह्लों ब्लों फट् (AumHlomBlomPhat)

मन्त्र जाप के बाद साधक उसी कमरे में सो जाएसाधक चाहे तो गद्दा या कुछ भी बिछा सकता है ., अगर उस रूम में पलंग या खात आदि है तो साधक उसका भी उपयोग कर सकता हैमंत्र जाप में .लेकिन साधक को उसी कमरे में सोना है अकेले . साधक सो जाने पर अपने आप को उसी .ही या पूर्ण होने के बाद साधक को एक अजीब तंद्रा का अहेसास होने लगता है तन्द्रा में पाएगा और साधक को किसी भी मृतात्मा को देख पायेगा तथा उससे वार्तालाप भी हो सकता है .

To contact souls of Para Jagat

After doing this process, sadhak in his subconscious state or in dream definitely meets dead soul. This is merely a one-day process.

This sadhna is very special in itself for variety of reasons .Because in this sadhna, sadhak needs only two things as sadhna articles.Rudraksh rosary for chanting mantra and oil lamp (Deepak).And this rosary and lamp can be used any number of times for this sadhna.

Sadhak can do this sadhna on any day however the time should be between 9 and 3:30 in the night. Chanting should be done in this duration. In this duration, sadhak has to chant 21 rounds of below mantra.

At the time of doing sadhna no bulb should be switched on, only the light of oil-lamp should be present in the room.

Sadhak should do this prayog without clothes or after wearing black clothes.

This sadhna is very high level sadhna which can open the doors of sub-conscious minds of person whereby he, in his subconscious state,is able to contact any dead souls and that soul is able to enter the subconscious mind and meet him. Personshould do this sadhna all alone. This sadhna is not done in presence of anyone.

Victory oVer enemy through kundalini sadhana

क्या ऐसा हो सकता हैं विश्वास ही नही होता की कुण्डलिनी शक्ति से ....

कुण्डलिनी मनुष्य में निहित एक अत्यधिक गुढ़ शक्ति है जिसे सामान्यतः समझना आसान प्रतीत होता है लेकिन जेसे जेसे उसको समझने का प्रयास किया जाता है उतना से अधिक रहस्यमय प्रतीत होने लगता हैयोगतंत्र का यह एक ऐसा अजब . किया जा इसके माध्यम से शत्रुओ का अंत हमारे शरीर की आतंरिक शक्ति मात्र से भी .रहस्य है जो की अत्यधिक गुप्त रहा है क्यों की कुण्डलिनी शक्ति हे तो उसी महामाया का स्वरुप जो की ब्रम्हांड को नियंत .सकता है्रित करती है तो फिर जब उसे बाह्य प्रक्रियाओ विनीत कर कार्य सफल किये जा सकते है तो वहीँ उसे आतंरिक रूप से भी प्रार्थना कर कार्य किये जा सकते है.

यह प्रयोग 8 दिन का है.बजे के बाद शुरू कर सकता है ११ यह प्रयोग साधक सोमवार रात्री में .

साधक को ब्रम्हचर्य का पालन अनिवार्य है.साधक इस प्रयोग में काले वस्त्रों का उपयोग करे .

रात्रीकाल में साधक अपने साधना कक्ष में दक्षिण दिशा की तरफ मुख कर के बैठ जाएदेवी उसके बाद शांत चित से . उसके बाद साधक आँखे बंद कर के ना .कुण्डलिनी को प्रणाम करे तथा कार्यसिद्धि हेतु प्रार्थना करेभि पर ध्यान केंद्रित करे तथा वहा पर अग्निकुंड में जो भी आपका शत्रु है वह जल रहा है और भयभीत हो रहा है तथा देवी कुण्डलिनी जिन्होंने नील परिधान पहने है वह शत्रु को दण्डित कर रही है ऐसी कल्पना करेसाधक को आँखे बंद रख कर नाभि पर ऐसे ही ध्यान . करते हुए मंत्र जाप करना हैमाला मंत्र जाप करना रहता है जो की काली हकीक ११ इसमें ., रुद्राक्ष, सर्पअस्थि माला से किया जा सकता है.

ॐ कुलकुण्डलिनि शत्रुं उच्चाटय उच्चाटय फट्

(Aum Kul Kundalini Shatrum uchchaatay uchchaatay phat)

८ दिन ऐसा करने पर निश्चित रूप से शत्रु उत्पीडित होने लगता है और उसका उच्चाटन हो जाता हैइसके बाद माला को . .विसर्जित कर दे

Getting rid of enemies through Kundalini power (Serpent power)

Kundalini, implicit in human being is very secret power. Generally it seems very easy to understand it but as we gradually make attempt to understand it, it becomes more mysterious than before. This is one such amazing secret of Yog-tantra which has been much hidden. Through the medium of it, destruction of enemies can be done by merely our internal power because at the end of the day, kundalini power is only the form of Maha Maaya who controls entire universe. So when the works can be accomplished after doing outer process, they can also be done by praying her internal form.

This prayog is of 8 days. It can be started on any Monday night after 11 P.M by sadhak.

It is compulsory for sadhak to remain celibate. Sadhak should use black dress for this prayog.

Sadhak should sit in sadhna room facing south in the night-time. After this sadhak should pray to kundalini with peaceful mind for the accomplishment of work. After this sadhak should close the eyes and mediate on navel (called naabhi in Hindi) and imagine that your enemy is getting burntand scared in the agni-kund and goddess kundalini, in blue dress, is punishing your enemy. Sadhak have to chant this mantra meditating in this manner. Sadhak has to chant 11 rounds of rosary. Black Hakeek, rudraksh or sarp asthi (rosary made from bones of snake) rosary can be used.

आत्म संजीवनी क्रिया साधना

Aatm sanjivani kriya sadhana

आकर्षण युक्त होने की अद्भुत साधना

यह प्रक्रिया पराजगत से सबंधित एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसको सम्प्पन करने पर व्यक्ति पूर्ण आकर्षण युक्त हो जाता है . लोग उसके संपर्क में रहना पसंद करते है, उसको सभी क्षेत्रो में अपने आप ही अनुकूलता प्राप्त होने लगती हैइसके अलावा . योग आज के युग के हर एक व्यक्ति के लिए महत्त्व इस प्रकार यह प्र .सर्वजन उस व्यक्ति के अनुकूल रहना ही पसंद करते है .रखता है

इस प्रयोग को किसी भी दिन शुरू किया जा सकता है साधक को यह .प्रयोग ब्रम्हमुहूर्त में ही करना चाहिए.

साधक सफ़ेद वस्त्र आसान या पीले वस्त्र और आसान का उपयोग इस प्रयोग में करे.

अपने सामने घी का दीपक जला कर साधक आँखे बंद कर अपना मन सहस्त्रार पर केंद्रित करेइस प्रयोग को साधक बिना . अगर साधक माला का .माला के भी कर सकता हैउपयोग करना चाहता है तो रुद्राक्ष या स्फटिक माला का प्रयोग कर सकता है.ना रहता हैइसमें एक घंटे के लिए सहस्त्रार पर ध्यान केंद्रित करते हुए मंत्र जाप कर .

ॐ नमो चैतन्याय हूं (Aum Namo Chaitanyaay Hoom)

यह प्रयोग साधक को ५ दिन के लिए करना है दिनों में ५ साधक इन .कई प्रकार के द्रश्य अपने अंदर देख सकता हैदिन ५ . हती हैके बाद साधक खुद ही अवलोकन करे निश्चित रूप से साधक के एक आकर्षण शक्ति आकार ले चुकी र. साधक ने अगर माला का प्रयोग किया है तो उसे विसर्जित कर दे.

Aatm Sanjeevini Kriya

This process is one of the important processes relating to Para Jagat upon completion of which sadhak becomes fully attractive. People likes to remain in his company, he starts getting suitable results in every fields automatically. Beside this, all the persons prefer to be in favor of that person. In this manner, this prayog holds importance for every person in today's times.

This prayog can be started on any of the day. Sadhak should do this prayog in Brahma Muhurat only.

Sadhak should use white dress and aasan or yellow dress and aasan.

After lighting the ghee-lamp in front of himself, sadhak should close his eyes and meditate on Sahastrar. This prayog can be done by sadhak without rosary too. If sadhak wishes to use rosary, he can make use of Rudraksh or sfatik rosary. In it, chanting of mantra should be done for 1 hour while meditating on sahastrar.

om Namo Chaitanyaay Hoom

Sadhak has to do this prayog for 5 days. Sadhak can see various types of scenes inside him. After 5 days sadhak should analyse himself on his own. Definitely, sadhak's attraction power would have taken a shape. If rosary has been made use of in sadhna, then it should be immersed.

---

sanket kriya siddhi sadhana

अद्भुत गोपनीय रहस्य अब आपके सामने ....

प्रकृति हमें नित नवीन संकेत किसी न किसी रूप में देती ही रहती है, हम कई बार उसको मात्र संयोग या कल्पना कह कर उसकी उपेक्षा कर देते है लेकिन कुछ समय बाद ही हमें अहेसास होता है की अगर हमने उस संकेत को समझ लिया होता तो फिर हमें लाभ प्राप्त हो सकता था या फिर हानि नहीं होतीवस्तुतः यह संकेत बाह्य न .हीं होते है वरन हमारी आतंरिक मनः चेतना हमें इस प्रकार के प्रकृति निर्मित संयोगो को एक संकेत के रूप में देखने के लिए कार्य कराता रहता है; ज्यादातर ये नजदीकी भविष्य से सबंधित होते है लेकिन चेतनास्तर कम होने के कारण हम इन संकेतों को समझ नही पातेइस लिए . अगर हम मनः चेतना का विकास कर ले तो हम आने वाली घटनाओ के बारे में पहले से ही संकेत प्राप्त कर सकते हैइसके . .अलावा हम उस परिस्थिति के लिए या उस घटना के लिए तैयार रह सकते है जिससे की हमारा अहित न हो

इस प्रयोग को भी साधक किसी भी दिन शुरू कर सकता हैये प्रयोग ब्रम .्हमुहूर्त में या फिर रात्रीकाल में १० बजे के बाद किया जा सकता है .

साधक के वस्त्र आसान आदि सफ़ेद रहे.दिन का है ७ यह प्रयोग .दिशा उत्तर रहे .

साधक को सर्व प्रथम आँखे बंद कर के अपना ध्यान त्रिनेत्र पर केंद्रित करना चाहिएउसके बाद साधक आतंरिक रूप से . गुंजरण करेइस प्रकार ध्वनि .इसके लिए साधक सांस खिंच कर ॐ का नाद करे लेकिन साधक का मुख बंद होना चाहिए . मिनिट तक गुंजरण १५ से १० इस प्रकार साधक को .साधक के अंदर ही रहनी चाहिए जिससे की गुंजरण प्रक्रिया हो सके री नहीं है की एक ही सांस में इतनी देर करनाज़रु .करते रहना है है, साधक बिच बिच में फिर से साँस को अंदर खिंच सकता हैगुंजरण हो जाने पर साधक निम्न मंत्र का जाप .इस प्रक्रिया के दौरान साधक का ध्यान त्रिनेत्र पर ही होना चाहिए . .स्फटिक या सफ़ेदहकीक माला से करे

ॐ श्रीं ह्रीं मनःचेतना ह्रीं श्रीं ॐ

(om Shreem Hreem ManahChetnaa Hreem Shreem Aum)

साधक को ११ माला मंत्र जाप करना चाहिएदिन में जब यह प्रयोग सम्प्पन हो जाए तब साधक को किसी भी कार्य से ७ . कावट आने वाली है या आ सकती पूर्व संकेत मिलना प्रारंभ हो जाते है की वह कार्य होगा या नहीं या फिर क्या बाधा या रु है. इस प्रकार साधक फिर उस परिस्थिति के अनुरूप तैयारी कर सकता है तथा अपने कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकता है . भले ही यह प्रयोग सामन्य लगे लेकिन इसको सम्प्पन करने के बाद व्यक्ति को यह ध्यान आता है की आज के युग में इस प्रयोग के बाद .तनी अधिक आवश्यकता हैप्रयोग की किसाधक माला को विसर्जित कर दे.

****

****

Sanket Siddhi Kriya (Process to unlock the hints)

Nature always provides us novel hints in one form or the other. Most of the times, we ignore them, considering it as mere coincidence or imagination. But after sometimes we feel that if we would have understood the hint, we could have attained benefits from it or avoided the losses. In reality these indications are not eternal rather our inner mind's consciousness works to visualize this nature made coincidences in form of signals. Most of the times they pertain to our immediate future but owing to our low level of consciousness, we are not able to understand these hints.Therefore,if we can develop consciousness of our mind, we can get the hints about the coming incidents in advance. Besides this, we can be well prepared for that condition or incident so that it does not harm us.

Saturn malefic Sadhe Sati period and Sapphire?

साढ़े साती और नीलम रत्न सबंधित कुछ सूत्र

मानव जीवन ग्रहो के आधीन हैं यह कहा जाता हैंकि ग्रह ही राज्य देते हैं और ग्रह ही राज्य का हरण भी कर लेते हैं .वास्तव मे बाह्य गत रूप से तो यह समझ मे नही आता की यह कैसे संभव हैं की एक तरफ लाखो करोडो लोग और एक तरफ मात्र ९ ग्रह और सभी के जीवन को नियंत्रण ...?? सामान्य तर्क से सभी कुछ नही जाना या समझा जा सकता हैं खासकर जब बात परा विज्ञानं के तत्वों की हो..क्योंकि जहाँ मानव मस्तिस्क की सोच का अंत हो वहां से यह उच्च प्रज्ञा की बाते या क्षेत्र प्रारंभ होता हैं .उच्चस्थ तंत्रग्य ,मनस्वी ....तंत्र मर्मग्य .... साधक यह कहते हैं कि कोई भी ग्रह सीधे सीधे हमारे जीवन मे कुछ नही करते हैं बल्कि वे धनात्मक और ऋणात्मक किरणे प्रसारित करते हैं अब हर व्यक्ति के कर्म जैसे हैं वेसे ही उसको परिणाम प्राप्त होते हैं .

यह भी सत्य हैं की हमने ही इन कर्मो का सृजन किया हैं तो हमे ही परिणाम भी सहन करना होगा और हम साधना के माध्यम से इन कर्म फलो को न्यून कर सकते हैं .

और यह सारा विश्व कर्म पर आधारित हैं क्या देवता क्या दानव , यक्ष, किन्नर सभी इस कर्म या कार्मिक गति के अन्तरगत ही आते हैं .और नव ग्रहो मे दंडाधिकारी के रूप मे शनि देव को कार्य दिया गया हैं अतः यह स्वाभाविक हैं की मानव मात्र को उनका नाम सुनकर कुछ भय ग्रस्तता हो .क्योंकि कर्म फल भी केबल इस जीवन के नही बल्कि विगत अनेको जीवनों का ..क्योंकि अगर सारे परिणाम इसी जीवन के तत्क्षण मिलने लगे जैसे झूठ बोलते ही जीभ नष्ट हो जाये कुछ गलत कार्य करते ही हाथ नष्ट हो जाए तो सारा विश्व एक क्षण मे नष्ट होने लगेगा .इसलिए कार्मिक परिणाम हमें प्राप्त तो होते हीं हैं पर कब ??? यहाँ प्रकृति के अपने नियम हैं .

इसी क्रम मे साढ़े साती का नाम आता हैं . शनि की जन्म कुंडली मे चन्द्रमा के साथ या उससे एक भाव आगे या पीछे होने पर यह स्थिति बनती हैं ,सभी वैदिक ज्योतिष कार इस अवस्था को कोई बहुत उचित नही मानते हैं और यह समय जो लगभग ७ १/२ साल का होता हैं बेहद कष्ट कारक माना जा ता हैं . और सामान्य ज्योतिषी सीधे ही इस अवस्था मे नीलम पहिनने की सलाह दे देता हैं जो की बिना विचारे तो कभी भी उचित नही माने जा सकती हैं .नीलम के बारे मे सुबिख्यात तथ्य यह हैंकि यह पहिनने के कुछ घंटे मे ही अपना बुरा या अच्छा असर देने लगता हैं .

- यदि व्यक्ति को भय सा लगने लगे या
- रात को डरावने से सपने आने लगे या
- की दुर्घटना हो जाये भले ही वह छोटी या बड़ी हो या
- अचानक हानि की स्तिथि बनने लगे या
- अपमान जनक अवस्था आ जाए या
- चेहरे मे कुछ अंतर सा महसूस हो या
- आखो मे दर्द आदि की समस्या हो

तो तत्काल यदि नीलम पहना हैं तो उतार दे .

सिर्फ यह सोच कर की नीलम ...इसलिए पहिना देना हैं की

- साढ़ेसाती चल रही हैं .
- या शनि की महादशा चल रही हैं या
- शनि की अंतर्दशा चल रही हैं .

- या शनि कमजोर हैं इसलिए
- या शनि लग्नेश हैं

इसलिए कदापि उचित नही कहा जा सकता हैं .

सबसे पहले तो यह समझना चहिये की भले ही शनि लग्नेश हो पर यदि कुंडली मे पीड़ित हैं या कमजोर हैं या नीच राशि के हैं तो कदापि नीलम तो पहिनने को न कहे ..और यही तथ्य अन्य सभी बिन्दुओ पर लगा कर देखें की क्या शनि अशुभ भाव के प्रतीक तो नही हैं शनि किसी अन्य भाव के अधिपति खासकर छठवे या आठवे के कारण पीड़ित तो नही हैं.अभी गोचर मे शनि जन्म कुंडली मे कहाँ हैं और जन्म के शनि के सापेक्ष अभी गोचर के शनि की स्थिति कैसी हैं ...अतः यह मजाक नही बेहद गंभीरता का विषय हैं जिसे उतनी ही गंभीरता से लिया जाना चाहिये

बिना भलीभांति सभी तथ्यों के देखे बीना सीधे ही ....अगर ऐसा हैं तो नीलम पहिनने से उनकी अशुभता ही बढेगी अतः.....अतः इस अवस्था मे नीलम पहिनना उचित नही हैं .

अगर कभी पहिनना ही पड़ जाए तो क्या निराकरण हैं .

पहला तो ये की किसी भी शनि वार को नीलम रत्न ले ले फिर गंगाजल या दूंध से धोकर उसकी पूजन करें ,,फिर् शनि देव का मंत्र करके किसी नीले कपडे मे बाँध कर धारण कर ले और यदि रात्रिमे भयानक सपने आते हैं तो उस रत्न को वापिस कर दे और कोई दूसरा नीलम का रत्न ले कर यही प्रक्रिया पुनः करे ..वेसे भी आज कल शुद्ध रत्न कहाँ आसानी से मिलते हैं और अगर मिलते हैं तो इतने मूल्यवान की सामान्य व्यक्ति उसे ले नही सकता हैं

दूसरा तो यह की कुंडली का विश्लेषण अच्छे से किया जाए .सभी तथ्यों को भली भांति देखा जाये परखा जाये .सिर्फ साढ़े सा ती का भय या हौवा ..अपनी जेब भरने केलिए ना बनाया जाए ..इस समय काल मे भी अनेको के लिए उच्चावस्था मे जाने के मार्ग खुले हैं ऐसे अनेको केस सामने आये हैं क्योंकि राशि और भाव का अपना अगर अर्थ हैं तो नक्षत्र का भी असर क्यों न माना जाए ...अतः सिर्फ एकांगी रुख न बनाया जाए .

इसी तरह से ब्लॉग Nikhil-alchemy2 .blogspot.com और Nikhil-alchemy नाम के फेसबुक ग्रुप पर शनि देव की अनुकूलता के लिए कुछ अति विशिट साधनाए दी हुयी हीं उनका लाभ लेना चाहिए या .. कोई भी साधना जो की एक शुद्ध और अष्ट संस्कारित पारद से निर्माणितशिवलिंग पर की जा सकें उसे करना चाहिये जैसे की **चंद्र मौलिश्वर साधना** तो अपने आप मे अति उत्तम सिद्ध हुयी हैं .

शनि के तांत्रिक मंत्रो का जप अनुष्ठान कहीं जयादा फली भूत देखा गया हैं खासकर तब , जबकि सबंधित व्यक्ति ने मनो योग पूर्वक स्वयं जप किया हो . और तार्किक दृष्टी से देखा जाए तो क्या एक पुरे दिन मे एक जैसी ही घटना क्रम होते हैं .?? तब पूरे सात साल को भले ही तीन भाग मे बांटा जाए और परिणाम कहे जाए कुछ उचित सा नही हैं .

अतः जब भी साढ़े साती की बात सामने आये .तो साधनात्मक उपाय करें और जो भी प्रतिकूलता सामने आ रही हैं उसे अनुकूलता मे बदले .. और किसी भी ज्योतिष की अपेक्षा जो इस शास्त्र के सत्य मे अच्छे जानकार हैं उनसे संपर्क करें ..निश्चय ही अनेको प्रतिकूलताओ मे कमी आएगी ..पर यह भी ध्यान मे रखे की आज गली गली जिस तरह से ज्योतिष वर्ग सामने आ गया हैं उसमे बहुत कम ही हैं जो इस शास्त्र की मर्यादा या गरिमा बढ़ाने के लिए आज भी तत्पर हैं .

****

Saturn sadhe sati and neelam (sapphire)

Its being said that and believe that whole human life is under the power of planet s. and these are grah/planets who give power and rajya and they are the grah/planets who snatch the same .in outwardly is quite difficult to understand that how is that possible only 9 planet can control the life of so many hundreds million ?? but through normal logic nothing can be understand specially science like this .and specially when we are taking the elements of para psychology since when the limit of normal thinking stop there the space of para psychology or higher knowledge or higher pragya starts. Our tantra aachary ,tantra marmagy ..and sadhak says that these grah or planet directly does not do to our life but they radiates positives and negatives rays so each one will get the result as per his karms.

Its true that if we produce this karma so that we have to bear the outcomes of these but we can reduce the fruits of our evil karms of previous lifes .this whole world run on the wheel of karm ,and dev ,daanav ,angel and all are even us too .all are comes in the grip of karma. and in nav grah means nine planets .Saturn is consider as the dandadhikari or punishment giver position . so that its quite natural that every one has some fears from him since the outcomes of not only this life but from so many past lives …since if are gets the out come of our karam instantly than whole world will be destroy

अनुभूत तंत्र-प्रारंभिक परिचय

Some factS related to anubhut tantra

कुछ तथ्य जिन्हें जानना ही चाहिए ...

तंत्र शास्त्र तो सीमातीत हैं और इसकी गहराई तो अथाह हैं .और यह भी बात सच हैं जीवन के सभी पक्षों को यह स्पर्श करता हैं ही तो समस्त आध्यात्म जगत को सभी पक्षों को भी समान रूप से स्पर्श करता हैं ही . कम या ज्यादा यह एक अलग तथ्य हैं .

तंत्र साधना के भी अनेक आयाम हैं और अनेक दृष्टी से इन साधनाओ को देखा जा सकता हैं.किया जासकता हैं और परखा जा सकता हैं . पर कुछ बाते जो साधक को जानना चाहिये ही .

तंत्र क्या हैं और अनुभूति का क्या महत्त्व हैं??

अनेक परिभाषा उपलब्ध हैं पर जो कदाचित सबसे सरल हैं वह यह की जीवन के सभी पक्षों को साथ मे लेते हुए , सारे विश्व को दिव्यमय देखते हुए अपने स्व स्वरुप को जानना और अपनी अंदर छुपी असीम संभावनाओ को समझना और पाना जिस एक सुव्यवस्थित ढंग से सम्भव हो पाए वह रास्ता वह प्रक्रिया वह मार्ग तन्त्र कहलाता हैं .

अनुभूति का सबसे सरल अर्थ हैं की यह जानना की की गयी प्रक्रिया सही ढंग से संचालित हैं या नही .और साथ ही साथ यह एक एक मात्र माप दंड नही हैं . और साधना के सफल होने पर होने वाली उपलब्धियां सभी कुछ इस शब्द के अन्तरगत हैं .

क्या साधना की सफलता का एक मात्र माप दंड .उसमे अनुभूति का होना हैं.??

इस प्रश्न का उत्तर हाँ या नही दोनों मे कहा जा सकता हैं .अनेको को साधना मे कोई भी अनुभूति नही होती खासकर उन साधनाओ मे जो जीवन को परिवर्तित करने वाली होती हैं दीर्घ कालीन होती हैं . और किसी नए साधक की दृष्टी से देखा जाय तो निश्चय रूप से हाँ कहा जायेगा क्योंकि ये अनुभव उसको और दृढता से इस पथ पर चलने केलिए एक इशारा या एक संबल बनते हैं .तो इसका अर्थ हर जगह ,साधना मार्ग और परिस्तिथियाँ पर आधारित हैं .

क्या दो साधक जो एक ही साधना और वह भी एक साथ कर रहे हो उनकी अनुभूति अलग अलग होती हैं.??

निश्चय ही ...भले ही एक ही साधना कर रहे हो ,पर उनके संस्कार ,पूर्व जन्मगत कर्म और परिस्तिथियाँ जिनसे वह पले बढे हैं वह सब अलग अलग हैं और साधना के प्रति साधक का दृष्टी कोण भी तो हर साधक का अलग अलग होता हैं , जैसे कोई उस साधना को परखना चाहता हैं तो कोई कोई सत्य के या ब्रम्हांड के नए नए आयाम जानना चाह ता हैं तो केबल उस क्रम को करना चाहता हैं तो कोई उस मार्ग की साधनाओ का मानो अधिपति ही बनना चाहता हैं .इस कारण निश्चय ही अनुभूति भी अलग अलग होगी ही .पर कुछ मूल भूत बाते एक सामान हो सकती हैं .

क्या साधना काल और उसके बाद अनुभव को ही अनुभूति की संज्ञा दी जा सकती हैं ???

नही ऐसा नही हैं , बल्कि जिस समय से साधक किसी भी साधना को समपन्न करने का मन बनाता हैं ठीक उसी समय से वह उस साधना को मानो उसने प्रारंभ कर दिया हैं, और विभिन्न प्रकार की कठिनाईयां फिर वह चाहे ओफिस् या परिवार की हो या किसी का बीमार पड़ जाना या स्वयं के स्वस्थ मे नरम गरम होना साथ ही साथ साधना समाप्ति के उपरान्त भौतिक जीवन मे परिवर्तन भी इस अनुभूति का एक आवश्यक अंग हैं यह सभी तो अनुभूति की संज्ञा मे आते हैं. क्योंकि सारा जीवन ही साधना मय हैं तब केबल साधना काल मे होने वाली या उसके बाद उसके परिणाम को ही अनुभूति मानना उचित नही हैं .

क्या अनुभूति मे सबंधित साधना इष्ट के दर्शन स्वपन या प्रत्यक्ष मे होंना भी आएगा ???

निश्चय ही हाँ पर एक बात पहले से अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये , की जब तक साधक का एक स्तर न आ जाए , तब तक सबंधित साधना के देवता उस साधना काल मे सामने नही आते बल्कि वह कोई ओर रूप धारण करके या प्रछन्न रूप मे या उनके किसी भी वाहन के रूप मे साधक के सामने या स्वपन मे आते हैं पर यह भी एक मात्र सत्य नही हैं बल्कि स्वपन मे होने वाले दर्शन भी इस अनुभूति के वर्ग मे आते हैं .

क्या जो दृश्य आखों से दिखे केबल वही ही अनुभूतिमे आयेंगे ??

दिव्य अनुभवों को केबल इन्द्रियाँ वह भी भौतिक इन्द्रियों की सीमा मे बाधने का तो कोई अर्थ ही नही क्योंकि आखों की एक सीमा हैं यह अभौतिक दृश्य नही देख सकती हैं पर कान तो दिव्य ध्वनियों को भी सुन सक्ते हैं और जो परा लौकिक क्षेत्र से सबंधित हैं .अतः ऐसा नही हैं अनेको बार ध्वनि की अपेक्षा , दिव्य सुगंध आदि का भी अनुभव होना भी इसी श्रेणी मे आएगा ..अतः केबल आखों और ध्वनि के माध्यम से होने वाले अनुभव को ही अनुभूति मानना उचित नही हैं .

अगर किसी साधना मे कोई भी अनुभूति हो ही नही तब क्या उस साधना को सफल हुआ माना जायेगा ??

साधरणतः अनुभूति किसी साधना की सफलता का पर्याय नही हैं , फिर कुछ साधना ये जैसे त्रिपुर सुंदरी साधना आदि मे तो साधनाकाल मे अनुभूति होती ही नही हैं , पर यह सत्य हैं की किया गया मंत्र जप कभी भी व्यर्थ नही जाता या तो वह साधक के या फिर उसके पूर्व जीवन के दोषों को नष्ट करने मे उपयोगित होता हैं और एक बार जब एक स्तर आ गया तब अनुभूति भी होना प्रा रम्भ हो जाता हैं

****

****

* **Anubhut tantra - preliminary introduction**

The tantra shastra has no boundary and its depth also has no limit .and this is true that it touches the all aspect of our life ,may be less or more but that is different things .

There are many dimensions of the tantra sadhana and that has many way or aspect through that can be seen or tested but there are some general point for a sadhak point of view he must know .

What is tantra and what is the importance of anubhuti or experience ??

There are many definitions of the tantra among them what is most easy to understand is ,that which consider or include all the aspect of life ,and have a view that whole world is divine ,and through that knowing the real self and able to understand the unlimited potential hidden in side us and able to acquire that with a systematic way .that way or marg is tantra .

Anubhut tantra sadhana–some importanat facts

जो आपके लिए आवश्यक हैं ....

अनुभूति अपने आप में एक दिव्य शब्द है. जीवन के हर एक क्षेत्र में इस शब्द की महत्ता अपने आप में अवर्णनीय है. अनुभूति एक एसी प्रक्रिया है जो की व्यक्ति के आत्म तत्व भू तत्व तथा मनः तत्व को जोड़ने का काम करती है. इसे से स्मृति का निर्माण होता है और जीवन के पक्षों की सूक्ष्मता का आभाष मनुष्य को होता रहता है. तंत्र क्षेत्र के साधक के लिए इस शब्द की महत्ता समजना मुश्किल नहीं है. ब्रम्हांड अपने आप में एक स्वतंत्र सत्ता से संचालित रहता है जिसे हम ब्रम्ह की उपाधि देते है. इसी ब्रम्ह का अंशभाग ब्रम्हांड के हर एक जड़ और चेतन में रहती है. तंत्र साधक किसी न किसी रूप में साधना के माध्यम से एक निश्चित शक्ति का सहारा ले कर इसी दोनों ब्रम्हांड को जोड़ने की प्रक्रिया में संलग्न रहता है. और इस प्रकार वह एक पूर्ण सत्ता में अपने आप को इस प्रकार एकाकार कर लेता है की जहा पर उसका अलग होना संभव नहीं होता और वह खुद एक ब्रम्ह बन जाता है. यह पूर्णता पथ पर जो साधक की गति होती है वह अनुभूति है.

और जिसको वो पार कर चूका है वह अनुभूत होता है. चाहे वह ज्ञान शक्ति हो या क्रिया शक्ति या फिर वह इच्छा शक्ति का परिणाम क्यों न हो. क्यों की जो जितना ही शरीर, मन तथा ब्रम्हांड रुपी आत्म तत्व से जुडता जाएगा वह उतना ही सास्वत और स्थायी होता जाएगा. निश्चित रूप से अनुभूति जब बार बार आकार लेती है तब वह ठोस होती जाती है, स्थायी होती जाती है, शंका को निर्मूल करते हुए वह शरीर मन तथा आत्मा में उतरता जाता है और वही आगे अनुभूत बन जाता है. और यही अनुभूत सत्य तथा इससे आगे सास्वत सत्य बन जाता है. क्यों की सत्य हर एक व्यक्ति के लिए अलग अलग हो सकता है लेकिन मूल उत्सर्ग का सत्य सभी के लिए एक ही होता है. उदहारण के लिए हर एक व्यक्ति के अंदर शक्ति है यह हमारे मूल उत्सर्ग ब्रम्ह का सत्य है लेकिन व्यक्ति का सत्य अपने आप में अलग हो सकता है. लेकिन इससे मूल सत्य में परिवर्तन संभव नहीं हो पता. उसी सत्य के आधार पर ही सभी सत्य विभक्त होते है. इस प्रकार मनुष्य की यात्रा पूर्णता की और निश्चित रूप से अग्रसर होती है, ब्रम्ह की और अग्रसर होती है क्यों की वह हर क्षण एक नितांत यात्रा होती है अनुभूति से अनुभूत की और. लेकिन साश्वत सत्य को व्यक्ति मात्र से नहीं जोड़ा जा सकता न. तंत्र तो ब्रम्हांड को अपने अंदर उतारने की कला है, अपने आप में ब्रम्ह से घुल मिल जाने की क्रिया है; फिर यह व्यक्तिगत रहे भी तो कैसे? साधना जगत में भी कुछ ऐसे ही नितांत सत्य मोती है जो की अनुभूति से आगे बढे हुए है, जो की अनुभूत है. एसी तांत्रिक प्रक्रियाए जिसका प्रयोगात्मक और क्रिया पक्ष इतनी बार अनुभूत हो चूका है की वह सास्वत हो गई, स्थायी हो गई जिसमे निचितरूप से परिणाम की प्राप्ति होती ही है. क्यों की वह सामान्य प्रक्रिया न रह कर ब्रम्हांडीय प्रक्रिया बन चुकी है. एसी साधनाए निश्चित सफलता प्रदान करती ही है. साधक का जीवन कर्म पाप या संस्कार इस बिच नहीं आ सकते, अगर एक व्यक्ति अपने हाथ से अपने गाल पर तमाचा मारेगा तो चाहे उसने कितने पाप किये हो या चाहे कितने भी पुण्य किये हो उसको गाल पर दर्द की अनुभूति होना निश्चित है; एक ठोस ब्रम्हांडीय नियम से आधार पर की गई विशेष प्रक्रिया अपना फल पूर्ण रूप से प्रदान करती ही है. जिस ब्रम्हांडीय शक्ति ने यह नियम बनाया है उसी नियम का आधार है अनुभूत तंत्र. अनुभूत तंत्र साधनाए एसी ही तीव्र प्रक्रियाए है जो की हमेशा निश्चित रूप से परिणाम की प्राप्ति करवाती ही है. एसी प्रक्रियाए प्रकाश में नहीं आई, इसके पीछे कई प्रकार के कारण हो सकते है लेकिन ऐसा भी नहीं है की इस प्रकार की प्रक्रियाए लुप्त हो गई है. गुरुमुखी परंपरा से एसी साधनाये नितांत गतिशील रही है. इन साधनाओ के पीछे कई प्रकार के सूक्ष्म ब्रम्हांडीय नियम काम करते है तथा शक्तियो को साधना प्रक्रिया से बाध्य हो कर साधक का कार्य करना ही पड़ता है. अगर साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इन अनुभूत तांत्रिक प्रक्रियाओ को सम्प्पन करे तो उसे कभी भी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा.

****

Anubhut Tantra Sadhna

Anubhuti (emotional experience/feeling) is a divine word in itself. Significance of this word in every field of life is indescribable in itself.Anubhuti is one such activity which unifies the Aatm element, Bhu element and Manah (mind) element of person. This result into creation of Smriti (remembrance) and human being can feel the subtlety of aspects of life.

Vijyaa sadhana

निश्चित धन प्राप्ति के लिए अद्वितीय साधना

एक पूर्ण सुखमय जीवन के लिए निश्चित रूप से धन की महत्ता को निर्विवादित रूप से स्वीकार किया जाता है. अपने जीवन को सुखमय तथा ऐश्वर्यवान बनाना कौन पसंद नहीं करेगा. लेकिन यह सहज ही संभव नहीं हो पता है. कई बार व्यक्ति के कर्मो का फल नहीं मिलता है और अगर मिलता है तो वह विपरीत रूप में मिल जाता है, एसी स्थिति में व्यक्ति चाहे धन प्राप्ति के लिए कितनी भी कोशिश कर ले लेकिन उसे सफलता प्राप्त होती ही नहीं. इसके पीछे कई प्रकार के कारण हो सकते है. लेकिन एसी स्थिति में व्यक्ति का जीवन बोजिल और अत्यंत ही जीर्ण हो जाता है. प्रस्तुत प्रयोग देवी विजया से सबंधित है. यह प्रयोग साधक को निम्न लाभ पहोचाते है

- साधक को धनप्राप्ति में बाध्य विगत तथा वर्तमान जीवन के पापदोषों का शमन करता है जिससे की साधक को धन की प्राप्ति संभव हो सके

- इस साधना को करने पर रुष्ट गृह शांत होते है तथा उनकी कृपा प्राप्त होती है, इस प्रकार धन प्राप्ति के मार्ग में अगर कोई ग्रहबाधा है तो वह हट जाती है तथा ग्रह की कृपा द्रष्टि प्राप्त होती है
- साधक को अगर व्यापर आदि का ज्ञान नहीं है तो उसे देवी अन्तःस्फुरणा जागृत कर साधक के लिए मार्गप्रसस्त करती है, इसके अलावा व्यापर मंद या बंद पड़ गया हो तब भी इस साधना के माध्यम से उसे पुनः उसे गतिशील किया जा सकता है, देवी सारे व्यवधान दूर करती है
- अगर साधक का धन कही रुका या फस हुआ है तो उसे उस धन की प्राप्ति हो जाती है
- इस साधना से साधक के सामने आय के नये नये स्तोत्र खुलने लगते है तथा किसी न किसी रूप में धन की प्राप्ति होती रहती है. कई बार साधक को आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति हो जाती है.

इस प्रकार यह साधना साधक को किसी भी रूप में धन देने के लिए समर्थ है और साधक को निश्चित धन की प्राप्ति करवाती ही है.

इस साधना को साधक शुक्रवार की रात्री में ११ बजे के बाद शुरू करे.

सर्व प्रथम साधक स्नान कर के लाल वस्त्र धारण कर, लाल आसान पर बैठे. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए. साधक के अलावा साधना कक्ष में और कोई नहीं होना चाहिए.

अगर साधक विजया यन्त्र कही से प्राप्त कर सके तो उस पर सामन्य पंचोपचार पूजन करे, अन्यथा देवी विजया की एसी तस्वीर को प्राप्त करे जिसमे देवी के एक हाथ में कमल और एक हाथ में घट या कलश ज़रूर हो. इस प्रकार यंत्र उपलब्ध न होने पर तस्वीर को प्राप्त कर उस पर पूजन करे. अगर यह भी किसी भी प्रकार से संभव नहीं है तो साधक महालक्ष्मी का चित्र स्थापित करे और पूजन करे. इस साधना में साधक को तेल का दीपक लगाना है. तेल किसी भी प्रकार का हो सकता है. साधनाकाल में साधक को ब्रम्हचर्य का पालन करना चाहिए.

इसके बाद साधक मूंगामाला या विद्युत माला से मंत्र जाप प्रारंभ करे

साधक पहले एक माला मंत्र जाप निम्न मंत्र का करे

ॐ कमलवासिनि साम्राज्यसिद्धिं हूं हूं नमः

इसके बाद साधक निम्न विजया मंत्र की ११ माला जाप करे

ॐ श्रीं ह्रीं सर्व विजयमंगल विजयाये मंगलदायिनि श्रीं ह्रीं ॐ

११ माला हो जाने पर साधक निम्न मन्त्र की फिर से एक माला मंत्र जाप करे

ॐ कमलवासिनि साम्राज्यसिद्धिं हूं हूं नमः

यह क्रम अगले ७ दिन तक बना रहे. ८ वे दिन शुक्रवार को साधक १०१ आहुति गुलाब और शहद से मिला कर अग्नि में समर्पित करे. अगर यह संभव नहीं हो तो शहद में गुलाब का इत्र डाल कर आहुति देनी चाहिए. यह आहुति **ॐ श्रीं ह्रीं सर्व विजयमंगल विजयाये मंगलदायिनि श्रीं ह्रीं ॐ** मन्त्र से समर्पित करनी है.

साधक को इस साधना समाप्त होते होते ही विचित्र अनुभव होने लगते है तथा किस्मत से बंद हुवे आय और धन प्राप्ति के सभी दरवाज़े खुलने लगते है. साधक को यन्त्र या चित्र पूजा स्थान में रखना चाहिए. माला को विसर्जित नहीं करना है. आगे साधक अगर हर शुक्रवार को इस विजया मंत्र की एक माला करते रहे तो उसके जीवन में धन सबंधी अभाव नहीं रहता.

Vijayaa Sadhna – for definite attainment of wealth

Importance of wealth is accepted indisputably for living a complete happy life. Who will not like his life to become happy and prosperous but this is not possible easily. Many times, person does not get the results of his karmas and if he gets, he gets the opposite results. In such a condition, person can make many attempts to attain wealth but he does not get any success. There can be many reasons behind this. But in such a condition life of the person become burdensome and much withered. The prayog mentioned is related to Vijaya.This prayog provides following benefits to sadhak.

- It destroys the sins of present and past lives of sadhak which were obstacle in attainment of wealth so that sadhak can attain wealth.
- Every sadhna pacifies displeased planets and their blessings are obtained. In such a manner, if there is any obstacle due to planet in attainment of wealth, it is cleared and blessings of planet are obtained.
- Sadhak, if does not have any knowledge of business then goddess activates sadhak's inner consciousness and shows the way to sadhak. Besides this if business has stopped or facing recession then this sadhna can again help the business to flourish. Goddess gets rid of all obstacles.
- If sadhak's money is stuck somewhere, he gets that money.

sarv kaary siddhi sadhana

भौतिक जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए

जीवन में मनुष्य के ऐसे कई कार्य होते है जिनमे सफलता मिलना नितांत आवश्यक होता है. साधक को अपने किये गए कार्यों में कई बार सफलता ना मिलने पर हताश तथा निराशा का सामना करना पड़ता है. कई बार धन यश और सन्मान की प्राप्ति के लिए कार्यों की सिद्धि होना एक आवश्यक बिंदु बन जाता है. इस प्रकार व्यक्ति अपना तथा अपने परिवार का गौरव ऊँचा उठाने के लिए प्रयत्नशील ज़रूर रहता है लेकिन उसे मनोवांछित सफलता ना मिलने पर व्यक्ति का जीवन कष्टमय बन जाता है. तंत्र में कई ऐसे उपाय है जिसके माध्यम से साधक अपने मनोवांछित कार्यों में सफलता की प्राप्ति कर सकता है. यह कार्य जीवन के किसी भी पक्ष से सबंधित हो सकते है, किसी से मुलाकात करना या फिर व्यापर में उन्नति के लिए प्रयाण करना, या फिर कोई महत्त्वपूर्ण सफर पर जाना हो, इस प्रकार सर्व कार्यों की सिद्धि के लिए साधक यह प्रयोग करना चाहिए.

इस प्रयोग के लिए साधक को ७ हकीक पत्थरो की ज़रूरत पड़ती है. साधक को यह प्रयोग बुधवार की रात्री में १० बजे के बाद करना चाहिए. साधक स्नान करने के बाद सफ़ेद धोती पहने और सफ़ेद आसान पर बैठ जाए. दिशा उत्तर रहे.

अपने सामने एक सफ़ेद रुमाल में ७ हकीक पथ्थरो को रख दे. और उसे लोहबान का धुप दे. इसके बाद साधक सफ़ेद हकीक माला से निम्न मंत्र की एक माला जाप करे.

अलक मलक की खबर जो लावे सात पीर पैगंबर आवे

एक माला मंत्रजाप हो जाने पर साधक एक हकीक पत्थर को अपने हाथ में ले और मंत्र बोल कर उस पर फूंक मारे. इस प्रकार ७ बार फूंक मारे और उसे रख दे. इस प्रकार सातो पथ्थरो पर ये प्रक्रिया करे.

साधक को यह क्रम ७ दिन तक करना है और ७ वे दिन उस प्रक्रिया पूर्ण होने पर उन सातो पथ्थरो को उसी रूमाल में पोटली बाँध कर रख दे. जब भी कभी कार्य सिद्धि करनी हो तब उस पोटली को हाथ में ले कर सातबार मंत्र का मन ही मन जाप कर के फूंक मरे और अपनी इच्छा को बोल कर उसे जेब में रख ले और कार्य के लिए चले जाए तो कार्य सफल होता है. वापस लौट कर पोटली को लोहबान का धुप दे कर वापस रख दे. इस साधना में साधक को ब्रम्हचर्य व्रत का पालन करना चाहिए और जब भी कार्य सिद्धि के लिए जाना हो तो पहले स्नान शुद्धि कर के पवित्र अवस्था में ही इसका प्रयोग करना चाहिए. यह पोटली जीवन भर कार्यसिद्धि फल देती रहती है.

Sarv Kaarya Siddhi sadhna

There are many works of human beings in life in which attaining success is extremely important. Sadhak has to sometimes face disappointment due to non-attainment of success in the works done by him. Sometimes accomplishment of work becomes essential element for attainment of wealth, fame and respect. In this manner, person always tries to raise prestige of himself and his family but non-attainment of desired results makes his life troublesome. There are many ways in tantra by which sadhak can attain success in desired work. These works can be pertaining to any aspect of life. Meeting someone or making attempts for progress of business or going on any important journey; likewise for accomplishment of all these works sadhak should do this prayog.

For this prayog, sadhak needs 7 Hakeek stones. Sadhak should do this prayog on Wednesday night after 10:00 P.M. Sadhak should take bath, wear white dhoti and sit on white aasan. Direction should be north. Place 7 stones in white handkerchief in front of him and worship it whit dhoop of Lohbaan. After that sadhak should chant one round of the below mantra with white Hakeek rosary.

Alak Malak Kee Khabar Jo Laave Saat Peer Paigambar Aave

वशीकरण साधना

Vashikaran sadhana

एक अनूठा साधना रहस्य सिर्फ आपके लिए

कई बार जीवन में अचानक से इसे संकट आ जाते है जिनका निकाल ज़ल्द से जल्द ना करने पर पुरे परिवार को दुःखमय जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ जाता है. कई बार परिवार में से कोई व्यक्ति बुरी संगत में फस जाता है, एसी स्थिति में वह असामाजिक कृत्यों की और अग्रसर हो जाता है. या फिर कुसंगत में फस कर व्यक्ति अपने आप ही अपना सारा जीवन बर्बाद कर लेता है. इसके अलावा कई बार कई व्यक्ति परेशान और त्रस्त कर के अपने शत्रुता का परिचय देते है. या फिर अपने कार्यस्थल पर हमारे किये गए काम पर कोई और अपना हक जमा कर सारा यश प्राप्त कर लेता है. वस्तुतः एसी स्थिति में व्यक्ति धीरे धीरे हिन् भावना से ग्रसित होने लगता है और कई प्रकार के मानसिक रोगों से ग्रसित हो जाता है. इसके साथ ही साथ व्यक्ति के परिवारजन भी एसी समस्याओ से पीड़ित होने लगते है. एसी स्थिति में कोई उपाय सफल न हो तो वशीकरण का सहारा लेना चाहिए. वशीकरण कोई हिन् विद्या नहीं है वरन इसका उपयोग कई स्वार्थी व्यक्तियो ने हिन् प्रवृतियो के लिए किया इस लिए समाजमें इस विद्या के नाम से अकारण ही भय फैलने लगा है. एक डॉक्टर छुरी से किसी की जान बचाता है और दुवाये प्राप्त करता है वही एक खुनी इसी से किसी का खून करता है और पूरा जीवन बद्दुवा लेता है लेकिन इसमें छुरी का क्या दोष. वशीकरण भी एक उत्तम विद्या है जिसके माध्यम से जीवन में संकटो से मुक्ति मिल सकती है. और एसी नाज़ुक परिस्थितियो में और आज के युग में इस प्रकार की साधना नितांत आवश्यक है.

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक के पास साध्य (जिस पर प्रयोग किया जाना है) के कपडे का टुकड़ा, या फोटो होना आवश्यक है.

साधक इस प्रयोग को मंगलवार से शुरू करे. साधक को रात्री काल में ११ बजे के बाद यह साधना शुरू करनी चाहिए. साधक स्नान कर लाल वस्त्रों को धारण करे. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ हो. अपने सामने साध्य के कपडे का टुकड़ा या फोटो या दोनों को लाल वस्त्र पर स्थापित करे और तेल का दीपक जला ले. इसके बाद साधक निम्न मंत्र की रुद्राक्ष माला से २१ माला जाप करे.

ॐ चाण्डाली अमुकं वश्य वश्य हूं फट्

इसमें अमुकं की जगह साध्य व्यक्ति का नाम ले. मंत्र जाप के बाद साधक अग्नि प्रज्वलित कर के उसमे उबली हुई मसूर से २१ या १०८ आहुति इसी मंत्र से प्रदान करे.

यह क्रम ५ दिन तक ज़ारी रखे. ५ वे दिन मंत्र जाप और आहुति हो जाने पर उस वस्त्र या तस्वीर पर जो इच्छित भावना हो वो मानसिक रूप से आज्ञा दे. जेसे की कोई व्यक्ति अकारण परेशान कर रहा हो और उस पर प्रयोग किया गया है तो वस्त्र या तस्वीर को हाथ में रख कर मन ही मन यह उच्चारण कर आज्ञा देनी है की तुम मुझसे शत्रुता को भूल जाओ और किसी भी रूप से मेरा अहित या परेशां नहीं करोगे. इस प्रकार ५ बार दोहराए. जब ये हो जाए तो दूसरे दिन साधक माला और वस्त्र/फोटो को किसी निर्जन स्थान पर छोड़ कर घर लौट आए. इस प्रयोग की यह विशेषता है की साधक व्यक्ति को भावना दे सकता है की उसे क्या करना है.

यह साधना त्वरित रूप से अपना प्रभाव दिखाती है और साधक को इस प्रयोग का असर दूसरे ही दिन से दिखाई देने लगता है.

Vashikaran Sadhana:

In the life, many times so many troubles arrive which are needed to be removed as soon as possible or else it may result in the sad living of the whole family. Many times person from the family gets trapped in the in appropriate company of the person and in such situation mind of the person derives to the anti social activities. And being trapped in such antisocial company one ruins own life. Apart from this, people start acting enemies with no reason by troubling and torturing. Or it may be that in our workplace someone else receives credit by establishing their rights forcefully. Actually, in such situation person slowly starts moving towards loosing self confidence and gets trapped in many mental disorders. Apart from this, family members of the suffering person also get affected with many such troubles. In all such situations when nothing works, one may go for the Vashikarana. Vashikarana is not cheap art but few selfish people used it for cheap acts thus in society this became scary name.

कार्यस्थल में उन्नति के लिए साधना

Sadhana for To geT success in workplace

सभी के लिए उपयोगी साधना विधान

कई बार व्यक्ति को अपने कार्य स्थल में कई प्रकार की समस्याओ से ग्रस्त रहना पड़ता है. बॉस बात नहीं मानते, सह कर्मीओ का आचरण ठीक नहीं होता है, या फिर दूसरों की अपेक्षा हमेशा आपको ही किसी न किसी रूप में कार्य की अपूर्ति का कारण घोषित किया जाता है. कई बार यह भी देखा गया है की व्यक्ति को हमेशा से हिन् भावना से ग्रसित रहना पड़ता है, क्यों की उसके काम की हमेशा अनदेखी कर दी जाती है, सहकर्मी विविध प्रकार के इलज़ाम लगाते है तथा व्यक्ति के ऊपर अपना काम थोप देते है, साथ ही साथ किसी भी प्रकार के नुकशान की जिम्मेदारी भी व्यक्ति के ऊपर लाद दी जाती है. यु विविध प्रकार के उपद्रव अपने उच्चकर्मी के द्वारा भी होते रहते है. एसी स्थिति में साधक एक यन्त्र की तरह बन जाता है जो सिर्फ काम कर सकता है लेकिन उसमे किसी भी प्रकार की भावना नहीं होती. ये समस्या आज के युग में बहोत पायी जाती है की व्यक्ति को उसके काम के अनुरूप वेतन नहीं मिलता, जब प्रमोशन या उन्नति की बात आती है तो उच्चकर्मी मुह मोड लेते है और वह स्थान किसी और अयोग्य व्यक्ति को दे दिया जाता है.

यह अन्याय सी स्थिति किसी भी व्यक्ति के जीवन के अंदर कई प्रकार की समस्या खड़ी कर सकती है, व्यक्ति हमेशा चिडचिडा बना रहता है और स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है. एसी स्थिति में साधक खुद ही अपने साथ न्याय कर सकता है इस प्रयोग से. यह प्रयोग अपने आप में उत्तम है क्यों की यह साधक को एक साथ कई प्रकार के लाभ दे सकता है. साधक को अपने सभी सहकर्मी से मदद मिलना प्रारंभ हो जाती है, साधक के खिलाफ अगर कोई षड्यंत्र बना रहा हो तो वह निर्मूल हो जाता है, सभी शत्रुता का भाव त्याग कर उससे मित्रता पूर्वक व्यवहार करने लग जाते है. साधक को श्रेय की प्राप्ति होती है तथा निश्चित रूप से साधक में एक नया आत्मविश्वास आ जाता है. साधक को योग्य पद और उन्नति की प्राप्ति होती है. एक प्रकार से देखा जाए तो साधक के आसपास का पूरा वातावरण साधक के अनुकूल बनने लग जाता है.

इस प्रयोग को साधक किसी भी दिन शुरू कर सकता है. समय रात्री काल में १० बजे के बाद का हो. साधक को इस प्रयोग में सफ़ेद वस्त्रों का प्रयोग करना चाहिए और सफ़ेद आसान पर उत्तर या पूर्व की तरफ मुख कर बैठना चाहिए. इसके बाद साधक अपने सामने देवी मातंगी का चित्र स्थापित कर के उनका पंचोपचार पूजन करे.

इसके बाद साधक शक्ति माला या मूंगा माला से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जाप करे.

ॐ मातंगी इच्छापूर्तिं श्रीं ह्रीं हूं नमः

मंत्र जाप के बाद साधक देवी को जाप समर्पित कर सो जाए.

इस प्रकार यह प्रयोग ११ दिन तक करे. इसके बाद बारहवे साधक दूध की बनी हुई मिठाई छोटी कन्याओ में यथाशक्ति वितरण कर दे तथा माला को किसी देवी मंदिर में दक्षिणा के साथ रख दे. साधक पूर्ण होते होते साधक स्वयं ही अनुकूलता का अनुभव करने लगेगा.

For the progress in the workplace

Many time person remains in varieties of the troubles at the workplace. Boss do not listen, not proper behaviour of the colleagues, or else you are announced to be responsible for the task not accomplished, many time such thing has also been seen that one suffers from mental troubles because they remained un noticed and neglected. Colleagues keeps on blaming and pressure their workload on the person, with that any harm caused is also blamed on the person such way many troubles are made by colleagues. In such situation, person becomes machine who can work but with no feelings. This trouble is faced by lot many people that one does not receives payment comparatively to the work done and when it comes to the promotion then superior changes the face and that place is assigned to someone else who is not appropriated. Such injustice may cause many troubles in the life of the person. One may stay annoyed and health gets dull.

To acTivaTe asTral body -- sadhana

जिस सूक्ष्म शरीर के बारे मे इतना सुना हैं पर अब उसका रहस्य ...

मनुष्यशरीर अपने आप में अद्भुत रचना है. एक साधारण मनुष्य अपने जीवन में अपनी स्थूल देह को ही एक मात्र देह मान कर अपना पूरा जीवन निकाल देता है. लेकिन मनुष्य के इसी देह में और ६ शरीर जुड़े हुए होते है. इस प्रकार ये ७ शरीर मनुष्य में होते है. यह शरीर एक दूसरे से जुड़े हुए होते है. एक साधक के लिए अपनी स्थूल देह से आगे जाने के लिए यह आवश्यक होता है की वह अपने स्थूल शरीर से जुड़े हुए दूसरे शरीर को अलग करे और उसे स्वतंत्र सत्ता दे. स्थूल शरीर में पञ्च तत्व की मात्रा इस देह के क्रियाकलाप के लिए आधार है लेकिन दूसरे शरीर में पञ्च तत्वों के प्रमाण में अंतर आ जाता है. इस लिए स्थूल देह की जो कार्य क्षमता होती है उसमे और अन्य शरीर की जो कार्य क्षमता है उसमे बहोत ही बड़ा अंतर है. सूक्ष्म शरीर एक ऐसा शरीर है जिसके भूमि तथा जल तत्व की मात्र कम होती है. इस शरीर के माध्यम से व्यक्ति वो कार्य कर सकता है जो वह स्थूल देह से नहीं कर सकता. क्यों की भूमि तथा जल तत्व की अल्प मात्र होने के कारण वह गुरुत्वाकर्षण से मुक्त रहता है. हजारो मिल की यात्रा वह अत्यंत ही अल्प समय में कर सकता है, इसके अलावा कई प्रकार के द्रश्यो को देख तथा सुन सकता है जिसे देखना या सुनना स्थूल देह से संभव नहीं होता. इसके अल्वा सूक्ष्म शरीर के माध्यम से व्यक्ति उन जगहों पर भी जा सकता है जहा पर स्थूल देह से जाना संभव नहीं हो पाता. लेकिन इससे सबंधित साधना तथा प्रक्रियाए अपने आप में बहोत ही गुप्त तथा पेचीदा रही है.

इस लिए इस विषय पर ज्यादा प्रकाश नहीं पड़ा है. वस्तुतः सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से अलग करना इतना सहज नहीं है. क्यों की वह ठीक एक पिंड की तरह है जो की गर्भ में होता है. वो चेतन रहता है लेकिन जागृत नहीं. इस लिए ज़रुरी होता है की उसे जागृत किया जाए. ताकि उसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता का विकास संभव हो सके. प्रस्तुत साधना प्रयोग सूक्ष्म शरीर के जागरण के सबंध में है. इस साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने सूक्ष्म शरीर को जागृत कर सकता है. जिसके माध्यम से व्यक्ति उन जगहों पे जा सकता है जो की चतुर्थ आयाम में है, या फिर जिसे लोक लोकांतर भी कहा गया है. साधना करने के बाद व्यक्ति को अपने आप में एक हल्कापन अनुभव होने लगता है और कई बार उसको ऐसा अनुभव होता है की वह अपनी स्वयं की देह से अलग है. कई बार तन्द्रा तथा स्वप्न या भाव अवस्था अचानक से आ जाती है और व्यक्ति सूक्ष्म शरीर के माध्यम से एसी जगह पर पहोच जाता है जिसको सामन्य आँखों से देखना संभव नहीं है.

इस साधना को किसी भी दिन शुरू किया जा सकता है. साधक यह प्रयोग ब्रम्हमुहुर्त या फिर रात्री काल में १० बजे के बाद शुरू करे. साधना के बिच में किसी भी प्रकार का कोई भी व्यवधान ना आए इसकी सुविधा पहले ही कर लेनी चाहिए. साधक सफ़ेद वस्त्र तथा आसान का प्रयोग करे. दिशा उत्तर रहे. साधक को सर्व प्रथम आँखे बंद कर के अपनी नाभि में ध्यान केंद्रित करना चाहिए. इसके बाद साधक ११ माला मंत्र जाप करे. यह मंत्र जाप स्फटिक माला से होना चाहिए.

ॐ ह्रीं क्लीं ब्रम्हब्रम्हांडवै क्लीं ह्रीं फट

यह प्रयोग व्यक्ति को सात दिन तक करना चाहिए. साधक को माला पूजा स्थान में रखनी चाहिए. साधक अगर चाहे तो इसी प्रक्रिया को आगे के दिनों में भी कर सकता है जिसमे इस माला का वापस प्रयोग किया जा सकता है.

Activation of the astral body:

Human body is wonderful creature in itself. Normal human being will spend his whole life with a belief that there is only one single body. But there are 6 bodies attached with this human body. This way there are seven bodies altogether in human. These bodies are attached with each other.
For a sadhaka to make move ahead from his main body to the next one, it is essential that to separate one body from another and to give it independency power. In the main body, five basic elements are responsible base for the all activities and functions of the body but in other bodies' proposition of these elements are different than the main body. Therefore, there is a vital difference between working capacity conditions of the main body and the other bodies. Astral body or sukshma sharira is one of the bodies which has low amount of the earth and water element. With the help of this body, one can do the tasks which main body or in other words basic body cannot do. Because by having lesser amount of the earth and water element in the body it remains free from the gravity. Travel of the thousands of the miles could be done in very short span of the time. Apart from that many kind of the scenes could be seen and could be heard which could not be heard or could be listening through normal body.

SWARN RAHSYAM -11

अद्भुत रहस्य आपके लिए

अभिभूत ही हो गया था मैं उस अद्भुत दृश्य को देखकर , मुझे कभी सदगुरुदेव ने बताया था की कायाकल्प के रहस्यों की तलाश में सिर्फ एक रस् शास्त्री ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक भी लगे हुए हैं, और ये सत्य ही है की हमारे समृद्ध आयुर्वेद में ही इस विद्या का रहस्य छुपा हुआ है , चाहे निर्गुण्डी कल्प की बात हो, अंकोल कल्प की बात हो, या फिर सिद्ध श्रीमोदक , इन सबके मूल में ही पारद कही न कही दृश्य या अदृश्य रूप में विराजमान है. कायाकल्प का चिंतन भी इसके बिना संभव नहीं है. और कहा भी गया है की............
वो सृजनकर्ता ,वो परम तत्व रस ही तो है . और यही वजह है की जीवन में पूर्णता की बात हो तो उसमे रस का समावेश करना ही पड़ेगा. और रस शब्द ही व्यापक अर्थ लिए हुए है . विद्या, मान-सम्मान, धन ,निरोगी काया आदि उसी रस का रूप है ...... रस युक्त वो परम शक्ति ,माँ पराम्बा, आदि शक्ति सरस्वती के रूप में उपास्य हैं.
खैर उस दृश्य को देखने के बाद मुझे श्वेत बिंदु और रक्त बिंदु के रहस्य को समझने की कही अधिक बैचेनी थी.........

जब हम फिर साथ में बैठे तो मैंने बगैर देर करे कहा की ... आप मुझे कुछ बता रहे थे . तो उन्होंने कहा की अरे धीरज धरो एक रस शास्त्र के पथिक को इतना व्याकुल नहीं होना चाहिए .

जब सदगुरुदेव ने यहाँ भेजा है तो मैं तुम्हे शांत कर के ही यहाँ से भेजूंगा .हाँ तो मैं श्वेत बिंदु और रक्त बिंदु के बारे मेंबता रहा था. निश्चय ही अब तक तुम समझ ही गए होगे की श्वेत बिंदु शिव वीर्य या पारद को कहते हैं ,पर अलग अलग सम्प्रदाय में इसके जो भिन्न भिन्न नाम रखे गए हैं उनके पीछे बहुत गूढ़ रहस्य हैं जो मैं वार्तालाप के मध्य तुम्हे बताता रहूँगा.
अब जो मैं बताने जा रहा हूँ वो ध्यान से सुनो और आत्म-सात करो क्यूंकि यही आंतरिक कीमिया की वास्तविक कुंजी है और रस-सिद्धों का परमलक्ष्य भी...........
पशुं और मनुष्यों में क्या अंतर है ,क्या तुम जानते हो ?????
पशु को समय का आभास नहीं होता ,उसे ये मालूम नहीं होता है की समय के साथ साथ उसकी अवस्था में क्या परिवर्तन होता जा रहा है ,मनुष्य को समय का आभास भी होता है और होने वाले परिवर्तन की जानकारी भी . अब हम समय को जी रहे हैं या समय हमें ये कहना तो मुश्किल है एक सामान्य मनुष्य के लिए.....
हम कालाग्नि में प्रतिक्षण जलते जा रहे हैं और हमें इसका पता भी नहीं लगता. ये कालाग्नि समय का ही रूप है और समय आत्मा का ही पर्याय है . हमारी दृष्टि क्षुद्र होती है अर्थात हमें एक निश्चित दूरी तक ही दिखाई देता है.या ये कह लो की वर्तमान काल में भी सिर्फ वर्तमान का वर्तमान ही दृश्यमान होता है. वो व्यतीत वर्तमान और अनागत वर्तमान को भी नहीं देख पाता. यही कारण है की कालाग्नि उसे जलती रहती है .भूत और भविष्य तो उसकी कल्पनादृष्टि से भी परे है . तब ऐसे में पैदा होना और मर जाना ही उसकी नियति बन जाता है . लेकिन समय को पकड़ कर यानि अपने आत्म-ज्ञान को चैतन्य कर जो तीनों कालों को दृष्टि पथ पर सदैव बनाये रखता है , उसे भली भांति देख लेता है, वो कर्म के फलाफल से परे हो जाता है तब वो जीवन तो जीता है लेकिन दृष्टा बनकर कठपुतली बनकर नहीं, कालाग्नि उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाती. ये अवस्था सिद्ध की होती है . अब या तो यहाँ रुक जाओ या इसके आगे बढ़ जाओ . इस जीवन से परे विगत जीवन या आगत जन्म को भी जो जान लेता है और आत्मज्ञान को उस स्तर पर ले जाता है जहाँ वो उन जन्मो के रहस्य से न सिर्फ अवगत हो जाता है बल्कि आत्म-प्रकाश में उन कर्म-फलों को भस्मी भूत कर कल्याणकारी हो जाता है ,ये अवस्था महासिद्ध अवस्था कहलाती है . पर जो सभी जन्मों से परे जाकर अपने मूल बिंदु को ही देख लेता है अर्थात उद्गम को ही खोज लेता है और अपने आत्म-प्रकाश को परम प्रकाश में बदल देता है ,तब उसकी विराटता से समस्त ब्रह्माण्ड ही आलोकित हो जाता है ,सर्व जन्म रहस्यों से परे ये परम ज्योति रहस्य को प्राप्त कर लेने की अवस्था ही परम सिद्ध अवस्था कहलाती है ,जहा वो ही कर्ता,वो ही पालक और वो ही विलय कारक हो जाता है. वो समय प्रभाव में नहीं आता बल्कि उसे समय अर्थात आत्मा का मूल ही ज्ञात हो जाता है और ज्ञान हो जाता है उस आत्मा की परिपूर्णता की.
वैसे तो तीनो ही स्तर पर आप को निर्जरा देह की प्राप्ति हो जाती है पर, वासना शरीर से ऊपर उठकर ज्ञान देह या देह विहीन देह दिव्य देह की प्राप्ति साधक के स्वचिन्तन का विषय है ....

अब आप ये कहोगे की श्वेत बिंदु और रक्त बिंदु का इस बात से क्या लेनादेना है .... तो आप ये समझ लीजिए की आत्मा को ही पारद या बिंदु कहा गया है, कालाग्नि से परे तो आप तभी जा सकते हैं जब आप की पकड़ आत्मा पर हो या ये कहे की आपकी आत्मा प्रकाशित हो , क्यूंकि देखने के लिए प्रकाश का होना अनिवार्य है . और आत्म प्रकाश में ही तो आप इस जीवन के तीनो कालो , या पूर्व जन्म, पुनर्जन्मों के कर्मो या उससे भी परे आत्म-उद्गम और गमन के रहस्यों को जान पाते हैं. पहले स्तर पर आपकी क्षुद्रता का त्याग हो जाता है और आप विराटता की और कदम बढ़ा देते हैं अंतिम अवस्था में आप स्वयं अपनी विराटता को जान जाते हैं.
और ये क्रिया असंभव भी नहीं है यदि हम श्वेत बिंदु का आश्रय ले लें तो.....
इतना कहकर महानुभाव चुप हो गए ....
मैंने कहा की ये बात तो सत्य है की रस के आश्रय को लेकर ही हम रसमय अर्थात पूर्ण हो सकते हैं पर ये क्रियात्मक रूप से कैसे संभव है???????????

उन्होंने कहा की सदगुरुदेव ने इस रहस्य को समझते हुए कहा था की "पूर्ण संस्कार युक्त पारद से जिसमे समस्त रत्नों का जारण और चारण किया गया हो ,दिव्य ओषधियों तथा सिद्धौश्धियों से जिसका मर्दन किया गया हो ऐसे पारद से अद्भुत संयोगो में पूर्ण शिव स्थापन तथा पूर्ण लक्ष्मी स्थापन क्रिया संपन्न कर रसेश्वर का निर्माण किया जाये तथा उस शिवलिंग में सप्त तत्वों "भू,भुवः,स्वः ,मह,जनः, तपः, सत्यम" का स्थापन कर यदि त्रिनेत्र मंत्र का जप किया जाये तो निश्चय ही प्राण चक्षु जाग्रत हो जाते हैं . और तब साधक के लिए विगत और आगत दोनों ही जन्म सहज दृश्य मान हो जाते हैं , न सिर्फ अपना बल्कि अन्य लोगो का भी.
ऐसे रसेश्वर को स्पर्श करते हुए जिस भी देवता का आवाहन किया जाता है ,वे प्रत्यक्ष होते ही हैं, पहले बिम्बात्मक और उच्च स्थिति में पूर्ण प्रत्यक्ष भी ,और ऐसा होता ही है .
ऐसे ही विग्रह पर आप बिंदु साधना, नाद साधना,दिव्य साधना,अक्षुण साधना,सिद्ध साधना,परमेष्ठी साधना,चिन्तापुर्ती साधना,अदृष्ट साधना, सिद्धाश्रम साधना,निरंजन साधना और परम साधना कर महा सिद्ध और परम सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं. इन साधनों का महत्व तो वही जान सकता है जिसने इन्हें प्राप्त किया हो ,एक एक साधनाएं बेशुमार मोतियों से तोलने योग्य हैं. किसी भी एक साधना से जीवन परिवर्तित हो जाता है और देखने के लिए मिल जाती है एक नवीन आत्म-दृष्टि.
ये पारदेश्वर वस्तुतः आपका ही आत्म रूप होता है जिसे पिंड या विग्रह रूप में आप स्थापित करते हो, जिन सप्त लोकों के बारे में मैंने ऊपर बताया है वो सप्त तत्व आपके सप्त शरीर का ही तो प्रतिनिधित्व करते हैं .जिनका सम्बन्ध जैसे ही रस-लिंग से होता है आपका रस ,आपका बिंदु भी चैतन्य होते जाता है .और जैसे जैसे उसकी चैतन्यता बढती जाती हैं वैसे वैसे आपका आंतरिक कायाकल्प होते जाता है और दीर्घायुष्य के साथ प्राप्त होता है दृष्टा भाव भी.

यदि साधक ऐसी साधना नहीं भी कर पाए तो भी अकाल मृत्यु, अकाल कष्ट से मुक्ति तथा ऐश्वर्य युक्त जीवन तो मिलता ही है . एक भी उदाहरण मैंने अपने जीवन में नहीं देखा जब मेरे सद्गुरुवर के ये वचन मिथ्या हुए हों. शर्त बस यही है की रस-लिंग वैसा ही बना होना चाहिए जैसा की ऊपर वर्णित है . (यहाँ एक बात बताना मैं अपना धर्म समझता हूँ की मैंने ऐसा ही रस-लिंग स्थापित किया है और आज जो भी कुछ मुझे मिला है वो इन्ही रस लिंगम के आशीर्वाद से ही है)

पुनः वार्ता को आगे बढ़ाते हुए महानुभाव कहने लगे की श्वेत बिंदु का ही दूसरा रूप व्योम तंत्र या व्योम विज्ञानं है जिसके द्वारा आकाश गमन और पक्ष्छेदन की क्रिया संपन्न होती है . तथा संपन्न होती है महा अचरजकारी “क्षं” गुटिका की प्राप्ति जो अन्य लोको से आपका संपर्क कर देती है........

****

****

*

Watching that scene so soulfully I was totally transported. Sadgurudev had told me sometime back while discovering the secrets of rejunevation not only the chemists but also the scientists are chasing the truth. Its extremely right that such learnings are conceal in our assets of Ayurveda .whether it is about the Nirgundi Kalp, Ankol Kalp or Siddha shrimodak etc..Somewhere around in direct or indirect way alchemy (parad) is the reason behind all of this. No one can think about rejunevation without it. Therefore it is said that it is only the alchemy that is the prime creation of universe. If we talk about the completeness of life, it would have been filled with the power of Parad for earning the wealth, knowledge, respect, fame and vivacity in our life…

Alchemy includes that key power which is worshipped in form of Godessess Saraswati. Well after watching that incredible scene I was very eager to know more about the Rakt Bindu and Shwet bindu. When we sit down together, without delay I immediately started asking about the alchemy……the moment I opened my mouth, he said don’t be so excited. One alchemist (ras shastri) should be very calm and patient. If Sadgurudev had sent you here you ll not go with empty hand... So be quiet and just keep watching…

अद्भुत सरल धन दायक लक्ष्मी प्रयोग

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

धन धान्य प्रदाता लक्ष्मी प्रयोग अब इसे एक बार तो करके देखिये

लक्ष्मी तत्व की उपयोगिता से आज कोई भी इनकार नही कर सकता हैं . हर जगह हर देश काल मे इसका अपना ही एक महत्व रहा हैं . और व्यक्ति चाहे साधू हो या सन्याशी या अन्य कोई सभी को भगवती लक्ष्मी के किसी न किसी रूप की आवश्यकता तो होती हैं .

सदगुरुदेव जी ने कई कई बार कहा हैं की हर साधक को पहले तो भगवती महालक्ष्मी के किसी न किसी स्वरुप की आराधना साधना तो करनी ही चाहिये .और बृहद साधनाओ की अपेक्षा छोटे छोटे सरल प्रयोगों की अपनी ही एक महत्वता होती हैं .और इन प्रयोगों को सरल साधनाओ को जैसे भी ..जब भी समय मिले करते रहना ही चाहिए क्योंकि यह युग अर्थ प्रधान हैं और जीवन को न केबल भौतिक अपितु आध्यात्मिक जीवन को सुचारू रूप से गतिशील करने के लिए अर्थ की आवश्यकता हैं .

तभी तो वैदिक ऋषियों ने अर्थ को जीवन के लिए आवश्यक ४ पुरुषार्थो मे से एक माना हैं .

साधनाए यूँ तो जीवन के सभी पक्ष को स्पर्श करती हैं कुछ का अधिक तो कुछ का कम .पर असर तो सभी भाग पर जाता ही हैं .पर एक सरल सा लक्ष्मी प्रयोग जो की आप सरलता से कर सकते हैं अपने दैनिक जीवन मे शामिल कर सकते हैं .जिसमे ऐसे कोई नियम नही हैं की आपको कोई समस्या हो बल्कि माला या आसन वस्त्र पर कोई नियम नही हैं वस् इतना की आप प्रातः काल उठ कर स्नान कर जितना भीसंभव हो इन मंत्र का जप करे .कम से कम एक माला मंत्र जप मतलब १०८ बार तो नित्य उच्चारण तो हो ही .

मंत्र :

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी ,मम गृहे धन पुरे चिंता दू रे दू रे स्वाहा||

****

****

Saral lakshmi prayog

No body can deny the importance of lakshmi tatv in human life . in each palace, time this has its unique importance whether the person may be sadhu or sanyashi or any other one ,each one has in need of the forms of goddess lakshmi .

Sadgurudev ji many times clearly told us that every sadhak must worship or do the small duration sadhana of goddess lakshmi as and when he gets time .and sadhana of small duration proved to be a great help instead of doing a lengthy sadhana . whenever one has a time he must do sadhana related to goddess lakshmi of small duration .the financial aspect or importance has a more valuable aspect in this era . our vedic rishis place artha a place in four major work or purusharth .

Every sadhana effects every aspect of our life ..on some plane may be little less or on some place little more . this is very simple prayog , there is no strict rules associated with this sadhana. No restriction on mala colour of asan etc.

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

इनको एक बहुत ही सरल साधना भी कहा जाता हैं .यह हर बार सफल होंगे ऐसा तो नही कहा जा सकता हैं पर सफलता का प्रतिशत बहुत अधिक रहा हैं फिर जीवन की हर् समस्या के लिए..हर बार बृहद बृहद साधनाए करना तो उचित सा नही दिखाई पड़ता तो ऐसे समय कई कई बार ये सरल से प्रयोग जिन्हें टोटके भी कहा जाता हैं बहुत असर दायक सफल रहे हैं तो ..

1. भालू के बाल मदारियों के पास आसानी से मिल जाते हैं अगर उन बालो को किसी तावीज़ मे रख कर धारण कर लिया जाए तो जिनको भी बुरे और डरावने स्वप्न आते हैं उन्हें ऐसे स्वपन नही आयेंगे .
2. जब भी रविवार को पुष्य नक्षत्र आये तो उस दिन गिलोय की जड़ लाकर गले मे धारण कर ले तो सांप आदि से भय नही रहता हैं .
3. गर्भवती महिला की कमर मे नीम की जड़ बाँध देने से प्रसव पीड़ा बहुत कम हो जाती हैं .

4. आजकल पंचमुखी रुद्राक्ष भी नकली मिलने लगे हैं तो एक असली पंचमुखी रुद्राक्ष को ह्रदय के पास धारण कर लिया जाये तो ह्रदय रोगों मे अनुकूलता मिलती हैं .

5. यूँ तो कुपित शनि ग्रह की शांति के लिए अनेक लोग घोड़े की नाल से या नदी की नाव की कील से बनी अंगूठी धारण करते हैं पर गुलाब की जड़ भी धा रण की जा सकती हैं.इससे भी उतनी ही अनुकूलता मिलती हैं .

6. यदि किसी को क्रोध अधिक आता हो तो मेहँदी की जड़ को ताबीज मे रख कर धारण करने से क्रोध नियंत्रण मे बहुत सहायता मिलती हैं .

7. जिस किसी को ऐसा बुखार आता हो जो कभी कम हो जो कभी ज्यादा तो इस केस मे चिकित्सीय इलाज़ के साथ साथ काली तुलसी की पत्तियों की माला को धारण करने से बहुत लाभ मिलता हैं .

8. यदि गाय को भोज्य पदार्थ दिए जाए और उसकी पीठ पर हाथ फेरा जाए तो ग्रह वाधा पीड़ित या या अन्य वाधा से पीड़ित व्यक्तियों को लाभ मिलता हैं .

9. गर्भकाल किसी भी महिला के लिए बहुत ही सावधानी वाला काल होता हैं तो जब भी अनुराधा नक्षत्र चल रहा हो उस समय एक सुपाड़ी अगर महिला की कमर मे बाँध दिया जाए तो गर्भ की रक्षा बनी रहती हैं .

10. भगवान गणेश की अनुकूलता किसे नही चहिये . उनकी अनुकूलता या प्रसन्नता से सारे कार्य सहज सिद्ध हो जाते हैं . और यह तथ्य तो सभी जानते हैं की दुर्वा दल भगवान गणेश को कितने प्रिय हैं पर इसके ही साथ लाल कनेर के पुष्प भी अर्पित किये जाए तो अनुकूलता कहीं जल्दी दृष्टी गोचर होती हैं .

****
****

Totke for you

They can be considered as a simple sadhana , but each and every time you will get positive or 100 % result that cannot be sure . but getting success through these has a very high percent . and its also true and quite natural that every time bigger and lengthy sadhana for any problem is not a god solutions .when such problems comes using this totke can be quite effective .

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

आयुर्वेद तो मानव जीवन के लिए वरदान हैं .पर इस वरदान का प्रयोग या जानकारी बहुत कम ही हुआ हैं . अगर इसके कुछ सरल सरल बाते भी इस्तेमाल की जाए तो भी आप पाएंगे की आपकी सौदर्यता मे कुछ ओर निखार तो आएगा ही .तो क्यों न कुछ बेहद ही सरल उपाय आपके लिए एक बार फिर ..

1. दही और नीबू को अच्छी तरह से मिलाकर चेहरे पर लगाये फिर हलके गुनगुने पानी से चेहरे को धो ले , चेहरे मे कान्ति आ जायेगी .
2. रुसी दूर करने के लिए अंडे मे तीन चार बुँदे नीबू का रस अच्छी तरह से मिला ले और इसे धीरे धीरे अच्छी तरह से अपने केश की जड़ो मे लगा ले .फिर कुछ देर के बाद आप हलके गुनगुने पानी से अपना सिर धो ले .
3. सुबह स्नान करने से पहले यदि पैरों के अंगूठे मे सरसों का तेल मल लिया जाए तो आखों की रोशनी ठीक रहती हैं .

4. जिनको कम्पुटर का ज्यादा काम पड़ता हैं वह लगभग १ / १ घंटे मे दोनों हथेली को रगड़ ले और अपनी आखो पर धीरे से हथेली रखे ..इससे आखों को आराम मिलता हैं .

5. गुलाब की पत्तीयों का सौदर्य मे बहुत अधिक प्रयोग होता हैं अगर इसकी पट्टियों को दूध मे मिलाकर गालों मे लगाये और हलके गुने गुने पानी से धो ले तो गालों का रंग और भी निखर आता हैं .

6. कोहनी का ध्यान बहुत सारे लोग नहीं रखते हैं फलस्वरूप वहां की त्वचा का काला सा पड़ जाना स्वाभाविक सा हैं अतः इसके लिए सौंदर्य शास्त्री कहते हैं कि नीबू के छिलके से यदि हल्का हलका रगडा जाए तो कुछ ही दिनों मे त्वचा का रंग बिलकुल पहले जैसा हो जाता हैं .

7. पैरों को मुलायम बनाने के लिए मख्खन से हलकी हलकी मालिश पैरों की करे .

8. दिन मे यदि एक बार या रात को सोते समय हलकी सी मालिश कर ली जाए तो नीद और भी अच्छी आती हैं

9. आखों का विशेष ध्यान रखना चहिये .इसके लिए हरी पालक और गाजर का जूस यथा संभव लेते रहना चहिये .

10. प्रात:काल हलकी फुलकी व्यायाम आपको स्वस्थ रखने मे बहुत मदद करती हैं . क्योंकि शरीर मे खून का प्रवाह जो बढ़ जाता हैं .

****
****

Ayurveda for you

Ayurveda is like a boon for mankind but very little or less use of this divine science happens in this era , and if very simple advices , if used than that would be very helpful for maintain our beauty. so why not try some advices ..

1. Thoroughly mix curd with lemon juice and apply slowly to your face and than wash with mild hot water , proves to very good for maintaining glow of facial skin.

2. To remove the dandruff mix two three drop of lime juice to egg and after thoroughly mixing apply this to the roots of the hairs after some time wash your hair with mild hot water.

तंत्र कौमुदी

दुर्लभ लघु प्रयोग और नवग्रह महाविशेषांक

Twelfth Issue – August 2012

Tantra kaumudi

Name of the Articles

SADGURUDEV - PRASANG

नवग्रह स्थापन

यह मैसूर की घटना हैं, वहां करणराज जी ने मूर्तिस्थापन से पहले यज्ञ रखा था जिसमे उत्तर और दक्षिण भारत के विद्वानों को बुलाया था. उन्होंने वेदी के साथ प्रत्येक ग्रह का स्थापन अलग अलग किया था.

जब ग्रह स्थापन हो चुके और यज्ञ प्रारंभ हुआ विशेष मंत्रो से ग्रहों का आवाहन व स्थापन प्रयोग सम्पन्न हुआ. उस समय सेठ जी भी पूज्य सदगुरुदेव को लेकर यज्ञ मंडप मे पधारे. यज्ञ मे एक सन्यासी को आया देख कर दक्षिण भारत के पंडितो ने नाक भौं सिकोड़े, शायद उन्हें उनका आना अच्छा नही लगा होगा या उन्हें भय रहा होगा कि कहीं यह कोई त्रुटि न निकाल दें.

सदगुरुदेव ने पूंछा"कर्मकांड के अनुसार सारे कार्य संपादित हो चुके?"

उन पंडितो मे श्रेष्ठ माधव प्रसाद जी ने कहा"यह हम पंडितो का कार्य हैं ,प्रवचन करना नही. "

मुझसे कहा" तु जाकर जो सूर्य ग्रह स्थापन वेदी हैं उसे हाथ से स्पर्श कर, जिससे ज्ञात हो सके कि वहां सूर्य स्थापित हैं भी या नही "

यह बात जोर से ही कहीं थी, इसलिए सभी पंडितो ने सुना, मैंने उठ कर सूर्य स्थापन वेदी को छुआ तो मुझे कुछ भी विशेषता अनुभव नही हुयी.

पंडितो ने कहा " वहां अनुभव क्या होना हैं हमने मंत्रो के साथ सूर्य का आह्वाहन और स्थापन किया हैं फिर षोडशोपचार पूजन कर उनको संस्थापित किया हैं"

सदगुरुदेव ने कहा "आपने जरुर सूर्य का आह्वाहन किया होगा पर सूर्यवहां पर स्थापित तो नही हुये, अगर उस वेदी पर सूर्य स्थापित हुये होते तो इसके स्पर्श करने पर सूर्य के होने का आभास तो मिलता."

माधक प्रसाद जी ने कहा " आभास क्या मिलेगा ? आभास क्या होता हैं."

सदगुरुदेव जी ने सेठ जी से कहा " आप एक हाथ से सूर्य स्थापित वेदी और दूसरेहाथ से चंद्र स्थापित वेदी को स्पर्श करके मुझे बताये कि आपको कैसा लग रहा हैं"

सदगुरुदेव जी की आज्ञा पाकर यज्ञ संचालक और प्रबंधक सेठ जी ने दोनों वेदियों को स्पर्श किया. उन्होंने कहा भी कि कुछ भी अतिरिक्त अनुभव नही हो रहा हैं.

सदगुरुदेवजी ने कहा " वहां केबल चावलकी ढेरी ही रखी हुयी हैं. वहाँ न तो सूर्य स्थापित हुये हैं न तो चंद्र बाकी ग्रह भी स्थापित नही हुये होंगे "

माधव प्रसाद जी की त्योरियां चढ गयी और लगभग चीखते हुये से बोले" मैं पंडित हूँ और पिछले चालीस सालो से यह कार्य कर रहा हूँ. मुझे चेलेज देने वाला कोई पैदा ही नही हुआ हैं."

स्वामीजी ने अत्याधिक नम्रतापूर्वक जबाब दिया" निश्चय ही आप विद्वान और श्रेष्ठ पंडित हैं, मैं तो यह कह रहा हूँ कि उस वेदी पर ग्रह स्थापित ही नही हुये और न वे आये हैं, जबकि मंत्रो का प्रयोजन तो यह हैं कि जिसका आह्वान किया जाए वह उपस्थित हो. "

इसके बाद सदगुरुदेव जी ने सूर्य मंत्रो से उनका आह्वान किया और उसी वेदी पर स्थापित किया. तत्पश्चात यजुर्वेद के "इमनदेवा" मंत्र से चंद्रका आव्हान किया और उसे उसकी वेदी पर स्थापित किया .

माधवप्रसाद जी ने सूर्य वेदी के समीप पहुँच करउसके मध्य मे ज्यों ही अँगुलियों से स्पर्श किया त्योंही उनका हाथ झुलस गया हाथ के रोम जल उठे और कोहनी तक हाथ ऐसा हो गया जैसे अग्नि मे हाथ चला गया हो . और उन्होंने लगभग चीखते हुये हाथ हटा लिया.

सारे उपस्थित श्रोता स्तब्ध थे, उन्होने पहली बार अहसास किया कि यदि सही ढंग से मंत्र उच्चरित हो तो देवता आज भी उपस्थित होते हैं, पंडित जी पर मानो घडो पानी पड़ गया था.

फिर सदगुरुदेव जी ने सेठ जी को कहा "आप चंद्र वेदी पर जाकर स्पर्श कर देख ले कि वहां चंद्र स्थापित हैं या नहीं?"

सदगुरुदेव जी की आज्ञानुसार सेठ जी उठे और उन्होंने ज्यों ही चंद्र वेदी को स्पर्श किया उन्हेंऐसा लगा उनका मानो हाथ बर्फ मे चला गया हो उस एक सेकेण्ड मे ही हाथ का खून जमता हुआ महसूस हुआ उन्होंने कहा "बहुत ठंडा हैं.हिमवत "

उनके साथ हम लोग भी उठ खड़े हुये और लोगों के आग्रह के बाबजूद हम मैसूर से प्रस्थान कर गए

-मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं से साभार सहित

****
****

Navgrah Sthapan..

This was Mysore occurrence were Karanraaj ji organised Yagna ritual before establishment of idol and northern and southern Indian scholars were invited. Along with altar he established individually every planet.

When planet establishment finished Yagna started by special mantras calling and establishing of planets started on. Then Seth ji came along with Sadgurudev ji. While noticing an ascetic coming in yagna, all Pandit expressions got changed, may be they were not expected such guest and didn't liked his entry. Or maybe they all were scared may be he will figure out their mistake.

Sadgurudev ji asked "do as per karmkaand does every process is done?"

Amongst all those Pandits, the best one - Madhav Prasad ji said, "This is our work, nor giving just speeches".

सम्मोहन साधना और समस्त चराचर को सम्मोहित करने मे समर्थ गणेश साधना

sammohan sadhana yukt SHRI ganpati PRAYOG

भगवान गणपति के सम्मोहन प्रदायक स्वरुप से सम्बंधित एक सरल साधना

भगवान गणेश का नाम ही विघ्न हर्ता हैं और सभी इस बात से इस तथ्य से सुपरिचित हैं कि जब तक भगवान गणेश का आशीर्वाद ना मिल जाए जब तक उनकी प्रसन्नता न मिल जाए सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती हैं ?क्योंकि रिद्धि और सिद्धि तो उनकी सहचरी हैं .अतः हर साधक यह जानता हैं कि उनकी कृपा न केबल साधना जगत मे बल्कि सामन्य भौतिक जगत मे भी उतनी ही आवश्यक हैं ही. इस बात को कम करके नही देखा जा सकता हैं .यहाँ तक कि कुण्डलिनी जागरण मे मूलाधार चक्र को भी गणेश चक्र भी कहा गया हैं.

जब बात सम्पूर्ण जगत को वशीभूत करने की हो तो क्यों नही इसमें अप्सरा यक्षिणी भी आएगी.तो जिन साधको को इस ओर रूचि हैं वह इस मंत्र का जप करें निश्चय ही अगर वह अप्सरा यक्षिणी साधना मे मेहनत करते हैं और सारे आवश्यक सूत्र ज्ञात कर लेते हैं तो निश्चय ही उन्हें सफलता प्राप्त होगी.

सम्पूर्ण देव शक्ति के समूह वे एक मात्र प्रतिनिधि हैं एक उनकी प्रसन्नता से एक उनकी पूजा से सभी का पूजन संभव हो जाता हैं .और आज के जीवन मे सफलता पाने के लिए एक आकर्षक व्यक्तित्व का होना बहुत जरुरी हैं पर सभी के पास तो ..पर अपने व्यक्तित्व मे चुम्बकीयता लायी जा सकती है इस अर्थ मे यह साधना अपने आप मे एक गहन अर्थ रखती हैं .

कोई विशेष पूजन विधान इस साधना मे नही हैं पर जो भी अपने मे एक ऐसी चुम्बकीयता लाना चाहते हो उन्हें तो अपने दैनिक पूजन मे इस साधना को शामिल कर ही लेना चाहिए.

एक, पांच या ग्यारह माला जप करते जाए और कुछ ही दिन मे स्वयम वह अपने व्यक्तित्व मे परिवर्तनमहसूस करें लगेंगे .

मन्त्र:

वक्र तुंडैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वरवरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा ||

==

Sammohan Sadhna (hypnotism Sadhna) and the sadhna which is capable to hypnotize every particle of world - The Ganesh Sadhna

The other name of **Lord Ganesha** is **Vighna Harta** – one who takes away all obstacles and everybody is well aware about this fact until the blessings of lord Ganesh is not earned, until his happiness his not achieved, no siddhis can be achieved as Ridhhi and Siddhi are his associates. Therefore every sadhak knows very well that not only in sadhna world but also in materialistic world the importance of lord Ganesha is required to start or get success in any type work. So this cannot be taken lightly. Even in Kundalini activation process the first chakra i.e. Muladhar Chakra is also known as Ganesh Chakra.

लघु साधना ही क्यों ?एक प्रारंभिक परिचय ...

Why laghu sadhana ? Preliminary Introduction....

एक प्रारंभिक परिचय ...

साधनाओ के अमृत सागर मे लाखों करोड़ों हीरे मोती जवाहरात हैं और इस तथ्य से सभी परिचित हैं की ज्ञान के इस अनन्त सागर की न कोई सीमा हैं न कोई थाह .यह तो नित नूतन और विस्तारित होने वाला हैं .मानव जीवन की यह थाती हैं हमारे पूर्वजो के ज्ञान विज्ञानं और उच्च प्रज्ञा का एक अद्भुत अनुपम उदहारण कि हम मृत्युंजयी सस्कृति के निवासी हैं .

पर यह भी सत्य हैं कि समय परिस्थितियाँ और काल चक्र और हमारे पिछली कुछ पीढ़ियों कि उपेक्षा और विदेशी आक्रमणों के कारण यह विद्या नष्ट प्राय सी हो गयी ,हज़ारो लाखो ग्रन्थ लुप्त हो गए .

समाज द्वारा उपेक्षा और उचित पात्र न मिलने के अभाव मे अनेको मनीषियों ने तंत्र मर्मज्ञो ने अपने आप को छुपा लिया .फलस्वरुप आज अब अनाधिकारियों द्वारा परिस्थितियों का लाभ उठाकर तंत्र के नाम पर जो कुत्सिक खेल हो रहे हैं जो व्यभिचार और पाखण्ड का खुला खेल चल रहा हैं सारा समाज स्तब्ध हैं,और इसमें समाज के अपने दोष को भी नकारा नही जा सकता हैं , जब वह योग्य पात्रो का सम्मान और उनके ज्ञान को आत्मसात नही करेगा तो यह तो उसे देखना ही पड़ेगा . पूज्यपाद सदगुरुदेव के अनथक परिश्रम से आज कौन नही वाकिफ होगा ,सारा जीवन उन्होंने अपना होम कर दिया सिर्फ इस उदेश्य के लिए कि ये सनातन संस्कृति की साधनात्मक धरोहर जिसे कोई भी धर्म , जाती और अन्य विभाजन कारी बातो से बाँट नही सकता हैं , पुनर्जीवित/ स्थापित हो , और सदगुरुदेव ने यह कार्य पूर्णता के साथ किया भी लाखो लाखो साधको को उन्होंने अपनी अमृत वाणी से सिंचित किया . उन्हें अपनी स्व प्राण ऊर्जा से दीक्षित किया और यही ही नही सैकड़ों हज़ारो को साधना मे सफलता भी दिलाई . और यह सिद्ध कर दिखाया कि एक समर्थ व्यक्तित्व , जो सदगुरुदेव पदपर आसीन हो.वह किसी भी वाधा से रुकता नही ,घबराता नही बल्कि काल को भी अपने इशारे से चलने को बाध्य कर देता हैं .

और उन्होंने लाखो लाखो दीप प्रज्ज्वलित कर दिए , जो कि अपने आप मे एक मिसाल हैं कि एक सक्षम समर्थ व्यक्तिव्य क्या होता हैं ,सदगुरुदेव जी ने पूर्णता के साथ हर ज्ञान को हमारे सामने रखा और न केबल प्रवचन और किताबो न के माध्यम से बल्कि प्रायोगिक रूप से शिविरों की एक निर्बाध श्रंखला भी उन्होंने प्रारंभ की जहाँ वे स्वयं इन बातो को साधको और शिष्यों के सामने रखते आये.

सदगुरुदेव जी के अद्भुत,अमृत ज्ञान की कोई सीमा ही नही ,उनके ज्ञान के अमृत कण तो उन्होंने सारे विश्व मे फैला दिए ,उनका यह अमृत वचन की एक भी मेरे सच्चे शिष्य को ज्ञान की कमी नही होगी मैं हर क्षण उनके साथ रहूंगा यह आज हर शिष्य जानता हैं और अनुभव भी करता ही हैं.

एक ओर तंत्र मे जहाँ उच्च स्तरीय साधनाए हैं जो काफी लंबी हैं जिनमे श्रम भी बहुत लगता हैं और ऐसा होगा ही क्योंकि ये साधनाए मजाक की वस्तु नही हैं बल्कि सबसे जयादा गंभीर और कर्म का प्रतीक हैं इन्हें किसी भी हाल मे हलके से लेना केबल असफलता से दो चार होने का दरवाजा खोलने के समान हैं.पर यह भी सत्य हैं कि आज किसी भी व्यक्ति के पास समय नही हैं,और वह साल दो साल या चार छः महीने लगतार साधना नही कर सकता हैं पर वह साधना करना चाहता हैं इस हेतु तंत्र आचार्यों ने हमारे महा ऋषियों ने पहले से इस बात को ध्यान मे रख कर अनेको सरल विधान सामने रखे जो कि सरल हैं और सफलता भी प्रदान करने मे समर्थ हैं.और आज के युग की ये आवश्यकता भी हैं कि व्यक्ति पहले समय निकाल कर इन प्रयोगों को सम्पन्न करे और फिर जैसे जैसे उसका विश्वास एकाग्रता बढती जाए वह बृहद साधनाए भी सफलता पूर्वक कर सकता हैं इसी तथ्य को ध्यान मे रख कर सरल लघु प्रयोग इस बार के इस तंत्र कौमुदी का प्रमुख विषय हैंऔर टोने टोटके भी कहीं न कहीं अपना एक आधार रखते हैं वही एक दिवसीय और द्वि दिवसीय और त्रि दिवसीय साधनाए का अपना ही एक महत्व हैं उसे कम नही आंका जा सकता हैं.

इस अंक मे हमने जो सरल साधनाए दी हैं वह या तो हमें सदगुरुदेव जी से या उनके सन्यासी शिष्य शिष्याओ से या किसी अन्य सिद्ध से मिली हैं पर पूर्ण प्रामाणिक हैं अतः उसका प्रयोग करसफलता पाई जा सकती हैं अगर हमें अपने आप पर साधना पर और अपने प्राणाधार सदगुरुदेव पर पूर्ण विश्वास हो तो.

साथ ही साथ मानव जीवन पर ग्रहो और नक्षत्रो का बहुत प्रभाव पडता हैं.इन ग्रहों नक्षत्रो से सम्पूर्ण विश्व गतिमान हैं उसके प्रभाव के अंतर्गत हैं पर जब इनकी कुपि्‌ ता मानव को झेलने पड़ती हैं तब..

ग्रह भले ही एक निर्जीव पिंड प्रतीत हो पर उनसे निसृत होने वाली किरणे हर मानव को प्रभावित करती ही हैं क्योंकि इस विश्व का हर कण किसी न किसी रूप मे सभी से संयुक्त हैं .इस कारण इस तथ्य की उपेक्षा नही की जा सकती हैं और दूसरा कारण यह हैं कि सम्पूर्ण विश्व को गतिमान बनाये रखने और गतिशील रखने मे कर्म सिद्धांत की प्रमुख भूमिका हैं और इसको सुचारू रूप से ,नियमित रूप से रखने के लिए ग्रह अपनी भूमिका सटीकता से निभाते हैं .पर इससे क्या ... जब हम लगातार परेशानी या तकलीफ झेल रहे हो तब...

तब क्या साधना ही एक मात्र उपाय शेष रहता हैं जो सटीकता से ही परिणाम देता हैं जीवन को निष्कंटक बनाने और अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और जो भी कमियां और न्युनताये जीवन मे हैं उनको समाप्त कर कर एक पूर्णता युक्त जीवन जीने के लिए. इस हेतु हमने अनेको साधनाए इस बारे मे दी हुयी है.आपको जो भी साधना उचित लगे आप उसका प्रयोग करें.और जीवन को उच्चता की ओर अग्रसर करें ,सामान्यतः जब भी जीवन संकट की ओर अग्रसर होता हैं या परिस्थितियाँ कठिन होती हैं तब व्यक्ति इनसे निजात पाने के लिए हर संभव कोशिश करता हैं पर वह साधनाओ की गंभीरता और उच्चता और प्रभाव्कता को बहुत कम आंकता हैं इस कारण उसका श्रम और धन दोनों ही बहुत नष्ट होता हैं. इस हेतु हमने नव ग्रह से सबंधित साधनाए इस अंक मे दे कर इस अंक को पूर्णता के साथ एक श्रेष्ठ अंक बनाने की पूरी कोशिश की हैं.और जब बात साधनाए की हो ,खासकर लघु साधनाये... तो इस बात को बहुत ध्यान से समझना चाहिए कि इन्हें वस्‌ एक या दो दिन का न माना जाए वरन इनको मन लगाकर तब तक किया जाए जब तक आपको पूर्ण सफलता नही मिल पाती हैं. कई बार ये हो सकता हैं की कभी एक बार मे सफलता नही भी मिले पर अगली बार सफलता मिल जा सकती हैं अगर एक उचित मार्ग दर्शन और आपके प्रयास लगातार एक सही दिशा मे हो और आप इनकी महत्वता समझने की कोशिश करें...

===

इन लघु प्रयोगों के बारे मे ...

Some Specific point about these small sadhana ?

इससे सबंधित कुछ अनूठे तथ्य...

जिवभवेतजीवनम, मनुष्य अपने पूरे जीवन काल में सर्वोत्तम उपलब्धि की तलाश हमेशा करता रहता है. अपने विचार मनोभाव तथा अपनी आकांशा और अपेक्षाओ की धरातल पर उसका जीवन सदैव गंतव्य की प्राप्ति की और गतिशील रहता है चाहे वह भौतिक जीवन हो चाहे वह आध्यात्मिक जीवन हो. हमारे ऋषियों ने भी यही कहा है, सर्वे भवन्तु सुखिना.. सब मनुष्य सुखो की प्राप्ति करे. सुख तथा उसकी अनुभूति वस्तुतः हर एक मनुष्य के लिए अलग अलग होती है इस प्रकार किसी मनुष्य के लिए सुख का अर्थ क्या होगा उसका आंकलन सिर्फ वही व्यक्ति कर सकता है एक व्यक्ति जो की इतना धनवान है की वह अपने भोजन में पचास प्रकार के व्यंजनों पर रोज व्यय कर सकता है लेकिन अगर उसे मधुमेह है तो फिर उस धन का अर्थ नहीं है, वह व्यक्ति दुखी है, वहाँ पर सुख नहीं है.

वहाँ पर सुख की अनुभूति नहीं है वहीँ दूसरी और कोई व्यक्ति है जो पूर्ण स्वस्थ है लेकिन धनहीन है यहाँ तक की आज का इन्तजाम हो जाये तो तृप्ति का भाव होता है लेकिन ये चिंता भी होती है की कल का क्या होगा कल किस प्रकार से अपना और अपने परिवार का जीवन चलेगा. वहाँ पर भी अपूर्णता है, सुख का भाव नहीं है.

वस्तुतः सुखो के पूर्ण उपभोग के लिए दो तथ्य आवश्यक है एक तो हमारे पास सुखप्राप्ति का स्रोत हो तथा उतना ही आवश्यक है की हमारे अंदर उतनी सामर्थ्य हो की हम सुखो का उपभोग कर सके अगर इन दोनों भाग में से कोई एक भी तथ्य से व्यक्ति वंचित रह जाता है तब उसे सुख का पूर्ण अनुभव संभव नहीं हैयह बात है भौतिक जीवन की. यहाँ हम वापस से एक बार फिर से उसी विषय की और चलते है जहां से शुरुआत हुई है की सर्वोच्च उपलब्धि क्या है दरअसल देखा जाए तो मनुष्य का स्वयं का अस्तित्व ही उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है. क्यों की मनुष्य के अस्तित्व से है उसकी दुनिया, उसका जीवन और उसके सभी पक्ष है लेकिन अगर वह अस्तित्व ही ना हो तो? तब न ही स्वयं होगा ना ही स्वयं से जुड़े हुवे कोई पक्ष इसी लिए कहा गया है की जीव से ही जीवन है. क्यों की अगर जीव ही नहीं है तो फिर जीवन कैसा . जीवन की प्राप्ति करना अपने आप में जीव की बहुत ही बड़ी उपलब्धि है. मनुष्य तो वह देहधारण के बाद बनता है. और फिर गतिशील होता है जीवन. भोग तथा मोक्ष दोनों पक्षों में पूर्णता प्राप्ति के लिए मनुष्य का किसी न किसी रूप में सदैव आतंरिक तथा बाध्य संघर्ष और यही गतिशीलता उसको चैतन्यता प्रदान करती है तथा जीव से आगे वह मनुष्य, मनुष्य से आगे वह पुरुष, और पुरुष से आगे पुरुषोत्तम बनने की क्रिया को सम्प्पन करता है.

और यह सब तभी संभव है जब जीवन हो. सुखो की प्राप्ति मनुष्य जीवन का एक आवश्यक अंग है ही, लेकिन जैसे की ऊपर कहा गया है, सुख की अनुभूति सर्व व्यक्ति के लिए अलग अलग है लेकिन उन सुखो की प्राप्ति के सबंध में...हमारे ऋषिमुनियों ने कभी सुखो को घृणा की द्रष्टि से नहीं देखा है उन्होंने हमेशा सुखो की प्राप्ति तथा सुख से आगे बढ़ कर आनंद की प्राप्ति मनुष्य कर सके उसके लिए ज्ञान को प्रदान किया है, क्रियाओ के रूप में, साधनाओ के रूप में. नितिपूर्वक किया गया भोग ही सुख है तथा उसे प्राप्त करने में किसी भी प्रकार का कोई दोष नहीं है, वरन यह तो मनुष्य जीवन की सार्थकता भी है की वह अपने जीवन को संवारे, पूर्ण सुख भोग तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति करे अपना तथा अपने कुल का, देश का तथा गुरु का नाम रोशन करे. जहाँ एक और हम आध्यात्मिक पूर्णता की और गतिशील हो, वहीँ दूसरी और हम भौतिक द्रष्टि से भी पूर्ण और सक्षम बने तथा जीवन के चारो पुरुषार्थो को उत्तमता से जिए, धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष. और उसके लिए जो सब से प्रथम और मुख्य आवश्यकता है वह तो प्राप्त हो ही गई है, वह है जीवन. अब इसको संवरना है. लेकिन यह होगा कैसे. यह होगा हमारे ऋषियो के प्रदान किये हुवे ज्ञानसे . हमारी संस्कृति में निहित वह गुढ़ ज्ञान से जिसके माध्यम से हमारे पूर्वजो ने हमारे ऋषियो ने पूर्णता की प्राप्ति कीथी. जहां एक और वह आध्यात्मिक द्रष्टि से परिपूर्ण थे वहीँ दूसरी और वे अपने जीवन में भौतिक पक्ष में भी पूर्ण सम्प्पन थे ही. यह सब संभव हुआ जब उन्होंने विशेष प्रक्रियाओ के माध्यम से दैवीय सहायता की प्राप्ति की.

उन देवी तथा देवताओं से तंत्र के माध्यम से शक्ति की प्राप्ति की और इसी लिए तंत्र के बारे में कहा गया है की तंत्र जीवन भी है लेकिन तंत्र उससे भी ज्यादा, जीवन का श्रृंगार है लेकिन हमारी उपेक्षा में यह ज्ञान लुप्त होता गया. धीरे धीरे व्यक्ति इससे दूर होते चले गए और यह विद्या का नाम मात्र कुछ स्वार्थपरस्तो के हाथो का खेल हो गया जिनको तंत्र का कुछ ज्ञान नहीं था और मात्र स्वार्थ सिद्धि के लिए अपने हिन् कार्यों के लिए उन्होंने उसे तंत्र का नाम दे दिया. तथा ऐसी महान विद्या को, हमारी सनातन संस्कृति के एक महत्वपूर्ण अंग को हीन द्रष्टि से देखा जाने लगा, उसे छल का नाम दिया जाने लगा. निश्चित रूप से यह अंधकार की स्थिति थी, लेकिन दूसरी तरफ गुप्त रूप से तंत्र से सबंधित प्रामाणिक ज्ञान गुरु शिष्य प्रणाली के माध्यम से गतिशील रहा. और वही प्रणाली में कई महापुरुषों के द्वारा समय समय पर समाज को इस विद्या से परिचित कराने तथा जोड़ने का अनिवार्य कार्य किया गया. एसी प्रणाली में ही राष्ट्र को कई महापुरुषों की प्राप्ति हुई, चाहे वह आदि शंकराचार्यजी हो, स्वामी विशुद्धानंद हो, रामकृष्ण परमहंस हो,वमखेपा हो. सभी ने समाज के उत्थान के लिए तंत्र साधना का मार्ग जनमानस को समय समय पर दिखाया है.

श्री सदगुरुदेव ने तंत्र के क्षेत्र में तथा इस पुरातन विद्या को समाज में जोड़ने में अपने पूरे जीवन का योगदान दिया है, समाज के हर वर्ग में उन्होंने तंत्र साधनाओ को पहोचने तथा उनके परिणाम प्राप्त करने का व्यावहारिक ज्ञान सब को समान्तर रूप से प्रदान किया ही. वस्तुतः सभी व्यक्तियो के लिए यह संभव नहीं होता है की वह सीधे ही उच्चकोटि के अनुष्ठानिक कर्मो को अपना कर अपने जीवन को बदल दे. इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुवे उन्होंने सरल तथा सहज प्रयोगों को जन मानस के मध्य प्रदान किया, जिसको कोई भी व्यक्ति अपना कर अल्प काल में ही सहज रूप से प्रयोग को सम्प्पन कर के अपने अभीष्ट की प्राप्ति कर सकता है. ऐसे दुर्लभ तथा गुप्त प्रयोग निश्चित रूप से अपनी तीव्रता के माध्यम से अल्प काल में ही साधक की मनोकामना पूर्ण करने का सामर्थ्य रखते है. ऐसे प्रयोग गुप्त रूप से गुरु शिष्य प्रणाली से चलते होते है तथा ऐसे प्रयोग को कड़ी परीक्षा के बाद ही दिया जाता था. ऐसे ही गुरु शिष्य प्रणाली में विभिभिन्न मतों के अलग अलग सिद्धो से तथा सदगुरुदेव से प्राप्त दुर्लभ लघु प्रयोग यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे है. यह लघु प्रयोग अब तक गुप्त रहे है तथा प्रकाश में नहीं आये है. इन लघु प्रयोगों के माध्यम से प्रक्रियाओ को अपना कर साधकगण अल्प समय में पूर्ण लाभों को प्राप्त कर अपने जीवन को संवार सके यही आशा है

==

Jeevbhavetjeevanam, Human beings always searches for highest accomplishment throughout his whole life. He always moves forward towards his destination based on his thoughts, mental feelings, desires and expectations. It may be materialistic life or spiritual life. Our sages and saints have also said the same thing Sarve Bhaventu Sukhina…….every human being should attain happiness. In reality, happiness and its experience are different for each human being.

sabar dhanprapti prayog

आर्थिक उन्नति हेतु एक अनूठी साधना

यह तीव्र साबर मन्त्र प्रयोग है तथा इसे सम्पन्न करने के बाद साधक को धन सबंधित कोई समस्या सताती नहीं है.यह प्रयोग साधक को किसी भी शुक्रवार से शुरू करना चाहिए.

साधक को रात्री में १० बजे के बाद स्नान कर लाल वस्त्र को धारण करना चाहिए. साधक को लाल आसन पर उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए. साधक अपने सामने किसी बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर देवी लक्ष्मी का कोई चित्र स्थापित कर दे. इसके पास ही साधक एक हकीक पत्थर भी रख दे. साधक तेल का दीपक लगाए तथा गुग्गल का धुप जलाए.साधक इसके बाद रुद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र की २१ माला जप करे.

ॐ गुरुजी को आदेश लक्ष्मी आवे, सात समुद्र से आवे, कहियो करे सुख समृद्धि दे जो ना आवे तो महादेव की आण मेरी भक्ति गुरु की शक्ति वाचा सिद्ध नाथ गुरु की आदेश आदेश आदेश

(OM GURUJI AADESH LAKSHMI AAVE, SAAT SAMUDRA SE AAVE, KAHIYO KARE SUKH SAMRUDDHI DE JO NAA AAVE TO MAHAADEV KI AAN MERI BHAKTI GURU KI SHAKTI VAACHAA SIDDH NAATH GURU KI AADESH AADESH AADESH)

यह प्रयोग साधक तीन दिन तक करे. तीन दिन बाद साधक को हकीक पत्थर को अपनी तिजोरी या धन रखने के स्थान में लाल वस्त्र पर स्थापित कर दे. साधक चाहे तो हकीक पत्थर को चांदी की डब्बी में रख कर उस डब्बी को भी तिजोरी या धन रखने के स्थान में रख सकता है. साधक को साल में यह प्रयोग एक बार उसी हकीक पत्थर पर करना चाहिए. साधक को धन की चिंता से मुक्ति मिलती है साधक को माला प्रवाहित नहीं करनी है तथा हर साल इसी माला से साधक प्रयोग सम्पन्न कर सकता है. देवी के चित्र को साधक पूजा स्थान में स्थापित कर दे.

==

Dhan Prapti Prayog (Prayog to attain wealth)

It is intense sabar mantra prayog and after doing it, sadhak does not suffer from any money-related problems.This prayog can be started by sadhak from any Friday.

After 10 P.M in the night, sadhak should take bath and wear red dress. Sadhak should sit on red sitting mat and face North or east direction.Sadhak should spread red cloth on any wooden mat in front of him and establish any picture of Goddess Lakshmi. Near it, sadhak should place one Hakik stone. Sadhak should light oil lamp and use Guggal Dhoop.

Sadhak should then chant 21 rounds of below mantra by Rudraksh rosary.

Mantra :

OM GURUJI AADESH LAKSHMI AAVE, SAAT SAMUDRA SE AAVE, KAHIYO KARE SUKH SAMRUDDHI DE JO NAA AAVE TO MAHAADEV KI AAN MERI BHAKTI GURU KI SHAKTI VAACHAA SIDDH NAATH GURU KI AADESH AADESH AADESH

Soundary prapti Sadhana jagat

अपने व्यक्तित्व को सौंदर्य तत्व युक्त करने हेतु अद्भुत साधना

यह प्रयोग सौंदर्य प्राप्ति के लिए है. इसको समपन्न करने के बाद साधक को मुहासे आदि से मुक्ति मिलती है तथा वर्ण में अनुरूप सुधार आता है. साधक का तेज निखरता है तथा साधक को शारीरिक सौंदर्य की प्राप्ति होती है.

साधक यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से शुरू करे. रात्रि काल में साधक १० बजे के बाद यह प्रयोग कर सकता है.इस साधना में साधक के वस्त्र आसन पीले रंग के रहे. साधक का मुख पूर्व दिशा की तरफ हो. साधक सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे तथा किसी पात्र में कुमकुम से स्वास्तिक बनाए. उस स्वास्तिक पर साधक दीपक को स्थापित करे. दीपक शुद्ध घी का हो.

इसके बाद साधक स्फटिक माला से निम्न मंत्र की ३१ माला मंत्र जाप करे.

ॐ ऐं अनंगाय रतिप्रियाय पूर्ण सिद्धिम देहि देहि फट

(OM AENG ANANGAAY RATIPRIYAAY POORN SIDDHIM DEHI DEHI PHAT)

साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. साधक को रोज स्वास्तिक बनाने की ज़रूरत नहीं है. उसी स्वास्तिक पर दीपक को रोज स्थापित करे. तीन दिन तक यह क्रम हो जाए उसके बाद साधक स्वास्तिक वाले पात्र को धो सकता है तथा साधक माला को धारण कर ले. माला को ७ दिन धारण करके रखना है. ८ वे दिन माला को नदी तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दे.

==

Saundarya Prapti Prayog (prayog to obtain beauty)

This process is to attend beauty. After completing the process one may get rid of troubles like pimples and other and complexion becomes better. Glow of the sadhaka increases and sadhaka receives physical beauty.Sadhak can start this process from any Friday. Sadhak can do this process after 10PM in the night.

In this prayog, cloths and sitting mat of the sadhaka should be yellow colored. Sadhak should sit facing east direction. Sadhak should light joss sticks and in some vessel prepare Swastika symbol with red vermillion. On that Swastika, sadhak should establish lamp. Lamp should be of pure clarified butter (Ghee).

After this, sadhak should do 31 rounds of the following mantra with crystal rosary.

OM AENG ANANGAAY RATIPRIYAAY POORN SIDDHIM DEHI DEHI PHAT

Sadhaka should do this process for three days. Sadhak need not to prepare Swastika daily. On the same Swastika, lamp could be established daily. When three days of the process is completed then sadhaka can wash the vessel in which Swastika is made and rosary should be worn. Rosary should be worn for seven days. On the eight day, rosary should be immersed in river, pond or sea.

Shtru vaadha nivaaran prayog

अपने जीवन को शत्रुओ से मुक्त रखने हेतु गोपनीय साधना

साधक यह प्रयोग किसी भी शनिवार को या कृष्ण पक्ष की अष्टमी को करे.रात्री काल में ११ बजे के बाद साधक काले वस्त्र धारण कर काले आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख दक्षिण दिशा की तरफ हो.

साधक को अपने सामने एक सुपारी रखनी चाहिए, सुपारी को तेल मिश्रित सिन्दूर से पोत दे तथा उसको भैरव का प्रतीक मान कर उसका पूजन करे. साधक चाहे तो इसके स्थान पर कोई भैरव विग्रह या काल भैरव यन्त्र भी स्थापित कर सकता है. पूजन के बाद साधक शत्रु निवारण के लिए भैरव देव से प्रार्थना करे. साधक को तेल का चार मुख वाला दीपक प्रज्वलित करना है, तेल कोई भी रहे. जब तक साधना चले तब तक दीपक बुझे नहीं इस बात का ध्यान रखना चाहिए. साधक को दीपक में तेल कम पड़ने पर तेल दीपक मे भरते रहना चाहिए. साथ ही साथ साधक को गुग्गल का धुप भी लगाना चाहिए

इसके बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की ५१ माला उसी रात्रि में सम्पन्न कर ले. साधक २१ माला के बाद कुछ देर आसन पर ही विश्राम ले सकता है.

ॐ भ्रं भ्रं भ्रं अमुकं उच्चाटय उच्चाटय शत्रुबाधां नाशय नाशय भ्रं भ्रं भ्रं फट्

(OM BHRAM BHRAM BHRAM AMUKAM UCCHATAY UCCHATAY SHATRUBAADHAAM NAASHAY NAASHAY BHRAM BHRAM BHRAM PHAT)

साधक को मंत्र में अमुकं की जगह शत्रु का नाम लेना चाहिए साधक के पास अगर शत्रु की कोई तस्वीर हो तो उसे भी अपने सामने रख लेना चाहिए तथा काजल या सिन्दूर से उस तस्वीर पर उस शत्रु का नाम लिख देना चाहिए५१ माला हो जाने पर सुपारी/यन्त्र/विग्रह को पूजा स्थान में स्थापित कर दे, माला को श्मशान में या किसी निर्जन स्थान पर फेंक दे. यह कार्य दूसरे दिन ही हो जाना चाहिए. इससे साधक को सुरक्षा चक्र प्राप्त होता है तथा शत्रु का उच्चाटन हो जाता है साधक को शत्रुपीड़ा से मुक्ति मिलती है साथ ही साथ वह शत्रु साधक को भविष्य में कभी कष्ट नहींपहुचाता हैं.

===

Shatru Baadhaa Nivaran Prayog (prayog to get rid over enemy)

Sadhak should do this process on any of the Saturday or on the eight night of the dark moon.In the night after 11PM, one should wear black cloths and sit on the black sitting mat. Sadhaka should sit facing south direction.

Sadhak should place one betel nut in front. vermillion and oil should be applied on that betel nut and poojan of that betel nut should be done understanding it as form of God Bhairav. If sadhak wishes sadhak can even establish Bhairava Idol or Kaal Bhairav Yantra instead of the betel nut. After poojan, sadhak should pray to lord bhairava to remove enemy trouble. Sadhaka should light four face lamp of oil (chaturmukhi). Oil could be any. Sadhak should take special note that till the time sadhana is going on, that lamp should remain lighted and should not be off in between. Sadhak can pour oil whenever it is needed in the lamp. With that, sadhak should also light Guggal Dhoop.

वशीकरण प्रयोग

Vashikaran prayog

एक आश्चर्य जनक अद्भुत गोपनीय साधना

यह प्रयोग साधक किसी भी रविवार की रात्रि को कर सकता है.साधक रात्रि में ११ बजे के बाद यह प्रयोग करे. रात्री में स्नान आदि से निवृत हो साधक लाल वस्त्रों को धारण करे. इसके बाद साधक लाल आसान पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए. इसके बाद साधक अपने सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर विशुद्ध पारदकाली का प्राण प्रतिष्ठित विग्रह स्थापित करे तथा उसका पूजन करे.

पूजन के बाद साधक निम्न मंत्र की२१ माला रुद्राक्ष माला या मूंगा माला से जप करे.

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं अमुकं वश्यं कुरु कुरु सिद्ध कालिके क्रीं क्रींक्रीं नमः

(OM KREENG KREENG KREENG AMUKAM VASHYAM KURU KURU SIDDH KAALIKE KREENG KREENG KREENG NAMAH)

साधक को अमुकं की जगह पर जिस पर वशीकरण करना हो उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिए. यह क्रम साधक को ३ दिन करना चाहिए. ३ दिन के बाद साधक को माला किसी देवी मंदिर में दक्षिणा के साथ अर्पित कर देना चाहिए साध्य व्यक्ति का शीघ्र वशीकरण हो जाता है तथा साधक के अनुकूल हो जाता है

===

Vashikaran Prayog

This process should be done in the night time of any Sunday.Sadhak should do this process after 11PM. After taking bath in the night, sadhak should wear red cloths. After that, sadhak should sit on the red sitting mat. Sadhak should sit facing north direction.

After that, sadhak should spread red cloth on the wooden mat placed in front and on that sadhak should establish idol of the Visuddh Paarad Kaali and should do the poojan.After poojan, sadhak should chant 21 round of the following mantra with rudraksha rosary or Moonga rosary.

OM KREENG KREENG KREENG AMUKAM VASHYAM KURU KURU SIDDH KAALIKE KREENG KREENG KREENG NAMAH

On the place of the Amukam in mantra, Sadhak should chant name of the person on which Vashikaran prayog is to be done.This process should be done for three days. After 3 days, sadhak should place rosary in any goddess temple with some money. Vashikaran of the desired person is done sudden and becomes favorable to sadhaka.

Grih sukh shantI prayog

एक साधना गृहस्थ सुख शांति हेतु

यह प्रयोग गृहस्थ सुख शांति प्रयोग है जिसके माध्यम से घर में क्लेश का वातावरण समाप्त होता है तथा परिवारजनों से मदभेद दूर होते है घर में शांति स्थापित होती है तथा गृह में सुख की प्राप्ति होती हैयह प्रयोग साधक किसी भी शुक्लपक्ष की चतुर्थी को प्रारंभ करे. साधक को यह प्रयोग रात्रिमें करना चाहिए. साधक १० बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर पीले वस्त्रों को धारण करे. साधक पीले आसान पर उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए साधक अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर या किसी पात्र में पारद गणपति या श्वेतार्क गणपति की स्थापना करे. अगर साधक के लिए यह संभव न हो तो साधक कोई भी चैतन्य गणपति विग्रह या यंत्र को स्थापित करे तथा पूजन करेइसके बाद साधक निम्न मंत्र का जाप २१ माला करे. साधक यह जप स्फटिक या रुद्राक्ष माला से करे.

ॐ गं श्रीं गणाधिपतये ऋद्धि सिद्धिं श्रीं गं नमः

(OM GAM SHREEM GANAADHIPATAYE RIDDHI SIDDHIM SHREEM GAM NAMAH)

साधक को यह क्रम ३ दिन तक करना है. साधक को घर के वातावरण में शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है. साधक को माला का विसर्जन नहीं करना है. भविष्य में यह प्रयोग दुबारा करने के लिए साधक इस माला का प्रयोग कर सकता है

===

Gruh Sukh Shanti Prayog

This process is for material peace and happiness with which disputed atmosphere in the house ends and conflicts between family members are solved. Peace becomes established in the house and happiness is gathered in the house.This process could be started on the fourth day of the light moon days. Sadhak should do this process in the night. After 10 PM in the night, after taking bath sadhak should wear yellow cloths. Sadhak should sit on yellow sitting mat facing north or east direction.

On the wooden mat or any vessel sadhak should established Paarad Ganapati or Swetark Ganapati. If it is not possible for Sadhaka then sadhak should establish any activate idol of the Ganapti and should established and poojan should be done.

After that, 21 rosary of the following mantra should be chanted. This chanting should be done with crystal rosary or rudraksh rosary.

OM GAM SHREEM GANAADHIPATAYE RIDDHI SIDDHIM SHREEM GAM NAMAH

Sadhak should do this process for 3 days. Very soon sadhak will receive comfort in the house atmosphere. Sadhak should not immerse rosary. In future this rosary could be use to repeat this process.

Bhavan siddhi tatha vaahan siddhi prayog

सफल जीवन के लिए एक आवश्यक प्रयोग

अगर साधक को योग्य भवन की प्राप्ति नहीं हो रही हो, या फिर मकान या वाहन की प्राप्ति में कोई बाधा आ रही हो तो इसके समाधान हेतु यह प्रयोग है.साधक यह प्रयोग शुक्रवार की रात्रि को ९ बजे के बाद शुरू करे. इस साधना में साधक को सफ़ेद वस्त्र धारण करने चाहिए. इसके बाद साधक अपने सामने किसी पात्र में कुमकुम से ‘ ’ लिखे. इसके ऊपर साधक गोमती चक्र या कोई भी शंख रख दे. तथा साधक उसका सामान्य पूजन करे. साधक घी का दीपक प्रज्वल्लित करे तथा सुगन्धित अगरबत्ती लगाये. साधक को लाल रंग के पुष्प भी अर्पित करने चाहिए,

इसके बाद कमलगट्टा माला से या स्फटिक माला से साधक निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप करे.

ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं भवन सुख सिद्धिं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः

(OM SHREEM SHREEM HREEM BHAVAN SUKH SIDDHIM HREEM SHREEM SHREEM NAMAH)

साधक को यह क्रम ३ दिन तक करना चाहिए. ३ दिन तक गोमती चक्र या शंख वहीँ पर स्थापित रहे तथा उसे तीसरे दिन मंत्र जाप के बाद धुप दे कर अपने पूजा स्थल में स्थापित कर दे साधक माला को किसी देवी मंदिर में दक्षिणा के साथ अर्पित कर दे. जिस पात्र में ' ' लिखा हुआ है उसे भी धो लेना चाहिए. साधक को शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है.

===

Bhavan Siddhi tatha vaahan Siddhi Prayog

If sadhak is not getting proper house or there is trouble to get house or vehicles then this prayog provide solution.Sadhak should do this process in the night after 9 PM of the Friday. Sadhak should wear white cloths in this sadhana. After that sadhak should write ' ' with red vermillion in some vessel. On that one should establish Gomati Chakra or any conch (Shankh) and sadhaka should do normal poojan of it. Sadhak should light lamp of the Ghee and joss sticks. Sadhak should also offer red flowers.

After that with KamalGatta rosary or Crystal rosary sadhak should chant 51 rounds of the following mantra.

OM SHREEM SHREEM HREEM BHAVAN SUKH SIDDHIM HREEM SHREEM SHREEM NAMAH

Sadhak should do this process for three days. For three days Gomati chakra or conch (shankh) should remain established and on the third day when mantra chanting is completed, gomatichakra/conch should be offered Dhoop and established in the worship place. Rosary should be placed in goddess temple with some money. Vessel should be washed in which ' ' is written. Sadhak soon receives comfort.

Vidya prapti hetu sadhana

आज के समय के लिए एक अद्भुत साधना

यह प्रयोग विद्या प्राप्ति का प्रयोग है. इसके माध्यम से व्यक्ति की एकाग्रता का विकास होता है. तथा अभ्यास में रूचि बढ़ने लगती है. याददाश्त शक्ति का विकास भी इस प्रयोग के माध्यम से होता है. अतः यह प्रयोग अभ्यास करने वाले छात्रों के साथ साथ हर एक व्यक्ति के लिए दिन प्रतिदिन के जीवन के लिए उपयोगी है.

यह प्रयोग किसी भी सोमवार से शुरू किया जा सकता है.साधक यह प्रयोग सुबह सूर्योदय के समय या रात्री काल में सूर्यास्त के बाद कभी भी कर सकता है. साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण करे. इसके बाद साधक उत्तर की तरफ मुख कर सफ़ेद आसन पर बैठ जाए.साधक किसी पात्र में केसर से 'ऐं' लिखे तथा उसमे पहले से ही तैयार की हुई खीर ड़ाल दे. उस पात्र को अपने सामने रखे तथा इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ५१ माला जाप करे. यह जाप स्फटिक माला से या रुद्राक्ष माला से किया जा सकता है.

ॐ ऐं श्रीं पूर्णत्वं श्रीं ऐं ॐ

(OM AENG SHREEM POORNATVAM SHREEM AENG OM)

प्रयोग की समाप्ति पर साधक खीर पात्र को वहीँ बैठ कर खीर खा ले इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है तथा साधक शीघ्र ही अनुकूलता का अनुभव कर पाएंगे माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक इस माला को यही प्रयोग वापस करने में तथा किसी भी सरस्वती साधना में उपयोग कर सकता है.

===

Vidya prapti prayog

This process is for to attend knowledge. With this process, concentration of the person increases. And interest in the study also increases. Memoru power also increases with this process. Thus, this process is important for students and other people in their daily life.

This process could be started from any Monday.Sadhak can do this process after sunrise in the morning or in the evening after sun set. After bath sadhak shoul wear white cloths. One should sit on the white sitting mat facing north direction.In some vessel, sadhak should write'ऐं' with saffron and already prepared Kheer (sweet) should be added in that vessel and after that sadhak should chant 51 rounds of the following mantra. this mantra chanting should be done with crystal or rudraksha rosary.

OM AENG SHREEM POORNATVAM SHREEM AENG OM

After process is over one should eat Kheer sitting there only. Thus process is completed and sadhak starts feeling comfort in very soon. Rosary should not be immersed, this rosary could be use to repeat this process or could also be used in any Saraswati sadhana.

Some important facts about ayurved and chikitsa rasayan

आयुर्वेद के कुछ गोपनीय रहस्यों से परिचित कराता हुआ एक लेख

'आरोग्यम धन सम्पदा'

आरोग्य कों भी एक प्रकार से धन सम्पदा ही कहा गया है.. अच्छा आरोग्य या निरोगी काया आज के युग में वरदान समान है. परन्तु आज की स्थिति में ऐसा बहुत ही कम देखने कों मिलता है. प्रत्येक व्यक्ति किसी ना किसी रोग से पीड़ित है. प्राकृतिक रूप से आरोग्य बनाये रखना उत्तम माना गया है. हमारी देह पञ्च तत्वों से निर्मित है और पञ्च तत्व प्रकृति से. इसीलिए जब ये हाड मांस की देह दोष युक्त होती है तो सभी दोष निवारण फिर वो असाध्य ही क्यों ना हो, इस प्रकृति से ही प्राप्त होते है. जो प्रकृति से निर्मित है तो उसका निदान प्रदान प्रकृति में ही छुपा हुआ है. बस आवश्यकता है उसके सही पहचान की..

प्राचीन काल में ऋषि मुनियों ने रोग के निवारण के लिए जंगलो में जाकर पेड़ पौधों, फूलो का आश्रय लिया, उस पर गहन चिंतन, मनन, असंख्य प्रयोग और अभ्यास के बाद उन दुर्लभ सूत्रों की खोज की जिन्हें आज हम 'आयुर्वेद' के रूप में जानते है. यह विज्ञान दीर्घ काल तक प्रचलित रहा परन्तु जैसे जैसे अभ्यास का क्षेत्र विस्तृत होता गया, नए नए विज्ञान नयी नयी शाखाओ की उत्पत्ति होती गई.

परन्तु आयुर्वेद का आजभी अपना अलग ही एक स्थान है और जो इसका अनुभव ले चुके है इसकी महत्ता कों मानते भी है. आयुर्वेद में वनस्पति जड़ी बूटियों से रोगों का निवारण किया जाता है.आयुर्वेद के आठ अंगों में से एक महत्वपूर्ण अंग हैं **रसायन**. रसायन आयुर्वेदशास्त्र के सबसे महत्वपूर्ण विशिष्टता में गिनाजाता हैं . कहा गया है...

शास्तानां रसादीनां लाभोपायः| **...............चरक चिकित्सास्थान**

विशुद्ध, संपन्न रसादि धातु का लाभ प्राप्त होना अर्थात ही रसायन. आरोग्य के रक्षण हेतु वैसे ही रोगमुक्ति के लिए जितना महत्वपूर्ण शरीर गत दोषों का संतुलित होना होता है उतना ही महत्वपूर्ण है धातु संपन्न होना भी. असंतुलित दोष रोग के कारण होते है, पर रोग उत्पन्न होते है धातु के आश्रय तले. मूलतः अगर धातु सारवान और सशक्त होंगी तो सहजता से रोग उत्पन्न होते ही नहीं और अगर हो भी जाए तो ज्यादा समय तक शरीर में टिकते नहीं इसीलिए आयुर्वेद में रसायन के बारे बताया गया हैं की ...

जराव्याधिनाशाकमौषधम् रसायन|

स्वस्थस्य ओजस्करं यत्तु तद वृष्यं तद रसायनम्| **....चरक विमनस्थान**

कायाकल्प, बुढापा जैसी अपरिहार्य प्राकृतिक घटनाओं और व्याधियो का नाश करने वाली औषधि अर्थात रसायन. निरोगी व्यक्ति कों न केवल मन अपितु तन कों भी तुष्टि पुष्टि और उत्साह वर्धन करने वाला रसायन ही है.

रसायन के लाभ आयुर्वेद में कुछ इस प्रकार से बताए गए.

१. रसायन सेवन करने से दीर्घायु, स्मृति, मेधा, आरोग्य, तारुण्य, प्रभा, उत्तम वर्ण, स्वर, मानसिक औदार्य, उत्तम शरीरबल, श्रेष्ठ इन्द्रिय शक्ति और सभी प्रकार के गुणों का लाभ प्राप्त होता है.

२. रसायन के सेवन से वाणी सिद्धि और सतेज कांति प्राप्त होती है.

३. रसायन सेवन रोग प्रतिकारक शक्ति बढाता है. रोगों का जड़ सहित नाश करने में और उसकी पुनरावृत्ति कों रोकने के लिए भी रसायन का सेवन उत्तम माना गया है.

४. शरीर का स्टेमिना बढाने में रसायन का ही उपयोग होता है.

५. मानसिक रचनात्मकता का नवीन प्रवाह रसायन के नियमित सेवन से होता है.

६. आज की दिनचर्या या जीवन शैली कुछ इस् प्रकार की है की ना चाहते हुए भी हम मानसिक चिंताओ से ग्रस्त रहते हैं, स्ट्रेस कम होने का नाम नहीं लेता और हम समय से पहले ही वृद्ध दिखाई देने लगे है ऐसे समय रसायन कायाकल्प का कार्य संपादित कर हमें नवयौवनमय बनाये रखता है.

रसायन के जो प्रकार बताये गए हे उनमे से **'कुटीप्रावेशिक रसायन'** व **'वातातपिक रसायन'** पर बात करते है. मोटे मोटे तौर पर जाने तो **कुटीप्रावेशिक रसायन** वो रसायन हैं जो कुटी में रहकर किया जाता है. अर्थात मनुष्य जब इस् प्रकार का रसायन सेवन करता हैं तो वो सामान्य आहार विहार नहीं ले सकता. इसका प्रमुख कारण हैं की उस दरम्यान उसे कठोरता से नियमों का पालन करना होता है. तभी गुण आता है.

वही **वातातपिक रसायन** जिसमे प्रकृति अर्थात हवा, धुप इनके सेवन के साथ जो सेवन किया जाए, मतलब पथ्य पालन किये बिना आप जिस रसायन का सेवन करते है उसे वातातपिक रसायन कहा गया है इस पद्धति कों किसी भी रूप से अपना सकते है कोई खास नियम नहीं अपनाने पड़ते आप चल फिर घूम फिर सकते हैं .

इन दोनों प्रकार में कुटीप्रावेशिक रसायन कों श्रेष्ठ पद्धति माना है. परन्तु ये उतनी ही क्लिष्ट भी है. सो सभी इसका पालन कर पूर्ण कर पाए ये जरुरी नहीं.. इसीलिए वातातपिक रसायन सर्वसामान्य मनुष्य आसानी से कर सकता है.

रसायन लाभ प्राप्त करने के लिए दो बाते ध्यान रखना अति आवश्यक है पहला, रसायन शास्त्रोक पद्धति, उत्तम वीर्यवान द्रव्यों से बना हुआ हो, दूसरा रसायन सेवन के पूर्व शरीरशुद्धि प्रक्रिया अति आवश्यक है. और शरीर शुद्धि के महत्व कों बताते हुए आयुर्वेद में कहा गया है ...

नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रासायनो विधिः |

न भाति वाससि रंगयोग इवाहितः || **...सुश्रुत रसायन स्थान**

इसे इस तरह समझे की जिस तरह मैले कपड़ो में रंग चढ़ता नहीं उसी प्रकार शरीर शुद्धि के बिना रसायन ग्रहण का लाभ नहीं होता. अर्थात ही शरीर शुद्धि केवल पेट साफ़ करने की क्रिया तक सीमित नहीं है बल्कि स्नेहन स्वेदन कर शात्रोक्त पद्धति से विरेचन विधि भी कर लेना चाहिए, अगर शरीर शुद्धि योग्य रीति से संपन्न हो जाए तो पथ्यपालन करने पर उसका निश्चित तौर पर लाभ होता ही है.. और जब इन औषधियों का सेवन या इसकों बनाते समय अगर मंत्रो कों सम्पुटित कर दिया जाए तो ये अचूक फल देती है. शरीर व मनस दोष ना दूर करते हुए अर्थात पंचकर्म ना करते हुए अगर जो व्यक्ति रसायन सेवन करता है उसे रसायन लाभ कदापि नहीं होता..

आयुर्वेद में स्पष्ट कहा है की मन जिनके अधीन है उन्हेंरसायन सेवन का प्रस्ताव कदापि नहीं देना चाहिए. वैसे ही जो आलसी, श्रद्धाहीन व कष्ट ना करते हुए फल की अपेक्षा करते है और मुख्यतः जो लोग रसायन औषधिसम्बन्धी विशवास और आदर भाव नहीं रखते ऐसे व्यक्तियों कों रसायन सेवन मार्ग नहीं देना चाहिए क्योंकी ये उन पर फलित ही नहीं होंगी. और अगर होती भी हैं तो बहुत ही कम मात्र में..

आज त्वरित उपायों के पीछे दौड़ते हुए एलोपेथी अपनाने पर जहा हम इसका लाभ तुरंत प्राप्त करते है वही इसके दीर्घ काल में दुष्परिणाम भी भोगते है. आयुर्वेद प्राचीन पद्धति है. सर्वप्रथम हमारे ऋषि मुनियों ने ही इस् विद्या का गहन अभ्यास कर ये अनमोल धरोहर हमारे लिए रख छोड़ी है.

परन्तु ये बात भी उतनी ही सत्य है की जिन्हें इस् विद्या परविश्वास नहीं उन पर इन औषधियों का कहे वैसा असर नहीं होता..

अब उन तथ्यों कों जान लेना भी आवश्यक हैं जिस वजह से रसायन औषधियां गुणकारी वलाभकारी साबित होती है. और इन्हें बनाने के पीछे कितनी कड़ी महनत होती है..

- रसायन औषधियों की निर्मिति में केवल वैसी ही औषधियों का उपयोग होता है जो पूर्ण रस और वीर्य युक्त हो जो योग्य काल में तयार हुई हो,(समय, स्थान, शुद्धिकरण, मौसम, साफ़ सफाई का विशेष ख्याल और औषधि कों बनाते समय बनाने वाले की मानसिकता का भी बहुत असर होता है. अर्थात मानस चिंतन का अपना एक अलग महत्व है). जिन का पोषण पर सूर्य किरणों से, उचित मात्र में छाया देने से और पानी से हुआ हो.

- औषधियों जो पक्षी, कीड़े आदि ने खायी हुई हो या सडी हुई हो या खराब हो गई हो या कोई रोग ग्रस्त हो वैसी औषधियों नहीं ली जाती. इसी सन्दर्भ में एक आयुर्वेदक निरिक्षण के बाद ही औषधियों कों रसायन शाला में लाया जाता है संस्कार क्रम पूर्ण किया जाता है

- रसायन गुणधर्म युक्तऐसी कई औषधिया जैसे आवला, हिरडा, सतवारी, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, पुनर्नवा, गिलोय, गोक्षुर, अश्वगंधा, नागरमोथा, हल्दी, बच, नागकेशर, वेलची, दालचीनी, मूंदकपर्णी, चन्दन, कुडा, अर्जुन, अडूसा, ग्वारपाठा, मुलेठी, कंदमूल आदि वनस्पतियाँ स्वभावतः रसायन गुण युक्त होती है परन्तु इनके भी प्रकार होते है जो एक अच्छा निरीक्षक बारीकी से देखके ही उपयोग में लाता है. कई औषधियों दिखने में एक जैसी हो सकती है इसीलिए बहुत ध्यान पूर्वक इस् कार्य कों संपन्न किया जाता है

- औषधियों का संकलन कर उन्हें विशिष्ट पद्धति से उपयोग में लाया जाता है. सभी घटक द्रव्य केवल एक साथ मिला देने से रसायन तैयार हो गया ऐसा नहीं. इन्हें योग्य क्रम से, योग्य संस्कार करते हुए क्रमानुसार रसायनतैयार किया जाए तो ही इनका खरा गुण बाहर आता है और तब ये ग्रहण करने पर सटीक प्रभाव देती हे

- जब इन औषधियों कों पेड़ पौधों से विभक्त किया जाता है तो एक विशेष क्रिया के बाद ही इनका रस शाला में आगमन होता है. सर्व प्रथम इनका आव्हान कर प्रार्थना की जाती है. वही जब इनकों साधना काल में उपयोग किया जाता है तब भी इसी प्रकार का क्रम संपन्न किया जाता है. जिसमे पहले उस वनस्पति के पास जाके उसका विधिवत पूजन, मंत्रो से आवाहन कर फिर उनकी आज्ञा प्राप्त कर उन्हें अगले दिन विभक्त किया जाता है और लाने पर आदर सहित शेष क्रिया संपन्न की जाती है. तभी वे संस्कारित होकर फल प्रदान करते है.

इन औषधियों का जहां आतंरिक संतुलन में उपयोग होता है वही इनका साधनाओ में भी अत्यधिक गोपनीय ढंग से प्रयोग करने पर सिद्धि प्राप्ति में सहायता होती है. विशेषतः इस विषय पर सदगुरुदेव लिखित कुछ ग्रन्थ अमृत समान है. जिनमे उन्होंने बहुत ही बारीकी से ना जाने कितनी वनापतियो का विविध प्रयोग बताया है. जो घरेलु तौर पर करने से लाभदायक होती ही है **सदगुरुदेव जीने** आयुर्वेद पर पुरानी पत्रिका हो या प्रवचन या किताबो में एक से एक गुह्य और दुर्लभ सूत्र दिए हुये हैं उनका तो कोई जवाब नहीं.

सदगुरुदेव जी लिखित **'निखिलेश्वरानंद चिंतन'** में एक पूर्ण खंड चिकित्सा ज्ञान जो रत्न औषधि पर लिखा है.जिसमे उन्होंने बताया है की किस प्रकार रत्नों, ज्योतिष, ग्रह और आयुर्वेद के संयोग के माध्यम से असाध्य रोग कों भी ठीक किया जा सकता है और जो राम बाण उपाय साबित हुई है ऐसी बीमारियों में जैसे हार्ट अटेक, कर्क रोग, डायबिटीस इत्यादि में असरदार रही अगर निर्देशानुसार तैयार की गई हो तो.

अब साधना पक्ष पर बात करे तो आयुर्वेद का साधना जगत में अति उच्च स्थान है. साधना काल में आने वाली शारीरिक अडचनों कों आयुर्वेद के माध्यम से हटाया जा सकता है भूक, प्यास, लघु तथा दीर्घशंकाया कामोत्तेजना के कारण साधना में वाधा उत्पन्न होना सामान्य बात है. इनके निवारण हेतु ऐसी कई वनस्पति जड़ी बूटियाँ है जिनके सेवन से भूख प्यास कों स्तंभित कर निवृत्ति क्रम से मुक्त होकर साधना बिना किसी बाधा से संपन्न की जा सकती है

अब अंत में अगर अधिष्ठात्री देवियों के बारे में नहीं लिखा जाए तो ये लेख अधूरा सा साबित होगा. क्योंकि किसी भी विद्या में उसकी आराध्या की कृपा बिना सफलता तो मिल ही नहीं सकती इसीलिए चिकित्सा रसायन में ऐसी अनेक देवी देवता, यक्षिणियाँ हैं जिनकी कृपा दृष्टि से इस् विधा में पूर्ण सफलता,सिद्धि और ज्ञान अर्जन किया जा सकता है. तो ऐसे ही एक महाविद्याओ में माँ भुवनेश्वरी जो इनकी अधिष्ठात्री देवी है उनकी साधना से इस विद्या में गहन दुर्लभ सूत्र और ज्ञान अर्जन किया जा सकता है. इस् सन्दर्भ में अनेक साधनाए ब्लॉग पर दी जा चुकी है. आगे अगर समय मिलता है तो मै जरुर कोशिश करूँगी की इस विधा की जो अन्य मुख्य देवी देवता है उनके बारे में विश्लेषण प्रस्तुत कर सकूँ .

जिस प्रकार प्रत्येक विधा कों संपूर्ण रूप से जानने के लिए कई देवताए होते है वैसे ही उस विधा की मुख्य अधिष्ठात्रियोंकी अगर अराधना की जाए तो आश्चर्यचकित कर देने वाली उपलब्धियों का आस्वादन कर लाभ लिया जा सकता है.

==

Some facts to be known about Ayurveda and MedicatedRasayan

"AarogyaDhanSampada"

Health is also known as one of treasure. A good health or a healthy body is like boon in today's era. But in current situation it seems rare. Everyone is suffering from any disease. And in such situation maintaining health by natural way is the best solution. Our body is made up of five elements and these five elements are incurred from nature. Therefore when this fleshy body get defected then to reduce such defects whether it is severe solution can get from nature itself. Well which is generated from nature then solution is also hidden in nature itself. What you need is to recognise it in right way..

Since in ancient time our sages went in forest and did a deep study of trees, plants and flowers. And after doing contemplation, many experiments and continuous practice they prepared such rare and secret facts which are known as "Ayurveda" in current date. This science remained famous since ancient time but by the time the area of study got broader and wider many different branches got discovered. But today also Ayurveda has same place with same dignity. And those who have self-experienced can evident the importance of Ayurveda. From the eight parts of Ayurveda the 'Rasayan'… And this is count as the most significant distinctive in Ayurveda. It has been said…

Shastaanaamrasaadeenaam laabhopaayah

....Charak Chikitsasthaan

Getting benefit from pure, complete Ras metal is known as Rasayan.

Kaary siddhi hetu rahu grah sadhana

जीवन के लिए आवश्यक एक साधना

उच्च कोटि के साधक जानते हैं कि किसी भी साधना करने से पूर्व यदि नवग्रह को अनुकूल कर लिया जाए तो सफलता कहीं जल्दी से प्राप्त हो सकती हैं अतः अन्य बातों के अतिरिक्त नव ग्रह पूजन विधान और अन्य अन्य आवश्यक बातें उच्च कोटि के व्यक्तित्व बहुत जयादा ध्यान मे रखते हैं क्योंकि एक छोटी सी भूल सारे साधनात्मक प्रक्रिया, सारी मेहनत पर पानी फेर सकती हैं,हर साधना मे नव ग्रह का अपना ही एक महत्व हैं, इन्हें कभी भी कम करके नही देखा जाना चाहिए और साधना मे तो हर उस चीज का ध्यान रखना ही चहिये जो कि एक साधक को सफलता के और अधिक नजदीक ले जा सकती है.

भारतीय मानस निश्चय ही नव ग्रहों को बहुत अधिक महत्व देता हैं, जब भी कोई शुभ कार्य करना होता हैं, तब नव ग्रह पूजन एक आवश्यक अंग माना जाता हैं फिर वह शुभ कार्य चाहे विवाह हो या कोई अन्य

नव ग्रह मे राहु ग्रह का यूँ तो कोई आकाशीय स्थान नही हैं पर इसकी सत्ता से इसके प्रभाव से कोई भी इनकार नही कर सकता हैं .

जीवन मे जो भी अकस्मात घटनाये होती हैं उनके पीछे राहु ग्रह का प्रभाव माना जाता हैं और जीवन मे उस आकस्मात घटनाये शुभ भी हो या अशुभ हो सभी के पीछे इसी ग्रह का भी प्रभाव होता हैं शुभता के लिए तो हर कोई तैयार होगा पर अशुभता तो मानो जीवन के आधार को ही हिला दे .और इन सब मे सबसे ज्यादा दुखदायी हैं दुर्घटना का होना .

आपके सामने यह प्रयोग जो दिखने मे तो छोटा पर हैं बहुत तीव्र परिणाम देने मे समर्थ तो क्यों नही इस छोटे से साधनात्मक प्रयोग को कर अपने जीवन से दुर्घटना को दूर किया जाए,और साधना हैं भी इसी का नाम की जीवन जैसा हम चाहे वैसा चले न कि हम कठ पुतली की तरह भाग्य के हाथों मे असहाय सा रहें.. ...इसलिए दुर्घटना से बचने के लिए, कार्य सिद्धि के लिए राहू साधना की जाती है.

यह साधना साधक कृष्ण पक्ष के प्रथम दिन से प्राम्भ कर सकता हैं . साधना प्रारंभ करने का समय रात्रि काल में 9 बजे के बाद का रहे. दिशा उत्तर रहे. साधक स्नान करके सफ़ेद वस्त्र धारण करें तथा आसन सफ़ेद रंग का हो .

सदगुरुदेव पूजन ,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

अपने सामने साधक, किसी बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछा कर, उस पर राहू यन्त्र या राहू का चित्र स्थापित करे तथा उसका सामान्य पूजन धूप, दीप, अगरबत्ती करे.

उसके बाद साधक सर्व प्रथम सिंह पर विराजमान राहू ध्यान कर ध्यान मंत्र का११ बार उच्चारण करे.

करालवदनः खडगचर्मशूलीवरप्रदः नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते

(karaalavadanah khadagacharmashooleevarapradah neelasimhasanasthascha raahuratra prashasyate)

इसके बाद साधक को निम्न मन्त्र की 11 माला मंत्र जप करना चाहिए, यह मंत्र जप काले हकीक माला से या रुद्राक्ष माला से किया जाना चाहिए .

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः रां राहवे सर्व व्याधि नाशय कार्य सिद्धिं कुरु कुरु नमः

(OM BHRAAM BHREEEM BHRAUM RAAM RAAHAVE SARV VYAADHI NAASHAY KARY SIDDHIM KURU KURU NAMAH)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन,कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे .

साधक को यह क्रम ११ दिनों तक करना चाहिए. ११ दिन के बाद जप माला को किसी भी नदी या तालाब मे प्रवाहित कर दे. साधक की सभी प्रकार से कार्य सिद्धि होती है. इस तरह से यह सरल प्रयोग आपके जीवन मे और भी अनुकूलता प्रदान करने मे समर्थ हैं .आप सभी साधक भाई बहिनों को इन सरल पर प्रभावशाली प्रयोगों को अपने जीवन मे स्थान जरुर देना चाहिए

==

Rahu sadhana

Sadhaka of the higher level knew that before doing any sadhana if nine planets are made favourable in that condition, success could be gained more quickly; thus, sadhaka who achieved higher level also focuses more on the Nav-Grah Poojan process and other specific processes related to that because small mistake even can ruin the hard work put in the sadhana.In every sadhana, nine planets have their own importance. Points related to planets should not be taken light and in sadhana one should always take care of all the points which can lead sadhaka to success.

Indian point of view always gave big importance to nine planets, whenever any auspicious process is supposed to be done at that time poojan of nine planets are taken as important aspect rather that auspicious moment may be marriage or may be anything. In nine planets, Rahu is not planetary placed in the sky but its power and impact could not be neglected.In the life time, whatever accident occurs, it is believed that there is impact of the planet Rahu behind it and rather incident may be favourable or unfavourable there remains impact of the Rahu behind it.

RoudRa ketu sadhana

समस्त प्रतिकूलता की समाप्ति तथा चर्मरोगों की निवृति के लिए केतु की साधना

सदगुरुदेव जी ने अपनी अति उच्चस्तरीय कृति "कुंडली दर्पण" मे यह स्पष्ट किया हैं कि जीवन मे जो भी अकस्मात घटना होती हैं उसके लिए केबल दो ग्रह कहीं ज्यादा उत्तरदायी हैं प्रथम तो राहु और दूसरा केतु

केतु ग्रह को सामान्य ज्योतिष साधारणतः बहुत अधिक महत्त्व नही देते हैं .पर यह भी अन्य ग्रहों की भांति अनेको गुप्त रहस्य अपने आप मे समाहित किये हुये हैंऔर आज जो भी किताबे बाजार मे उपलब्ध हैं.

उनमे भी कुछ विशेष इस ग्रह के बारे मे जानने मे नही मिलता हैं ठीक राहु की भांति इस ग्रह का भी कोईआकाशीय स्थान नही हैं .पर इसकी महत्वता अपने आप मे हैं ही.

जब बात साधना क्षेत्र की हो तो हमें कोई ग्रह नही बल्कि सभी ग्रहों का अपना ही एक महत्व हैं इस बात को ह्रदय मे उतार लेना ही चाहिए ,यूँ तो किसी भी ग्रह को अपने अनुकूल बनाने के कई कई उपाय दिए होते हैं पर साधनात्मक रूप से किसी ग्रह का किसी विशेष वाधा या प्रतिकूलता हटा कर उसे अनुकूल बनाना या फिर किसी विशेष इच्छा हेतु उसका साधनात्मक विधान प्राप्त होना, सच मे अपने आप मे एक भाग्य का खेल ही कहना चाहिए, यूँ तो मानसिक चिंताए का पता लगाने के लिए कुंडली मे केतु की कई स्थिति से यदि अध्ययनकरने पर परिणाम बहुत उत्साहवर्धक पाए गए हैं.

हमने तंत्र कौमुदी के इस अंक मे कुछ ऐसी साधना आपके सामने रखी हैं या रखने का प्रयत्न कर रहे हैं जो साधनात्मक रूप से सभी के अनुकूल हो, जिसमे आपको किसी ज्योतिष के चक्क्कर काटने नही पड़ेंगे कि हमारा यह यह ग्रह कमजोर हैं बल्कि यदि आप इस साधना के लाभ लेना चाहते हैं तो आप बिना किसी हिचक के कोई भी प्रयोग कर सकते हैं फिर भले ही वह ग्रह आपकी कुंडली मे कैसा भी हो क्योंकि साधनात्मक रूप से जब जप कार्य कियाजाता हैं, तब सबंधित ग्रह की अनुकूलता प्राप्त होती हैं और जिस संकल्प के लिए जप किया जा रहा हैं उसमे पूरी अनुकूलता प्राप्त होती हैं.

आज जिस तरह से आकर्षक बनने के लिए ,रासायनिक पदार्थों से निर्मित जो भी क्रीम या पेस्ट आ रहे हैं वह तात्कालिक परिवर्तन भले ही कुछ दिखा दें पर दीर्घ काल मे उनके परिणाम बहुत ही हानिकारक होते हैं.और जिस तरह से हर चीज जो आज बाजार मे प्राप्त हो रही हैं वह लगभग सभी की सभी किसी न किसी तरह से मिलावट युक्त हैं या रासायनिक पदार्थो के प्रयोग से बनी या फिर हमारे जन्म से ही कुछ चर्म रोग किसी कारण वश हो गए हो तो इस हेतु इस साधना को जिसे "रौद्र केतु साधना" भी कहा गया हैं उसे करके लाभ प्राप्त करना ही चाहिye.

इसलिए समस्त प्रतिकूलता की समाप्ति तथा चर्मरोगों की निवृति के लिए केतु कीसाधना की जाती है.

यह साधना शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन से करनी चाहिए, इस साधना को प्रारंभ करने का समय रात्रि काल में 9 बजे के बाद का रहे.साधक सर्व प्रथान स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण करे तथा सफ़ेद आसन पर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए,

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

साधक अपने सामने केतु का यन्त्र या चित्र को बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करे. तथा उसका पूजन करे.

उसके बाद साधक सफ़ेद हकीक माला से या रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का 51 माला जप करे.

ॐ स्रौं कें रोद्रकेतवे कें स्रौं फट्

(OM SRAUM KEM RODRAKETAVE KEM STRAUM PHAT)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन, कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे.

यह क्रम साधक को ३ दिन करना है. ३ दिन के बाद साधक माला को विसर्जित कर दे.

इस तरह यह प्रयोग सम्पन्न होता हैं यह निश्चित हैं कि साधक को इस साधना से चर्म रोग आदि मे लाभ मिलता हैं पर यह कहीं उचित होगा कि इस प्रयोग को बार बार करना ही चाहिए .और यह नही हो तो हर दिन कम से कम दैनिक पूजन मे तो कुछ मंत्र जप जरुर करना चाहिए.

==

Raudr Ketu Sadhana

“Kundali Darpan” one of the sadgurudev’s amazing work, it is well defined that whatever sudden incidents or accidents happens in the life of the person, two planets are more responsible for this, one is Rahu and second is Ketu.Generally Ketu is not given much importance in the normal astrology but this planet also filled with many secret mysteries in itself like other planets and today, majority of the books which are available in the markets does not provide particular or special knowledge regarding this planet. Like Rahu, this planet also does not own aerial position but that does not make its important lesser.

When subject is about sadhana, one should establish this thought in mind that not one but every planet owns their own importance. There may be many processes to make specific planet favorable but from the sadhana point of view it could be fortune to have specific process related to specific planet to remove some specific trouble or perversity.

Vyaapaar aur buddhi me unnati hetu -budh sadhana

जीवन के लिए अति आवश्यक अद्भुत गोपनीय साधना

जीवन मे बुद्धि या प्रज्ञा या शिक्षा का महत्व कम नही समझा जा सकता हैं,और एक व्यक्ति किस स्तर तक उन्नति कर सकता हैं इसके लिए उसकी प्रज्ञा या बुद्धि कितनी विकसित हैं या हो सकती हैं इन बातों का निर्धारण करने के लिए एक ज्योतिष कुंडली मे अन्य बातों के साथ बुध ग्रह का विशेष रूप से अध्ययन करता हैं.

एक तरफ जहाँ यह ग्रह बुद्धि का प्रतीक हैं वहीँ दूसरी ओर ये व्यापार मेकितना सफल एक व्यक्ति हो सकता हैं, इन बातों के निर्धारण मे इसी ग्रह की प्रमुख भूमिका होती हैं,वेसे भी आज का आधुनिक युग मे बुद्धि की खासकर त्वरित बुद्धि और उच्च शिक्षा होने के लाभ से कोई भी इनकार नही कर सकता हैं.

पर यह प्रकृति का वरदान तो हर किसी को प्राप्त होने के बाद भी, प्राप्त नही होता हैं और इसके लिए ज्योतिष एक व्यक्ति को तरह तरह के समयानुकूल सलाह देते हैं ही.पर हर उपाय के कुछ धनात्मक यदि तथ्य हैं तो कुछ ऋणात्मक तथ्य भी हैं, इन प्रतिकूल तथ्यों को ज्योतिष छुपा लेते हैं.

पर साधना क्षेत्र मे ऐसा नही हैं हम सभी महाकवि कालिदास की कहानी से भली भाँती परिचित हैं की किस तरह एक निरक्षर व्यक्ति के जीवन मे एक साधना ने क्या परिवर्तन कर डाला ,ठीक इसी तरह इस ग्रह की साधना हैं ही इतनी आश्चर्यकारक अगर व्यक्ति इस साधना के प्रति विश्वास रखकर करें,और साधना को कोई चमत्कार दिखाने की अपेक्षा जीवन मे आमूल चूल परिवर्तन करने का मानस बना कर करे या किया जाए तो क्यों नही अपेक्षित परिणाम साधक या साधिका को प्राप्त होंगे .इस साधना को किसी भी बालक या बालिका के नाम से भी संकल्पित करके किया जा सकता हैं जिससे उनमे और भी अधिक बुद्धि तत्व की प्रबलता हो.

क्योंकि आज बिना उच्च शिक्षा प्राप्त किये बिना एक सफल जीवन की कल्पना करना पर इसके साथ जो इतने प्रतियोगी परिक्षाओ को पास करना होता हैं तब बिना बुद्धि तत्व या कुशाग्रता के कैसे संभव होगा उनमे सफल होना .

और जब साधना का सहारा लिया जाए, जीवन की प्रतिकूलताओ को दूर करने मे, तब बुद्धि तत्त्व की उपयोगिता तो हमेशा रहेगी .क्योंकि प्रतिकूलता जब हमारे सामने आती हैं तब उनसे कैसे निपटा जाए या उनका हल कैसे निकालना हैं उस समय सबसे जयादा बुद्धि तत्व की भूमिका सामने आती हैं.

यह साधना किसी भी बुधवार से शुरू की जा सकती है इस साधना को प्रारम्भ करने का समय रात्रि काल में १० बजे के बाद का रहे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए साधक के वस्त्र तथा आसन पीले रंग के रहे.

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

अपने सामने साधक बुध ग्रह का यन्त्र या चित्र बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करे. तथा उसका पूजन करे.

उसके बाद साधक निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे. यह जाप साधक नवग्रह माला से या रुद्राक्ष माला से कर सकता है.

ॐ ब्रां बुं बुधाय फट्

(OM BRAAM BRUM BUDHAAY PHAT)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन,कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरूर करे .

साधक को यह क्रम 5 दिन तक करना चाहिए. साधना समाप्ति पर माला को विसर्जित कर दे.

इस साधना को तो हर व्यक्ति को अपने जीवन मे स्थान देना ही चाहिए ही .क्योंकि यह बुद्धि तत्व हैं जो व्यक्ति के जीवन को किस ओर ले जाना हैं यह निर्धारित करती हैं .अतः इस बात को हलके मे नही बल्कि बहुत गंभीरता से लेना चाहिए ,साथ ही साथ व्यापार वर्ग से सबधित व्यक्ति के लिए तो यह वरदान स्वरुप हैं वह अगर इस साधना के महत्व हो समझे तो .इस तरह साधना जीवन के हर क्षेत्र के लिए एक उपाय रखता हैं ही .अब यह साधक पर निर्भर हैं कि वह किस रास्ते को चुनता हैं.

===

Budh Sadhana

in the life time, one cannot even imagine to count less importance of the wit, intelligence, or education and astrologer especially study planet Budh in the kundali with other aspects to understand about the margin of progress of the person and how much wit is developed and will be developed for the same.

One side, this planet is symbol of the intelligence; on the other hand how much success one may have in the business could also be calculated, to understand this fact, big role remains of budh planet, thus, in today's time no one can deny importance of the wit and higher education benefits.

But this boon of the nature is though given to all but not available to all and for this reason, astrologers provides various solutions time to time. But solutions though own positive facts then on other side there is also negative facts too and these negative aspects are made hidden.

Utsaah aUr Umang hetU mangal grah sadhana
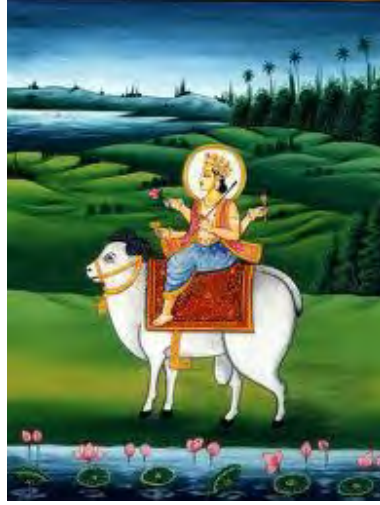
जीवन मे उत्साह उमंग के साथ स्वस्थ शरीर प्राप्ति हेतु अद्भुत साधना

मंगल साधना

नव ग्रहों मे मंगल को युवराज की संज्ञा मिली हुयी हैं पर इस ग्रह का देखा जाए तो जीवन मे बहुत ज्यादा ही महत्त्व हैं एक तरफ जहाँ यह उत्साह और धैर्य का प्रतीक हैं वहीँ दूसरी ओर लड़ने या लडाकू प्रवृत्ति का भी प्रतीक हैं यह शस्त्र का भी प्रतिनिधित्व करता हैं .

इस ग्रह की अपनी ही एक विशेषता हैं, जन्म कुंडली मे यदि यह ग्रह जितना ज्यादा कमजोर होगा उतना ही दुर्भाग्य का प्रतीक हैं ऐसे व्यक्ति पर शस्त्राघात हो सकता हैं या स्व आत्माघात भी वह कर सकता हैं कारण वह बिलकुल भी धैर्य शाली नही होगा ,वहीँ दूसरी ओर कुंडली मे इसकी अच्छी स्थिति इस बात का प्रतीक है

व्यक्ति उत्साह से भरपूर ओर धैर्य शाली भी होगा संतुलित विचार वाला भी होगा.पर इसका अत्याधिक शक्तिशाली होना इस बात की निश्चितता हैं कि व्यक्ति का गंभीर रुझान आध्यात्म की ओर होगा.

उत्साह उमंगता होना तो जीवन को सरस और उच्चता की ओर ले जाने के लिए एक आवश्यक तत्व हैं. इसके बिना जीवन क्या मानो एक ठूंठ सा.

यह ग्रह जब शुक्र ग्रह के संयुक्त हो जाए तब तो व्यक्ति की परवरिश बहुत ही सात्विक वातावरण मे करना चाहिए क्योंकि शुक्र और मंगल का योग अनेको बार बहुत विनाशकारी परिणाम भी ला सकता हैं अगर अन्य सभीतथ्य सहयोग न कर रहे हो और दशम भाव भी कमजोर हो तो,

वहीँ तीसरी ओर यह ग्रह तार्किक क्षमता और अद्भुत तर्क शक्ति प्रदान करता हैं जिसका भी यह ग्रह शक्तिशाली होगा उसकी वाक् क्षमता भी अद्भुत होगी.और जीवन मे प्रतिकूलताए तो होंगी ही,क्योंकि जीवन हैं कि हर क्षण प्रतिकूलताओ से लड़ने का नाम हैं ,और देखा जाए तो क्या हम सभी हर पल अगली स्वास के लिए संघर्ष रत नही हैं?? , तो इस जीवन संग्राम मे हर हाल मे विजयी वही होगा जो हार न माने,हर हाल मे अपने जीवन को अपनी शर्तों पर गतिशील करने के लिए जुटा रहे क्योंकि सफलता कुछ ऐसे का ही वरण करती हैं .

इस ग्रह की अनुकूलता अपने आप मे बहुत अर्थ रखती हैं क्योंकि यह लगातार लड़ने का गुण देता हैं यह धैर्य देता हैं और तर्क के साथ मंगल ग्रह एक बलिष्ठ शरीर भी प्रदान करता हैं एक सौष्ठव युक्त शरीर क्योंकि यह शरीर मे खून का भी प्रतीक हैं .

इस साधना को तो हर व्यक्ति को अपने जीवन का अंग बनाना ही चाहिए क्योंकि जीवन का प्रथम सुख तो निरोगी काया कही गयी हैं. तो इस ग्रह की साधना से अनुकूलता मिलना अपने आप मे सौभाग्य ही कहा जा सकता हैं .

साधक यह साधना किसी भी मंगलवार से शुरू कर सकता है साधना प्रारंभ करने का समय रात्री काल में १० बजे के बाद का ही उचित रहेगा .

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र धारण कर के लाल आसन पर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठे

अपने सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर मंगल यन्त्र या मंगल ग्रह का चित्र स्थापित कर उसका पूजन करे.

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

उसके बाद मूंगा माला से या रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की२१ माला जाप करे.

ॐ क्रां अं भोमाय अङ्गारकाय अं क्रां नमः

(OM KRAAM AM BHOMAAY ANGAARAKAAY AM KRAAM NAMAH)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे

साधक को यह क्रम 5 दिन तक रखना चाहिए. साधना समाप्ति पर साधक माला को विसर्जित कर दे.

इस तरह यह सरल पर तीव्र प्रभाव दायक प्रयोग सम्पन्न होता हैं .जो आपके जीवन की अनेको न्युनताये समाप्त कर देता हैं.

==

Mangal Sadhana

In nine planet, Planet Mangal is titled as prince but when we see about this planet, it contain big importance in the life. On one side it is symbol of enthusiasm and patience and on other hand it is also symbol of the fight and fighting nature. This also represents weapons.

This planet have its own specialty, in the birth chart this planet would represent misfortune as much amount it is weak. Such people can suffer from the wounds of weapons or one may even attempt self destruction; reason is completely clear that person would not be having patience. On other hand, good position in birth chart is symbol of enthusiasm and patience with controlled thoughts. But if this planet is very strong that fact denotes that person will be having serious interest in spirituality.

Enthusiasm and rapture are important aspects to lead life of the person toward stability and superiority without which life of the person becomes non interesting.

When this planet is accompanied with Shukra planet at that time person's ward should be done in righteous atmosphere because many time Sukra and Mangal together position causes various destructive results when other positions does not cooperate and tenth position (dasham bhav) is also weak.

sarv siddhi prad navgrah sadhana.

नव ग्रह की अनुकूलता हेतु अद्भुत गोपनीय साधना

एक संतुलित जीवन मे सारे रंग उचित अनुपात मे होते हैं और एक भी रंग या भाव न हो तो वह संतुलित जीवन नही कहा जा सकता हैं.ठीक इसी तरह कुंडली मे भी जो जो ग्रह रहते हैं वह अनेको कारण से, जन्म के हिसाब से या गोचर के हिसाब से या दशा महादशा के हिसाब से ही कोई न कोई ग्रह अशुभ परिणाम देता ही रहता हैं पर एक साथ सारे ग्रह की साधना क्या उचित हैं??? क्यों नही .

अनेको बार कुंडली मे ऐसी ग्रह स्थिति होती हैं जब कई कई ग्रह कमजोर स्थिति मे होते हैं तब ,या कई बार समय की कमी होने पर अलग अलग किस ग्रह की साधना की जाए यह व्यक्ति निर्णय नही कर पाता उस अवस्था मे नवग्रह की एक साथ साधना का अपना ही एक महत्त्व हैं .

पर नवग्रह साधना से अन्य ग्रहो की मतलब एक एक साधना को कम नही आंका जाना चाहिए क्योंकि इस समय साधना ऊर्जा सभी ग्रह शक्तियों मे बराबर बिभाजित हो जाते हैं पर एक एक ग्रह साधना मे हम अपने इच्छा परया किसी विशेष लाभ पर कहीं ज्यदा ध्यान एकाग्र कर सकते हैं.

जब बात साधना की हो ...साथ मे कोई भी व्यक्तिगत समस्या न हो बस साधना मे सफलता चाहिए यही एक मात्र लक्ष्य हो तब एक एक ग्रह कि अपेक्षा सारे ग्रहों की साधना एक साथ इस नवग्रह साधना के रूप मे कर लेना चाहिए. इस बात को भी ध्यान रखना चाहिए के इन्हें बस एक बार करके भूल जाने की साधना न मान ले बल्कि किसी साधना को प्रारंभ करने से पूर्ण अगर इस स्तर की नवग्रह साधना को एक दो बार यदि पूर्णता के साथ कर लिया जाए तो निश्चय ही सफलता कहीं ओर भी नजदीक होगी.

इस तरह से इन नवग्रह की साधना को या किसी भी ग्रह की अलग अलग साधना को भी, किसी साधना की सफलता से संयुक्त हुआ ही आप पाओगे क्योंकि एक अर्थ मे सारा विश्व एक सूत्र मे पिरोया हुआ हैं।इस बात को ध्यान मे रखने मे हर साधना और हर मंत्र से इन नव ग्रहो को सम्पर्कित पाओगे.

यह साधना तीव्र प्रभावकारी है तथा साधक सभी ग्रह का आकर्षण अपनी तरफ कर लेता है.

यह साधना से साधक के सभी ग्रह अनुकूल होते है तथा साधक के सभी दोष समाप्त होते है

यह साधना साधक रविवार से शुरू करे. समय दिन या रात्रि का कोई भी हो लेकिन रोज साधना का समय एक ही रहना चाहिए. दिशा उत्तर रहे.

साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर अपने सामने किसी बाजोट सफ़ेद वस्त्र बिछा कर विशुद्ध पारद शिवलिंग स्थापित करे. विशुद्ध पारद शिवलिंग अगर साधक के पास उपलब्ध नहीं हो तो किसी भी प्रकार के शिवलिंग का प्रयोग कर सकता है. सम्पूर्ण फल की प्राप्ति के लिए विशुद्ध पारद शिवलिंग स्थापित करना उत्तम रहता है क्यों की मूलतः यह आकर्षण साधना है तथा विशुद्ध पारद जितनी आकर्षण क्षमता किसी और तत्व में नहीं होती.

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं.

साधक शिवलिंग का पूजन करे इसके बाद साधक उसके पास चावल से ९ ढेरी बनाये तथा हर एक ढेरी पर एक सुपारी को रखे. तथा इन्ही को ९ ग्रहों का प्रतीक मान कर उसका पूजन करे. इसके बाद साधक नवग्रह माला से या रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का ९ माला जाप करे.

ॐ जुं ह्रां श्रां क्रां ब्रां ग्रां द्रां प्रां भ्रां स्रां जुं फट्

(OM JUM HRAAM SHRAAM KRAAM BRAAM GRAAM DRAAM PRAAM BHRAAM SRAAM JUM PHAT)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन,कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे.

यह क्रम साधक को ९ दिन तक करना चाहिए. इसके बाद साधक शिवलिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दे माला तथा सुपारी और चावल को उसी वस्त्र में पोटली बना कर नदी, समुद्र या तालाब में विसर्जित कर दे

इस तरह से यह दुर्लभ और सरल विधान आपके सामने हैं.समय समय पर इन साधनाओ को करते रहना चाहिए ताकि जीवन मे एक निश्चिंतता बनी रह सके.और व्यर्थ मे हमारी उर्जा ,उन प्रतिकूलताओ से सिर्फ लड़ते रहने मे नष्ट न होती रहे बल्कि हम भी श्रेष्ठ रचनात्मक कार्य करते रह सकें.

===

Nav Grah Sadhana

In the balanced life all the colours remains in the proper amount and if one aspect or feel is not balanced then it could not be termed as life. Same way, all planets in kundali or birth chart with many reasons, by birth or with position or with Dasha MahaDasha may give inauspicious results but when sadhana of all planets if done all together then? Why not!

Many times in birth chart such position of the planets take place that many planets all together are seems weak, or many time because of short running of the time, it becomes difficult to understand which sadhana of which planet should be done separately, in such situation, sadhana of Nav Grah together is very important.

But with this fact too, sadhana related to specific planets could not be taken lightly because this time sadhana energy will be divided equally in all the planet powers while in specific planet sadhana we can concentrate more on our wishes or specific benefits.

रोग की निवृति के लिए सरल साधनाए जैन धर्म से

Rog nivRiti ki saRl sadhnaye jain dhaRm se

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोएसव्वसाहूणं

जैन धर्म से -अद्भुत सरल साधनाए

.

शास्त्रों मे पहला सुख निरोगी काया बताया गया हैं, सारे सुख हो पर व्यक्ति का स्व शरीर ही स्वस्थ न हो तो सब कुछ होते हुये भी सब बेकार हैं.पर आज तो घर घर मे नही बल्कि यह कहा जाए कि हर व्यक्ति ही रोगी हीं तो कहीं कुछ ज्यादा सही होगा ,आयुर्वेद मे स्वस्थ की परिभाषा मे यही कह गया हैं कि वह जो अपने आप मे स्थित हो वही स्वस्थ हैं .

इसलिए यह मान ही लिया जाए कि हर व्यक्ति किसी न किसी रोग से ग्रस्त हैं ही .और हर व्यक्ति इन रोगों से बचने के लिए हाथ पैर मारता ही हैं .साधनात्मक उपाय भी बहुत आज प्राप्त हैं ,यदि अवस्था बहुत आधिक सोचनीय न हो तो इन उपायों पर ध्यान देना ही चाहिए.

पूज्य पाद सद गुरुदेव जी ने मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञां मे एक बार जैन धर्म से सबधित पांच महामंत्र जिन्हें नमोकार महा मंत्र कहा जाता हैं से सबंधित साधना एक साधक के अनुभव के साथ प्रकाशित कराई हुयी थी.उन साधक ने क्यों और कैसे इस साधना मे इस महामंत्र की साधनामे सफलता मिल ही जाए इसके लिए कुछ स्वानुभूत बाते बताई .(जिसके माध्यम से उन्होने मृत्यु को भी पीछे धकेल दिया था)और उन्होंने कहा भी कि जब तक इन बातों को सच मे अपने जीवन मे पूरी तरह से उतार न लिया जाए सफलता कम से कम इन महामंत्रो से जितनी मिलनी चहिये वहसम्भव नही हैं .

उन्होने स्पस्ट किया की जैन धर्म का आधार भूत स्तंभ दया हैं वह भी सम्पूर्ण प्राणी मात्र से हैं अतःजब भी इन प्रयोगों को करना हो तो संसार के समस्त ज्ञात अज्ञात जीव धारियों से अपने जाने अनजाने मे हुयी गलतियें और अपराधों के लिए क्षमा मांग लेना चाहिये यह क्षमा हृदय से होना चाहिए न की केबल शब्दों से ,और जीवन मे पवित्रता का भान होना ही चाहिए ही.

सबसे पहला प्रयोग तो यही की इसके बाद आप नमोकार महामंत्र का जप करें और पूरी तल्लीनता के साथ,जितना आप को समय मिले ,साथ ही साथ मान मे यह भाव लगातार रखा जाए कि अब मेरे मन मे किसी के प्रति कोई दुर्भाव या द्वेष नही हैं. बिना इस बात को हृदय मे उतारे आप कितना भी मंत्र जप करेंगे वह उतना असर नही देगा ,जितना की आपकी इच्छा हैं .

आप कुछ ही दिन के अंदर देखेंगे की किस तरह आपका शरीर और भी स्वस्थ हो गया.

दूसरा प्रयोग : संसार के समस्त जीव धारियों से क्षमा याचना करने के बाद अब हम रोज स्नान करके इन मंत्रो का मात्र १०८ बार उच्चारण करें . और आप स्वयम परिणाम देखेंगे कि किस तरह आपका शारीर स्वस्थ होता जा रहा हैं .

मंत्र:

ॐ णमो आमि सहि पत्ता ण म्

ॐ णमो खे लो सहि पत्ता ण म्

ॐ णमो ज लो सहि पत्ता ण म्

ॐ णमो सव्वो सहि पत्ता ण म् स्वाहा ||

खासकर जो भी मंत्र जो रोग आदि के निवारण के लिए हो तो सबंधित सभी बातें मतलब जप आदि व्यक्ति को स्वयं ही करना चाहिए जब तक आपका शरीर चल रहा हो तो मतलब मंत्र जप आदि मे आपको कोई समस्या न हो.

यह सरल साधनाए हैं पर यह तो व्यक्ति के देखने पर ही निर्भर करता हैं .

sarp bhay se mukti hetu sadhana

सर्प भय से मुक्ति हेतु अत्यंत सरल विधान

यह तो सुविज्ञात तथ्य हैं कि कोई भी जानवर सामान्यतः आप पर जब तक हमला नही करता हैं जब तक की आप उसके प्रति कुछ सुरक्षात्मक या हमला करने की भावना न लिए हो या उसे आप से कोई खतरा न महसूस हो रहा हो,

जिन्हें जंगल मे जाना पड़ता हैं उन्हें सर्प आदि से सामना करना ही पड़ता हैं, और वानस्पतिक तंत्र मे और तंत्र जगत मे अनेको ऐसी साधनाए हैं जैसे पर्वत साधना, वन दुर्गा साधना जिनको सम्पन्न करने के बाद साधक या साधिका को कोई भी समस्या नही आती हैं पर जब बात हमारे घर परिवार कि हो तो खासकर वर्षा ऋतू मे कभीकभी सर्प आदि का भय बहुत बढ़ जाता हैं. तब कैसे इनसे बचे.

एक सामान्य सा उपाय तो यह हैं जो अनेको को ज्ञात हैं कि "मुनिराज आस्तिक नमः" इस मंत्र को हमने घर के दरवाजे के बाहर तरफ लिख दिया जाए तो भी सुरक्षा बनी रहती हैं.अगर घर के अंदर सर्प का प्रवेश हो गया होतो कुछ धूप आदि उसी कमरे मे जला दे और इसी मंत्र का जप करले.दरवाजा आदि खुला छोड़ दे कुछ देर मे सर्प स्वयं ही वहां से भाग जाएगा .

सर्प आदि के भय से बचने के लिए बहुत सारे विधान सामन्यतः मिल जाते हैं और लगभग सभी का कुछ न कुछ प्रभाव रहता ही हैं .

ऐसा ही एक सरल सा विधान तो कई कई आचार्यो और तंत्र विज्ञों द्वारा प्रशंशित हैं.हालाकि यह साबर मंत्र हैं और इसका उपयोग अपनी सुरक्षा के लिए ही किया जाता हैं

मंत्र:

बाबा फरीद की कामरी अब अन्धयारी निश , तीन चीज बांधू नाहर चोर विष

इस मंत्र को पढते जाए और चारो ओर सरसों फेंकते जाए.

सर्प वहां से भाग जायेगा.

एक ओर सरल सा प्रयोग बहुत प्रशंशित रहा हैं

वह यह की रात मे सोते समय मात्र एक बार पढकर तीन बार हाथ से ताली बजा दें

सर्पासर्प भ्रद्र ते ,दुरं गच्छ महा विष

जनमेजय यज्ञान्ते, आस्तिकं वचनं स्मर.

आस्तिकस्य वचं स्मृत्वा ,य: सर्पो न निवर्तते

सप्तधा भिद्यते मुर्धीन ,शिश वृक्ष फलं यथा

==

VERY EASY VIDHAAN TO GET RID OF FEAR FROM SNAKES

It is well-known fact that generally, no animal attack you until and unless you have defensive or attacking feeling towards him or that animal is feeling danger from your side.

Bichhchhu ke jahar se Bachne hetu

बिछ्छू आदि विषैले जीव के काटने पर विष उतारने हेतु

सर्प और बिछ्छु आदि का जहर उतारने वाले लगभग हर जगह मिल जाते हैं वहीँ दूसरी ओर आज उच्च शिक्षित व्यक्ति इन सब को संदेह की दृष्टी से देखता हैं और विश्वास करने को तैयार् ही नही होता हैं. पर मंत्र शास्त्र किसी के विश्वास आदि पर टिका नही हैं. पर जब इनके द्वारा रोगी को ठीक होते देखता हैं तब वह भी आश्चर्य चकित हो ही जाता हैं .

अब हर प्रयोग के लिए लाख या सवा लाख मंत्र जप करना अनिवार्य नही हीं हैं और ऐसे प्रयोग हैं जो बहुत ही कम मात्रा मे जप करने पर और किसी भी पर्व आदि पर थोडा बहुत हवन करने स्वत: सिद्ध हो जाते हैं .

और कुछ मंत्र तो स्वयम सिद्ध की श्रेणी मे होते हैं जिन्हें सिर्फ प्रयोग करना ही शेष रहता हैं.औरएक ऐसा ही स्वयं सिद्ध मंत्र आपके लिए... बिच्छु के डंक मारने का दर्द बहुत तीव्र होता हैं उस समय अगर ऐसे कुछ उपाय अपनाए जाए तो रोगों को बहुत राहत हो जाती हैं .

हाँ जब भी सर्प काटने या बिच्छू के डंक मारने की बात आये तो चिकित्सीय सहायता पहले देखना चहियेउसमे कोई भी कमी नही करना चाहिए, हाँ जब तक वह संभव नही हो पा रहा हो तब तक पुरे विश्वास के साथ इन उपायों को अपना कर लाभ पाया जा सकता हैं .

याहं पर जो मंत्र दिया जा रहा हैं वह भी अनेको विद्वानों का परीक्षित और प्रशंशित हैं

मंत्र:

जे संदेह लेह आवे ,तेहि पानी परोरि पियाई देव

कायो पाए शिर मानिक रामुप मोडो ,मरि जासी अन बांधनो

पानी पीवै बाँधी उतरि जसि .

इस मंत्र को पढते जाए और सात बार जहाँ बिच्छू ने काटा हैं उस जगह पर हाथ फेर दें,उसका विष उतर जायेगा .

===

FOR REMOVING THE POISON OF POISNOUS CREATURES LIKE SCORPION

One can find persons everywhere who can remove poison from bites of snakes and scorpion etc. On the other hand, highly educated person see all this with suspicion and is not willing to believe it.But mantra shastra does not rest on anybody's trust. However when he sees diseased person getting cured by it, he is also amazed.

Now for every prayog 1 lakh or 1.25 lakh mantra chanting is not necessary. There are such prayogs which can be accomplished automatically by chanting them in very small number and doing little bit hawan on any festival.

SWARN RAHSYAM -12

वाम-तंत्र में रक्त बिंदु और श्वेत बिंदु को सम्मिलित कर कई अद्भुत शक्तियों को प्राप्त किया जा सकता है पर ये भी सत्य है की ये साधनाएं अत्यंत ही गुप्त हैं और गुरुगम्य ही रखी गयी हैं.

ऐसा क्यों भला?????????????? मैंने पूछा............

क्यूंकि लोगो को वाम-तंत्र की सही परिभाषा ही नहीं पता है तो ऐसे में वे उन गोपनीय साधनाओ को कैसे जाने के अधिकारी हो सकते हैं .... वाम मांर्ग का नाम आते ही ऐसे नाक सिकोड़ते हैं जैसे किसी घृणित वस्तु को देख या छू लिया हो . जबकि वाम मार्ग का मतलब ही है शक्ति प्राप्ति का मार्ग .

हाँ इस मार्ग में दासत्व का भाव निषेध है, ये मार्ग तंत्र शास्त्र में सिंह मार्ग भी कहलाता है. सम्मान, ऐश्वर्य , निर्जरा देह और अनंत शक्तियां सहज ही तो प्राप्त हो जाती हैं इस मार्ग का अनुसरण करने से .

मैंने कहा की क्या ये मार्ग सामान्य साधकों के लिए नहीं है ???????????

नहीं ......बिलकुल नहीं .... क्योंकि जिसका अपने चित्त पर नियंत्रण ही न हो ....जिसमे पौरुषता का आभाव हो वो कदापि इस मार्ग पर नहीं चल सकता .

सामान्य व्यक्ति बिंदु स्खलन को चरम सुख या आनंद प्राप्ति का कारण मानता है, पर सिंह मार्ग का साधक बिंदुउत्थान को चरम सुख ही नहीं अपितु परमानन्द का कारक मानता है. इस मार्ग पर एक ही उक्ति का अनुसरण करना होता है की " जो भी करो पूर्ण विवेक के साथ करो" आप खुद ही सोचो की सहवास तो हो रहा है पर स्खलन ध्येय ही नहीं है . बल्कि उस उर्जा योग के द्वारा अपने सप्त शरीर को पूर्ण चैतन्य बना लिया जाता है. क्या ये सामान्य साधक के लिए सहज है!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!

और आपको क्या लगता है की कीमिया क्या है?????? उन्होंने पूछा .

फिर स्वयं ही उत्तर देते हुए कहने लगे की सदगुरुदेव ने इस रहस्य को बहुत ही सूक्ष्मता के साथ स्पष्ट करते हुए बताया था की" **कीमिया का अर्थ निम्न धातुओं को उच्च या मूल्यवान धातुओं में परिवर्तन मात्र नहीं है ना ही शरीर को निर्जरा या रोगमुक्त करना कीमिया कहलाता है .... ये परिभाषाएं ही गलत हैं . नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा में पूरी तरह परिवर्तित कर देना ही कीमिया कहलाता है". क्योंकि जब नकारात्मक का पूर्णरूपेण परिवर्तन सकारात्मक में हो जाता है तो जो बचता है हमेशा वो बहुमूल्य ही होता है.**

लोग बरसो बरस लगा देते हैं स्वर्ण का निर्माण करने में या ताम्बे, चांदी, सीसे, रंगे ,पारद को स्वर्ण में परिवर्तित कर देने में ..... पर क्या वे ये जानते हैं की इस क्रिया के मूल में कौन सा रहस्य कार्य करता है . नहीं वे ये नहीं जानते हैं , यदि वे जानते होते तो उनका नाम भी उन सिद्धों में सामिल होता जिन्होंने पारद या रस का अनुसन्धान या साधना कर परम पद को पा लिया है.

जिस रहस्य की कड़ियाँ मेरे सामने खुल रही थी उन्हें समेटते हुए मैंने अपनी जिज्ञासा उन महानुभाव के सामने रखी की 'वो क्या रहस्य है जो धात्विक या आंतरिक कीमिया के मूल में है, जिससे सृजन की क्रिया संपन्न होती है'.

सूक्ष्मता के साथ जब हम पदार्थों या आत्मिक शक्तियों का अवलोकन कर उनमे छुपी हुयी सकारात्मक ऊर्जा को पहचान कर उनके सदुपयोग की कला का विकास कर लेना ही कीमिया के गूढ़ रहस्य है जब ऐसी योग्यता हम प्राप्त कर लेते हैं , तब हमें ये सहज ही ज्ञात हो जाता है की किस पदार्थ या तत्व का कब और कैसे कहाँ पर प्रयोग करना है. मैंने कहा ना की विवेक पूर्ण किया गया कार्य ही यश और ऐश्वर्य की प्राप्ति कराता है . सिद्धि ऐसे ही व्यक्ति या साधक की अनुगामी होती है .

बगैर गुरु या शास्त्र का आश्रय लिए जो भी इस मार्ग पर बढ़ता है वो असफल ही होता है .....मार्गदर्शन में किया गया सतत अभ्यास सफलता देता ही है . मैं धातुवाद के लिए यहाँ कुछ बातें बताना चाहूँगा की...

(एक लेख में उन रहस्यों का वर्णन अत्यधिक दुष्कर कार्य है, और उन सूत्रों को टुकड़ों में देना लेख के साथ अन्याय भीहोगा .अतः अगली कड़ी में रक्त बिंदु, श्वेत बिंदु द्वारा धातुपरिवर्तन के जो सूत्र मुझे महानुभाव द्वारा बताये गए थे उनका स्पष्टीकरण आपके समक्ष मैं शीघ्र ही करूँगा ताकि .आप स्वयं ही देखें की सिद्धाश्रम परंपरा प्रदान कर सदगुरुदेव ने अनमोल कृपा वृष्टि हम सभी पकी है. कितनी उदारता से उन्होंने सभी कुछ तो हमारे समक्ष रख दिया , अब हम उनका लाभ न ले पाए तो दोषी कौन है??????????)

==

By including Rakt bindu and shwet bindu in the Waam Tantra so many wonderful powers can be achieved.But this is also true that these Sadhnas are very secretful and Gurugamya (under guru's guidence)

So I asked… Why is it like that??

Because rightfully people are not eligible to know about it as they don't know the exact definition of Waam Tantra.By mere pronouncing the name or instigating it they wring their nose like anything as they have touched something bad thing. As long as I know it is considered as the exact way of achieving power.

Yaa but on this path the servitude is completely banned i.e. prohibittted. Is also has been known as the Path of Lion (Sinha marg) in tantra. Respect, Wealth, indistinguishable body & infinite power is easily availble on this Path..

Did I said that this path is not for common sadhaks????

Yes of course not…because one who cannot control his consious & lack the maniless in him cant step forward on this path.

A common person assumes the ultimate happiness in stumbling(bindu skhalan). But on sinha marg sadhak feels n realize the ultimate happiness in reinvigoration i.e. raising up(Bindu Utthan).

सरल मानसिक जप युक्त लक्ष्मी साधना

EFFECTIVE SARAL mansik jap yukt LAKSHMI PRAYOG

धन धान्य प्रदाता लक्ष्मी प्रयोग अब इसे एक बार तो करके देखिये

न केबल आधुनिक युग मे बल्कि प्राचीन काल मे भी लक्ष्मी तत्व की महत्वता रही ही हैं और हमारे प्राचीन ग्रंथ इस बात से ,अनेको उद्धरणों से भरे पड़े हैं.जीवन के आवश्यक चार पुरुषार्थ मे से इसका स्थान दूसरा हैं .यही इसकी महत्वता को प्रदर्शित करता हैं .

हमारे द्वारा आपके सामने अनेको साधनाए सामने प्रस्तुत किये जाते हैं जिनमे से अनेको अति सरल भी हैं और हमने आपके सामने कई कई लक्ष्मी साधनाए भी रखी हैं. इस बार इस दुर्लभ साधना को भी रख रहे हैं , सदगुरुदेव जी ने कहा हैं कि बीज मंत्रो की अपनी ही एक शक्ति होती हैं.

क्योंकि मंत्रो के साधरणतः निर्माण मे कोई न कोई बीज मंत्र का उपयोग हुआ ही रहता हैं .इसलिए बीज मंत्र को कभी भी कम करके नही देखा जाना चाहिए .क्योंकि एक छोटे से बीज मे एक पूरा विशाल वृक्ष छिपा रहता हैं .

इस बार हम आपके सामने जिस साधना विधान को रख रहे हैं उसके बारे मे सदगुरुदेव जी लिखते हैं कि इसका चलते फिरते मानसिक जप किया जाना हैं और और ऐसा करते रहने से कुछ समय मे ही आप इस मंत्र की अनुकूलता पाने लगते हैं .क्योंकि मानसिक जप करने पर शुद्धि अशुद्धि वाले नियमों का बंधन भी ढीला पद जाता हैं और आप पैदल चलते चलते उठते बैठते इस मंत्र का जप कर सकते हैं .

और वेसे भी हर साधक और साधिका को अगर वह गुरू साधना यदि लगातार कर रहा हैं तो साथ ही साथ लक्ष्मी मंत्र और गणेश मंत्र को भी दैनिक पूजा मे स्थान देना ही चाहिए .क्योंकि लक्ष्मी तत्व तो एक अनिवार्य अंग हैं इस जीवन को सुचारू रूप से गतिशील करने मे.

इस मंत्र के साथ कोई और विधान नही हीं हैं बस मानसिक रूप से जब समय मिले आपको इस मंत्र को करते रहना हैं और आप इस मंत्र जप के परिणाम से भी आश्चर्य चकित हो जायेंगे अगर आप सदगुरुदेव और इस मन्त्र और अपने प्रति पूर्ण विश्वास रखते हैं तो .

मंत्र:

==

Easy Mental Jap included Laxmi Sadhna

Not only in Modern era but also in ancient era **Laxmi Tatva** kept a different importance in itself. And in our ancient texts displays many examples of it. In four Manliness of life 'Arth' it is on second rank. This itself shows a great importance of it.

Many sadhnas are presented by us to you from which many process are easy and we have presented many laksmi Sadhnas also. This time we are presenting this rare sadhna infront of you. Sadgurudev ji said, Beej Mantras have their own power, because generally in formation of mantras any of beej mantra is used in creation. Therefore beej mantra should not be underestimated as this is also a known fact that a small beej i.e. seed contain a huge tree in it..

This time whatever sadhnas we have presented in front of you, about whom Sadgurudev said once, this mantra Jap could be done any time in and by continuous chanting you get compatibility of this mantra.

because mental chanting doesn't get affect by external pure impure factors. While walking, sitting roaming any time this mantra can be chanted.

And by the way each sadhak and Sadhika, who performs Guru Sadhna on daily basis, should include lakshmi mantra and Ganesh mantra along in daily worshipping also. As Lakshmi tatva is the most important part of smooth movement of materialistic life.

There is no other process along with this mantra. Just mentally whenever you can chant this mantra just do it and then you will get surprise from the results, only if you believe on Sadgurudev, yourself and towards this mantra.

Mantra – Shreem

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

इनको एक बहुत ही सरल साधना भी कहा जाता हैं .यह हर बार सफल होंगे ऐसा तो नही कहा जा सकता हैं पर सफलता का प्रतिशत बहुत अधिक रहा हैं फिर जीवन की हर् समस्या के लिए..हर बार बृहद बृहद साधनाए करना तो उचित सा नही दिखाई पड़ता तो ऐसे समय कई कई बार ये सरल से प्रयोग जिन्हें टोटके भी कहा जाता हैं बहुत असर दायक सफल रहे हैं तो..

1. भगवती लक्ष्मी के चित्र के सामने ९ बत्तियाओ वाला दिया/दीपक जलाये यह धन लाभ की स्थिति बनाता हैं .
2. जीवन मे कठिनाईयां यदि बहुत बढ़ गयी हो तो जिस पानी से आप स्नान कर रहे हो उसमे थोड़े से काले तिल डाल ले फिर स्नान करें अनुकूलता प्राप्त होगी .

3. जीवन की अनेको समस्याए जो लगातार सामने आती रहती हैं, उसके निराकरण के लिए व्यक्ति यहाँ वहां भागता रहता हैं पर यदि किसी भी अमावस्या को किसी भी गरीब व्यक्ति को भोजन कराएं और उसे वस्त्र और दक्षिणा दे तो उसके पितृ वर्ग प्रसन्न होते हैं और उनकी प्रसन्नता पाने से आपके जीवन के कार्य सफल होना प्रारंभ हो जायेंगे.

4. कुछ ऐसी ही स्थिति हम सभी के कुल देव या कुलदेवी के बारे मे हैं साधारणतः सिर्फ कुछ लोगों को छोड़ दें तो त्यौहार के अलावा उनकी याद भी कोई नही करता ,पर किसी भी काम पर जाने से पहले यदि विधिवत उनकी पूजन हो तो क्यों नही उनका आशीर्वाद आपकी सफलता का मार्ग और सरल कर देगा.

5. छत पर और ईशान दिशा मे काम मे न आने वाली वस्तुए नही रखना चाहिये क्योंकि ईशान दिशा का बहुत आधिक महत्त्व हैं ,पर रखना ही पड़ जाए तो उसे दक्षिण दिशा की ओर रखना चाहिए ,ऐसा करने से से वाधाए कम होगी और लाभ की अवस्था बनने लगेगी.

6. घर की सुख शांति बनाए रखने के लिए काले कुत्ते को जो भगवान भैरव का वाहन माना जाता हैं उसे सरसों के तेल मे लगी रोटी और उसमे थोडा सा काली उडद की दाल मिलाकर खिलाए तो बहुत अनुकूलता होगी पर यह शनिवार को करना कहीं जयादा लाभदायक हैं.

7. ठीक ऐसा ही एक उपाय सदगुरुदेव जी ने बताया हैं कि मंगलवार को बंदरों को चने खिलाना ,ऐसा करने से भी घर मे सुख शांती बनी रहती हैं ,

8. यदि आप अपने विस्तर मे इस तरह से शयन करते हैं कि आपका सिर पूर्व दिशा की ओर और आपके पैर पश्चिम दिशा कि ओर रहते हो तो आध्यत्मिक अनुकूलता पाने के लिए यह अनुकूल उपाय होगा.

9. ठीक इसी तरह सिर यदि दक्षिणमे और उत्तर दिशा मे पैर कर के सोने से धन लाभ की स्थिति बनती हैं .पर इसके ठीक उलटे सोने से मानसिक चिंताए कहीं धिक होने लगती हैं .

10. घर से जब बाहर जाया जा रहा हो तब घर कि कोई भी महिला एक मुठी भर काले उडद या राई को उस व्यक्ति के सिर पर तीन बार घुमाकर जमीन पर डाल दे , तो जिस कार्य के लिए जाया जा रहा हैं उसमे सफलता मिलना प्रारंभ हो जाती हैं .

===

Totkas / Empiricism

1. Enlightening of 9 baati lamp in front of Bhagvati Laxmi image gives you wealth benefits.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

आयुर्वेद तो मानव जीवन के लिए वरदान हैं .पर इस वरदान का प्रयोग या जानकारी बहुत कम ही हुआ हैं . अगर इसके कुछ सरल सरल बाते भी इस्तेमाल की जाए तो भी आप पाएंगे की आपकी सौदर्यता मे कुछ ओर निखार तो आएगा ही .तो क्यों न कुछ बेहद ही सरल उपाय आपके लिए एक बार फिर ..

आयुर्वेद की महत्वता तो पूरा विश्व मानता हैं पर यह विज्ञानं भी आज अपने खोये हुये गौरव को पाने के लिए संघर्ष रत हैं , एक से एक अद्वितीय ग्रन्थ इस परम विज्ञानं के रहे हैं जो आज काल कवलित होते जा रहे हैं ,पर फिर भी जो अभी भी उपलब्ध हैं वह भी संजो के रखना चाहिए .निश्चय ही गंभीर रोगों मे उचित चिकित्सीय सलाह एक अनिवार्य अंग हैं उसे नाकारा नही जाना चाहिए ,और इस बात को गंभीरता से भी लेना चहिये ,पर कुछ सरल सरल सी बातों को हम भी अपने दैनिक जीवन मे परख सकते हैं .

1. शहद को कभी भी घी या तेल की बराबर मात्रा के साथ नही लेना चहिये ठीक इसी तरह से उसे गरम पानी या गरम दूध के साथ भी नही लेना चहिये.

2. आज के समय मे कमर दर्द एक आम सी बात हैं , लंबे समय तक लगातार सही ढंग से न बैठने पर यह हो जाना एक मामूली सी बात हैं .पर इस दर्द की अधिकता बहुत ही समस्या कारक हैं इससे से कैसे बचा जाए, कमर दर्द मे तारपीन के तेल की मालिश बहुत ही गुण कारी हैं.

3. लहसुन भी एक तेज एंटी सेप्टिक का काम करता हैं और जब कोई उपाय न हो तब इसे पानी मे पीस कर लगाने से घाव मे कीड़े आदि नही बनने देता हैं.

4. हल्दी तो बहुत गुणकारी मानी गयी हैं और इसके उपयोग से कौन न वाकिफ होगा .इसे बहुत वारिक पीस ले और गाय के दूध मे मिला ले और इससे चेहरे की हलकी हलकी मालिश करें और बाद मे हलके गुनगुने पानी से अपना चेहरा पौंछ ले, आप स्वयं अपना चेहरा देख कर आश्चर्य चकित हो जायेंगे.

5. फिटकरी और लौंग के गुण से आज सभी परिचित हैं इसके बराबर मात्र मे मिला ले और दाँत पर मले यह दांत दर्द के लिए बहुत गुणकारी हैं.

6. छाले हो जाने पर छोटी इलायची को बहुत महीन चूर्ण बना ले और उसे शहद के साथ मिलाकर लगाये , आराम होगा.

7. दाँतों मे पायरिया रोग होने पर यदि उचित लगे तो शहद की मालिश दाँतों पर करें और फिर गुनगुने पानीसे कुल्ला कर ले ,यह लाभकारी हैं.

8. लहसुन की एक कच्ची कलि भोजन के साथ खाना चाहिए यह लाभदायक हैं.

9. भोजन मे प्याज भी लेना चहिये खासकर सलाद आदि मे अगर कोई विशेष नियमों की रोक न हो तो ,यह भी स्वास्थ्य के लिए गुणकारी हैं.

10. त्रिफला चूर्ण को पानी के साथ रात को सोते समय लेने से कब्ज आदि की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता हैं.

==

Ayurveda for you..

Entire universe venerate the importance Ayurveda, even this science is also trying hard to reestablish its prestige. More than a unique texts of this science are been killed in today's date, but still whatever is available todays must be treasured and preserved. Definitely in severe disease the appropriate remedial measures play a significant role. And one should take this point on serious note. But some easy points can also be assay in daily routine life.

तंत्र कौमुदी

इस्लामिक तंत्र एवं वानस्पतिक तंत्र महाविशेषांक

Thirteenth Issue – November 2012

Tantra kaumudi

Name of the Articles

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

SADGURUDEV - PRASANG

एक बार मुझे पूज्य सदगुरुदेव जी के साथ मानसरोवर कैलाश की यात्रा करने का अवसर मिला था.उस समय केबल मै अकेला ही उनके साथ था.जब हम मानसरोवर की पूरी परिक्रमा कैलाश पर्वत की ओर बढ़ रहे थे तभी सदगुरुदेव जी ने बात चित के प्रसंग मे कहा "काल प्रवाह अनत होता हैं.सकड़ों वर्षों की अवधि को एक क्षण मे समेटा जा सकता हैं.और एक क्षण को सैकड़ों वर्षों मे विस्तृत किया जा सकता हैं .

सदगुरुदेव एक सुंदर सी चट्टान पर बैठ गए थे,मैं भी उनके श्री चरणों मे बैठ गया था और उनके चरणों को अपनी गोदी मे लेकर दवा रहा था.मैंने उत्तर दिया "क्या सौ वर्षो को एक क्षण मे समेटा जा सकता हैं?" उन्होंने उत्तर दिया क्या तुझे संदेह हैं? अभी तक सही तरीके से तुझे काल ज्ञान हो ही नही पाया हैं.जिस दिन काल पर विजय प्राप्त हो जायेगी उस समय विश्व मे कुछ भी दुर्लभ नही रहेगा."

मेरीआखों मे संशय का भाव था.इसे सदगुरुदेव जी ने पहचान लिया बोले "तू मेरे पैर दवाना छोड़कर इधर ऊपर आ और चट्टान के इस तरफ आ कर बैठ जा."

सदगुरुदेव जी के बराबर बैठना कुछ उचित सा नही लगा पर फिर भी उनकी आज्ञा थी अतः अत्याधिक विनम्रता और संकोच से मैं चट्टान पर चढकर उनके बताये हुये स्थान पर बैठ गया.उन्होंने मुझसे भृकुटी मध्य ध्यान लगाने के लिए कहा था .और फिर फिर अपने दाहिने हाथ से मेरे सहस्त्रधार को थपथपाकर दोनों भौहों के बीच अंगूठे से जोरों से मसल दिया

इतना तो मुझे आभास था पर इसके बाद क्या हुआ इसका मुझे कुछ भी पता नही चला,पर जब मिएँ आखें खोली तो ऐसा लगा की जैसे समय का एक बहुत बड़ा हिस्सा व्यतीत हो चुका हो.सामने सदगुरुदेव मुस्कराहट के साथ बैठे हुये थे उनके पास चार छः सन्यासी भी बैठे हुये दिखाई दे रहे थे जो अत्यंत वृद्ध थे और उनके सिर की सफ़ेद जताएं नीचे की ओर झूल रही थी.

जब मैंने आखें बंद की तो सद्गुरूदेव जी तो इस शिला पर अकेले ही थे फिर ये सन्यासी यहाँपर कहाँ से आगये? जब मैंने अपने शरीर पर नज़र डाली तो देखा कि मेरे सिर पर लंबी लम्बी जटाएं हैं और वे पीछे और आगे की ओर जमीन लटक रही हैं,मेरा सारा चेरा दाढ़ी ओर मूंछ से भरा हुआ सा हैं.नाख़ून अत्यधिक लंबे हो गए थे जिसे मैं बराबर देख पा रहा था.

यह सब क्या हो गया और कैसे हो गया ? कुछ समझ नही पा रहा था . सदगुरुदेव जी ने कहा बताओ तुमने कितनी देर की समाधि लगाई थी "

मैंने हाथ जोड़कर उत्तर दिया "मुझे तो ऐसा लाग रहा हैं की दो चार मिनिट की समाधी लगी हैं परन्तु मेरे सिर के ये सफ़ेद बाल, ये लंबी लंबी जटाएं,मेरे चेहरे पर उगी लंबी दाढ़ी और बढे नाख़ून तो कुछ और ही बात कह रहे हैं."

सदगुरुदेव जी ने कहा तुम्हे समाधि लगाए सत्तर वर्ष व्यतीत हो चुके हैं.यह समाधि तुम्हारी सत्तर वर्ष की थी तभी तुम्हारे बाल इतने लंबे हो गए हैं और नाख़ून बढ़ गए हैं.मैं तुम्हारे उसी प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ के यद्दपि सांसारिक दृष्टी से सत्तर वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और उसका प्रभाव तुम्हारे शरीर पर भी पड़ा हैं,परन्तु यह तुम्हे दो तीन मिनिट से ज्यादा नही लगा होगा.या यूँ कहूँ कि पुरे सत्तर वर्ष दो मिनिट मे ही सीमित कर रह गए हैं"

मैं उनके श्री चरणों मे गिर पड़ा.उनका वरद हस्त मेरे सिर पर था और मेरे का उत्तर मुझे प्रमाण के साथ मिल गया था.इसके बाद मैंने और उन उपस्थित सन्यासियों ने सदगुरुदेव जी के साथ पुरे कैलास पर्वत कि परिक्रमा की और फिर मानसरोवर पुनः आकर कौशानी के रास्ते से हम लौटे. ....मंत्र तन्त्र यन्त्र विज्ञानं से साभार सहित

सर्व हितकारी सरल गणेश साधना

SHRI ganpati PRAYOG

भगवान गणपति के वरदायक स्वरुप से सम्बंधित एक सरल साधना

भगवान के इस स्वरुप को जो साक्षात् ब्रम्हमय हैं, जिसके वरदायक स्वरुप की तो हर साधक को अपने जीवन मे अपेक्षा रहती हैं,उनका कोई न कोई स्वरुप तो हर मार्ग की साधना मे होगा ही फिर चाहे वाम मार्गी हो या शमशान मार्ग की पद्धिति की साधना हो या उग्र साधना हो या सौम्य साधना ही क्यों न हो.सभी को उनके विघ्नहर्ता स्वरुप की आवश्यकता होती हैं.उसके बिना कैसे साधना मे सफलता संभव हो .और यदि उनकी उपेक्षा की गयी तो फिर विघ्नकर्ता स्वरुप का असर भी देखना पड़ सकता हैं.

हम सभी इस बात से सहमत हैं कि भगवान गणेशके वरदायक आशीर्वाद से ही साधना मे सफल होती हैं,और यह भी जो अन्य कोई भी साधना हमें प्रदान कर सकती हैं वह केबल गणपति स्वरुप की साधना से भी संभव हैं,हालाकि साधक कभी भी इस साधनाकी गरिमा को समझते नही हैं, वस उसे एक प्रक्रिया मान कर ही चल देते हैं.यह सही नही हैं.जबकि एक पूरा मार्ग तो भगवान के स्वरुप पर आधारित हैं, जिसे गाणपत्य सम्प्रदाय कहा जाता हैं .

अतः इस साधना मे भी सभी नियम वही हैं, जो की एक सामान्य गणपति की साधना मे होते हैं अतः पुनः उन्हें लिखना कुछ उचित नही हैं.आप जितना भी हो सके एक माला या अधिक जितना भी जप संभव उतना करते जाए और लाभ पाते जाए .क्योंकि भगवान के गणेश तो सर्व मंगलदायक हैं सर्व सिद्धिप्रदायक हैं तो भला कौन नही उनका आशीर्वाद पाना चाहेगा .

मंत्र:

ॐ गणेश ऋणम् छिन्धि वरेण्यम हुं नमः फट् ||

सिर्फ एक माला प्रतिदिन इस मंत्र का जप जीवन के अनेको ऋणों और दरिद्रता से साधक को मुक्ति प्रदान करवा सकने मे सक्षम हैं यहाँ दरिद्रता और ऋण का अर्थ केबल धन से ही नही बल्कि बृहद अर्थो मे हैं .

===

Ganesh Sadhana

The form of Lord Ganesh resembles the true nature of Supreme Being. Every Sadhak **(Practitioner of occult science)** expect his blessings through his blissful form.His various forms are found in different sect of Tantra, no matter, it comes through Vaam Maarg **(A sect of occult science who gives importance to Shakti Sadhnaa)** or Shamshaan Maarg **(A special sect of occult science in which most of devotions are performed in cremation ground)**, Ugra Sadhnaa **(Fast paced Tantra)** or Somy Sadhnaa **(Soft hand practice of Tantra)**.

Why we need islamik sadhana ? Preliminary Introduction....

एक प्रारंभिक परिचय ...

इन साधनाओ की आवश्यकता ही क्यों हैं ..

भारतीय साधना पद्धिति मे अनेको साधनाए हैं और अनेको मार्ग भी हैं, हर मार्ग की अपनी एक विशेषता हैं जो की किसी अन्य मार्ग से तुलना नही की जा सकती हैं. फिर वह चाहे सौम्य मार्ग हो या उग्र मार्ग हो या दक्षिण मार्ग हो या वाम मार्ग हो.हर मार्ग की साधना पद्धति की अपनी ही एक विशेषता और अपना ही एक अलग निराला तरीका ..पर आखिर इतने मार्ग की आवश्यकता ही क्यों ? वह इसलिए की हर व्यक्ति की संरचना,उसके संस्कार जिस परिस्थिति मे उसे उसका लालन पालन हुआ हैं वह एक दूसरे से भिन्न हैं तो हर चीज को देखने का तरीका और उसे समझने का तरीका और सोच भी भिन्न भिन्न होगी ,जो एक के लिए सही हैं वह दूसरेके लिए उतना सही कैसे हो सकता हैं.?

इसी तरह साधनामार्ग मे कुछ विशिष्ट प्रयोग हैं तो कुछ सरल प्रयोग भी .और सभी की अपनी एक महत्वता भी हैं ,जिस तरह एक बगीचे मे तरह तरह के फूल होते हैं उसी तरह साधना मार्ग मे अलग अलग तरीके की साधनाए का महत्व हैं,हर साधना का अपने आप मे एक अर्थ हैं.जिसे किसी अन्य मार्ग से कमतर नही आँका जा सकता हैं.और साधना को किसी न किसी उदेश्य से ही तो निर्माणित किया गया होगा .ठीक इसी तरह जब बात आती हैं अन्य देशों की तो हर देश मे तंत्र का स्वरुप कुछ अलग अलग सा हैं.तिब्बत मे तंत्र अलग हैं तो अफ्रीका मे उसका स्वरुप अलग हैं.चीन मे अलग हैं तो मलाया मे अलग हैं, जब देश मे उनकी संस्कृति मे विभिन्नता हैं तो निश्चय ही वहाँ पर माने जा रहे तंत्र की अवस्था और स्वरुप मे भी परिवर्तन होगा है .अब यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर हैं की वह उसे किस दृष्टी से देखता हैं.

तो एक ओर स्वरुप सामने आता हैं वह हैं धर्म गत आधार पर भी तंत्र का वर्गीकरण..हमारे इस देश का सौभाग्य रहा हैं की अनेको धर्म की विशेषताओं से हमारी संस्कृति फली फूली हैंइस भारतीयता मे सभी का समावेश हुआ हैं .यह तो प्रसन्नता ही बात हैं हमारे यहाँ जैन तंत्र हैं तो बौद्ध तंत्र भी हैं.हर का अपना ही एक अलग अलग महत्त्व हैं . उसी तरह हमारे यहाँ इस्लामिक तंत्र की महत्वता हैं इस बात को समझ लेना चाहिये की..किसी भी तंत्र का मर्मग्य होना या जानकार होना के लिए उस धर्म ही एक भाग एक साधक को होना पड़े यह कोई अनिवार्य नही हैं .हाँ यह बात अवश्य हैं की उस साधना काल के दौरान उस साधक को जैसा उस साधना मे दिया हैं उसके अनुसार चलना चाहिए यह तो एक आवश्यक प्रक्रिया हैं.इसमें दो धर्मगत चीजे एक साधक नही मिला सकता हैं .

इस्लामिक मंत्रो की साधना मे अनेको लोग कामयाब हुए हैं और यह अपने देश मे फुला फला भी हैंइसकी प्रक्रिया मे पाक साफ़ रहना मतलब शुद्धता खासकर शारीरिक का एक अपना ही महत्त्व हैं, और अद्भुत और एक से एक रहस्यों से भरा हुआ यह इस्लामिक तंत्र साधना क्षेत्र हैं. और जहाँ तक प्रभाव की बात आती हैं तो जीवन की अनेको समस्याओ मे अचूक और सटीकता से प्रभाव होता ही हैं .

इन मंत्रो की साधना सरल हैं पर इसके दुरूपयोग के यह खिलाफ हैं,साधक को एक साफ़ स्वच्छ और उच्च आदर्श वाला जीवन जीना चाहिये.तभी इस तंत्र को सीखने की सार्थकता हैं मानव जीवन मे आई कमियों,शारीरिक,मानसिक और आर्थिक समस्याओं मे इस तंत्र का अचूक उपाय हैं.

इसलिए किसी भी तंत्र को इसलिए हेय दृष्टी से देखना या उस तंत्र की बात न करना उससे घृणा रखना, यह सब इसलिए की धर्म अलग अलग हैं, यह उचित नही हैं .

जीवन मे हर चीज का महत्व हों इसी धारणा के साथ इन इस्लामिक तन्त्रो की उपयोगिता और आवश्यक उच्चता और साधनात्मक नियमो के बार मे आपको आगे के अन्य लेख अवगत करा रहे हैं.

==

Some Specific point about islaamik sadhana ?

इससे सबंधित कुछ अनूठे तथ्य...

इस्लामिक साधनाओ को सम्पन्न करते समय कुछ आवश्यक अनिवार्य तथ्य

हर साधना को सम्पन्न करने के लिए कुछ बातें जो मूलभूत उन साधना वर्ग के लिए होती हैं उन पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक हैं, अन्यथा साधना का असर भी प्राप्त नही हो पाता हैं और जब हम इन साधनाओ की बात करें तब तो सावधानी बहुत आवश्यक हैं. जो हमें हमारे साधनात्मक श्रम का उचित फल भी प्रदान करवाए या उनमे सहयोगी हो.

अब साधको को एक तथ्य अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये भले ही कुछ मूल भूत बाते हर साधना मे एक हो सकती हैं पर जब बात अन्य मार्गो की अन्य धर्मो की साधना की हो तो उस समय अपना अहम एक तरफ रख कर उस साधना के सभी आवश्यक तथ्यों को आत्मसात करना ही चाहिये जो की की जा रही साधना के लिए नैतिक, सामाजिक और देश काल के अनुसार संभव हो.

1. साधना काल में जो सर्व प्रथम अनिवार्य तथ्य है वह यह है की साधक असत्य भाषण का यथा संभव त्याग करे. आज के युग में यह सहज नहीं है, निश्चित रूप से यह एक यथार्थ है. कई भाई बहिन को अपनी साधना को बचाने तथा गुप्त रखने के लिए भी कई लोगो से कई प्रकार की भ्रामक बात कहनी पड़ती है. वैसे सत्य और असत्य के कई पक्ष है तथा यह एक अत्यंत ही वृहद विषय है यहाँ पर इसका अर्थ यह लिया जा सकता है की दूसरों को हानि पहुचाने तथा अपने खुद के अंदर किसी भी रूप में विकार उत्पन्न करे ऐसा भाषण ना किया जाए. जितना ज़रुरी हो उतनी ही बात की जाए. तथा मन वचन और कर्म से जितना ज्यादा इबादत में लगे रहे उतना ही ज्यादा सफलता की सम्भावना रहती है.

2. ब्रह्मचर्य तथा पाक रहना इन साधनाओ में एक आवश्यक तथ्य है. साधना काल में कामक्रीडा में संलग्न होने पर साधना खंडित होती है, इसी प्रकार साधक को वीर्य रक्षा करनी चाहिए. हर बार शौच के बाद स्नान करे तथा लघु शंकाके बाद हाथ पैर को धोना चाहिए.

3. पाक जिन जिन्नात, जानवर के चमड़े से परहेज रखते है ज्यादातर अमल में इन पाक शक्तियों का ही प्रभाव रहता है इस लिए इन साधनाओ के दौरान उत्तम रहता है की चमड़े से बने हुई कोई भी चीज़ का उपयोग यथा संभव ना किया जाए, जेसे की बेल्ट, पर्स, चमड़े के जूते इत्यादि.

4. साधना स्थल शांत होना आवश्यक है. साधना स्थल को पवित्र बनाये रखे, किसी भी प्रकार की गंदगी कचरा इत्यादि नहीं रखना चाहिए. पीर स्वच्छता प्रिय होते है अतः साधना स्थल को रोज पानी से धोना चाहिए या फिर पानी का पोंछा लगाना चाहिए. जिस जगह गन्दगी फैली हुई हो ऐसी जगह पर साधना नहीं करनी चाहिए. खुले गटर के पास या खुले हुये शौचालय के आस पास साधना किसी भी हालत में नहीं करनी चाहिए. व्यक्ति अपने कमरे में यह साधना कर सकता है लेकिन कमरे के अंदर शौचालय न हो. इसके अलावा इस्लामिक तंत्र की सफलता के सन्दर्भ में एक और तथ्य का पालन करना चाहिए की पूरी साधना एक ही जगह या स्थान पर सम्पन्न हो. जिस स्थान का चुनाव किया जाए रोज वहीँ पर साधना करनी चाहिए तथा स्थान को बदलना नहीं चाहिए.

5. इन साधनाओ के दिनों में वैदिक साधना गायत्री साधना महाविद्या साधना या किसी भी दूसरे धर्म से सबंधित साधनाओ को नहीं करना चाहिए जिससे एक नियमित शक्ति का संचार बना रह सके. क्यों की विपरीत शक्तियों की एक साथ साधना करने पर शक्ति संचार का क्रम टूट जाता है तथा साधना में वांछित परिणाम की प्राप्ति नहीं हो पाती.

6. साधनाओ के दिनों में किसी भी फकीर या याचक अगर आपके पास कुछ मांगे तो उसे यथा शक्ति दान ज़रूर करना चाहिए तथा उसे दुत्कारना नहीं चाहिए, मांगने वाले को खाली हाथ नहीं लौटाना चाहिए, सामर्थ्य अनुसार चाहे जितना भी कम क्यूँ न हो दूसरे शब्दों में कहा जाए तो अगर व्यक्ति का सामर्थ्य सिर्फ एक रूपया देने का ही हो तो वह देना चाहिए. ज़रुरी नहीं है की पूरी सम्पति या जितना भी पास हो सब दान कर दिया जाये लेकिन निस्वार्थ भाव से कुछ न कुछ देना अच्छा रहता है.

7. स्वच्छ वस्त्रों को धारण करे, वस्त्र रोज यथा संभव धुले हुये ही पहने.

8. प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद कुछ मिष्ठान आदि का वितरण जरुर करें ,इस बात को लोग अक्सर नज़र अंदाज कर जाते हैं .यह भी सफलता के लिए एक आवश्यक बात हैं .

9. साधक को साधना क्रम वीरासन में करना चाहिए, जिस प्रकार नमाज़ पढते वक़्त बैठा जाता है उस प्रकार बैठ कर मंत्रो का जाप करे.

10. इस्लामिक मंत्रो में माला उलटी घुमाई जाती है. इस माला को तसबी या कई जगह तस्बी कहते है. अर्थात घडी की विपरीत दिशा में मनके जाने चाहिए. और जैसे ही सुमेरु आता हैं वैसे ही पलट देना चाहिए .मतलब इसमें भी सुमेरु का उल्लघन नही किया जा सकता हैं .

11. माला को जमीन से स्पर्श नही कराना चाहिए .

12. साधना में इत्र का प्रयोग करना उत्तम रहता है. इत्र को रुई में लगा कर कान पर लगाया जा सकता है या वस्त्रों पर छिड़का जा सकता है. इस्लामिक तंत्र में मुख्य रूप से दो इत्र का ज्यादा उपयोग होता है हीना का इत्र या गुलाब का इत्र. हिना का इत्र सर्वोत्तम है उसका प्रयोग किया जाना चाहिए.

13. जहां पर भी पुष्प का उपयोग किया जाना है वहाँ पर तीव्र गंध युक्त पुष्पों का उपयोग किया जाए.गुलाब तथा चमेली के पुष्प इस द्रष्टि से उत्तम है.

14.अगर कही भी भोग लगाने की बात है तो दूध से बनी हुई मिठाई अर्पित करना चाहिए, सेवैयाँ या दूध की बर्फी भोग के लिए श्रेष्ठ मानी जाती है. सफ़ेद रंग की मिठाई का उपयोग किया जाए तो उत्तम है.

15.जहां तक संभव हो सूती आसन का प्रयोग करना चाहिए

16.यदि संभव हो तो जिस तरह से मुस्लिम भाई टोपी धारण करते हैंउस तरह की टोपी भी साधना काल मे मंत्रा जप के दौरान धारण की जाना चाहिये.

17.एक ओर आवश्यक तथ्य हैं की इस्लामिक साधनाओ को करते समय साधक को तहमत का उपयोग करना चाहिये .और उसे उसी तरह पहिनना चहिये जिस तरह हमारे मुस्लिम भाई नमाज के समय पहिनते हैं .और यह आसानी से सीखा भी जा सकता हैं .

18.अगर कहीं यन्त्र बनाया जा रहा है तो उसके लिए जो भी कलम बताई गई हो उसी कलम से यन्त्र को बनाना चाहिए. अगर कलम यन्त्र का अंकन करते समय टूट जाती है तो अमल अर्थात साधना प्रयोग नहीं करना चाहिए. टूटी कलम को तथा यन्त्र को किसी मज़ार के पास रख दे तथा क्षमा याचना कर लेना चाहिए.

19.जहां पर भी धुप का विधान हो वहाँ पर साधक को लोहबान का धुप प्रज्वलित करना चाहिए, साधना काल में भी धुप जलते रहे तो उत्तम है.

इस्लामिक प्रयोग में कई बार हफ्ते के दिनों के नाम का उल्लेख रहता हैं तो ये नाम इस प्रकार है

इतवार-रविवार
पीर – सोमवार
मंगल – मंगलवार
बुध – बुधवार
जुमेरात – गुरुवार
जुमा – शुक्रवार
शनिचर – शनिवार

==

AAyutAl kursi rAkshA vidhAn prayog

पूर्ण सुरक्षा हेतु एक विधान

आयुतल कुरसी – रक्षा विधान

कोई भी इस्लामिक साधना प्रयोग से पूर्व रक्षा विधान को कर लेना चाहिए जिससे की साधना प्रयोग के मध्य विघ्न उपस्थित न हो. क्योंकि एक साधक को हमेशा पूरी तरह से सुरक्षित हो कर ही साधना मे बैठना चाहिए .और यह बात तो हर साधना के लिए एक आवश्यक बात हैं पर जब साधक इस्लामिक साधना प्रयोग करने का मानस बनाले तो इस विधान को तो उसे करना ही चाहिए .इस हेतु **आयुतल** कुरसी का प्रयोग उत्तम है.

यह प्रयोग साधक किसी भी जुमा अर्थात शुक्रवार को शुरू करे.

साधक स्नान आदि से शुद्ध हो कर सफ़ेद वस्त्र पहिन कर किसी मज़ार या दरगाह पर जाये तथा १०० बार आयुतल कुरसी का जप करे. इसमें किसी भी माला आदि की आवश्यकता नहीं है. साधक को अपना सर खुला नहीं रखना चाहिए, सर पर टोपी पहिन ले या फिर रुमाल बाँध ले.

साधक को यह तीन दिन तक करना चाहिए. समय दिन या रात्रि का कोई भी हो. लेकिन रोज समय एक ही रहे.तीन दिन में ३०० जप होने पर साधक इसका प्रयोग कर सकता है.

मंत्र.

अल्लाहो ला इलाहा इल्ला हु अल हैयुल कैयुम ला ता खुजुहो सी न तुव वला नोम् लहु माफिस समावाते वमा- फिल अरदे मनज़ल लज़ि यश फआ इन दहु इल्ला बेइजनेह या अलमो मा बयना अयदी हीम वमा खल फहुम वला योहाई तुना बे शयईम मीन इलमीही इल्ला बेमाशाआ वसेआ कुरसियो हुस समावाते वल अरदे वला यउदोहु हिफ़जोहोमा वहो वल अली उल अज़ीम

इस प्रकार तीन दिन का प्रयोग पूर्ण होने पर साधक इसका प्रयोग कर सकता है

कोई भी इस्लामिक तंत्र प्रयोग करते समय साधक आसन पर बैठ जाये तथा लोहे की कील से या चाकू से आयुतल कुरसी का तीन बार जप करते हुये, अपने आसन के चारो तरफ एक घेरा बना ले यानी चाकू से या कील को अपने चारो तरफ ज़मीं पर गोल घेरा के रूप में घुमा दे

यह क्रिया करने के बाद ही मूल प्रयोग या साधना को शुरू किया जाये तो साधना प्रयोग में विघ्न उत्पन करने वाली उपरी बाधाएं साधक से दूर रहती है तथा साधक की रक्षा होती है

यह सरलतम पर तीव्र रक्षात्मक प्रयोग तो जीवन की एक धरोहर हैं ,और जब भी इन साधनाओ को करने का मन बने तो इस प्रयोग को कैसे भुला जा सकता हैं.

==

AAYUTAL KURSI- RAKSHA VIDHAAN

Before doing any Islamic sadhna, it is always better to do Raksha Vidhaan (security procedure) so that you do not face any hurdles in middle of sadhna .Sadhak should always sit in sadhna after securing himself.

AAkArshAn hetu isam prayog

अपने व्यक्तित्व को सौंदर्य तत्व युक्त करने हेतु अद्भुत साधना

यह प्रयोग समूह आकर्षण का एक अद्भुत प्रयोग हैसमूह आकर्षण जिस व्यक्ति से बनता हैं वह जीवन के हर क्षेत्र मे सफलता चुटकी मे पा सकता हैं और उन्नति के उच्च सौपान यूँ ही पा सकता हैं,साधरणत : यह प्रयोग करने पर साधक किसी भी जगह पर यदि जाता हैं तो सभी व्यक्ति साधक की तरफ आकर्षित होते है. इस द्रष्टि से साधक अपने घर में, समाज में, अपने कार्य क्षेत्र में व्यापार आदि सभी क्षेत्र में सफलता को प्राप्त कर सकता है. साधक की आँखों में एक विशेष आकर्षण क्षमता आ जाती है जिसे देख कर सामने वाला व्यक्ति या समूह अपने आप ही साधक को श्रेष्ठ मानने लगते है. और आज किसी भी व्यापार मे और फिल्म जगत से लेकर हर जगह अगर ऐसा होता हैं तो साधक की सफलता को कोई भी नही रोक सकता हैं.इस तरह के प्रयोग को हर साधक को अपने जीवन मे उपयोग करना ही चहिये क्योंकि इन प्रयोगों का असर घर पर भी तो होगा ...और अनुकूलता किसे पसंद नही हैं.

यह प्रयोग साधक किसी भी मंगलवार को शुरू करे. समय रात्रि में ९ बजे के बाद का रहे.

साधक रात्री काल में स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण करे. इसके बाद अपने सामने कोई तख़्त पर या बाजोट पर एक दीपक प्रज्वलित करे, यह दीपक तेल का या घी का हो सकता है लेकिन दीपक में हीना का थोडा इत्र डाल देना चाहिए. इसके बाद साधक लोहबान का धुप जलाये.

धुप जलाने के बाद साधक उस दीपक की लौ पर त्राटक करते हुये निम्न मन्त्र का जप करे.

इस प्रयोग में किसी भी माला की आवश्यकता नहीं है. साधक को सिर्फ १ घंटे तक मन्त्र का जप करना है. इस प्रकार ५ दिन तक यह प्रयोग करना चाहिए.

या नुर या जुल जलाले वल इकरम

पांच दिन यह प्रयोग पूर्ण होने पर दीपक को किसी निर्जन स्थान में रख आये इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है.और साधक यदि पूरे मन से इस प्रयोग को करता हैं तो परिणाम स्वयं अनुभव कर सकता हैं.

===

ISM PRAYOG FOR ATTRACTION

This prayog is amazing prayog for attraction of groups/masses. One who can do group attraction procedure, can get success in every field of life very easily and can attain high level of progress. Generally, when sadhak does this prayog and goes to any place, then all the persons are attracted towards sadhak. Thus sadhak can attain success in home, society, work field, business etc. Sadhak’s eyes gets special attraction capability by seeing which other person or group start considering sadhak to be the best. And if such thing happens in any business from film world to everything, no one can stop success of sadhak. Such types of prayog should be utilised by sadhak in his life because these prayogs will have effect on home too….and who does not like favourable conditions.

Sadhak should start this prayog on any Tuesday. It should be done after 9 in the night.

Sadhak should take bath in night and wear white dress. After it, sadhak should light one lamp in front of him on any wooden table or Baajot. This lamp can be of ghee or oil but some Itr of Myrtle (Heena) should be put in lamp. After it sadhak should light Lohbaan dhoop.

Vashikaran prayog

वशीकरण साधना का एक अद्भुत विधान

यह प्रयोग भी अपने आप मे अद्वितीय हैं ,कारण यह हैं की इस्लामिक मंत्रो मे जो तीव्रता होती हैं वह अपने आप मे बेमिसाल हैं, उसकी तुलना ही नही और साधक को तो जहाँ से भी ज्ञान मिले उसे आत्मसात करना ही चाहिए और इस तरह के प्रयोग तो जीवन मे सौदर्य भर देते हैं, जीवन का आधार हैं .और आज के समय मे इन प्रयोगों का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग किया जाना बहुत ही जरुरी हैं क्योंकि इस्लामिक प्रयोगों का किसी के साथ मजाक या खिलवाड़ के लिए या अपनी कुत्सिक मानसिकता के लिए प्रयोग करना किसी भी तरह से उचित नही हैं, प्रारंभ मे सफलता जरुर मिलती हैं पर अंततः साधक को ही भारी कीमत चुकानी पड़ती हैं.और यह तो सभी साधनाओ की बात हैं .

यह व्यक्ति विशेष के लिए वशीकरण प्रयोग है. यह प्रयोग साधक किसी भी जुमा यानी गुरुवार के दिन शुरू करे समय रात्रि में ९ बजे के बाद का रहे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्र को धारण करे. अपने सामने किसी भी सफ़ेद कागज़ पर जिस पर वशीकरण प्रयोग करना हो उस व्यक्ति का नाम लिखे. यह नाम किसी भी कलम से तथा किसी भी स्याही से लिखा जा सकता है. उसके बाद साधक तेल का दीपक लगाये तथा लोहबान का धुप जलाये.

इसके बाद कागज को हाथ में ले कर निम्न मन्त्र को बोल कर उस पर फूंक मारे. इस प्रकार हर एक मंत्र बोल कर साधक कागज़ पर फूंक मारे तथा यह मन्त्र का ३०० बार जप करे.

यह क्रिया साधक को ५ दिन करनी है. तीसरे दिन साधक को कागज में उस व्यक्ति की तस्वीर नज़र आने लगती है जिस पर वशीकरण किया जा रहा है. तथा पांचवे दिन मन्त्र जप के वक्त साधक को सतत मन में चिंतन रखना है की यह व्यक्ति मेरे वश में हो जाये.

मंत्र:

लाइलाहा इलल्लाह

पांचवे दिन प्रयोग पूर्ण होने पर साधक साधक दीपक को किसी निर्जन स्थान में फेंक दे. इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है, साधक को यह प्रयोग किसी भी अनैतिक कार्य के लिए नहीं करना चाहिए.

साधक को स्व विवेक का प्रयोग साधना जगत मे हर स्थान पर करना ही चहिये और एक योग्य साधक की भांती किस जगह किस प्रयोग का उपयोग करना हैं, उसका बहुत सोच कर प्रयोग करें इसी मे साधक का साधकत्व हैं और उसकी गरिमा भी .

==

VASHIKARAN PRAYOG

This prayog is also unparalleled in itself. There lies no comparison to intensity of Islamic mantras and from whosesoever sadhak gets knowledge, sadhak should imbibe it. And such type of prayogs infuses life with beauty; they form the basis of life. And in today's time it is very necessary to use them judiciously because using Islamic prayog for doing fun or frolic with someone or for your contemptible mentality is not right in any way. One may get success in beginning but ultimately sadhak has to pay heavy price for it.And this applies to all sadhnas.

manokamna prayog

एक आश्चर्य जनक अद्भुत गोपनीय साधना

मनोकामना तो जीवन का एक आवश्यक अंग हैं और मनोकामना मे जीवन के सरे पक्ष आ जाते हैं और यह तो जीवन का आधार हैं .इसमें सुयोग्य जीवन साथी से लेकर हर पक्ष फिर वह कहने वाली बात होया न कहने वाली सभी आ जाती हैं .और इसलिए इन प्रयोगों का अपना ही एक महत्त्व हैं इस्लामिक तंत्र प्रयोगों मे इस तरह का प्रयोग प्राप्त होना तो सौभाग्य ही कहा जा सकता हैं.इन प्रयोगों को करें और अपने जीवन को मनोकुल बनाये सुखमय जीवन से आनंदमय जीवन की ओर की यात्रा मे, ऐसे प्रयोग मिलना सदगुरुदेव जिकी कृपा के अतिरिक्त क्या कहा जा सकता हैं.

यह प्रयोग साधक किसी भी दिन शुरू कर सकता है.

साधक को रात्री में ९ बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्र को धारण कर के दीपक तथा लोहबान का धुप लगाना चाहिए.

इसके बाद साधक को तीन बार अपनी मनोकामना मन ही मन बोले तथा निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जाप करे

मन्त्र जप के लिए सफ़ेद हकीक तस्बी या माला का प्रयोग करे.

बिस्मिल्लाहीर रहमानिर रहीम या बदीउल अजायेबे बिल खयेर या बदीओ

इस प्रकार साधक को ७ दिन तक यह प्रयोग करना चाहिए. रोज साधना का समय एक ही रहे इस बात का ध्यान रखना चाहिए तथा बच्चो को या फकीरों को मिठाई अर्पित करनी चाहिए. साधना पूर्ण होने पर साधक किसी कब्र के पास माला या तस्बी को रख दे तथा कब्र के पास एक दीपक जलाये, धुप तथा फुल अर्पित कर मनोकामना पूर्ति के लिए प्रार्थना करे. इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है.और फिर परिणाम पा कर आपका जीवन और भी सुखमय हो पायेगा.

===

MANOKAAMNA POORTI PRAYOG

Desire is an essential element of life. It includes all aspects of life within it and it forms the base of life. From suitable life-partner to every aspect whether it is worth telling or not, all are included in it.Therefore these prayogs have the own importance. It can be called our good-fortune to find such type of prayogs in Islamic Tantra prayogs. Do these prayogs and make your life suitable. Getting such prayog in our journey from happy life to blissful life is nothing but only divine blessing and grace of Sadgurudev.

Sadhak can start this prayog on any day.

Sadhak should take bath after 9 in the night and wear white dress. He should light lamp and Lohbaan dhoop.

After that sadhak should mentally say his desire 3 times and chant 11 rounds of below mantra.

Sadhak should use white Hakik rosary (Tasbee) for chanting mantra.

rojgaar prapti hetu prayog

जीवन की आधार भूत आवश्यकता हेतु

जीवन मे शिक्षा प्राप्ति के बाद .एक आवश्यक पड़ाव आता हैं जब साधक को जीवन यापन और जीवन मे उत्तरोत्तर उन्नति करने के लिए,और एक सुद्रढ़ जीवन की आधार शिला हेतु धन की आवश्यकता तो पड़ती ही हैंपर आज जहाँ रोजगार के इतने अवसर उपलब्ध हो रहे हैं पर सुचना का अभाव या सही समय पर सही निर्णय न ले पाना या अपने लिए एक उचित जॉब का चुनाव कर पाना आज भी उतना ही कठिन हैं, जितना की पहले रहा हैं .और साधनात्मक प्रयोग व्यक्ति के लिए सौभाग्य के अनेको अवसर ला देते हैं. एक रोजगार विहीन जीवन कितना कष्ट दायक हैं, वह तो एक भुक्त भोगी ही जानता हैं और उसे लोग सलाहे तो हज़ार देदेते हैं,पर उसे सलाह की नही अवसर की चाह रहती हैं,और इसी को यह प्रयोग संभव बनाता हैं. प्रयोग व्यक्ति की रोज़गार तथा धन सबंधित नूतन स्त्रोत प्राप्त करने के लिए यह उत्तम प्रयोग है

इस प्रयोग को किसी भी गुरुवार की रात्रि या दिन के कोई भी समय में शुरू किया जा सकता है लेकिन रोज समय एक ही रहे इस बात का ख्याल रखे.

स्नान आदि से निवृत हो, स्वेत वस्त्र धारण कर के साधक निम्न मन्त्र की २१ माला मंत्र जाप करे. साधक को धुप और दीप प्रज्वलित करना चाहिए तथा मंत्र जाप के लिए साधक को सफ़ेद हकीक माला का प्रयोग करना चाहिए.

या मुफ़ततेह फततेह बिल खयेर

यह प्रयोग साधक ३ दिन तक करे. तीन दिन बार साधक माला को किसी मज़ार पर अर्पित कर दे तथा यथा संभव दान गरीबो को कर दे.

===

ROjGAAR PRAPTI PRAYOG (PRAYOG TO GET JOB)

After attaining education, an essential phase comes where sadhak in order to meet his both hands and for successive progress in life and for forming a concrete base of his life, needs money. Though there are now available lots of employment opportunities but due to lack of information or not taking decision at right time or selecting appropriate job for one's own self is as hard as it was in earlier times. Sadhna prayogs gives lot of opportunities of good luck to person. How tough is to lead an unemployed life, only afflicted person knows the pain. Many people give him suggestions but what he needs is opportunity not suggestions. This prayog makes this thing possible. It is best prayog for person to get employment or attainment of new sources of wealth.

Sadhak should start this prayog on any Thursday's day or night. But it has to be kept in mind that time should remain the same daily.Take bath, wear white dress and then sadhak should chant 21 rounds of the below mantra. Sadhak should light dhoop and lamp and use white Hakik rosary forchanting.

YAA MUFATTEH FATTEH BIL KHAYER

Sadhak should do this prayog for 3 days. After 3 days, sadhak should offer the rosary at any tomb/shrine and donate to poor person as per your capacity.

तंत्र प्रयोग हेतु किस तरह से जड़ी बूटी आदि तांत्रिक सामग्री को घर पर ले जाए ..

Process to bring tantraik harbal in home

सफल जीवन के लिए एक आवश्यक प्रयोग

तंत्र प्रयोग हेतु किस तरह से जड़ी बूटी आदि तांत्रिक सामग्री को घर पर ले जाए.

अगर तंत्र एक सुव्यवस्थिततरीका हैं या इसे सिस्टम भी कहा गया हैं तो इसमें प्रयुक्त होने वाली सभी प्रक्रिया भी एक निश्चित क्रम से होती हैं,अगर व्यक्ति को इनका ज्ञान नही हैं तो इच्छित फल भी प्राप्त नही हो सकता हैं या उस फल मे नुयन्ता आना स्वाभाविक हैं.जब तथ्य वानस्पतिक तंत्र से सबंधित हो तब एक प्रश्न सामनेआता हैं की इसमें लगने वाली या किसी भी प्रयोग मे लगने वाली वनस्पति को कैसे घर पर लाया जाए .

प्रथम तो यह मानना होगा की सारा विश्व मे एक वही प्राण ऊर्जा गतिमान हैं किसी मे कम तो किसी मे ज्यादा पर हैं तो मूल रूप मे उर्जा ही..... तो यह वनस्पति भी जीवित हुयी.इस हेतु जब भी साधक किसी भी वनस्पति को लेने जाए तो सबसे पहले तो यह देखें की वह स्वयं साफ़ स्वच्छ होस्वच्छ वस्त्र धारण किये हो और घर से प्रातः कालीन पूजन आदि कर अपने गुरू जन से मन ही मन प्रार्थना करके ही निकले की उसे उसके द्वारा चाही गयी गयी वनस्पति मिल जाए .

और जब उसे वह पौधा या पेड़ या लता जो भी हो दिख जाए तो उसके पास किसी भी शुभ दिन या शुभ महुर्त मे जाकर भक्ति भाव से श्रद्धा युक्त हो कर उसे प्रणाम करें और उसका पूजन करें और मन ही मन पूरे आदर के साथ उन्हें अपने घर पर चलने का निमंत्रण दे.

इस कार्य मे जिस मंत्रका उपयोग होता हैं वह निम्नानुसार हैं

ओम नमस्तेऽमृत सम्पभुते बल वीर्य विवर्धिनी |

बल मायुश्च में देहि पापन्मे त्राहि दूरतः ||

इसके बाद सामान्य जो पूजन आपसे बने अपने सदगुरुदेव का मानसिक ध्यान करते हुये करें.

1. फिर उस वृक्ष या पौधे के सामने प्रणाम करते हुये निवेदन करें यह स्पस्ट उच्चारण मे होना चाहिए" हे (उस पेड़ या लाता या जड़ी का नाम कहें) मैं आपको अपने घर मे आमंत्रित कर इस प्रयोग (प्रयोग का नाम) हेतु उपयोग करना चाहता हूँ , मैं कल प्रातः काल आपको अपने घर ले जाने के लिए आऊंगा ,आप मेरा इच्छित कार्य सम्पन्न करें मेरे द्वारा कीजाने वाली प्रक्रिया को सफल बनाये "
2. और अगले दिन आपको प्रात:काल आकार यहाँ पर भी आपको स्वच्छ वस्त्र धारण कर ,सामान्य गुरू पूजन करके की प्रस्थान करें .
3. कोशिश करें की किसी धातु का उपकरण प्रयोग न करें किसी साफ़ लकड़ी से ही उस जड़ी या लता को प्राप्त करें अर्थात लकड़ी का ही प्रयोग करें .
4. दोनों दिन की प्रक्रिया मे न तो घर से चलते समय और न ही वापिस आते समय किसी भी व्यक्ति से बात करें.
5. और न ही पीछे मुड के देखें .
6. एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु यह हैं की जब भी आपको किसी भी वनस्पति की आवश्यकता आन पड़े तब आपको पहले दिन की क्रिया उस दिन करना चहिये जिसके ठीक अगले दिन आपको कोई शुभ महूर्त मिले .या इसके ऐसे समझिए की किसी शुभ महूर्त वाले दिन के ठीक एक दिन पहले आपको उस जड़ी या वृक्ष को आमत्रित करना हैं .ध्यान रहे आमंत्रित करना हैं.

7. और जब उस जड़ी या फल को अपने घर मे ले जाए तो अगर वह बहुत गीली सी हैं तो उसे सुखने दें अर्थात धूप मे सुखा ले .फल आदि के साथ यह धूप मे सुखाने के नियम नही लगेंगे अगर आपको कोई शुभ महूर्त नही मिल पा रहा हो ..सामान्यतः हर महीने एक बार पुष्य नक्षत्र तो आता ही हैं,इसका प्रयोग करें या सदगुरुदेव द्वारा रचित **"ज्योतिष और काल निर्णय "**नामक विख्यात पुस्तक जो सभी साधको के लिए एक अनिवार्य सा ग्रन्थ हैं उसके अनुसार किसी भी महेंद्र काल या यह संभव न हो रहा हो तो किसी भी अमृत काल का प्रयोग करें.
8. क्योंकि सही समय पर किया गया कार्य ना केबल सफलता प्रदान करने की दिशा मे सहायक होता हैं बल्कि सफलता का प्रतिशत भी कई कई गुणा बढ़ा देता हैं
9. सामन्य से नियम हैं इनका पालन बहुत आसानी से किया जा सकता हैं .
10. हाँ जब बात किसी पंसारी के यहाँ से यह जड़ी आदि लेना हो तो सीधे केबल किसी भी शुभ दिनया शुभ महूर्त मे उसके दूकान से यहपदार्थ ले आये और घर पर लाकर उसको साफ़ स्वच्छ पानी से धोकर स्वच्छ कर ले और सदगुरुदेव पूजन और गणपति पूजन के बाद उसको सीधेअपने कार्यों मे उपयोगित कर सकते हैं .

इस तरह से देखा जाए तो इस सारे कार्य मे भाव की बहुत बड़ी भूमिका हैं.और जब भाव प्रबल होंगे तो निश्चय ही साधना मे एकाग्रता और सफलता भी कई कई गुना जायदा हो सकती हैं .

==

HOW TO BRING HERBS AND SADHNA ARTICLES ETC HOME FOR DOING TANTRA PRAYOG

If tantra is a well arranged way or it is called system then all procedures used with in it are also done in a fixed order. If person is unaware of them then he cannot get desired results or it is natural for shortcomings to arise in results. When we are talking about facts related to herbal tantra then one question arise that how to bring the herbs used in its prayog home.

First of all, we have to consider that in entire world Praan energy is operational. Amount of it may vary from one to other. Some may possess more, some less but at the end of the day it is basically an energy…..so these herbs are also living things . When sadhak goes out to take herbs then first of all he has to make sure that he wear clean clothes and he should go out of house after doing morning poojan etc. and pray to Guru that he can get the desired herb.

Vanaspatik tantra sadhana - durlabh prayog

दुर्लभतम प्रयोग साधना

तंत्र जगत मे कोई भी क्रिया क्यों की जा रही हैं इसका उल्लेख करना अति आवश्यक हैं और अगर इस बात का साधक उल्लेख नही करता हैं तो क्रिया का अपने उदेश्य मे पूर्ण होना संदिग्ध ही रहता हैं और इसकी पूर्णता के लिए ही संकल्प का विधान रखा गया हैं,अतः जिस भी प्रकार के प्रयोग साधक सम्पन्न करना चाहता हैं तो उस प्रयोग करने से पूर्व साधक को अपने सीधे हाथ में जल ले कर संकल्प करना चाहिए की ...मैं (साधक का नाम), पिता का नाम ,(अपने गोत्र का नाम)वह इस स्थान(स्थान का नाम) का निवासी हैं और और आज इस दिन (वार का नाम) इस प्रयोग को अपनी इस इच्छा पूर्ति के लिए सम्पन्न करने जा रहा हैं या प्रारम्भ करने जा रहा हैं ,सदगुरुदेव आप मुझे आशीर्वाद दें की मैं इस क्रिया को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर सकूँ .वह किस उद्देश्य के लिए यह प्रयोग कर रहा है. यह कह कर वह हाथ मे लिया जल जमीन पर डाल दें .यह क्रिया प्रथम दिन ही करने की आवश्यकता है रोज संकल्प लेने की आवश्यकता नहीं है

और सदगुरुदेव पूजन,गुरू मंत्र जप और निखिल कवच का क्यों पाठ अनिवार्य हैं यह अतिआनिवार्य तथ्य अब बार बार लिखने की आवश्यकता नही हैं आप सभी सभी इन बातों को भली भांती जानते समझते और उपयोग करते ही हैं.

सिद्धिफल

यह फल आसानी से पाया जा सकता हैं और अपने नाम के अनुरूप इस फल की अपनी ही विशेषता हैं यह फल अनेको तंत्र क्रियाओं मे उपयोगित होता हैं पर अनेको साधक इस फल को पहचानते ही नही हैं इस कारण यह ऐसा लगता हैं की मानो अलभ्य सा हैं,जबकि एक बार इस फल को इसके वृक्ष पर देख लेने से हमेशा के लिए साधक इस फल को पहचान लेता हैं और अगर किसी कारण ऐसा न हो तो यह फल आसानी से किसी भी पंसारी या जड़ी बूटी का व्यापार करने वालों के यहाँ पाया जा सकता हैं .

==

Rare and acute processes of the Vapanspati Tantra

In tantra world, it is always important to mention the purpose of the process while performing any of them and if sadhaka do not mention the purpose then there remains doubt in achieving the purpose in specific process and to complete this lacking there is a procedure of Sankalp, thus; whatsoever type of process, sadhaka choose to perfom then before starting that prayog or process sadhaka should take the water in his palm and do the sankalp (resolution) that...I (name of the sadhaka), Father's name, (name of the Gotra) resident of this place (name of the place) and today (name of the day) I am performing/starting this process to fulfil my wish, Sadagurudev please bliss me that I achieve success in the process.

siddhi fal -- dosh nivaran prayog

व्यक्तिगत जीवन मे सुख शांती हेतु

जीवन अनेको दोषों से युक्त हो सकता हैं और इस कारण यह भी संभव हैं की दिन प्रतिदिन के जीवन क्रम मे अनेको कठिनाई लगातार सामने आये .तो ऐसे दोषों को दूर करने के लिए अनेको विधान हैं,उनमे से वनस्पति तंत्र का यह सरल सा विधान आप आजमाए और अपने जीवन मे अनुकूलता पाए.यह प्रयोग किसी भी रविवार को करना चाहिए

साधक यह प्रयोग दिन या रात्रि में कभी भी कर सकता है. लेकिन साधना के लिए रात्रि १० बजे के बाद का समय उत्तम है.

साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर गुरुपूजन करे इसके बाद साधक उत्तम की तरफ मुख कर के बैठ जाए. साधक का आसान तथा वस्त्र सफ़ेद रंग के हो तो उत्तम है.

साधक अपने सामने ७ सिद्धि फल लकड़ी के बाजोट पर या सफ़ेद वस्त्र बिछा कर या कोई भी साफ़ बर्तन में रख दे.

इसके बाद साधक स्फटिक या सफ़ेद हकीक माला से निम्न मंत्र की ११ माला जाप करे.

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं फट् (om kleem hreem kleem phat)

मंत्र जप सम्पन्न होने के बाद दूसरे दिन से साधक को एक सिद्धिफल अपने बाएं हाथ में लेकर उपरोक्त मंत्र की एक माला जप करना है. यह क्रिया दिन या रात्रि में किसी भी समय की जा सकती है. क्रिया सम्पन्न होने पर उस सिद्धिफल को अलग रख ले. दूसरे दिन दूसरे सिद्धिफल पर भी इसी प्रकार प्रयोगसम्पन्न करे. इस प्रकार ७ दिन तक यह प्रयोग करने पर सातों सिद्धिफल पर यह प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है. यह प्रक्रिया पूर्ण होने पर सभी सिद्धिफल तथा माला का विसर्जन नदी, तालाब या समुद्र में कर दे. इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है. तथा साधक सभी दोष से मुक्त हो कर जीवन के सभी क्षेत्रो में उन्नति की तरफ गति करता है तथा साधना पथ पर भी विविध साधनाओ में सफलता की और अग्रसर होता है.

==

Process for the removal of the defects (Dosh Nivaaran Prayog)

Life may consisting many defects or Dosha and for that reason possibly you may face various problems in day to day life. So, for the removal of such Dosha or defects there are several processes; among those, one should try this easy process is from vanaspati tantra to have the comfort in the life. This process should be done on any Sunday.

Sadhaka could do this process in day time or night time, but in the night, after 10PM's time is preferable.

After having bath, sadhaka should do the guru poojan. After that sadhaka should sit facing north. It is better if sadhaka uses white colour cloths and sitting mat for this process.

Sadhaka should place 7 siddhiphat in front on the wooden mat or on the white cloth or in any clean vessel.

After that sadhaka should chant 11 rosaries of the following mantra with Crystal rosary or White Hakeek rosary.

siddhi fal --klesh shantee prayog

घर परिवार मे होने वाले मन मुटाव कभी कभी भयंकर रूप ले लेते हैं और इन क्लेशों को दूर करने मे ही भलायी हैं और ऐसे प्रयोग आपके जीवन मे जो कमी आ रही हैं उसे पूरा कर सकने मे समर्थ हैं.यह सरल प्रयोग अवश्य हैं पर इसकी प्रभावकता अपने आप मे अनुभव सिद्ध हैं. यह प्रयोग किसी भी दिन किया जा सकता है

साधक यह प्रयोग दिन या रात्रि के किसी भी समय कर सकता है.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर गुरु पूजन करे तथा अपने सामने किसी पात्र में सिद्धिफल को स्थापित कर उसका सामान्य पूजन सम्पन्न करे. साधक के वस्त्र तथा आसान सफ़ेद रंग के रहे. दिशा उत्तर रहे.

इसके बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की २१ माला मन्त्र जप करे

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं ह्रीं ॐ (om hreem shreem kreem shreem hreem om)

इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है. साधक को सिद्धिफल तथा माला का विसर्जन कर देना चाहिए. इस प्रयोग के माध्यम से साधक के गृह में क्लेशका निवारण होता है तथा घर में शांति का स्थापन होता है.

==

Process for the relief in the Grief (Klesh Shanti Prayog) –

Sometimes it takes very fierce form from the small tiffs of the house and it is always better to remove such tiff such processes are able to complete to lacking parts of the life. This process is easy but the effect is experienced. This process could be started on any day.

This process could be done in day or night time.

After having bath sadhak should do guru poojan and should establish SiddhiPhal in any of the vessel and do the poojan of the same. Cloths and sitting mat of the sadhaka should be white in colour. Direction should be north.

After that sadhaka should chant 21 rounds of the following mantra with rudraksha rosary.

om hreem shreem kreem shreem hreem om (ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं ह्रीं ॐ)

This way when this process is completed; sadhaka should immerse SiddhiPhal and rosary. With this process sadhaka receive relief in the house grief and establishment of the peaceful atmosphere is done in the house.

siddhi fal ---vaadha nivaran sadhana prayog

आवश्यक एक साधना

कार्य सिद्धिता अपने आप मे एक महत्वपूर्ण बात हैं क्योंकि दिन प्रतिदिन मे अनेको काम पड़ते हैं, कुछ कम महत्वपूर्ण होते हैं तो कुछ ऐसे की जिनके न सम्पन्न होने पर ..साधक को बहुत समस्या हो सकती हैं और अगर साधक का कोई महत्वपूर्ण कार्य रुका हुआ है या फिर हर बार कार्य में असफलता किसी न किसी बाधा के कारण आ जाती है तब साधक को यह प्रयोग करना चाहिए

यह प्रयोग साधक किसी भी दिन शुरू कर सकता है. समय रात्रि में १० बजे के बाद का रहे, साधक लाल आसन तथा लाल वस्त्रों का प्रयोग करे. दिशा उत्तर या पूर्व हो.

सर्व प्रथम साधक स्नान आदि से निवृत हो कर अपने सामने सिद्धिफल को स्थापित करे. गुरुपूजन, गुरुमंत्र का जाप कर के सिद्धिफल का सामान्य पूजन सम्पन्न करे.

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की २१ माला ३ दिन तक उस सिद्धिफल के सामने करे. इस प्रयोग के लिए साधक रुद्राक्षमाला या काले हकीक की माला का प्रयोग करे.

ॐ भ्रं स्त्रीं भ्रं फट् (om bhram streem bhram phat)

३ दिन के पश्चात साधक सिद्धिफल का विसर्जन कर दे.

===

Process for the removal of the obstructions (Baadhaa nivaaran Prayog)

Success of any work is very important matter because there remains existence of the various works in day to day time and some of them are so important that if they are not completed then various troubles may come in the way of sadhaka. And if some important work of the sadhaka is halted or sadhaka faces failure in that task with various obstacles every time, then sadhaka should do this process.

This process could be started on any day. Time should be after 10 in the night, sadhaka should use red coloured cloths and sitting mat. Direction should be north or east.

First of all sadhaka should take bath and should establish SiddhiPhal in front. After GuruPoojan and Guru Mantra chanting sadhaka should do normal poojan of the SiddhiPhal.After that, sadhaka should do 21 rounds of the following mantra for 3 days in front of that siddhiphal. For this process, sadhaka should use Rudraksha Rosary or Black Hakeek Rosary.

om bhram streem bhram phat (ॐ भ्रं स्त्रीं भ्रं फट्)

After 3 days, sadhaka should immerse siddhiphal.

Dhan prapti prayog sadhana

इसे कौन नही करना चाहेगा

आसानी से पाए जाने वाले इस पौधे के कितने तांत्रिक प्रयोग हैं यह बताने की या लिखने की आवश्यकता नही हैं.यह इतने सारे हैं की एक पूरा ग्रन्थ ही इस अद्वितीय पौधे पर बन सकता हैं .और यदि एक साधक या व्यक्ति सिर्फ इस पौधे पर ही अर्थात इसके उपयोगों को वह चाहे आर्युवेद हो या तंत्रजगत हो पर अपना जीवन लगाने को तैयार हो जाए तो यह एक पौधा ही उसे विश्व प्रसिद्ध बनने की सामर्थ्य रखता हैं,इस बात को भी नही भूलना चहिये की यह अपामार्ग दिव्य औषिधि हैं अतः इसके गुणों का तो कोई अंत ही नही,फिर भी अनेको व्यक्ति इस पौधे को पहचानते नही हैं.जबकि किसी भी जानकार से इस पौधे का परिचय प्राप्त कर ही लेना चाहिए.यह स्वेत और लाल दो प्रकार से मुख्यता पाया जाता हैं.इस पौधे के अनेको नाम हैं जैसे चिरचिटा ,पंजाबी मे पुठ्कंठा,बंगाली मे अपाग भी कहा जाता हैं,यह झाडी दार पौधा हैं और आसानी से उपलब्ध होता हैं और अनेको प्रकार का पाया जाता हैं .

धन प्राप्ति प्रयोग

धन न केबल चार आवश्यक जो पुरुषार्थ कहे गए हैं हैं उनमे से एक आवश्यक बिंदु हैं और जीवन की गति और व्यक्ति की मति को ठीक रखने मे यह अत्यंत ही अद्भुत भूमिका निभाता हैं पर आखिर इस पुरुषार्थ की पूर्णता कैसे की जाए तो एक ओर जहाँ उच्च प्रयोग मे इसका उपयोग होता हैं वहीँ सरल प्रयोगों मे भी इसकी अपनी ही एक भूमिका हैं.और कोई भी सरल प्रयोग अगर प्राप्त होता हैं तो उसे करके अपने जीवन को अनुकूल बनाने का अवसर को गवांना भी नही चाहिये यह प्रयोग साधक किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न करे, समय रात्रि में ९ बजे के बाद का रहे.

साधक अपामार्ग के किसी पौधे को गुरुवार के दिन आमंत्रण दे कर शुक्रवार ब्रह्ममुहूर्त में उसे निकाल कर ले आये तथा उसकी जड़ को अलग कर ले.

रात्रिकाल में स्नान कर के साधक को गुरुपूजन तथा गुरुमंत्र जाप सम्पन्न करना चाहिए. इसके बाद साधक अपामार्ग की जड़ को अपने सामने स्थापित करे तथा उसका सामान्य पूजन करे. साधक के वस्त्र तथा आसन लाल रंग के रहे. साधक का मुख उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ हो.

इसके बाद साधक निम्न मंत्र का २१ माला जाप करे.

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं नमः (om hreem hreem shreem hreem hreem namah)

साधक को यह मंत्र जाप कमलगट्टे की माला से करना चाहिए, यह प्रयोग साधक को ३ दिन करना चाहिए.

३ दिन के बाद साधक अपामार्ग की जड़ को श्रद्धा सहित किसी मंदिर में दक्षिणा के साथ अर्पित कर दे.

==

Apaamaarg (Achyranthes Aspera)

It is not matter of introduction of this very easily available plant's significance in the various tantric processes. It is so in number that one may create whole book on this incomparable plant. And if one sadhaka or person works very hard on this single plant for their tantric or ayurvedic processes then this single plant can give him fame in the world. One should also not forget that this plant is Divya Aushadhi or the divine herb thus there is no end of its uses, then too many people do not identify it.

ApAmAArg – aarrogy prapti prayog sadhana

जीवन के लिए अति आवश्यक अद्भुत गोपनीय साधना

पहला सुख निरोगी काया ....यह वाक्य तो आज सभी ने सुना ही होगा और बात ही सत्य हैं की जब तक मानव देह ही साधक की स्वास्थ्य न होगी तब तक किसी अन्य चीज होने का भी क्या अर्थ हैं क्योंकि यह देह ही तो एक आधार हैं .जीवन की उच्चता को प्राप्त करने का ....यह प्रयोग करने पर साधक को आरोग्य की प्राप्ति होती है तथा रोग से मुक्ति मिलती है.

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन कर सकता है. समय दिन या रात्रि काल में कोई भी हो सकता है.

साधक अपामार्ग के किसी पौधे को निमंत्रण दे कर ले आये तथा अपने सामने स्थापितकर दे. गुरुपूजन गुरु मंत्र केजप के बाद साधक निम्न मंत्र का जाप २१ माला करे. दिशा उत्तर रहे.

ॐ ह्रीं धनवन्तरियै आरोग्यं देहि देहि ह्रीं नमः

(om hreem dhanawantariyai aarogyam dehi dehi namah)

साधक को यह प्रयोग तीन दिन करना चाहिए. साधक को स्फटिक माला का प्रयोग करना चाहिए. तीन दिन के बाद साधक अपामार्ग को नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दे.

===

Process for health gaining – (Aarogy Prapti Prayog)

First happiness is healthy body... you must have heard this sentence and it is fact too that if body of the sadhaka is not healthy then what is the use of having other things too because this body is the base to achieve the highness of the life...by performing this process, sadhaka receive health and becomes free from the diseases.

This process could be started on any auspicious day and could be perfomed on any time of day or night.

Sadhaka should give invitation to the plant of apamarg and take it; and establish it in front. After guru poojan and guru mantra chanting, sadhaka should chant 21 rounds of the following mantra. Direction should be north.

om hreem dhanawantariyai aarogyam dehi dehi namah

(ॐ ह्रीं धनवन्तरियै आरोग्यं देहि देहि ह्रीं नमः)

Sadhak should do this process for three days. Crystal rosary should be brought in use for this process. After three days sadhaka should immerse Apamarga in river, pond or ocean.

ApAAmArg - soubhagy vriddhi sadhana

जीवन मे सौभाग्य वृद्धि हेतु अद्भुत साधना

सकल पदारथ हैं जग माहि भाग्यहीन नर कछु पावत नाही " यह उक्ति तो बहुत प्रसिद्ध हैं और सच भी हैं किसी भी चीज को प्राप्त करने का और जीवन मे उच्चता और श्रेष्ठता प्राप्त करने मे एक अच्छे भाग्य की आवश्यकता को भला कौन नकार सकता हैं .और भाग्य को सौभाग्य मे बदलने का यह दुर्लभ प्रयोग अगर इतना सरल विधान प्राप्त हुआ हैं तो इसे करके देखना ही चाहिये..कभी कभी एक सरल प्रयोग इतनी तीव्रता से कार्य करते हैं की साधक स्वयं भी उसके फल को देख कर दांतों तले अंगुली दवा ले.. यह प्रयोग साधक शुक्रवार की रात्रि में करे

साधक को १० बजे के बाद पूर्व दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर पीले वस्त्र को धारण करना चाहिए तथा पीले आसान पर बैठना चाहिए,

साधक अपने सामने अपामार्ग की जड़ को स्थापित करे तथा उसका पूजन करे. उसके ऊपर दूध मिश्रित हल्दी कालेप लगाए. इसके बाद साधक निम्न मंत्र की५१ माला मंत्र जप करे. यह मंत्रजाप के लिए कमलगट्टे की माला का प्रयोग करना चाहिए.

ॐ श्रीं सिद्धिं सिद्धिं नमः(om shreem siddhim siddhim namah)

इस प्रकार एक ही रात्रि में यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक को अपामार्ग की जड़ को अपने पूजा स्थल में स्थापित कर देना चाहिए. इस जड़ के सामने साधक प्रयोग में लायी हुई माला से भविष्य में भी मंत्र का जप कर सकता है.

==

Process for prosperity – (Saubhagy vriddhi Prayog)

Sakal padarath he jagamahi bhagyahin nar kachhu paawat naahi means there is existence of every material on this world but only fortunate people may get it. This famous sentence is fact that to get anything and to have a bright life with greatness of living there is a vital role of the fortune. And to transform luck in to fortune if this easy and rare process is obtained then one should go for it. Sometimes such small processes also go so effectively that one may just feels wonders by watching the results. This process should be done on the Friday night.After 10PM sadhak should sit facing east direction. After having bath sadhak should wear yellow cloths and should sit on the yellow sitting mat. Sadhaka should establish root of the apamarg in front and should do poojan of the same. One should apply paste of the milk and tamarind on it. After that sadhak should chant 51 rosaries of the following mantra. For this mantra, sadhaka should use lotus seeds rosary (KamalGatta rosary).

om shreem siddhim siddhim namah (ॐ श्रीं सिद्धिं सिद्धिं नमः)

This way, in one night only, this process is completed. Sadhak should place the root of apamarg in worship place. In front of this root, sadhaka can repeat the same process with the same rosary, in future

धतूरा - शत्रु स्तम्भनं प्रयोग

Dhaturaa - shtru stambhann prayog sadhana.

शत्रु तत्व को दूर रखने हेतु अद्भुत गोपनीय साधना

जिस फल को भगवान शंकर जैसे महायोगी पर अर्पित करने योग्य पाया जाता हैं वह कोई साधारण तो नही हो सकता हैं ,भले ही यह जहरीला सा नशे उत्पन्न करने वाला माना जाए पर पारद विज्ञानं से लेकर आयुर्वेद तक और तंत्र मे तो अनेको प्रयोग इस पौधे पर आधारित हैं .और यह तो आसानी से उपलब्ध होने वाला पौधा हैं ,पर इसके अनेको प्रकार हैं कुछ तो अति दुर्लभ की श्रेणी मे हैं.जिसमे काला धतुरा तो बहुत ही दुर्लभ माना गया हैं वैसे पीला,सफ़ेद और हरे रंग के भी यह पौधा पाया जाता हैं और हर किसी की अपनी ही एक उपयोगिता हैं.इस पौधे के फल पर बड़े बड़े कांटे होते हैं और यह भी आसानी से पाया जाता हैं ,निर्जन स्थानों पर नदी नालों के किनारे पर यह मिल सकता हैं .और अनेको लोग कम से कम इस पौधे को तो पहचानते हैं ही.

शत्रु स्तम्भन प्रयोग

जीवन मे दो पहलू हर चीज के होते ही हैं अगर शुभहैं तो अशुभ का भी अस्तित्व होगा ही इसी तरह अगर मित्र हैं तो शत्रु भी होंगे ही अब यह किस हद तक या कितने स्तर तक होगे यह तो विवेचना का प्रश्न हैं पर होंगे जरुर ही और जो भी व्यक्ति उच्चता की ओर अग्रसर होता हैं उससके मार्ग मे इस तरह के लोग आते ही हैं क्योंकि क्योंकि केचुए सामान रीढ़ हीन जीवन का कोई भला क्या शत्रु बनेगा ....यह प्रयोग करने पर शत्रु का स्तम्भन होता है तथा शत्रुबाधा की निवृति होती है.

यह प्रयोग साधक किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी को करे

रात्रि में १० बजे के बाद साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे तथा लाल आसन पर दक्षिण दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए, साधक गुरु पूजन गुरुमंत्र का जापसम्पन्न करे. इसके बाद साधक अपने सामने लोहे के पात्र में या काले रंग के वस्त्र पर धतूरे का फल(जिसे बीज भी कहते है) स्थापित करे. इस बीज के ऊपर साधक काजल से अपने शत्रु का नाम लिखे, इसके लिए कोई भी कलम का उपयोग किया जा सकता है.

इसके बाद साधक मूंगा माला से निम्न मंत्र की५१ माला मंत्रजाप कोसम्पन्न करे.

ॐ क्रीं शत्रु स्तम्भय स्तम्भय क्रीं फट् (om kreeng shatru stambhay stambhay kreeng phat)

मंत्र जप के बाद उसी रात्रि में या दूसरे दिन सूर्यास्त के बाद सुबह तक के समय में उस धतूरे के बीज कोमाला को, जिस कलम से लिखा गया है वह कलम तथा जिस पात्र में या वस्त्र में बीज को रखा गया था उन सब को श्मशान में फेंक दे.

==

Dhatura (Angel's Trmpets)

The fruit, which deserves to be offered on the god of the gods lord Shiva, then it could not be ordinary, though it is believed to be toxic and opiate but there are several processes of the Paarad Vigyan and Ayurveda are based on this plant. And this is easily available plant, but it is found in varieties and few of them are really rare species. Among them, black dhatura is believed to be very rare. Though, it is found in yellow, white and green colour also and every plant has its own uses. On the fruit of this plant, big thorn could be found and plant could be found easily on the bank of the rivers and on the boonies. Majority of the people do identify this plant.

धतुरा - धन प्राप्ति प्रयोग साधना

Dhatura - dhanprapti paryog sadhana

जीवनको सुखमय बनाने हेतु एक सरल साधना

यह एक आश्चर्य का विषय हो सकता हैं की फिर से धन प्राप्ति का प्रयोग पर ....इसका यह कारण हैं इन विविध प्रयोगों को जो की विभिन्न वनस्पतियों पर आधारित हैं.साधको को जो भी उपलब्ध हो जाए उनके माध्यम से ही वह अपने इच्छापूर्ति कर सकें ....और जीवन मे धन की प्रति भी कुछ ऐसी ही तो हैं क्योंकि उससे सब कुछ संभव हो जाता मन नही घबराता वाली स्थिति बनने लगती हैं, जो कहीं जायदा अनुकूलता जीबन मे ला सकती हैं. साधक को यह प्रयोग किसी भी रविवार को करना चाहिए

साधक रात्रिकाल में ९ बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे तथा लाल आसन पर बैठ जाए, साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए

साधक को सर्व प्रथम गुरुपूजन कर गुरु मंत्र का जाप करना चाहिए इसके बाद साधक पहले से ही विधिवत लायी हुई धतूरे की जड़ को अपने सामने लाल वस्त्र पर स्थापित करे. साधक को इस प्रयोग में लोहबान का धुप जलाना चाहिए तथा उस जड़ का सामान्य पूजन सम्प्पन करना चाहिए

इसके बाद उस जड़ के सामने रुद्राक्षमाला से साधक निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप साधक करे.

ॐ क्रीं क्लीं श्रीं क्लीं क्रीं नमः (om kreem kleem shreem kleem kreem namah)

मंत्र जाप पूर्ण होने पर साधक को उस जड़ को वाही लाल वस्त्र में बाँध कर तिजोरी या धन रखने के स्थान पर रख देना चाहिए. माला का विसर्जन नहीं करना है. हर महीने में एक बार या फिर कृष्ण पक्ष की अष्टमी को साधक उस जड़ को निकाल कर उसे धुप दे कर एक माला मंत्र जाप करनेसे फल प्राप्ति स्थायी रहती है

==

Process for the wealth (DhanPrapti Prayog) –

This could be subject to be surprise that again process for the wealth came but...the reason is these processes are based on various different herbs. Whichever is available to sadhak, one may use it in the process and fulfil the wish. And in life, money or wealth generating is such thing only because it opens varieties of the doors for the opportunities which may bring the stable position of the mind and bring comforts. Sadhaka should do this process on any Sunday.

Sadhaka should take bath after 9 PM and wear red cloths and should sit on the red coloured sitting mat. Sadhaka should sit facing north direction.

Sadhaka should first do gurupoojan and guru mantra chanting. After that sadhaka should place root of the Dhatura brought duly with its complete process, on the red cloth. Sadhaka should light Lohbaan Dhoop and should do normal poojan of the root.

After that one should chant 51 rounds of the following mantra in front of that root with rudraksha rosary.

Laghu naariyaL - dhan prapti sadhana

धन धान्य समृद्धि हेतु अत्यंत सरल विधान

तंत्र के अनेको प्रयोगों मे लघु नारियल का प्रयोग होता हैं और यह भी आसानी से प्राप्त फल हैं और अपने नाम के अनुरूप इसका आकार बहुत छोटा होता हैं.बाज़ार मे किसी भी पंसारी या जड़ी बूटी बेचने वाले के यहाँ इस को आसानी से पाया जा सकता हैं .

धन प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग साधक किसी भी शुक्रवार को कर सकता है.

साधक यह प्रयोग दिन या रात्रि के कोई भी समय कर सकता है. साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र को धारण करे तथा लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाये. इसके बाद अपने सामने लघुनारियल को स्थापित कर ले. उस नारियल पर कुमकुम से 'श्रीं' लिखे तथा उसका पूजन करे. इस प्रयोग में साधक को शुद्ध घी का दीपक लगाना चाहिए.

इसके बाद साधक गुरुपूजन, गुरुमंत्र के जाप के पश्च्यात निम्न मंत्र की५१ माला मंत्र जाप करे. यह मंत्र का जाप साधक को कमलगट्टे की माला से करना चाहिए.

ॐ श्रीं विष्णुपत्न्यै नमः (om shreem VishnuPatnyai namah)

मंत्र जाप पूर्ण होने पर साधक लघुनारियल को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दे. माला का विसर्जन नहीं करना है साधक इस माला का प्रयोग किसी भी लक्ष्मी साधना में कर सकता है.

==

Laghu Nariyal (Small Coconut) –

There are several process on the tantra which are completed on the Laghu Nariyal and this fruit could be easily gained, as the name suggest, it is very small in the shape and could be found on the shop of herbs vendors or on the grocer's shop.

Process for the wealth (Dhan Prapti Prayog) –

Sadhak can do this process on any Friday.

This process could be done on any time of day or night. Sadhaka should take bath and wear red cloths and sit facing north direction on red sitting mat. After this, sadhaka should establish laghu Nariyal in front. On that nariyal one should write 'श्रीं' with red vermillion and should do poojan. Sadhaka should light lamp of the pure ghee (clarified butter).

After that sadhaka should do guru poojan and guru mantra and than sadhak should do 51 rounds of the following mantra chanting. This mantra chanting should be done with lotus seeds rosary (KamalGatta).

Laghu naariyaL – soubhagy vriddhi prayog sadhana

सौभाग्य वृद्धि हेतु एक सरल साधना

यह प्रयोग भी साधक किसी भी शुक्रवार की रात्री में कर सकता है.

साधक यह प्रयोग दिन या रात्रि में कभी भी कर सकता है लेकिन रोज समय एक ही रहेइस प्रयोग में साधक के वस्त्र तथा आसन लाल रहे. दिशा पूर्व.साधक अपने सामने लघुनारियल को स्थापित कर उसका पूजन करे इसके बाद उसके सामने साधक निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जाप करे. मंत्र जाप के लिए साधक स्फटिक माला का प्रयोग करे.

ॐ श्रीं ह्रीं सौभाग्यं ह्रीं श्रीं ॐ (om shreem hreem saubhagyam hreem shreem om)

इस प्रकार साधक ३ दिन करे. ३ दिन प्रयोग होने पर साधक उस नारियल को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दे.

AAk – suraksha prapti hetu prayog sadhana

निष्कंटक जीवन हेतु एक आवश्यक हेतु साधना

यह पौधा भी आसानी से पाया जाता हैं ,और इसके भी दो प्रकार पाए जाते हैं एक जिस पर सफ़ेद फूल आते हैं जिसे श्वेतांर्क कहा जाता हैं और अन्य जिस पर काले रंग के या नीले रंग के जिसे श्यामार्क कहते हैं, श्वेतार्क तो बहुत ही दुर्लभ हैं और इसकी जड़ को तो साक्षात् भगवान गणेश का स्वरुप माना जाता हैं .इस पौधे के अनेको तंत्र अप्रयोग मे उपयोग होते हैं वहीँ इसका दूध जहरीला अवश्य होता हैं पर पारद विज्ञानं मे इसका अनेको जगह उपयोग होता हैंऔर जो भी वस्तु भगवान शंकर को प्रिय है या उन पर अर्पित की जाती हैं उसका अर्थ तो हैं ही भले ही हम समझे या न समझे.सदगुरुदेव द्वारा लिखित पुस्तक जो अपने आप मे एक पूरे आर्युर्वेद का सार हैं"मूलाधार से सहस्त्रधार तक उसमे उन्होएँ इसे एक दिव्य औषिधि की श्रेणी मे रखा हैं .यह त्तःय ही इस पौधे की उपयोगिता को वर्णित करता हैं .यह आक अकुआ मदार आदि के नाम से भी जाना जाता हैं .रेलवे लाइन के पास इसके पौधे आसानी से मिल जाते हैं .इसके वृक्ष का आकार बहुत बड़ा भी हो सकता हैं .

सुरक्षा प्राप्ति प्रयोग

सुरक्षा शब्द के अनेको आयाम हैं कहैं यह शत्रुओ से तो कहीं विषेले जीव जन्तुओ से तो कहीं ग्रहों के दुष्प्रभाव से तो कहीं आकस्मिक घटनाओ से भी सबंधित हैं और अगर कोई प्रयोग ऐसा सुरक्षा चक्र आपको देने मे समर्थ हैं तो क्यों नही वनस्पति जगत का यह सरल तम प्रयोग हम करके ऐसा लाभ उठाए यह प्रयोग साधक किसी भी शुभदिन कर सकता है. रात्री का समय इस प्रयोग के लिए श्रेष्ठ है फिर भी साधक इस प्रयोग को दिन में भी सम्प्पन कर सकता है.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र धारण करे तथा लाल आसन के ऊपर बैठ जाए. दिशा उत्तर रहे. इसके बाद साधक गुरुपूजन तथा गुरुमंत्र का जाप कर अपने सामने७ आक के पत्तों को किसी साफ़ आसान पर बिछा दे तथा एक पत्ते को ले कर उसमे कुमकुम की स्याही से निचे दिए गए मंत्र को लिखे. इस प्रक्रिया में कलम कोई भी इस्तेमाल की जा सकती है.

ॐ गं दुं रक्ष रक्ष नमः (om gam dum raksh raksh namah)

इस प्रकार सातो पत्तों पर मंत्र लिखे. मंत्र लिख लेने के बाद उसको नमस्कार कर उपरोक्त मंत्र की ही ७ माला मंत्र जाप करे. जाप के लिए मूंगामाला का प्रयोग करे.

७ माला हो जाने पर उन पत्तों को रख ले. दूसरे दिन उन पत्तों को नदी, तालाब या समुद्र में प्रवाहित कर दे. एक पत्ते को प्रवाहित करते समय ७ बार मंत्र का मन ही मन उच्चारण करे. इस प्रकार सातो पत्तों पर करना चाहिए.

=====================================

AAk (Calotropis)

This plant is also found easily in two types. One with white colour flowers which is called Swetaark and other in which blackish or bluish coloured flowers are found which is called Shyaamaark. Swetaark is said to be rare and root of this plant is believed to be form of the Lord Ganesha himself. There are several tantra processes related to this plant, though the milk of this plant is toxic but in Paarad Vigyan it is used at several place.

AAk - kaary siddhi prayog sadhana

इच्छित कार्य की पूर्णता के लिए

मनोवांछित कार्य मे सिद्धिता पाना, यह तो हर शुभ कार्य मे होना ही चाहिए पर हर बार ऐसा हो पाना संभव सा नही हैं पर जो भी ज्ञात अज्ञात वाधाए सामने आती हैं वह भी हटती जाती हैं ऐसा कर पाने मे यह सरल सा प्रयोग अपने आप मे प्रभाव रखता हैं. यह प्रयोग किसी भी गुरुवार को रात्री में १० बजे के बाद सम्प्पन करना चाहिए

साधक के वस्त्र तथा आसन पीले रंग के हो. दिशा उत्तर या पूर्व हो.

साधक गुरुपूजन तथा गुरुमंत्र के जाप के बाद अपने सामने आक की एक डाली को स्थापित करे यह डाली हरित हो अर्थात सुखी हुई ना हो. इस डाली का पूजन सम्पपन करे. इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ५१ माला उसी डाली के सामने करे. मंत्र जाप के लिए साधक हल्दी की माला, पीले हकीक की माला का प्रयोग करे. अगर साधक के लिए यह किसी भी स्थिति में संभव न हो तो साधक स्फटिक माला का प्रयोग करे.

ॐ शं गं कार्यसिद्धिंनमः (om sham gam KarySiddhim namah)

प्रयोग पूर्ण होने पर दूसरे दिन साधक उस डाली को नदी में प्रवाहित कर दे

==

Process for the Task Accomplishment (Kaary Siddhi Prayog)

To have success in the desired work, that should be happened in all the auspicious works, but every time, it becomes not possible. But this process is capable to remove all the known and unknown obstacles. This process could be started on Thursday after 10 in the night.

Cloths and the sitting mat of the sadhak should be yellow in color and direction could be north or east.

After guru poojan and guru mantra chanting sadhak should establish a branch of the Aak Plant in front. This branch should be fresh and not dried. Poojan of this branch should be done. After that, sadhak should chant 51 rounds of the following mantra in front of that branch. For mantra chanting, sadhaka can use rosary of turmeric, or yellow Hakeek rosary. If that is even not possible by any mean for sadhak to arrange, in that condition sadhak can use Crystal rosary.

om sham gam KarySiddhim namah (ॐ शं गं कार्यसिद्धिं नम)

When process is completed, sadhak should immerse the branch next day in river.

Tulsi - soubhgy vriddhi prayog sadhana

सौभाग्य वृद्धि हेतु साधना

घर घर मे शुभता देने मे समर्थ और आसानी से पाए जाने वाले इस अद्भुत गुणकारी पौधे की तंत्र मे भी अनेको दुर्लभ प्रयोग हैं परजिनसे जन सामान्य अपरिचित हैं,इसके अंको प्रकार पाए जाते हैं कहा तो यहाँ तक जाता हैं की इसके कम से कम ५० के लगभग प्रकार हैं और सभी का अपना ही एक महत्व हैं आयुर्वेद की दृष्टी से और तंत्र की दृष्टी से भी पर काली तुलसी और सफ़ेद तुलसी ही आधिक मिलती हैं अनेको रोगों मे इसका प्रयोग होता हैं .

और जन सामान्य भी इसके अनेको प्रयोगों से परिचित हैं और इसलिए कुछ दुर्लभ प्रयोग इस अद्भुत आसानी से पाए जाने वाले पौधे के ..

सौभाग्य वृद्धि प्रयोग

यह सहज प्रयोग है तथा कोई भी साधक इसे कर सकता है.

यह प्रयोग शुक्रवार से शुरू किया जाता है तथा दिन या रात्रि में किसी भीसमय किया जा सकता है. दिशा उत्तर या

साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर गुरुपूजन तथा गुरुमंत्र का जाप करना चाहिएइसके बाद साधक अपने सामने १०८ तुलसी के पत्तों को रख ले. हर एक तुलसीपत्र पर केसरी की स्याही से तथा अनार की कलम से बीज मंत्र 'श्रीं' लिखे. इस प्रकार सभी १०८ पत्तों पर श्रीं बीज लिखे. लिख लेने के बाद उन सब को जल में उसी दिन प्रवाहित कर दे. इस प्रकार साधक को तीन दिन करना चाहिए

इस प्रयोग में साधक को जितना भी संभव हो 'श्रीं' बीज मंत्र का जप करते रहना चाहिए यह जाप मानसिक रूप से भी हो सकता है.

इस प्रकार तीन दिन करने पर यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है.

==

Tulsi (Basil)

Capable of giving auspiciousness in the houses and easily available this wonderful plant is having many processes in tantra too which are not known to the common people. Many species of this plant is found, it is also said that there are atleast 50 different types of this plant and every plant has its own importance.

Rakt gunja – tantra dosha nivaran paryog

तंत्र दोष निवारण हेतु एक सरल साधना

यह पौधा भी लगभग आसानी से पाया जाता हैं वर्षा ऋतू मे इसके पौधे आसानी से प्राप्त होते हैं.और इस के पौधे के फल के बीज का अनेको तंत्र क्रियाओ मे प्रयोग होता हैं और इस से सबंधित कुछ प्रयोग आप सभी के लाभार्थ....

तंत्र दोष निवारण प्रयोग

हर समस्या को तंत्र वाधा या तंत्र दोष मानना उचित नही हैं पर जब निराकरण के सारे उपाय व्यर्थ जा रहे हो तब एक बार इन प्रयोगों की ओर भी देख लेना उचित निर्णय होगा क्योंकि इन अज्ञात प्रयोगों के परिणाम को सहन आखिर कब तक किया जा सकता हैं .और जीवन को इन दुस्प्रयोगों से निष्कंटक बनाने मे किया श्रम ..निरर्थक नही हैं .

क्योंकि हर बार किसी ने आप पर यह प्रयोग किया ही हो बल्कि जाने अनजाने कहीं किसी ने कोई प्रयोग किया हो आप उन प्रयोगों की सीमा मे किसी कारण आ गए हो .इस मे भी आपको परिणाम सहन करना ही पड़ा होगा . यह प्रयोग साधक को रविवार को करना चाहिए.

साधक रात्रीकाल में १० बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र को धारण करे तथा लाल वस्त्र पर बैठ जाए. दिशा दक्षिण रहे. इसके बाद साधक गुरुपूजन तथा गुरुमंत्र का जाप कर निम्न मंत्र की रुद्राक्ष मालासे २१ माला मंत्र जाप करे.

ॐ क्रीं धूं फट् (om kreeng dhoom phat)

इसके बाद साधक को १०८ रक्त गूंजा के बीज लेने चाहिए तथा अपने सामने अग्नि को प्रज्वलित कर के एक गूंजा को ले कर उपरोक्त मन्त्र के साथ अग्नि में समर्पित करे. इस प्रकार १०८ रक्तगूंजा को अग्नि में समर्पित करे. यह तीव्र प्रयोग है अतः हो सकता है साधक को प्रयोग के मध्य तीव्र अनुभव हो लेकिन साधक को डरने की कोई आवश्यकता नहीं है

इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक को माला को प्रवाहित कर देना चाहिए.

===

Rakt Gunja (jequirity)

This plant is easily found and could easily be obtained in rainy season. And seed of this plant used in various tantra processes and for the benefit of everyone the process related to this plant…

Process for Removal of Tantra effect (tantra dosh nivaran prayog)

Every trouble is not be believed as tantra dosh or evil tantra's effect but when all the efforts of the solutions are being failed, in that condition, one may also look for solution like this process because such unknown process's effect could be beared for how long time duration and it is never fruitless to try for the removal of the troubles of the life because it may be it may be that someone have done the prayog or not;

Kaali haldi - shtru uchchatan prayog

शत्रुओं को अपने से दूर रखने मे आवश्यक साधना

यह भी एक आसानी से पाए जाने वाली वस्तु हैं इसको पंसारी के यहाँ से पाया जा सकता हैं और किसी भी गमले मे इसकी एक भी छोटी से गांठ को गडा दिया जाए तो कुछ समय बाद अगर आप उस गमले की सही ढंग से देख भाल करते हैं तो स्वतः ही इसकी बढोत्तरी देख सकते हैं और इस के अभी अनेको प्रयोग हैं

शत्रु उच्चाटन प्रयोग

शत्रु तो जीवन का एक अनिवार्य अंग से हैं,क्योंकि एक पक्ष को स्वीकार करते ही उसके दूसरे पहलु को स्वीकार करना ही पड़ेगा क्योंकि यह सारा जगत दो पक्षों पर आधारित हैं,पर जब शत्रु वाधा बढती ही जाए और कोई उपाय न सूझ रहा हो तब इस प्रयोग को करना ही चा और जीवन को जितना संभव हो सरल क्योंकि तभी साधना के लिए एक भावभूमि बन् सकती हैं.इस सरल प्रयोग को मनोयोग पूर्वक करें और जीवन को सहज बनाए.

यह प्रयोग किसी भी बुधवार को करना चाहिए

साधक रात्री काल १० बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर अपने सामने काली हल्दी का टुकड़ा रखे उसके ऊपर सिन्दूर से शत्रु का नाम लिखे वस्त्र लाल रंग के हो तथा दिशा दक्षिण हो.

साधक गुरूपूजन तथा गुरूमंत्र का जाप सम्प्पन करे इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप उसी रात्रि मे सम्प्पन कर ले. इस मंत्र के जाप के लिए साधक को शक्ति माला या मूंगा माला का प्रयोग करना चाहिए

ॐ धुँ धुर्जटैफट (om dhum dhurjatai phat)

मंत्रजाप पूर्ण होने के बाद काली हल्दी के टुकड़े को किसी निर्जन स्थान पर फेंक दे तथा माला को किसी देवी मंदिर मे दक्षिणा के साथ अर्पित कर दे.

===

Kaali Haldi (black turmeric) –

This too could be easily obtained and could be found on the grocer's shop and if one small piece of this plant is placed in the flower pot and if proper care is taken then this plant increases itself, this plant too owns many tantric prayog

Process for Deflexion of enemy (Shatru Ucchatan prayog) –

Enemies are like integral part of the life, because by accepting one side, another side is must to be accepted as this whole world is based on the two sides. But when this enemy trouble keep on increasing and no other solution is found, then this process should be done and life should be made as easy as possible thus to make a platform for the sadhana. this easy process could be performed willingly and should make the life more easier.

This process should be started on Wednesday

After 10PM in the night sadhak should have bath and place piece of the black turmeric in front. Name of the enemy should be written on it with vermillion. Cloths should be red and direction should be south.Sadhak should do guru poojan and chanting of the guru mantra. After that 51 rounds of the following mantra should be done in the same night. For the chanting of the mantra one should use Shakti rosary or Coral rosary.

Kali haldi - bhay shaman paryog

भय तत्व को दूर करने मे सहायक एक प्रयोग

आज कौन हैं ऐसा जो सत्यता पूर्वक अपने ह्रदय पर हाथ रख कर कह सकें की उसे किसी भी भय या आशंका नही हैं ,और भय तो अष्ट पाश मे से वह पाश हैं जिससे हर व्यक्ति का जीवन बंधा हुआ हैं अतः इस प्रकार के प्रयोग सपन करते रहने से ना केबल भय से शमन होता हैं बल्कि जीवन कहीं ज्यादा सरल हो जाता हैं और अज्ञात भय से मुक्त हो जीवन के पलो का आनंद लिया जा सकता हैं .प्रस्तुत प्रयोग अज्ञात भय तथा आशंकाओ के निवारण के लिए है

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन शुरू कर सकता है दिन या रात्रि का कोई भी समय साधक इस प्रयोग के लिए चुन सकता है.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल रंग के आसन पर लाल रंग के वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाये. तथा अपने सामने काली हल्दी का टुकड़ा रखे.

इसके बाद साधक गुरूपूजन तथा गुरूमंत्र का जाप सम्पन्न करे और निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे.

ॐ हं रं हं फट(om ham ram ham phat)

मंत्र जप पूर्ण होने पर साधक काली हल्दी के टुकड़े को किसी मंदिर मे रख आये

==

Process for Fear Mitigation (Bhay Shaman Prayog)

There is difficult to find a person who can say truly that there is no internal fear or suspicion, and fear is among eight Pash in which life of every human is bound. Thus, by keep on doing prayog like this, not only fear is vanished but life also becomes easier and by being free from the unknown fear one may enjoy the happiness of the life. Presented process is to remove unknown fear and suspicions.

This process could be started on any auspicious day. Sadhak can select any time of day or night for this process.

After having bath, sadhak should sit on the red sitting mat wearing red cloths facing the north direction. One should place piece of the black turmeric in front.

After this, sadhak should do guru poojan and guru mantra chanting and should complete following mantra's 21 rosaries.

om ham ram ham phat (ॐ हं रं हं फट्)

When mantra chanting is completed, sadhak should place that black turmeric in some temple.

पीपल - पितृ कृपा प्रयोग

PiPal – pitr kripa prayog sadhana

पितृ कृपा प्राप्ति के लिए एक आवश्यक साधना

यह वृक्ष तो मानो के लिए एक अमृत वृक्ष की तरह हैं और सभी इसको जानते और पहचानते हैं ही और इस वृक्ष की सहायता से कितने का असाध्य रोगनिवारण , बीमारिया , कुपित ग्रह की शांति,सौभाग्य प्राप्ति की साधनाए संभव हैं यह वृक्ष अत्याधिक ऑक्सीजन से सम्पन्न होता हैं और इसके गुणों को लिखना मानो एक पूरे ग्रन्थ को लिखना जैसा हैं .और इस वृक्ष जो सम्पूर्ण जीवित जगत के लिए एक वरदान हैं उसके कुछ तांत्रिक प्रयोग आप सभी के लिए..

पितृ कृपा प्राप्ति प्रयोग

जीवन का सौभाग्य हैं की हमें हमारे पूर्वजो का आशीर्वाद न केवल प्राप्त हो बल्कि वह हमारे जीवन मे सहयोगी भी बने क्योंकि किसी भी अन्य देव शक्ति की तुलना मे वह हमारे ज्यादा करीब होते हैं और हम उनके रक्त सबंधित जो हैं.

आज के इस समय मे लोग इन मान्यताओं को बहुत अधिक ध्यान नही देते हैं पर इसका दुष्परिणाम भी उनको सहन करने पड़ता हैं क्योंकि आखिर अपनी ही जड़ो से वैर रखना या अवहेलना कोई उचित तो नही कहा जा सकता हैं .और एक बार इनकी कृपा के लिए यह प्रयोग करके देखें ..स्वयं अनुभव करें की कितना लाभ पाया या अनुकूलता पायी जा सकती हैं. इस प्रयोग को साधक किसी भी पूर्णिमा की रात्रि को या रविवार के दिन या रात्रि के कोई भी समय किया जा सकता है.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण कर सफ़ेद आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख पूर्व दिशा की तरफ हो.

साधक अपने सामने पीपल का एक पत्ता रखे जिसके ऊपर थोड़ी सी खीर रख दे. इसके बाद साधक शुद्ध घी का एक दीपक प्रज्वलित करे. गुरूपूजन गुरू मंत्र के बाद साधक को निम्न मंत्र की२१ माला मंत्र जाप करे. इसके लिए साधक को रुद्राक्ष माला का प्रयोग करना चाहिए.

ॐ श्रीं पितृ मोक्षं ह्रीं नमः(om shreem pitr moksham hreem namah)

मंत्र जाप के बाद पत्ते सहित खीर किसी गाय को खिला दे अगर यह संभव नही हो पाए तो साधक को इसका विसर्जन नदी, तालाब या समुद्र मे कर देना चाहिए.

==

Peepal (sacred fig)

This tree is like tree of nectar and everyone knows and recognizes this plant and with help of this plant so many processes are possible like removal of diseases, bad planet effects removal, good fortune gaining. This tree is full of oxygen and to write about qualities of this tree is like written a whole book. And the tree which is like boon for whole world, tantra process of the same…

Vat Vriksha – itr yoni darshan paryog

इतर योनी से सबधित एक सरल प्रयोग

यह भी मानव जाती के लिए एक वरदान ही हैं ,इस वृक्ष की अद्भुतता तो जगत विख्यात हैं और अपने नाम के अनुरूप यह वृक्ष अनेको तंत्र क्रियाओं मे सहयोगी हैं,आसानी से पाए और पहचाने जा सकने वाले इस वृक्ष से सबंधित इस प्रयोग आप सभी के लिए .....

इतर योनी दर्शन प्रयोग

अनेको साधको की यह इच्छा रहती हैं की उन्हें इतर योनी के दर्शन हो ही और इस तरह उनका इस तरह इस अदृश्य जगत पर ना केवल पूरा विश्वास बन् सकें बल्कि वह संदेह और असंदेह के बीच मे झूलने से बच सकेंऔर यह गलत भी नही हैं क्योंकि संशय किसी भी दृष्टी से उचित नही कहा जा सकता हैं.

और इन योनियों से भय खाने की आवश्यकता नही हैं ,सदगुरुदेव कहते हैं की ये तो स्वयं अपने छुटकारे के लिए अत्याधिक बेचैन रहते हैं .तो इस सरल से प्रयोग को करके साधक को एक अद्भुत अवसर मिल ही जाता हैं की वह इनके दर्शन कर सकें . यह प्रयोग किसी भी अमावस्या को करना चाहिए.

साधक वट वृक्ष की लटकती हुई शाखा जिसे जटा भी कहते है उसे तोड़ लाये

रात्रिकाल मे स्नान आदि से निवृत हो कर साधक उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाये साधक के वस्त्र तथा आसन सफ़ेद रंग के रहे. इसके बाद उस शाखा को बाएं हाथ मे पकड़ कर दायें हाथ से रुद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्रजाप करना है.

ॐ हूं हूं फट(om hoom hoom phat)

मंत्र जाप पूर्ण होने पर साधक उस शाखा को अपने तकिये के नीचे रख कर सो जाये तो स्वप्न मे विविध प्रकार के इतर येनी के दर्शन होते है. दूसरे दिन शाखा को जल मे प्रवाहित करदेना चाहिए, माला का कई कई बार उपयोग किया जा सकता है.

==

Vat Vriksh (Banyan tree)

This too is boon for the human, greatness of this tree is famous in the world and as per the name, it has vital uses in many tantra processes, easily available and identified this tree, tantra process related to this presented here for you…

Process to see Spirits (Itar Yoni Darshann Prayog) –

Many sadhaka wishes that they become able to see itar yoni or spirits and this way, they may save them self from suspicion and belief of the astral world and can make their belief stronger. And this is not wrong too because suspicion could not be granted right. And one needs not to fear from these various spirits. Sadgurudev often said that these are curious to get freedom relief of the self. Thus, by attempting this process sadhaka receives chance to see them. This process could be done on any full dark moon night.

Sadhak should take one of the branches which keep on hanging on this tree.

अनार - सौभाग्य वृद्धि प्रयोग

AnAAr - soubhagy vriddhi prayog

सौभाग्य वृद्धि का एक और प्रयोग

यह भी न केवल आसानी से पाया जा सकने वाला वृक्ष हैं बल्कि इस वृक्ष के फल तो सारे भारत मे मिलते हैं और अत्यंत ही सुस्वादु होते हैं और इस वृक्ष की लकड़ी की कलम तो यंत्र जगत मे एक आवश्यकउपकरण हैं जिसके माध्यम से यंत्रों का लेखन संभव होता हैं .न केबल यह बल्कि तंत्र जगत मे इसके सबधित प्रयोगों की भी बहुतायत हैं और ऐसे कुछ दुर्लभ प्रयोग जो आपके लिए अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं आज आपके लिए ही..

सौभाग्य वृद्धि प्रयोग

सौभाग्यवान भव या सौभाग्यवती भव यह शब्द सुन कर किसका मन मयूर ना नाच उठे,पर क्या हर आशीर्वाद का फल होता हैं यकीनन अब कम या ज्यादा यह अलग बात हैं पर पूरा असर तो उस आशीर्वाद को देने वाले की सामर्थ्यता पर ही निर्भर करता हैं ,और एक कहावत भी हैं की एक अच्छा भाग्य या समय वह आपके लिए सकता हैं जो आपके लिए हज़ार लोग भी नही कर सकते हैं,और यह बात न केबल साधना जगत बल्कि जीवन के हर पहलू पर लागू होती हैं क्योंकि अच्छा भाग्य की क्या बात हैं पर अब जो भाग्य मे लिखा हैं उसे क्या बढ़ाया जा सकता हैं ,जी हाँ यह संभव हैं इस प्रयोग को करके लाभान्वित हो कर देखें और अनुभव करें. यह प्रयोग किसी भी सोमवार को या शुक्रवार को किया जा सकता है. समय रात्रि मे ९ बजे के बाद का रहे,

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्र पहने तथा सफ़ेद आसन पर बैठ जाये. दिशा उत्तर रहे.

साधक अनार की एक डाली ले, उसके ऊपर सिन्दूर लगाये तथा अपने सामने स्थापित करे

इसके बाद साधक सौभाग्यमाला या स्फटिक माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जाप करे

ॐ ग्लौं नमः (om glaum namah)

साधक को यह क्रम ३ दिन रखना चाहिए, इसके बाद साधक डाली को पूजा स्थान मे रख दे, एक महीने के बाद उसे प्रवाहित कर दे.

===

Anaar (pomegranate) –

This too is not only easily available plant but fruit of this plant could be found in whole india and are very sweet and with wood of this tree, pen is prepared by which yantra preparation is done which is very famous material in the world of the yantra. Not only this, but in tantra world too this plant has many uses and such rare processes are very essential. Just for you…

Process for the growth of Fortune (Saubhagy Vriddhi Prayog)

One may have big joy after receiving bliss of growth in fortune by 'Saubhagy Vaan Bhav' or 'Saubhagy vati bhav' does this bliss works? For sure, it does.

अनार - धन प्राप्ति प्रयोग

anaar – dhan prapti prayog

धन प्राप्ति का एक और प्रयोग

धन प्राप्ति से कौन वंचित रहना चाहता हैं हर कोई अधिक से अधिक से अधिक धन चाहता ही हैं क्योंकि इसके अधिक धन होने मे या संपत्तिवान होने मे तो कोई बुराई नही हैं बल्कि यह तो साधक या व्यक्ति के विवेकपर निर्भर करता हैं की इस धन का क्या उपयोग किया जाए ,और जीवन को सरल युक्त प्रसन्नता युक्त लगातार बनाये रखने मे इस धन की उपयोगिता तो हैं ही और यह प्रयोग आपके जीवन को धन युक्त करने मे अपनी भूमिका निभाता हैं ही और अनुकूलता के अवसर लाता हैं. यह प्रयोग साधक किसी भी शुक्रवार से शुरू करे. समय रात्रि मे ९ बजे के बाद का रहे.

स्नान आदि से निवृत हो कर साधक सफ़ेद वस्त्र को धारण कर सफ़ेद आसन पर बैठ जाए, गुरू पूजन तथा गुरू मंत्र जाप के बाद साधक एक अनार की डाली को ले कर अपने सामने स्थापित करे. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए,

इसके बाद साधक उस डाली का पूजन करे तथा निम्न मंत्र की कमलगट्टे की माला से ५१ माला मंत्र जाप सम्पन्न करे

ॐ श्रीं सिद्धिं नमः (om shreem siddhim namah)

मंत्र जाप के बाद साधक उस डाली को पूजा स्थान मे स्थापित कर दे तथा यथा संभव रोज कुछ देर उपरोक्त मंत्र का जाप इस डाली के सामने अवश्य करे. एक हफ्ते बाद उस डाली को प्रवाहित कर दे.

==

Process for Wealth Gaining

Who would not like to have wealth one needs more and more wealth because being more wealthy is not something bad but it depends on the sadhak or person that what that wealth would been used for. And to make life more joyful and easier, need of the wealth is definite. This process plays a role to make your life more wealthy and provides days of the compatibility. This process should be started from any Friday. Time should be after 9 PM.

After having bath sadhak should wear white cloths and should sit on the white sitting mat. After Guru poojan and Guru mantra chanting, one should establish branch of the pomegranate. Sadhak should sit facing north direction.

After that sadhak should do poojan of that branch and with lotus seeds rosary (KamalGatta) one should chant 51 rounds of the following mantra.

om shreem siddhim namah (ॐ श्रीं सिद्धिं नमः)

after mantra chanting sadhak should place that branch in the worship place and daily for some time the above mantra should be chanted in front of that branch according to will and possibilities. After one week that branch should be immersed.

अनार - यश प्राप्ति प्रयोग

AnAAr - yash prapti paryog

सभी के लिए अनिवार्य हैं यह प्रयोग

जीवन मे कुछ प्रारंभिक आवश्यकताओ की पूर्ति के बाद हर व्यक्तिया का यह स्वप्न होता हैं की उसका नाम समाज मे हो लोग उसे जाने उसकी ओर आदर से.सम्मान से देखें पर यह कैसे संभव हो और इस असंभव चीज को जो संभव बना सकें उसके लिए ही तो यह सरल दुर्लभ प्रयोग हैं और इस तरह के प्रयोग को तो हर साधक को अपेन जीवन मे स्थान देना ही चाहिये ताकि जीवन यश से परिपूर्ण रहे यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन शुरू कर सकता है, जिसे दिवस या रात्रि के किसी भी समय किया जा सकता है

साधक के वस्त्र तथा आसन सफ़ेद रंग के हो तथा साधक को पूर्व दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए

एक अनार की डाली को अपने सामने किसी पात्र मे स्थापित करे तथा उसके ऊपर सफ़ेद चन्दन का लेप लगाये. उसका सामान्य पूजन करे तथा उसके बाद निम्न मंत्र का५१ माला जाप करे

यह मंत्र जाप स्फटिक माला से होना चाहिए,

ॐ श्रीं ऐं (om shreem aeng)

दूसरे दिन साधक डाली को पानी मे विसर्जित कर दे.

==

Process to increase Glory (yash prapti prayog)

In life, after fulfilling basic needs of the life, it becomes dream for everyone to have their name in the society; people get to know about self, to receive respect and regards but how it becomes possible? To make this difficult thing possible, this is the easy process and such processes must be given place in the life of the sadhaka thus life remains full of the glory. This process could be started by sadhaka on any auspicious day, and could be completed on any time of day or night.

Cloths and sitting mat of the sadhaka should be white in colour and sadhak should be sitting facing east direction.

Sadhak should establish branch of the pomegranate in some vessel and should apply paste of white sandal on it. Do normal poojan of the same and after that 51 rounds of the following mantra should be chanted.This mantra chantings should be done with crystal rosary.

om shreem aeng (ॐ श्रीं ऐं)

On next day, sadhak should immerse the branch in water.

पलाश - धन प्राप्ति प्रयोग

Palaash - dhan prapti prayog

एक

इस वृक्ष भी बहुत पाया जाता हैं खासकर मध्य भारत मे तो इसके अनेको पेड़ हैं और इसके फूल से तबने रंग का तो होली आदि पर्व मे बहुत प्रयोग होता हैं,जब इस वृक्ष पर फूल आच्छादित होते हैं तो इसकी शोभा देखने योग्य होती हैं और इस वृक्ष से बंधित कुछ दुर्लभ तंत्र प्रयोग जी की तीव्र प्रभावदायक हैं आप सभी के लिए....

धन प्राप्ति प्रयोग

एक बार फिर यह प्रयोग एक नए सामग्री से .यह तो सौभाग्य हैं की जीवन मे धन प्राप्ति के इतने प्रयोग हमें प्राप्त हो रहे हैं और हमें इनका लाभ उठाना ही चाहिए ताकि जीवन समृद्धता से परिपूर्ण रहे और इन प्रयोगों को तो लगातार करते रहना ही चाहिए ही .क्योंकि धन कीआवश्यकता तो भौतिक जीवन मे पल प्रतिपल हैं ही और जो भी ठोस भौतिक प्रगति और यहाँ तक की आध्यात्मिक प्रगति दिखाई देती हैं उनके मूल मे कहीं न कहीं धन का कुछ तो आधार रहता ही हैं .

यह प्रयोग साधक किसी भी शुक्रवार की रात्रि को कर सकता है.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर रात्रि मर ९ बजे के बाद यह प्रयोग प्रारंभ करे. साधक के वस्त्र तथा आसन लाल हो. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए

साधक सर्व प्रथम गुरूपूजन तथा गुरूमंत्र का जाप करे.साधक को अपने सामने देवी लक्ष्मी का चित्र और अगर संभव हो तो यन्त्र स्थापित करना चाहिए

इसके बाद किसी पात्र मे लाल वस्त्र को रख कर उस पर पलाश वृक्ष की शाखा का एक टुकड़ा रखे उस पर सिन्दूर से 'श्रीं' लिखे तथा निम्न मंत्र की साधक को ५१ माला जाप सम्प्पन करना है. मंत्र जाप के लिए कमलगट्टे की माला का प्रयोग करे.

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं नमः (om shreem shreem shreem namah)

प्रयोग पूर्ण होने पर, दूसरे दिन वह टुकड़ा प्रवाहित कर दे

==

Palaash(Butea monosperma)

This tree is also found in big quantity especially in Madhya Pradesh and color made from flower of this plant is used vitally during festival of Holi. The tree looks beautiful when flowers are formed on it and rare tantra process related to this plant for you…

Process for Wealth Gaining (Dhan Prapti prayog)

Once again this process with the help of new material. It is fortune that we gain so many processes related to wealth gaining in the life.

अपराजिता - विद्या प्राप्ति प्रयोग

ApTAjitA - vidya prapti prayog

विद्या प्राप्ति के लिए एक आवश्यक प्रयोग

धन और यश के लिए जो एक बात आधार बन् सकती हैं वह हैं विद्या ...अन्यथा यश और धन कितनी देर ठहर सकता हैं इसलिए हर साधक या व्यक्ति को अपने जीवन मे विद्या प्राप्ति के लिए तो जितना संभव हो उतना प्रयास करना ही चाहिए ही .क्योंकि विद्याहीन जीवन का क्या अर्थ .और जब बात विद्या की हो तो सर्वांगीण रूप मे हो न की केबल उदर पूर्ति के लिए ही हो या वाली हो ....जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श करती हो तो बात हैं .

यह प्रयोग किसी भी सोमवार के दिन शुरू किया जा सकता है. साधक यह प्रयोग सुबह ब्रह्ममुहूर्त मे शुरू कर सकता है या फिर रात्रिकाल मे ९ बजे के बाद.

इस प्रयोग मे साधक को सफ़ेद वस्त्र धारण करने है तथा सफ़ेद रंग के आसन का प्रयोग करना है. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ रहे.

साधक अपने सामने अपराजिता बेल का लगा हुआ पौधा रखे (गमले के साथ, अर्थात यह पौधा टुटा हुआ ना हो तथा इसको उगाया जा सके). तथा उसके सामने निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे. मंत्र जाप मे स्फटिक माला का प्रयोग हो.

ॐ ऐं क्लीं स्त्रीं फट(om aeng kleem streem phat)

साधक को इस प्रकार ३ दिन मंत्र का जाप करना चाहिए, बेल को किसी गमले आदि मे रखा जाए तथा उसे नियमित पानी तथा खाद आदि देना चाहिए. जैसे जैसे बेल बढती जायेगी वैसे वैसे मनुष्य का ज्ञान भी बढ़ता जाता है.

===

Aparaajita (clitoria ternatea)

Process to increase knowledge (Vidya Prapti Prayog) –

For wealth and glory, the thing which forms a base is Knowledge…or else, how long the stability of the wealth and glory would stay. Thus, every person or sadhaka should stay active to attain as much knowledge as possible. Because there is no use of life without knowledge. And when there is matter about knowledge, it has to be something more than just a passing of the life…Knowledge covering all the aspects of the life. This process could be started on any Monday. Sadhak can start this process in early morning (bramhamuhurta) or after 9 PM.

In this process, sadhak should wear white cloths and should use white colored sitting mat. Sadhak should sit facing north direction.

Nibu - nazar dosha nivaran prayog

एक आवश्यक विधान जो सभी के लिए उपयोगी हैं

इसकी उपयोगिता से कौन नही परिचित होगा, घर घर मे उपयोगी इस फल की बात ही निराली हैं ..

नजर निवारण प्रयोग

अब कोई माने या ना माने पर इस का असर तो होता हैं क्योंकि धनात्मक और ऋणात्मक उर्जा एके कई कई रूप हो सकते हैं हलाकि अनेको लोग स्पस्ट रूप से इस बात को नकार देते हैं पर यह भी सत्य हैं की अनेको ने इसका असर और इसके निवारण करते हुये नाको को देखा हैं .खासकर बच्चो को ,कन्याओं को यह असर हो जाना अधिकतर पाया जाता हैं.

अनेको बार इस कारण यहाँ तक की सबंधित व्यक्ति पर आधुनिक दवाई तक असर नही कर पाती हैं .तो इस के निवारण के लिए भी यह प्रयोग आप सभी के सामने हैं .साधक सर्व प्रथम निम्न मंत्र का जाप किसी भी मंगलवार के दिन रात्रि मे १० बजे के बाद ५१ माला करे. इसमें वस्त्र आसन लाल रहे तथा माला मूंगा की हो. दिशा उत्तर हो तथा सामने भगवान हनुमान का चित्र रखा हुआ हो.

हं हं कष्टभंजनाय फट(ham ham kashtaBhanjanaay phat)

अगर किसी को नज़र लगी हुई है या नज़र लगने की शंका हो तो एक निम्बू लेना चाहिए. उस निम्बू को सिन्दूर से पोत दे. तथा निम्बू को हाथ मे पकड़ कर मंत्र का एक बार उच्चारण कर के सबंधित व्यक्ति के सर पर से घुमाए, इस प्रकार ग्यारह बार करे अर्थात एक बार मंत्र बोल कर एक बार सर से घुमाए इस तरह निम्बू ११ बार घूमना चाहिए. बाएं से दाईं तरफ़उच्चारण मानसिक रूप से भी किया जा सकता है. इसके बाद उस नीबू को प्रवाहित कर दे. नज़र दोष का शमन होता है.

==

Nimbu (lime)

Who is not aware of the use of this plant, it is known in every house for its fruits…

Process for the removal of Negative sight trouble (najar nivaaran prayog) –

Either one may have belief or don't but this effects because there are many types of positive and negative energies, however many of the people neglect this fact, but that is even fact that many people have seen many of the people suffering and applying solution of this trouble, this trouble is basically found to be held on women and children. Much time, because of this reason, there remains no effect of any medicine on the affected person. So, for the removal of this problem too, this process is presented. Firstly, sadhak should chant 51 rosary of the following mantra on Tuesday night after 10PM. Cloths should be red and rosary should be coral rosary. Direction should be north and picture of lord hanuman should be in front.

कमल - धन प्राप्ति प्रयोग

Kamal - dhan prapti parayog

धन प्राप्ति प्रयोग जो सरल और प्रभाव युक्त ..

आज कौन होगा जिसने इसको न देखा हो और इसकी सुंदरता पर मुग्ध न होगया हो अपने आप मे अत्यंत सुन्दर इस फूल और इसके बीज का कितने तांत्रिक ग्रंथो मे उपयोग मिलता ही हैं और यह भी आसानी से आज उपलब्ध हैं ,और दीपावली आदि शुभ महूर्त मे तो या अन्य अवसरों मे कमल का उपयोग करना तो सौभाग्य को बढ़ाना ही हैं .कुछ दुर्लभ प्र्योग आपके लिए ...

धन प्राप्ति प्रयोग

धन प्राप्ति का यह दुर्लभ प्रयोग वह भी कमल जोलक्ष्मी का ही प्रतीक माना जाता हैं इसके माध्यम से भी क्या धन प्राप्ति संभव हैं? यह अद्भुतता और दुलाभ्ता आप सभी एक सामने ताकि सभी का जीवन जितना संभव हो उतना धन युक्त तो हो ही जिससे की सभी साधना मार्ग पर बिना किसी अर्थ की चिंता के चल सकें .

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार की रात्रि मे किया जा सकता है.

साधक को रात्रि मे १० बजे के बाद स्नान कर के लाल वस्त्र पहिन कर लाल आसन पर बैठना चाहिए.

अपने सामने साधक २१ कमल के पुष्प रख दे तथा सभी मे थोडा थोडा शुद्ध घी डाल दे

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जाप करे. जाप के लिए कमलगट्टे की माला का प्रयोग करे.

श्रीं कमलात्मीकायै धन धान्य सिद्धिम नमः (om kamalaatmikaayai dhan dhaany siddhim namah)

इसके बाद साधक अपने सामने अग्नि प्रज्वलित करे तथा उपरोक्त मंत्र के उच्चारण करते हुवे रखे हुवे कमलों की आहुति उस अग्नि मे दे. हर एक आहुति देते समय एक बार मंत्र का उच्चारण हो, इस प्रकार २१ आहुतियाँ देनी है.

प्रयोग समाप्ति पर निर्माल्य तथा माला को विसर्जित कर दे.

==

Kamal (Lotus)

Today there would be no one, who watch this, and do not fascinate on the beauty of it. There is much reference for this beautiful flower and a seed of the same in tantra scriptures and this plant is also easily available. And in dipawali and other auspicious moments, use of the lotus increases fortune. Rare process for you…

Process for wealth gaining (Dhan Prapti Prayog) –

Process for wealth gaining and that too with the lotus which is believed to be form of the Lakshmi. Is it possible to gain wealth with this flower too? This great and rare procedure in front of all with which everyone can have wealth in the life and can move forward in the sadhana life without tension of the wealth.

This process could be started on Friday night.

After 10 in the night, sadhak should have bath and wearing red cloths, should sit on the red sitting mat.

AstrologicAl combinAtion ...A view

ज्योतिष योग मे एक विचार

नव ग्रहों से प्रभावित हमरा यह विश्व अपने आप मे एक अद्भुत ही रचना हैं.और जब बात इस विश्व की आती हैं तो स्वाभाविक हैं की मानव तो उसमे एक प्रमुख भूमिका निभाता ही हैं.और उसकी हर दु:ख तकलीफ और सुख जीवन के उच्चता और निम्नता सभी को बहुत आसानी से इस के परिपेक्ष्य मे देखा जा सकता हैं .और ऐसे अनेक उदाहरण भी हैं जहाँ ज्योतिष गणनाओ ने अपना लोहा मनवाया भी हैं .

पर इन ज्योतिष गणनाओ मे एक बहुत बड़े स्तर की भूमिका ज्योतिष योग निभाते हैं जिनको सही सही किसी भी कुंडली मे प्रयुक्त कर पाना बहुत ही कठिन कार्य हैं . पर यथा संभव हर ज्योतिष इस कार्य को अपनी स्थिति के अनुसार करता भी हैं .और उसे करना भी चहिये पर यह कार्य इतना सरल भी तो नही हैं .क्योंकि ज्योतिष के हर विभाग की वह चाहे फलित ज्योतिष हो या अंक ज्योतिष हो या तंत्र ज्योतिष हो कहीं न कहीं एक सीमा तो हैं ही .और हर नियम हर किसी पर लगा दिया जाए और वह हर काल परिस्थिति मे सभी पर सही उतरे ही ऐसा तो नही कहा जा सकता हैं .क्योंकि कोई भी अपने आप को पूर्ण किसी एक विधि मे भी नही कह सकता है और ऐसे अनेक उदाहरण हैं की जब अति उच्च स्तर के साधक और ज्योतिष की भी बात उतनी सत्य नही हुयी .

क्योंकि कहीं न कहीं कुछ तथ्य रह ही जाते हैं . और बात चाहे हस्त रेखा की हो या ज्योतिष के किसी भी विभाग या उप विभाग की उसमे हर बात का एक अर्थ हैं और किसी भी तथ्य को नज़र अंदाज नही किया जा सकता हैं.क्योंकि न मालूम उस एक तथ्य पर ही सारी बात टिकी हो.और कुछ बातें ऐसी की ...ज्योतिष योग की हैं . जब किसी भी कुंडली मे ज्योतिष योग लगाकर फलित कहा जाता हैं तब अनेको ऐसे तथ्य हैं जिनका थोड़ी सा भी भूल जाना फल कथन मे कई कई गुणा अंतर ला देता हैं.और व्यक्ति स्वयम भी कई कई बार यह अनुभव करता हैं की जो उसके बारे मे कहा गया हैं वह अनेको बार सही नही उतरा .क्योंकि हर शास्त्र की अपनी ही एक मर्यादा हैं की ,जैसे की कर्ण पिशाचिनी सिद्ध साधक हर व्यक्ति की कम से कम भूत काल की बात तो आसानी से बता सकता हैं, पर अनुभव मे आया हैं या सिद्ध साधक जानते हैंकि वस्तुतः अगर प्रश्न कर्ता यदि भगवती बल्गामुखी सिद्ध हैं या भगवान हनुमान का उपासक हैं तो अनेको बार उस साधक के लिए यह संभव नही हो पाता हैं की वह किसी ऐसे के प्रश्न का उत्तर दे पाए.क्योंकि हर बात की एक सीमा तो होती हैं ही .सिर्फ किसी ज्योतिष योग को किसी की कुंडली मे देख कर यूँ ही फल कह देने से तो काम नही चलता और व्यवहार मे देखा जाए तो दो प्रकार के ज्योतिष पाए जाते हैं एक तो वह जो किसी भी घटना के फलित होने पर किसी न किसी प्रकार से यहाँ वहां से सिद्ध कर ही देते हैं की ये देखिये की ये तो होना ही था . और अपनी वाह वाही ..यह बहुत आसान हैं .और दूसरी तरफ वह हैं ओ आपके बारे मे अनेको बात तो बतायेगें की आप ऐसे हैं आप वैसे हैं और आपका व्यवहार ऐसा हैं और..अन्य अन्य बाते पर किसी भी घटना जो अभी तक घटित नही हुयी हैं उसके बारे मे संभावनाए बता कर अपना पल्ला झाड लेंगे .

पर किन्ही दोनों वर्गों के बीच कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने इस बात की गंभीरता को समझा हैं की लगतार श्रम और अध्ययन से इस विज्ञानं के कुछ मोती पाए जा सकते हैं किताबे एक हद तक मार्ग दिखा सकती हैं पर स्व अनुभव ही सबसे बड़ा मार्ग दर्शक होता हैं.क्योंकि वह भले ही शास्त्रीय बातें के कुछ विरुद्ध भी दिख रहा हो पर वह कहीं संभावनाओं से जयादा सत्य हैं .यदि तंत्र साधनाओ मे या तंत्र क्षेत्र मे या साधना क्षेत्र मे से सबंधित योगो को देख कर भविष्य देखने की बात हो तो ..आप अनुभव कर पायेंगे की अनेको की कुंडली मे यह योग होते हुये भी उनका इस क्षेत्र की ओर जरा सा भी रुझान नही हैं . तब यह क्यों और ऐसा क्यों ..जबकि अगर पानी १०० डिग्री पर उबलता हैं तो यह नियम पूरे जगह एक जैसा हैं न की किसी देश मे कम तो किसी देश मे जयादा..

बात साधरण सी हैं की जब भी यह योग लगाये जाए सबंधित व्यक्ति की स्थिति ,संस्कार अवस्था उसकी आयु जो वर्तमान मे हैं और कितनी शेष हैं उस पर भी विचार कर लिया जाए आप किसी के बारे मे यह कह रहे हैं की अगली इस इस दशा और अंतर मे वह यह यह बनेगा और मानो उसका जीवन ही वस समाप्त होने वाला हैं तो आपका कथन सत्य होते हुये भी असत्य होने ही जा रहा हैं .

और जो १६ कुंडली का विधान हैं वह वास्तव मे किये जा रहे परिणाम की सूक्ष्मता पूर्वक जांच करने का विज्ञानं हैं पर आज कितने हैं जो नवांश कुंडली के अलावा कोई और कुंडली देख कर फलित कह पाते हैं. और अगर वे सभी अर्थहीन होती तो उनका अर्थ कहा था .यह सोचने वाली बात हैं .

शकुन ज्योतिष ने भी एक उच्चस्तरीय भूमिका निभाना था पर वह भी मानो अंतिम सांसे ले रह हैं वह आपके द्वारा किये गए अनेक परिणाम की भविष्य गत स्थिति स्वत ही पहले बता सकने मे समर्थ हैं.

जहाँ एक प्रश्न बार बार उठता हैं की जब दो बच्चो के जन्म मे बहुत ही कम अंतर हो मानलो एक या दो मिनिट तब क्या इतनी आसानी से उनका योग पर आधारित भविष्य कहा जासकता हैं. साधारण रूप से सभी कह देते हैं की हाँ क्यों नही वह वह कुंडली तो अलग होगी ना पर जब सामने जुड़वाँ बच्चे लाये जाए तब अनेको को तो कहते नही बनता की अब क्या कहें ..वास्तव मे देखा जाएय तो इस बाह्य कुंडली के अतिरिक्त भी एक ओर कुंडली हैं जिसे बीज कुंडली या गर्भ कुंडली कहा जाता हैं और वह कहीं जायदा वास्तविकता से इस प्रश्न का उत्तरदेती हैं पर क्या हर ज्योतिष बीज कुंडली या गर्भ कुंडली के निर्माण विधि जानता हैं. यह विचारणीय प्रश्न हैं तव..??

क्या हर व्यक्ति को शनि की साढ़े साती से डरा ही जाए यह भी तो एक प्रश्न सामने आ खड़ा होता हैं जबकि हम जानते हैं की अनेको को इस अवस्था मे बहुत लाभ होता हैं और कई कई पूरी तरह से वर्बाद भी हुये..यहाँ यह नियम नही चलेगा की शनि आपकी कुंडली मे यह यह और ऐसे हैं.वास्तव मे देखा जाए तो ..अब जब अनेको शास्त्र काल कवलित हो गए और आज के नए ज्योतिषो मे वह अनुसन्धान की बात नही रही तब ऐसा तो होगा ही .

वस्त्तः .. FEAR OF FAILURE सबसे बड़ा भय हैं जो किसी को भी अनुसन्धान करने से या यूँ कहूँ की अपने द्वारा किये गए भविष्य फल की गलती स्वीकार करने से रोकता हैं.क्योंकि किसी न किसी तरह किसी भी योग या नियम का सहारा ले कर अपनी बात सही सिद्ध करवा देना एक अलग बात हैं पर.एक निष्पक्ष दृष्टी से अपने किये गए गलत भविष्य फल को देखना समझना बहुत कठिन हैं और जिसे आगे जाना हैं वह इस बात को सबसे सामने रक्खेगा और अपने अनुभव से स्वयं सिखता चल जायेगा.और यह कहीं जयादा सही होगा .अतः सिर्फ ज्योतिष योग नही बल्कि अपने स्व अनुभव जो हुये हैं उनका सहारा ले कर.आज की परिस्थितयां का सहारा लेकर परिणाम कहना कहीं जयादा उचित हैं .न की बाबा वाक्य प्रणाम का हमेशा आधार लिया जाए ..कुछ मूल भूत बातें को हमेशा ध्यान मे रख जाए..तब कहीं बाते और भी सत्यता के नजदीक होगी .

===

Astrology and combination of planets in today's life.

This universe is a very miraculous conception with influence of nine planets. And when we talk about this world, we must talk about human being who plays a significant role in this world.

SWARN RAHSYAM -13

कनकावती साधना रहस्य

तंत्र जगत आश्चर्यों से भरा हुआ एक ऐसा सागर है जहाँ पर विविध साधना रूपी रत्न अपनी अपनी चमक और शक्तियों से साधको को अभीभूत ही किये रहते हैं. और कई रत्न तो सच में ही अद्भुत हैं. अद्भुत हैं अपनी भौतिक और अध्यात्मिक शक्तियों को एक साथ ही प्रदान करने के गुणों के कारण. रस-शास्त्र की खोज में जब मैंने अपनीयात्रा सदगुरुदेव के आदेश पर प्रारंभ की तो मुझे एक बात प्रारंभ में ही समझा दी गयी थी की या तो पूर्णता पाने के लिए इस पथ पर आगे बढ़ो और लक्ष्य को पा कर ही रुकना ,और अगर बीच में इस राह को छोडना हो तो बेहतर है की इस पर चलने का विचार ही छोड़ दो . अब जब तय कर लिया था की लक्ष्य को प्राप्त करना ही है तो ये भी जरुरी था की इस मार्ग के विविध रहस्यों को भी जान लिया जाये. और मुझे पता था की ये सबइतना सहज नहीं है. मैंने कभी अपने किसी वरिष्ट गुरु भाई को ये कहते हुए सुना था की यदि रस शास्त्र के रहस्यों को समझना हो या गुप्त रहस्यों को आत्मसात करना हो तो तब एक ही साधना आपका अभीष्ट पूरा कर सकती है .... और वो साधना “कनकावती साधना” है.

मैं हुमस कर अपने उन गुरु भाई से उस साधना के बारे में पूछने लगा, क्यूंकि मैंने ये तथ्य पहले भी सुना और पढ़ा था और उस ज्ञान को पाने का लालच ही मुझे उन महोदय तक ले गया था.पर उन्होंने झिडक ही दिया .और ये कहा की तुम इस साधना के योग्य ही नहीं हो.

बुरा तो मुझे बहुत ही लगा और ये वो दौर था जब सदगुरुदेव किसी खास कारण से अज्ञात वास पर थे . मुझे बेसब्री से उनके आगमन का इंतजार था पर तब तक हाथ पर हाथ धरे भी तो बैठा नहीं जा सकता था. इसलिए मैं तंत्र शास्त्र के प्राचीन ग्रंथो में इस दुर्लभ साधना की विधि को ढूँढने लगा. महाकाल-संहिता , तंत्र महोदधि, तंत्रमहार्णव,मंत्र महार्णव, यक्षिणी महातन्त्रं,काम काली विलास,मन्त्र सागर ,मेरु तंत्र ,मात्रिका तंत्र, रुद्रयामल तंत्र , दत्तात्रेय तंत्र, स्वछंद तन्त्रं,स्त्री तन्त्रं आदि सैकडो ग्रन्थ मैंने टटोले पर कुछ ऐसा मुझे नहीं मिला जो मेरे चित्त को शांत कर पाता. ४-५ विधियाँ मिली भी तो उनका प्रयोग करने पर ऐसा कुछ नहीं हुआ जिसे विशेष कहा जाता . मुझे हमेशा एक बात की शिकायत रही की इन ग्रंथों में विधियाँ हमेशा पूरी तरह नहीं बताई जाती और मन्त्र शुद्ध है या नहीं ये भ्रम भी हमेशा बना रहता है . और आप सभी जानते हैं की भ्रम युक्त साधना असफलता ही देती है .

इसी समय मेरी मुलाकात कालिदत्त शर्मा जी से हुयी जो आसाम के प्रसिद्द तांत्रिक और रस शास्त्री थे. मैंने जब इस साधना और इसके प्रभाव के बारे में पूछा तो उन्होंने भी यही कहा की इस साधना के द्वारा साधक को जहाँ तंत्र जगत की एक अद्भुत सिद्धि मिल जाती है वही इसके प्रभाव से भौतिक जीवन मेंपूर्णता तो मिलती ही है मतलब आर्थिक निश्चिन्तता आदि पर इसके साथ ही ये देवी साधक को तंत्र और रस शास्त्र के ऐसे ऐसे रहस्यों से परिचित करती है की बस साधक हतप्रभ ही रह जाता है . मैंने जब उनसे इसकी विधि पूछी तो उन्होंने भी अपने हाथ खड़े कर दिए . मैंने उनसे कहा की मुझे इस दुर्लभ साधना का रहस्य आखिर कहाँ मिलेगा . उन्होंने कहा की इस गोपनीय साधना का सम्पूर्ण रहस्य

सिर्फ सदगुरुदेव ही जानते हैं और उन्होंने इससे सम्बंधित ज्ञान अपने शिष्यों को शिविर में भी दिया है , एक पउर सत्र और शिविर ही इस विद्या पर आयोजित किया था . ये सुनने के बाद मैं कई पुराने गुरु भाइयों से मिला और उनसे इस शिविर के प्रयोग के बारे में पूछा भी . कहा तो सभी ने की हाँ सदगुरुदेव ने करवाया था और सभी रहस्यों को बताया भी था पर हम नहीं बता सकते. थक हार कर मैं उदास मन से जोधपुरचला गया .वह मैं ४-५ दिन ही गुरुधाम के पास रुका रहा .

एक सुबह जब मैं प्रातः काल ही सदगुरुदेव के निवास पर पंहुचा तो सेवक ने बताया की सदगुरुदेव आ गए हैं . मैं बैचेनी से उनसे मिलने की राह देखने लगा .लगभग ९.३० बजे सदगुरुदेव ने मुझे बुलाया . मैंने चरण स्पर्श किया और अश्रुपूरितनेत्रों से उन्हें देखने लगा .

कनकावती साधना के बारे में जानना चाहता है – सदगुरुदेव ने कहा .

जी......

क्या जानना है –सदगुरुदेव ने कहा.

जी सभी कुछ...

ठीक है ... मैं तुझे इसके सभी रहस्य बता रहा हूँ, तू उन्हें लिख ले.

फिर सदगुरुदेव इस अद्भुत विद्या के रहस्य पर प्रकाश डालने लगे . उन्होंने कहा की ये साधना तीन तरीके से की जा सकती है ...... शास्त्र कहते हैं की सात दिन तक कनकावती यन्त्र के सामने वट वृक्ष के नीचे बैठ कर सहस्त्र संख्या में नित्य जप करने पर देवी प्रत्यक्ष होती है. पर ये मांत्रिक विधि है .इसमें जप के पहले माँ रूपेण, भगिनी रूपेण का भी संकल्प लिया जा सकता है .

पूर्ण मांत्रिक विधि से इस साधना को करने पर ७,११,२१ दिन में संपन्न किया जा सकता है. नित्य ११ माला मंत्र जप होता है . रविवार से ये साधना प्रारंभ होती है .पर इस साधना में वो सिद्ध होगी या नहीं ये उसके ऊपर है . क्यूंकि इसमें साधक मात्र विनीत रहता है .यही विधि ज्यादातर ग्रंथो में वर्णित है.

इस विधि का ही मन्त्र भी प्रचलित है साधकों के मध्य. इसमें सफलता का प्रतिशत ५०-५० रहता है.

तब मुझे क्या करना चाहिए – मैंने कहा

बेटा इस साधना को तांत्रिक पद्धति से संपन्न करने पर ही ये सिद्ध होती है . इस साधना में भार्या या प्रेमिका रूप में ही सिद्ध करने का भाव संकल्प लिया जाता है . मांस और मदिरा का नैवेद्य चढ़ाया जाता है. इस विधि का प्रयोग यदि साधक करता है तो निश्चित ही पहली बार में ही प्रत्यक्ष सफलता मिलती ही है.

हैं..............-मुझसे ये भला कैसे होगा- मैंने कहा.

बेटा तंत्र जगत में इन शब्दों के गूढ़ अर्थ होते हैं. यहाँ पर मांस और मदिरा का अर्थ प्रतीकात्मक है और इसी प्रतिक के कारण ये साधना तांत्रिक साधना कहलाती है . मांस का अर्थ यहाँ नारियल का टुकड़ा और मदिरा का अर्थ गुड मिला हुआ दूधहै .जिसे नैवेद्य रूप में समर्पित करते हैं.

इस साधना के लिए एक विशेष विधि का प्रयोग करता हुआ भोज पत्र पर यन्त्र का निर्माण साधक स्वयं करता है और उसमे मन्त्र के वर्णाक्षरों द्वारा एक विशेष विधि से यन्त्र का कीलन भी करता है . फिर इस यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा कर उसका पूजन रविवार की रात्रि में करता है. याद रहे ये यंत्र किसी और के

द्वारा स्पर्श नहीं होना चाहिए. किसी भी महाविद्या, महाशक्ति , महालक्ष्मी आदि का पूजन रात्रि में ही प्रारंभ होता है . आसन के नीचे वट के १२-१५ ताजे पत्ते नित्य रख देने चाहिए और उस पर रक्त वर्णीय आसन बिछा देना चाहिए. मुख दक्षिण हो .वस्त्र पीले या सफ़ेद हो सकते हैं. जल,लाल फूल, त्रिगंध, नैवेध्य, लोहबान धुप से यंत्र का पूजन होना चाहिए . और पूर्ण वीर भाव से १११ माला जप नित्य ८ दिनों तक

हकिक माला या सर्पस्थिमाला से होना चाहिए. जप एक बार में ही पूरा होना चाहिए. चाहे लघुशंकाकी तीव्र इच्छा हो या मरने वाले हो तब भी एक बार आसन पर बैठ गए तो मन्त्र पूरा करके ही उठना है . पूर्ण मन्त्र में ६.३० घंटे के आस पास लगते हैं. पर याद रहे की मंत्रजाप सूर्योदय के पहले हो जाना चाहिए. इस साधना का मन्त्र भी भिन्न होता है . इस प्रकार उन्होंने और भी कई महत्वपूर्ण

बाते बताई .यंत्र अंकन तथा यंत्र निर्माण की विधि तथा उन गोपनीय मन्त्रों को भी स्पष्ट किया जिसके द्वारा उस यंत्र को संजीवित् तथा प्राण प्रतिष्ठित किया जाता है.सदगुरुदेव ने बताया की इस यन्त्र को ७ स्वर्ण सूत्रों द्वारा बंधा जाता है या ७ द्वार

का निर्माण किया जाता है . ये एक ऐसा रहस्य है जो किसी भी ग्रन्थ में नहीं बताया गया है और उन्ही सप्त सूत्रों का जो विशुद्ध स्वर्ण से निर्मित होते है नित्य प्रति क्रमानुसार पूजन होता है अर्थात पहले दिन पहले सूत्र पर ही पूजन होता है दुसरे दिन दुसरे का, यही क्रम अंतिम दिन तक रहेगा. नैवेद्य के रूप में आटे को घी में भून कर गुड मिला कर उसमे नारियल के टुकड़े डालकर लड्डू बना देने चाहिए तथा साथ में गुड मिश्रित दूधअर्पित करना चाहिए. यही मद्य और मांस का अर्पण है . किसी भी उपचार को अर्पित करते समय मूल मंत्र के आगे उस उपचार का नाम लेकर समर्पयामी कह कर वो वस्तु अर्पित करना चाहिए .यदि घृत का दीप आठ दिनों तक अखंड लगाया जा सके तो अत्युत्तम .

कमरे में ८ दिनों तक कोई नहीं जाना चाहिए आपके अतिरिक्त. और भी बहुत से ऐसे रहस्य हैं जो गुरुदेव ने उद्घाटित किये . खैर उन रहस्यों को जानने के बाद मैंने घर पंहुचकर उन्ही निर्देशों का पालन करते हुए साधना संपन्न की. उन रहस्यों को पालन करते हुए साधना करने पर उस महाशक्ति का पूर्णरूपेण प्रत्यक्षिकरण पहली बार में ही किया और वैसी ही सफलता मिली जिसके बारे में सदगुरुदेव ने बताया था . जिन उपलब्धियों की चाह में मैंने ये साधना संपन्न की वो उपलब्धिया निश्चित रूप से प्राप्त हुयी और निरंतर प्राप्त हुआ है उस दिव्य शक्ति का मार्गदर्शन भी तंत्र और रस शास्त्र के ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में.

कई गुत्थियां सहज ही सुलझ गयी. आज भी उसका अवर्णनीय सहयोग मिलता ही है.विषय लंबा न हो जाये इसलिए लेख संक्षिप्त में लिखा है . मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ की . ऐसा कोई विधान नहीं है तंत्र जगत का जो अप्राप्य या गुप्त रखा गया हो सिद्धाश्रम साधक परिवार में .

हमें गर्व होना चाहिए की हमें ये सूत्र सहज उपलब्ध हैं . मुझे आप सभी के साधनात्मक अनुभवों के विवरण का इन्तजार है. निश्चय ही हम लोगो में बहुत से साधकों के पास साधनात्मक सफलता के अनुभव होंगे .पर वे अभिव्यक्त भी तो किये जाये. हमें वही उदारता बतानी चाहिए जो हमारे प्राणाधार सदगुरुदेव ने ज्ञान प्रदान करने में निरंतर दिखाई है.इसका प्रमाण ये सिद्धाश्रम साधक परिवार का विस्तृत समूह है. इसलिए सच्चे मन्त्र पुत्र बने और अभिव्यक्ति का गुण प्रदर्शित करें. यही तंत्र-विजय यात्रा का लक्ष्य भी है==

SECRETS OF KANKAWATI SADHNA

Tantra World is known as ocean of wonders were various types of stones exist with their shimmer and powers which mesmerize the sadhak like any thing,some of them are really remarkable…and astonished us because they transport worldly and spiritual powers togetherly.With order of Sadgurudev when I started the journey of discovering Alchemy(Ras-shastra) at first sight they make me understand that either footstep on this path only if you want completeness in life else if you are going to leave it in middle pathway then better you leave it now.

सरल लक्ष्मी साधना

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

धन धान्य प्रदाता लक्ष्मी प्रयोग अब इसे एक बार तो करके देखिये

लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी तत्व की महत्वता से कौन इनकार कर सकता हैं,जब भी कोई समर्थ व्यक्तित्व काल के प्रवाह को मोड कर उसे अपने अनुसार बदलना चाहता हैं कुछ अद्भुत या कालजयी या सर्व जन हिताय कुछ भी करना चाहेगा तब उसे लक्ष्मी तत्व का उपयोग तो करना ही होगा, क्योंकि लक्ष्मी तत्व ही ऊर्जा हैं और बिना उर्जा के किसी भी कार्य का सफल होना संभव सा नही हैं,और लक्ष्मी तत्व को तो मात्र धन संपत्ति तक ही नही सीमित करके देखना चाहिए .

बल्कि महालक्ष्मी के १०८ या १००८ स्वरुप कहे गए हैं और इन स्वरूपों मे जीवन की सारी अवस्थाये जीवन मे जो भी शुभमयता हैं वह सारी की सारी आ जाती हैं.फिर वह चाहे एश्वर्य हो या मान सम्मानहो या फिर परिवार मे सुख शांति या योग्य संतान सुख हो या मनचाहे जीवन साथी का पाना हो लंबी आयु वह भी निरोगी काया के साथ फिर वह चाहे अष्ट लक्ष्मी हो या सहस्त्राक्षी लक्ष्मी हो.

सदगुरुदेव जी जब भी शिविर मे प्रयोग करवाए हैं तब उन्होंने एक न एक उच्च स्तरीय लक्ष्मी प्रयोग करवाया ही हैं .क्या यह एक विशेष तथ्य नही हैं.इस स्तंभ के अंतर्गत आपकेलिए हम एक सरल प्रयोग हमेशा देते हैं जो की बहुत सरल होते हैं और निश्चय ही लाभ कारी होंगे .हर लक्ष्मी साधना की तरह इस साधना मे पीले आसन और पीले वस्त्र का प्रयोग किया जाना चाहिये.कोई भी पीली हकिक माला का प्रयोग किया जा सकता हैं.किसी भी शुभ दिन से यह प्रयोग किया जा सकता हैं.

सदगुरुदेव कहते हैं लक्ष्मी के बृहद अनुष्ठान की अपेक्षा यदि लघु लघु प्रयोग किये जाएँ तो कहीं जयादा उचित होता हैं ,और हर व्यक्ति को कम से कम एक स्वरुप तो लक्ष्मी साधना का अपने दैनिक साधना क्रम मे समावेश होना ही चाहिए . अब यह साधक का निर्त्ने हैं की वह एक माला या अधिक भी अपने रोज के साधना क्रम मे शामिल करें .

मंत्र:

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्मयै नम: ||

====================================

Laxmi Sadhanaa

Who can deny the importance of Laxmi element (money)?. When any capable person molds the flow of time in his favor or would want to create something miraculous or to help other, he has to user power of Laxmi element. Because Laxmi is only power and success in any task is not possible without Laxmi. We should not limited Laxmi tatva only to money or materialistic life.

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

टोटके आपके लिए

1. आप जो भी पहली रोटी खा रहे हो उसके चार भाग करें और पहला भाग किसी गाय को खिला दे और दूसरा भाग कुत्ते को आपके रोग मे आपको लाभ होगा .
2. पुर्वा फाल्गुनी नक्षत्र मे बहेड़ा का पत्ता ला कर घर मे रखने मे किसी भी प्रकार की जो वाधाएं समझ मे नही आ रही हैं उनमे भी लाभ होता हैं .
3. शमशान मे जब भी जाए कोई भी सिक्का वहां पर जरुर फेंक दे यह आपकी कई कई समस्याए हल करता हैं और यदि सिक्का पहले से आप अपने सिरहाने रख कर सो जाए और अगले दिन ऐसा करें तो आपकी रोग मे आपको लाभ होगा .
4. पीपल के वृक्ष को मंदिर आदि धार्मिक स्थान पर लगवाने से एक ओर जहाँ पर्यावरण ठीक होगा वही आपको धन

5. अच्छी नीद आने के लिए व्यक्ति को अपने कमरे के उत्तर दिशा मे अपना बिस्तर लगाना चहिये और कमरे का जो दक्षिण भाग हो उसमे कोई भी काले रंग की तस्वीर आदि लगा ले इससे भी अनिद्रा रोग मे बहुत फायदा हुआ हैं.
6. शनिवार को दोपहर बाद पीपल वृक्ष की जड़ छूने से व्यक्ति की आयु बढती हैं.
7. किसी भी बड़े पेड़ के दक्षिण पश्चिम दिशा की तरफ न सोना चाहिए, न रहना चाहिये.
8. पीपल वृक्ष की शनिवार के दिन पूजा उपासना करने वाले का जीवन धन धान्य से भरपूर रहता हैं.
9. वांस को घर के पूर्व या उत्तर दिशा मे लगाने से व्यक्ति को बहुत लाभ मिलता हैं.
10. सोने वाले कमरे मे पूजा स्थल नही होना चाहिए पर करना ही पड़े तो.रात के समय अपनी पूजा के उपरान्त उस पूजा स्थान को ढक देना चाहिये

===

Magical charm for you

1. Divide first bread of you meal and give half to cow to eat and other half to dog, it will bring good health to you.
2. Take one baheda leaf on day of Poorvaa Falguni Nakshatra and keep it in your home, it helps to overcome from unknown obstacle of life.
3. Throw one coin on visiting cremation ground every time, it will pull away your many problems. And if, you keep that coin under the pillow and do the say, it helps you in sickness.
4. Where establishing Pipel tree in temple keeps atmosphere healthy. It also brings prosperity to your life.
5. To get asleep properly one should arrange his bed in north direction of his room and place one black picture on south wall. It gives relief to insomnia patient.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

आयुर्वेद आपके लिए

1. नित्य एक दो तुलसी की पत्ती खाने से रक्त साफ़ होता हैं.
2. कब्ज आदि मे तुलसी की पत्तियाँ पीस कर पीने से तुरत आराम मिलता हैं
3. चर्म रोग मे तुसली की पत्तियाँ का लेप लगाने से तुरंत लाभ मिलता हैं.
4. घर मे तुलसी लगाने से घर का वातावरण शुद्ध होता हैं
5. बालों को शम्पू करने के बाद एक अंडा फेंट कर बालों मे लगाएं फिर बाल धों देंबाल स्वस्थ और रोगाणु रहित होंगे.
6. दही लगाकर बाल धोने से भी बाल स्वस्थ रहते हैं .

7. गले मे खरखराहट होने पर अदरक की गांठ का रस निकल ले और उसमे शहद मिलाकर चाट ले गले मे आराम मिलेगा .

8. अदरक का एक चम्मच रस ,आधा चम्मच शहद मे मिलकर सुबह शाम चटायें ,इससे बंद नाक भी खुल जाती हैं .

9. अदरक नीबू नमक बहुत थोडा थोडा दिन मे तीन बार खाईये.इससे फोड़े फुंसी अगर जायद निकल रहे हो तो आराम मिलेगा ,क्योंकि यह रक्त शुद्ध करेगा .

10.जहाँ दाँत दु :ख रहा हो वहां एक छोटासा अदरक का टुकड़ा रख कर दवा ले और चूसें आराम मिलेगा .

==

Ayurveda for you.

1. Eating one or two basil leaf helps to purify blood.
2. Extract of basil leaf gives relief from constipation.
3. Paste of basil leaf give immediate relief from all skin disease.
4. Planting basil in home brings purityto atmosphere.
5. After applying shampoo, apply one mash egg to your hair then rinse it with clean water. Hair will become healthy and free from disease.
6. Applying curd also brings your hair to good health.
7. Take extract of one piece of Ginger and have it with honey, it will soothe your throat and give relief from throat Itching.
8. Mix one spoon of Ginger extractwith half spoon of honey and lick it. It helps to remove cough.
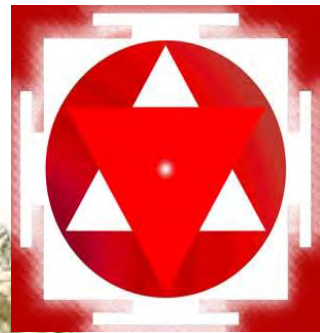
तंत्र कौमुदी
NFRU
प्रकृति तंत्र एवं रत्न शक्ति तंत्र महाविशेषांक
Fourteenth Issue – February 2013
Tantra kaumudi

Name of the Articles

SADGURUDEV - PRASANG

सिद्धि दर्शन

उन दिनों हम काशी मे ही निवास करते थे. नित्य दशाश्वमेध घाट जाते,गंगा स्नान करते और बाकी का सारा समय गुरुदेव के साथ साधना सिद्धियों मे ही व्यतीत करते.

एक दिन मेरे गुरू भाई प्रियंकू बाबा ने पूंछा “क्या सिद्धियों का चमत्कार उचित हैं “?

स्वामी जी ने उत्तर दिया " जो साधनाए सीख रहे हैं या जो सिद्धियों मे प्रविष्ठ हो रहे हैं,उन्हें भूलकर भी चमत्कार मे नही पड़ना चाहिए.इससे उनकी शक्ति क्षीण हो जाती हैं और साधना की तरफ उनका ध्यान नही रह जाता हैं, साथ ही साथ साधना क्षेत्र की एक मर्यादा हैं और इस मर्यादा का पालन प्रत्येक साधक,योगी या सन्यासी को करना ही चाहिये"

" जो साधना क्षेत्र मे हैं और अभी तक गुरुवत नही बन् सकें हैं,उन्हें लोगों के उकसाने पर भी चमत्कार या सिद्धियों का प्रदर्शन नही करना चाहिए .बहुत ही शान्त,सरल एवं सामान्य अवस्था मे ही उन्हें रहना चाहिए की पडौसी को भी उनकी सिद्धियों के बारे मे ज्ञान न हो सकें "

"पर जो सिद्ध हैं जिन्होंने सिद्धियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया हैं वे चाहे तो समय समय पर इसका प्रदर्शन कर सकते हैं,पर इस सिद्धियों के प्रदर्शन मे उनका व्यक्तिगत स्वार्थ नही होना चाहिए.अपना बड़प्पन,उच्चता या सिद्ध होने की प्रक्रिया के लालच मे ऐसा प्रदर्शन करना उचित नही हैं, हकीकत भी यह हैं की जो सही अर्थो मे सिद्ध हैं वह न तो क्षुद्र हो सकता हैं न स्वार्थी.उन्हें अहंकार भी व्याप्त नही हो सकता हैं.वे तो पर दुःख कातर होते हैं और दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए ही आवश्यकता पड़ने पर ऐसी सिद्धियों का प्रदर्शन कर लेते हैं."

"यदि सन्यासी किसी कारण वश गृहस्थ जीवन मे जाता हैं और इस सन्यासी ने जीवन मे सोद्ध्यों पर अधिकार प्राप्त किया हैं तब भी गृहस्थ जीवन मे जाने पर उसे सिद्धियों का प्रदर्शन भूल कर भी नही करना चाहिए . चाहे लोग उसे कितना ही अधिक उकसाए ,कुछ भी कहें, कभी कभी अपमान,लांछन या तिरस्कार भी सहन करना पड़ सकता हैं. सभी स्थितियों मे उसे संयत बने रहना चाहिए,और भूल कर भी चमत्कार प्रदर्शन नही करना चाहिए."

मैंने पूंछा " क्या गृहस्थ मे साधना सिद्धि प्रदर्शन अनुचित हैं ?"

उन्होंने उत्तर दिया " अनुचित तो नही हैं, पर ये गृहस्थ लोग या गृहस्थ शिष्य क्षीण बुद्धि होते हैं.उनकी भावना साधना की उच्चता या महत्ता नही होती,सीखने या प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की भावना नही होती,अपितु मूल मे स्वार्थ सिद्धि या चमत्कार दर्शन ही होता हैं.यदि कोई गृहस्थ शिष्य चमत्कार दिखने की बात करें तो समझ लेना चाहिए की यह क्षीण बुद्धि हैं और शिष्य बनने के योग्य नही हैं."

मैंने पूंछा " शिष्य कैसे बनना चाहिए ?"

उन्होंने कहा " शिष्य बनने की प्रक्रिया नही हैं ,यह तो स्वत: गुरू के प्रति अनुरक्ति हैं. पिछले जीवन मे भी जिस गुरू से वह दीक्षा लिये हुये हैं इस जीवन मे भी उसी गुरू से वह अनुरक्त रहता हैं. हो सकता हैं की भ्रम वश किसी दूसरे सन्यासी या पाखंडी के पास चला जाए,हो सकता हैं कुछ समय के लिए भ्रमित हो जाए, परन्तु ऐसा होने पर भी उसके मन को शांति नही मिल पाती हैं. ऐसे गुरुदेव से भी दीक्षा लेने पर भी उसके चित्त मे चंचलता बराबर बनी रहती हैं. मन मे उद्विनगता और तनाव विद्यमान रहता हैं "

' पर जब वह उसी गुरू के पास पहुँच जाता हैं जो जन्म जन्म से उसका गुरू होता हैं तो उसे देखकर सहसा ऐसा अनुभव होता हैं की इनका मेरा कई कई वर्षों का सम्बन्ध हैं, यद्दपि उन्हें पहली बार देख रहा हूँ परन्तु ऐसा लगता हैं की इससे पूर्व मे भी इन्हें देखा हैं. उनके पास बैठने से शांति मिलती हैं,मन मे संतोष होता हैं, और ह्रदय मे तृप्ति का अनुभव होता हैं.

और जब ऐसा अनुभव हो, जहाँ बैठने से शांति मिलती हो, जिनसे बात करने पर अपनत्व का बोध होता हो,जहाँ चित्त की चंचलता समाप्त होती हो, उसी गुरू से दीक्षा या पुनः दीक्षा ले कर उनके बताए पथ पर आगे बढ़ना चाहिए ."

मैंने पूंछा "फिर शिष्य क्या करें?"

उन्होंने उत्तर दिया " शिष्य को कुछ भी करना नही होता हैं. जो कुछ करना होता हैं, वह गुरू करता हैं . शिष्य का तो केबल एक ही धर्म, एक ही कर्तव्य, और एक ही चिंतन होता हैं कि वह गुरू आज्ञा का पालन करे उसमे किसी भी प्रकार की हील हुज्जत न करें. किई भी प्रकार का तर्क –वितर्क, सन्देह-असदेंह उत्पन्न होने पर समझ जाना चाहिए की वह शिष्य बनने के काबिल नही हैं.शिष्य का तात्पर्य यह हैं की वह गुरू के निकट जाए और उनके ह्रदय के सन्निकट पहुचे और इतना आधिक निकट पहुचे कि वह अपने अस्तित्व का विसर्जन कर दे,उसे अपना होश ही न रहे. पूर्ण रूपेण समर्पित चिंतन ही शिष्य कहलाता हैं ."

यदि गुरू शिष्य को छत पर खड़ा कर दें और नीचे दहकता हुआ अग्नि कुंड हो और गुरू शिष्य को नीचे छलांग लगाने को कहे तो उस शिष्य को एक क्षण का भी विचार नही करना चाहिए ,बिना सोचे बिना विचार करीब उस दहकते हुये अग्नि कुंड मे कूद जाना ही शिष्यता हैं "

"पर ऐसी आज्ञा गुरू देगा ही क्यों "

स्वामी जी ने उत्तर दिया यह गुरू का कार्य हैं उस क्या आज्ञा देनी हैं और क्या आज्ञा नही देनी हैं. गुरू का कोई भी आदेश अकारण नही होता हैं.उसके पीछे कोई न कोई उसका चिंतन अवश्य होता हैं .और वह चिंतन शिष्य के हित मे होता मे होता हैं .गुरू का एक मात्र उदेश्य पूर्ण रूप से शिष्य को सभी दृष्टियों से योग्य और संपन्न बनाना हैं और इसके लिए वह बराबर प्रयत्न करता हैं .

" जिस प्रकार सुनार बार बार सोने को अग्नि मे डालता हैं, लाल सुर्ख करता हैं, और बाहर ला कर हथौड़े से पीटता हैं, ऐसा होने पर ही वह स्वर्ण देव मुकूट बनता हैं,देवताओं के सिर पर चढ़कर बैठता हैं.शिष्य को भी स्वर्ण वत होना चाहिए,गुरू उसे तपाये या हथौड़े से चोट करें उसे बिलकुल भी न नुकुर नही करना चाहिये,अपितु अपने लक्ष्य पर बराबर गतिशील बना रहे,ऐसा होने पर ही वह शिष्य आगे चलकर प्रसिद्ध योगी बन् जाता हैं.

उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुये बताया ,"पूर्ण सिद्धियाँ और सिद्धिता पाने के लिए यह जरूरी नही हैं कि संन्यास ही ले, श्री कृष्ण पूर्णतः गृहस्थ थे मगर फिर भी योगीराज कहलाये.गृहस्थ मे रहकर भी जो असम्प्रक्त रहता हैं जो सही अर्थो मे ही अपने गुरू को अपना इष्ट,सखा,मित्र,माता,पिता,भाई,बहिन,इश्वर और सब कुछ मान लेता हैं,वह सही अर्थो मे योगी होता हैं,कपडे बदलने या भभूत लगाने से ही सब कुछ नही हो जाता हैं.

बात का समापन करते हुये गुरुदेव ने कहा "ऐसा ही शिष्य गुरू के चित्त पर अंकित होता हैं,और गुरू का सारा ज्ञान और सिद्धियाँ स्वत ही उसे प्राप्त हो जाती हैं जिससे वह सही अर्थो मे सिद्ध बनकर पूरे विश्व का कल्याण करने मे समर्थ बन् जाता हैं . मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं से साभार

===

Siddhi Darshan

Those days, we resided in Kaashi (Varanasi).Daily we used to go to Dashaashvmegh bank, take bath in Ganga and rest of time was spent with Gurudev in sadhna accomplishments.

One day my Guru Brother Priyanku Baba asked "Is it right to show miracle of siddhis (spiritual accomplishments) "?

सौभाग्य प्रदायक सरल गणेश साधना

SHRI GANPATI PRAYOG

भगवान गणपति के वरदायक स्वरुप से सम्बंधित एक सरल साधना

गण का एक अर्थ मानव इन्द्रियाँ भी होता हैं, और जो इन इन्द्रियों के भी स्वामी हैं उनको कैसे कोई साधक कम करके आंक सकता हैं ,क्योंकि बिना इन्द्रियों के मानव देह का कोई अर्थ नही हैं और इन्द्रियाँ हैं पर उनपर कोई भी नियंत्रण नही तब भी कम से कम बात तो यही हैं.अतः जिन्हें भी साधना मार्ग पर आगे चलना हैं, उन्हें इस बात का भान होना चाहिए की भगवान गणेश का एक अपना ही स्वरुप हैं.

भले ही उनके भोलेपन और प्रसन्तायुक्त स्वरुप से हम सभी का कहीं जायदा परिचय रहा हो पर इस बात से भी इनकार नही की वे ही सर्व प्रथम पूज्यदेव हैं और सर्वमान्य देव भी .इसलिए हर साधना से पूर्व उनका स्मरण, पूजन, मंत्र जप एक अनिवार्यत: स्थित हैं अन्यथा किसी भी प्रकार का विघ्न सामने आ सकता हैं .

यह भी साधना का एक भाग हैं की भगवान गणेश का आशीर्वाद लेना आवश्यक हैं क्योंकि सिर्फ सर्व पूज्य और प्रथम पूज्य होने मात्र से नही बल्कि वे समस्त देव वर्ग का मानो एक सामूहिक स्वरुप भी हैं और उनके पूजन मात्र से सभी देव शक्तियों का पूजन हो जाता हैं. जैसे सदगुरुदेव पूजन से समस्त शुभ शक्तियों का पूजन तो हर साधक को अपने दैनिक पूजन मे इस साधना को "गणेश साधना" का एक आधार तो होना ही चहिये ,अगर किसी भी कार्य मे अनावश्यक विघ्न आ रहे हो तो निश्चय ही भगवान गणेश की उपासना, उसमे बहुत लाभकारी या हितकारी होगी ही .हमने अनेको प्रयोग ब्लॉग और तंत्र कौमुदी के माध्यम से आप सभी के सामने रखने का प्रयास किये हैं उन प्रयोग की महत्वता को समझना ही चाहिए तभी रहस्य सूत्रों का कोई अर्थ हैं.

ॐ श्रीं एकदंताय गणेशाय विजयाय श्रीं ॐ नमः ||

प्रस्तुत मंत्र विधान को अपने दैनिक जीवन मे अपनाए और कम से कम एक माला मंत्र जप तो प्रतिदिन करें और अनुभव करें की भगवान गणेश का वरद हस्त सदैव से आपके ऊपर हैं और वह हर परिस्थितियों मे आपके विघ्न को दूर करेंगे ही जब तक हमारा संकल्प शुभता की ओर होगा .

===

GANESH SADHNA

One meaning of "Gan" (as in Ganpati) is also human senses. Then how can we consider sadhna of master of these senses lesser because without senses, human body has got no meaning and besides this, if senses are present but they are not under our control then also same thing applies. Therefore, those who want to move forward on sadhna path, they should be well aware that Lord Ganesh has got its own form.

Why we need prakriti tantra sadhana ? .

एक परिचय ...

सारा विश्व शिव और शक्ति के संयोग का ही एक स्वरुप हैं,और प्रकृति का मतलब शक्ति ही तो हैं एक आधार,जिस पर सारा विश्व टिका हैं,शक्ति के बिना शिव भी असहाय हैं ये बात तो सभी ने पढ़ी होगी पर यह भी सत्य हैं की शक्ति को भी शिव का आधार चहिये ही अन्यथा कैसे संभव हो सकता हैं सृष्टि के तीनो नियम सृजन,पालन और संहार और नित नूतनता, यह तो एक बात का प्रतीक हैं की शिव और शक्ति दोनों का संयुग्मन ही सारे तंत्र और सारी प्रगति और जो भी दृश्य या अदृश्य मे घटित हो रहा हैं, उन सभी का प्रतीक हैं,इस बात को तो सभी मानते हैं बस वहां शब्दों का रूप बदल जाता हैं पर अर्थ वही रहता हैं.

जीवन मे भी यही कहीं न कहीं पक्ष हैं ही, बहुत ही सूक्षमता से देखने पर यही अनुभव मे आता हैं जो घटना सारे विश्व मे अबाध रूप से घटित हो रही हैं वहीँ कहीं न कहीं हर मानव के अंतर मन मे भी तो .

सारा तंत्र, शिव और शक्ति के आपसी वार्तालाप पर ही तो आधारित हैं और किसी भी तंत्र के मूल ग्रन्थ मे उसके प्रारंभ मे लगभग यही अवस्था रहती हैं ही,इसलिए किसी भी तंत्र मे शक्ति को उपेक्षित किया ही नही जा सकता हैं.क्योंकि तंत्र का अर्थ हैं स्वयम के जीवन का शक्तियुक्त विस्तार, जो जीवन अभी तक मानो बिना रीढ़ की हड्डी का रहा हो उसे अब एक स्थिरता देना .इसलिए शक्ति की उपासना आदि काल से मानव के जीवन का एक आवश्यक अंग रही हैं.और जो भी व्यक्ति स्वयं अपने जीवन का अनुसंधान या खोज करना या उसे अपना सही स्वरुप जानना हो उसे तो इस रास्ते पर जाना ही होगा यही एक मात्र उपाय हैं. जिसको समझना ही होगा, उसी एक मात्र आद्य शक्ति के मुख्तय: १० बिभाग किये गए जिन्हें हम १० महाविद्या के रूप मे भी जानते हैं.और यह वर्गीकरण अनेक रूप मे हुआ, कहीं गुण प्रधानता रही तो कहीं सौम्यता तो कहीं कोई अन्य आधार पर सभी के मूल मे एक वही आद्याशक्ति पराम्बा ही हैं .

अगर मानव को अपने जीवन को एक अर्थ देना हैं और उसे श्रेष्ठता की उचाई छूना हैं तो उसे शक्ति या प्रकृति तत्व को आत्म सात करने के लिए आगे बढ़ना ही होगा, यह अनेक मार्ग से हो सकता हैं पर साधना मार्ग मे तंत्र साधना इसका एक सरल और सहज उपाय हैं जिसे आज इस आपाधापी वाले युग मे एक वरदान ही कहा जा सकता हैं .पर तंत्र अगर जल्दी असर देने वाला हैं तो उसमे सावधानी की भी आवश्यकता हैं यह बात समझने की भी की अगर से क्रिया का परिणाम अगर चाहना हैं तो उसे उन सारी क्रियाओं के गुप्त और रहस्य मय सूत्रों को भी समझना होगा और साथ ही साथ इस मार्ग पर जो सबसे बड़ा आश्रय हैं वह हैं सदगुरुदेव ..तो उनके श्री चरणों मे समर्पित होना भी ..यह जीवन का एक उच्च लक्ष्य कहा जा सकता हैं .

शक्ति तत्व की साधना दो प्रकार से संभव हैं एक तो दक्षिण मार्गी और दूसरा वाम मार्गी. यह समझने की बात हैं की वाम मार्ग कहने मात्र से उसे घृणा की दृष्टी से नही देखा जाना चाहिये क्योंकि इस शब्द के गहन अर्थ हैं.और इस पूरे ब्रम्हांड मे कोई भी वस्तु निरर्थक नही हैं बस काल और परिस्थिति के अनुसार हर व्यक्ति के लिए साधना क्रम अलग अलग हो सकता हैं.यह भी एक समझने वाला तथ्य हैं की साधना वही भी शक्ति तत्व की न केबल व्यक्ति मे एक प्रसन्नता और आहलाद की सृष्टि करती हैं वहीँ दूसरी ओर जीवन और आध्यात्म के एक से एक नवीन तथ्य उसके सामने साकार भी करती हैं.

इन अर्थो मे आज शक्ति साधना और शक्ति साधक का नितांत आवश्यकता हैं क्योंकि जब व्यक्ति बल युक्त होगा तभी समाज भी ऐसा ही होगा और व्यर्थ की न्युनताये भी नही होगी .क्योंकि जितना ज्यादा व्यक्ति असुरक्षित होगा जितना ज्यादा शक्ति हीन होगा वह उतनी ही ज्यादा समस्याए भी.और शास्त्रों मे तो स्पस्ट कहा गया हैं कि शक्ति युक्तता ही पुण्य हैं और शक्ति हीनता ही पाप.इस बात का अर्थ हैं .

हमारे प्राचीन आचार्य और संस्कृति इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं की सभी शक्ति उपासक रहे हैं और वह समाज अपने आप मे उन्नति दायक और सर्व दृष्टी से समपन्न भी रहा हैं .बस कुछ काल विशेष मे यह धारा मंद सी हो गई और इसका बहुत ही भयानक असर हमारे जीवन पर पड़ा पूरा देश मानो पंगु सा हो गया, और अब दूसरे के आसरे होने लगा ,अपना स्वरूप भूल सा गया और पाश्चात संकृति के अच्छे गुण तो नही बल्कि दुर्गुण जरुर अपनाने लगा कुछ शिक्षा व्यवस्था का भी दोष रहा .इन सब का परिणाम साधना क्षेत्र की ओर उपेक्षा ..और यह कोई भी समझ नही पा रहा था की यह कैसे हो गया .इस विपरीत काल मे सदगुरुदेव जी के अनथक अतिमानवीय श्रम का ही यह परिणाम हुआ की आज साधना पक्ष के प्रति एक नया रुझान, एक नयी सोच और एक पूरी नयी पीढ़ी का इस ओर आना सिर्फ उन्ही की ही मेहनत का ही परिणाम हैं जिसे भले ही कुछ अति बुद्धिवादी महत्त्व दे या न दें,यह जरुर हैं की सदगुरुदेव के पवित्र नाम पर अपना उल्लू सीधा करने वालों की तो आज भीड़ हैं सामने .

साधारणतः प्रकृति का मतलब आपका आचरण व्यवहार होता हैं क्योंकि कहा भी जाता हैं न, की मुझे उसकी प्रकृति ठीक नही लगती या वह बुरी प्रकृति का जीव हैं.इस तरह एक अर्थ यह भी होता हैं जिसे शिवलिंग के आधार को भी प्रकृति कहा जाता हैं और एक अर्थ मे तो जो भी दृश्य जगत हैं उसकी आधार भी .और जब बात तंत्र की आये तो सभी का मिश्रण स्वरुप हैं प्रकृति तंत्र

एक साधक मे यह गुण होना चहिये की वह पहले तो निष्ठा पूर्वक साधनारत रहे और मन मे प्रकृति से विजय पाने की भावना और जिस पथ पर आगे जा कर वह प्रक्रति का सहचर बन जाता हैं .पर पहले तो इस पर विजय पाने की भावना होना ही चाहिये,बिभिन्न साधना मार्ग से व्यक्ति इसी मार्ग पर आगे बढ़ना ही चाहता हैं .और प्रस्तुत अंक इसी बात का ही तो परिचायक हैं इसी भावना को ध्यान मे रखकर यह अंक बहुत ही उपयोगी साधनाए आप सभी के लिए हुये हैं ..

विद्याकालिका साधना

VIDYA KALIKA SADHANA ?

परम दुर्लभ एक अद्वितीय साधना

महाकालिका महाविद्यां कलौपूर्णफलप्रदा

ब्रह्माण्ड की श्रेष्ठतम विद्या और अधिष्ठात्री दस शक्तियां जो की दस महाविद्या के नाम से साधको के मध्य प्रचलित है. सभी स्वरुप अपने आप में विलक्षण तथा साधक को ब्रह्माण्ड के सभी सुख भोग की प्राप्ति कराने में समर्थ है .

लेकिन सभी महाविद्याओ की अपनी अपनी अलग ही महत्ता है जिसको आदि काल से ही निर्विवादित स्वीकार किया जाता है. लेकिन महाकाली का स्वरुप तो सभी साधको के ह्रदय में हमेशा उपास्य रहता ही है. तथा इनके भी कई मुख्य रूप और कई विशेष रूप साधना जगत में विख्यात रहे है. चाहे वह दक्षिण मार्ग हो या कापालिक साधना हो, श्मशान या औघड साधना या फिर त्रिक या कॉल मत भी हो, देवी की साधना उपासना सभी मार्ग में सभी साधको के द्वारा कई कई स्वरुप में कई कई पद्धतियों से आदि काल से होई आई है. महाकाली भले ही संहार क्रम की शक्ति मानी जाती हो लेकिन निश्चय ही वह तीनों क्रम में बराबर गतिशील रहती है. आदि शिव के महाकाल स्वरुप की यह शक्ति हमेशा कल्याणकारी तथा रक्षात्मक स्वभाव के कारण जनमानस में पूज्य रही है. उच्च से उच्चतम सिद्धो और साधको ने एक मत में यह स्वीकार किया है की भगवती महाकाली की साधना और उपासना करने पर साधक कई कई प्रकार से सिद्धियों की प्राप्ति कर अपने जीवन के भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों में पूर्ण सफलता की प्राप्ति कर सकता है. महाकाली एक ऐसी महाविद्या है जिनके बारे में यह कहा जाता है की वह कलयुग में शीघ्र फल प्रदान करने वाली है. निश्चय ही देवी के सबंध में यह तथ्य एक निर्विवादित सत्य है जिसका अनुभव कई कई साधको ने इस युग में किया है. पुरातन तंत्र ग्रंथो में कहा है की भगवती की साधना करना किसी भी साधक के लिए सौभग्य उदय की ही संज्ञा है.

भगवती से सबंधित कई स्वरुप साधको के मध्य प्रचलित है ही लेकिन भगवती का विद्याकाली या विद्याकालिका स्वरुप अत्यधिक गुढ़ तथा विलक्षण माना जाता है. क्योंकी यह स्वरुप विद्याओ से अर्थात गुढ़ ज्ञान से सबंधित स्वरुप है, जिसको सिद्ध करने पर साधक को कई गुढ़ ज्ञान की प्राप्ति होती है. परन्तु, देवी के इस स्वरुप से सबंधित साधना क्रम अत्यधिक तीव्र तथा विलक्षण है, जिसे सहज ही संपन्न करना असंभव है. तथा आज के युग में गृहस्थ साधको के लिए यह क्रम कई द्रष्टि से असहज है. लेकिन इस रहस्यमय स्वरुप से सबंधित कुछ सौम्य लघु प्रयोग भी है. जिसको कोई भी साधक बड़ी सहजता से संपन्न कर सकता है. इसी क्रम में देवी विद्याकालिका से सबंधित यह प्रयोग प्रस्तुत है. इस प्रयोग को संपन्न करने के बाद साधक को ज्ञान सबंधित कई लाभों की प्राप्ति होती है. साधक को कोई भी विषय को समझने में सहजता का अनुभव होने लगता है, साधक की स्मरणशक्ति का विकास होता है, विशेष रूप से साधक को गुढ़ ज्ञान तथा सांकेतिक ज्ञान का अर्थ समझने में भी विशेष सुभीता का अहसास होता है. विद्यार्थी वर्ग के लिए भी यह साधना प्रयोग वरदान स्वरुप है, क्यों की विद्या से सबंधित होने के कारण साधको को अभ्यास में भी प्रगति इस साधना के माध्यम से प्राप्त हो सकती है.

यह प्रयोग साधक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को संपन्न करे. समय रात्रि में १० बजे के बाद का रहे. साधक रात्रि में स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे. इसके बाद साधक लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाये.

इसके बाद साधक अपने सामने भगवती महाकाली का कोई चेतन विग्रह या यंत्र या चित्र को स्थापित करे. साधक गुरु पूजन, गणपति पूजन तथा महाकाली पूजन को संपन्न करे. साधक को गुरुमन्त्र का जप करे. इसके बाद साधक न्यास की प्रक्रिया करे.

करन्यास

क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्रीं तर्जनीभ्यां नमः

क्रूं मध्यमाभ्यां नमः

क्रैं अनामिकाभ्यां नमः

क्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः

क्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास

क्रां हृदयाय नमः

क्रीं शिरसे स्वाहा

क्रूं शिखायै वषट्

क्रैं कवचाय हूम

क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

क्रः अस्त्राय फट्

न्यास करने के बाद साधक महाकाली का ध्यान कर निम्न मन्त्र की ११ माला मन्त्र जप करे. यह मन्त्र जप शक्तिमाला, मूंगामाला या रुद्राक्षमाला से किया जा सकता है.

मन्त्र - ॐ आं आं क्रों क्रों क्रीं क्रीं कालि कालिके हूं हूं फट स्वाहा

(OM AAM AAM KROM KROM KREEM KREEM KAALI KAALIKE HOOM HOOM PHAT SWAAHAA)

मन्त्रजप पूर्ण होने पर साधक योनी मुद्रा से देवी को जप समर्पित कर श्रद्धा से वंदन करे. साधक को यह क्रम ३ दिन तक रखना चाहिए. माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक इसको भविष्य में भी उपयोग में ला सकता है.

==

VIDYAKAALIKA SADHNA

MAHAKAALIKA MAHAVIDYAAM KALAUPORNPHALPRADA

Ten Shaktis, known by the name of Das Mahavidya among sadhaks is best Vidya and ruler of universe. All its forms are special in them and are capable of providing every type of happiness and pleasure to sadhak. But every Mahavidya has got its own significance which has been indisputably agreed upon from ancient ages. But the form of Mahakaali has always been worshipped in hearts of every sadhak. Its many prime forms and some special forms have been famous among sadhna world. May be it is Dakshin Maarg (right hand path of Tantra) or Kapaalik sadhna, shamshaan or Augarh sadhna or Trik or Kaula path , sadhna/upasana of Devi has been done in all paths by every sadhak in many of its forms in many padhatis from ancient ages. May be Mahakaali has been considered to be the Shakti of destruction procedure but she is operational in all three basic procedure of universe (Construction, Maintenance and destruction).

वसन्त सुन्दरी साधना

VASANT SUNDARI SADHANA PRAYOG
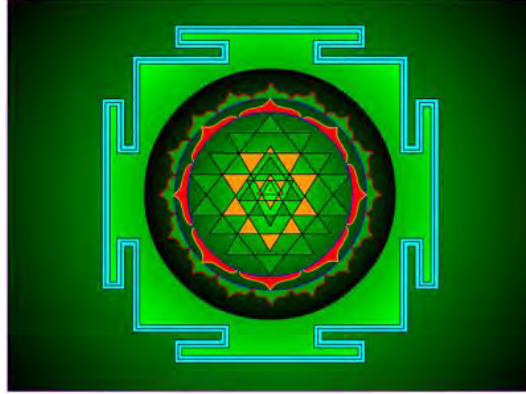
भगवती त्रिपुर सुंदरी साधना का एक अद्भुत प्रयोग

वसंत, एक ऐसा शब्द जिसको सुनते ही मनुष्य एक मधुर परिकल्पना को अपने सामने साकार करने लगता है. समय का एक ऐसा भाग, जो की व्यक्ति को चारों तरफ से सौंदर्य और माधुर्य बरसाने के लिए आतुर हो जाता है. पुष्प जुमने लगते है, पैड जेसे मौन अंगडाई से उठ कर कुछ कहने के लिए बेताब हो जाते है, नदियों की कल कल कुछ और शांत, स्थिर सा गीत गुनगुनाती है, प्रकृति का यह एक ऐसा भाग है जिसमे सिर्फ मधुरता ही मधुरता बिखरी हुई है. इसी लिए एक विशेष काल खंड या ऋतू को भी वसंत का नाम दिया गया है, क्यों की उस समय प्रकृति अपने पूर्ण सौंदर्य को मनुष्य के लाभार्थ प्रदान करने के लिए उद्वत रहती है. हाँ, यह बात अलग है की मनुष्य क्या और कितना प्राप्त करता है या कितना कर सकता है, हो सकता है इस वसंत का या दूसरे शब्दों में प्रकृति की मुग्धता का वरण कर वह हर एक क्षण का आनंद उठाये या ये भी हो सकता है वह उपेक्षित कर दे और अपने जीवन में वसंत को स्थान ही न दे पाए, लेकिन प्रकृति का इसमें कोई दोष नहीं है.

मनुष्य के ऊपर यह आधार रखता है की वह प्रकृति तंत्र से क्या तथा कितना प्राप्त कर पता है. यह चर्चा करने का उद्देश्य वसंत का स्पष्ट अर्थ निर्देशित करना था. वसंत कोई ऋतू मात्र नहीं यह प्रकृति का एक वरदान है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की न्यूनता का दूर कर सही अर्थो में माधुर्य की प्राप्ति कर सके तथा अपने जीवन का सौंदर्य औरभी निखार सके. और जब बात सौंदर्य माधुर्य की हो तो भगवती त्रिपुरसुंदरी के विविध स्वरुप की चर्चा कैसे न हो? तीनों लोक में सर्वश्रेष्ठ सौंदर्य को धारण करने वाली, भगवती त्रिपुरा के विविध स्वरुप से सभी साधक प्रायः परिचित ही है. लेकिन भगवती का एक ऐसा स्वरुप भी है जो की जनमानस में सुपरिचित नहीं है लेकिन सिर्फ साधको के मध्य यह रूप प्रचलित रहा है. भगवती का यही रूप वसंत सुंदरी के नाम से जाना जाता है. यह स्वरुप और इसकी साधना पद्धति का विधान अत्यधिक गुढ़ तथा रहस्यमय रहा है. गुरुमुखी प्रणाली से भगवती से इस रूप से सबंधित कुछ प्रयोग प्रचलन में रहे है. प्रस्तुत प्रयोग उसी कड़ी में से एक प्रयोग है जो की सिद्धो के मध्य प्रचलन में रहा है. ब्रह्मांडीय यन्त्र अर्थात विशुद्ध पारद से निर्मित पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित श्रीयंत्र पर यह प्रयोग को संपन्न किया जाता है क्यों की भगवती त्रिपुरसुंदरी से सबंधित कोई भी प्रयोग में यह यंत्र का अपना ही महत्त्व है जो की तंत्र साधको को ज्ञात है ही. फिर भी, कोई कारणवश यंत्र अगर उपलब्ध न हो पाए तो व्यक्ति कोई भी योग्य एवं प्राणप्रतिष्ठित श्रीयंत्र पर यह प्रयोग को संपन्न करे. यह प्रयोग के कई प्रकार के लाभ साधक को मिलते है.

साधक के आर्थिक अभाव का निराकरण होता है, जीवन में रुके हुये धन की प्राप्ति होती है. साधक को आजीविका के नए नए स्त्रोत्र की प्राप्ति होने लगती है. इसके अलावा, साधक के अगर कोई पारिवारिक संकट है तो साधक को उस संकटो से मुक्ति मिलती है, घर का क्लेश नाश होता है, तथा शान्ति का वातावरण स्थापित होता है. साधक को शत्रुओ से रक्षण प्राप्त होता है, इसके अलावा साधक की प्रतिष्ठा तथा ख्याति का विकास होता है इस प्रकार साधक धन, यश, ऐश्वर्य आदि सुख की प्राप्ति कर अपने जीवन को पूर्णता की और अग्रसर कर सकता है.

इस प्रयोग को साधक कोई भी दिन शुरू कर सकता है.

साधक रात्रिकाल में १० बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे तथा लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाये.

साधक अपने सामने बाजोट पर या किसी पात्र में लाल वस्त्र पर विशुद्ध पारदश्रीयंत्र या अनुपलब्धि में कोई भी पूर्ण चैतन्य श्रीयंत्र का स्थापन करे. गुरुपूजन, गणपतिपूजन के बाद श्रीयंत्र का पूजन भी करे. इसके बाद व्यक्ति गुरुमन्त्र का जप कर गुरुदेव से साधना सफलता के लिए आशीर्वाद ले. इसके बाद साधक न्यास क्रिया को करे.

करन्यास –

ॐ क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः

ॐ नीलसुभगे अनामिकाभ्यां नमः

ॐ हिलि हिलि कनिष्टकाभ्यां नमः

ॐ विच्चे स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास –

ॐ क्लीं हृदयाय नमः

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ ऐं शिखायै वषट्

ॐ नीलसुभगे कवचाय हूं

ॐ हिलि हिलि नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ विच्चे स्वाहा अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक यंत्र को भगवती का ही पूर्ण रूप मानते हुये निम्न मन्त्र की २१ माला जप करे. यह जप साधक शक्तिमाला या मूंगामाला से कर सकता है.

मन्त्र - क्लीं ह्रीं ऐं नीलसुभगे हिलि हिलि विच्चे स्वाहा

(KLEENG HREENG AENG NEELASUBHAGE HILI HILI VICCHE SWAAHAA)

मन्त्रजप पूर्ण होने पर साधक योनी मुद्रा से यह जप देवी को समर्पित कर दे. इस प्रकार साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. माला का विसर्जन साधक को नहीं करना है. तीन दिन में यह प्रयोग पूर्ण होता है तथा साधक अगर चाहे तो भविष्य में भी इस मन्त्र को साधना में उपयोग में लायी गई माला से कर सकता है.

==

VASANT SUNDARI SADHNA

Vasant (spring season) is one such word listening to which person starts manifesting his sweet imagination in front of him. It is that time of year when there is beauty and sweetness spread all around , flowers starts flourishing , there is greenery all around , flowing river make such a pleasing noise . It is that portion of nature where only melody is spread all around. Therefore, this particular timeframe or season has been called Vasant because at that time nature is restless to provide complete beauty for welfare of humans. Though it is different thing altogether that what and how much person attain or how much he can. It is possible that he can enjoy each and every moment of this spring by feeling the beauty of nature or there is also a chance that he ignores it and could not give place to spring in his life. But Nature is not at fault if he does it like so. It all depends upon person that what and how much he attains from Prakriti (Nature) Tantra. Here purpose of discussion was to give clear and precise meaning of spring. Spring is not merely a season rather it is boon of nature through which person can get rid of shortcomings of life and make his life melodious in true sense and amplify the beauty of his life.

ANAND SHIVA SADHANA PRAYOG

पूर्ण आनंद की प्राप्ति हेतु एक गोपनीय साधना विधान

साधना जगत में तांत्रिक साधनाओ का अपना एक विशेष ही स्थान है. हमारी संस्कृति में भले ही विविध प्रकार के साधना मार्ग का विकास हुआ लेकिन तांत्रिक साधना का स्थान सर्वोच्च रहा साथ ही साथ जनमानस के मध्य यह मार्ग विविध रहस्यों से परिपूर्ण कौतुहल का विषय भी रहा. समय समय पर कुछ विशेष महाऋषियो ने इस मार्ग का उद्धार किया तथा इस मार्ग का जो मूल तथ्य या मूल चिंतन है उस मूल तथ्य को जनमानस के मध्य रखा है तथा स्वार्थपरस्तो के हाथो जो भी क्षय इस मार्ग का हुआ है उसकी पूर्ति करने की कोशिश की गई. लेकिन इस क्रम में कई कई महासिद्धो ने अपने आप को समाज में अलग कर लिया इसके पीछे का चिंतन साफ़ है स्वार्थ परस्ता में ढोंग और पाखण्ड इतनी हद तक फ़ैल जाता है की सही चीजों को भी गलत नज़रिए से देखा जाने लगता है, तंत्र के साथ भी ऐसा ही हुआ और यही हुआ तान्त्रिको के साथ भी.

ऐसी परिस्थिति में उन्होंने अपने आप को समाज से अलग कर दूरस्थ निर्जन स्थानों में अपनी साधनाओ को करना ही उचित समझा . लेकिन मुख्य रूप से इसमें कई प्रकार से समाज का ही नुक्सान हुआ, लोक कल्याण की जगह ढोंग ने ले ली, आध्यात्म का विकृत स्वरुप ही प्रदर्शित किया जाने लगा. और धीरे धीरे नाना प्रकार की रहस्यों से परिपूर्ण तथा दुर्लभ साधनाएं पहले गुप्त और फिर लुप्त ही होने लगी. इस प्रकार समाज की उपेक्षा से कई कई प्रकार की साधनाएं लुप्त हो गई जिनमे विविध शक्ति साधना तथा प्रकृति तंत्र से सबंधित साधनाएं मुख्य रूप से है.

अपनी आतंरिक शक्तियों को बाह्य शक्तियों के साथ संयोग कर के जागृत करने तथा प्रकृति के रहस्यों को समझ कर उसके साहचर्य को पूर्ण रूप से प्राप्त करने की प्रक्रिया को ही तो तंत्र साधना कहते है. फिर भला कैसे संभव हो की इन साधनाओ में ऐसी साधनाएं न हो जो की अद्भुत और आश्चर्यजनक रूप से कोई भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर सके. मनुष्य जीवन में व्यक्ति सभी प्रकार के भोग की प्राप्ति के लिए अपने पुरे जीवन भर नाना प्रकार से परिश्रम करता है तथा अपने लक्ष्य की और आगे बढ़ने के लिए हमेशा उद्वत रहता है लेकिन यहाँ पर एक क्षण को रुक कर किसी भी व्यक्ति को यह सोचना नितांत आवश्यक है की क्या वह जो भी भोग को प्राप्त करेगा उसका सुख उसे मिल सकता है लेकिन आनंद की प्राप्ति क्या संभव है? क्यों की सुख तो व्यक्ति के शरीर की क्षणिक अनुभूति है, जैसे ही प्रक्रिया या भोग खत्म होता है तब सुख भी खत्म. लेकिन आनंद तो सुख से कई कई गुना ऊपर है, क्यों की यह स्थायी है. तथा इसका अनुभव आत्मिक होता है, शारीरिक नहीं.

उदहारण के लिए अगर अत्याधिक गर्मी के समय में पंखा चल रहा है तो वह सुख दे सकता है लेकिन नींद ही ना आये तो? और जेसे ही पंखा बंद हुआ वह सुख का जो शरीर को अनुभव हो रहा था वह भी खत्म हो जाता है. आनंद का जीवन में होना कितना और क्या महत्त्व रखता है यह सायद शब्दों की अभिव्यक्ति से बहुत ऊपर है. और जो आनंद का सिंचन अपने जीवन में कर लेता है वह फिर किसी भी परिस्थिति में विषम से विषम समस्या में भी आतंरिक रूप से शांत तथा निश्छल बना रहता है.

शैव मत में शिव की पञ्च शक्तियों का अत्यंत ही महत्त्व है. क्यों की श्रृष्टि के सभी रहस्य इन पञ्च शक्तियों के माध्यम से जाने जा सकते है तथा प्रकृति का पूर्ण आनंद इन पांच शक्तियों के माध्यम से लिया जा सकता है. यह पञ्च शक्ति क्रिया, ज्ञान, इच्छा, चित्त तथा आनंद है. भगवान आदि शिव के विविध स्वरुप है जिनको सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप से अवलोकित करने पर भी वे हमेशा रहस्यों से परिपूर्ण ही रहे है.

उनके साथ आदि प्रकृति भी इस लीला में शामिल होती है. तथा विविध स्वरुप के माध्यम से वे जनकल्याण के लिए सदैव ही कार्य करती रहती है. इसी लिए उनके कई स्वरुप को शिवा भी कहा गया है.

सूक्ष्म रूप से देखा जाए तो शिवा मूलतः शिव की ही विविध शक्तियां है जो की स्थूल रूप में स्त्री देवी या प्रकृति के रूप में द्रष्टिगोचर होती है. एसी ही एक अद्भुत शक्ति है आनंदशिवा. भगवान शिव की पञ्च शक्तियों में यह आनंद तत्व प्रधान शक्ति है. इनकी साधना गोपनीय तथा विलक्षण कही जाती है. क्यों की मूल रूप से यह आनंद की ही साधना है, और जिसने आनंद को ही प्राप्त कर लिया उसके लिए फिर सुख भोग ऐशवर्य आदि दुर्लभ नहीं है, वरन यह सब तो अनायास ही साधक को प्राप्त होते रहते है. इनकी साधना के बाद साधक का ह्रदय पक्ष भी विक्सित होता है परिणाम स्वरुप आने वाली घटनाओ तथा निकट भविष्य के बारे में भी उसको विविध संकेत प्राप्त होने लगते है. व्यक्ति पूर्ण रूप से अपने अंदर आनंद के गुणों को धारण करने लगता है तथा अपने ही अंदर डूबने लगता है, चित को निर्मलता का बोध होता है. न सिर्फ आध्यात्मिक रूप से लेकिन भौतिक रूप से भी यह एक उच्चतम स्थिति है. क्यों की व्यक्ति का सामाजिक मान सन्मान ऐश्ववर्य तथा सभी सुख भोग की प्राप्ति भी एसी स्थिति में तो सहज हो जाती ही है, क्यों की जो शिव की पञ्च मुख्य शक्तियों की उपासना करे उसके लिए फिर क्या दुर्लभ रह जाता है.

साधक इस साधना को किसी भी सोमवार से शुरू करे

समय रात्रि में १० बजे के बाद का हो

यह साधना अगर साधक विशुद्ध पारद से निर्मित पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित पारदशिवलिंग पर करे तो साधक को कई प्रकार के विविध परिणामों की प्राप्ति हो सकती है, लेकिन अगर साधक के लिए यह संभव न हो तो साधक बिना पारदशिवलिंग के यह प्रयोग संपन्न करे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्र को धारण करे. तथा सफ़ेद आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए.

इसके बाद साधक अपने सामने पारदशिवलिंग को स्थापित करे. जिनके लिए यह संभव न हो वो कोई भी शिवलिंग को स्थापीत करे. साधक गुरुपूजन तथा गणपतिपूजन को संपन्न करे और शिवलिंग का भी पूजन करे. गुरु मन्त्र का जप करे.

पूजन के बाद साधक साधना क्रम को शुरू करे. सर्व प्रथम साधक न्यास क्रिया करे.

करन्यास

ॐ श्रीं ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ भगवतितर्जनीभ्यां नमः

ॐ सर्वानन्दमयिमध्यमाभ्यां नमः

ॐ शिवाअनामिकाभ्यां नमः

ॐ तस्यै वैकनिष्टकाभ्यांनमः

ॐनमो नमःकरतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ श्रीं ह्रीं हृदयाय नमः

ॐ भगवति शिरसे स्वाहा

ॐ सर्वानन्दमयि शिखायै वषट्

ॐ शिवा कवचाय हूं

ॐ तस्यै वै नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ नमो नमः अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास करने के बाद साधक मूल मंत्र का जप करे. यह जप साधक किसी भी रुद्राक्ष माला से करे. साधक को २१ माला मन्त्र का जप करना है.

मन्त्र –ॐ श्रीं ह्रीं भगवति सर्वानन्दमयिशिवातस्यै वै नमो नमः

(OM SHREENG HREENG BHAGAWATI SARVAANANDAMAYI SHIVAA TASYAI VAI NAMO NAMAH)

मंत्र जप पूर्ण होने पर साधक भगवती आनंदशिवा को प्रणाम करे. साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक भविष्य में भी माला का प्रयोग कर सकता है.

===

ANAND SHIVAA SADHNA

In Sadhna world, the tantric sadhnas keeps special important place. In our culture, be it different types of sadhna paths are developed but the tantric sadhna has kept the prime importance. Along with that, this path contains a different type of curiosity and secrecy amongst the common people. Time to time some ancient saints had emancipated this path. Moreover, put forth the main zest of this path amongst the common people. In addition, whatever harm caused to these facts were tried to be consolidated. However, in this process many Mahasiddhas tried to become isolate. The intension was very clear behind this because now it has become that in this time manipulation and diplomacy has reached up to certain level where the right facts are also been portrayed in such a wrong manner and they became ruthless. The same happened with Tantra and with the Tantriks as well.In such circumstances; they made themselves so isolated in such remote areas where they can perform their sadhnas without any interruption. However, if we see, the main loss occurred to society only. Instead of public welfare dissemblance, side took place. A distorted form of spiritual side was reflecting more. Then gradually the secrecy regarding these sadhnas came first and consecutive by the time it was disappeared from normal eyes. By societal ignorance many such secret forms of sadhnas vanished which consists Shakti sadhna forms and the sadhnas related to nature tantra also.

Conjoining our internal and external powers and activating them as to get complete support from the nature known as Tantra sadhna. Then why someone would believe it does not contain such sadhna, which can change any body’s personality from root.

ब्रह्म तारा साधना

BRAHAM TARA SADHANA

परम गोपनीय साधना विधान

सर्वेसुहृदयेस्वस्मि संस्थितात्मस्वरुपिणी | यदिच्छामिक्षणादेव परतत्वे नयामितं ||

उपरोक्त श्लोक में भगवती तारा के सबंध में भले ही एक सामान्य श्लोक या उनकी प्रसन्नता के सन्दर्भ की पंक्ति मात्र लगे लेकिन यह एक अत्यंत ही नूतन तथ्य को प्रकट करती हुई पंक्ति है जो की भगवती तारा के एक विशेष स्वरुप के सबंध में है.

उपरोक्त पंक्ति का अर्थ है भगवती श्री तारा सभी के ह्रदयमें स्थित आत्मा स्वरुप है. तथा किसी को भी क्षणमात्र में परातत्व का ज्ञान देने में समर्थ है. भले ही यह सामान्य लगे लेकिन इसका अर्थ बहुत ही वृहद तथा विस्तृत है, और क्यों न हो.

भला भगवती तारा के सबंध में उच्चारित हुआ कोई भी शब्द सामान्य रह ही कैसे सकता है. अपने सदैव कल्याणमय रूप के कारण देवी हमेशा अपने साधको के मध्य अत्यंत श्रद्धेय तथा ह्रदय प्रिय रही है. तथा उच्च से उच्चतम तंत्राचार्यो ने भगवती तारा की साधना कर जीवन में श्रेष्ठतम ज्ञान की प्राप्ति की, चाहे वह भगवान वसिष्ठ, विश्वामित्र हो या स्वयं भगवान बुद्ध. वस्तुतः आदि काल में ब्रह्मज्ञान से सबंधित साधना क्रम में भगवती तारा की साधना का अतिविशेष स्थान हुआ करता है. लेकिन काल क्रम में वे सब साधनाएं गुप्त होती गई, फिर भी तिब्बत के कई तांत्रिक मठो में आज भी इन साधनाओ को गुप्त रूप से बौद्ध लामा अपने शिष्यों को संपन्न कराते है तथा आध्यात्म की उच्चतम स्थिति बोधिसत्व की प्राप्ति के लिए भगवती तारा से सबंधित क्रम को प्रदान करते है. बोधिसत्व ही आगम में ब्रह्मज्ञान है. अर्थात ब्रह्माण्ड के रहस्यों के बारे में जानना, समझना तथा आत्मसात करना. भगवती तारा के इसी स्वरुप को जो की ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्रदान करता है उसे ब्रह्म तारा कहा गया है. उपरोक्त पंक्तिया भी भगवती के ब्रह्मतारा स्वरुप का सांकेतिक वर्णन करता है. भगवती तारा ह्रदय में स्थित आत्म स्वरुप है का अर्थ कुछ इस प्रकार है की भगवती ह्रदय अर्थात अनाहतचक्र में आत्म स्वरुप अर्थात ज्योति स्वरुप में सभी व्यक्तियो में विराजमान है तथा देवी की उपासना करने वाले व्यक्ति को परतत्व या ब्रह्माण्ड के गुढ़ ज्ञान को प्रदान करती है. वस्तुतः साधक अपने जीवन में विविध प्रकार के रहस्य से परिचित होने के लिए ही साधना क्रम को अपनाता है. रहस्य का अर्थ यूँ भी समझा जा सकता है की किसी भी विषय से सबंधित अज्ञानता को दूर करना. भगवती ब्रह्मतारा भी प्रकृति का एक ऐसा स्वरुप है जो की साधक के ह्रदयचक्र या अनाहत का जागरण कर आत्म तत्व को चेतना देता है. फल स्वरुप साधक में विविध प्रकार के सकारात्मक भावो का विकास होता है.

आत्मविश्वास की कमी जिस भी साधक को हो उनको आत्मविश्वास की प्राप्ति होती है

साधक के क्रोध तथा अहंकार जैसे हीन भावो का क्षय होता है.

साधक का चित शांत तथा स्थिर होने लगता है.

साधक को ध्यान में सरलता तथा सहजता की प्राप्ति होती है.

साधक की सोच का विकास होता है तथा वह विविध रहस्यों के बारे में स्वयं ही जानने लगता है.

इस प्रकार इस सरल प्रयोग के माध्यम से साधक कई कई प्रकार की आवश्यक शक्तियों को सहज ही प्राप्त कर सकता है. और इसके साथ ही साथ इन सब से ऊपर साधक को भगवती का आशीर्वाद प्राप्त होता है जो की साधक के भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही मार्ग की समस्याओ को हटा कर सहज कर देता है. यूँ किसी भी साधक के लिए यह प्रयोग अत्यधिक आवश्यक प्रयोग है जिसे निश्चय ही संपन्न करना चाहिए.

साधक यह प्रयोग किसी भी रविवार से शुरू कर सकता है.

साधक रात्रि में १० बजे के बाद यह प्रयोग आरम्भ करे. स्नान आदि से निवृत हो कर साधक लाल वस्त्रों को धारण करे. तथा लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए.

यह साधना मूल रूप से पारद सहस्त्रान्विता देह तारा के विग्रह के सामने संपन्न होती है. साधक अपने सामने देवी का पारद सहस्त्रान्विता विग्रह स्थापित करे, यह विग्रह की अनुपस्थिति में साधक देवी का सिद्ध यंत्र या चित्र स्थापित करे. साधक गुरुपूजन गणपति पूजन कर विग्रह का पूजन करे. गुरुमंत्र का जप करे. इसके बाद साधक देवी को वंदन कर न्यास प्रक्रिया करे.

करन्यास

ॐ ह्रीं स्त्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं माध्यमाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं अनामिकाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं कनिष्टकाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रीं स्त्रीं हृदयाय नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ ह्रीं स्त्रीं शिखायै वषट्

ॐ ह्रीं स्त्रीं कवचाय हूं

ॐ ह्रीं स्त्रीं नैत्रत्रयाय वौषट्

ॐ ह्रीं स्त्रीं अस्त्राय फट्

न्यास होने के बाद साधक को मूल मन्त्र का जप करना है. यह जप साधक मूंगामाला, शक्ति माला या तारामाल्य से कर सकता है. साधक को इस मन्त्र का २१ माला जप करना है.

मन्त्र - ॐ ह्रीं स्त्रीं ब्रह्म रूपिण्यै फट्

(OM HREEM STREEM BRAHM ROOPINYAI PHAT)

मन्त्रजप पूर्ण होने पर साधक योनी मुद्र से जप को देवी को समर्पित कर दे. इस प्रकार साधक यह क्रम कुल ३ दिन करे. तीन दिन करने पर यह साधना प्रयोग पूर्ण होता है. साधक को माला का विसर्जन नहीं करना है. यह माला का आगे भी मन्त्र जप के लिए उपयोग किया जा सकता है.

===

क्या ज्योतिष योग सच मे फलित होगा ही ?.-एक दृष्टी

ASTROLOGICAL YOGAS..?
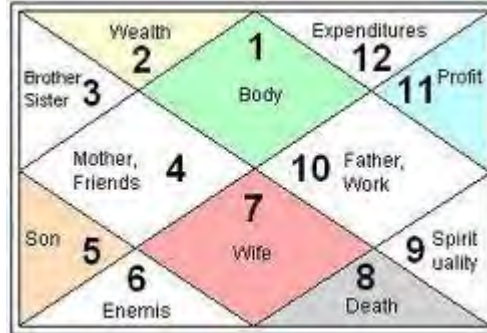
जब भी कोई नया नया ज्योतिष सीखने वाला या इस शास्त्र मे रूचि लेने वाला व्यक्ति इन योगों को पढता हैं तो स्वाभाविक हैं कि वह अनेको योगों को खासकर शुभ योगों को तो अपने कुंडली मे लगाकर देखना चाहता हैं ही और इसके परिणाम पढकर एक प्रकार की खुशी से भर जाता हैं कि कुछ ऐसा हैं इसमे,वहीँ जब यह बात स्वयम की कुंडली मे व्याप्त कुछ अशुभ योगों पर आयें तो निराशा का आ जाना एक स्वाभाविक सी प्रक्रिया हैं या एक डर की कहीं सच मे ऐसा न हो जाए,अनेको व्यक्तित्वो का यह शौक सा रहा हैं कि रोज उठते ही वह अपने राशिफल को पढते हैं और उसके हिसाब से अपने दिन भर को आंकने का प्रयत्न करते हैं.अब यह कितना सही हैं या कितना गलत, अभी इस बात पर विचार नही करते हैं बल्कि यह देखते हैं कि क्यों कुछ पर सारे परिणाम सही से लगते हैं और क्यों कुछ पर एक भी परिणाम सही निकल नही पाते है.

जहाँ एक ओर जन्म लग्न की शुद्धता हैं पर कितने हैं जो यह कर पाते हैं या उन्हें कोई योग्य ज्योतिषी मिले जो यह सही गुणा भाग करने मे सक्षम हो वहीँ दूसरी ओर यह भी सत्य हैं कि हर शास्त्र की एक सीमा हैं,और उस सीमा के आगे उस व्यक्ति को कोई न कोइ अन्य आसरा लेना ही चाहिए, तभी उसके फल कथन मे सत्यता का अंश जायदा होगा.पर जब बात हैं कि क्या सारे ज्योतिष योग के परिणाम जो उस व्यक्ति कि कुंडली मे आ रहे हैं, उस व्यक्ति को मिलेंगे ही,यह निश्चित नही हैं सामान्यतः ज्योतिष कुछशुभ शुभ योग बता देता हैं और कुछ हैं जो कुछ और धन राशि अर्जित की आशा मे कुछ भयभीत करने वाले भयंकर योग आपकी कुंडली मे हैं, यह कह कर अपनी जेब गर्म कर लेंगे.सत्यता को दोनों तरफ से छुपाया जाता हैं,कुछ गलती हमारी भी हैं कि हम किसी भी ज्योतिष के श्रम को इतना सस्ता समझते हैं कि उसे उसके श्रम का पारिश्रमिक भी देने मे आनाकानी करते हैं, नतीजा आप समझ सकते हैं .

यहाँ एक बात अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि सिर्फ किसी योग शुभ या अशुभ के होने मात्र से उसके परिणाम आपको मिल ही जाए यह संभव नही हैं.खासकर कुछ साधनात्मक योगों के बारे मे तो यह निश्चितता हैं कि शायद उनके परिणाम कभी भी न मिले क्योंकि सबसे पहले तो यह देखना हैं कि क्या उस व्यक्ति मे इस ओर जाने की कोई लालसा या कोई गुण हैं या नही. फिर बात आती हैं की क्या उसमे जीवन काल मे ऐसी संभावनाए हैं कि इस प्रकार एक योग घटित हो ही जाए ,यहाँ पर मैं उस व्यक्ति कि आयु और स्थिति का भी आकलन करके कुछ कहा जाए उसकी बात रख रहा हूँ ..

ज्योतिष का एक वर्ग हैं जो कोई भी घटना के होने पर किसी न किसी तरह से उस घटना को कोई न कोई ज्योतिष योग से जोड़ कर अपनी वाहवाही कर ही लेता हैं, अपने ज्ञान की..... तो एक वर्ग हैं जो लगतार अनुसन्धान मे लगा रहा हैं उसका ध्यान इस बात पर रहता हैं कि क्यों और कब.न कि कोई किसी तरह का हो हल्ला ..हमेशा किसी भी योग के फलित होने का समय देखना चाहिये और की क्या वह समय उस व्यक्ति के जीवन काल मे आ रहा हैं? यहाँ मतलब सबंधीय दशा या महादशा उसके जीवन काल मे हैं या नही अगर नही हैं तो अन्य ग्रहों की दशाओ मे अंतर दशा देखें जहाँ पर उसके परिणाम मिलने की आशा हो ,साथ ही साथ यह भी ध्यान रखे कि क्या ऐसा हो पायेगा .कारण यह हैं कि आप किसी के विवाह की आयु ३५की अवस्था मे ज्योतिषीय गुणा भाग करके निकाल दो पर उसकी कुल आयु मात्र २७ /२८ वर्ष ही हो तो कैसे फलित हो पायेगा? यह योग यह भी तो सोचने कि बात हैं .

वहीँ एक बात यह भी हैं कि भूलकर भी किसी के चरित्र का आकलन आसानी से न करें क्योंकि इतने नियम और उपनियम हैं कि उच्चस्तरीय ज्योतिष भी गलती कर सकता हैं और इस गलती का व्यर्थ ही परिणाम अच्छा नही होगा .उदाहरण के लिए कुछ शुभ गृह किसी व्यक्ति के अष्टम भाव मे हैं और ज्योतिष योग मे से एक योग इस तरह का भी हैं जो असुर योग कहलाता हैं जिसके अनुसार व्यक्ति तानाशाह जैसा होगा आचरण भी वैसा ही ही होगा . या इसे ऐसे देखें की किसी के कुंडली मे व्यभिचार वाले योग हैं तो सामान्यतः उसके बारे मे कोई अच्छी राय समाज मे नही होगी,यह तो सामन्य सी बात हैं पर इतना आसन नही हैं ज्योतिष .यहाँ यह ध्यान से देखना होगा कि क्या उस व्यक्ति का दशवा भाव शुभता लिए हुये हैं या अशुभता .अगर श्रेष्ठ दशम् भाव हैं तो उस व्यक्ति की कुंडली मे भले ही ऐसे भयंकर योग हो वह कार्य रूप मे परिणित नही करेगा .क्योंकि दशम भाव तो कार्य का भाव हैं ,और किसी के चरित्र आंकने मे भी यही भाव को भू ध्यान मे रखें .

कई कई बार कोई व्यक्ति अत्याधिक चरित्रहीन व्यक्ति होता हैं पर किसी को उसका पता तक ही नही क्योंकि अपयश वाली बात या योग या अवस्था उसकी कुंडली मे होती ही नही हैं.उनके निकटस्थ व्यक्ति तक तो यह पता नही होता हैं कि ये व्यक्ति ऐसा हैं .

ठीक इसी तरह भले ही किसी कि कुंडली मे कितनी भी उच्चता दिख रही हो पर लग्न भाव की श्रेष्ठता बहुत इसको आधार देती हैं वहीँ मानसिक रूप से इस स्थिति को प्राप्त करने मे क्या वह सक्षम हैं?.यह भी तो सोचने विचारने वाली बातें अन्यथा भले ही वह उच्च अवस्था उसे मिल जाये पर रहेगी कितने देर .

हर ज्योतिष योग के फलित होने की कसौटी उसके फलित होने मे हैं .यहाँ केबल समय ही निर्धारण कर सकता हैं कि आप कहाँऔर किस स्तर पर खड़े हैं ,सिर्फ किसी घटना का विश्लेषण करने मात्र से आप भले ही ज्योतिष हो जाए पर सार्थकता आने वाले समय को पढ़ने मे हैं और दूर भविष्य नही बल्कि पास पास की घटनाओं को आकने मे हैं यहाँ प्रश्न सही होने या गलत होने का नही हैं बल्कि इसमें एक सच्चे अनुसंधानकर्ता होने मे हैं औरजो भी गलतियां फल कथन मे हो रही हैं उन्हें गलती स्वीकार करना या सही होने पर एक नया सूत्र पाने या समझने की अपनी ही एक खुशी भी तो हैं .अतः देखा जाए तो सबसे पहले जब कोई गंभीर प्रश्न सामने आ रहा हो तो उस व्यक्ति की आयु देखी जाए और यह भी देखा जाए की सबंधित योग जो शुभ कारक हैं या अशुभकारक हैं .

क्या वे जीवन भर असर देने वाले वर्ग के हैं या किसी विशेष समय तक ही उनका अर्थ हैं अगर विशेष समय तक ही उनका अर्थ हैं तो क्या वह समय,इस व्यक्ति के जीवन काल मे सही समय पर आ रहा हैं या नही.उदाहरण एक लिए एक छोटे से बच्चे की आयु के १ साल से लेकर ४ साल तक कि आयु मे उसके परम धनी या परम गरीब होने की भविष्य वाणी करने का क्या अर्थ.

किसी की विवाह आयु मात्र ३ साल की आयु मे निकाल देने का क्या अर्थ (कभी यह संभव रहा होगा पर परिणाम तो हमें आज देना हैं और आज की सामाजिक अवस्था मे क्या यह संभव हैं?)

किसी बालक के संतान योग या उसके सरकारी जॉब होनी कि उस आयु मे होने का क्या अर्थ हैं.

किसी भी भविष्य फल के देने के साथ,व्यक्ति की आयु ,उसकी मानसिक शारीरिक और आर्थिक स्थिति को भी समझ कर परिणाम देना कहीं ज्यादा श्रेयस्कर होगा.

अब यह हर बार उम्मीद की जाना की हम जिस भी ज्योतिष के पास जाये पहले वह हमारी सारी बातें सही बताये एक एक तभी, हम उससे सलाह लेंगे, यह तो निरर्थक बात हैं,क्योंकि तब हमे उसके श्रम एक हिसाब से उसे उचित पारिश्रमिक भी दे सकने मे समर्थ होना चहिये और यह भी संभव नही कि एक ज्योतिष हर बार अपने सही होने का या उसके ज्योतिष विद्या मे प्रवीण होने का प्रमाण पत्र हर किसी को देता रहे.

अनेक उच्च स्तरीय ज्योतिष तो किसी नव आगंतुक से यह सुनते ही,की मेरा इस विद्या मे विश्वास तो नही हैं पर उनके - उनके कहने पर आपके पास आया हूँ.वे यह सुनते ही सामने वाले व्यक्ति से साफ़ साफ़ कह देते हैं कि मैं आपको इस विद्या पर विश्वास कराने के लिए नही बैठा हूँ,अगर विश्वास हैं तो स्वागत हैं अन्यथा अपना समय नष्ट न करें .

इस तरह से किसी भी योग के परिणाम देते समय या आकलन करते समय बहुत कुछ बातों का ध्यान रखना होता हैं,जब कुछ बातें बहुत गंभीर हो तब जीवन आयु और वहां कहाँ और किस जगह का रहने वाला हैं और उसके यहाँ प्रचलित रीति रिवाज मे क्या यह संभव हैं ऐसी अनेको बातों पर ध्यान दे कर ही अपना फल कथन करना चाहिये.जो कार्य कुछ कठिन सा जरुर हैं.

इसलिए सिर्फ ज्योतिष गुणा भाग के साथ यदि साधनात्मक बल और इष्ट बल भी होगा तो यह इस विद्या के लिए मददगार हो होंगे और उससे भी जयादा आप जिस व्यक्ति को मार्ग दिखा रहे हैं उसके लिए बहुत अनुकूलता भी .

==

Will Astrology Yog materialize in Reality? - One view

Whenever any new student of astrology or person having interest in this shastra read these yogs it is but natural that he wants to see various yogs and especially the auspicious yogs in his horoscope and after reading the results his heart is filled with joy. But when we talk about inauspicious yogs present in our horoscope then it is quite natural to get disappointed or get apprehension that it may happen in reality. Many persons have got the hobby of reading their zodiac results and try to analyze their whole day proceedings accordingly. Now just leave aside the topic whether this practice is right or wrong rather we will focus on why all results prove to be right for some persons and on others none of the results prove to be right.

On the one hand correct birth ascendant is important but how many are there who can determine it correctly or they have any capable astrologer who is capable of doing correct calculation. On the other hand, it is also true that every shastra has got one limit, beyond which person has to rely on some other alternative then only degree of preciseness of said result will be higher. But when we are talking about that will a person definitely get all the results of astrological yogs which are present in his horoscope, it is not a certainty. Generally Astrologer will tell some auspicious yogs and there are some who in order to earn money will tell you some dreadful yogs in horoscope. Truth is concealed from both sides. Some fault also lies with us that we consider hard-work of any astrologer to be so cheap that we hesitate to give fee for hard work put by him. Results are but obvious.

Here one fact has to be understood very well that just by any Yog being auspicious or inauspicious, you will get its results, it is not possible.

WHAT IS RATN JYOTISH ?

रत्न ज्योतिष का एक प्रारंभिक परिचय

ज्योतिष का मानव जीवन पर असर और प्रभाव आज सभी को ज्ञात हैं,और न मानने वालो की तुलना में मानने वालों की संख्या कहीं जायदा हैं वस्तुत अगर किसी भी विज्ञानं में सत्य का सामना करने की शक्ति नहीं हो तो वह कैसे आज हजारों वर्षों से मानव समाज के बीच अपना स्थान बनाये रख सकता हैं, यूँ तो आज कई जंगली जन जातियां ऐसी हैं जो आधुनिक विज्ञानं को न जानती हैं, न मानती हैं तो उससे आधुनिक विज्ञानं की सत्यता और असत्यता पर भला प्रश्न चिन्ह कैसे लग सकता हैं.

और यह हमारा सौभाग्य हैं की आज कम से कम इस ज्योतिष शास्त्र के अनेको स्तम्भ कम या ज्यादा ही सही पर अपने स्वरुप में सामने हैं और इस ज्योतिष शास्त्र के अनेको भागो और प्रभागों के मध्य एक नाम रत्न ज्योतिष का भी हैं.

प्राचीन काल से अनेको दिव्य मणियों के बारे में उल्लेख मिलता ही आया हैं, जैसे पारद मणि और स्यम्यन्तक मणि और भी कई कई मणियाँ भी, इसका मतलब सिर्फ यह मणियाँ धारण करने की ही नहीं बल्कि इनका कुछ विशेष महत्त्व भी रहा होगा तभी तो उस प्राचीन काल में भी और आज के काल में भी लोग इनके पीछे पागल हुए रहते हैं.इन्हें सिर्फ पत्थर का टुकडा नहीं माना जा सकता हैं.

सदगुरुदेव जी ने मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं पत्रिका के एक अंक में ऐसी अनेको मणियों के बारे में हमारा ध्यान आकर्षित कराया था जिनसे साधना में सफलता कहीं आसानी से पायी जा सकती हैं.और यह उस काल के लोगों का सौभाग्य रहा हैं वे सब दिव्यतम निधियां जो जीवन के अनेको क्षेत्र में सहयोगी रही हैं सुलभ रही पर आज यह अवस्था फिर से शोचनीय हो गयी हैं .

ज्योतिष के परिणामो पर भले ही लोग प्रश्न वाचक चिन्ह लगाए पर लोगों के मध्य आज भी रत्न के प्रति आकर्षण तो हैं ही,एक तरह से इन्हें या इनके बारे में न जानने लें व्यक्ति, इन्हें सौन्दर्य बढाने वाले एक उपादान मान सकते हैं पर वास्तव में यह तो सही हैं पर इसके आलवा भी इनका महत्त्व भी कई कई गुणा अधिक हैं.

और यूँ तो इन मणियों का इतिहास राजा बलि की कहानी से ही सामने आता हैं जहाँ भगवान् विष्णु ने वामन अवतार के माध्यम से राजा बलि के शरीर के विभिन्न हिस्से से इन मणियों का जन्म हुआ हैं यह घटना सभी जानते हैं, क्योंकि वचन के उपरान्त जब भगवान् ने उसके शरीर का स्पर्श अपने चरण से किया तो वह पूरा रत्नमय हो गया और देवराज इंद्र ने उसे अपने वज्र से टुकड़े टुकड़े कर दिया .इस तरह से इन रत्नों का संसार के सामने आना हुआ,वास्तव में रत्न सिर्फ सौन्दर्य बढाने वाले उपादानो से बहुत कुछ अलग हैं .इनका सही प्रयोग किसी उचित और योग्य आधार वालें व्यक्ति के निर्देशों पर किया जाए तो व्यक्ति बहुत जल्द ही अपने लक्ष्य को पा सकता हैं.इस बात का अर्थ समझना चाहिये,वस्तुतः बुद्धिमान वही हैं जो इन रत्न विज्ञानं के गुणों की सहायता से अपने जीवन की प्रतिकूलताओ को अनुकूलताओ में बदल सकें.

ज्योतिष में जो भी कमिया या न्युन्तायें एक मानव जीवन की बताई जाती हैं जब किसी जातक के जन्मांक को देखा जाता हैं.और इस रत्न विज्ञान के माध्यम से उन कमियों और न्यूनताओ को एक सही वैज्ञानिक दृष्टी के माध्यम से उपयोगित कर मानव जीवन के कष्ट प्रद रास्ते को सुगम करने का काम,

यही विज्ञानं करता हैं.इस विज्ञानं में विदेशों में भी बहुत कार्य हो रहा हैं वस्तुतः रत्नों का एक अद्भुत कार्य हैं की किस तरह यह मानव जीवन के लिए यह उपयोगी सिद्ध होते हैं किस तरह से हमारे आचार्यों ने मनीषियों ने और उच्चतम आध्यात्म विदो ने यह खोज किया की किस तरह ये रत्न मानव जीवन के लिए उपयोगी होंगे किस तरह से हर रत्न किस तरह से किसी एक ग्रह का प्रतीक हैं.इस तरह से इस विज्ञानं को कोई सामान्य नहीं समझा जाना चहिये यह भी १०८ दिव्य विज्ञानों में से एक हैं जिनका एक सही स्वरुप सामने आना हैं और सिर्फ मुख्य रत्न ही नहीं उपरत्नो का भी एक अद्भुत संसार हैं न केबल ग्रहों के मुख्य रत्न की बदले में पहिने जाने के लिए ही नहीं बल्कि अनेको ऐसे दिव्य उपरत्न हैं जिनका अभी परिचय सामने आना बाकी हैं , जो की सस्ते सरल और सहज ही उपलब्ध हैं पर उनका वास्तविक स्वरुप छुप सा गया हैं.जिनकी दिव्यता से अभी भी जन सामान्य ही क्या बल्कि साधक समाज भी पूर्णतया अपरिचित हैं.

इन अनेको दिव्यतम रत्न विज्ञानं से सबंधित बातें और तथ्य तो समय समय पर आपके सामने आयेंगे ही जैसे जैसे हमारे वरिष्ठ सन्यासी भाई बहिनों की आज्ञा और निर्देश हमें मिलता जायेगा .

===

WHAT IS GENSTONE ASTROLOGY?

Today, all of us are aware of the effect and influence of astrology on human life. Those who accept it are more in number than those who do not accept it. In fact, if any science is not able to face the truth then how can it sustain in human society from thousands of years?

There are few tribal and nomadic castes that neither know nor accept modern science, so can we raise question mark on authenticity of modern science?

And we are very lucky that at least today various pillars of astrology are more or less present in their authentic form. One among many types and sub-types of astrology is gemstone astrology. From ancient time there has been mention of various divine gems like mercurial gem or symyantk gem etc. It does not mean that they were merely for wearing rather they would have got special importance. That’s why people are crazy behind them both in past and today’s era. They cannot be merely considered as piece of stone.

WHY GEMS ARE NEEDED ?

इस विज्ञानं की उपयोगिता पर एक दृष्टी

सारा जगत जिस एक नियम पर आधारित हैं, उसे कर्म नियम कहा जा सकता हैं.हर व्यक्ति के अच्छे बुरे भाग्य या जीवन में अवनिति या उन्नति या जो भी उतार चढाव उसके सामने आते हैं उसके अगर सिर्फ संयोग के नियम से समझाया जाए तो मानो एक अराजकता सी चारों और मच जाएगी अत: यह नियम सही नहीं है और अब तो आधुनिक वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करने लगे हैं की इस ब्रम्हांड का निर्माण कोई एक संयोग नहीं बल्कि एक सुविचारित व्यवस्था हैं और इसको सुचारू रूप से सतत गतिशील करने के लिए जिन नियम या उप नियम या पराभौतिक नियम हैं,उनमे कर्म नियम सबसे ऊपर हैं और कहा जाए की एक यही नियम ही जीवन की सारी विसंगतियों को समझा सकता हैं.अतः इस नियम की महत्वता तो स्वीकार सभी करना पड़ता हैं.

भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं की जो कर्म हमने सृजन किये थे, उनका निराकरण भी हम कर सकते हैं.पर कैसे यह संभव हो तो इसके लिए बहुत सारे उपाय हैं, जिनमे मन्त्र,तन्त्र,यज्ञ और अन्य भी शामिल हैं और हर किसी प्रक्रिया की एक अपनी ही उपयोगिता हैं और इन प्रकारों का उच्चस्तरीय रूप अभी तो जन सामान्य के सामने आना बाकी हैं और जन सामान्यतः की सामान्यतः रत्नों धारण करने की अधिक रूचि रहती हैं .पर आखिर क्या आधार हैं इन सब बातों का. क्यों कुछ पत्थर को धारण करने पर एक व्यक्ति को अनुकूलता मिलती हैं तो वहीँ दूसरी और दुसरे व्यक्ति को उसी पत्थर जिन्हें हम रत्न धारण करने पर प्रतिकूलता मिलती हैं.क्या सचमुच गृह नक्षत्र का मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता हैं .?इसे कैसे समझा जाए?

वस्तुतः ग्रह नक्षत्र में मनुष्य से हजारों मील की दुरी पर हैं तो उनका हम पर असर पड़ना थोडा सा अजीब सा मालूम होता हैं पर वास्तव में यह ग्रह सिर्फ धनात्मक और ऋणात्मक करने छोड़ते रहते हैं, और हमारे कर्म फल इन धनात्मक और ऋणात्मक किरणों के असर से समय समय पर अपना असर दिखाते रहते हैं, जिस तरह से किसी खेत में रबी की और खरीफ दोनों फसले बो दी जाए तो भले ही उस खेत में पानी प्रवाहित किया जाए पर जब रबी का मौसम होगा, तब रबी वाली फसल होगी और खरीफ वाले समय पर खरीफ .

ठीक इसी तरह हमें भी समय समय पर इन ऋणात्मक किरणों का असर सहन करना पड़ता हैं और धनात्मक कित्नो का लाभ यदि हमारे कर्म फल कुछ अच्छे हुए तो पर यह मानव शरीर एक मंदिर माना गया हैं और धनात्मक किरणों से ज्यादा ऋणात्मक किरणों का असर हमको प्रभावित करता हैं.और इन ऋणात्मक किरणों के असर से इस शरीर मंदिर की रक्षा करना भी एक अनिवार्य कर्तव्य माना गया हैं.क्योंकि यह मानव देह अमूल्य हैं और रत्न एक तड़ित चालक की तरह माना जाता हैं.और यह हमारे शरीर पर पड़ने वाले ऋणात्मक प्रभावों से हमारी रक्षा करता हैं .

और हमारे जीवन को और भी व्यवस्थित और आनंददायक बना सकने में समर्थ हैं, यह कर्म फल के असर को निर्मूल तो नहीं करता पर उसके प्रभाव को इतना कम कर सकता हैं की उसे लगभग न ही माना जा सकता हैं,ठीक इसी तरह से हमारे जीवन में आने वाले किसी भी शुभ प्रवाह या शुभ समय को कई कई गुणा बढ़ा सकता हैं.पर यह समझना भी जरुरी हैं की यह किसी नवीनता को जन्म नहीं दे सकता हैं.इसके साथ यह भी समझना जरूरी हैं कि इन रत्नों को धारण करवाने की सलाह देने वाले को किस स्तर का ज्ञान होना जरूरी हैं सिर्फ किताब से ही नहीं उसके पास उसके अनुभव की भी अमूल्य पूंजी होना ही चाहिए,सिर्फ किताबो के माध्यम से ही हर अवस्था में सही निर्णय नहीं दीया जा सकता हैं.

जीवन की अनेको दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति में यह रत्न विज्ञान व्यक्ति के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता हैं और उसको एक नया आधार दे पाता हैं और इसी तरह जो उसके लिए लगभग असंभव सा हैं उसे एक आधार देकर उसे जीवन की उच्चता और प्रसिद्धि के शिखर पर आसीन भी करा सकता हैं. बस जरुरत हैं तो इस विज्ञानं को समझ कर उसे सही अर्थो में उपयोग किया जाए.और इन रत्नों की सहायता तो उसे साधना में सिद्धि भी प्रदान करने में सहयोग कर सकती हैं,ज्योतिषीय दृष्टी से जो भी प्रतिकूल स्थिति हैं जो एक साधक को उसके लक्ष्य तक पहुचने में वाधा दे रही हैं.

===

Why Gems are required…

Whole world is based on one rule i.e. Law of deed. Every body's fate whether it is good-bad or development-degradation in life or any types of up-downs comes and if we just see the coincidences and tries to understand the rules then a big chaos will spread everywhere. Therefore, this law is not appropriate. Moreover, nowadays-even scientists are agreeing to this fact that construction of this universe is not just a coincidence rather it is a well-planned designing or arrangement. In addition, for its smooth functioning, those laws are considered and are it sub laws or metaphysical laws, amongst all the law of deed position number one. Only this law can make you understand all absurdity of life. Therefore, we all have to accept the importance of this law.

Lord Shri Krishna says in Bhagvat Geeta – those deeds, which we created, can be remove by us only. However, for making it possible, there are many ways to solve it, which includes Mantra, Tantra, Yantra and many other ways. In addition, every way consist its own importance and utility. Moreover, the advanced version of all these ways is remained to be open in front of all. Generally, people like to carry gems stones on their body. However, what is the base behind it? Why it is like that by wearing any stone or gem, a person gets favorability in life? On other side, the other person gets affected from it badly. Is it true that planets affects human being? Now the question is how to understand this?

RELATION BETWEEN PLANETS AND GEMS

रत्न विज्ञानं का ग्रहों से सबंध

रत्न विज्ञानं यूँ तो अपने आप में अनेको रहस्य छुपाये हुए हैं और इस महाविशेषांक के आगामी अंको में,जब इसके उच्चतम ज्ञान से सबंधित अंको के प्रकाशन की जब अनुमति मिलेगी, तब हम इसके अनेको गुप्त रहस्य को भी आपके सामने लायेंगे,पर उन अंको की प्रारंभिक पृष्ठ भूमि भी तो अभी जरुरी हैं.इसलिए यह जानना भी जरुरी हैं की हर रत्न को किस ग्रह से सबंधित किया गया हैं और यह सामान्य सी जानकारी भी कई कई बार बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं.

न केबल यह बल्कि इन रत्नों को धारण करने के लिए किस धातु का उपयोग किया जाना यह भी एक महत्वपूर्ण विषय हैं क्योंकि उचित रत्न के साथ उचित धातु का संयोग भी एक अनिवार्य प्रक्रिया हैं.

अगर उसका एक निश्चित लाभ लेना हो तो, क्योंकि विज्ञान का मतलब ही यही हैं की उसके हर भाग को जैसा निर्दिष्ट किया गया हो उसी रूप में पालन करना तभी एक प्रक्रिया पूरी होती हैं और उसका समुचित लाभ भी लिया जा सकता हैं.

ग्रह और सम्बंधित रत्न

- सूर्य –माणिक्य
- चन्द्रमा –मोती
- मंगल –मूंगा
- बुध – पन्ना
- शुक्र –हीरा
- बृहस्पति –पुखराज
- शनि –नीलम
- राहू –गोमेद
- केतु –लहसुनिया

ग्रह और सबंधित धातु

- सूर्य, मंगल,बुध------ स्वर्ण
- चंद्रमा,बृहस्पति –चाँदी
- राहू और केतु ---पंचधातु

- शनि –लोहा,रांगा

Gems and Planet rapport

Gem science is conceals many secrets in it. Moreover, in preliminary Special editions, when we will get permission to publish advanced information regarding this, we would definitely try best to put forth the new secrets. However, it is necessary to provide the basic information so that in future you will be able to understand it properly. Therefore, it is very essential to know which gem is of which planet. Such simple information sometimes keeps high importance.

Not only this but also which metal should be used to wear this gem is equally necessary information. As it is very important to know exact proportion and combination of gems and metal for using purpose. This is also an essential process only if certain benefit is desirable. Because science itself does means that following every procedure as instructed for achieving desired success.

Planets and related Gems

- Sun – Cornelian
- Moon – Pearl
- Mars – Coral
- Mercury – Emerald
- Venus – Diamond
- Jupiter – Topaz
- Saturn – Sapphire

SOME PRECAUTIONS FOR GEMOLOGY

कुछ सावधानी जिन्हें ध्यान में रखना ही चाहिए ही ...

जब किसी भी विज्ञानं का पूर्ण लाभ लिया जाना हो तो उसके सभी अंगो का परिपूर्ण रूप से अध्ययन भी किया जाना भी उतना ही आवश्यक हैं.जब रत्नों का धातु से और ग्रहों से सबंध हैं तो किस वजन के वह धारण किये जाना चहिये वह भी तो एक आवश्यक बात हैं क्योंकि हमारे आचार्यों का ज्ञान पूरी तरह से वैज्ञानिक मत युक्त रहे हैं भले ही उस कड़ी के लुप्त हो जाने के कारण हम यह समझ नहीं पा रहे हो पर यह भी तो एक सच्चाई हैं .और इस परिपेक्ष्य में कुछ सामान्य सी सावधानी जो आपको रखना ही चाहिये.

- अच्छी तरह से अपनी कुंडली का अध्ययन करवा कर ही आपको रत्न धारण करना चाहिए क्योंकि सामने दृष्टी से देखें जाने पर कई कई बार जातक बेहद परेशानी में फस जाता हैं,अनेको कुंडलियों में ग्रहों का संयोजन भी कई बार बहुत जटिलता युक्त होता हैं .

- सामन्यतः ज्योतिष जातक की कुंडली देखकर उनके लग्न स्थान के मालिक के रत्न को पहिनने के लिए कह देते हैं यह ठीक हैं, पर यहाँ भी कई कई बार लग्न स्थान का स्वामी ग्रह स्वयम बेहद कमजोर अवस्था में कुंडली में हो और बेहद विपरीत अवस्था में हो तब कुशल ज्योतिषी के अनुभव की जरूरत होती हैं.

- हर जातक की कुडली में किस राशि में वह ग्रह हैं उसके अनुसार एक निश्चित वजन का ही रत्न उसके लिए उपयोगी होता हैं,अतः सभी के लिए एक निश्चित वजन का रत्न कह देना उचित नहीं हैं ,पर जब इस बात का पूरी तरह से ज्ञान न हो तो सदगुरुदेव जी नेयह निर्देश दिया हैं की कम से कम चार रत्ती का वजन तो रत्न का होना ही चाहिये.(इसमें हीरा रत्न शामिल नहीं हैं)

- धारण करने से पूर्ण जब यह निश्चित हो जाए की यह रत्न जातक के लिए सर्व दृष्टी उपयोगी हैं तब ही उचित प्राण प्रतिष्ठा करवा कर ही धारण करना चाहिए और यह कार्य किसी भी योग्य पंडित से करवा लेना चाहिए जो इसका विधान पूर्ण के साथ जानता हो.अन्यथा उचित प्राण प्रतिष्ठा के अभाव में रत्न अपना पूर्ण प्रभाव नहीं दे पाते हैं.

- रत्न लिए जाते समय यह ध्यान रखना चाहिए की उसमे किसी प्रकार की टूट फुट, लाइन या कोई भाग में दरार आदि न हो क्योंकि एक सुगढ़ और सुडौल रत्न ही अपेक्षित उचित परिणाम दे सकने में समर्थ होता हैं .यह सही हैंकि एक निर्दोष रत्न की कीमत काफी ज्यादा होती हैं पर जीवन की बहुमुल्यता देखने पर यह निर्णय आपको करना ही होगा.

- हर रत्न का एक जीवन काल भी होता हैं अतः यह भी समझ लेना चाहिए की उस काल के बाद उसकी प्राण ऊर्जा लगभग समाप्त सी हो जाती हैं .अतः एक बार उसकी पुनः प्राण प्रतिष्ठा की जाना चाहिए.

- हर रत्न को धारण करने का एक वार और एक समय होता है उसका पालन भी किया चाहिए.

- तो विपरीत ग्रहों के रत्न को एक साथ या पास पास की अंगुली में धारण नही किये जाना चाहिए .

- इसी बात को नवरत्नों की अंगूठी में भी ध्यान रखना चाहिए .

- किसी दोष युक्त रत्न की जगह उपरत्नो का भी उपयोग आसानी से किया जा सकता हैं .

  और जो भी इस विषय में ज्यादा जानकारी चाहते हो उन्हें सदगुरुदेव द्वारा लिखित "रत्न ज्योतिष " का अच्छी तरह से अध्ययन कर लेना चाहिए .इस बहुमूल्य किताब में इस विज्ञानं से सबंधित सभी बातें पूर्णता के साथ दी हुयी हैं .

------------------------------------- --

Gems and their precautions

Whenever it is procuring benefit of any science then it is equally necessary to know and study each parts of that concerned subject. Gems have direct connection with metals and planets, so it is equally important to know which amount of Gems's weight one should consider. Reason behind this is since our old scholar's knowledge was completely based on scientific logics and facts though it is different matter those facts have been disappeared in times space and we are unable to understand it. So in this regard below given are the general precautions that you should consider…

- This is necessary that one should wear a Gems only after considering the thorough study of his/her horoscope. Because in outer way it seems that Jataka (person) is suffering from many obstacles in his life, and even in many horoscope the combination of planets are also tough.

- After going through the whole horoscope, Astrologer generally see the lord of first house and directly conclude to wear the Gems of related planet. Sometimes it went right but many times, it happens that the lord of first house itself is in weak condition in horoscope. In such odd situation, an efficient astrologer experience utterly needed.

- In every Jataka's horoscope, it is essential to figure out where the planet lies, in which zodiac sign, and accordingly weight of Gems prescribed. Therefore, this would not be right at all to recommend same weight of Gems to everybody. In such circumstances when one does not have complete knowledge, Sadgurudev ji always use too instructs for minimum jequirity Gems is be recommended. (here diamond Gems is excluded)

RATN JYOTISH ...AN EXPERIENCE

हस्त रेखा और अंक ज्योतिष तो सभी के मन पसंद विषय रहते हैं.हर घर परिवार मे या हमारे परिचित मे एक न एक तो ऐसा होगा ही जिसे इन विषय मे तथाकथित महारत होगी ही.और इस विज्ञानं को बहुत ही सरल सा मान लिया जाता हैं खासकर किसी भी व्यक्ति को जब कोई रत्न बताया जाता हैं की यह रत्न उसके लिए उपयोगी होगा.यहाँ यह समझने की आवश्यकता हैं की जितना यह कार्य सरल दिखता हैं उतना वास्तव मे हैं नही.हालाकि इस ज्योतिष विभाग के आचार्यों ने इस बात पर जोर दिया हैं की लग्न से सबंधित रत्न किसी को भी पहनाया जा सकता हैं और इसमें किसी भी प्रकार की कोई वाधा नही हैं.पर यह तो एक उपरी उपरी बात हो गयी कई बार बहुत सोच विचार करना पड़ सकता हैं इस नियम का पालन करने पर, मानलो लग्न भाव बहुत कमजोर या लग्नेश नीच राशि का हो और वह कहीं जायदा समस्या प्रदान कर रहा हो तब?

इस अवस्था मे कुछ ओर सोचना पड़ेगा.वस्तुत एक ज्योतिष का सामान्य सा विद्यार्थी कई बार नियमों की गहनता न समझते हुये उसे सिर्फ शाब्दिक रूप से ही उपयोगित कर देता हैं और इस कारण कई बार आश्चर्य जनक परिणाम भी प्राप्त होते हैं तो कई बार ..?

यहाँ इस बात पर भी ध्यान रखना होता हैं कि किस वजन का रत्न आपको, अपने सामने बैठे व्यक्ति को कहना हैं की वह इतने वजन का रत्न पहिने.यह या इस बात का निर्धारण उस व्यक्ति की कुंडली मे सबंधित ग्रह किस राशि मे बैठे हैं इस बात पर निर्भर करता हैं .

एक समय मेरे एक दोस्त ने मुझे अपनी कुंडली दिखाई.वह काल मे कुछ ज्योतिष का ज्यादा अध्धयन हुआ रहा तो कुछ विशेष गंभीरता से नही बस यूँ ही एक नजर डाल कर कह दिया की हीरा रत्न उपयोगी होगा क्योंकि वह कुंभ लग्न की कुंडली थी और मेरे मित्र का रुझान सिर्फ रत्न पहिनने पर रहा था,और कोई बात या समस्या उनके मन मे नही थी .

पर हीरा कितने वजन का हो यह लिखा नही था .सदगुरुदेव जी ने एक नियम दिया हैं कि रत्न को कम से कम ४ रत्ती के वजन का होना ही चाहिए ,पर राशि के हिसाब से यह वजन बढ़ भी सकता हैं पर कम से कम इतना वजन तो होना ही चाहिए ही.अब हीरा के बारे मे राशि के हिसाब से कुछ दिया नही था.तो क्या निर्णय करूँ .तो अपने मित्र को कह दिया की मेरे हिसाब से कम से कम इतने वजन का तो हीरा होना ही चाहिए ..और बात आई गयी हो गयी .अगले दिन वहीँ मित्र काफी गुस्से मे मिले मैंने कहा क्या बात हैं.बोले आज अच्छी बात हुयी मैं सीधे ज्वेलर्स की दूकान पर गया बोला की हीरा हैं उसने कहा की मिल जायेगा, आपको किस रेंज का चाहिए ,तो मैंने तत्काल कह दिया की ४ रत्ती का कम से कम होना चाहिए उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और बोला की माफ करना,कुछ बुरा लग जायेगा .मैंने कहा की कोई बात नही बोल ही दो,उसने कहा की अच्छे अच्छे टोयोटा कार से चलने वाले भी ४ रत्ती का हीरा नही पहिन पाते ,मैंने कहा की ऐसा क्यों ? उसने कहा की कम से कम ४/५ लाख मे आएगा .

मैंने कहाँ बस .इतना ही .

हम दोनों मुस्कुरा उठे,तभी मैंने कहा की किताब मे हीरा के वजन वाली बात क्यों नही दी हैं अब समझ मे आया .

खैर अगले दिन हम दोनों शहर के सबसे बड़ी शॉप मे गए और अब हम नीलम पर बात कर रहे थे क्योंकि नीलम तो कुंभ लग्न वालों के लिए सामन्यतः श्रेष्ठ रत्न हैं,तो उस दूकान वाले ने जितने भी नीलम के रत्न दिखाए, मुझे हर किसी मे खोट ही दिखाई दे.

हर रत्न को नकारता जा रहा था क्योंकि स्पस्ट हैं कि किसी रत्न मे हलकी लाइन या टूट फुट या आकार का सुगढ न होना और किसी मे कोई बिंदु बना हुआ तो किसी मे कोई अजीब सा ..इस तरह से कुछ देर मे उसकी दूकान मे कोई रत्न नही था जो शास्त्रीय मान्यता पर पूरा खरा उतरे और उसने कहा की आप जिस तरह से पूरा निर्दोष रत्न चाहते हैं. वह तो कोई भी नही लेगा क्योंकि उसकी कीमत तो कई कई गुणा होगी .

यह एक अद्भुत बात रही की हम जब जिस विज्ञानं को मानते हैं तब ऐसा ..?इसलिए आचार्यो मे उपरत्नो का प्रचलन स्वीकार किया क्योंकि एक तो उनका मूल्य कम और उनमे चाही गयी शुद्धता पायी जा सकती हैं या जड़ी बूटी का भी कुछ ऐसा ही हैं .

हालाकि की बिना रत्नों की तांत्रिक प्रक्रिया के पूरा पूजन हुये बिना अभी उन्हें धारण करना कुछ उचित नही हैं पर आज कहाँ किस के पास समय हैं तब पूरी प्रक्रिया पर जोर देना मानो अपना समय नष्ट करना ही हैं.और यह भी आश्चर्य की बात हैं इस सबके बिना भी रत्न का अपना ही अद्भुत असर हैं ,बिना इन सब प्रक्रिया के ही भी अनेको ने जब भी रत्न को धारण किया जो उनके लिए उचित रहे तो उन्हें अद्भुत परिणाम मिले ही हैं वह भी जीवन के सभी क्षेत्र मे.तब यह बहुत सोच मे डाल देती हैं की की अगर एक पूरी तरह से निर्दोष रत्न और पूरी तांत्रिक प्रक्रियाओं से युक्त हो तो तब वह क्या अर्थ रखता होगा और जातक को कहाँ तक पहचानने सामर्थ्य रखता होगा,जरुरत तो हैं आज इन विषय को समझने की और आवश्यक क्रियाओं को सही रूप से संपादित करने वाले विद्वानों की .सदगुरुदेव जी ईस विषय पर भी इतने नियम दिए हैं की कोई योग्य या सीखने वाला उस को अपना कर तो देखें और कुछ ऐसे सौभाग्य शाली रहे हैं जिन्हें सदगुरुदेव द्वारा यह रत्न मिले और वे आज अपने क्षेत्र के उच्चस्थ व्यक्तित्व हैं . इस तरह से आज अब समय हैं रत्न विज्ञानं और रत्नों की सामर्थ्यता को समझने की .

==

सदगुरुदेव प्रदत्त तीव्र प्रभावशाली सरल रत्न प्रयोग :आपके लिए

SARAL RATN PRAYOG

सरल प्रयोग जिन्हें करना ही चाहिए

रोग मुक्ति के लिए : एक रत्न प्रयोग

“प्रथम सुख निरोगी काया” यह तो जीवन के लिए कुछ अति आवश्यक बातों में से सर्व प्रथम कही गयी हैं और क्यों न हो,किसी भी उपलब्धि फिर वह भौतिक या आध्यात्मिक ही क्यों न हो उसको हस्तगत करने के लिए साधक का स्वास्थ्य को सर्वप्रथम उत्तम होना ही चाहिए अन्यथा कैसे कोई भी ठोस उपलब्धि को पूर्णता से पाया जा सकता हैं.और इसके लिये अनेको उपाय हो सकते हैं और सदगुरुदेव जी ने अनेको अनेको उपाय हम सभी के सामने रखें फिर वह चाहे पत्रिका के माध्यम से हो या शिविरों के माध्यम से या फिर केसेट्स के माध्यम से या फिर किसी किसी शिष्य को स्वयम उन्होंने ही यह प्रदान किया.

पर यह निश्चित हैं की सदगुरुदेव की आध्यात्मिक उच्चता को खासकर जिसमे उनका आयुर्वेद का पक्ष रहा हैं जन सामान्य क्या उच्चस्तरीय भी समझ नहीं पाए और उन्हें मुख्यता तंत्र, मंत्र और ज्योतिष का ही प्रकांड आचार्य मानते रहे पर ऐसा नहीं हैं सदगुरुदेव जी ने ने एक बार तो बहुत ही पूर्णता से यह बताया की वास्तव में इन सबसे कहीं कहीं ज्यादा उच्चता और ज्ञान की विशालता उनके अन्दर जिस क्षेत्र की हैं वह आयुर्वेद हैं पर यह हमारी पीढ़ी का दुर्भाग्य हैं की हम उनके इस ज्ञान को आत्मसात नहीं कर पाए हम बहुत कम ही उनके ज्ञान के इस पक्ष का परिचय पा पायें, पर एक बार पुनः आशा की किरण उदित होने लगी हैं जब उनके आत्मवत सन्यासी शिष्य शिष्याओं ने एक बार अपना दृढ मानस इस और बना लिया हैं .

सदगुरुदेव ने इस "आयुर्वेद सुधा" नाम की एक पत्रिका निकालने का मानस भी बनाया पर उस काल के शिष्य वर्ग की उदासीनता को देख कर उन्होंने वह विचार जो इतने आगे तक साकार होने की दिशा में बढ़ चला था उसे उन्होंने स्थगित कर दिया. सदगुरुदेव जी की किताब "मूलाधार से सहस्त्रधार "उनके असीम साग़रवत ज्ञान का एक परिचय देने के लिए एक कण मात्र ही हैं.और आज भी अनेको लोग उसमे दिए प्रयोग और ज्ञान की प्रखर उदात्तता को देख कर आश्चर्य हो जाते हैं.

यह उनके अद्भुत ज्ञान का एक छोटा सा परिचय हैं की रोग मुक्ति में रत्न का प्रयोग किया जा सकता हैं.किसी भी प्रकार का रोग हो यह प्रयोग आप किसी भी गुरु वार से प्रारंभ कर सकते हैं .

रतन उपयोगित :हल्ट हकिक

सहयोगी साधना सामग्री : नीम की लकड़ी के पांच टुकड़े,पांच लाल रंग के पुष्प (प्रति दिन)

मंत्र : **ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं रोग नाशाय फट .**

अपनी जिस भी शारीरिक रोग को आप दूर करना चाहते हैं,उसके दूर होने और आरोग्यता,निरोगिता पाने के लिए आप संकल्प ले कर इस प्रयोग को करें, यह सरल प्रयोग है अतः इसमें श्रद्धा,विश्वास की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं.

हर दिन इस हल्ट हकिक पर जिसे आप अपने सामने रखकर मंत्र जप करेंगे, उस पर 5 लाल रंग के पुष्प अर्पित करें ,इसी तरह नीम की लकड़ी के पांच टुकड़े भी इस हल्ट हकिक पर अर्पित कर दें. इसके बाद इस मन्त्र की पुरे मनोयोग से 5 माला मंत्र जप करें. इस तरह से ४० दिन करना है.

और अगले दिन फिर से पांच नए लाल रंग के पुष्प और नीम के टुकड़े उस पर अर्पित करना हैं.और पुराने सारे पुष्पों और नीम की लकड़ी को एक पात्र में इकठ्ठा करके किसी भी निर्जन स्थान पर फेक दें .

और प्रयोग समाप्ति के बाद सदगुरुदेव से सफलता की प्रार्थना करें ,

===

हकिक पर रोग मुक्ति हेतु 5 गुरुवारीय एक और सरल प्रयोग :

हर दिन अपने गुरु मंत्र जप का क्रम अर्थात कम से कम १६ माला जप करने के बाद हकिक पत्थर के ११ दाने ले ले और साथ में ११ सफ़ेद रंग के पुष्प लेकर इन दोनों पर एक साथ ११ बार गुरु मंत्र जप करके इन सबको पश्चिम दिशा की और फेक दें .

पर यह ध्यान रखने योग्य बात हैं की यह हकिक के दानो पर प्रक्रिया आपको 5 गुरुवार को लगातार करना हैं,और इस क्रम में कोई व्यवधान न हो .पर शेष अन्य दिनों में १६ माला गुरु मंत्र जप करना ही हैं .

और अंत में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह हैं की संकल्प में पूर्णता के साथ रोगी व्यक्ति का नाम और उसका रोग का नाम उल्लेख करना ही चाहिए ही.

==

INTENSE, EFFECTIVE AND EASY GEMSTONE PROCEDURE GIVEN BY SADGURUDEV: FOR YOU ALL

FOR GETTING RID OF DISEASES: A GEMSTONE PROCEDURE

“Pehla Sukh Nirogi Kaaya” (first and foremost pleasure is of having disease-free body) can be called first and foremost among most important facts of life. And why not, in order to attain any materialistic or spiritual achievement,

RATN TANTRA – SOME FACTS

रत्न विज्ञानं के नए आयामों से परिचय कराता हुआ

ब्रह्माण्ड अनंत रहस्यों से युक्त है तथा इन्ही अनगिनत रहस्यों के अंतर्गत कई कई प्रकार के विविध रत्न उपरत्न की शक्तियों के बारे में सदियों से हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने बताया है.और इन रत्नों के माध्यम से एक व्यक्ति या साधक अपने जीवन को विविधताओं से युक्त कर सकता हैं अपने जीवन को भी भी प्रखरता युक्त बना सकता हैं और जीवन की उस उचाईयों को भी हस्तगत कर सकता हैं जो की सामान्य रूप से बिना इन दुर्लभ रत्नों के अगम्य हैं रत्न या रत्नमणि की विविधता मुख्य रूप से ४ प्रकार से अनुभव की जाती है और उसी के आधार पर रत्नमणि को चार भागो में विभक्त किया गया है.

1. सामुद्रिकरत्नमणि – समुद्र को सदैव से रत्नाकर की संज्ञा दी जाती हैं ,और १०८ दुर्लभ दिव्य विज्ञानं में से एक रत्नाकर विज्ञानं भी हैं ,समुद्र से प्राप्त दुर्लभ रत्न उपरत्न को सामुद्रिक रत्न मणि कहा जाता है. इसका सब से उत्तम उदाहरण मोती है.

2. वनस्पतियरत्नमणि – तंत्र का यह एक अत्यंत गुह्य पक्ष है जिसके अंतर्गत विविध रत्नमणि कोई कोई वनस्पतियों से प्राप्त की जाती है या फिर वनस्पतियों की सहायता से निर्माण किया जाता है, ऐसे रत्नों को वनस्पतिय रत्नमणि कहा गया है.

3. प्राणिजरत्नमणि – जिव अर्थात प्राणियो से अंग, शरीर आदि से प्राप्त रत्न को प्राणिज रत्नमणि कहा जाता है. सर्प मुक्ता, गज मुक्ता इत्यादि प्राणिज रत्न है.

4. खनिजरत्नमणि – खनिजरत्न मणि अर्थात जो खनिज स्वरुप में प्राप्त है या पृथ्वी तत्व की घनीभुतता से जिन रत्न उपरत्नो का निर्माण हुआ है वह रत्नमणि, इन रत्नों के बारे में जनमानस के मध्य काफी बाते प्रचलित है. इसका सब से उत्तम उदाहरण 'हीरा' है.

आपके सामने पञ्च महाभुत में से कुछ महाभूत से युक्त कुछ अत्यंत ही दुर्लभ प्रयोग आपके सामने हैं ,क्योंकि मानव जीवन तो पञ्च महाभूत युक्त हैं और जब इनसे सबंधित प्रयोग मिले जो अत्यंत ही तीव्र प्रभाव और सफलता प्रदायक हो ,साथ ही साथ इन प्रयोगों को जो सदगुरुदेव जी की कृपा से प्राप्त हुए हैं, को पूर्णता के साथ करना वास्तव में जीवन का एक सौन्दर्य ही कहा जा सकता हैं.

==

Universe is full of infinite secrets and under these innumerable secrets, from centuries our ancient sages and saints have told about powers of various types of gemstones and sub-gemstones. Through the gemstones person/sadhak can make his life multi-dimensional, make his life vibrant and achieve those heights of life which cannot be attained normally without these rare gemstones. Diversity of gemstones or Ratnmani is felt in four ways and based on it Ratnmani are divided into 4 categories.

- Saamudrik Ratnmani (Oceanic Gemstones) – Sea/ocean has always been called as Ratnakar (storehouse of gemstones) and one out of the rare 108 divine sciences is Ratnakar Science. Rare gemstones and sub-gemstones obtained from sea are called Saamudrikratnmani. Best example of it is Pearl.

ABHIVART TANTRA MANI PRAYOG

दुर्लभ शत्रु मर्दन प्रयोग

"अभिवर्तेनमणिना येनेन्द्रोअभिवा वृधे"

अभीवर्त तंत्र मणि तंत्र का एक अद्भुत प्रयोग है. वस्तुतः यह मणि के भी विविध प्रकार है. यह मणि युद्ध विज्ञान तंत्र के अंतर्गत आती है. लोहे में नैसर्गिक रूप से यह गुण है की अगर उस पर मांत्रिक क्रिया की जाए तो वह उर्जा को अग्नि तत्व के रूप में परावर्तित कर सकता है.और इसी लिए लोहे से निर्मित कोई भी गोली या गुटिका को अभीवर्त तंत्र मणि कहा जाता है.यह मणि शत्रुओ के मर्दन के लिए अद्भुत कार्य कर सकती है. यह मणि अग्नि तत्व प्रधान मणि है.अग्नि तत्व प्रधान होने के कारण इसका असर भी तीव्रता युक्त होता हैं और अपने आप में जहाँ या जब भी कोई भी ऐसा कार्य जिसके कारण हमारी प्रगति में वाधा पड़ रही हो तो वहां पर इसे प्रयोग कर के अपना मनोवांछित हस्तगत किया जा सकता हैं.

क्योंकि अग्नि तत्व की गति हमेशा उर्ध्व मुखी होती हैं और सारी वाधाओ को नष्ट करके यह अपना रास्ता बना ही लेता हैं.ठीक यही गुण साधक की वाधाओ को नष्ट करके यह संपन्न करता हैं.

साधक यह प्रयोग किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी या अमावस्या को करे. समय रात्री में १० बजे के बाद का रहे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर काले वस्त्र को धारण करे तथा काले आसन पर बैठ जाए. साधक को दक्षिण दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए. साधक गुरुपूजन एवं भैरव पूजन का क्रम करे तथा गुरु मन्त्र का जप करे. इसके बाद साधक अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करे की मैं अमुक (शत्रु का नाम) शत्रु (अगर एक से ज्यादा शत्रु है तो समस्त शत्रुओ के लिए) के उच्चाटन के लिए यह प्रयोग सम्प्पन कर रहा हूँ, भगवती चांडाली मुझे सफलता प्रदान करे.

इसके बाद साधक अपने सामने किसी पात्र में अभीवर्त तंत्र मणि अर्थात लोहे की एक गोली रख दे तथा उसको काजल लगाए.

इसके बाद साधक निम्न मन्त्र की २१ माला जप करे. साधक को यह जाप रुद्राक्ष माला से करना है. मन्त्र में अमुक की जगह शत्रु का नाम ले. एक से ज्यादा शत्रुओ के लिए 'समस्त शत्रु'

ॐ चाण्डाली शत्रुमर्दिनि अमुकं उच्चाटय उच्चाटय फट्

(OM CHAANDAALI SHATRUMARDINI AMUKAM UCCHATAY UCCHATAY PHAT)

मन्त्र जप पूर्ण होने पर साधक लोहे की गोली को तथा माला को शमशान में फेंक दे. यह कार्य दूसरे दिन भी किया जा सकता है. इस प्रकार एक ही रात्रि में यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है.भले ही यह एक दिवसीय प्रयोग हैं पर प्रयोग समाप्ति के बाद जब तक कार्य आपकी आशानुरूप समपन्न न हो जाए तब तक कम से कम एक माला जप तो प्रति दिन करना ही चाहिए .क्योंकि साधना की उर्जा को भी तो साधक में समाहित होने में समय लगता हैं .

SHANKH MANI PRAYOG

आयुष्यवृद्धि के लिए एक अनूठा प्रयोग

दिविजातः समुद्रज सिन्धुतस्पर्याभृतः स नो हिरण्यजाः शङ्ख आयुष्प्रतरणो मणिः

अर्थात सूर्य के समान तेज वाले समुद्र से प्राप्त शंख रत्नमणि आयुष्य की वृद्धि करे.

यह जल तत्व प्रधान मणि है. मनुष्य शरीर का मुख्य तत्व जल तत्व जो की मनुष्य के शारीरिक ढाँचे के लिए कार्य करता है साथ ही साथ आयुष्य पर इसका अत्यधिक प्रभाव भी है. इस लिए शंख को आयुष्य प्रदाता कहा गया है. और ऐसा प्रयोग पाना तो जीवन का सौभाग्य हैं.

क्योंकि बिना पूर्ण आयु के भी सारे जीवन का कोई अर्थ नहीं हैं.वास्तव में देखा जाए तो निरोगी काया के बाद इसका ही सबसे ज्यादा अर्थ हैं मानव जीवन में क्योंकि अगर अल्पायु रहे तो भी कोई अर्थ नहीं और उच्चस्तर की उपलब्धियां हस्तगत करने के बाद जब पूर्ण आयु भी हो वह भी रोग मुक्त तब ही यह जीवन का सौन्दर्य कहलाता हैं .अतः एक ऐसा प्रयोग जिसके माध्यम से साधक की आयु मे वृद्धि और उसकी ऊर्जा में वृद्धि हो सकें यह भी कोई कम सौभाग्य की बात नहीं हैं.क्योंकि जहाँ आयु वृद्धि की बात हैं वहीँ पर यह भी एक निश्चित सा हैं की रोग रहित आयु हो .क्योंकि तभी तो आयुष्य वृद्धि का कोई अर्थ हैं . और यह प्रयोग ऐसा कर पाने में समर्थ हैं

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन से शुरू कर सकता है.

साधक यह प्रयोग दिन या रात्रि के किसी भी समय कर सकता है.

इस प्रयोग के लिए साधक को एक अत्यंत ही लघु शंख लेना चाहिए जिसको गले में पहना जा सके या तावीज़ में भर कर पहना जा सके.

साधक स्नान आदि से निवृत हो जाए तथा पीले रंग के वस्त्र को धारण करे तथा पीले आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए.

साधक अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाए तथा कोई पात्र उस पर रख दे. उस पात्र में केसर से 'ह्रीं' बीज लिखे. उसी के ऊपर साधक को वह शंख स्थापित करना है. साधक गुरु पूजन, गणेश पूजन को सम्प्पन करे तथा इसके बाद साधक गुरु मन्त्र का जाप करे. साधक शंख मणिरत्न का भी पूजन संपन्न करे. इसके बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

ॐ ह्रीं श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्टकाभ्यां नमः

ॐ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्

ॐ ह्रीं श्रीं कवचाय हूं

ॐ ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्

न्यास होने पर साधक निम्न मन्त्र का २१ माला जाप करे. यह जाप साधक स्फटिक/ कमलगट्टे की माला से या शंख माला से जाप करे.

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ

(OM HREENG HREENG HREENG SHREENG SHREENG OM)

२१ माला पूर्ण होने पर साधक शंख को नमस्कार करे तथा उसको तावीज़ में या लोकेट के रूप में अपने गले में धारण कर ले. साधक यह शंख १ महीने तक धारण करके रखना चाहिए, इसके बाद भी साधक चाहे तो शंख को धारण कर के रख सकता है लेकिन कम से कम १ महीने तक धारण कर के रखना चाहिए. माला का विसर्जन नहीं करना है यह आगे भी साधनाओ के लिए उपयोग की जा सकती है.

तंत्र प्रयोग

DARBH MANI TANTRA PRAYOG

सुरक्षा प्राप्ति प्रयोग हेतु एक अद्भुत प्रयोग

दर्भमणि को तंत्र तथा रसायन में अभ्रक कहा गया है. अभ्रक का एक छोटा सा टुकड़ा भी अपने आप में एक मणि है. तंत्र तथा पारद के क्षेत्र में अभ्रक का अत्यधिक महत्त्व है, यह मणि वायु तत्व प्रधान मणि है.पञ्च महाभूतो में वायु तत्व में जो गुण हैं की वह दिखाई नहीं देता इस कारण यह सुरक्षा प्रदान करने में प्रबल सहयोगी कारक सिद्ध होता हैं.आज सुरक्षा की किसे नहीं आवश्यकता हैं ,काल का प्रवाह कहें या आज के जीवन की विषमता की कोई भी कहीं पर भी सुरक्षित नहीं हैं,और जीवन की असुरक्षा के साथ साथ, जीवन से जुडी अन्य चीजों जैसे जोब की सुरक्षा आदि भी तो एक आवश्यक अंग हैं इस कारण आज इस प्रयोग की प्रबल आवश्यकता हैं.और जो साधक होता हैं वह किसी एक प्रयोग को करके बैठा नहीं रहता हैं बल्कि वह तो लगातार साधना करते रहता हैं कारण साधना करना तो उसके लिए एक अनिवार्य सी प्रक्रिया हो जाती हैं जैसे जीवन के लिए श्वास जरुरी हैं ठीक वैसे ही साधना भी तो एक अत्यावश्यक अंग हैं.

इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति अपने घर परिवार के लिए पूर्ण सुरक्षा की प्राप्ति कर सकता है, बाधाओं से मुक्ति पा सकता है तथा अगर घर परिवार में कुछ मनमुटाव है तो उसे भी खत्म कर घर में पूर्ण शांति का वातावरण स्थापित किया जा सकता है.

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन से शुरू कर सकता है. समय दिन या रात्रि का कोई भी रहे.

साधक स्नान कर लाल वस्त्रों को धारण करे तथा लाल आसन पर बैठ जाए. दिशा उत्तर रहे.

इसके बाद साधक अपने सामने एक छोटा सा टुकड़ा सफ़ेद रंग की अभ्रक का रख दे. साधक इस टुकड़े को कुमकुम से पोत दे. साधक गुरु पूजन, गणेश तथा भैरव पूजन करे. गुरु मंत्र का जाप करे.

साधक को इसके बाद न्यास करना चाहिए.

करन्यास

क्षां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्षीं तर्जनीभ्यां नमः

क्षूं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

क्षें अनामिकाभ्यां नमः

क्षौं कनिष्टकाभ्यां नमः

क्षः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

क्षां हृदयाय नमः

क्षीं शिरसे स्वाहा

क्षूं शिखायै वषट्

क्षैं कवचाय हूं

क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्

क्षः अस्त्राय फट्

न्यास होने पर साधक निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जाप करे. यह जाप साधक मूंगा माला से करे.

ॐ क्रीं क्षौं (OM KREENG KSHAUM)

मन्त्रजाप के बाद साधक को अभ्रक का टुकड़ा अर्थात दर्भमणि को अपने पूजा स्थल में स्थापित कर दें. इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक इस प्रयोग में उपयोग की गई माला को शक्ति साधना में उपयोग किया जा सकता है.

==

DARBHMANI – FOR ATTAINING SECURITY

Darbhmnani has been called Mica in tantra and chemistry. A small piece of mica is a gem in itself. In field of tantra and Mercurial science, mica is very much significant. This gem has primacy of air element. Out of five great elements, air element has quality that it is not visible. As a result, it proves to be beneficial in providing security. Who does not need security, may be it is demand of time or complexities of today's life , nobody is secure nowhere and along with insecurity of life, things connected to life like Job security is important element. That's why this prayog is needed the most. Sadhak does not become idle after doing a procedure; rather he continuously keeps on doing sadhna. Sadhna becomes an essential procedure for him. As breath is important for life, sadhna is also most important part of life.

Through this procedure, sadhak can attain complete security for his family, get rid of obstacles and if there is some dispute in family, it can be resolved and peaceful environment can be established at home.

Sadhak can do this procedure from any auspicious day. It can be done anytime in day or night.

Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan facing North direction.

SWARN RAHSYAM -14

अत्याधिक महत्वपूर्ण लेख :एक बार पुनः आपके लिए

इस समय आवश्यक हैं की हम एक बार फिर से इन तथ्यों को समझे ...

मैं ध्यान पूर्वक महानुभाव की बातें सुनने लगा .धातुवाद का महत्त्व मेरे लिए गौण ही था परन्तु ये भी रस तंत्र का एक अद्भुत भाग है और है भी बहुत आकर्षक . इसलिए सदगुरुदेव की ही इच्छा मानकर और ज्ञान वर्धन के लिए उपयोगी समझ उन वाक्यों को अपने अन्तः भाव में आत्मसात करने लगा .

महानुभाव अपनी ही मौज में कहने लगे की .... क्या , आप जानते हैं धातुवाद का क्या महत्त्व है एक रस साधक के लिए ??????

मैंने कहा शायद पूरी तरह नहीं ......

हम्म्म .... धातुवाद या लोह सिद्धि रस तंत्र की एक अद्भुत क्रिया है जिसके द्वारा निकृष्ट धातुओं जैसे की लोहा, रांगा,सीसा, जस्ता,ताम्बा, पीतल, आदि को रजत या स्वर्ण में पूर्णरूपेण परिवर्तित किया जाता है.

यहाँ तक की पारद को भी स्वर्ण में तबदील किया जा सकता है .जिस प्रकार सिद्ध रस का निर्माण कर समस्त ब्रह्मांडीय रोगों का नाश किया जा सकता है. निरोगी देह और लंबी आयु प्राप्त की जा सकती है. वैसे ही उस सिद्ध रस के द्वारा स्वर्ण का निर्माण भी किया जाना संभव है . यहाँ मैं ये बता दूं की यदि सिर्फ स्वर्ण निर्माण के लिए

सिद्ध रस का निर्माण किया जाये तो वो कभी भी निर्मित नहीं हो सकता . क्यूंकि पारद इस प्रकृति का सर्वाधिक चैतन्य तत्व है , साधक के मनो भावों को पढ़ कर , पात्रता को परखने के बाद ही सफलता प्रदान करता है . जब साधक का ध्येय मात्र स्वर्ण सिद्धि होता है तब ये तो निश्चय ही सत्य है की साधक का मनोरथ अर्थ प्राप्ति है ना की परम तत्व की प्राप्ति . अब ऐसे में आप रस सिद्धि के अधिकारी भला कैसे हुए.

क्यूंकि शरीर को रोगमुक्त करना भी मात्र इसलिए जरुरी नहीं है की आप सुखों का उपभोग करे बल्कि उस अविनाशी आत्मा को आप एक तेजस्वी देह प्रदान कर सके जिससे की वो उस परम रूप को प्राप्त कर सके. सुखों का उपभोग करना गलत नहीं है , गलत है उपभोग के लिए जीवन जीना . शरीर- योग या भक्षण रस संस्कार में १८

वां है , और इसके पहले का संस्कार वेधन है .... है ना???

जी ...जी बिलकुल. मैंने कहा .

वो मात्र इसलिए क्यूंकि ये मानव शरीर और जीवन अनमोल है . केवल मानव ही ये निर्धारित कर पाता है की वो किन कर्मो को अपने जीवन में अपनायेगा वो जो उसे देवत्व की और ले जायेंगे या फिर वो जो उसे असुरत्व की और ले जायेंगे. जगत पलक को भी अपनी लीलाएं दिखाने के लिए ,

ज्ञान और शिक्षा के प्रसार के लिए मानव शरीर का आलंबन लेना पड़ता है , ऐसा नहीं है की वो लीलाओं को विदेह होकर नहीं कर सकता , परन्तु तब हमें एकात्मता तो अनुभव नहीं होगी ना.

यहाँ एक बात मैं आप को बताता हूँ की शरीर योग या भक्षण और वेधन संस्कार वास्तव में ये संस्कार हैं ही नहीं ये तो क्रामन संस्कार के बाद की दो क्रियाएँ हैं जिनके द्वारा ये परखा जाता है की वो रस सही तरीके से निर्मित हुआ है या नहीं. शरीर पर प्रयोग करने से पहले या उसे भक्षण करने से पहले उस रस को,

धातु पर प्रयोग कर के देखते हैं की वो उसमे उत्क्रांति करता है या नहीं . यदि वो रस धातुगत समस्त न्यूनताओं को दूर कर उसे दिव्य स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है तभी ये माना जाता है की वो शरीर में भी उत्क्रांति कर दोषों को नष्ट कर दिव्यता प्रदान करेगा. स्वर्ण को दिव्य धातु मानने का कारण ही ये है की इसे आप कितना भी तपाओ , कितनी भी देर तक अग्नि में रख कर गलाओ .इसके भर में कोई अंतर नहीं.

आता बल्कि जितना आप इस तपाते हैं उतना ही ये सुन्दर वर्णीय होते जाता है . अन्य धातुओं को आप जब अग्नि पर गलाते हैं तो ठंडा करने पर ये मूल भार से हर बार कम होते जाते हैं. अर्थात उनमे दोष हैं. अग्नि जैसे धातुओं की परिक्षण की कसौटी होती है वैसे ही परिस्तिथियाँ मानव जीवन की कसौटी होती है . और जब तक आपमें दोष होते हैं तब तक आप विशुद्ध हो ही नहीं सकते.मूल रूप को प्राप्त ही नहीं कर सकते.धातु के अन्तः और बाह्य दोषों का नाश होने पर ही वे स्वर्ण में परिवर्तित हो पाते हैं.

पर धातुवाद की ये क्रियाएँ इतनी सहज नहीं है .इसके लिए न जाने कितनी तैयारियां की जाती हैं.

मैंने पूछा ... कौन कौन सी तैयारियां करनी पड़ती हैं??????

स्वर्ण सिद्धि या देह सिद्धि की मंजिल तक पहुचाने के लिए खुद पारद को पञ्च यात्रा करनी पड़ती है. उन्होंने कहा.

कैसी यात्रा? मेरा प्रश्न था.

पारे से पारद , पारद से रस , रस से रस राज , रस राज से रसेंद्र तक की यात्रा .

इससे क्या होता है और ये कैसे किया जाता है.????

प्रकृति में जो पारद पाया जाता है वो कंचुकी युक्त होता है. अर्थात विषमय होता है जब उसकी कन्चुकियों और विष को समाप्त करना हो तो उसे शुद्ध किया जाता है . कुमारी रस, रक्त चित्रक मूल रस, रजनी चूर्ण, स्वर्ण गेरू और लहसुन रस के द्वारा ३ दिन तक खरल करने से पारा शुद्ध हो जाता है और कंचुकी रहित भी . ये पारा अब पारद कहलाता है . जो की नील वर्णीय होता है . इसी पारद पर ही संस्कार की क्रिया संपन्न की जाती है . अब इस पारद को रस बनाने के लिए अष्ट संस्कार किये जाते हैं.ये अष्ट संस्कार गुणाधान का कार्य करते हैं और पारद को वीर्यवान भी.गुरु द्वारा निर्देशित और शास्त्र सम्मत तरीके से ही ये संस्कार होना चाहिए.

समय अधिक लग जाये चलेगा ,पर जल्दबाजी में किया गया कार्य सफलता नहीं देगा. इसलिए पूरे धैर्य के साथ संस्कार करना चाहिए.

यदि आपने पारद का चयन पूर्ण सावधानी के साथ किया हुआ है, और संस्कार भी सही तरीके से किये हुए हैं तो आपने आधा कार्य सही तरीके से कर लिया. एक महत्त्वपूर्ण बात याद रखना जरुरी है की पारद के साथ साथ सभी रसो, उपरसो , धातुओं और उप्धातुओं का शुद्धिकरण होना अत्यंत आवश्यक है. यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो जब आप इन में से किसी भी पदार्थ का संयोग पारद के साथ करते हो तो पारद फिर से दोष युक्त हो जायेगा और उसका वेध प्रभाव लगभग खत्म ही हो जायेगा..

यहाँ तक की स्वर्ण ग्रास के लिए जो स्वर्ण बाजार से लाया जाता है वो भी दोष युक्त होता है अतः उस विधान की जानकारी भी होने चाहिए.

यदि पारद को स्वर्ण ग्रास दिए बगैर आप रसखोट या भस्म बनाते हैं तो भला बीज जारण करे बगैर वो स्वर्ण ही नहीं बना पायेगा. हाँ यदि स्वर्ण युक्त दिव्यौश्धियों से संस्कार संपन्न हुए हैं तो कुछ और बात है.

कुछ महत्वपूर्ण बातें मैं यहाँ पर प्रकट कर रहा हूँ.... जो की रस साधकों के लिए ध्यान रखने योग्य है जिसका ध्यान रस कार्य करते समय यदि साधक रखता है तो उसकी सफलता का प्रतिशत बढ़ जाता है ,बाकि पूर्ण सफलता तो सदगुरुदेव के आशीर्वाद से ही संभव है.

रस कार्य जितना वैज्ञानिक कर्म है उतना ही साधना कार्य भी. रसेश्वर , रसान्कुशदेवी का नित्यार्चन अनिवार्य है . रस सिद्धों का ध्यान कर उन्हें नमन करते हुए यदि पारदेश्वर का अभिषेक किया जाये तो कई गुप्त सूत्र स्वयं ही स्पष्ट होते जाते हैं.

कनकावती साधना, वट-यक्षिणी साधना ,कनक-प्रभा साधना,कनक-धारा साधना,स्वर्नाकर्षण भैरव साधना, महाकाल भैरव साधना, स्वर्णसिद्धि साधना आदि में से कोई एक साधना को तो अवश्य ही करना चाहिए जिससे की आपको पूर्ण अनुकूलता मिले. यदि तारा महाविद्या के गुप्त रहस्य सदगुरुदेव से प्राप्त हो सके तो निश्चय ही सफलता आपकी अनुगामी होगी. हाँ रसेश्वरी दीक्षा के बगैर तो इस मार्ग पर बढ़ा ही नहीं जा सकता.

प्रत्येक तत्व के गुणों की जानकारी साधक को होनी ही चाहिए .प्रत्येक तत्व का अपना महत्त्व होता अहै रस कार्य की सिद्धि के पथ पर , जैसे नमक को सामान्य समझना ही गलत है . नमक को यदि सही तरीके से रस कार्य के लिए रस शाला में तैयार किया जाये तो ये पारद का क्रमण गुण तो बढाता ही है साथ ही साथ अन्य

धातुओं के अन्तः गत दोषों को भी साफ़ कर धातुओं को उज्जवल करता है . क्या पता है आपको की पारद के ऊपर इतना परिश्रम क्यूँ किया जाता है,ताकि उसका पक्ष-क्षेदन किया जा सके ताकि वो किसी भी पिघली हुयी धातु या गर्म धातु में मिल सके . पारद को रूह कहा जाता है और जब किसी भी धातु के शरीर में रूह का समावेश हो जाता है तो वो रुक्म मतलब स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है . यहाँ धातु से अभिप्राय उन धातुओं से है जिसका गलनांक पारद से कही ऊपर हो , जैसे की ताम्र, रजत, लोहा आदि.

और ये तभी संभव हो पाता है,जब पारद अग्निसह्य हो गया हो. इसके लिए गर्भद्रुति और अभ्रक का मिलाप पारद से किया जाता है . ये सब अति गोपनीय और कठिन क्रियाएँ हैं जिनके लिए सतत गुरु मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है . पर इसका एक छोटा सा रास्ता भी जिसका मात्र मैं संकेत ही कर सकता

हूँ ..... और वो ये है की मात्र नमक को खास तरीके से यदि तैयार किया जाये तो ये नमक ही पारद को अग्निसह्य कर देता है .तथा अन्य सभी उड़नशील तत्वों को भी ये अग्निस्थायी कर देता है.

इसी प्रकार कुछ विशेष वनस्पतियों तथा क्रियाओं का संयोग करने से ये पारद आपके मनोरथ को पूर्ण कर देता है.

(अगले लेख में बाकि सूत्रों का विवरण आप सभी के समक्ष शीघ्र ही करूँगा.)

Swarna tantra part 14

I was listening that eminent person’s talk very attentively…well significance of Alchemy(Dhatuwaad) was quite secondary for me. But ist is a wonderful part of alchemy and attractive too.So I thought it was revered Sadgurudev’s wish and its knowledge worthy too.Therefore I started imbibing it.

In such a delighted way he started telling and asked - do you know the importance of alchemy for an alchemist?

सरल लक्ष्मी साधना

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

धन धान्य प्रदाता लक्ष्मी प्रयोग अब इसे एक बार तो करके देखिये

आदिकाल से आज तक, और आज के इस समय मे तो सिर्फ और सिर्फ धन ही मानव की स्थिति का एक मात्र परिचायक हैं, यहाँ तक आचार्य चाणक्य ने भी लिखा हैं की मैं भी वही और मेरी और मेरी विद्या भी वहीँ पर सिर्फ एक धन के न होने के कारण आज मेरी यह स्थिति हैं की कोई भी मुझे नही पूंछता न ही कोई मेरा सम्मान करता हैं.और जब इतने उच्चकोटि के योगी साधक विद्वान ने यह लिखा हैं तो निश्चय ही इसमें कोई दो राय नही की,

धन आज मानव जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता ही बन गया हैं और जीवन के सभी स्तंभ मानो उसी पर टिके हैं.इस हेतु आज हर साधक को धन का महत्त्व समझना ही चाहिये और निश्चय ही कोशिश करके ऐश्वर्यवान होना ही चाहिये.

स्वयम सदगुरुदेव ने कई कई बार इस तथ्य का उदहारण दिया हैं की मेरे हर शिष्य को ऐश्वर्यवान होना ही चाहिये और इसलिए ही तो उन्होंने इतनी अधिक लक्ष्मी साधनाए दी हैं. सामान्यत: साधक इन लक्ष्मी साधना को बहुत ही हलके स्तर पर लेते हैं उनके मन मे बृहद साधनाओ के प्रति एक अलग सी रूचि रहती हैं पर सदगुरुदेव जी ने इस तथ्य को समझाया हैं की खासकर लक्ष्मी साधनाओ मे बृहद साधनाओ की अपेक्षा लघु साधना जयादा लाभ प्रद देखी गयी हैं .और उनका परिणाम भी जल्दी प्राप्त होता हैं.अतः साधको को इन सामान्य से सरल सी लगने वाली लक्ष्मी साधनाओ को भी अपने दैनिक जीवन मे एक स्थान देना ही चहिये और सफलता का अनुभव भी करना चाहिए.

ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मयै श्रीं श्रीं ॐ नमः .

इस अद्वितीय मंत्र को बस एक माला मंत्र जप प्रतिदिन यदि दैनिक पूजन मे स्थान देना ही चाहिये.और जीवन मे धन आगमन का भी प्रयास भी करें साधना और जीवन मे कर्म का सुखद संयोग भी रहना चाहिए .

Saral Lakshmi Prayog

From ancient times till today and especially in today's era money is one and only indicator of condition of person. Even Acharya Chanakya has written that I and my knowledge are still the same but it is the absence of money which has brought about such a condition where no one gives me consideration and respect. When such high-level Yogi, sadhak and scholar has written it then definitely there can't be two opinions on the fact that money has become most important necessity of human life and it seem that all pillars of life rests on it.Therefore, every sadhak should understand the importance of money and definitely try to become prosperous.

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

1. हर महीने एक शिवरात्रि आती हैं तो जिनके भी घर मे अपने जीवन साथी से कुछ क्लेश्कारक स्थिति बनती रहती हो, वह शिव रात्रि से हर दिन प्रातकाल उठकर जिस मटके से घर के लोग जल पीते हो उससे एक लोटा जल निकाल कर घर के चारो ओर छिडक दें ,पर यह लोटे से किसी अन्य को जल नही पीना चाहिये .
2. शयन कक्ष मे डबल बेड का विस्तर एक ही होना चाहिये अगर डबल बेड मे दो विस्तर बिछे हैं तो यह स्थिति पति पत्नी के लिए अनुकूल नही होती है.
3. शयन कक्ष मे हमेशा मनोहारी और स्नेह बढ़ाने वाले चित्र लगाये भूल कर भी किसी युद्ध या क्रोध मुद्रा वाले चित्र नही लगाना चाहिए .

4. हर गृहस्थ के घर मे कनकधारा स्त्रोत का ११ या कम से कम १ पाठ तो होना ही चाहिये, यह घर मे सुख संपत्ति बढ़ाने वाला और मंगल कारक होता हैं .

5. सफ़ेद कपड़े एक झंडा सा बनवा कर, उसे पीपल के पेड़ मे लगा दें. इससे व्यापार मे आने वाली रुकावटे दूर होने लगती हैं.

6. जिन्हें भगवती लक्ष्मी की कृपा चाहिये, उन्हें दोनों हाथो से अपने सिर को नही खुजलाना चाहिये.

7. जिन्हें भगवती लक्ष्मी की कृपा चाहिये, उन्हें चाहिए की कोशिश करें की घर मे कबाड इकठ्ठा न हो .

8. किसी भी प्रकार का दोष को दूर करने मे भगवान हनुमान की उपासना का तो अपना ही महत्त्व हैं और इतना ही नही उन पर लगाये गए सिंदूर के भी अनेको चमत्कारिक प्रयोग हैं,जिनमे से एक यह हैं की उनके कंधे पर लगा हुआ सिंदूर को अपने माथे पर लगा लेने से व्यक्ति को अगर कोई नज़र आदि दोष लगा हो तो उसका निराकरण भी हो जाता हैं .

9. अपने शयन कक्ष मे दर्पण नही लगाना चाहिये ,और अगर हैं तो उसे हटा दें या उस पर एक कपड़ा जब उसका प्रयोग न किया जा रहा हो तो उससे ढांक दें .

10. शयन कक्ष मे इसी तरह जल भी नही रखा जाता हैं इस बात पर भी विचार करें.यह सबंधो मे तनाव लाता हैं .

Totke for you

- Those who are facing some conflict with their life partner, from Shiv Raatri of any month every day they should get up in the morning and take one mug of water from earthen port and sprinkle it all around the house. But nobody should drink water from that mug. Shiv Raatri comes every month.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

आयुर्वेद

1. अगर हर दिन प्रातकाल एक नीबू को एक गिलास जल मे मिलकर पिया जाए तो इससे वात सम्बंधित रोगों की तकलीफ दूर करने मे बहुत आराम मिलता हैं.
2. अगर फल खाने के साथ साथ दिनमे थोडा बहुत व्यायाम तथा कुछ शरीर की साफ सफाई भी कर ली जाए तो यह उन फलों के गुणों को आपके अंदर और तीव्रता से असर देने मे सहायता करेगा.
3. साधारणतः कहा जाता हैं कि सुबह वासी मुंह मतलब बिना मंजन किये फल खाए जाएँ तो लाभ की आशा कहीं और ज्यादा हो सकती हैं.
4. फल खाने के बाद लगभग घन्टे आधे घंटे पानी नही पीना चाहिये.

5. बेल के शर्बत का या बेल को खाने से पेट की कब्ज आदि समस्याये दूर करने मे बहुत सहायता मिलती हैं.

6. अमरुद भी कब्ज रोग दूर करने मे बहुत आधिक सहायता करता हैं,इस बात का ध्यान रखना चहिये कि जिन्हें कब्ज आदि रोग हैं उन्हें फल आदि का सेवन जायदा करना चहिये और जहाँ तक संभव हो बाज़ार की दवाईयों जो इस विषय से सबंधित हो से दूर ही रहें क्योंकि इनके दूरगामी परिणाम बहुत लाभदायक नही हैं.

7. अमरुद जैसे फल का लाभ पाचन शक्ति बढ़ाने मे और हृदय ,मस्तिष्क आदि को बल प्रदान करने मे बहुत होता हैं .साधारणतः जिस मौसम मे जो फल आयें उनको उसी मौसम मे खाने से कोई हानि नही होती ,जब तक कि किसी विशेष फल के लिए आपका स्वास्थ्य या आपका चिकित्सक उसकी अनुमति किसी कारण से दे न रहा हो तो .(इस अवस्था मे अपने चिकित्सक की सलाह का पालन करें)

8. टमाटर रोज खाने से शरीर के लिए आवश्यक विटामिन की पूर्ति सहज ही हो जाती हैं.

9. सुबह शाम यदि तुलसी के पत्ते का रस शहद मे मिलाकर चाटने से स्वप्न दोष जैसे रोग को दूर करने मे बहुत सहायता मिलती हैं.

10. इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि शहद को कभी भी गरम करके न ले, यह बहुत हानिकारक हैं ,और जब भी शहद को पानी या दूध के साथ लेना हो तो पानी या दूध भी हल्का सा कुनकुना हो ,गरम पानी या गरम दूध के साथ भी भूलकर शहद न लें.

Ayurveda

- Having Juice of one lemon with a glass of water every morning provides relief from Vaat (one of the humours of body (in the form of wind)) related disease.

- If along with eating fruits, little bit of exercise and cleansing of body is done then it will help in increasing effect of qualities of fruits inside you.